PĀIA-SADDA-MAHANNAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY
with Sanskrit equivalents, quotations
AND
complete references.

—:o:—

Vol. II.

—:o:—

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH, Nyaya-Vyakarana-tirtha.

Lecturer in Prakrit, Calcutta University.

CALCUTTA

—:o:—

FIRST EDITION

—:o:—

—:o:—

1924.

Printed by Dr. G. C. AMIN at the Gurjar Prabhat Printing Press, 27, Amratola Street,
and Published by Pandit HARGOVIND DAS T. SHETH, 26, Zakariah Street, Calcutta.

संकेत-सूची।

अ	=	अव्यय।
अक	=	अकर्मक धातु।
(अप)	=	अपभ्रंश भाषा।
(अशो)	=	अशोक-लिपि।
उभ	=	सकर्मक तथा अकर्मक
कर्म	=	कर्मणि-वाच्य।
कवकृ	=	कर्मणि-वर्तमान-कृदन्त।
क्रि	=	क्रियापद।
क्रिवि	=	क्रिया-विशेषण।
कृ	=	कृत्य-प्रत्ययान्त।
(चूपै)	=	चूलिकापैशाची भाषा।
त्रि	=	त्रिलिङ्ग।
[दे]	=	देशी-शब्द।
न	=	नपुंसकलिंग।
पुं	=	पुंलिंग।
पुंन	=	पुंलिंग तथा नपुंसकलिंग।
पुंस्त्री	=	पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग।
(पै)	=	पैशाची भाषा।
प्रयो	=	प्रेरणार्थक णिजन्त।
ब	=	बहुवचन।
भकृ	=	भविष्यत्कृदन्त।
भवि	=	भविष्यत्काल।
भूका	=	भूतकाल।
भूकृ	=	भूत-कृदन्त।
(मा)	=	मागधी भाषा।
वकृ	=	वर्तमान कृदन्त।
वि	=	विशेषण।
(शौ)	=	शौरसेनी भाषा।
स	=	सर्वनाम।
संकृ	=	संबन्धक कृदन्त।
सक	=	सकर्मक धातु।
स्त्री	=	स्त्रीलिंग।
स्त्रीन	=	स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग।
हेकृ	=	हेत्वर्थ कृदन्त।

——:०:——

प्रमाण-ग्रन्थों (रेफरन्सेज़) के संकेतों का विवरण।

---:o:---

संकेत। ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिए गए हैं वह।
अंग = अंगचूलिआ	हस्तलिखित।	...	
अंत = अंतगडदसाओ	* १ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७	...	
	२ आगमोदय-समिति, बंबई, १९२०	...	पत्र
अच्चु = अच्चुअसअगं ...	वेणीविलास प्रेस, मद्रास, १८७२ ...	...	गाथा
अजि = अजिअसंतिथय ...	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	गाथा
अणु = अणुओगद्दारसुत्त ...	राय धनपतसिंहजी बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६	...	
अनु = अणुत्तरोववाइअदसा	* १ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७	...	
	२ आगमोदय-समिति, बंबई, १९२०	...	पत्र
अभि = अभिज्ञानशाकुन्तल	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १९१६ ...	...	पृष्ठ
अवि = अविमारक	त्रिवेन्द्रम संस्कृत सिरिज़ ...	...	„
आउ = आउरपच्चक्खाणपइन्नो	१ जैन धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६६		गाथा
	२ शा बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२...		„
आक = १ आवश्यककथा...	हस्तलिखित ...	...	
२ आवश्यक-एर्त्सेलुंगन्	डॉ. ई. ल्युमेन्-संपादित, लाइपज़िग, १८९७	...	पृष्ठ
आचा = आचारांग सूत्र ...	* १ डाक्टर शुब्रिंग-संपादित, लाइपज़िग, १९१०		
	२ आगमोदय समिति, बंबई, १९१६	...	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
	३ प्रो. रवजीभाई देवराज संपादित, राजकोट, १९०६		„
आचानि = आचाराङ्ग-निर्युक्ति	आगमोदय-समिति, बंबई, १९१६ ...	...	„
आचू = आवश्यकचूर्णि ...	हस्तलिखित	...	अध्ययन
आनि = आवश्यकनिर्युक्ति...	१ यशोविजय-जैन-ग्रन्थमाला, बनारस। २ हस्तलिखित।		
आप = आराधनाप्रकरण ...	शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२ ...		गाथा
आरा = आराधनासार ...	माणिकचन्द्र-दिगंबर-जैन-ग्रन्थमाला, संवत् १९७३...		„
आव = आवश्यकसूत्र ...	हस्तलिखित	...	
आवम = „ मलयगिरिटीका	„ ...	...	
इंदि = इन्द्रियपराजयशतक	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८	...	गाथा
इक = दि कोस्मोग्राफी देर् इंदेर्	* डॉ. डब्ल्यू. किर्फेल्-कृत, लाइपज़िग, १९२०	...	

---

* ऐसी निशानी वाले संस्करणों में अकारादि क्रम से शब्द-सूची छपी हुई है, इससे ऐसे संस्करणों के पृष्ठ आदि के अंकों का उल्लेख प्रस्तुत कोश में बहुधा नहीं किया गया है, क्योंकि पाठक उस शब्द-सूची से ही अभिलषित शब्द के स्थल को तुरन्त पा सकते हैं। जहां किसी विशेष प्रयोजन से अंक देने की आवश्यकता प्रतीत भी हुई है, वहां पर उसी ग्रन्थ की पद्धति के अनुसार अंक दिए गए हैं, जिससे जिज्ञासु को अभीष्ट स्थल पाने में विशेष सुविधा हो।

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिए गए हैं वह।
उत=	उत्तराध्ययन-सूत्र	१ राय धनपतसिंह बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६ ...		अध्ययन०
		२ स्व-संपादित, कलकत्ता, १९२३		,,
उत्त का =	,,	डॉ. जे. कारपेंटिअर संपादित, १९२१	...	,,
उत्तनि =	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	हस्तलिखित ...	...	,,
उत्तर =	उत्तररामचरित्र	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	...	पृष्ठ
उप=	उपदेशपद	हस्तलिखित ...	...	गाथा
उप पृ =	उपदेशपद	जैन-विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा ...	...	पृष्ठ
उप टी =	उपदेशपद-टीका	हस्तलिखित ...	...	मूल गाथा
उर =	उपदेशरत्नाकर	देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१४ ...		अंश, तरंग
उव =	उवएसमाला	* डॉ. एल्. पी. टेसिटोरि-संपादित, १९१३	...	
उवर =	उपदेशरहस्य	मनसुखभाई भगुभाई, अमदाबाद, संवत् १९६७	...	गाथा
उवा =	उवासगदसाओ	* एसियाटिक सोसाईटी, बंगाल, कलकत्ता, १८९०	...	
ऊरु =	ऊरुभंग	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज् ...	...	पृष्ठ
ओघ =	ओघनिर्युक्ति	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९	...	गाथा
ओघ भा=	ओघनिर्युक्ति-भाष्य	,, ...	...	,,
ओप =	औपपातिकसूत्र	* डॉ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपज़िग, १८८३	...	
कप्प =	कल्पसूत्र	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपज़िग, १८७९	...	
कप्पू =	कर्पूरमञ्जरी	* हार्वर्ड् ओरिएन्टल् सिरिज्, १९०१	...	
कम्म १=	कर्मग्रन्थ पहला	* आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक मण्डल, आगरा, १९१८		गाथा
कम्म २=	,, दूसरा	* ,, ,,	,,	,,
कम्म ३=	,, तीसरा	* ,, ,,	१९१९	,,
कम्म ४=	,, चौथा	* ,, ,,	१९२२	,,
कम्म ५=	,, पाँचवाँ	भीमसिंह माणक, बंबई, संवत् १९६८	...	,,
कम्म ६=	,, छठवाँ	,, ...	...	,,
कम्मप =	कर्मप्रकृति	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, १९१७	...	पत्र
करु =	करुणावज्रायुधम्	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, १९१६	...	पृष्ठ
कर्ण =	कर्णभार	त्रिवेन्द्र-संस्कृत सिरिज् ...	...	,,
कस =	(बृहत्) कल्पसूत्र	* डॉ. डबल्यु. शुब्रिंग-संपादित, लाइपज़िग, १९०५	...	
काप्र =	काव्यप्रकाश	वामनाचार्यकृत-टीका-युक्त, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई	...	पृष्ठ
काल =	कालकाचार्यकथानक	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, ज़ेड्-डी-एम्-जी, खंड ३४, १८८०		
कुप्र =	कुमारपालप्रतिबोध	गायकवाड-ओरिएण्टल्-सिरिज्, १९२०	...	पृष्ठ
कुमा =	कुमारपालचरित	* बंबई-संस्कृत-सिरिज्, १९००	...	
कुम्मा =	कुम्मापुत्तचरिअ	स्व-संपादित, कलकत्ता, १९१९ ...	...	पृष्ठ
खेत =	लघुक्षेत्रसमास	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८	...	गाथा
गउड =	गउडवहो	* बंबई-संस्कृत-सिरिज्, १८८७ ...	...	

संकेत । ग्रन्थ का नाम ।		संस्करण आदि ।			जिसके अंक दिये गए हैं वह ।
गच्छ = गच्छाचारपयन्नो		हस्तलिखित	...	...	अधिकार
गण = गणधरस्मरण		स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	...	गाथा
गणि = गणिविज्जापयन्नो		राय धनपतिसिंह बहादुर, कलकत्ता, १८४२		...	"
गा = +गाथासप्तशती		१ डॉ. ए. वेबर्-संपादित, लाइपज़िग, १८८१			"
		२ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९११		...	"
गु = गुरुपारतन्त्र्य-स्मरण		स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८		...	"
गुण = गुणानुरागकुलक		अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३		...	"
गुभा = गुरुवन्दनभाष्य		भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२		...	"
गुरु = गुरुप्रदक्षिणाकुलक		अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३		...	"
गोय = गौतमकुलक		भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६५		...	"
चउ = चउसरणपयन्नो		१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६		...	"
		२ शा. बालाभाई कक्कलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२		...	"
चंड = प्राकृतलक्षण		एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १८८०		...	
चंद = चंदपन्नत्ति		हस्तलिखित	...	...	पाहुड
चारु = चारुदत्त		त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज़		...	पृष्ठ
चेइय = चेइयवन्दन भाष्य		भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२		...	गाथा
जं = जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति		देवचंद लालभाई पु० फंड, बम्बई, १९२०		...	वक्षस्कार
जय = जयतिहुअण-स्तोत्र		जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम, प्रथमावृत्ति		...	गाथा
जी = जीवविचार		आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, संवत् १९७८			"
जीत = जीतकल्प		हस्तलिखित	...	...	
जीव = जीवाजीवाभिगमसूत्र		देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९		...	प्रतिपत्ति
जीवा = जीवानुशासनकुलक		अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३		...	गाथा
जो = ज्योतिष्करण्डक		हस्तलिखित	...	...	पाहुड
टि = ‡ टिप्पण (पाठान्तर)			...	...	
टी = † टीका			...	...	
ठा = ठाणंगसुत्त		आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१८-१९२०		...	ठाण०

+ लाइपज़िग वाले संस्करण का नाम "सप्तशतक डेस हाल" है और बम्बई वाले का "गाथासप्तशती"। ग्रन्थ एक ही है, परन्तु बम्बई वाले संस्करण में सात शतकों के विभाग में करीब ७०० गाथाएँ छपी हैं और लाइपज़िग वाले में सीधे नंबर से ठीक १०००। एक से ७०० तक की गाथाएँ दोनों संस्करणों में एक-सी हैं, परन्तु गाथाओं के क्रम में कहीं कहीं दो चार नंबरों का आगा-पीछा है। ७०० के बाद का और ७०० के भीतर भी जहां गाथांक के अनन्तर 'अ' दिया है वह नंबर केवल लाइपज़िग के ही संस्करण का है।

‡ पाठान्तर वाले संस्करणों के जो पाठान्तर हमें उपादेय मालूम पड़े हैं उन्हें भी इस कोष में स्थान दिया गया है और प्रमाण के पास 'टि' शब्द जोड़ दिया है जिससे उस शब्द को उसी स्थान के टिप्पन का समझना चाहिए।

† जहां पर प्रमाण में ग्रन्थ-संकेत और स्थान-निर्देश के अनन्तर 'टी' शब्द लिखा है वहां उस ग्रन्थ के उसी स्थान की टीका के प्राकृतांश से मतलब है।

संकेत।	ग्रन्थका नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिए गए हैं वह।
णंदि	= णंदिसूत्र	हस्तलिखित		
णमि	= णमिऊण-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	गाथा
णाया	= णायाधम्मकहाखुत	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९	...	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
तंदु	= तंदुलवेयालियपयन्नो	हस्तलिखित	...	
ति	= तिजयपहुत्त	जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	...	गाथा
तित्थ	= तित्थुग्गालियपयन्नो	हस्तलिखित	...	
ती	= तीर्थकल्प	,,	...	कल्प
दं	= दंडकप्रकरण	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	...	गाथा
		२ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९०८		,,
दंस	= दर्शनशुद्धिप्रकरण	हस्तलिखित	...	तत्त्व
दस	= दशवैकालिकसूत्र	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९००	...	अध्ययन०
		२ डॉ. जीवराज घेलाभाई, अमदावाद, १९१२		,,
दसचू	= दशवैकालिकचूलिका	,,	...	चूलिका
दसनि	= दशवैकालिकनिर्युक्ति	भीमसिंह माणेक, बंबई, १९००	...	अध्ययन
दसा	= दशाश्रुतस्कन्ध	हस्तलिखित	...	,,
दीव	= दीवसागरपन्नत्ति	,,	...	
दूत	= दूतघटोत्कच	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	...	पृष्ठ
दे	= देशीनाममाला	बम्बई-संस्कृत-सिरिज्, १८८०	...	वर्ग, गाथा
देव	= देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक	हस्तलिखित	...	
द्र	= द्रव्यसित्तरी	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९५८	...	गाथा
		२ शा वेणीचंद सूरचंद, म्हेसाणा, १९०६	...	,,
धण	= धनपंचाशिका	काव्यमाला, सप्तम गुच्छक, बम्बई, १८९०	...	,,
धम्म	= धर्मरत्नप्रकरण	१ जैन-विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा, १९०५	...	मूल गाथा
		२ हस्तलिखित	...	,,
धर्म	= धर्मसंग्रह	,,	...	अधिकार
धर्मा	= धर्माभ्युदय	जैन-आत्मानन्द-सभा, भावनगर, १९१८		पृष्ठ
ध्व	= ध्वन्यालोक	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई	...	,,
नव	= नवतत्त्वप्रकरण	१ आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर	...	गाथा
		२ आद्य-जैन-धर्म-प्रवर्तक-सभा, अमदावाद, १९०६	...	,,
नाट	= +नाटकीयप्राकृतशब्दसूची		...	
निचू	= निशीथचूर्णि	हस्तलिखित	...	उद्देश
निर	= निरयावलीसूत्र	१ हस्तलिखित	...	वर्ग, अध्य०
		२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२२	...	,,
निसी	= निशीथसूत्र	हस्तलिखित	...	उद्देश
पउम	= पउमचरिअ	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	...	पर्व, गाथा

+ इस पुस्तक के शब्द, श्रद्धेय श्रीयुत केशवलालभाई प्रेमचंद मोदी, बी.ए., एल्. एल्. बी. के हस्त-लिखित प्राकृत शब्द-संग्रह से लिए गए हैं। इस शब्द-संग्रह में जहां जहां नाटकीय-प्राकृत-शब्द-सूची के अनुसार उन नाटक ग्रन्थों के जो नाम और पृष्ठांक दिये गये हैं वहां वहां वे ही अविकल नाम और पृष्ठांक, इस कोष में 'नाट—' के बाद रखे गये हैं।

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गए हैं वह।
पंच	= पंचसंग्रह	१ हस्तलिखित	...	द्वार, गाथा
		२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९१९	...	"
पंचभा	= पंचकल्पभाष्य	हस्तलिखित ...	...	
पंचव	= पंचवस्तुक	" ...	...	द्वार
पंचा	= पंचासकप्रकरण	जैन धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	...	पंचासक
पंचू	= पंचकल्पचूर्णि	हस्तलिखित ...	...	
पंनि	= पंचनिर्ग्रन्थीप्रकरण	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १९७४	...	गाथा
पंरा	= पंचरात्र	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज़	...	पृष्ठ
पंसु	= पंचसुत्र	हस्तलिखित ...	...	सूत्र
पक्खि	= पक्खिसुत्र	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	
पच्च	= महापच्चक्खाणपयन्नो	शा. बालाभाई ककलभाई, अमदाबाद, संवत् १९६२	...	गाथा
पडि	= पंचप्रतिक्रमणसूत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक मंडल, बम्बई, १९११	...	
		२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, १९२१ ...		
पण्ण	= पण्णवणासुत्त	राय धनपतसिंह बाहादुर, बनारस, संवत् १९४०	...	पद
पण्ह	= प्रश्नव्याकरणसुत्र	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९	...	श्रुतस्कन्ध, द्वार
पभा	= पच्चक्खाण भाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	..	गाथा
पव	= प्रवचनसारोद्धार	" संवत् १९३४	..	द्वार
पत्तं	= प्रज्ञापनोपाङ्ग-तृतीयपदसंग्रहणी	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १९७४	...	गाथा
पाअ	= पाइअलच्छीनाममाला	* बी. बी. एण्ड कंपनी, भावनगर, संवत् १९७३	...	
पि	= ग्रामेटिक् देर् प्राकृत स्प्राखन्	डॉ. आर्. पिशेल्-कृत, १९००	...	पैरा
पिंग	= प्राकृतपिंगल	* एसियाटिक् सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०२	...	
पिंड	= पिंडनिर्युक्ति	हस्तलिखित	...	गाथा
पुप्फ	= पुष्पमालाप्रकरण	जैन-श्रेयस्कर-मंडल, म्हेसाणा, १९११	...	"
प्रति	= प्रतिमानाटक	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज़	...	पृष्ठ
प्रबो	= प्रबोधचन्द्रोदय	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १९१०	...	"
प्रयौ	= प्रतिमायौगन्धरायण	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज़	...	"
प्राप	= इन्ट्रडक्शन् टु दि प्राकृत	* पंजाब युनिवर्सिटि, लाहोर, १९१७	...	
प्राप्र	= प्राकृतप्रकाश	* डॉ. कॉविल्-संपादित, लंडन, १८६८	...	
प्रामा	= प्राकृतमार्गोपदेशिका	* शाह हर्षचन्द्र भूराभाई, बनारस, १९११	...	
प्रारू	= प्राकृतरूपावली	* शेठ मनसुखभाई भगुभाई, अमदाबाद, संवत् १९६८	...	
प्रासु	= प्राकृतसूक्तरत्नमाला	जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१९	...	गाथा
बाल	= बालचरित	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज़ ...	...	पृष्ठ
बृह	= बृहत्कल्पभाष्य	हस्तलिखित ...	...	उद्देश
भग	= भगवतीसूत्र	* १ जिनागमप्रकाश सभा, बम्बई, संवत् १९७४	...	
		२ आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८-१९१९-१९२१...		शतक, उद्देश

संकेत ।	ग्रन्थका नाम ।	संस्करण आदि ।		जिसके अंक दिये गए हैं वह ।
षड्	= षड्भाषाचन्द्रिका	* बम्बई संस्कृत एन्ड् प्राकृत सिरिज, १९१६	...	
स	= समराइच्चकहा	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०८-२३	...	पृष्ठ
सं	= संबोधसत्तरी	विट्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अमदावाद, १९२०	...	गाथा
संक्षि	= संक्षिप्तसार	१ हस्तलिखित ...	...	
		२ संस्कृत प्रेस डिपोजिटरी, कलकत्ता, १८८९	...	पृष्ठ
संग	= बृहत्संग्रहणी	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६८	...	गाथा
		२ आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १९७३	...	,,
संघ	= संघाचारभाष्य	हस्तलिखित ...	...	प्रस्ताव
संच	= शान्तिनाथचरित्र (देवचन्द्रसूरि-कृत)	,, ...	...	
संति	= संतिकरस्तोत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११		गाथा
		२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल,आगरा, १९२१		,,
संथा	= संथारगपइन्नो	१ हस्तलिखित	...	,,
		२ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	...	,,
सट्टि	= सट्ठिसयपयरण	स्व-संपादित, बनारस, १९१७ ...	...	,,
सण	= सनत्कुमारचरित	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, १९२१	...	
सत्त	= उपदेशसप्ततिका	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९७६	...	गाथा
सम	= समवायांगसूत्र	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८	...	पृष्ठ
सम्म	= सम्मतिसूत्र	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६५	...	गाथा
सम्य	= सम्यक्त्वस्वरूप पच्चीसी	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	,,
सार्ध	= गणधरसार्धशतकप्रकरण	जौहरी चुन्नीलाल पन्नालाल, बम्बई, १९१६	...	,,
सिग्घ	= सिग्घमवहरउ-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	,,
सुज्ज	= सूर्यप्रज्ञप्ति	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९ ...	...	पाहुड
सुपा	= सुपासनाहचरिअ	स्व-संपादित, बनारस, १९१८-१९ ...	...	पृष्ठ
सुर	= सुरसुंदरीचरिअ	जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१६	...	परिच्छेद, गाथा
सुअ	= सूअगडांगसुत्त	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९३६	...	श्रुतस्कंध, अध्य०
		२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१७		,,
सूक्त	= सूक्तमुक्तावली	दे०ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२	...	पत्र
से	= सेतुबन्ध	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८९५ ...	...	आश्वासक,पद्य
स्वप्न	= स्वप्नवासवदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज् ...	...	पृष्ठ
हे	= हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण	* १ डॉ. आर्. पिशेल्-संपादित, १८७७	...	पाद,सूत्र
		२ बम्बई-संस्कृत-सिरिज्, १९००	...	,,
हेका	= हेमचन्द्र-काव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९०१	...	पृष्ठ

—•—•—•—

क

क पुं [**क**] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम व्यञ्जनाक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; (प्राप; प्रामा) । २ ब्रह्मा ; (दे ५, २६) । ३ किए हुए पाप का स्वीकार ; " कत्ति कडं मे पावं " (आवम) । ४ न. पानी, जल ; (स ६११)। ५ सुख ; (सुर १६,५५) । देखो °**अ** = क ।

क देखो **किम्** ; (गउड ; महा) ।

कइ वि. ब. [**कति**] कितना "तं भंते ! कइदिसं ओभासेइ" (भग) । °**अ** वि [°**क**] कतिपय, कईएक, "मोएमि जाव तुज्झं, पियरं कइएसु दियहेसु" (पउम ३४,२७) । °**अव** वि [°**पय**] कतिपय,कईएक; (हे १,२५०) । °**इ** अ [°**चित्**] कईएक ; (उप पृ ३) । °**त्थ** वि (°**थ** कितनावाँ, कौन संख्या का ? ; (विसे ६१७) । °**वइय**, °**वय**, °**वाह** वि [°**पय**] कईएक ; (पउम ६१, १६ ; उवा ; षड् ; कुमा ; हे १,२५०) । °**वि** अ [°**अपि**] कईएक ; (काल; महा) । °**विह** वि [°**विध**] कितने प्रकार का; (भग) ।

कइ अ [**कदा**] कब, किस समय ? "एआई उण मज्झो थणभारं कइ णु उव्वहइ ? " (गा ८०३) ।

कइ पुं [**कपि**] बन्दर, वानर ; (पाअ) । °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष, वानर-द्वीप ; (पउम ५५,१६) । °**द्धय**, °**धय** पुं [°**ध्वज**] १ वानर-द्वीप के एक राजा का नाम; (पउम ६,८३) । २ अर्जुन ; (हे २, ६०) । °**हसिअ** न [°**हसित**] १ स्वच्छ आकाश में अचानक बीजली का दर्शन ; २ वानर के समान विकृत मुँह का हसना ; (भग ३,६) ।

कइ देखो **कवि** = कवि ; (गउड ; सुर १, २७) । °**अर** (अप) पुं [**कवि**] श्रेष्ठ कवि; (पिंग) । °**मा** स्त्री [°**त्व**] कवित्व, कविपन; (षड्)। °**राय** पुं [°**राज**] १ श्रेष्ठ कवि; (पिंग) । २ "गउडवहो" नामक प्राकृत काव्य के कर्ता वाक्पतिराज-नामक कवि ; "आसि कइरायइंधो वप्पइराओ त्ति पणइलवो" (गउड ७९७) ।

कइअ पुं [**क्रयिक**] खरीदने वाला, ग्राहक ; "किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ" (उत्त ३५, १४) ।

कइअंक, **कइअंकसइ** } पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे २, १३) ।

कइअव न [**कैतव**] कपट, दम्भ ; (कुमा; प्राप्र) ।

कइआ अ [**कदा**] कब, किस समय ? ; (गा १३८ ; कुमा) ।

कइउल्ल वि [**दे**] थोडा, अल्प ; (दे १, २१) ।

कइंद पुं [**कवीन्द्र**] श्रेष्ठ कवि ; (गउड) ।

कइकच्छु स्त्री [**कपिकच्छु**] वृक्ष-विशेष, केवाँच ; (गा ५३२) ।

कइगई स्त्री [**कैकयी**] राजा दशरथ की एक रानी ; (पउम ६५, २१) ।

कइत्थ पुं [**कपित्थ**] १ वृक्ष-विशेष, कैथ का पेड़ ; २ फल-विशेष, कैथ, कैथा ; (गा ६४१) ।

कइम वि [**कतम**] बहुत में से कौन सा ? (हे १, ४८ ; गा ११६) ।

कइयहा (अप) अ [**कदा**] कब, किस समय ? (सण) ।

कइर पुं [**कदर**] वृक्ष-विशेष ; "जं कइररुक्खहिट्ठा इह दसकोडी दविणमत्थि" (श्रा १६) ।

कइरव न [**कैरव**] कमल, कुमुद ; (हे १, १५२) ।

कइरविणी स्त्री [**कैरविणी**] कुमुदिनी, कमलिनी; (कुमा) ।

कइलास पुं [**कैलास**, °**श**] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत विशेष ; (पाअ ; पउम ५, ५३ ; कुमा) । २ मेरु पर्वत ; (निचू १३) । ३ देव-विशेष, एक नाग-राज ; (जीव ३) । °**सय** पुं [°**शय**] महादेव, शिव ; (कुमा) । देखो **केलास** ।

कइलासा स्त्री [**कैलासा**, °**शा**] देव-विशेष की एक राजधानी ; (जीव ३) ।

कइल्लवइल्ल पुं [**दे**] स्वच्छन्द-चारी बैल; (दे २, २५)।

कइविया स्त्री [**दे**] बरतन-विशेष, पीकदान, पीकदानी ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

कइस (अप) वि [**कीदृश**] कैसा ; (कुमा) ।

कईया (अप) देखो **कइआ**; (सुपा ११६) ।

कईवय देखो **कइवय**; (पउम २८, १६) ।

कईस पुं [**कवीश**] श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि ; (पिंग) ।

कईसर पुं [**कवीश्वर**] उत्तम कवि ; (रंभा) ।

कउ पुं [**क्रतु**] यज्ञ ; (कप्पू) ।

कउ (अप) अ [**कुतः**] कहां से ; (हे ४, ४१६) ।

कउअ वि [**दे**] १ प्रधान, मुख्य ; २ चिन्ह, निशान ; (दे २, ५६) ।

कउच्छेअय पुं [**कौक्षेयक**] पेट पर बँधी हुई तलवार ; (हे १, १६२ ; षड्) ।

कउड न [दे. ककुद] देखो **कउह**=ककुद ; (षड्) ।

कउरअ } पुं [**कौरव**] १ कुरु देश का राजा ; २ पुंस्त्री.
कउरव } कुरु वंश में उत्पन्न; ३ वि. कुरु (देश या वंश) से संबन्ध रखने वाला ; ४ कुरु देश में उत्पन्न ; (प्राप्र ; नाट ; हे १, १६२) ।

कउल न [**दे**] १ करीष, गोइठा का चूर्ण ; (दे २, ७) ।

कउल न [**कौल**] तान्त्रिक मत का प्रवर्तक ग्रन्थ, कौलोपनिषद् वगैरः । २ वि. शक्ति का उपासक । ३ तान्त्रिक मत को जानने वाला; ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी । ५ देवता-विशेष ;

"विससिज्जंतमहापसुदंसणसंभमपरोप्परारूढा ।
गयणे च्चिय गंधउडिं कुणंति तुह कउलणारीओ"
(गउड) ।

कउलव देखो **कउरव**; (चंड) ।

कउसल न [**कौशल**] कुशलता, दक्षता, हुशियारी ; (हे १, १६२ ; प्राप्र) ।

कउह न [**दे**] नित्य, सदा, हमेशा ; (दे २, ५) ।

कउह पुंन [**ककुद**] १ बैल के कंधे का कुब्बड ; २ सफेद छत्र वगैरः राज-चिह्न ; ३ पर्वत का अग्रभाग, टोंच ; (हे १, २२५) । ४ वि. प्रधान, मुख्य ;

"कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु ।
सद्देसु रज्जमाणा, रमंती सोइंदियवसट्टा"
(णाया १, १७) ।

देखो **ककुह** ।

कउहा स्त्री [**ककुभ्**] १ दिशा ; (कुमा) । २ शोभा, कान्ति ; ३ चम्पा के पुष्पों की माला ; ४ इस नाम की एक रागिणी ; ५ शास्त्र ; ६ विकीर्ण केश ; (हे १, २१) ।

कए } अ [**कृते**] वास्ते, निमित्त, लिए ; "तत्तो सो तस्स
कएण } कए, खणेइ खाणीउणेगठाणेसु" (कुम्मा १५ ;
कएणं } कुमा) । "अवरणहमज्जिरीणं कएण कामो वहइ चावं" (गा ४७३) ।

"लज्जा चत्ता सीलं च खंडिअं अजसघोसणा दिएणा ।
जस्स कएणं पिअसहि ! सो चेअ जणो जणो जाओ"
(गा ५२५) ।

कओ अ [**कुतः**] कहां से ? (आचा ; उव; रयण २६) । °**हुत्त** क्रिवि [**दे**] किस तरफ ; "कओहुत्तं गंतव्वं ?" (महा) ।

कओ अ [**क्व**] कहां, किस स्थान में ; "कओ वयामो ?" (णाया १, १४) ।

कओल देखो **कवोल** ; (से ३, ४६) ।

कंइ अ [**दे**] किससे ; "कंइ पंइ सिक्खिउ ए गइलालस" (विक १०२) ।

कंक पुं [**कङ्क**] १ पक्षि-विशेष ; (पगह १, १; ४ ; अनु ४) । २ एक प्रकार का मजबूत और तीक्ष्ण लोहा ; (उप ४६४) । ३ वृक्ष-विशेष ; "कंकफलसरलनयणा—" (उप १०३१ टी) । °**पत्त** न [°**पत्र**] बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण, जो उड़ता है ; (वेणी १०२) । °**लोह** पुंन [°**लोह**] एक प्रकार का लोहा; (उप पृ ३२६; सुपा २०७) । °**वत्त** देखो °**पत्त**; (नाट) ।

कंकइ पुं [**कङ्कति**] वृक्ष-विशेष, नागबला-नामक ओषधि ; (उप १०३१ टी) ।

कंकड पुं [**कङ्कट**] वर्म, कवच ; "रामो चावे सकंकडे दिट्ठी देंतो" (पउम ४४, २१ ; औप) ।

कंकडइय वि [**कङ्कटिन**] कवच वाला, वर्मित ; (पगह १, ३) ।

कंकडुअ } पुं [**काङ्कटुक**] दुर्भेद्य माष, उरद की एक
कंकडुग } जाति, जो कभी पकता ही नहीं ; "कंकडुओ विव मासो, सिद्धिं न उवेइ जस्स ववहारो" (वव ३) ।

कंकण न [**कङ्कण**] हाथ का आभरण-विशेष, कँगन ; (श्रा २८ ; गा ६६) ।

कंकति पुं [**कङ्कति**] ग्राम-विशेष ; (राज) ।

कंकनिज्ज पुंस्त्री [**काङ्कतीय**] माधराज वंश में उत्पन्न ; (राज) ।

कंकय पुं [**कङ्कत**] १ नागबला-नामक ओषधि । २ सर्प की एक जाति । ३ पुंस्त्री. कङ्घा, केश सँवारने का उपकरण; (सूअ १, ४) ।

कंकलास पुं [**कृकलास**] कर्कोट, साँप की एक जाति ; (पाअ) ।

कंकाल न [**कङ्काल**] चमड़ी और मांस रहित अस्थि-पञ्जर; "कंकालवेसाए" (श्रा १६) ; "अह नरकरंककंकालसंकुले भीसणमसाणे" (वज्जा २० ; दे २, ५३) ।

कंकावंस पुं [**कङ्कावंश**] वनस्पति-विशेष ; (पगण ३३) ।

कंकिल्लि देखो **कंकेल्लि** ; (सुपा ५५६ ; कुमा) ।

कंकेलि पुं [**कङ्केलि**] अशोक वृक्ष ; (मै ६० ; विक २८) ।

कंकेल्लि पुं [**दे. कङ्केल्लि**] अशाक वृक्ष ; (दे २, १२; गा ४०४ ; सुपा १४०; ५६२ ; कुमा) ।

कंकोड न [**दे. कर्कोट**] १ वनस्पति-विशेष, ककरैल, एक प्रकार की सब्जी, जो वर्षा में ही होती है, (दे २, ७ ; पाअ) । २ पुं. एक नागराज ; ३ साँप की एक जाति ; (हे १, २६ ; षड्) ।

कंकोल पुं [**कङ्कोल**] १ कङ्कोल, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद ; २ न. उस वृक्ष का फल ; " सकप्पूरेला-कंकोलं तंबोलं " (उप १०३१ टी) । देखो **कक्कोल** ।

कंख सक [**काङ्क्ष्**] चाहना, वाँछना । कंखइ ; (हे ४, १९२ ; षड्) ।

°**खण** न [**काङ्क्षण**] नीचे देखो ; (धर्म २) ।

कंखा स्त्री [**काङ्क्षा**] १ चाह, अभिलाष ; (सूअ १, १५) । २ आसक्ति, गृद्धि ; (भग) । ३ अन्य धर्म की चाह अथवा उसमें आसक्ति रूप सम्यक्त्व का एक अति-चार ; (पडि) । °**मोहणिज्ज** न [°**मोहनीय**] कर्म-विशेष ; (भग) ।

कंखि वि [**काङ्क्षिन्**] चाहने वाला; (आचा ; गउड ; सुर १३, २४३) ।

कंखिअ वि [**काङ्क्षित**] १ अभिलषित । २ काङ्क्षा-युक्त, चाह वाला ; (उवा; भग) ।

कंखिर वि [**काङ्क्षितृ**] चाहने वाला, अभिलाषी ; (गा ५५; सुपा ५३७) ।

कंगणी स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, काँगनी ; (पराग १) ।

कंगु स्त्रीन [**कङ्गु**] १ धान्य-विशेष, काँगन ; (ठा ७ ; दे ७, १) । २ वल्ली-विशेष ; (परागा १) ।

कंगुलिया स्त्री [**दे.कङ्गुलिका**] जिन-मन्दिर की एक बड़ी आशातना, जिन-मन्दिर में या उसके नजदीक लघु या वृद्ध नीति का करना; (धर्म २) ।

कंचण पुं [**काञ्चन**] १ वृक्ष-विशेष ; २ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी ; (उप ७२८ टी) । ३ न. सुवर्ण, सोना ; (कप्प) । °**उर** न [°**पुर**] कलिंग देश का एक मुख्य नगर; (आक) । °**कूड** न [°**कूट**] १ सौमनस-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर; (ठा ७) । २ देव विमान-विशेष; (सम १२) । ३ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८) । °**केअई** स्त्री [°**केतकी**]लता-विशेष ; (कुमा) । °**तिलय** न [°**तिलक**] इस नाम का विद्याधरों का एक नगर; (इक) । °**त्थल** न [°**स्थल**] स्वनाम-ख्यात एक नगर ; (दंस) । °**वलाणग** न [°**वलानक**] चौरासी तीर्थों में एक तीर्थ का नाम ; (राज) । °**सेल** पुं [°**शैल**] मेरु पर्वत; (कप्पू)।

कंचणग पुं [**काञ्चनक**] १ पर्वत विशेष ; (सम ७०) । २ काञ्चनक पर्वत का निवासी देव ; (जीव ३) ।

कंचणा स्त्री [**कञ्चना**] स्वनाम-ख्यात एक स्त्री ; (पगह १, ४) ।

कंचणार पुं [**कञ्चनार**] वृक्ष-विशेष ; (पउम ५३, ७९ ; कुमा) ।

कंचणिया स्त्री [**काञ्चनिका**] रुद्राक्ष-माला ; (औप) ।

कंचा (पै) देखो **कण्णा** ; (प्राप्र) ।

कंचि } स्त्री [**काञ्चि,°ञ्ची**] १ स्वनाम-ख्यात एक देश;
कंची } (कुमा) । २ कटी-मेखला, कमर का आभूषण ; (पाअ) । ३ स्वनाम-ख्यात एक नग ; सुपा ४०६) ।

कंची स्त्री [**दे**] मुशल के मुँह में रक्खी जाती लोहे की एक वलयाकार चीज ; (दे २, १) ।

कंचु } पुं [**कञ्चुक**] १ स्त्री का स्तनाच्छादक वस्त्र,
कंचुअ } चोली ; (पउम ६, ११ ; पाअ) । २ सर्प-त्वक्, साँप की कंचली ; (विसे २५१७) । ३ वर्म, कवच ; (भग ६, ३३) । ४ वृक्ष-विशेष ; (हे १, २५;३०) । ५ वस्त्र, कपड़ा ; "तो उज्झिऊण लज्जा (लज्जं), ओइं-धइ कंचुयं सरीराओ" (पउम ३४, १५) ।

कंचुइ पुं [**कञ्चुकिन्**] १ अन्तःपुर का प्रतीहार, चपरासी; (णाया १, १ ; पउम ८, ३६ ; सुर २, १०६) । २ साँप ; (विसे २५१७) । ३ यव, जव ; ४ चणक, चना; ५ जुआरि, अगहन में होने वाला एक प्रकार का अन्न, जोन्हरी । ६ वि. जिसने कवच धारण किया हो वह ; (हे ४, २६३) ।

कंचुइअ वि [**कञ्चुकित**] कञ्चुक वाला ; (कुमा ; विपा १, २) ।

कंचुइज्ज पुं [**कञ्चुकीय**] अन्तःपुर का प्रतीहार ; (भग ११, ११) ।

कंचुइज्जंत वि [**कञ्चुकायमान**] कञ्चुक की तरह आचरण करता ; "रोमंचकंचुइज्जंतसव्वगत्तो" (सुपा १८१) ।

कंचुग देखो **कंचुअ** ; (ओघ ६७६; विसे २५२८) ।

कंचुगि देखो °**कंचुइ** ; (सण) ।

कंचुलिआ स्त्री [**कञ्चुलिका**] कंचली, चोली; (कप्पू) ।

कंछुल्ली स्त्री [**दे**] हार, कण्ठाभरण ; (भवि) ।

कंजिअ न [**काञ्जिक**] काञ्जिक ; (सुर ३, १३३ ; कप्पू)।

कंटअंत वि [**कण्टकायमान**] १ कण्टक जैसा, कण्टक की तरह आचरता ; (से ६, २४)। २ पुलकित होता, (अच्चु ५८)।

कंटइअ वि [**कण्टकित**] १ कण्टक वाला ; (से १, ३२)। २ रोमाञ्चित, पुलकित ; (कुमा ; पाअ)।

कंटइज्जंत देखो **कंटअंत** ; (गा ६७)।

कंटइल पुं [**कण्टकिल**] १ एक जात का वाँस ; २ वि. कण्टकों से व्याप्त ; (सूअ १, ५)।

कंटइल्ल देखो **कंटइअ** ; (पण्ह १, १ ; कुमा)।

कंटउब्बि वि [**दे**] कण्टक-प्रोत ; (दे २, १७)।

कंटकिल्ल देखो **कंटइअ** ; (दे २, ७५)।

कंटग) पुं [**कण्टक**] १ काँटा, कण्टक ; (कस; हे १, **कंटय**) ३०)। २ रोमाञ्च, पुलक ; (गा ६७)। ३ शत्रु, दुश्मन ; (णाया १, १)। ४ वृश्चिक का पूँछ ; (वव ६)। ५ शल्य ; (विपा १, ८)। ६ दुःखोत्पादक वस्तु ; (उत्त १)। ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग ; (गण १६)। °**बोंदिया** स्त्री [°**दे**] कण्टक-शाखा ; (आचा २, १, ५)।

कंटाली स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष, कण्टकारिका, भटकटैया ; (दे २, ४)।

कंटिय वि [**कण्टिक**] १ कण्टक वाला, कण्टक-युक्त। २ वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)।

कंटिया स्त्री [**कण्टिका**] वनस्पति-विशेष ; (बृह १ ; आचू १)।

कंटी स्त्री [**दे**] उपकण्ठ, कण्ठिका, पर्वत के नजदीक की भूमि;

> " एयाओ परूढारुणफलभरबंधुरिया भूमिखज्जूरा।
> कंटीओ निव्ववंति व, अमंदकरमंदआभोया "
>
> (गउड)।

कंटुल्ल) (**दे**) देखो **कंकोड** = (दे); (पाअ ; दे **कंटोल**) २, ७)।

कंठ पुं [**दे**] १ सूकर, सूअर ; २ मर्यादा, सीमा ; (दे २, ५१)।

कंठ पुं [**कण्ठ**] १ गला, घाँटी ; (कुमा)। २ समीप, पास। ३ अञ्चल ; " कंठे वत्थाईणं णिबद्धगंठिम्मि " (दे २, १८)। °**दुरखलिअ** वि [°**दुरस्खलित**] गद्गद ; (पाअ)। °**मुरय** न [°**मुरज**] आभरण-विशेष ; (णाया १, १)। °**मुरवी** स्त्री [°**मुरवी**] गले का एक आभरण ; (औप)। °**मुही** स्त्री [°**मुखी**] गले का एक आभूषण ; (राज)। °**सुत्त** न [°**सूत्र**] १ सुरत-बन्ध विशेष। २ गले का एक आभूषण ; (औप)।

कंठ वि [**कण्ठ्य**] १ कण्ठ से उत्पन्न। २ सरल, सुगम; (निचू १५)।

कंठकुंची स्त्री [**दे**] १ वस्त्र वगैरः के अञ्चल में बँधी हुई गाँठ ; २ गले में लटकायी हुई लम्बी नाडि-ग्रन्थि ; (दे २, १८)।

कंठदीणार पुं [**दे**] छिद्र, विवर ; (दे १, २४)।

कंठमल्ल न [**दे**] १ ठठरी, मृत-शिबिका ; २ यान पात्र, वाहन ; (दे २, २०)।

कंठय पुं [**कण्ठक**] स्वनाम-ख्यात एक चौर-नायक ; (महा)।

कंठाकंठि अ [**कण्ठाकण्ठि**] गले गले में ग्रहण कर ; (णाया १, २—पत्र ८८)।

कंठिअ पुं [**दे**] चपरासी, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कंठिआ स्त्री [**कण्ठिका**] गले का एक आभूषण; (गा ७५)।

कंठीरव पुं [**कण्ठीरव**] सिंह, शार्दूल ; (प्रयौ २१)।

कंड सक [**कण्ड्**] १ व्रीहि वगैरः का छिलका अलग करना। २ खींचना। ३ खुजवाना। वकृ---**कंडंत** ; (ओघ ४६८ ; गा ६६३) ; **कंडिंत**; (णाया १, ७)।

कंड पुंन [**काण्ड**] १ दण्ड, लाठी ; २ निन्दित समुदाय ; ३ पानी, जल ; ४ पर्व ; ५ वृक्ष का स्कन्ध ; ६ वृक्ष की शाखा ; ७ वृक्ष का वह एक भाग, जहाँ से शाखाएँ नीकलती हैं ; ८ ग्रन्थ का एक भाग ; ९ गुच्छ, स्तवक ; १० अश्व, घोड़ा ; ११ प्रेत, पितृ और देवता के यज्ञ का एक हिस्सा ; १२ रीढ़, पृष्ठ भाग की लम्बी हड्डी; १३ खुशामद ; १४ श्लाघा, प्रशंसा ; १५ गुप्तता, प्रच्छन्नता ; १६ एकान्त, निर्जन ; १७ तृण-विशेष ; १८ निर्जन पृथ्वी ; (हे १, ३०)। १९ अवसर, प्रस्ताव ; (गा ६६३)। २० समूह ; (णाया १, ८)। २१ बाण, शर ; (उप ६६६)। २२ देव-विमान-विशेष ; (राज)। २३ पर्वत वगैरः का एक भाग ; (सम ६५)। २४ खण्ड टुकडा, अवयव ; (आचू १)। °**च्छारिय** पुं [°**च्छारिक**] १ इस नाम का एक ग्राम; २ एक ग्राम-नायक ; (वव ७)। देखो **कंडग, कंडय**।

कंड पुं [**दे**] १ फेन, फीन ; २ वि. दुर्बल ; ३ विपन्न, विपत्ति-ग्रस्त ; (दे २, ५१) ।

कंडइअ देखो **कंटइअ**; (गा ५५८) ।

कंडइज्जंत देखो **कंटइज्जंत** ; (गा ६७ अ) ।

कंडग पुंन [**काण्डक**] देखो **कंड**=कागड ; (आचा ; आवम) । २५ संयम-श्रेणि विशेष ; (बृह ३) । २६ इस नाम का एक ग्राम; (आचू १) । देखो **कंडय** ।

कंडण न [**कण्डन**] व्रीहि वगैरः को साफ करना, तुष-पृथक्करण ; (श्रा २०) ।

कंडपंडवा स्त्री [**दे**] यवनिका, पग्दा ; (दे २,२५) ।

कंडय पुंन [**काण्डक**] देखो **कंड**=कागड तथा **कंडग** २७ वृक्ष-विशेष , राक्षसों का चैत्य वृक्ष ; " तुलसी भूयाण भवे, रक्खसाणं च कंडओ " (ठा ८) । २८ तावीज, गगडा, यन्त्र ; " बज्झंति कंडयाइं, पउणीकीरंति अगयाइं " (सुर १६, ३२) ।

कंडरीय पुं [**कण्डरीक**] महापद्म राजा का एक पुत्र, पुण्डरीक का छोटा भाई, जिसने वर्षों तक जैनी दीक्षा का पालन कर अन्त में उसका त्याग कर दिया था ; (णाया १, १९; उव) ।

कंडलि } स्त्री [**कन्दरिका**] गुफा, कन्दरा; (पि ३३३; **कंडलिआ** } हे २, ३८ ; कुमा) ।

कंडवा स्त्री [**कण्डवा**] वाद्य-विशेष ; (राय) ।

कंडार सक [**उत्+कृ**] खुदना, छील-छाल कर ठीक करना । संकृ—

" णूणं दुवे इह पआवइणो जअम्मि,
जे देहणिम्मवणजोव्वणदाणदक्खा ।
एक्के घडेइ पढमं कुमरीणमंगं,
कंडारिऊण पअडेइ पुणो दुईओ" (कप्पू) ।

कंडावेल्ली स्त्री [**काण्डवल्ली**] वनस्पति-विशेष; (पगण १) ।

कंडिअ वि [**कण्डित**] साफ-सुथरा किया हुआ ; (दे १, ११५) ।

कंडियायण न [**कण्डिकायन**] वैशाली (बिहार) का एक चैत्य ; (भग १५) ।

कंडिल्ल पुं [**काण्डिल्य**] १ काण्डिल्य-गोत्र का प्रवर्तक ऋषि-विशेष ; २ पुंस्त्री. काण्डिल्य गोत्र में उत्पन्न ; ३ न. गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है; (ठा ७— पत्र ३९०) । °**यण** पुं [°**यन**] स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष ; (चंद १०) ।

कंडु देखो **कंडू** ; (राज) ।

कंडु देखो **कंदु**; (सूअ १, ५) ।

कंडुअ सक [**कण्डूय्**] खुजवाना । कंडुअइ ; (हे १, १२१ ; उव) । कंडुअए ; (पि ४६२) । वकृ—**कंडुअंत** ; (गा ४६०) ; **कंडुअमाण**; (प्रासू २८) ।

कंडुअ पुं [**कान्दविक**] हलवाई, मिठाई वेचने वाला ; "राया चिंतेइ; कओ कंडुयस्स जलकंतरयणसंपत्ती ?" (आवम)।

कंडुअ } पुं [**कन्दुक**] गेंद ; (दे ३, ५९ ; राज) ।
कंडग }

कंडुज्जुय वि [**काण्डर्जु**] बाण की तरह सीधा ; (स ३१७ ; गा ३५२) ।

कंडुयग वि [**कण्डूयक**] खुजाने वाला ; (ओप) ।

कंडुयण न [**कण्डूयन**] १ खुजली, खाज, पामा, रोग-विशेष ; २ खुजवाना ; " पामागहियस्स जहा, कंडुयणं दुक्खमेव मूढस्स " (स ५१५ ; उव २६४ टी ; गउड) ।

कंडुयय देखो **कंडुयग** ; " अकंडुयएहिं " (पगह २, १— पत्र १००) ।

कंडुरु पुं [**कण्डुरु**] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने रामचन्द्र के भाई भरत के साथ जैनी दीक्षा ली थी; (पउम ८५, ५) ।

कंडू स्त्री [**कण्डू**] १ खुजलाहट, खुजवाना ; (णाया १, ५)) । २ रोग-विशेष, पामा, खाज ; (णाया १, १३) ।

कंडूइ स्त्री [**कण्डूति**] ऊपर देखो; (गा ५३२; सुर २, २३) ।

कंडूइअ न [**कण्डूयित**] खुजवाना ; (सूअ १, ३, ३ ; गा १८१) ।

कंडूय देखो **कंडुअ**=कण्डूय् । कंडूयइ ; (महा) । वकृ — **कंडूयमाण** ; (महा) ।

कंडूयग वि [**कण्डूयक**] खुजवाने वाला ; (ठा ५, १) ।

कंडूयण देखो **कंडुयण** ; (उप २५९ ; सुपा १७९ ; २२७) ।

कंडूयय देखो **कंडुयग** ; (महा) ।

कंडूर पुं [**दे**] बक, बगुला ; (दे २, ९) ।

कंडूल वि [**कण्डूल**] खाज वाला, कगडू-युक्त; कुमा) ।

कंत वि [**कान्त**] १ मनोहर, सुन्दर ; (कुमा) । २ अभिलषित, वाञ्छित ; (णाया १, १) । ३ पुं. पति, स्वामी ; (पाअ) । ४ देव-विशेष ; (सुज्ज १९) । ५ न. कान्ति, प्रभा ; (आचा २, ५, १) ।

कंत वि [**क्रान्त**] गत, गुजरा हुआ ; (प्राप)।

कंता स्त्री [**कान्ता**] १ स्त्री, नारी ; (सुर ३, १४ ; सुपा ५७३)। २ रावण की एक पत्नी का नाम ; (पउम ७४, ११)। ३ एक योग-दृष्टि ; (राज)।

कंतार न [**कान्तार**] १ अरण्य, जङ्गल ; (पाअ)। २ दुष्ट, दूषित ; ३ निराश्रय ; ४ पागल ; (कप्पू)।

कंति स्त्री [**कान्ति**] १ तेज, प्रकाश; (सुर २, २३६)। २ शोभा, सौन्दर्य ; (पाअ)। ३ इस नाम की रावण की एक पत्नी ; (पउम ७४, ११)। ४ अहिंसा ; (पण्ह २, १)। ५ इच्छा ; ६ चन्द्र की एक कला ; (राज ; विक १०७)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] नगरी-विशेष ; (ती)। °**म,** °**ल्ल** पुं [°**मत्**] कान्ति-युक्त ; (आवम; गउड; सुपा ८; १८८)।

कंति स्त्री [**क्रान्ति**] १ परिवर्तन, फेरफार ; २ गमन, गति ; (नाट—विक्र ६०)।

कंतु पुं [**दे**] काम, कामदेव ; (दे २, १)।

कंथक, °थग, °थय पुं [**कन्थक**] अश्व की एक जाति ; (ठा ४, ३ ; उत्त २३)। "जहा से कंबोयाणं आइन्ने कंथए सिया" (उत ११)।

कंथा स्त्री [**कन्था**] कथड़ी, गुदड़ी, पुराने वस्त्र से बना हुआ ओढ़ना ; (हे १, १८७)।

कंथार पुं [**कन्थार**] वृक्ष-विशेष ; (उप २२० टी)।

कंथारिया, कंथारी स्त्री [**कन्थारिका, °री**] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)। °**वण** न [°**वन**] उज्जैन के समीप का एक जंगल, जहां अवन्तीसुकुमार-नामक जैन मुनि ने अनशन व्रत किया था ; (आक)।

कंथेर पुं [**कन्थेर**] वृक्ष-विशेष ; (राज)।

कन्थेरी स्त्री [**कन्थेरी**] कराटकमय वृक्ष-विशेष ; (उर ३, २)।

कंद अक [**क्रन्द्**] क्राँदना, रोना। कंदइ ; (पि २३१)। भूका—कंदिंसु ; (पि ५१६)। वकृ—**कंदंत**; (गा ५८४), **कन्दमाण** ; (गाया १, १)।

कंद वि [**दे**] १ दृढ़, मजबूत ; २ मत्त, उन्मत्त ; ३ न. स्तरण, आच्छादन , (दे २, ५१)।

कंद पुं [**क्रन्द, क्रन्दित**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (ठा २, ३—पत्र ८५)।

कंद पुं [**कन्द**] १ गूदेदार और बिना रेशे की जड ; जैसे—जमीकन्द, सूरन, शकरकन्द, बिलारीकन्द, ओल, गाजर, लहसुन वगैरः ; (जी ६)। २ मूल, जड़ ; (गउड)। ३ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

कंद पुं [**स्कन्द**] कार्तिकेय; षडानन ; (कुमा ; हे २, ५ ; षड्)।

कन्दणया स्त्री [**क्रन्दनता**] मोटे स्वर से चिल्लाना ; (ठा ४, १)।

कंदप्प पुं [**कन्दर्प**] १ कामदेव, अनंग ; (पाअ)। २ कामोद्दीपक हास्यादि ; "कंदप्पे कुक्कुइए" (पडि; गाया १, १)। ३ देव-विशेष ; (पव ७३)। ४ काम-संबन्धी कषाय ; ५ वि. काम-युक्त, कामी ; (बृह १)।

कंदप्प वि [**कान्दर्प**] कन्दर्प-संबन्धी ; (पव ७३)।

कंदप्पि वि [**कन्दर्पिन्**] कामोद्दीपक ; कन्दर्प का उत्तेजक ; (वव १)।

कंदप्पिय पुं [**कान्दर्पिक**] १ मजाक करने वाला भाण्ड वगैरः ; (औप; भग)। २ भाण्ड-प्राय देवों की एक जाति; (पण्ह २, २)। ३ हास्य वगैरः भाण्ड कर्म से आजीविका चलाने वाला ; (पण्ण २०)। ४ वि. काम-संबन्धी; (बृह १)।

कंदर न [**कन्दर**] १ रन्ध्र, विवर ; (गाया १, २)। २ गुहा, गुफा ; (उवा ; प्रासू ७३)।

कंदरा, कंदरी स्त्री [**कन्दरा**] गुहा, गुफा; (मे ४, १६ ; राज)।

कंदल पुं [**कन्दल**] १ अङ्कुर, प्ररोह ; (सुपा ४)। २ लता-विशेष ; (गाया १, ६)।

कंदल न [**दे**] कपाल ; (दे २, ४)।

कंदलग पुं [**कन्दलक**] एक खुर वाला जानवर विशेष ; (पण्ण १)।

कंदलिअ, कंदलिल्ल वि [**कन्दलित**] अङ्कुरित ; (कुमा ; पि ५६५)।

कंदली स्त्री [**कन्दली**] १ लता-विशेष ; (सुपा ६; पउम ५३, ७६)। २ अङ्कुर, प्ररोह ; "दारिद्दुमकंदलीवणदवो" (उप ७२८ टी)।

कंदविय पुं [**कान्दविक**] हलवाई, मिठाई बेचने वाला ; (उप २११ टी)।

कंदिंद पुं [**क्रन्देन्द्र, क्रन्दितेन्द्र**] क्रन्दित-नामक देव-निकाय का इन्द्र ; (ठा २, ४—पत्र ८५)।

कंदिय पुं [**क्रन्दित**] १ वाणव्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १, ४ ; औप)। २ न. रोदन, आक्रन्द ; (उत्त २)।

कंदिर वि [**क्रन्दिन्**] कांदने वाला ; (भवि)।

कंदी स्त्री [**दे**] मूला, कन्द-विशेष ; (दे २, १)।

कंदु पुंस्त्री [**कन्दु**] एक प्रकार का बरतन, जिसमें माण्ड वगैरः पकाया जाता है, हाँड़ा ; (विपा १, ३ ; सूत्र १, ५)।

कंदुअ पुं [**कन्दुक**] १ गेंद ; (पात्र ; स्वप्न ३६ ; मै ६१)। २ वनस्पति-विशेष ; (पराण १)।

कंदुइअ पुं [**कान्दविक**] हलवाई, मिठाई बेचने वाला ; (दे २, ४१ ; ६, ६३)।

कंदुग देखो **कंदुअ** ; (राज)।

कंदुट्ट (**दे**) देखो **कंदोट्ट** ; (पात्र ; धर्मा ५ ; सण)।

कंदोइय देखो **कंदुइअ** ; (सुपा ३८५)।

कंदोट्ट न [**दे**] नील कमल ; (दे २, ६ ; प्राप्र ; षड् ; गा ६२२ ; उत्तर ११७ ; कप्पू ; भवि)।

कंध देखो **खंध**=स्कन्ध ; (नाट ; वज्जा ३६)।

कंधरा स्त्री [**कन्धरा**] ग्रीवा, गरदन ; (पात्र ; सुर ४, १६६ ; गण ६)।

कंधार पुं [**दे** [स्कन्ध, ग्रीवा का पीछला भाग ; (उप पृ ८६)।

कंप अक [**कम्प्**] काँपना, हिलना। कंपइ ; (हे १, ३०)। वकृ—**कंपंत, कंपमाण**; (महा; कप्प)। कवकृ-**कंपिज्जंत** ; (से ६, ३८ ; १३, ५६)। प्रयो, वकृ—**कंपाविंत** ; (सुपा ५६३)।

कंप पुं [**कम्प**] अस्थैर्य, चलन, हिलन ; (कुमा ; आउ)।

कंपड पुं [**दे**] पथिक, मुसाफिर ; (दे २, ७)

कंपण न [**कम्पन**] १ कम्प, हिलन ; (भवि)। २ राग-विशेष। °**वाइअ** वि [°**वातिक**] कम्प वायु नामक रोग वाला ; (अनु ६)।

कंपि वि [**कम्पिन्**] काँपने वाला ; (कप्पू)।

कंपिअ वि [**कम्पित**] काँपा हुआ ; (कुमा)।

कंपिर वि [**कम्पितृ**] काँपने वाला ; (गा ६५६ ; सुपा १५८ ; श्रा २७)।

कंपिल्ल वि [**कम्पवत्**] काँपने वाला, अस्थिर ; "निच्चमकंपिल्लं परभयाहि कंपिल्लनामपुरं" (उप ६ टी)।

कंपिल्ल पुं [**काम्पिल्य**] १ यदुवंशीय राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम ; (अन्त ३)। २ पञ्जाब देश का एक नगर ; (ठा १० ; उप ६४८ टी)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (पउम ८, १४३ ; उवा)।

कंब वि [**कम्र**] १ कामुक, कामी ; २ सुन्दर, मनोहर ; (पि २६५)।

कंबं देखो **कंबा**।

कंबर पुं [**दे**] विज्ञान ; (दे २, १३)।

कंबल पुंन [**कम्बल**] १ कामरी, ऊनी कपड़ा ; (आचा ; भग)। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक बलीवर्द ; (राज)। ३ गौ के गले का चमड़ा, सास्ना ; (विपा १, २)।

कंबा स्त्री [**कम्बा**] यष्टि, लकडी ; "दिट्ठो तज्जणएणं, निसडिउं कंबघाएहिं बद्धो" (सुपा ३६६)।

कंबि } स्त्री [**कम्बि, °म्बी**] १ दर्वी, कड़छी। २ **कंबी** } लीला-यष्टि, छड़ी, शौख से हाथ में रखी जाती लकड़ी; (उप पृ २३७)।

कंबु पुं [**कम्बु**] १ शङ्ख; (पण्ह १, ४)। २ इस नाम का एक द्वीप ; (पउम ४५, ३२)। ३ पर्वत-विशेष; (पउम ४५, ३२)। ४ न. एक देव-विमान ; (सम २२)। °**ग्गीव** न [°**ग्रीव**] एक देव-विमान; (सम २२)।

कंबोय पुं [**कम्बोज**] देश-विशेष ; (पउम २७, ७ ; स ८०)।

कंबोय वि [**काम्बोज**] कम्बोज देश में उत्पन्न ; (स ८०)।

कंभार पुं.ब. [**कश्मीर**] इस नाम का एक प्रसिद्ध देश ; (हे २, ६८ ; षड्)। °**जम्म** न [°**जन्मन्**] कुङ्कुम, केसर ; (कुमा)। देखो **कम्हार**।

कंभूर (अप) ऊपर देखो ; (षड्)।

कंस पुं [**कंस**] १ राजा उग्रसेन का एक पुत्र, श्रीकृष्ण का मातुल ; (पण्ह १, ४)। २ महाग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ काँसा, एक प्रकार की धातु ; (णाया १, ७—पत्र ११८)। °**णाभ** पुं [°**नाभ**] ग्रह विशेष ; (सुज्ज २० ; इक)। °**वण्ण** पुं [°**वर्ण**] ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८)। °**वण्णाभ** पुं [°**वर्णाभ**] ग्रह-विशेष, (ठा २, ३)। °**संहारण** पुं [°**संहारण**] कृष्ण, विष्णु ; (पिंग)।

कंस न [**कांस्य**] १ धातु-विशेष, काँसा; २ वाद्य-विशेष ; ३ परिमाण-विशेष ; ४ जल पीने का पात्र, प्याला ; (हे १, २६; ७०)। °**ताल** न [°**ताल**] वाद्य-विशेष ; (जीव ३)। °**पत्ती, °पाई** स्त्री [°**पात्री**] काँसा का बना हुआ पात्र-विशेष ; (कप्प ; ठा ६)। °**पाय** न [°**पात्र**] काँसा का बना हुआ पात्र ; (दस ६)।

कंसार पुं [**दे**] कसार, एक प्रकार की मिठाई ; " ता करेऊण कंसार तालपुडसंजुयं चेगं विसमोयगं गोसे उवणेमि एयाणं " (स १८७)।

कंसारी स्त्री [**दे**] त्रीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु की एक जाति ; (जी १८)।

कंसाल पुं [**कांस्याल**] वाद्य-विशेष; (हे २, ६२; सुपा ५०)।

कंसाला स्त्री [**कंसताला, कांस्यताला**] वाद्य का एक प्रकार का निर्घोष, ताल ; (णंदि)।

कंसालिया स्त्री [**कांस्यतालिका**] एक प्रकार का वाद्य ; (सुपा २४२)।

कंसिअ पुं [**कांस्यिक**] १ कसेरा, कँसारी, कांस्य-कार; (हे १, ७०)। २ वाद्य-विशेष ; (सुपा २४२)।

कंसिआ स्त्री [**कंसिका**] १ ताल ; (गाया १, १७)। २ वाद्य-विशेष ; (आचा २)।

ककुध } **ककुभ** } देखो **कउह**=ककुद ; (पि २०६ ; हे २, १७४)।

ककुह देखो **कउह** = ककुद; (ठा ५, १ ; णाया १, १७ ; विपा १, २)। ५ हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ६६)।

ककुहा देखो **कउहा** ; (षड्)।

कक्क पुं [**कल्क**] १ उद्वर्तन-द्रव्य, शरीर पर का मैल दूर करने के लिए लगाया जाता द्रव्य ; (सूअ १, ६ ; निचू १)। २ न. पाप ; (भग १२, ५)। ३ माया, कपट ; (सम ७१)। °**गरुग** न [°**गुरुक**] माया, कपट; (पण्ह १, २—पत्र २८)।

कक्कंध पुं [**कर्कन्ध**] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)।

कक्कंधु स्त्री [**कर्कन्धु**] बेर का वृक्ष ; (पाअ)।

कक्कड न [**कर्कट**] १ जलजन्तु-विशेष; कुलीर ; (पाअ)। २ ककडी, फल-विशेष; (पव ४)। ३ हृदय का एक प्रकार का वायु ; (भग १०, ३)।

कक्कडच्छ पुं [**कर्कटाक्ष**] ककड़ी, खीरा ; (कप्प)।

कक्कडिया } स्त्री [**कर्कटिका, °टी**] ककडी (खीरा) **कक्कडी** } का गाछ ; (उप ६६१)।

कक्कणा स्त्री [**कल्कना**] १ पाप; २ माया ; (पण्ह १, २)।

कक्कर पुं [**कर्कर**] १ कंकर, पत्थर ; (विपा १, २ ; गउड ; सुपा ५६७ ; प्रासू १६८)। २ कठिन, परुष ; (आचू ४)। ३ कर्कर आवाज वाला; (उत ७)।

कक्करणया स्त्री [**कर्करणता**] १ दोषोद्भावन; दोषोद्भावन-गर्भित प्रलाप; (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

कक्कराइय न [**कर्करायित**] १ कर्कर की तरह आचरित। २ दोषोच्चारण, दोष प्रकटन ; (आव ४)।

कक्कस वि [**कर्कश**] १ कठोर, परुष ; (पाअ ; सुपा ५८ ; आरा ६४ ; पउम ३१, ६६)। २ प्रखर, चण्ड; ३ तीव्र; प्रगाढ ; (विपा १, १)। ४ अनिष्ट, हानि-कारक ; (भग ६, ३३)। ५ निष्ठुर, निर्दय ; (उत्ता)। ६ चवा २ कर कहा हुआ वचन ; (आचा २, ४, १)।

कक्कस } **कक्कसार** } पुं [**दे**] दध्योदन, करम्ब ; (दे २, १४)।

कक्कसेण पुं [**कर्कसेन**] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक स्वनाम-ख्यात कुलकर पुरुष ; (राज)।

कक्कारुआ स्त्री [**कर्कारुका**] १ कूष्माण्ड-वल्ली, कोहला का गाछ; " कक्कारुआ गोछडलित्तवेंटा " (मृच्छ ५६)।

कक्कि पुं [**कल्किन्**] भविष्य में होने वाला पाटलिपुत्र का एक राजा ; (ती)।

कक्किय न [**कल्किक**] मांस ; (सूअ १, ११)।

कक्केअण पुंन [**कर्केतन**] रत्न की एक जाति ; (कप्प; पउम ३, ७५)।

कक्केरअ पुं [**कर्केरक**] मणि-विशेष की एक जाति ; (मृच्छ २०२)।

कक्कोड न [**कर्कोट**] शाक विशेष ; ककरैल, कक्कोंडा ; (राज)। देखो **कक्कोडय**।

कक्कोडई स्त्री [**कर्कोटकी**] ककोड का वृक्ष, ककरैल का गाछ ; (पगण १—पत्र ३३)।

कक्कोडय न [**कर्कोटक**] देखो **कक्कोड**। २ पुं. अनुवेलन्धर-नामक एक नाग-राज ; ३ उसका आवास-पर्वत ; (भग ३, ६ ; इक)।

कक्कोल पुं [**कङ्कोल**] १ वृक्ष-विशेष; शीतलचीनी के वृक्ष का एक भेद ; (गउड; स ७१)। २ न. फल-विशेष, जो सुगंधी होता है ; (पगह २, ५)। देखो **कंकोल**।

कक्ख देखो **कच्छ**=कक्ष ; (उव ; कप्प ; सुर १, ८८ ; पउम ४४, १ ; पि ३१८ ; ४२०)।

कक्खड देखो **कक्कस**; (सम ४१ ; ठा १, १ ; वज्जा ८४ ; उव)।

कक्खड वि [दे] पीन, पुष्ट ; (दे २, ११ ; कप्प ; आचा ; भवि)।
कक्खडंगी स्त्री [दे] सखी, सहेली ; (दे २, १६)।
कक्खल [दे] देखो **कक्कस** ; (षड्)।
कक्खा देखो **कच्छा**=कक्षा ; (पात्र ; गाया १, ८ ; सुर ११, २२१)।
कग्घाड पुं [दे] १ अपामार्ग, चिरचिरा, लटजीरा ; २ किलाट, दूध की मलाई ; (दे २, ५४)।
कग्घायल पुं [दे] किलाट, दूध का विकार, दूध की मलाई ; २, २२)।
कच्च न [दे. कृत्य] कार्य, काम ; (दे २, २ ; षड्)।
कच्च (पै) देखो **कज्ज** ; (प्राप्र)।
कच्च न [काच] काच, शीशा ; "कच्चं माणिक्कं च समं आहरणे पउंजीअदि" (कप्पू)।
कच्चंत वि [कृत्यमान] पीडित किया जाता ; (सूत्र १, २, १)।
कच्चरा स्त्री [दे] १ कचरा, कच्चा खरबूजा; २ कचरा को सूखाकर, तलकर और मसाला डालकर बनाया हुआ खाद्य विशेष, एक प्रकार का आचार, गुजराती में जिसको 'काचरी' कहते हैं ; "पुणो कच्चरा पप्पड़ा दिएणभेया" (भवि)।
कच्चवार पुं [दे] कतवार, कूड़ा ; (सूक्त ४४)।
कच्चाइणी स्त्री [कात्यायनी] देवी-विशेष, चण्डी ; (स ४३७)।
कच्चायण पुं [कात्यायन] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष; (सुज्ज १०)। २ न. कौशिक गोत्र की शाखा-रूप एक गोत्र ; ३ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)।
कच्चायणी स्त्री [कात्यायनी] पार्वती, गौरी ; (पात्र)।
कच्चि अ [कच्चित्] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ प्रश्न ; २ मंगल ; ३ अभिलाप ; ४ हर्ष ; (पि २७१; हे २, २१७; २१८)।
कच्चु (अप) ऊपर देखो (हे ४, ३२६)।
कच्चूर पुं [कर्चूर] वनस्पति-विशेष, कचूर, काली हलदी; (श्रा २०)।
कच्चोल } पुंन [कच्चोलक] पात्र-विशेष, प्याला ;
कच्चोलय } (पउम १०२, १२० ; भवि ; सुपा २०१)।
कच्छ पुं [कक्ष] १ काँख, कखरी ; २ वन, जंगल ; (भग ३, ६)। ३ तृण, घास ; ४ शुष्क तृण ; ५ वल्ली, लता ; ६ शुष्क काष्ठों वाला जंगल ; ७ राजा वगैरः का जनानखाना ; ८ हाथी को बाँधने का डोर ; ९ पार्श्व, बाजु ; १० ग्रह-भ्रमण ; ११ कक्षा, श्रेणी ; १२ द्वार, दरवाजा ; १३ वनस्पति-विशेष, गूगल ; १४ बिभीतक वृक्ष; १५ घर की भींत ; १६ स्पर्धा का स्थान ; १७ जल-प्राय देश; (हे २, १७)।
कच्छ पुं. ब. [कच्छ] १ स्वनाम-ख्यात देश, जो आज कल भी 'कच्छ' नाम से प्रसिद्ध है; (पउम ९८, ६४ ; दे २, १ टी)। २ जलप्राय देश, जल-बहुल देश; (गाया १, १—पत्र ३३ ; कुमा)। ३ कच्छा; लँगोट ; (सुर २, १६)। ४ इक्षु वगैरः की वाटिका ; (कुमा ; आचा २, ३)। ५ महाविदेह वर्ष में स्थित एक विजय-प्रदेश ; (ठा २, ३)। ६ तट, किनारा ; "गोलाणईए कच्छे, चक्खंतो राइआइ पत्ताइं" (गा १७१)। ७ नदी के जल से वेष्टित वन ; (भग)। ८ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र ; (आवम)। ९ कच्छ-विजय का एक राजा; १० कच्छ-विजय का अधिष्ठायक देव ; (जं ४)। ११ पार्श्ववर्ती प्रदेश ; १२ राजा वगैरः के उद्यान के समीप का प्रदेश ; (उप ६८६ टी)। १२ छन्द-विशेष, दोधक छंद का एक भेद ; (पिंग)। °**कूड** न [°**कूट**] १ माल्यवन्त-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर; २ कच्छ-विजय के विभाजक वैताढ्य पर्वत के दक्षिणोत्तर पार्श्ववर्ती दो शिखर ; (ठा ९)। ३ चित्रकूट पर्वत का एक शिखर ; (जं ४)। °**हिव** पुं [°**धिप**] कच्छ देश का राजा ; (भवि)। °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] कच्छ देश का राजा; (भवि)।
कच्छगावई स्त्री [कच्छकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय-प्रदेश ; (ठा २, ३)।
कच्छट्टी स्त्री [दे] कछौटी, लंगोटी, कछनी ; (रंभा—टि)।
कच्छभ पुं [कच्छप] १ कूर्म, कछुआ ; (पगह १, १; गाया १, १)। २ राहु, ग्रह-विशेष ; (भग १२, ६)। °**रिंगिय** न [°**रिङ्गित**] गुरु-वन्दन का एक दोष, कछुए की तरह चलते हुए वन्दन करना ; (बृह ३ ; गुभा)।
कच्छभी स्त्री [कच्छपी] १ कच्छप-स्त्री, कूर्मी। २ वाद्य-विशेष; (पगह २, ५)। ३ नारद की वीणा; (गाया १, १७)। ४ पुस्तक-विशेष ; (ठा ४, २)।
कच्छर पुं [दे] पङ्क, कीच, कर्दम ; (दे २, २)।
कच्छरी स्त्री [कच्छरी] गुच्छ-विशेष ; (पराण १—पत्र ३२)।

कच्छव (अप) पुं [**कच्छ**] स्वनाम-प्रसिद्ध देश-विशेष ; (भवि)।

कच्छअ देखो **कच्छभ** ; (पउम ३४, ३३ ; दे १, १६७ ; गउड)।

कच्छवी देखो **कच्छभी** ; (बृह ३)।

कच्छह देखो **कच्छभ** ; (पाअ)।

कच्छा स्त्री [**कक्षा**] १ विभाग, अंश; (पउम १६, ७०)। २ उरो-बन्धन, हाथी के पेट पर बाँधने की रज्जू ; "उप्पीलियकच्छे" (विपा १, २—पत्र २३ ; औप)। ३ काँख, बगल ; (भग ३, ६ ; प्रामा)। ४ श्रेणि, पङ्क्ति; "चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवस्स सत्त कच्छाओ पण्णत्ताओ" (ठा ७)। ५ कमर पर बाँधने का वस्त्र ; (गा ६८४)। ६ जनानखाना, अन्तःपुर ; (ठा ७)। ७ संशय-कोटि ; ८ स्पर्धा-स्थान ; ९ घर की भींत; १० प्रकोष्ठ ; (हे २, १७)।

कच्छा स्त्री [**कच्छा**] कटि-मेखला, कमर का आभूषण ; (पाअ)। °**वई** स्त्री [°**वती**] देखो **कच्छगावई** ; (जं ४)। °**वईकूड** न [°**वतीकूट**] महाविदेह वर्ष में स्थित ब्रह्मकूट पर्वत का एक शिखर ; (इक)।

कच्छु स्त्री [**कच्छू**] १ खुजली, खाज, रोग-विशेष; (प्रासू २८)। २ खाज को उत्पन्न करने वाली ओषधि, कपिकच्छु; (पण्ह २, ५)। °**ल**, °**ल्ल** वि [°**मत्**] खाज रोग वाला; (राज ; विपा १, ७)।

कच्छुट्टिया स्त्री [**दे. कच्छपटिका**] कछौटी, लंगोटी ; (रंभा)।

कच्छुरिअ वि [**दे**] १ ईर्षित, जिसकी ईर्ष्या की जाय वह; २ न. ईर्ष्या ; (दे २, १६)।

कच्छुरिअ वि [**कच्छुरित**] व्याप्त, खचित ; (कुम्मा ६ टी)।

कच्छुरी स्त्री [**दे**] कपिकच्छु, केवाँच ; (दे २, ११)।

कच्छुल पुं [**कच्छुल**] गुल्म-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३२)।

कच्छुल्ल पुं [**कच्छुल्ल**] स्वनाम-ख्यात एक नारद-मुनि; (णाया १, १६)।

कच्छू देखो **कच्छु** ; (प्रासू ७२)।

कच्छोटी स्त्री [**दे**] कछौटी, लंगोटी ; (रंभा—टि)।

कज्ज वि [**कार्य**] १ जो किया जाय वह ; २ करने योग्य; ३ जो किया जा सके ; (हे २, २४)। ४ प्रयोजन, उद्देश्य ; "न य साहेइ सकज्जं" (प्रासू २७ ; कप्पू)। ५ कारण, हेतु ; (वव २)। ६ काम, काज ;

"अन्नह परिचिंतिज्जइ, सहरिसकंडुज्जएण हियएण।
परिणमइ अन्नह च्चिय, कज्जारंभो विहिवसेण"
(सुर ४, १६)।

°**जाण** वि [°**ज्ञ**] कार्य को जानने वाला ; (उप ६४८)। °**सेण** पुं [°**सेन**] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न स्वनाम-ख्यात एक कुलकर-पुरुष ; (सम १५०)।

कज्जउड पुं [**दे**] अनर्थ ; (दे २, १७)।

कज्जमाण वि [**क्रियमाण**] जो किया जाता हो वह; "कज्जं च कज्जमाणं च आगमिस्सं च पावगं" (सूअ १,८)।

कज्जल न [**कज्जल**] १ काजल, मसी; २ अञ्जन, सुरमा; (कुमा)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] सुदर्शना-नामक जम्बू-वृक्ष की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी; (जीव ३)।

कज्जलइअ वि [**कज्जलित**] १ काजल वाला; २ श्याम, कृष्ण; (पाअ)।

कज्जलंगी स्त्री [**कज्जलाङ्गी**] कज्जल-गृह, दीप के ऊपर रखा जाता पात्र, जिसमें काजल इकट्ठा होता है, कजरौटी ; (अंत; णाया १ १—पत्र ६)।

कज्जला स्त्री [**कज्जला**] इस नाम की एक पुष्करिणी; (इक)।

कज्जलाव अक [**ब्रुड्**] डूबना, बूडना। "आउसंतो समणा! एयं ते णावाए उदयं उत्तिंगेण आसवइ, उवरुवरि वा णावा कज्जलावेइ" (आचा २, ३, १, १६)। वकृ—**कज्जलावेमाण** ; (आचा २, ३, १, १६)।

कज्जलिअ देखो **कज्जलइअ** ; (से २, ३६ ; गउड)।

कज्जव } पुं [**दे**] १ विष्ठा, मैला ; २ तृण वगैरः का
कज्जवय } समूह, कूडा, कतवार; (दे २, ११ ; उप १७६; ५६३ ; स २६४ ; दे ६, ५६; अणु)।

कज्जिय वि [**कार्यिक**] कार्यार्थी, प्रयोजनार्थी ; (वव ३)।

कज्जोवग पुं [**कार्योपग**] अठासी महाग्रहों में एक ग्रह का नाम ; (ठा २, ३—पत्र ७८)।

कज्झाल न [**दे**] सेवाल, एक प्रकार की घास, जो जलाशयों में लगती है ; (दे २, ८)।

कटरि (अप) अ [**कटरे**] इन अर्थों का द्योतक अव्यय;—१ आश्चर्य, विस्मय ; "कटरि थणंतरु मुद्धडहे, जे मणु विच्चि न माइ" (हे ४, ३५०)। २ प्रशंसा, श्लाघा ;

" कटरि भालु सुविसालु, कटरि मुहकमल पसन्निम " (धम्म ११ टी)।

कटार (अप) न [**दे**] छुरी, चुरिका ; (हे ४, ४४५)।

कट्ट सक [**कृत्**] काटना, छेदना। कट्टइ; (भवि)। संकृ— **कट्टि, कट्टिवि, कट्टिअ** ; (रंभा ; भवि ; पिंग)।

कट्ट वि [**कृत्त**] काटा हुआ, छिन्न ; (उप १८०)।

कट्ट न [**कष्ट**] १ दुःख ; २ वि. कष्ट-कारक, कष्ट-दायी ; (पिंग)।

कट्टर न [**दे**] खण्ड, अंश, टुकड़ा ; " से जहा चित्तय-कट्टरे इ वा वियाणपट्टे इ वा " (अनु)।

कट्टारय न [**दे**] छुरी, शस्त्र-विशेष ; (स १४३)।

कट्टारी स्त्री [**दे**] चुरिका, छुरी ; (दे २, ४)।

कट्टिअ वि [**कर्त्तित**] काटा हुआ, छेदित ; (पिंग)।

कट्टु वि [**कर्त्तृ**] कर्ता, करने वाला ; (षड्)।

कट्टु अ [**कृत्वा**] करके ; (गाया १, ५ ; कप्प ; भग)।

कट्टोरग पुं [**दे**] कटोरा, प्याला, पात्र-विशेष ; " तओ पासेहिं करोडगा कट्टोरगा मंकुआ सिप्पाओ य ठविज्जंति " (निचू १)।

कट्ठ न [**कष्ट**] १ दुःख, पीड़ा, व्यथा ; (कुमा)। २ पाप ; ३ वि. कष्ट-दायक, पीड़ा-कारक ; (हे २, ३४ ; ९०)। °**हर** न [°**गृह**] कठघरा, काठ की बनी हुई चार-दिवारी ; (सुर २, १८१)।

कट्ठ न [**काष्ठ**] काठ, लकडी ; (कुमा; सुपा ३५४)। २ पुं राजगृह नगर का निवासी एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी। (आवम)। °**कम्मंत** न [°**कर्मान्त**] लकड़ी का कार-खाना ; (आचा २, २)। °**करण** न [°**करण**] स्यामक-नामक गृहस्थ के एक खेत का नाम; (कप्प)। °**कार** पुं [°**कार**] काठ-कर्म से जीविका चलाने वाला; (अणु)। °**कोलंब** पुं [°**कोलम्ब**] वृक्ष की शाखा के नीचे झुकता हुआ अग्र-भाग ; (अनु)। °**खाय** पुं [°**खाद**] कीट-विशेष, घुण ; (ठा ४)। °**दल** न [°**दल**] रहर की दाल ; (राज)। °**पाउया** स्त्री [°**पादुका**] काठ का जुता, खडाऊँ ; (अनु ४)। °**पुत्तलिया** स्त्री [°**पुत्तलिका**] कठपुतली ; (अणु)। °**पेज्जा** स्त्री [°**पेया**] १ मुंग वगैरः का क्वाथ ; २ घृत से तली हुई तण्डुल की राब ; (उवा)। °**महु** न [°**मधु**] पुष्प-मकरन्द ; (कुमा)। °**मूल** न [°**मूल**] द्विदल धान्य, जिसका दो टुकड़ा समान होता है ऐसा चना, मुंग आदि अन्न ; (बृह १)। °**हार** पुं [°**हार**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष ; (जीव १)। °**हारय** पुं [°**हारक**] कठहरा, लकड़हारा ; (सुपा ३८५)।

कट्ठ वि [**कृष्ट**] विलिखित, चासा हुआ ; " खीरदुमहेट्ठपंथ-कट्ठोल्ला इंधणे य मीसो य " (ओघ ३३६)।

कट्ठण न [**कर्षण**] आकर्षण, खींचाव ; (गउड)।

कट्ठा स्त्री [**काष्ठा**] १ दिशा ; (सम ८८)। २ हद, सीमा ; " कवडस्स अहो परा कट्ठा " (श्रा १६)। ३ काल का एक परिमाण, अठारह निमेष ; (तंदु)। ४ प्रकर्ष ; (सुज्ज ६)।

कट्ठिअ पुं [**दे**] चपरासी, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कट्ठिअ वि [**काष्ठित**] काठ से संस्कृत भीत वगैरः; (आचा २, २)।

कट्ठिण देखो **कढिण** ; (नाट—मालती ५६)।

कड वि [**दे**] १ क्षीण, दुर्बल ; २ मृत, विनष्ट ; (दे २, ५१)।

कड वि [**कट**] १ गण्ड-स्थल, गाल ; (गाया १, १—पत्र ६५)। २ तृण, घास ; ३ चटाई, आस्तरण-विशेष ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। ४ लकडी, यष्टि ; " तेसिं च जुद्धं लयालिट्ठुकडपासाणदंतनिवाएहिं " (वसु)। ५ वंश, बाँस; (विपा १, ६; ठा ४, ४)। ६ तृण-विशेष ; (ठा ४, ४)। ७ छिला हुआ काष्ठ ; (आचा २, २, १)। °**च्छेज्ज** न [°**च्छेद्य**] कला-विशेष ; (औप ; जं २)। °**तड** न [°**तट**] १ कटक का एक भाग; २ गण्ड-तल ; (गाया १, १)। °**पूयणा** स्त्री [°**पूतना**] व्यन्तरी-विशेष ; (विसे २५४६)।

कड वि [**कृत**] १ किया हुआ, बनाया हुआ, रचित ; (भग ; पगह २, ४ ; विपा १, १ ; कप्प ; सुपा १६)। २ युग-विशेष, सत्ययुग ; (ठा ४, ३)। ३ चार की संख्या; (सुअ १, २)। °**जुग** न [°**युग**] सत्य युग, उन्नति का समय, आदि युग, १७२८००० वर्षों का यह युग होता है; (ठा ४, ३)। °**जुम्म** पुं [°**युग्म**] सम राशि-विशेष, चार से भाग देने पर जिसमें कुछ भी शेष न बचे ऐसी राशि ; (ठा ४, ३)। °**जुम्मकडजुम्म** पुं [°**युग्म-कृतयुग्म**] राशि-विशेष ; (भग ३४, १)। °**जुम्मक-**

लिओय [°युग्मकल्योज] राशि-विशेष; (भग ३४, १)। °जुम्मतेओग पुं [°युग्मत्र्योज] राशि-विशेष ; (भग ३४, १)। °जुम्मदावरजुम्म पुं [°जुग्मद्वापरयुग्म] राशि-विशेष ; (भग ३४, १) °जोगि वि [°योगिन्] १ कृत-क्रिय; (निचू १)। २ गीतार्थ, ज्ञानी ; (ओघ १३४ भा)। ३ तपस्वी ; (निचू १)। °वाइ पुं [°वादिन्] सृष्टि को नैसर्गिक न मान कर किसी की बनाई हुई मानने वाला, जगत्कर्तृत्व-वादी ; (सूम १, १, १)। °इ पुं [°दि] देखो °जोगि; (भग; णाया १, १—पत्र ७४)। देखो कय=कृत।

कडअल्ल पुं [दे] दौवारिक, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कडअल्ली स्त्री [दे] कण्ठ, गला ; (दे २, १५)।

कडइअ पुं [दे] स्थपति, वढई ; (दे २, २२)।

कडइअ वि [कटकित] वलय की तरह स्थित ; (से १२, ४१)।

कडइल्ल पुं [दे] दौवारिक, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कडंगर न [कडङ्गर] तुष, छिलका ; (सुपा १२६)।

कडंत न [दे] मूली, कन्द-विशेष ; २ मुसल ; (दे २, ५६)।

कडंतर न [दे] पुराना सूर्प आदि उपकरण ; (दे २, १६)।

कडंतरिअ वि [दे] दारित, विदारित, विनाशित; (दे २, २०)।

कडंब पुं [कडम्ब] वाद्य-विशेष ; (विसे ७८ टी)।

कडंभुअ न [दे] १ कुम्भग्रीव-नामक पात्र-विशेष; २ घडे का कण्ठ-भाग ; (दे २, २०)।

कडक देखो कडग ; (नाट—रत्ना ५८)।

कडकडा स्त्री [कडकडा] अनुकरण-शब्द विशेष, कड-कड आवाज; (स २५७ ; पि ५५८; नाट—मालती ५६)।

कडकडिअ वि [कडकडित] जिसने कड़-कड़ आवाज किया हो वह, जीर्ण ; (सुर ३, १६३)।

कडकडिर वि [कडकडायितृ] कड-कड आवाज करने वाला ; (सण)।

कडक्ख पुं [कटाक्ष] कटाक्ष, तिरछी चितवन, भाव-युक्त दृष्टि, आँख का संकेत ; (पाअ ; सुर १,४३; सुपा ६)।

कडक्ख सक [कटाक्षय्] कटाक्ष करना। कडक्खइ ; (भवि)। संकृ—कडक्खेवि ; (भवि)।

कडक्खण न [कटाक्षण] कटाक्ष करना ; (भवि)।

कडक्खिअ वि [कटाक्षित] १ जिस पर कटाक्ष किया गया हो वह ; (रंभा)। २ न. कटाक्ष ; (भवि)।

कडग पुंन [कटक] १ कडा, वलय, हाथ का आभूषण-विशेष ; (णाया १, १)। २ यवनिका, परदा ; "अन्नस्स सगगमणं होही कडंतरेण तं सव्वं। निसुयमुव-ज्झाएणं" (उप १६६ टी)। ३ पर्वत का मूल भाग ; ४ पर्वत का मध्य भाग ; ५ पर्वत की सम भूमि; ६ पर्वत का एक भाग ; "गिरिकंदरकडगविसमदुग्गेसु" (पव ८२ ; पण्ह १, ३ ; णाया १, ४ ; १८)। ७ शिबिर, सेना रहने का स्थान; (बृह २)। ८ पुं. देश-विशेष; (णाया १, १—पत्र ३३)। देखो कडय।

कडच्छु स्त्री [दे] कर्छी, चमची, डोई ; (दे २, ७)।

कडण न [कदन] १ मार डालना, हिंसा ; (कुमा)। २ नाश करना ; ३ मर्दन ; ४ पाप ; ५ युद्ध ; ६ विह्वलता, आकुलता ; (हे १, २१७)।

कडण न [कटन] १ घर की छत ; २ घर पर छत डालना; (गच्छ १) ।

कडणा स्त्री [कटना] घर का अवयव-विशेष ; (भग ८, ६)।

कडणी स्त्री [कटनी] मेखला ; "सुरगिरिकडणिपरिट्ठिय-चंदाइच्चाण सिरिमणुहरंति" (सुपा ६१५)।

कडतला स्त्री [दे] लोहे का एक प्रकार का हथियार, जो एक धार वाला और वक्र होता है ; (दे २, १६)।

कडत्तरिअ [दे] देखो कडंतरिअ ; (भवि)।

कडद्दरिअ वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ ; २ न. छिद्रता ; (षड्)।

कडप्प पुं [दे. कटप्र] १ समूह, निकर, कलाप ; (दे २, १३ ; षड् ; गउड ; सुपा ६२ ; भवि ; विक्र ६५)। २ वस्त्र का एक भाग ; (दे २, १३)।

कडय देखो कडग; (सुर १, १६३; पाअ ; गउड; महा; सुपा १६२ ; दे ५, ३३)। ६ लश्कर, सैन्य ; (ठा ६)। १० पुं. काशी देश का एक राजा; (महा)। °वई स्त्री [°वती] राजा कटक की एक कन्या ; (महा)।

कडयड पुं [कडकड] कड़-कड़ आवाज; "कत्थइ खरपव-हाणयकडम (? य) डभज्जंतदुमगहणं" (पउम ६४, ४४)।

कडयडिय वि [दे] परावर्तित, फिराया हुआ, घुमाया हुआ; "नं कुम्मह कडयडिय पिट्ठि नं पविहउ गिरिवरु" (सुपा १७६)।

कडसक्करा स्त्री [दे] वंश-शलाका, बाँस की सलाई; (विपा १, ६)।

कडसी स्त्री [दे] श्मशान, मसाण ; (दे २, ६)।

कडहू पुं [**कटभू**] वृक्ष-विशेष ; (बृह १)।

कडा स्त्री [दे] कडी, सिकली, जंजीर की लडी ; "वियडकवाडकडाणं खडक्खग्रो निसुणिग्रो तत्तो" (सुपा ४१४)।

कडार न [दे] नालिकेर, नरियर ; (दे २, १०)।

कडार पुं [**कडार**] १ वर्ण-विशेष, तामड़ा वर्ण, भूरा रंग ; २ वि. कपिल वर्ण वाला, भूरा रंग का, मटमैला रंग का ; (पाग्र ; रयण ७७ ; सुपा ३३; ६२)।

कडाली स्त्री [दे. **कटालिका**] घोड़े के मुँह पर बाँधने का एक उपकरण ; (ग्रनु ६)।

कडाह पुं [**कटाह**] १ कडाह, लोहे का पात्र, लोहे की बड़ी कड़ाही ; (ग्रनु ६ ; नाट—मृच्छ ३)। २ वृक्ष-विशेष ; (पउम १३, ७६)। ३ पाँजर की हड्डी, शरीर का एक ग्रवयव ; (पग्ग १)।

कडाहपल्हत्थिअ न [दे] दोनों पार्श्वों का ग्रपवर्तन, पार्श्वों को घुमाना-फिराना ; (दे २, २५)।

कडि स्त्री [**कटि**] १ कमर, कटी ; (विपा १, २ ; ग्रनु ६)। २ वृक्षादि का मध्य भाग ; (जं १)। °**तड** न [°**तट**] १ कटी-तल ; २ मध्य भाग ; (राय)। °**पट्टय** न [°**पट्टक**] धोती, वस्त्र-विदेश ; (बृह ४)। °**पत्त** न [°**पत्र**] १ सर्गादि वृक्ष की पत्ती; २ पतली कमर; (ग्रनु ५)। °**यल** न [°**तल**] कटी-प्रदेश ; (भवि)। °**ल्ल** वि [°**टीय**] देखो **कडिल्ल** (दे) का २ रा ग्रर्थ। °**वट्टी** स्त्री [°**पट्टी**] कमर का पट्टा, कमर-पट्टा ; (सुपा ३३१)। °**वत्थ** न [°**वस्त्र**] धोती, कमर में पहनने का कपड़ा; (दे २, १७)। °**सुत्त** न [°**सूत्र**] कमर का ग्राभूषण, मेखला; (सम १८३ ; कप्पू)। °**हत्थ** पुं [°**हस्त**] कमर पर रखा हुग्रा हाथ ; (दे २, १७)।

कडिअ वि [**कटित**] १ कट—चटाई से ग्राच्छादित ; (कप्प)। २ कट से संस्कृत ; (ग्राचा २, २, १)। ३ एक दूसरे में मिला हुग्रा ; "घणकडियकडिच्छाए" (ग्रौप)।

कडिअ वि [दे] प्रीणित, खुशी किया हुग्रा; (षड्)।

कडिखंभ पुं [दे] १ कमर पर रक्खा हुग्रा हाथ ; (पाग्र; दे २, १७)। २ कमर में किया हुग्रा ग्राघात ; (दे २, १७)।

कडित्त देखो **कलित्त**; (णाया १, १ टी—पत्र ६)।

कडिभिल्ल न [दे] शरीर के एक भाग में होने वाला कुष्ठ-विशेष ; (बृह ३)।

कडिल्ल वि [दे] १ छिद्र-रहित; निश्छिद्र ; (दे २, ५२ ; षड्)। २ न. कटी-वस्त्र, कमर में पहनने का वस्त्र, धोती वगैरः ; (दे २, ५२ ; पाग्र ; षड् ; सुपा १५२ ; कप्पू ; भवि ; विसे २६००)। ३ वन, जंगल, ग्रटवी ;

"संसारभवकडिल्ले, संजोगवियोगसोगतरुगहणे।
कुपहपणट्ठाण तुमं, सत्थाहो नाह ! उप्पन्नो ॥"

(पउम २, ४५ ; वव २; दे २, ५२)। ४ गहन, निबिड, सान्द्र ; "भिल्लिभिल्लायइकडिल्लं" (उप १०३१ टी ; दे २, ५२; षड्)। ५ ग्राशीर्वाद, ग्रासीस; ६ पुं. दौवारिक, प्रतीहार ; ७ विपक्ष, शत्रु, दुश्मन ; (दे २, ५२ ; षड्)। ८ कटाह, लोहे का बडा पात्र ; (ग्रोघ ६२)। ९ उपकरण-विशेष ; (दस ६)।

कडी देखो **कडि** ; (सुपा २२६)।

कडु / **कडुअ** } पुं [**कटुक**] १ कडुग्रा, तिक्त, रस-विशेष ; (ठा १)। २ वि. तित्ता, तिक्त रस वाला; (से १,६१; कुमा)। ३ ग्रनिष्ट ; (पण्ह २, ५)। ४ दारुण, भयंकर ; (पण्ह १, १)। ५ परुष, निष्ठुर ; (नाट—रत्ना ६६)। ६ स्त्री. वनस्पति-विशेष, कुटकी ; (हे २, १५५)।

कडुअ (शौ) ग्र [**कृत्वा**] करके ; (हे २, २७२)।

कडुआल पुं [दे] १ घण्टा, घण्ट ; (दे २, ५७)। २ छोटी मछली ; (दे २, ५७ ; पाग्र)।

कडुइय वि [**कटुकित**] १ कडुग्रा किया हुग्रा। २ दूषित ; (गउड)।

कडुइया स्त्री [**कटुकी**] वल्ली-विशेष, कुटकी; (पग्ग १)।

कडुच्छय / **कडुच्छु** / **कडुच्छुय** } पुंस्त्री (दे) देखो **कडच्छु** ; "धूवकडुच्छयहत्था" (सुपा ५१; पाग्र ; निर ३, १ ; धम्म

कडुयाविय वि [दे] १ प्रहत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह ; (उप पृ ६५)। २ व्यथित, पीड़ित, "सा य (चोरधाडी) कुमारपहारकडुयाविया भग्गा परम्मुहा कया" (महा)। ३ हराया हुग्रा, पराभूत ; ४ भारी विपद् में फँसा हुग्रा ; (भवि)।

कडूइद (शौ) वि [**कटूकृत**] कटुक किया हुग्रा ; (नाट)।

कडेवर न [**कलेवर**] शरीर, देह ; (राय ; हे ४, ३६५)।

कड्ढ सक [**कृष्**] १ खींचना। २ चास करना। ३ रेखा करना। ४ पढ़ना। ५ उच्चारण करना। कड्ढइ ; (हे ४, १८७)। **वक्र—कड्ढंत, कड्ढमाण** ; (गा ६८७ ; महा)। **कवक—कड्ढिज्जंत, कड्ढिज्जमाण** ; (स ५, २६ ; ६, ३६ ; पगह १, ३)। संकृ— **कड्ढिऊण, कड्ढेउं, कड्ढित्तु, कड्ढिय** ; (महा), " कड्ढेतु नमोक्कारं " (पंचव), **कड्ढिउं**; (पि ५७७)। कृ—**कड्ढेयव्व** ; (सुपा २३६)।

कड्ढ पुं [**कर्ष**] खींचाव, आकर्षण ; (उत्त १६)।

कड्ढण न [**कर्षण**] १ खींचाव, आकर्षण ; (सुपा २६२)। २ वि. खींचने वाला, आकर्षक ; (उप पृ २७७)।

कड्ढणया स्त्री [**कर्षणता**] आकर्षण ; (उप पृ २७७)।

कड्ढाविय वि [**कर्षित**] खींचवाया हुआ, बाहर निकलवाया हुआ ; (भवि)।

कड्ढिय वि [**कृष्ट**] १ आकृष्ट, खींचा हुआ ; (पगह १,३)। २ पठित, उच्चारित ; (स १८२)।

कड्ढोकड्ढ न [**कर्षापकर्ष**] खींचातान ; (उत्त १६)।

कढ सक [**क्वथ्**] १ काथ करना। २ उबालना। ३ तपाना, गरम करना। कढइ ; (हे ४, २२०)। वकृ—**कढमाण**; (पि २२१)। कवकृ—" राया जंपइ एयं सिंचह रे रे **कढंत**तिल्लेण " (सुपा १२०), **कढीअमाण** ; (पि २२१)।

कढकढकढंत वि [**कडकडायमान**] कड़-कड़ आवाज करता ; (पउम २१, ५०)।

कढिअ वि [**क्वथित**] १ उबाला हुआ ; २ खूब गरम किया हुआ ; " कढिओ खलु निंबरसो अइकडुओ एव जाएइ " (श्रा २७ ; ओघ १४७ ; सुपा ४६६)।

कढिआ स्त्री [**दे**] कढ़ी, भोजन-विशेष ; (दे २, ६७)।

कढिण, **कढिणग** वि [**कठिन**] १ कठिन, कर्कश, कठोर, परुष; (पगह १, ३ ; पाअ)। २ न. तृण-विशेष; (आचा २, २, ३)। ३ पर्ण, पत्ती ; (पगह २, ५)।

कढोर वि [**कठोर**] १ कठिन, परुष, निष्ठुर। २ पुं. इस नाम का एक राजा ; (पउम ३२, २३)।

कण सक [**क्वण्**] शब्द करना, आवाज करना। कणइ; (हे ४, २३६)। वकृ—**कणंत**; (सुर १०, २१८; वज्जा ६६)।

कण सक [**कण्**] आवाज करना। कणइ; (हे ४, २३६)।

कण पुं [**कण**] १ कण, लेश ; " गुणकणमवि परिकहिउं न सक्कइ" (सार्ध ७६)। २ विकीर्ण दाना; (कुमा)। ३ वनस्पति-विशेष ; (पगण १)। ४ पुं. एक म्लेच्छ देश ; (राज)। ५ ग्रह विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७७)। ६ तण्डुल, ओदन ; (उत्त १२)। ७ कनिक ; (आचा २, १)। ८ बिंदु; " बिंदुइअं कणइअं " (पाअ)। °**इअ** वि [°**वत्**] बिन्दु वाला ; (पाअ)। °**कुंडग** पुं [°**कुण्डक**] आदन को बनी हुई एक भक्ष्य वस्तु ; " कणकुंडगं चइत्ताणं विट्ठं भुंजइ सूयरो " (उत्त १२)। °**पूपलिया** स्त्री [°**पूपलिका**] भाजन-विशेष, कणिक की बनाई हुई एक खाद्य वस्तु ; (आचा २, १)। °**भक्ख** पुं [°**भक्ष**] वैशेषिक मत का प्रवर्तक एक ऋषि ; (राज)। °**वित्ति** स्त्री [°**वृत्ति**] भिक्षा, भीख; (सुपा २३४)। °**वियाणग** पुं [°**वितानक**] देखो **कणग-वियाणग** ; (सुज्ज २० ; इक)। °**संताणय** पुं [°**संतानक**] देखो **कणग-संताणय** ; (इक)। °**ाद** पुं [°**ाद**] वैशेषिक मत का पवर्तक ऋषि ; (विसे २१६४)। °**यण्ण** वि [°**ाकीर्ण**] बिन्दु वाला ; (पाअ)।

कण पुं [**क्वण**] शब्द, आवाज ; (उप पृ १०३)।

कणइकेउ पुं [**कनकिकेतु**] इस नाम का एक राजा ; (दंस)।

कणइपुर न [**कनकिपुर**] नगर-विशेष ; जो महाराज जनक के भाई कनक की राजधानी थी ; (ती)।

कणइर पुं [**कर्णिकार**] कणेर, वनस्पति-विशेष ; (पगण १—पत्र ३२)।

कणइल्ल पुं [**दे**] शुक, तोता ; (दे २, २१ ; षड् ; पाअ)।

कणई स्त्री [**दे**] लता, वल्ली ; (दे २, २५ ; षड् ; स ४१६ ; पाअ)।

कणंगर न [**कनङ्गर**] पाषाण का एक प्रकार का हथियार ; (विपा १, ६)।

कणकण पुं [**कणकण**] कण-कण आवाज ; (आवम)।

कणकणकण अक [**दे**] कण कण आवाज करना। कणकणकणंति; (पउम २६, ५३)। वकृ—**कणकणकणंत** ; (पउम ५३, ८६)।

कणकणग पुं [**कनकनक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)।

कणक्कणिअ वि [**क्वणक्वणित**] कण-कण आवाज वाला; (कप्पू)।

कणग देखो **कण** ; (कप्प) ।

कणग (**दे**) देखो **कणय**= (दे) ; (पराह १ , २) ।

कणग पुं [**कनक**] १ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २ , ३—पत्र ७७) । २ रेखा-सहित ज्योतिः-पिण्ड , जो आकाश से गिरता है ; (ओघ ३१० भा; जी ६)। ३ बिन्दु ; ४ शलाका, सलाई ; (राज) । ५ घृतवर द्वीप का अधिपति देव ; (सुज्ज १६) । ६ बिल्व वृक्ष , बेल का पेड़ ; (उत्तर) । ७ न. सुवर्ण, सोना ; (सं ६४ ; जी ३) । °**कंत** वि [°**कान्त**] १ कनक की तरह चमकता ; (आचा २ , ५ , १) । २ पुं. देव-विशेष ; (दीव) । °**कूड** न [°**कूट**] १ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (जं ४) । २ पुं. स्वर्ण-मय शिखर वाला पर्वत ; (जीव ३) । °**केउ** पुं [°**केतु**] इस नाम का एक राजा ; (गाया १, १४)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] १ मेरु पर्वत; २ स्वर्ण-प्रचुर पर्वत ; (ओप) । °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] इस नाम का एक राजा ; (पंचा ५) । °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (विपा २, ६) । °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] देव-विशेष ; (सुज्ज १६) । °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] १ देवी-विशेष; २ 'ज्ञाताधर्मसूत्र' का एक अध्ययन ; (गाया २, १) । °**फुल्लिअ** न [**पुष्पित**] जिसमें सोने के फूल लगाए गये हों ऐसा वस्त्र ; (निचू ७) । °**माला** स्त्री [°**माला**] १ एक विद्याधर की पुत्री ; (उत्त ६) । २ एक स्वनाम ख्यात साध्वी ; (सुर १५, ६७) । °**रह** पुं [°**रथ**] इस नाम का एक राजा ; (ठा ७ ; १०) । °**लया** स्त्री [°**लता**] चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल-देव की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १—पत्र २०४)। °**वियाणग** पुं [°**वितानक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २. ३—पत्र ७७)। °**संताणग** पुं [°**संतानक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७७) । °**ावलि** स्त्री [°**ावलि**] १ सुवर्ण का एक आभूषण, सुवर्ण के मणिओं से बना आभूषण ; (अंत २७)। २ तप विशेष, एक प्रकार की तपश्चर्या ; (ओप) । ३ पुं. द्वीप-विशेष ; ४ समुद्र विशेष; (जीव ३)। °**ावलिपविभत्ति** स्त्री [°**ावलि-प्रविभक्ति**] नाट्य का एक प्रकार ; (राय)। °**ावलिभद्द** पुं [°**ावलिभद्र**] कनकावलि द्वीप का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३) । °**ावलिमहाभद्द** पुं [°**ावलिमहाभद्र**] कनकावलिवर-नामक समुद्र का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। °**ावलिमहावर** पुं [°**ावलिमहावर**] कनकावलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३) । °**ावलिवर** पुं [°**ावलिवर**] १ इस नाम का एक द्वीप ; २ इस नाम का एक समुद्र ; ३ कनकवलिवर समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष ; (जीव ३) । °**ावलिवरभद्द** पुं [°**ावलिवरभद्र**] कनकावलिवर द्वीप का एक अधिपति देव; (जीव ३)। °**ावलिवरमहाभद्द** पुं [°**ावलिवरमहाभद्र**] कनकावलिवर-नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °**ावलि-वरोभास** पुं [°**ावलिवरावभास**] १ इस नाम का एक द्वीप; २ इस नाम का एक समुद्र ; (जीव ३) । °**ावलिवरोभासभद्द** पुं [°**ावलिवरावभासभद्र**] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**ावलिवरोभासमहाभद्द** पुं [°**ावलिवरावभासमहाभद्र**] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३) । °**ावलिवरोभासमहावर** पुं [°**ावलिवरावभासमहावर**] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**ावलिवरोभासवर** पुं [°**ावलिवरावभासवर**] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**ावली** स्त्री [°**ावली**] देखो °**ावलि** का १ला और २रा अर्थ ; (पव २७१) । देखो **कणय**=कनक ।

कणगा स्त्री [**कनका**] १ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, २—पत्र ७७) । २ चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, २)। ३ 'णायाधम्मकहा' सूत्र का एक अध्ययन; (गाया २, १)। ४ क्षुद्र जन्तु-विशेष की एक जाति, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष ; (जीव १) ।

कणगुत्तम पुं [**कनकोत्तम**] इस नाम का एक देव ; (दीव) ।

कणय पुं [**दे**] १ फूलों को इकट्ठा करना, अवचय; २ बाण, शर ; "असिखिडयकणयतोमर—" (पउम ८, ८८ ; पराह १, १ ; दे २, ५६ ; पाअ) ।

कणय देखो **कणग**=कनक; (ओघ ३१० भा ; प्रासू १५६; हे १, २२८ ; उव ; पाअ ; महा; कुमा) । ८ पुं. राजा जनक के एक भाई का नाम ; (पउम २८, १३२) । ९ रावण का इस नाम का एक सुभट ;

(पउम ५६, ३२)। १० धत्तूरा, वृक्ष-विशेष ; (से ६, ४८)। ११ वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३३)। १२ न. छन्द-विशेष ; (पिंग)। °पव्वय पुं [°पर्वत] देखो **कणग-गिरि** ; (सुपा ४३)। °**मय** वि [°**मय**] सुवर्ण का बना हुआ ; (सुपा २०)। °**ाभ** न [°**ाभ**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। °**ाली** स्त्री [°**ाली**] घर का एक भाग; (णाया १, १—पत्र १२)। °**ावली** स्त्री [°**ावली**] देखो **कणगावली**। ३ एक राज-पत्नी ; (पउम ७, ४५)।

कणयंदी स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष, पाउरी, पाढल; (दे २, ५८)।

कणवीर पुं [**करवीर**] १ वृक्ष-विशेष, कनेर ; (हे १, २५३ ; सुपा १५१)। २ न. कणेर का फूल ; (पण्ह १, ३)।

कणि पुंस्त्री [**दे**] स्फुरण , स्फूर्ति, " कणी फुरणं " (पाअ)।

कणिआर देखो **कण्णिआर** ; (कुमा ; प्राप्र ; हे २, ६५)।

कणिआरिअ वि [**दे**] १ कानी आँख से जो देखा गया हो वह ; २ न. कानी नजर से देखना ; (दे २, २४)।

कणिका स्त्री [**कणिका**] कनेक, रोटी के लिए पानी से भिजाया हुआ आटा ; (दे १, ३७)।

कणिक्क वि [**कणिक्क**] मत्स्य-विशेष ; (जीव १)।

कणिक्का देखो **कणिका**; (श्रा १४)।

कणिट्ठ वि [**कनिष्ठ**] १ छोटा, लघु ; (पउम १५, १२ ; हे २, १७२)। २ निकृष्ट, जघन्य ; (रंभा)।

कणिय न [**कणित**] १ आर्त-स्वर ; २ आवाज, ध्वनि ; (आव ४)।

कणिय° } देखो **कणिका** ; (कप्प)। २ कणिका, चावल
कणिया } का टुकड़ा ; (आचा २, १, ८)। °**कुंडय** देखो **कण-कुंडग** ; (स ४८७)।

कणिया स्त्री [**क्वणिता**] वीणा-विशेष ; (जीव ३)।

कणिर वि [**कणितृ**] आवाज करने वाला ; (उप पृ १०३; पाअ)।

कणिल्ल न [**कनिल्य**] नक्षत्र-विशेष का गोत्र ; (इक)।

कणिस न [**कणिश**] सस्य-शीर्षक, धान्य का अग्र-भाग ; (दे २, ६)।

कणिस न [**दे**] किंशारु, सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग ; (दे २, ६ ; भवि)।

कणीअ } वि [**कनीयस्**] छोटा, लघु ; " तस्स भाया
कणीअस } कणीयसो पहू नामं " (वसु ; वेणी १७६ ; कप्प ; अंत १४)।

कणीणिगा स्त्री [**कनीनिका**] १ आँख की तारा ; २ छोटी उंगली ; (राज)।

कणुय न [**कणुक**] त्वग् वगैरः का अवयव; (आचा २,१,८)।

कणूया देखो **कणिया** = कणिका ; (कस)।

कणेड्डिआ स्त्री [**दे**] गुञ्जा, घुङ्गची ; (दे २, २१)।

कणेर देखो **कण्णिआर** ; (हे १, १६८ ; २५८)।

कणेरु } स्त्री [**करेणु**] हस्तिनी, हाथिन ; (हे २,
कणेरुया } ११६ ; कुमा ; णाया १, १—पत्र ६४)।

कणोवअ न [**दे**] गरम किया हुआ जल, तेल वगैरः ; (दे २, १६)।

कण्ण पुं [**कन्या**] राशि-विशेष, कन्या-राशि ; " बुहो य कण्णम्मि वट्टए उच्चो " (पउम १७, ८१)।

कण्ण पुं [**कण्व**] इस नामका एक परिव्राजक, ऋषि विशेष ; (औप ; अभि २६२)।

कण्ण पुंन [**कर्ण**] १ कान , श्रवण , श्रोत्र ; " कण्णाइं " (वि ३५८ ; प्रासू २)। २ अङ्ग देश का इस नाम का एक राजा , युधिष्ठिर का बड़ा भाई ; (णाया १, १६) °**उर**, °**ऊर** न [°**पूर**] कान का आभूषण; (प्राप्र ; हेका ४५)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] मेरु-सम्बन्धी एक डोरी ; (जो १०)। °**जयसिंहदेव** पुं [°**जयसिंहदेव**] गुजरात देश का बारहवीं शताब्दी का एक यशस्वी राजा ; (ती)। °**देव** पुं [°**देव**] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का सौराष्ट्र-देशीय एक राजा ; (ती)। °**धार** पुं [°**धार**] नाविक , निर्यामक ; (णाया १, ८)। °**पाउरण** पुं [°**प्रावरण**] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप ; २ उस अन्तर्द्वीप का निवासी ; (पण्ण १)। °**पावरण** देखो °**पाउरण** ; (इक)। °**पीढ** न [°**पीठ**] कान का एक प्रकार का आभूषण ; (ठा ६)। °**पूर** देखो °**ऊर**; (णाया १, ८)। °**रवा** स्त्री [°**रवा**] नदी-विशेष ; (पउम ४०, १३)। °**वालिया** स्त्री [°**वालिका**] कान के ऊपर भाग में पहना जाता एक प्रकार का आभूषण; (औप)। °**वेहणग** न [°**वेधनक**] उत्सव-विशेष, कर्णवेधोत्सव ; (औप)। °**सक्कुली** स्त्री [°**शष्कुली**] १ कान का छिद्र ; २ कान की

लंबाई; (णाया १, ८)। °सोहण न [°शोधन] कान का मैल निकालने का एक उपकरण; (निचू ४)। °हार पुं [°धार] देखो °धार; (अच्चु २४; स ३२७)। देखो **कन्न**।

कण्णउज्ज पुं [**कान्यकुब्ज**] १ देश-विशेष, दोआब, गङ्गा और यमुना नदी के बीच का देश; २ न. उस देश का प्रधान नगर, जिसको आजकल 'कनौज' कहते है; (ती; कप्पू)।

कण्णंवाल न [**दे**] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरः; (दे २, २३)।

कण्णगा देखो **कन्नगा**; (आव ४)।

कण्णच्छुरी स्त्री [**दे**] गृह-गोधा, छिपकली; (दे २, १६)।

कण्णडय (अप) देखो **कण्ण**; (हे ४, ४३२; ४३३)।

कण्णल (अप) वि [**कर्णाट**] १ देश-विशेष, कर्णाटक; २ वि. उस देश का निवासी; (पिंग)।

कण्णस वि [**कन्यस**] अधम, जघन्य; (उत्त ५)।

कण्णसरिय वि [**दे**] १ कानी नजर से देखा हुआ; २ न. कानी नजर से देखना; (दे २, २४)।

कण्णा स्त्री [**कन्या**] १ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक राशि। २ कन्या, लडकी, कुमारी; (कप्पू; वि २८२)। °चोलय न [°चोलक] धान्य-विशेष, जवनाल; (खांदि)। °णय न [°नय] चोल देश का एक प्रधान नगर; "चोलदेसावयंसे कण्णाणयनयरे" (ती)। °लिय न [°लीक] कन्या के विषय में बोला जाता झूठ; (पगह १, ३)।

कण्णाआस न [**दे**] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरः (दे २, २३)।

कण्णाइंधण न [**दे**] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरः; (दे २, २३)।

कण्णाड पुं [**कर्णाट**] १ देश-विशेष, जो आजकल 'कर्णाटक' नाम से प्रसिद्ध है; २ वि. उस देश में उत्पन्न, वहां का निवासी; (कप्पू)।

कण्णास पुं [**दे**] पर्यन्त, अन्त-भाग; (दे २, १४)।

कण्णिआ स्त्री [**कर्णिका**] १ पद्म-उदर, कमल का बीज-कोष; (दे ६, १४०)। २ कोण, अस्र; (अणु; ठा ८)। ३ शालि वगैरः के बीज का मुख-मूल, तुष-मुख; (ठा ८)।

कण्णिआर पुं [**कर्णिकार**] १ वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ; (कुमा; हे २, ६५; प्राप्र)। २ गोशालक का एक भक्त; (भग १४, १०)। ३ न. कनेर का फूल; (णाया १, ६)।

कण्णिलायण न [**कर्णिलायन**] नक्षत्र-विशेष का एक गोत्र; (इक)।

कण्णोरह देखो **कन्नीरह**।

कण्णुप्पल न [**कर्णोत्पल**] कान का आभूषण-विशेष; (कप्पू)।

कण्णेर देखो **कण्णिआर**; (हे १, १६८)।

कण्णोच्छडिआ स्त्री [**दे**] दूसरे की बात गुपचुप सुनने वाली स्त्री; (दे २, २२)।

कण्णोड्डिआ, **कण्णोड्डी** स्त्री [**दे**] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष, नीरङ्गी; (दे २, २० टी)।

कण्णोढत्ती [**दे**] देखो **कण्णोच्छडिआ**; (दे २, २२)।

कण्णोप्पल देखो **कण्णुप्पल**; (नाट)।

कण्णोल्ली स्त्री [**दे**] १ चञ्चु, चोंच, पक्षी का ठोंठ; २ अव-तंस, शेखर, भूषण-विशेष; (दे २, ५७)।

कण्णोवगण्णिआ स्त्री [**कर्णोपकर्णिका**] कर्णाकर्णी, कानाकानी; (दे २, ६१)।

कण्णोस्सरिअ [**दे**] देखो **कण्णस्सरिअ**; (दे २, २४)।

कण्ह पुं [**कृष्ण**] १ श्रीकृष्ण, माता देवकी और पिता वसुदेव से उत्पन्न नववाँ वासुदेव; (णाया १, १६)। २ पांचवाँ वासुदेव और बलदेव के पूर्व जन्म के गुरू का नाम; (सम १५३)। ३ देशावकाशिक व्रत को अतिचरित करने वाला एक उपासक; (सुपा ५६२)। ४ विक्रम की तृतीय शताब्दी का एक प्रसिद्ध जैनाचार्य, दिगम्बर जैन मत के प्रवर्तक शिवभूति-मुनि के गुरू; (विसे २५५३)। ५ काला वर्ण; (आचा)। ६ इस नाम का एक परि-व्राजक, तापस; (औप)। ७ वि. श्याम-वर्ण, काला रङ्ग वाला; (कुमा)। °ओराल पुं [°ओराल] वनस्पति-विशेष; (पगण १—पत्र ३४)। °कंद पुं [°कन्द] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष; (पगण १—पत्र ३६)। °कण्णियार पुं [°कर्णिकार] काली कनेर का गाछ; (जीव ३)। °कुमार पुं [°कुमार] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, ४)। °गोमी स्त्री [°गोमिन्] काला शृगाल; "कगहगोमी जहा चित्ता, कंटगं वा विचित्तयं" (वव ६)।

°णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव का शरीर काला होता है ; (राज)। °पक्खिय वि [°पाक्षिक] १ क्रूर कर्म करने वाला ; (सूत्र २, २)। २ बहुत काल तक संसार में भ्रमण करने वाला (जीव) ; (ठा १, १)। °बंधुजीव पुं [°बन्धुजीव] वृक्ष-विशेष, श्याम पुष्प वाला दुपहरिया ; (जीव ३)। °भूम, °भोम पुं [°भूम] काली जमीन ; (आवम ; विसे १४५८)। °राइ, °राई स्त्री [°राजि, °जी] १ काली रेखा; (भग ६, ५; ठा ८) । २ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ८; जीव ४)। ३ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन—परिच्छेद; (णाया २, १)। °रिसि पुं [°ऋषि] इस नाम का एक ऋषि, जिसका जन्म शंखावती नगरी में हुआ था; (ती)। °लेस, °लेस्स वि [°लेश्य) कृष्ण-लेश्या वाला ; (भग)। °लेसा, °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] जीव का अति-निकृष्ट मनः—परिणाम, जघन्य वृत्ति ; (भग ; सम ११ ; ठा १, १)। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] एक देव-विमान ; (राज ; णाया २, १)। °वल्लि, °वल्ली स्त्री [°वल्लि, °ल्ली] वल्ली-विशेष, नागदमनी लता ; (पण्ण १)। °सप्प पुं [°सर्प] १ काला साँप ; (जीव ३)। २ राहु ; (सुज्ज २०)। देखो **कन्ह** ।

कण्हा स्त्री [**कृष्णा**] १ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ८—पत्र ४२६)। २ एक अन्तकृत् स्त्री ; (अंत २५)। ३ द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री; (राज)। ४ राजा श्रेणिक की एक रानी; (निर १, ४)। ५ ब्रह्म देश की एक नदी ; (आवम)।

कण्हुइ अ [**क्वचित्**] क्वचित्, कभी ; (सूत्र १, १)। २ कहां से ? (उत्त २)।

कतवार पुं [**दे**] कतवार, कूड़ा; (दे २, ११)।

कति देखो **कइ** = कति ; (पि ४३३; भग)।

कतु देखो **कउ**=क्रतु ; (कप्प)।

कत्त सक [**कृत्**] काटना, छेदना, कतरना। कत्ताहि ; (पण्ह १, १)। वकृ—**कत्तंत** ; (ओघ ४६८)।

कत्त न [**दे**] कलत्र, स्त्री ; (षड्)।

कत्तण न [**कर्त्तन**] १ कतरना, काटना ; (सम १२५ ; उप पृ २)। २ काटने वाला, कतरने वाला ; (सुर १, ७२)।

कत्तणया स्त्री [**कर्त्तनता**] लवन, कतराई ; (सुर १, ७२)।

कत्तर पुं [**दे**] कतवार, कूड़ा ; "इतो य कविलमूस-यकत्तरबहुभ्फारितिड्डपभिईहिं ; केसव-किसी विणट्टा" (सुपा २३७)।

कत्तरिअ वि [**कृत्त, कर्त्तित**] कतरा हुआ, काटा हुआ, लून ; (सुपा ५४६)।

कत्तरी स्त्री [**कर्त्तरी**] कतरनी, कैंची ; (कप्प)।

कत्तवीरिअ पुं [**कार्त्तवीर्य**] नृप-विशेष ; (सम १५३ ; प्रति ३६)।

कत्तव्व वि [**कर्त्तव्य**] १ करने योग्य ; (स १७२)। २ न. कार्य, काज, काम ; (श्रा ६)।

कत्ता स्त्री [**दे**] अन्धिका-द्यूत की कपर्दिका कौड़ी ; (दे २, १)।

कत्ति स्त्री [**कृत्ति**] चर्म, चमड़ा ; (स ४३६ ; गउड ; णाया १, ८)।

कत्तिकेअ पुं [**कार्त्तिकेय**] महादेव का एक पुत्र; षडानन; (दे ३, ५)।

कत्तिगी स्त्री [**कार्त्तिकी**] कार्तिक मास की पूर्णिमा; (पउम ८६, ३० ; इक)।

कत्तिम वि [**कृत्त्रिम**] कृत्रिम; बनावटी ; (सुपा ८३ ; जं २)।

कत्तिय पुं [**कार्त्तिक**] १ कार्तिक मास ; (सम ६५)। २ इस नाम का एक श्रेष्ठी ; (निर १, ३, १)। ३ भरत क्षेत्र के एक भावी तीर्थङ्कर के पूर्व भव का नाम ; (सम १५४)।

कत्तिया स्त्री [**कृत्तिका**] नक्षत्र-विशेष ; (सम ११ ; इक)।

कत्तिया स्त्री [**कर्त्तिका**] कतरनी, कैंची ; (सुपा २६०)।

कत्तिया स्त्री [**कार्त्तिकी**] १ कार्तिक मास की पूर्णिमा ; (सम ६६)। २ कार्तिक मास की अमावास्या ; (चंद १०)।

कत्तिवविय वि [**दे**] कृत्रिम, दीखाऊ ; "कत्तिववियाहिं उवहिप्पहाणाहिं" (सूत्र १, ४)।

कत्तु वि [**कर्तृ**] करने वाला ; "कत्ता भुत्ता य पुन्नपावाणं" (श्रा ६)।

कत्तो अ [**कुतः**] कहां से, किससे ? (पउम ४७, ८; कुमा)। °च्चय वि [°त्य] कहां से उत्पन्न ? (विसे १०१६)।

कत्थ सक [**कत्थ्**] श्लाघा करना, प्रशंसना। कत्थइ ; (हे १, १८७)।

कत्थ अ [**कुतः**] कहां से ? (षड्)।

कत्थ अ [**क्व, कुत्र**] कहां ? (षड् ; कुमा ; प्रासू १२३)। °**इ** अ [°**चित्**] कहीं, किसी जगह ; (आचा; कप्प ; हे २, १७४

कत्थ वि [**कथ्य**] १ कहने योग्य, कथनीय ; २ काव्य का एक भेद ; (ठा ४, ४—पत्र २८७)। ३ वनस्पति-विशेष ; (राज)।

कत्थंत देखो **कह** = कथय्।

कत्थभाणी स्त्री [**कस्तभानी**] पानी में होने वाली वनस्पति-विशेष ; (पगग १—पत्र ३४)।

कत्थूरिया } स्त्री [**कस्तुरी**] मृग-मद , हरिण के नाभि में
कत्थूरी } उत्पन्न होने वाली सुगन्धित वस्तु ; (सुपा २४७ ; स ३३६ ; कप्पू)।

कथ वि [**दे**] १ उपरत , मृत ; २ क्षीण , दुर्बल ; (षड्)।

कद्दण देखो **कडण** = कदन ; (कुमा)।

कदली देखो **कयली** ; (पगग १—पत्र ३२)।

कदुइया स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष , कद्दु , लौकी ; (पगग १—पत्र ३३)।

कद्दम } पुं [**कर्दम**] १ कादो, कीच ; (पगह १,
कद्दमग } ४)। २ देव विशेष, एक नाग-राज ; (भग ६ , ३)।

कद्दमिअ वि [**कर्दमित**] पङ्क-युक्त , कीच वाला ; (से ७ , २० ; गउड)।

कद्दमिअ पुं [**दे**] महिष , भैंसा ; (दे २ , १५)।

कन्न देखो **कण्ण** = कर्ण ; (सुर १, २ ; सुर २. १७१; सुपा ५२४ ; धम्म १२ टी ; ठा ४, २ ; सुपा ६५ ; पात्र)। °**ायंस** पुं [°**ावतंस**] कान का आभूषण ; (पात्र)।

कन्नउज्ज देखो **कण्णउज्ज** ; (कुमा)।

कन्नगा स्त्री [**कन्यका**] कन्या, लड़की , कुमारी ; (सुर ३ , १२२ ; महा)।

कन्ना देखो **कण्णा** ; (सुर २ ,१५४ ; पात्र)।

कन्नाड देखो **कण्णाड** ; (भवि)।

कन्नारिय वि [**दे**] विभूषित, अलंकृत, " आराहें कन्ना-रिउ गइंदु " (भवि)।

कन्नीरह पुं [**कर्णीरथ**] एक प्रकार की शिबिका , धनाढ्य का एक प्रकार का वाहन ; (णाया १, ३)।

कन्नुल्लड (अप) पुं [**कर्ण**] कान, श्रवणेन्द्रिय ; (कुमा)।

कन्नेरय देखो **कण्णिआर** ; (कुमा)।

कन्नोली (**दे**) देखो **कण्णोल्ली** ; (पात्र)।

कन्ह देखो **कण्ह** ; (सुपा ५६६ ; कप्प)। °**सह** न [°**सह**] जैन साधुओं के एक कुल का नाम ;(कप्प)।

कपिंजल पुं [**कपिञ्जल**] पक्षि-विशेष—१ चातक , २ गौरा पक्षी ; (पगह १ , १)।

कपूर देखो **कप्पूर** ; (श्रा २७)।

कप्प अक [**कृप्**] १ समर्थ होना। २ कल्पना, काम में लाना। ३ काटना , छेदना। कप्पइ, कप्पए ; (कप्प; महा; पिंग) कर्म—कप्पिज्जइ; (हे ४, ३५७)। कृ— **कप्पणिज्ज**; (आव ६)। प्रयो—**कप्पावेज्ज**; (निचू १७)। वकृ—**कप्पावंत**; (निचू १७)।

कप्प सक [**कल्पय्**] १ करना, बनाना। २ वर्णन करना। ३ कल्पना करना। वकृ—**कप्पेमाण**, (बिपा १, १)। संकृ—**कप्पेऊण**; (पंचव १)।

कप्प वि [**कल्प्य**] ग्रहण-योग्य; (पंचा १२)।

कप्प पुं [**कल्प**] १ काल-विशेष, देवों के दो हजार युग परि-मित समय; " कम्माण कप्पिआणं काहि कप्पंतरेसु णिव्वंसं " (अच्चु १८; कुमा)। २ शास्त्रोक्त विधि, अनुष्ठान; (ठा ६)। ३ शास्त्र-विशेष; (विसे १०७५; सुपा ३२४)। ४ कम्बल-प्रमुख उपकरण; (ओघ ४०)। ५ देवों का स्थान, बारह देव-लोक; (भग ५, ४; ठा २; १०)। ६ बारह देव-लोक निवासी देव, वैमानिक देव; (सम २)। ७ वृक्ष-विशेष, मनो-वाञ्छित फल को देने वाला वृक्ष, कल्प-वृक्ष; (कुमा)। ८ शस्त्र-विशेष; " असिखेडयकप्पतोमरविहत्था " (पउम ६,७३)। ६ अधिवास, स्थान; (बृह १)। १० राजा नन्द का एक मन्त्री; (राज)। ११ वि. समर्थ, शक्तिमान्; (णाया १, १३)। १२ सदृश, तुल्य; " केवलकप्पं " (आवम; पगह २, २)। °**ट्ठ** पुं [°**स्थ**] बालक, बच्चा; (वव ७)। °**ट्ठिइ** स्त्री [°**स्थिति**] साधुओं का शास्त्रोक्त अनुष्ठान; (बृह ६)। °**ट्ठिया** स्त्री [°**स्थिका**] १ लड़की, बालिका; (वव ४)। २ तरुण स्त्री; (बृह १)। °**ट्ठी** स्त्री [°**स्था**] १ बालिका, लड़की; (वव ६)। २ कुलाङ्गना, कुल-वधू; (वव ३)। °**तरु** पुं [°**तरु**]

कल्प-वृक्ष; (प्रासू १६८; हे २, ७६)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] देवी, देव-स्त्री; (ठा ३)। °दुम, °द्दुम पुं [°द्रुम] कल्प-वृक्ष; (धरण ६; महा)। °पायव पुं [°पादप] कल्प-वृक्ष; (पडि; सुपा ३६)। °पाहुड न [°प्राभृत] जैन ग्रन्थ-विशेष; (तो)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] कल्प-वृक्ष; (पगह १, ४)। °वडिंसय न [°ावतंसक] १ विमान-विशेष; २ विमान-वासी देव-विशेष; (निर)। °वडिंसया स्त्री [°ावतंसिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमें कल्पावतंसक देव-विमानों का वर्णन है; (राय ; निर १)। °विडवि पुं [°विटपिन्] कल्प-वृक्ष ; (सुपा ११६)। °साल पुं [°शाल] कल्प-वृक्ष ; (उप १४२ टी) °साहि पुं [°शाखिन्] कल्प-वृक्ष; (सुपा ३६६)। °सुत्त न [°सूत्र] श्रीभद्रबाहु स्वामि-विरचित एक जैन ग्रन्थ ; (कप्प; कस)। °सुय न [°श्रुत] १ ज्ञान-विशेष; २ ग्रन्थ-विशेष; (गांदि)। °ाईअ पुं [°ातीत] उत्तम जाति के देव-विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव; (पगह १, ५ ; पगण १)। °ाग पुं [°ाक] विधि को जानने वाला ; (कस ; ओप)। °ाय पुं [°ाय] कर, चुंगी, राज-देय भाग ; (विपा १, ३)।

कप्पंत पुं [कल्पान्त] प्रलय-काल, संहार-समय ; (कप्पू)।

कप्पड पुं [कर्पट] १ कपड़ा, वस्त्र; (पउम २५, १८ ; सुपा ३४४ ; स १८०)। २ जीर्ण वस्त्र, लकुटाकार कपड़ा; (पगह १, ३)।

कप्पडिअ वि [कार्पटिक] भिक्षुक, भीखमंगा ; (गाया १, ८ ; सुपा १३८ ; बृह १)।

कप्पडिअ वि [कापटिक] कपटी, मायावी ; (णाया १, ८—पत्र १५०)।

कप्पण न [कल्पन] छेदन, काटना ; (सुपा १३८)।

कप्पणा स्त्री [कल्पना] १ रचना, निर्माण ; २ प्ररूपण, निरूपण ; (निचू १)। ३ कल्पना, विकल्प ; (विसे १६३२)।

कप्पणी स्त्री [कल्पनी] कतरनी, कैंची ; (पगह १, १ ; विपा १, ४ ; स ३७१)।

कप्पर पुं [कर्पर] खप्पर, कपाल, सिर की खोपड़ी, (बृह ४ ; नाट)। देखो **कुप्पर=कर्पर**।

कप्परिअ वि [दे] दारित, चीरा हुआ ; (दे २,२०; वज्जा ३४ ; भवि)।

कप्पास पुं [कार्पास] १ कपास, रुई ; २ ऊन ; (निचू ३)।

कप्पासत्थि पुं [कार्पासास्थि] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (जीव १)।

कप्पासिय वि [कार्पासिक] कपास का बना हुआ, सूता वगैरः ; (अणु)।

कप्पासी स्त्री [कर्पासी] रुई का गाछ ; (राज)।

कप्पिय वि [कल्पित] १ रचित, निर्मित ; (ओप)। २ स्थापित, समीप में रखा हुआ ; ' से अभए कुमारे तं अल्लं मंसं रुहिरं अप्पकप्पियं करेइ ; (निर १,१)। ३ कल्पना निर्मित, विकल्पित; (दसनि १)। ४ व्यवस्थित; (आचा; सूअ १, २)। ५ छिन्न, काटा हुआ ; (विपा १, ४)।

कप्पिय वि [कल्पिक] १ अनुमत, अ-निषिद्ध ; (उवर १३०)। २ योग्य, उचित ; (गच्छ १ ; वव ८)। ३ पुं. गीतार्थ, ज्ञानी साधु; "किं वा अकप्पिएणं" (वव १)।

कप्पिया स्त्री [कल्पिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, एक उपाङ्ग-ग्रन्थ ; (जं १ ; निर)।

कप्पूर पुं [कर्पूर] कपूर, सुगन्धि द्रव्य-विशेष ; (पगह २, ५ ; सुर २, ६ ; सुपा २६३)।

कप्पोवग पुं [कल्पोपग] १ कल्प-युक्त । २ देव-विशेष, बारह देव लोक-वासी देव ; (पगण २१)।

कप्पोववण्ण पुं [कल्पोपपन्न] ऊपर देखो ; (सुपा ८८)।

कप्पोववत्तिआ स्त्री [कल्पोपपत्तिका] देवलोक-विशेष में उत्पत्ति ; (भग)।

कप्फल न [कट्फल] इस नाम की एक वनस्पति, कायफल; (हे २, ७७)।

कप्फाड देखो **कवाड**=कपाट ; (गउड)।

कप्फाड [दे] देखो **कफाड**; (पाअ)।

कफ पुं [कफ] कफ, शरीर स्थित धातु-विशेष; (राज)।

कफाड पुं [दे] गुफा, गुहा ; (दे २, ७)।

कब्बड, **कब्बडग** पुंन [कर्बट] १ खराब नगर, कुत्सित शहर; (भग ; पगह १, २)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ वि. कुनगर का निवासी ; (उत ३०)।

कब्बाडभयय पुं [दे] ठीका पर जमीन खोदने का काम करने वाला मजदूर ; (ठा ४, १—पत्र २०३)।

कब्बुर, **कब्बुरय** वि [कर्बुर] १ कबरा, चितकबरा, चितला ; (गउड ; अच्चु ६)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३ ; राज)।

कब्बुरिअ वि [**कर्बुरित**] अनेक वर्ण वाला, चितकबरा किया हुआ ; "देहकंतिकब्बुरियजम्मगिहं" (सुपा ५४); "मणिमयतोरणधोरणितरुणपहाकिरणकब्बुरिअं" (कुम्मा ६ ; पउम ८२, ११)।

कभ (अप) देखो **कफ** ; (षड्)।

कभल्ल न [**दे**] कपाल, खप्पर ; (अनु ५ ; उवा)।

कम सक [**क्रम्**] १ चलना, पाँव उठाना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. फैलना, पसरना। ४ होना। "मणसो-वि विसयनियमो न क्कमइ जओ स सव्वत्थ" (विसे २४६); "न एत्थ उवायंतरं कमइ" (स २०६)। वकृ—**कमंत** ; (से २, ६)। कृ—**कमणिज्ज** ; (औप)।

कम सक [**कम्**] चाहना, वाञ्छना। कवकृ—**कम्ममाण**; (दे २, ८५)। कृ—**कमणीय** ; (सुपा ३४; २६२) ; **कम्म** ; (णाया १, १४ टी—पत्र १८८)।

कम पुं [**क्रम**] १ पाद, पग, पाँव ; (सुर १, ८)। २ परम्परा, "नियकुलकमागयाओ पिउणा विज्जाओ मज्झ दिन्नाओ" (सुर ३, २८)। ३ अनुक्रम, परिपाटी; (गउड)। ४ मर्यादा, सीमा ; (ठा ४)। ५ न्याय, फैसला ; "अविआरिअ कमं ण करिस्सदि" (स्वप्न २१)। ६ नियम ; (बृह १)।

कम पुं [**क्लम**] श्रम, थकावट, क्लान्ति ; (हे २, १०६; कुमा)।

कमंडलु पुंन [**कमण्डलु**] संन्यासिओं का एक मिट्टी या काष्ठ का पात्र ; (निर ३, १ ; पराह १, ४ ; उप ६४८ टी)।

कमंध पुंन [**कबन्ध**] रुंड, मस्तक-हीन शरीर ; (हे १, २३६ ; प्राप्र ; कुमा)।

कमढ पुं [**दे**] १ दही की कलशी ; २ पिठर, स्थाली ; ३ बलदेव ; ४ मुख, मुँह ; (दे २, ५५)।

कमढ / **कमढग** / **कमढय** } पुं [**कमठ, °क**] १ तापस-विशेष, जिसको भगवान् पार्श्वनाथ ने वाद में जीता था और. जो मर कर दैत्य हुआ था ; (णमि २२)। २ कूर्म, कच्छप ; (पाअ)। ३ वंश, बाँस ; ४ शल्लकी वृक्ष; (हे १, १६६)। ५ न. मैल, मल ; (निचू ३)। ६ साध्वीओं का एक पात्र ; (निचू १ ; ओघ ३६ भा)। ७ साध्वीओं को पहनने का एक वस्त्र ; (ओघ ६७५ ; बृह ३)।

कमण न [**क्रमण**] १ गति, चाल ; २ प्रवृति ; (आचू ४)।

कमणिया स्त्री (**क्रमणिका**] उपानत् , जूता ; (बृह ३)।

कमणिल्ल वि [**क्रमणीवत्**] जूता वाला, जूता पहना हुआ; (बृह ३)।

कमणी स्त्री [**क्रमणी**] जूता, उपानत् ; (बृह ३)।

कमणी स्त्री [**दे**] निःश्रेणि, सीढ़ी ; (दे २, ८)।

कमणीय वि [**कमनीय**] सुन्दर, मनोहर ; (सुपा ३४ २६२)।

कमल पुं [**दे**] १ पिठर, स्थाली ; २ पटह, ढोल ; (दे २, ५४)। ३ मुख, मुँह ; (दे २, ५४ ; षड्)। ४ हरिण, मृग ; "तत्थ य एगो कमलो सगब्भहरिणीए संगओ वसइ" (सुर १५, २०२ ; दे २, ५४ ; अणु ; कप्प ; औप)। ५ कलह, झगड़ा ; (षड्)।

कमल न [**कमल**] १ कमल, पद्म, अरविन्द ; (कप्प ; कुमा ; प्रासू ७१)। २ कमलाख्य इन्द्राणी का सिंहासन; ३ संख्या-विशेष, 'कमलाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। ४ छन्द-विशेष; (पिङ्ग)। ५ पुं. कमलाख्य इन्द्राणी के पूर्व जन्म का पिता ; (णाया २)। ६ श्रेष्ठि-विशेष ; (सुपा २७५)। ७ पिङ्गल-प्रसिद्ध एक गण, अन्त्य अक्षर जिसमें गुरु हो वह गण ; (पिंग)। ८ एक जात का चावल, कलम ; (प्राप्र)। **°क्ख** पुं [**°क्ष**] इस नाम का एक यक्ष ; (सण)। **°जय** न [**°जय**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। **°जोणि** पुं [**°योनि**] ब्रह्मा, विधाता ; (पाअ)। **°पुर** न [**°पुर**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। **°प्पभा** स्त्री [**°प्रभा**] १ काल-नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १)। २ 'ज्ञाता धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाया २)। **°बन्धु** पुं [**°बन्धु**] १ सूर्य, रवि ; (पउम ७०, ६२)। २ इस नाम का एक राजा ; (पउम २२, ६८)। **°माला** स्त्री [**°माला**] पोतनपुर नगर के राजा आनन्द की एक रानी, भगवान् अजितनाथ की मातामही—दादी ; (पउम ५, ५२)। **°रय** पुं [**°रजस्**] कमल का पराग ; (पाअ)। **°वडिंसय** न [**°ावतंसक**] कमला-नामक इन्द्राणी का प्रासाद; (णाया २)। **°सिरी** स्त्री [**°श्री**] कमला-नामक इन्द्राणी की पूर्व जन्म की माता का नाम ; (णाया २)। **°सुंदरी** स्त्री [**°सुन्दरी**] इस नाम की एक रानी ; (उप ७२८

टी)। °सेणा स्त्री [°सेना] एक राज-पुत्री; (महा)। °आर, °गर पुं [°आकर] १ कमलों का समूह। २ सरोवर, ह्रद वगैरः जलाशय; (से १, २६; कप्प)। °पीड, °मेल पुं [°पीड] भरत चक्रवर्ती का अश्व रत्न; (जं ३; पि ६२)। °सण पुं [°सन] ब्रह्मा, विधाता; (पाअ; दे ७, ६२)।

कमला स्त्री [दे] हरिणी, मृगी; (पाअ)।

कमला स्त्री [कमला] १ लक्ष्मी; (पाअ; सुपा २७५)। २ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ६)। ३ काल-नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष; (ठा ४, १)। ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाया २)। ५ छन्द-विशेष; (पिंग)। °अर पुं [°कर] धनाढ्य, धनी; (से १, २६)।

कमलिणी स्त्री [कमलिनी] पद्मिनी, कमल का गाछ; (पाअ)।

कमव, **कमवस** } अक [स्वप्] सोना, सो जाना। कमवइ; (षड्), कमवसइ; (हे ४, १४६; कुमा)।

कमसो अ [क्रमशः] क्रम से, एक एक करके; (सुर १, ११६)।

कमिअ वि [दे] उपसर्पित, पास आया हुआ; (दे २,३)।

कमेलग, **कमेलय** } पुंस्त्री [कमेलक] उष्ट्र, ऊँट; (पाअ; उप १०३१ टी; करु ३३)। स्त्री—°गी; (उप १०३१ टी)।

कम्म सक [कृ] हजामत करना, क्षौर-कर्म करना। कम्मइ; (हे ४, ७२; षड्)। वकृ—कम्मंत; (कुमा)।

कम्म सक [भुज्] भोजन करना। कम्मइ; (षड्)। कम्मेइ; (हे ४, ११०)।

कम्म देखो **कम=**कम्।

कम्म पुंन [कर्मन्] १ जीव द्वारा ग्रहण किया जाता अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गल; (ठा ४, ४; कम्म १, १)। २ काम, क्रिया, करनी, व्यापार; (ठा १; आचा)। "कम्मा णाणकला" (पि १७२)। ३ जो किया जाय वह; ४ व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष; (विसे २०९९; ३४२०)। ५ वह स्थान, जहां पर चूना वगैरः पकाया जाता है; (पण्ह २, ५—पत्र १२३)। ६ पूर्व-कृति, भाग्य; "कम्मत्ता दुब्भगा चेव" (सुअ १, ३, १; आचा; षड्)। ७ कार्मण शरीर; ८ कार्मण-शरीर नामकर्म, कर्म-विशेष; (कम्म २, २१)। °कर वि [°कर] नौकर, चाकर; (आचा) देखो °गार। °करण न [°करण] कर्म-विषयक बन्धन, जीव-पराक्रम विशेष; (भग ६, १)। °कार वि [°कार] नौकर; (पउम १७, ७)। °किब्बिस वि [°किल्बिष] कर्म-चाण्डाल, खराब काम करने वाला; (उत्त ३)। °क्खंध पुं [°स्कन्ध] कर्म-पुद्गलों का पिण्ड; (कम्म ५)। °गर देखो °कर; (प्रारू)। °गार पुं [°कार] १ कारीगर, शिल्पी; (णाया १,६) देखो °कर। °जोग पुं [°योग] शास्त्रोक्त अनुष्ठान; (कम्म)। °ट्ठाण न [°स्थान] कारखाना; (आवा)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ कर्म-पुद्गलों का अवस्थान-समय; (भग ६, ३)। २ वि संसारी जीव; (भग १४, ६)। °णिसेग पुं [°निषेक] कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष; (भग ६, ३)। °धारय पुं [°धारय] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास; (अणु)। °परिसाडणा स्त्री [°परिशाटना] कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों से पृथक्करण; (सुअ १, १)। °पुरिस पुं [°पुरुष] कर्म-प्रधान पुरुष—१ कारीगर, शिल्पी; (सुअ १, ४, १); २ महारम्भ करने वाले वासुदेव वगैरः राजा लोक; (ठा ३, १—पत्र ११३)। °प्पवाय न [°प्रवाद] जैन ग्रन्थांश-विशेष, आठवाँ पूर्व; (सम २६)। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों का आत्मा में लगना, कर्मों से आत्मा का बन्धन; (आव ३)। °भूमग वि [°भूमिक] कर्म-भूमि में उत्पन्न; (पण्ण १)। °भूमि स्त्री [°भूमि] कर्म-प्रधान भूमि, भरत क्षेत्र वगैरः; (जी २३)। °भूमिग देखो °भूमग; (पण्ण २३)। °भूमिग वि [°भूमिज] कर्म-भूमि में उत्पन्न; (ठा ३, १—पत्र ११४)। °मास पुं [°मास] श्रावण मास; (जो १)। °मासग पुं [°माषक] मान-विशेष, चार गुञ्जा, चार रत्ती; (अणु)। °य वि [°ज] १ कर्म से उत्पन्न होने वाला, २ कर्म-पुद्गलों का बना हुआ शरीर-विशेष, कार्मण शरीर; (ठा २, १; ५, १)। °या स्त्री [°जा] अभ्यास से उत्पन्न होने वाली बुद्धि, अनुभव; (णंदि)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] कर्म द्वारा होने वाला जीव का परिणाम; (भग १४, १)। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] कर्म-रूप में परिणत होने वाला पुद्गल-समूह; (पंच)। °वाइ वि [°वादिन्] भाग्य को ही सब कुछ मानने वाला; (राज)। °विवाग पुं [°विपाक] १ कर्म परीणाम, कर्म-फल; २ कर्म-विपाक का प्रतिपादक ग्रन्थ; (कम्म १, १)। °संवच्छर पुं

[°संवत्सर] लौकिक वर्ष ; (सुज्ज १०)। °साला स्त्री [°शाला] १ कारखाना ; २ कुम्भकार का घटादि बनाने का स्थान ; (बृह २)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] कारीगर, शिल्पी ; (आवम)। °ाजीव वि [°ाजीव] १ कारीगर ; २ कारीगरी का कोई भी काम बतला कर भिक्षादि प्राप्त करने वाला साधु; (ठा ५, १)। °ादाण न [°ादान] जिसमें भारी पाप हो ऐसा व्यापार ; (भग ८, ५)। °ायरिय पुं [°ार्य] कर्म में आर्य, नर्दोष व्यापार करने वाला ; (पराण १)। °ावाइ देखो °वाइ ; (आचा)।

कम्म वि [कार्मण] १ कर्म-संबन्धी, कर्म-जन्य, कर्म-निर्मित, कर्म-मय ; २ न. कर्म-पुद्गलों का ही बना हुआ एक अत्यन्त सूक्ष्म शरीर, जो भवान्तर में भी आत्मा के साथ ही रहता है ; (ठा १ ; कम्म ४)। ३ कर्म-विशेष, कार्मण शरीर का हेतु-भूत कर्म ; (कम्म १, ११)। कार्मण-शरीर का व्यापार ; (कम्म ३, १५ ; कम्म ४)।

कम्मइय न [कर्मचित, कार्मण] ऊपर देखो ; (पउम १०२, ६८)।

कम्मंत पुं [दे. कर्मान्त] १ कर्म-बन्धन का कारण; (आचा; सूत्र २,२)। २ कर्म-स्थान, कारखाना; (दे २,५२)।

कम्मंत वि [कुर्वत्] १ हजामत करता हुआ ; २ हजाम, नापित ; (कुमा)। °साला स्त्री [°शाला] जहां पर अस्तुरा आदि सजाया जाता हो वह स्थान; (निचू ८)।

कम्मग न [कर्मक,कार्मक, कार्मण] देखो कम्म= कार्मण ; (ठा २, २ ; पराण २१ ; भग)।

कम्मण न [कार्मण] १ कर्म-मय शरीर ; (दं २२)। २ औषध, मन्त्र आदि के द्वारा मोहन-वशीकरण-उच्चाटन आदि कर्म ; (उप १३४ टी ; स १०८)। °गारि वि [°कारिन्] कामण करने वाला ; (सुर १, ६८)। °जोय पुं [°योग] कार्मण-प्रयोग ; (गाया १, १४)।

कम्मण न [भोजन] भोजन ; (कुमा)।

कम्ममाण देखो कम = कम्।

कम्मय देखो कम्मग ; (भग ; पंच)।

कम्मव सक [उप+भुज्] उपभोग करना। कम्मवइ ; (हे ४, १११ ; षड्)।

कम्मवण न [उपभोग] उपभोग, काम में लाना ; (कुमा)।

कम्मस वि [कल्मष] १ मलिन ; २ न. पाप ; (पात्र ; हे २, ७६ ; प्रामा)।

कम्मा स्त्री [कर्मन्] क्रिया, व्यापार ; (ठा ४, २—पत्र २१०)।

कम्मार पुं [कर्मार] १ लोहार, लोहकार ; (विसे १५६८)। २ ग्राम-विशेष ; (आचू १)।

कम्मार, कम्मारग, कम्मारय वि [कर्मकार,°क] १ नौकर, चाकर ; (स ५३७ ; ओघ ४, ६४ टी)। २ कारीगर, शिल्पी ; (जीव ३)।

कम्मारिया स्त्री [कर्मकारिका] स्त्री-नौकर, दासी ; सुपा ६३०)।

कम्मि, कम्मिअ वि [कर्मिन्] कर्म करने वाला, अभ्यासी ;

> " णवकम्मिएण उअ पामरेण दट्ठूण पाउहारीओ।
> मोत्तव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवरासणी मुक्का "
>
> (गा ६६४)।

२. पाप कर्म करने वाला ; (सूत्र १, ७; ६)।

कम्मिया स्त्री [कर्मिका, कार्मिका] १ अभ्यास में उत्पन्न होने वाली बुद्धि ; (णाया १, १)। २ अक्षीण कर्म-शेष, अवशिष्ट कर्म ; (भग)।

कम्हल न [कश्मल] पाप ; (राज)।

कम्हा अ [कस्मात्] क्यों, किस कारण से ? (औप)।

कम्हार देखो कंभार ; (हे २, ७४)। °ज न [°ज] केसर, कुङ्कुम ; (कुमा)।

कम्हिअ पुं [दे] माली, मालाकार ; (दे २, ८)।

कम्हीर देखो कंभार ; (मुद्रा २४२ ; पि १२०; ३१२)।

कय पुं [कच] केश, बाल ; (हे १, १७७ ; कुमा)।

कय पुं [क्रय] खरीदना ; (सुपा ३४४)।

कय देखो कड = कृत ; (आचा ; कुमा ; प्रासू १५)। °उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, भाग्यशाली ; (स ६०७ ; सुपा ६०६)। °क देखो °ग (परह १, २)। °कज्ज वि [°कार्य] कृतार्थ, सफल-मनोरथ ; (णाया १, ८)। °करण वि [°करण] अभ्यासी, कृताभ्यास ; (बृह १ ; परह १, ३)। °किञ्च वि [°कृत्य] कृतार्थ, सफल-मनोरथ ; (सुपा २७)। °ग वि [°क] १ अपनी उत्पत्ति में दूसरे की अपेक्षा करने वाला, प्रयत्न-जन्य ; (विसे १८३७ ; स ६५३)। २ पुं. दास-विशेष, गुलाम ; "भयगभत्तं वा बलभत्तं वा कयगभत्तं वा" (निचू ६)। ३ न. सुवर्ण, सोना ; (राज)। °ग्घ वि [°घ्न] उपकार न मानने वाला, कृतघ्न ; (सुर २, ४४ ; सुपा

५८८)। °जाणुअ वि [°ज्ञायक] कृतज्ञ, उपकार का मानने वाला; (पि ११८)। °ण्णु वि [°ज्ञ] उपकार का मानने वाला, किए हुए उपकार की कदर करने वाला ; (धम्म २६)। °ण्णुया स्त्री [°ज्ञता] कृतज्ञता, एहसानमन्दी, निहोरा मानना ; (उप पृ ८६)। °त्थ वि [°र्थ] कृतकृत्य, चरितार्थ, सफल-मनोरथ ; (भग ; प्रासू २३)। °नासि वि [°नाशिन्] कृतघ्न ; (आव १६६)। °न्न, °न्नु देखो °ण्णु; " जं किंतिजलहिराया विवेयनयमंदिरं कयन्नगुरू" (सुपा ३०१ ; महा ; सं ३३ ; श्रा ७८)। °पंजलि वि [°प्राञ्जलि] कृताञ्जलि, नमस्कार के लिए जिसने हाथ ऊँचा किया हो वह ; (आव)। °पडिकइ स्त्री [°प्रतिकृति] १ प्रत्युपकार ; (पंचा १६)। २ विनय-विशेष ; (वव १)। °पडिकइया स्त्री [°प्रतिकृतिता] १ प्रत्युपकार; (णाया १, २)। २ विनय का एक भेद; (ठा ७)। °बलिकम्म वि [°बलिकर्मन्] जिसने देवता की पूजा की है वह ; (भग २, ५ ; णाया १, १६—पत्र २१०; तंदु)। °मंगला स्त्री [°मङ्गला] इस नामकी एक नगरी; (संथा)। °माल, °मालय वि [°माल, °क] १ जिसने माला बनाई हो वह। २ पुं. वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ ; "अंकोल्लबिल्लसल्लइकयमालतमालसालड्ढं" (उप १०३१ टी)। ३ तमिस्रा-नामक गुफा का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। °लक्खण वि [°लक्षण] जिसने अपने शरीर चिन्ह को सफल किया हो वह ; (भग ६, ३३ ; णाया १, १)। °व वि [°वत्] जिसने किया हो वह ; (विसे १५५५)। °वणमालपिय पुं [°वनमालप्रिय] इस नाम का एक यक्ष ; (विपा २, १)। °वम्म पुं [°वर्मन्] नृप-विशेष, भगवान् विमलनाथ का पिता; (सम १५१)। °वीरिय पुं [°वीर्य] कार्तवीर्य के पिता का नाम ; (सूअ १, ८)।

कयं अ [**कृतम्**] अलम्, बस ; (उवर १४४)।

कयंगला स्त्री [**कृतङ्गला**] श्रावस्ती नगरी के समीप की एक नगरी ; (भग)।

कयंत पुं [**कृतान्त**] १ यम, मृत्यु, मरण; (सुपा १६६ ; सुर २, ५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त ; "मण्णंति कयं तं जं कयंतसिद्धं उ सपरहिअं" (सार्ध ११७ ; सुपा ११६)। ३ रावण का इस नाम का एक सुभट ; (पउम ५६, ३१)। °मुह पुं [°मुख] रामचन्द्र के एक सेनापति का नाम ; (पउम ६४, ६२)। °वयण पुं [°वदन] राम का एक सेनापति ; (पउम ६४, २०)।

कयंध देखो **कमंध**; (हे १, १३६ ; षड्)।

कयंब देखो **कलंब** ; (पण्ण १; हे १, २२२)।

कयंबिय वि [**कदम्बित**] अलंकृत, विभूषित ; (कप्प)।

कयंबुअ देखो **कलंबुअ** ; (कप्प)।

कयग पुं [**कतक**] १ वृक्ष-विशेष, निर्मली। २ न. कतक फल, निर्मली-फल, पायपसारी ; " जह कयगमंजणाई जलवुट्ठीओ विसोहिंति " (विसे ५३६ टी)।

कयज्ज वि [**कदर्य**] कंजूस, कृपण ; (राज)।

कयड्डि पुं [**कपर्दिन्**] इस नाम का एक यक्ष-देवता ; (सुपा ५४२)।

कयण न [**कदन**] हिंसा, मार डालना; (हे १, २१७)।

कयत्थ सक [**कदर्थय्**] हैरान करना, पीड़ा करना। कयत्थसे ; (धम्म ८ टी)। कवकृ—**कयत्थिज्जंत** ; (स ८)।

कयत्थण न [**कदर्थन**] हैरानी, हैरान करना, पीड़न ; (सुपा १८० ; महा)।

कयत्थणा स्त्री [**कदर्थना**] ऊपर देखो ; (स ४७२ ; सुर १५, १)।

कयत्थिय वि [**कदर्थित**] हैरान किया हुआ, पीड़ित ; (सुपा २२७ ; महा)।

कयम वि [**कतम**] बहुत में से कौन ? (स ४०२)।

कयर वि [**कतर**] दो में से कौन ? (हे ३, ५८)।

कयर पुं [**क्रकर**] १ वृक्ष-विशेष, करीर, करील ; (स २५६)। २ न. करीर का फल ; (पभा १४)।

कयल पुं [**कदल**] १ कदली वृक्ष, केला का गाछ। २ न. कदली-फल ; केला; (हे १, १६७)।

कयल न [**दे**] अलिञ्जर, पानी भरने का बड़ा गगरा ; (दे २, ४)।

कयलि, °ली स्त्री [**कदलि, °ली**] केला का गाछ; (महा; हे १, २२०)। °समागम पुं [°समागम] इस नाम का एक गाँव ; (आवम)। °हर न [°गृह] कदली-स्तम्भ से बनाया हुआ घर; (महा; सुर ३, १४ ; ११६)।

कयवर पुं [**दे**] १ कतवार, कूड़ा, मैला ; (णाया १, १ ; सुपा ३८; ८७; स २६४; भत्त ८६; पाअ; सण; पुप्फ ३१; निचू ७)। २ विष्ठा ; (आव १)।

कयवरुज्झिया स्त्री [**दे. कचवरोज्झिका**] कूड़ा साफ करने वाली दासी ; (णाया १, ७—पत्र ११७)।

कयवाउ पुं [**कृकवाकु**] कुक्कुट, कुकड़ा, मुर्गा ; (गउड) ।
कयवाय पुं [**कृकवाक**] कुक्कुट, कुकड़ा, मुर्गा; (पाअ) ।
कयसण न [**कदशन**] खराब भोजन; (विवे १३६) ।
कयसेहर पुं [**दे**] कुकड़ा, मुर्गा ; " कयसेहराण सुम्मइ आलावो भत्ति गोसम्मि " (वज्जा ७२) ।
कया अ [**कदा**] कब, किस समय ? (ठा ३, ४ ; प्रासू १६६) ।
कयाइ अ [**कदापि**] कभी भी, किसी समय भी; (उवा) ।
कयाइ, कयाइं, कयाई अ [**कदाचित्**] १ किसी समय, कभी ; (उवा ; वसु) । " अह अन्नया कयाई " (सुपा ५०६; पि ७३) । २-वितर्क-द्योतक अव्यय ; " नट्टेसि कयाइत्ति " (भग १५)।
कयाण न [**क्रयाणक**] बेचने योग्य वस्तु, करियाना ; (उप पृ १२०) ।
कयार पुं [**दे**] कतवार, कूड़ा, मैला; (दे २, ११ ; भवि) ।
कयावि देखो **कयाइ**=कदापि ; (प्रासू १३१) ।
कर सक [**कृ**] करना, बनाना । करइ; (हे ४, २३४)। भूका—कासी, काही, काहीअ, करिंसु; करेंसु, अकासि, अकासी; (हे ४,१६२; कुमा ; भग ; कप्प)। भवि—काहिइ, काही, करिस्सइ, करिहिइ, काहं, काहिमि; (हे १,५; पि ५३३; कुमा) । कर्म—कज्जइ, कीरइ, करिज्जइ; (भग ; हे ४, २५०) वकृ—**करंत, करिंत, करेंत, करेमाण** ; (पि ५०६ ; रयण ७२ ; से २, १५; सुर २, २४० ; उवा) । कवकृ—**कज्जमाण, कीरंत, कीरमाण** ; (पि ५४७ ; कुमा ; गा २७२ ; रयण ८६)। संकृ—**करित्ता, करित्ताणं, करिदूण, काउं, काऊण, काऊणं, कट्टु, करिअ, किच्चा, कियाणं** ; (कप्प ; दस ३ ; षड् ; कुमा ; भग ; अभि ४१ ; सूअ १, १, १ ; औप) । हेकृ—**काउं, करेत्तए** ; (कुमा ; भग ८,२)। कृ—**करणिज्ज, करणीअ, करिअव्व, करेअव्व, कायव्व**; (दस १० ; षड् ; स २१ ; प्रासू १४८ ; कुमा) । प्रयो—करावेइ, करावेइ; (पि ५५३; ५५२) ।
कर पुं [**कर**] १ हस्त, हाथ; (सुर १, ५४ ; प्रासू ५७)। २ महसूल, चुँगी ; (उप ७६८ टी ; सुर १, ५४) । ३ किरण, अंशु ; (उप ७६८ टी; कुमा) । ४ हाथी की सूँढ़ ; (कुमा) । ५ करका, शिला-वृष्टि, ओला; "करच्छडाभडियपक्खिउले " (पउम ६६, १५)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] १ हाथ से ग्रहण करना ; " दइअकरग्गहलुलिओ धम्मिल्लो " (गा ५४४) । २ पाणि-ग्रहण, शादी ; (राज) । °**य** पुं [°**ज**] नख ; (काप्र १७२) । °**रुह** पुंन [°**कररुह**] १ नख; (हे १, ३४) । २ नृप-विशेष ; (पउम ७७, ८८) । °**लाघव** न [°**लाघव**] कला-विशेष, हस्त-लाघव; (कप्प)। °**वंदण** न [°**वन्दन**] वन्दन का एक दोष, एक प्रकार का शुल्क समझ कर वन्दन करना ; (बृह ३) ।
करअडी, करअरी स्त्री [**दे**] स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा ; (दे २, १६) ।
करआ स्त्री [**करका**] करका, ओला, शिला-वृष्टि ; (अच्चु ६४) ।
करइल्ली स्त्री [**दे**] शुष्क वृक्ष, सूखा पेड़ ; (दे २, १७)।
करंक पुं [**दे. करङ्क**] १ भिक्षा-पात्र; (दे २,५५; गउड)। २ अशोक वृक्ष ; (दे २, ५५) ।
करंक पुंन [**करङ्क**] १ हड्डी, हाड़ ; " करंकचयभीसणे मसाणम्मि " (सुपा १७५) । २ अस्थि-पञ्जर, हाड़-पञ्जर ; (उप ७२८ टी) । ३ पानदान, पान वगैरः रखने की छोटी पेटी; " तंबोलकरंकवाहिणीओ " (कप्पू) । ४ हड्डीओं का ढ़ेर; (सुर ६, २०३) ।
करंज सक [**भञ्ज्**] तोड़ना, फोड़ना, टुकड़ा करना । करंजइ ; (हे ४, १०६) ।
करंज पुं [**करञ्ज**] वृक्ष-विशेष, करिञ्जा ; (पराण १ ; दे १, १३ ; गा १२१) ।
करंज पुं [**दे**] शुष्क त्वक्, सूखी त्वचा ; (दे २, ८) ।
करंजिअ वि [**भग्न**] तोड़ा हुआ ; (कुमा) ।
करंड, करंडग, करंडय पुं [**करण्ड, °क**] १ करंड, डिब्बा, पेटिका ; (पराह १, ५ ; श्रा १४; ठा ४, ४) ।
करंडिया स्त्री [**करण्डिका**] छोटा डिब्बा ; (णाया १, ७ ; सुपा ४२८) ।
करंडी स्त्री [**करण्डी**] १ डिब्बा, पेटिका ; (श्रा १४) । २ कुंडी, पात्र-विशेष ; (उप ५६३) ।
करंडुय न [**दे**] पीठ के पास की हड्डी ; (पराह १, ४—पत्र ७८) ।
करंत देखो **कर**=कृ ।
करंब पुं [**करम्ब**] दही और भात का बना हुआ एक खाद्य द्रव्य, दध्योदन ; (पाअ ; दे २, १४ ; सुपा १३६) ।

करंबिय वि [**करम्बित**] व्याप्त, खचित ; (सुपा ३४ ; गउड) ।

करकंट पुं [**करकण्ट**] इस नाम का एक परिव्राजक, तापस-विशेष ; (औप) ।

करकंडु पुं [**करकण्डु**] एक जैन महर्षि ; (महा ; पडि) ।

करकड वि [**दे. कर्कर, कर्कट**] १ कठिन, परुष; (उवा) ।

करकडी स्त्री [**दे. करकटी**] चिथड़ा, निन्दनीय वस्त्र-विशेष, जो प्राचीन काल में वध्य पुरुष को पहनाया जाता था ; (विपा १, २—पत्र २४) ।

करकय पुं [**क्रकच**] करपत्र, करांत, आरा ; (पराह १, १) ।

करकर पुं [**करकर**] 'कर कर' आवाज; (गाया १, ६) । °**सुंठ** पुंन [°**शुण्ठ**] तृण-विशेष; (पराण १—पत्र ४०) ।

करकरिग पुं [**करकरिक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८) ।

करग पुं [**करक**] १ करका, ओला ; (श्रा २० ; ओघ ३४३ ; जी ५) । २ पानी की कलशी, जल-पात्र ; (अनु ५ ; श्रा १६ ; सुपा ३३६ ; ३६४) । देखो **करय**= करक ।

करघायल पुं [**दे**] किलाट, दूध की मलाई ; (दे २, २२) ।

करट्ट पुं [**दे**] अपवित्र अन्न को खाने वाला ब्राह्मण; (मृच्छ २०७) ।

करड पुं [**करट**] १ काक, कौआ ; (उर १, १४) । २ हाथी का गण्ड-स्थल ; (सुपा १३६ ; पाअ) । ३ वाद्य-विशेष ; (विक्र ८७) । ४ कुसुम्भ-वृक्ष ; ५ करीर-वृक्ष ; ६ गिरगिट, सरट ; ७ पाखंडी, नास्तिक ; ८ श्राद्ध-विशेष ; (दे २, ५५ टी) ।

करड पुं [**दे**] १ व्याघ्र, शेर ; २ वि. कबरा, चितकबरा ; (दे २, ५५) ।

करडा स्त्री [**दे**] लाटवा—१ एक प्रकार का करञ्ज-वृक्ष; २ पक्षि-विशेष, चटक ; ३ भ्रमर, भमरा ; ४ वाद्य-विशेष ; (दे २, ५५) ।

करडि पुं [**करटिन्**] हाथी, हस्ती ; (सुर २, ६६ ; सुपा ५०; १३६) ।

करडी स्त्री [**दे. करटी**] वाद्य-विशेष ; "अट्ठसयं करडीणं" (जं २) ।

करडूय पुं [**दे**] श्राद्ध-विशेष ; (पिंड) ।

करण न [**करण**] १ इन्द्रिय ; (सुर ४, २३६ ; कुमा) । २ आसन, पद्मासन वगैरः ; (कुमा) । ३ अधिकरण, आश्रय ; (कुमा) । ४ कृति, क्रिया, विधान ; (ठा ३, ४ ; सुर ४, २४५) । ५ कारक-विशेष, साधकतम ; (ठा ३, १ ; विसे १६३६) । ६ उपधि, उपकरण ; (ओघ ६६६) । ७ न्यायालय, न्याय-स्थल ; (उप पृ ११७) । ८ वीर्य-स्फुरण ; (ठा ३, १—पत्र १०६) । ६ ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध बव-बालवादि करण ; (सुर २, १६५) । १० निमित्त, प्रयोजन ; (आचू १) । ११ जेल, कैदखाना ; (भवि) । ११ वि. जो किया जाय वह ; (ओघ २, भा ३) । १३ करने वाला; (कुमा) । °**ाहिवइ** पुं [°**ाधिपति**] जेल का अध्यक्ष; (भवि) ।

करणया स्त्री [**करणता**] १ अनुष्ठान, क्रिया ; २ संयमा-नुष्ठान ; (गाया १, १—पत्र ५०) ।

करणि स्त्री [**दे**] १ रूप, आकार ; (दे २, ७ ; सुपा १०५; ४७५ ; पाअ) । २ सादृश्य, समानता ; (अणु) । ३ अनुकरण, नकल करना ; (गउड) । ४ स्वीकार, अंगीकार ; (उप पृ ३८५) ।

करणिज्ज देखो **कर**=कृ ।

करणिल्ल वि [**दे**] समान, सदृश ; "मयणजमलतोणीरकर-णिल्लेणं पयामथोरेणं निरंतरेणं च ऊरुजुयलेणं" (स ३१२); "बंधूयकरणिल्लेण सहावारुणेण अहरेण" (स ३१२) ।

करणीअ देखो **कर**=कृ ।

करपत्त न [**करपत्र**] करपत्र, क्रकच ; (विपा १, ६) ।

करभ पुं [**करभ**] ऊँट, उष्ट्र ; (पराह १, १ ; गउड) ।

करभी स्त्री [**करभी**] १ उष्ट्री, स्त्री-ऊँट ; (पिंड) । २ धान्य भरने का एक बड़ा पात्र ; (बृह २ ; कस) । देखो **करही** ।

करम वि [**दे**] क्षीण, दुर्बल ; (दे २, ६ ; षड्) ।

करमंद पुं [**करमन्द**] फल वाला वृक्ष-विशेष ; (गउड) ।

करमद्द पुं [**करमर्द**] वृक्ष-विशेष, करोंदा; (पराण १—पत्र ३२) ।

करमरी स्त्री [**दे**] हठ-हृत स्त्री, बाँदी ; (दे २, १५ ; षड् ; गा ५२७ ; पाअ) ।

करय देखो **करग** ; (उप ७२८ टी ; पराण १ ; कुमा ; उवा ७) । ३ पक्षि-विशेष ; (पराह १, १) ।

करयंदी स्त्री [**दे**] मल्लिका, बेला का गाछ ; (दे २, १८) ।

करयर अक [**करकराय्**] 'कर-कर' आवाज करना । वकृ—**करयरंत** ; (पउम ६४, ३५) ।

कररुह पुं [**कररुद्र**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

करलि } स्त्री [**कदलि, °ली**] १ पताका ; २ हरिण की **करली** } एक जाति ; ३ हाथी का एक आभरण ; (हे १, २२० ; कुमा) ।

करव पुंन [**दे. करक**] जल-पात्र ; "पालिकरवाउ नीरं पाएउं पुच्छिओ" (सुपा २१४ ; ६३१) ।

करवंदी स्त्री [**करमन्दी**] लता-विशेष, एक जात का पेड़ ; (दे ८, ३५) ।

करवत्तिआ स्त्री [**करपात्रिका**] जल-पात्र-विशेष ; (आ १२) ।

करवाल पुं [**करवाल**] खड्ग, तलवार ; (पाअ ; सुपा ६०) ।

करविया स्त्री [**दे. करकिका**] पान-पात्र विशेष ; (सुपा ४८८) ।

करवीर पुं [**करवीर**] वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ ; (गउड) ।

करसी [**दे**] देखो **कडसी** ; (हे २, १७४) ।

करह पुं [**करभ**] १ ऊँट, उष्ट्र ; (पउम ५६, ४४ ; पाअ ; कुमा ; सुपा ४२७) । २ सुगंधी द्रव्य-विशेष ; (गउड ६६८) ।

करहंच न [**करहञ्च**] छंद-विशेष ; (पिंग) ।

करहाड पुं [**करहाट**] वृक्ष-विशेष, करहार, शिफा कन्द, मैनफल ; (गउड) ।

करहाडय पुं [**करहाटक**] १ ऊपर देखो । २ देश-विशेष ; "करहाडयविसए धन्नऊरयसंनिवेसम्मि" (स २५३) ।

करही देखो **करभी** । ३ इस नाम का एक छन्द; (पिंग) । °**रुह** वि [°**रोह**] ऊँट-सवार, उष्ट्री पर सवारी करने वाला; (महा) ।

कराइणी स्त्री [**दे**] शाल्मली-वृक्ष, सेमल का पेड़ ; (दे २, १८) ।

कराइल्ल पुं [**कराइल्ल**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (ती ३७) ।

कराल वि [**कराल**] १ उन्नत, ऊँचा ; (अनु ५) । २ दन्तुरित, जिसका दाँत लम्बा और बाहर निकला हो वह ; (गउड) । ३ भयानक, भयंकर ; (कप्पू) । ४ फाड़ने वाला ; ५ विकसित ; (से १०, ४१) । ६ व्यवहित ; (से ११, ६६) । ७ वि. इस नाम का विदेह-देश का राजा ; (धर्म १) ।

कराल सक [**करालय्**] १ फाड़ना, छिद्र करना । २ विकसित करना । करालेइ ; (से १०, ४१) ।

करालिअ वि [**करालित**] १ दन्तुरित, लम्बा और बहिर्निर्गत दाँत वाला ; (से १२, १०) । २ व्यवहित किया हुआ, अन्तराल वाला बनाया हुआ ; (से ११, ६६) । ३ भयंकर बनाया हुआ ; (कप्पू) ।

कराली स्त्री [**दे**] दतवन, दाँत शुद्ध करने का काष्ठ ; (दे २, १२) ।

करावण न [**कारण**] करवाना, बनवाना, निर्मापन ; (सुपा ३३२ ; धम्म ८ टी) ।

कराविय वि [**कारित**] कराया हुआ ; (स ५६४ ; महा) ।

करि पुं [**करिन्**] हाथी, हस्ती; (पाअ ; प्रासू १६६) । °**धरणट्ठाण** न [°**धरणस्थान**] हाथी को बाँधने का डोर—रज्जू ; (पाअ)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] १ ऐरावण, इन्द्र का हाथी ; २ उत्तम हस्ती ; (सुपा १०६) । °**बंधण** न [°**बन्धन**] हाथी पकड़ने का गर्त ; (पाअ) । °**मयर** पुं [°**मकर**] जल-हस्ती ; (पाअ) ।

करिअ } देखो **कर=कृ** ।
करिअव्व }

करिआ स्त्री [**दे**] मदिरा परोसने का पात्र ; (दे २, १४) ।

करिएव्वउ } (अप) देखो **कायव्व**; (हे ४, ४३८ ;
करिएव्वउं } कुमा; पि २५४) ।

करिंत देखो **कर=कृ** ।

करिणिया } स्त्री [**करिणी**] हस्तिनी, हथिनी; (महा ;
करिणी } पउम ८०, ५३ ; सुपा ४) ।

करिण पुं [**करिन्**] हाथी, हस्ती ; "रे दुट्ठ करिणाहम ! कुजाय ! संभंतजुवइगहणेण" (उप ६ टी) ।

करित्ता }
करित्ताणं } देखो **कर=कृ** ।
करिदूण }

करिमरी [**दे**] देखो **करमरी** ; (गा ५४; ५५) ।

करिल्ल न [**दे**] १ वंशाङ्कुर, बाँस का कोपड़, रेतीली भूमि में उत्पन्न होने वाला वृक्ष-विशेष, जिसे ऊँट खाते हैं ; (दे २, १०)। २ करेला, तरकारी-विशेष ; "थाणु-पुरिसाइकुट्टुप्पलाइसंभियकरिल्लमंसाई" (विसे २६३)। ३ अंकुर, कन्दल ; (अनु)। ४ पुं. करीर-वृक्ष, करील ; (षड्)। ५ वि. वंशाङ्कुर के समान; "हाहा ते चेय करिल्लपिययमाबाहुसयणदुल्ललियं" (गउड)।

करिस देखो **कड्ढ**=कृष्। करिसइ ; (हे ४, १८७)। वकृ—**करिसंत**; (सुर १, २३०)। संकृ—**करिसित्ता**; (पि ५८२)।

करिस पुं [**कर्ष**] १ आकर्षण, खींचाव। २ विलेखन, रेखा-करण। ३ मान-विशेष, पल का चौथा हिस्सा ; (जो १)।

करिस देखो **करीस** ; (हे १, १०१ ; पाअ)।

करिसग वि [**कर्षक**] खेती करने वाला, कृषीबल ; (उत्त ३ ; आवम)

करिसण न [**कर्षण**] १ खींचाव, आकर्षण। २ चासना, खेती करना ; ३ कृषि, खेती ; (पण्ह १, १)।

करिसय देखो **करिसग** ; (सुपा २, २६० ; सुर २, ७७)।

करिसावण पुंन [**कार्षापण**] सिक्का विशेष ; (विसे ५०६ ; अणु)।

करिसिद (शौ) वि [**कर्षित**] १ आकर्षित। २ चासा हुआ, खेती किया हुआ ; (हेका ३३१)।

करिसिय वि [**कृशित**] दुर्बल किया हुआ ; (सुअ २, ३)।

करीर पुं [**करीर**] वृक्ष-विशेष, करीर, करील ; (उप ७२८ टी ; श्रा १६ ; प्रासू ६२)।

करीस पुं [**करीष**] जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, कंडा, गोइठा ; (हे १, १०१)।

करुण देखो **कलुण** ; (स्वप्न ५३; सुपा २१६); "उज्झइ उयारभावं दक्खिण्णं करुणयं च आमुयइ" (गउड)।

करुणा स्त्री [**करुणा**] दया, दूसरे के दुःख को दूर करने की इच्छा ; (गउड; कुमा)।

करुणाइय वि [**करुणायित**] जिस पर करुणा की गई हो वह ; (गउड)।

करुणि वि [**करुणिन्**] करुणा करने वाला, दयालु ; (सण)।

करेअव्व } देखो **कर**=कृ।
करेंत }

करेडु पुं [**दे**] कृकलास, गिरगिट, सरट ; (दे २, ५)।

करेणु पुं [**करेणु**] १ हस्ती, हाथी ; २ कनेर का गाछ ; "एसो करेणू" (हे २, ११६)। ३ स्त्री. हस्तिनी, हथिनी; (हे २, ११६ ; गाया १, १; सुर ८, १३६)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री ; (उत्त १३)। °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (उत्त १३)।

करेणुआ स्त्री [**करेणु**] हस्तिनी, हथिनी ; (पाअ ; महा)।

करेमाण } देखो **कर**=कृ।
करेअव्व }

करेवाहिय वि [**करबाधित**] राज-कर से पीड़ित, महसूल से हैरान ; (औप)।

करोड पुं [**दे**] १ नालिकेर, नलिएर ; २ काक, कौआ ; ३ वृषभ, बैल ; (दे २, ५४)।

करोडग पुं [**दे**] पात्र-विशेष, कटोरा ; (निचू १)।

करोडिय पुं [**करोटिक**] कापालिक, भिक्षुक-विशेष ; (गाया १, ८—पत्र १५०)।

करोडिया } स्त्री [**करोटिका**, °**टी**] १ कुंडा, बड़े मुँह का एक पात्र; कांस्य-पात्र विशेष ; (अनु ; दे ७, १५ ; पाअ)। २ स्थगिका, पानदान ; (गाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ मिट्टी का एक जात का पात्र; (औप)। ४ कपाल, भिक्षा-पात्र ; (गाया १, ८)। ५ परोसने का एक उपकरण ; (दे २, ३८)।
करोडी }

करोडी स्त्री [**दे**] एक प्रकार की चींटी, क्षुद्र-जन्तु-विशेष ; (दे २, ३)।

कल सक [**कलय्**] १ संख्या करना। २ आवाज करना। ३ जानना। ४ पहिचानना। ५ संबन्ध करना। **कलइ** ; (हे ४, २५६ ; षड्)। कलयंति ; (विसे २०२६)। भवि—कलइस्सं; (पि ५३३)। कर्म—कलिज्जए; (विसे २०२६)। वकृ—**कलयंत**; (सुपा ४)। कवकृ—**कलिज्जंत**; (सुपा ६४)। संकृ—**कलिऊण**, **कलिअ** ; (महा; अभि १८२)। कृ—**कलणिज्ज**, **कलणीअ** ; (सुपा ६२२; पि ६१)।

कल वि [**कल**] १ मधुर, मनोहर ; (पाअ)। २ पुं. अव्यक्त मधुर शब्द; (गाया १, १६)। ३ कोलाहल, कल-कल ; (चंद १६)। ४ कर्दम, कीच, कादा ; (भत्त १३०)। ५ धान्य-विशेष, गोल चना, मटर ; (ठा ५, ३)। °**कंठी** स्त्री [°**कण्ठी**] कोकिला, कोयल ; (दे २, ३० ; कप्पू)। °**मंजुल** वि [°**मञ्जुल**] शब्द

से मधुर ; (पाअ)। °यंठ वि [°कण्ठ] कोकिल, कोयल ; (कुमा)। °यंठी देखो °कण्ठी ; (सुर ४, ४८)। °हंस पुं [°हंस] एक पक्षी, राज-हंस; (कप्प; गउड)।

कलंक पुं [**कलङ्क**] १ दाग, दोष ; (प्रासू ६४)। २ लाञ्छन, चिन्ह ; (कुमा ; गउड)।

कलंक सक [**कलङ्कय्**] कलंकित करना। कलंकइ ; (भवि)। कृ—**कलंकियव्व** ; (सुपा ४४८ ; ५८१)।

कलंक पुं [**दे**] १ वाँस, वंश ; (दे २, ८)। २ वाँस की बनाई हुई वाड़ ; (गाया १, १८)।

कलंकण न [**कलङ्कन**] कलंकित करना ; (पत्र ८)।

कलंकल वि [**कलङ्कल**] असमञ्जस, अशुभ ; (औप ; संथा)।

कलंकवई स्त्री [**दे**] वृति, वाड़, काँटे आदि से परिच्छन्न स्थान-परिधि ; (दे २, २४)।

कलंकिअ वि [**कलङ्कित**] कलंकित, दागी ; (हे ४, ४३८)।

कलंकिल्ल वि [**कलङ्किन्**] कलंक वाला, दागी; (काल; पि ५६५)।

कलंद पुं [**कलन्द**] १ कुण्ड, कुण्डा, रंग-पात्र ; (उवा)। २ जाति से आर्य एक प्रकार के मनुष्य ; (ठा ६—पत्र ३५८)।

कलंब पुं [**कदम्ब**] १ वृक्ष-विशेष, नीप, कदम का गाछ ; (हे १, ३० ; २२२ ; गा ३७ ; कप्पू)। °**चीर** न [°**चीर**] शस्त्र-विशेष ; (विपा १, ६—पत्र ६६)। °**चीरिया** स्त्री [°**चीरिका**] तृण-विशेष, जिसका अग्र भाग अति तीक्ष्ण होता है ; (जीव ३)। °**वालुया** स्त्री [°**वालुका**] १ कदम्ब के पुष्प के आकार वाली धूली ; २ नरक की नदी; "कलंबवालुयाए दड्ढपुव्वो अणंतसो" (उत्त १६)।

कलंबु स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, नालिका; (दे २, ३)।

कलंबुअ न [**कदम्बक**] कदम्ब-वृक्ष का पुष्प ; " धारा-हयकलंबुअं पिव समुस्ससियरोमकूवे " (कप्प)।

कलंबुआ [**दे**] देखो **कलंबु** ; (पण्ण १ ; सुज्ज ४)।

कलंबुआ स्त्री [**कलम्बुका**] १ कदम्ब पुष्प के समान मांस-गोलक ; २ एक गाँव का नाम, जहां पर भगवान् महावीर को कालहस्ती ने सताया था ; (राज)।

कलकल पुं [**कलकल**] १ कोलाहल, कलकलारव ; (श्रा १४)। २ व्यक्त शब्द, स्पष्ट आवाज; (भग ६, ३३ ; राय)। ३ चूना आदि से मिश्रित जल; (विपा १, ६)।

कलकल अक [**कलकलाय्**] 'कल-कल' आवाज करना। वकृ—**कलकलंत, कलकलिंत, कलकलेंत, कलकलमाण**; (पण्ह १, १ ; ३ ; औप)।

कलकलिअ न [**कलकलित**] कोलाहल करना ; (दे ६, ३६)।

कलक्ख देखो **कडक्ख**=कटाक्ष ; (गा ७०२)।

कलचुलि पुं [**करचुलि**] १ क्षत्रिय-विशेष ; २ इस नाम का एक क्षत्रिय-वंश ; (पिंग)।

कलण देखो **करण** ; " तोसुवि कलणेसु होसु सुहसंकप्पो " (अच्चु ८२)।

कलण न [**कलन**] १ शब्द, आवाज; २ संख्यान, गिनती; (विसे २०२८)। ३ धारण करना ; (सुपा २५)। ४ जानना ; (सुपा १६)। ५ प्राप्ति, ग्रहण ; " जुत्तं वा सयलकलाकलणं रयणायरसुअस्स " (श्रा १६)।

कलणा स्त्री [**कलना**] १ कृति, करण ; " जुण्णं कंदप्प-दप्पं णिहुवणकलणाकंदलिल्लं कुणंता " (कप्पू)। २ धारण करना, लगाना ; " मज्झण्हे सिरिखंडपंककलणा " (कप्पू)।

कलणिज्ज देखो **कल**=कलय्।

कलत्त न [**कलत्र**] स्त्री, भार्या ; (प्रासू ७६)।

कलधोय देखो **कलहोय** ; (औप)

कलभ पुंस्त्री [**कलभ**] १ हाथी का बच्चा ; (णाया १, १)। २ बच्चा, बालक ; " उवमासु अपज्जत्तेभकलभदंतावहासमूरुजुअं " (हे १, ७)।

कलभिआ स्त्री [**कलभिका**] हाथी का स्त्री-बच्चा; (णाया १, १—पत्र ६३)।

कलम पुं [**दे. कलम**] १ चोर, तस्कर ; (दे २, १० ; पाअ ; आचा)। २ एक प्रकार का उत्तम चावल ; (उवा; जं २ ; पाअ)।

कलमल पुं [**कलमल**] १ पेट का मल ; (ठा ३, ३)। २ वि. दुर्गन्धि, दुर्गन्ध वाला ; (उप ८३३)

कलय देखो **कालय** ; (हे १, ६७)।

कलय पुं [**दे**] १ अर्जुन वृक्ष ; २ सोनार, सुवर्णकार ; (दे २, ५४)।

कलयं पुं [**कलाद**] सोनार, सुवर्णकार ; (षड्)।
कलयंदि वि [**दे**] १ प्रसिद्ध, विख्यात ; २ स्त्री. वृक्ष-विशेष, पाडरी, पाढल ; (दे २, ५८)।
कलयज्जल न [**दे**] ओष्ठ-लेप, हाठ पर लगाया जाता लेप-विशेष ; (भवि)।
कलयल देखो **कलकल** ; (हे २, २२० ; पाअ ; गा ५३५)।
कलयलिर वि [**कलकलायितृ**] कलकल करने वाला ; कज्जा ६६)।
कलरुद्दाणी स्त्री [**कलरुद्राणी**] इस नाम का एक छन्द ; (पिंग)।
कलल न [**कलल**] १ वीर्य और शाणित का समुदाय ; "पाइज्जंति रडंता सुतत्ततम्बुतंबसंनिभं कललं" (पउम ११८, ८)। "वसकललसंभसोणिय—" (पउम ३६, ५६)। २ गर्भ-वेष्टन चर्म ; ३ गर्भ के अवयव रूप रेत-विकार; (गउड)। ४ कादा, कीचड़, कर्दम ; (गउड)।
कललिय वि [**कललित**] कर्दमित, कीच वाला किया हुआ; "अण्णोण्णकलहविअलियकेसरकीलालकललियद्दारा" (गउड)।
कलविंक पुं [**कलविङ्क**] पक्षि-विशेष, चटक, गौरिया पक्षी ; (पाअ ; गउड)।
कलवू स्त्री [**दे**] तुम्बी-पात्र ; (दे २, १२ ; षड्)।
कलस पुं [**कलश**] १ कलश, घड़ा ; (उवा ; गाया १, १)। २ स्कन्धक छन्द का एक भेद, छन्द-विशेष; (पिंग)।
कलसिया स्त्री [**कलशिका**] १ छोटा घड़ा ; (अणु)। २ वाद्य-विशेष ; (आवू १)।
कलह पुं [**कलह**] क्लेश, झगड़ा; (उव ; औप)।
कलह देखो **कलभ** ; (उव; पउम ७८, २८)।
कलह न [**दे**] तलवार की म्यान ; (दे २, ५ ; पाअ)।
कलह अक [**कलहाय्**] झगड़ा करना, लड़ाई करना। वकृ—**कलहंत, कलहमाण** ; (पउम २८, ४ ; सुपा ११ ; २३३ ; ५४६)।
कलहण न [**कलहन**] झगड़ा करना ; (उव)।
कलहाअ देखो **कलह**=कलहाय्। कलहाएदि (शौ) ; (नाट)। वकृ—**कलहाअंत** ; (गा ६०)।
कलहाइअ वि [**कलहायित**] कलह वाला, झगड़ाखोर ; (पाअ)।
कलहि, वि [**कलहिन्**] झगड़ाखोर ; (दे ५, ५४)।
कलहोय न [**कलधौत**] १ सुवर्ण, सोना ; (सण)। २ चाँदी, रजत ; (गउड ; पण्ह १, ४ ; पाअ)।
कला स्त्री [**कला**] १ अंश, भाग, मात्रा ; (अनु ४)। २ समय का सूक्ष्म भाग ; (विसे २०२८)। ३ चन्द्रमा का सोलहवाँ हिस्सा ; (प्रासू ६५)। ४ कला, विद्या, विज्ञान ; (कप्प ; राय ; प्रासू ११२)। पुरुष-योग्य कला के मुख्य बहत्तर और स्त्री-योग्य कला के मुख्य चौसठ भेद हैं ; "बावत्तरी कला" (अणु) ; "बावत्तरिकलापंडियावि पुरिसा" (प्रासू १२६)। "चउसट्ठिकलापंडिया" (गाया १, ३)। पुरुष-कला ये हैं ;—१ लिपि-ज्ञान। २ अंक-गणित। ३ चित्र-कला। ४ नाट्य-कला। ५ गान, गाना। ६ वाद्य बजाना। ७ स्वर-गत (षड्ज, ऋषभ वगैरः स्वरों का ज्ञान)। ८ पुष्कर-गत (मृदंग, मुरजादि विशेष वाद्य का ज्ञान)। ६ समताल (संगीत के ताल का ज्ञान)। १० द्यूत कला। ११ जनवाद (लोगों के साथ आलाप-संलाप करने की विधि)। १२ पाँसे का खेल। १३ अष्टापद (चौपाट खेलने की रीति)। १४ शीघ्र-कवित्व। १५ दक-मृत्तिका (पृथक्करण-विद्या)। १६ पाक-कला। १७ पान-विधि (जलपान के गुण-दोष का ज्ञान)। १८ वस्त्र-विधि (वस्त्र के सजावट की रीति)। १६ विलेपन-विधि। २० शयन-विधि। २१ आर्या (छन्द-विशेष) बनाने की रीति। २२ प्रहेलिका (विनोद के लिए पहेलियां-गूढ़ाशय पद्य)। २३ मागधिका (छन्द-विशेष)। २४ गाथा (छन्द विशेष)। २५ गीति (छन्द-विशेष)। २६ श्लोक (अनुष्टुप् छन्द)। २७ हिरण्य-युक्ति (चाँदी के आभूषण की यथास्थान योजना)। २८ सुवर्ण युक्ति । २६ चूर्ण-युक्ति (सुगन्धि पदार्थ बनाने की रीति)। ३० आभरण-विधि (आभूषणों की सजावट)। ३१ तरुणी-परिकर्म (स्त्री को सुन्दर बनाने की रीति)। ३२ स्त्री-लक्षण (स्त्री के शुभाशुभ चिह्नों का परिज्ञान)। ३३ पुरुष-लक्षण। ३४ अश्व-लक्षण। ३५ गज-लक्षण। ३६ गो-लक्षण। ३७ कुक्कुट लक्षण। ३८ छत्र-लक्षण। ३६ दण्ड-लक्षण। ४० असि-लक्षण। ४१ मणि-लक्षण (रत्न परीक्षा)। ४२ काकणि लक्षण (रत्न-विशेष की परीक्षा)। ४३ वास्तुविद्या (गृह बनाने और सजाने की रीति)। ४४ स्कन्धावार-मान (सैन्य-परिमाण)। ४५ नगर-मान। ४६ चार (ग्रह-चार का परिज्ञान)। ४७ प्रतिचार (ग्रहों के वक्र-गमन वगैरः का ज्ञान, अथवा रोग-प्रतीकार-ज्ञान)। ४८ व्यूह (सैन्य-रचना)। ४६ प्रतिव्यूह (प्रतिद्वन्द्वि-व्यूह)। ५० चक्र-व्यूह। ५१

गरुड व्यूह । ५२ शकट-व्यूह । ५३ युद्ध (मल्ल-युद्ध)। ५५ युद्धातियुद्ध (खड्गादि शस्त्र से युद्ध)। ५६ दृष्टि-युद्ध। ५७ मुष्टि-युद्ध। ५८ बाहु-युद्ध। ५६ लता-युद्ध। ६० इषु-शास्त्र (दिव्यास्त्र-सूचक शास्त्र)। ६१ त्सरु-प्रपात (खड्ग-शिक्षा शास्त्र)। ६२ धनुर्वेद। ६३ हिरण्य-पाक (चाँदी बनाने की रीति)। ६४ सुवर्ण-पाक। ६५ सूत्रक्रीड़ा (एकही सूत को अनेक प्रकार कर दिखाना)। ६६ वस्त्र क्रीड़ा। ६७ नालिका खेल (द्यूत-विशेष)। ६८ पत्र-च्छेद्य (अनेक पत्रों में अमुक पत्र का छेदन, हस्त-लाघव)। ६६ कट-च्छेद्य (कट की तरह क्रम से छेद करने का ज्ञान)। ७० सजीव (मरी हुई धातु को फिर असल बनाना)। ७१ निर्जीव (धातु-मारण, रसायण)। ७२ शकुन-रुत (शकुन-शास्त्र); (जं २ टी ; सम ८३)। °**गुरु** पुं [°**गुरु**] कलाचार्य, विद्याध्यापक, शिक्षक ; (सुपा २५)। °**यरिय** पुं [°**चार्य**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (णाया १, १)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ कला वाली स्त्री। २ एक पतिव्रता स्त्री; (उप ७३६ ; पडि)। °**सवण्ण** न [**सवर्ण**] संख्या-विशेष ; (ठा १०)।

कलाइआ स्त्री [**कलाचिका**] प्रकोष्ठ; कोनी से लेकर मणिबन्ध तक का हस्तावयव ; (पाअ)।

कलाय पुं [**कलाद**] सोनार, सुवर्णकार ; (पराह १, २ ; णाया १, ८)।

कलाय पुं [**कलाय**] धान्य-विशेष, गोल चना, मटर ; (ठा ३, ५ ; अनु ५)।

कलाव पुं [**कलाप**] १ समूह, जत्था ; (हे १, २३१)। २ मयूर-पिच्छ ; (सुपा ४८)। ३ शरधि, तूण, जिसमें बाण रक्खे जाते हैं ; (दे २, १५)। ४ कण्ठ का आभूषण ; (औप)।

कलावग न [**कलापक**] १ चार श्लोकों की एक-वाक्यता। २ ग्रीवा का एक आभरण ; (पराह २, ५)।

कलावि पुंस्त्री [**कलापिन्**] मयूर, मोर ; (उप ७२८ टी)।

कलि पुं [**कलि**] १ कलह, झगड़ा ; (कुमा ; प्रासू ६४)। २ युग-विशेष, कलि-युग ; (उप ८३३)। ३ पर्वत-विशेष; (ती ५४)। ४ प्रथम भेद; (निचू १५)। ५ एक, अकेला ; (सूअ १, २, ३; भग १८, ४)। ६ दुष्ट पुरुष ; "दुट्ठो कली" (पाअ)। °**ओग**, °**ओय** पुं [°**ओज**] युग्म-राशि विशेष; (भग १८, ४; ठा ४, ३)। °**ओयकडजुम्म** पुं [°**ओजकृतयुग्म**] युग्म-राशि-विशेष (भग ३४, १)। °**ओयकलिओय** पुं [°**ओजकल्योज**] युग्म-राशि विशेष; (भग ३४, १)। °**ओजतेओय** पुं [°**ओजत्र्योज**] युग्म-राशि विशेष ; (भग ३४, १) °**ओयदावरजुम्म** पुं [°**ओजद्वापरयुग्म**] युग्म-राशि विशेष ; (भग ३४, १)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] तीर्थ-विशेष ; (ती १५)। °**जुग** न [°**युग**] कलि-युग ; (ती २१)।

कलि पुं [**दे**] शत्रु , दुश्मन ; (दे २, २)।

कलिअ वि [**कलित**] १ युक्त, सहित; (पराह १, २)। २ प्राप्त, गृहीत ; ३ ज्ञात, विदित ; (दे २, ५६; पाअ)।

कलिअ देखो **कल**=कलय्।

कलिअ पुं [**दे**] १ नकुल, न्यौला, नेवला ; २ वि. गर्वित, गर्व-युक्त ; (दे २, ५६)।

कलिआ स्त्री [**दे**] सखी, सहेली ; (दे २, ५६)।

कलिआ स्त्री [**कलिका**] अविकसित पुष्प ; (पाअ ; गा ४४२)।

कलिंग पुं [**कलिङ्ग**] १ देश-विशेष, यह देश उड़ीसा से दक्षिण की ओर गोदावरी के मुहाने पर है ; (पउम ६८, ६७; ओघ ३० भा ; प्रासू ६०)। २ कलिंग देश का राजा ; (पिंग)।

कलिंच [**दे**] देखो **किलिंच**; (गा ७७०)।

कलिञ्ज पुं [**कलिञ्ज**] कट, चटाई ; (निचू १७)।

कलिंज न [**दे**] छोटी लकड़ी ; (दे २, ११)।

कलिंब पुं [**कलिम्ब**] १ बाँस का पात्र-विशेष ; "कलिंबो वंसकप्परी" (गच्छ २)। २ सूखी लकड़ी ; (भग ८, ३)।

कलित्त न [**कटित्र**] कमर पर पहना जाता एक प्रकार का चर्म-मय कवच ; (णाया १, १ ; औप)।

कलिम न [**दे**] कमल, पद्म ; (दे २, ६)।

कलिल वि [**कलिल**] गहन, घना, दुर्भेद्य ; (पाअ)।

कलुण वि [**करुण**] १ दीन, दया-जनक, कृपा-पात्र; (हे १, २५४ ; प्रासू १२६ ; सुर २, २२६)। २ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों में एक रस ; (अणु)।

कलुणा देखो **करुणा** ; (राज)।

कलुस वि [**कलुष**] १ मलिन, अस्वच्छ ; "कलिकलुसं" (विपा १, १ ; पाअ)। २ न. पाप, दोष, मैल ; (स १३२ ; पाअ)।

कलुसिअ वि [**कलुषित**] पाप-ग्रस्त, मलिन ; (से १०, ५ ; गउड)।

कलुसीकय वि [**कलुषीकृत**] मलिन किया हुआ ; (उव)।

कलेर पुं [**दे**] १ कंकाल, अस्थि-पञ्जर ; २ वि. कराल, भयानक ; (दे २, ५३)।

कलेवर न [**कलेवर**] शरीर, देह ; (आउ ४८ ; पिंग)।

कलेसुय न [**कलेसुक**] तृण-विशेष ; (सूअ २, २)।

कल्ल न [**कल्य**] १ कल, गया हुआ या आगामी दिन ; (पाअ ; णाया १, १ ; दे ८, ६७)। २ शब्द, आवाज ; ३ संख्या, गिनती ; (विसे ३४४२)। ४ आरोग्य, निरोगता; "कल्लं किलारुग्गं" (विसे ३४३६)। ५ प्रभात, सुबह ; (अणु)। ६ वि. नीरोग, रोग-रहित ; (ठा ३, ३ ; दे ८, ६५)। ७ वि. दक्ष, चतुर ; (दे ८, ६५)।

कल्लवत्त पुं [**कल्यवर्त्त**] कलेवा, प्रातर्भोजन, जल-पान ; (स्वप्न ६० ; नाट)।

कल्लविअ वि [**दे**] १ तीमित, आर्द्रित ; २ विस्तारित, फैलाया हुआ ; (दे २, १८)।

कल्ला स्त्री [**दे**] मद्य, दारू ; (दे २, २)।

कल्लाकल्लि, **कल्लाकल्लिं** अ [**कल्याकल्य**] १ प्रतिदिन, हर रोज ; (विपा १, ३ ; णाया १, १८)। २ प्रति-प्रभात, रोज सुबह ; (उवा ; प्राप)।

कल्लाण पुंन [**कल्याण**] १ सुख, मंगल, क्षेम ; "गुणट्ठाणपरिणामे संते जीवाण सयलकल्लाणा" (उप ६०० ; महा; प्रास् १४६)। २ निर्वाण, मोक्ष ; (विसे ३४४०)। ३ विवाह, लग्न ; (वसु)। ४ जिन भगवान् का पूर्व भव से च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल-ज्ञान तथा मोक्ष-प्राप्ति रूप अवसर ; "पंच महाकल्लाणा सव्वेसिं जिणाण होंति णियमेण" (पंचा ८)। ५ समृद्धि, वैभव ; (कप्प)। ६ वृक्ष-विशेष; (पण्ण १)। ७ तप-विशेष ; (पव)। ८ देश-विशेष। ९ नगर-विशेष ; "कल्लाणदेसे कल्लाणनयरे संकरो णाम राया जिणभत्तो हुत्था" (ती ५१)। १० पुण्य, शुभ कर्म ; (आचा)। ११ वि. हित-कारक, सुख-कारक ; (जीव ३ ; उत्त ३)। °**कडय** न [°**कृतक**] नगर-विशेष; (ती)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] सुखावह, मङ्गल-कारक; (णाया १, १६

कल्लाणि वि [**कल्याणिन्**] कल्याण-प्राप्त ; (राज)।

कल्लाणी स्त्री [**कल्याणी**] १ कल्याण करने वाली स्त्री ; (गउड)। २ दो वर्ष की बछिया ; (उत्तर १०३)।

कल्लाल पुं [**कल्यपाल**] कलाल, दारू बेचने वाला ; (अणु ; भाव ६)।

कल्लिं अ [**कल्ये**] कल दिन, कल को ; (गा ५०२)।

कल्लुग पुं [**कल्लुक**] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, कीट की एक जाति ; (जीव ३)।

कल्लुरिया [**दे**] देखो **कुल्लरिया**; (राज)।

कल्लेउय पुंन [**दे**] कलेवा, प्रातराश ; (ओघ ४६४ टी)।

कल्लोडय पुं [**दे**] दमनीय बैल, साँढ; (आचा २, ४, २)।

कल्लोडिआ [**दे**] देखा **कल्होडी** ; (नाट)।

कल्लोल पुं [**कल्लोल**] तरङ्ग, ऊर्मि ; (औप ; प्रासु १२७)।

कल्लोल वि [**दे. कल्लोल**] शत्रु, दुश्मन ; (दे २, २)।

कल्लोलिणी स्त्री [**कल्लोलिनी**] नदी ; (कप्पू)।

कल्हार न [**कह्लार**] सफेद कमल ; (पण्ण १ ; दे २, ७६)।

कल्हिं देखो **कल्लिं** ; (गा ८०२)।

कल्होड पुं [**दे**] वत्सतर, बछड़ा ; (दे २, ६)।

कल्होडी स्त्री [**दे**] वत्सतरी, बछिया ; (दे २, ६)।

कव अक [**कु**] आवाज करना, शब्द करना। **कवइ** ; (हे ४, २३३)।

कवइय वि [**कवचित**] बख्तर वाला, वर्मित ; (पउम ७०, ७१ ; औप)।

कवंध देखो **कमंध** ; (पण्ह १, ३ ; महा ; गउड)।

कवचिया स्त्री [**कवचिका**] कलाचिका, प्रकोष्ठ ; (राज)।

कवट्टिअ वि [**कदर्थित**] पीडित, हैरान किया हुआ ; (हे १, १२४)।

कवड न [**कपट**] माया, छद्म, शाठ्य; (पाअ ; सुर ४, १६१)।

कवडि देखा **कवड्डि** ; "तो भणइ कवडिजक्खो अज्जवि तं पुच्छसे एयं" (सुपा ५४२)।

कवड्ड पुं [**कपर्द**] बड़ी कौड़ी, वराटिका ; (दे १, ११० ; जी १५)।

कवड्डि पुं [**कपर्दिन्**] १ यक्ष-विशेष ; (सुपा ५१२)। २ महादेव, शिव ; (कुमा)।

कवड्डिया स्त्री [**कपर्दिका**] कौड़ी, वराटिका; (सुपा १४; ५४५)।

कवण वि [**किम्**] कौन ? (पउम ७२, ८ ; कुमा)।

कवय पुंन [**कवच**] वर्म, बख्तर ; (विपा १, २ ; पउम २४, ३१ ; पाअ)।
कवय न [**दे**] वनस्पति-विशेष, भूमिच्छत्र ; (दे २, ३)।
कवरी स्त्री [**कबरी**] केश-पाश, धम्मिल्ल ; (कुमा ; वेणी १८३)।
कवल सक [**कवलय्**] ग्रसना, हड़प करना। कवलेइ ; (गउड)। कर्म—कवलिज्जइ ; (गउड)। कवकृ—**कवलिज्जंत** ; (सुपा ७०)। संकृ—**कवलिऊण** ; (गउड)।
कवल पुं [**कवल**] कवल, ग्रास; (पव ४ ; औप)।
कवलण न [**कवलन**] ग्रसन, भक्षण ; (काप्र १७० ; सुपा ४७४)।
कवलिअ वि [**कवलित**] ग्रसित, भक्षित ; (पाअ; सुर २, १४६ ; सुपा १२१; ३१६)।
कवलिआ स्त्री [**दे**] ज्ञान का एक उपकरण; (आप ८)।
कवल्लि } स्त्री [**दे**] पात्र-विशेष, गुड़ वगैरः पकाने का भाजन,
कवल्ली } कड़ाह, कराह "डज्झंतेण य गिम्हे कालसिलाए कवल्लिभूयाए" (संथा १२० ; विपा १, ३)।
कवाड } पुंन [**कपाट**] किवाड़, किवाड़ी, (गउड ; औप ;
कवाल } गा ६२०)।
कवाल न [**कपाल**] १ खोपड़ी, सिर की हड्डी ; "करकलिअकवालो" (सुपा १५२)। २ घट-कर्पर, भिक्षा-पात्र; (आचा; हे १, २३१)।
कवास पुं [**दे**] एक प्रकार का जूता, अर्धजङ्घा ; (दे २, ५)।
कवि देखो **कइ**=कपि ; (सुर १, २४६)।
कवि पुं [**कवि**] १ कविता करने वाला ; (सुर १, १८ ; सुपा ५६२ ; प्रासू ६३)। २ शुक्र, ग्रह-विशेष ; (सुपा ५६२)। °**त्त** न [°**त्व**] कविता, कवित; (सुर १, ४२)। देखो **कइ**=कवि।
कविअ न [**कविक**] लगाम ; (पाअ ; सुपा २१३)।
कविंजल देखो **कपिंजल** ; (आचा २)।
कविकच्छु } देखो **कइकच्छु** ; (पण्ह २, ५ ; श्रा १४ ;
कविगच्छु } दे १, २६ ; जीव ३)।
कविट्ठ देखो **कइत्थ** ; (पण्ण १ ; दे ३, ४५)।
कविड न [**दे**] घर का पीछला आँगन ; (दे २, ६)।
कवित्थ देखो **कइत्थ** ; (उप १०३१ टी)।
कवियच्छु देखो **कइकच्छु** ; (स २३६)।

कविल पुं [**दे**] श्वान; कुत्ता ; (दे २, ६ ; पाअ)।
कविल पुं [**कपिल**] १ वर्ण-विशेष, भूरा रंग, तामड़ा वर्ण; (उवा २)। २ पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, ४)। ३ सांख्य मत का प्रवर्त्तक मुनि-विशेष ; (आवम ; औप)। ४ एक ब्राह्मण महर्षि ; (उत्त ८)। ५ इस नामका एक वासुदेव ; (णाया १, १६)। ६ राहु का पुद्गल-विशेष ; (सुज्ज २०)। ७ भूरा रंग का, मटमैला रंग का ; (पउम ६, ७० ; से ७, २२)। °**ा** स्त्री [°**ा**] एक ब्राह्मणी का नाम; (आचू)।
कविलडोला स्त्री [**दे. कपिलडोला**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती में "खडमाकडी" कहते हैं; (जी १८)।
कविलास देखो **कइलास** ; "तेसुवि हवेज्ज कविलासमेरुगिरिसंनिभा कूडा" (उव)।
कविलिअ वि [**कपिलित**] कपिल रंग वाला किया हुआ; भूरे रंग से रंगित ; (गउड)।
कविल्लुय न [**दे**] पात्र-विशेष, कड़ाही; (बृह ५)।
कविस पुं [**कपिश**] १ वर्ण-विशेष,काला-पीला रंग, बदामी, कृष्ण-पीत-मिश्रित वर्ण ; २ वि. कपिश वर्ण वाला ; (पाअ ; गउड)।
कविस न [**दे**] दारू, मद्य, मदिरा ; (दे २, २)।
कविसा स्त्री [**दे**] अर्धजङ्घा, एक प्रकार का जूता; (दे २, ५)।
कविसायण पुंन [**कपिशायन**] मद्य-विशेष, गुड़ का दारू; (पण्ण १७—पत्र ५३२)।
कविसीसग } पुंन [**कपिशीर्षक**] प्राकार का अग्र-भाग ;
कविसीसय } (औप ; णाया १, १ ; राय)।
कवेल्लुय देखो **कविल्लुय** ; (ठा ८—पत्र ४१७)।
कवोय पुं [**कपोत**] १ कबूतर, परेवा ; (गउड ; विपा १, ७)। २ म्लेच्छ-देश विशेष ; (पउम २७, ७)। ३ न. कूष्माण्ड, कोहला ; (भग १५)।
कवोल पुं [**कपोल**] गाल, गण्ड ; (सुर ३, १२० ; हे ४, ३६५)।
कव्व न [**काव्य**] १ कविता, कवित्व ; (ठा ४, ४ ; प्रासू १)। २ पुं. ग्रह-विशेष, शुक्र ; (सुर ३, ५३)। ३ वि. वर्णनीय, श्लाघनीय ; (हे २, ७६)। °**इत्त** वि [°**वत्**] काव्य वाला; (हे २, १५६)।
कव्व न [**क्रव्य**] मांस ; (सुर ३, ५३)।
कव्वड देखो **कब्बड** ; (भवि)।

कव्वाड पुं [**दे**] दक्षिण हस्त, दाहिना हाथ; (दे २, १०)।

कव्वाय पुं [**क्रव्याद**] १ राक्षस, पिशाच ; (पउम ७, १० ; दे २, १५ ; स २१३) । २ वि. कच्चा मांस खाने वाला ; (पउम २२, ३५) ; ३ मांस खाने वाला ; (पात्र)।

कव्वाल न [**दे**] १ कर्म-स्थान, कार्यालय ; २ गृह, घर ; (दे २, ५२)।

कस सक [**कष्**] १ ठार मारना। २ कसना, घिसना। ३ मलिन करना। कसंति ; (पण्ण १३)। कवकृ— **कसिज्जमाण** ; (सुपा ६१५)।

कस पुं [**कश**] चर्म-यष्टि, चाबुक ; (पण्ह १, ३ ; गाया १, २ ; स २८७)।

कस पुं [**कष**] १ कसौटी, कष-क्रिया ; "तावच्छेयकसेहिं सुद्धं पासइ सुवन्नमुप्पन्नं" (सुपा ३८६)। २ कसौटी का पत्थर ; (पात्र)। ३ वि. हिंसक, मार डालने वाला, ठार मारने वाला ; (ठा ४, १)। ४ पुंन. संसार, भव, जगत् ; (उत्त ४)। ५ न. कर्म, कर्म-पुद्गल ; "कम्मं कसं भवो वा कसं" (विसे १२२८)। °**पट्ट**, °**वट्ट** पुं [°**पट्ट**] कसौटी का पत्थर ; (अणु ; गा ६२६; सुर २, २४)। °**हि** पुंस्त्री [°**हि**] सर्प की एक जाति ; (पण्ण १)।

कसई स्त्री [**दे**] फल-विशेष, अरण्यचारी वनस्पति का फल; (दे २, ६)।

कसट (पै) देखो **कट्ठ**=कष्ट; (हे ४, ३१४ ; प्राप्र)।

कसट्ट पुं [**दे**] कतवार, कूड़ा ; (ओघ ५५७)।

कसण पुं [**कृष्ण**] १ वर्ण-विशेष; २ वि. कृष्ण वर्ण वाला, काला, श्याम ; (हे २, ७५ ; ११० ; कुमा)। °**पक्ख** पुं [°**पक्ष**] कृष्ण-पक्ष, बदि पखवारा ; (पात्र)। °**सार** पुं [°**सार**] १ वृक्ष-विशेष ; २ हरिण की एक जाति ; (नाट—मृच्छ ३)।

कसण वि [**कृत्स्न**] सकल, सब, सर्व ; (हे २, ७५)।

कसणसिअ पुं [**दे**] बलभद्र, वासुदेव का बड़ा भाई ; (दे २, २३)।

कसणिअ वि [**कृष्णित**] काला किया हुआ ; (पात्र)।

कसमीर देखो **कम्हीर** ; (पउम ६८, ६५)।

कसर पुं [**दे**] अधम बैल ; (दे २, ४ ; गा ७६५)। "नणु सीलभरुव्वहणे, तेवि हु सीयंति का(? क)सरुव्व" (पुप्फ ६३)।

कसर पुंन [**दे. कसर**] रोग-विशेष, कण्डू-विशेष ; "कच्छुख(? क)सराभिभूआ खरतिक्खणक्खकंडूइअविकय-तणू" (जं २—पत्र १६५)।

कसरक्क पुंन [**दे. कसरत्क**] १ चर्वण-शब्द, खाते समय जो शब्द होता है वह ; "खज्जइ न उ कसरक्केहिं" (हे ४, ४२३ ; कुमा)। २ कुड्मल ;

"ते गिरिसिहरा ते पीलुपल्लवा ते करीरकसरक्का।
लब्भंति करह ! मरुविलसियाइं कत्तो वणेत्थम्मि"
(वज्जा ४६)।

कसव्व न [**दे**] बाष्प, भाफ ; २ वि. स्तोक, अल्प ; ३ प्रचुर, व्याप्त ; (दे २, ५३)। ४ आर्द्र, गीला ; "रुहिरकसव्वालंबियदीहरवणकोलवब्भनिउरंबं" (स ४३७ ; दे २, ५३)। ५ कर्कश, परुष; "बूडोअयकयरवचुण्ण-कलुसपालासफलकसव्वाओ" (गउड)।

कसा स्त्री [**कशा, कसा**] चर्म-यष्टि, चाबुक, कोड़ा ; (विपा १, ६ ; सुपा ३४५)।

कसा देखो **कासा** ; (षड्)।

कसाइ वि [**कषायिन्**] १ कषाय रंग वाला। २ क्रोध-मान-माया-लोभ वाला ; (पण्ण १८ ; आचा)।

कसाइअ वि [**कषायित**] ऊपर देखो ; (गा ४८२ ; श्रा ३५ ; आचा)।

कसाय सक [**कशाय्**] ताड़न करना, मारना। भूका— कसाइत्था ; (आचा)।

कसाय पुं [**कषाय**] १ क्रोध, मान, माया और लोभ ; (विसे १२२६ ; दं ३)। २ रस-विशेष, कसैला ; (ठा १)। ३ वर्ण-विशेष, लाल-पीला रङ्ग ; (उवा २२)। ४ क्वाथ, काढ़ा ; ५ वि. कसैला स्वाद वाला ; ६ कषाय रंग वाला ; ७ सुगन्धी, खुशबुदार ; (हे २, १६०)।

कसार [**दे**] देखो **कंसार** ; (भवि)।

कसिअ न [**कशिका**] प्रतोद, चाबुक ; "अंधो मए भद्दवदीए कसिअं आढत्तं" (प्रयौ १०८)।

कसिआ स्त्री. ऊपर देखो ; (सुर १३, १७०)।

कसिआ स्त्री [**दे**] फल-विशेष; अरण्यचारी नामक वनस्पति का फल ; (दे २, ६)।

कसिट (पै) देखो **कट्ठ**=कृष्ट ; (षड्)।

कसिण देखो **कसण**=कृष्ण, कृत्स्न ; (हे २, ७५ ; कुमा ; पात्र ; दे ४, १२)।

कसेरु } **कसेरुय** } पुंन [**कशेरु, °क**] जलीय कन्द-विशेष; (गउड; पराग १)।

कस्स पुं [**दे**] पङ्क, कर्दम, कादा ; (दे २, २) ।

कस्सय न [**दे**] प्राभृत, उपहार, भेंट; (दे २, १२)।

कस्सव पुं [**°काश्यप**] १ वंश-विशेष ; "कस्सववंसुतंसो" (विक्र ६५)। २ ऋषि-विशेष ; (अभि २६)।

कह सक [**कथय्**] कहना, बोलना । कहइ; (हे ४,२)। कर्म—कत्थइ, कहिज्जइ ; (हे १, १८७ ; ४, २४६)। वकृ—**कहंत, कहिंत, कहेमाण**; (रयण ७१ ; सुर ११, १४८)। कवकृ—**कत्थंत, कहिज्जंत, कहिज्जमाण**; (राज ; सुर १, ४४ ; गा १६८; सुर १४, ६४)। संकृ—**कहिउं, कहिऊण** ; (महा ; काल)। कृ—**कहणिज्ज, कहियव्व, कहेयव्व, कहणीय**; (सूअ १, १, १ ; सुर ४, १६२ ; सुपा ३१६ ; (पराह २, ४ ; सुर १२, १७०) ।

कह सक [**क्वथ्**] क्वाथ करना, ऊबालना । कहइ ; (षड्) ।

कह पुं [**कफ**] कफ, शरीरस्थ धातु विशेष, बलगम ; (कुमा) ।

कह देखो **कहं** ; (हे १, २६ ; कुमा ; षड्) । **°कहवि** देखो **कहं-कहंपि** ; (गउड ; उप ७२८ टी) । **°वि** देखो **कहं-पि** ; (प्रासू ११४; १४१) ।

कहआ अ [**कथंवा**] वितर्क और आश्रय अर्थ को बतलाने वाला अव्यय ; (से ७, ३४) ।

कहं अ [**कथम्**] १ कैसे, किस तरह ? (स्वप्न ४५ ; कुमा) । २ क्यों, किस लिए ? (हे १, २६ ; षड् ; महा) । **°कहंपि** अ [**°कथमपि**] किसी तरह ; (गा १४६) । **°कहा** स्त्री [**°कथा**] राग-द्वेष को उत्पन्न करने वाली कथा, विकथा ; (आचा) । **°चि, °ची** अ [**°चित्**] किसी तरह, किसी प्रकार से ; (श्रा १२ ; उप ५३० टी) । **°पि** अ [**°अपि**] किसी तरह ; (गउड) ।

कहकह पुं [**कहकह**] प्रमोद-कलकल, खुशी का शोर ; (ठा ३, १—पत्र ११६ ; कप्प) ।

कहकह अक [**कहकहय्**] खुशी का शोर मचाना । वकृ—**कहकहिंत** ; (पराह १, ३) ।

कहकहकह पुं [**कहकहकह**] खुशी का शोर; (भग) ।

कहग वि [**कथक**] १ कहने वाला, (सट्टि २३) । २ पुं. कथा-कार ; (उप १०३१ टी) ।

कहण न [**कथन**] कथन, उक्ति ; (धर्म १) ।

कहणा स्त्री [**कथना**] ऊपर देखो ; (श्रत २ ; उप ४६७; ६६८) ।

कहय देखो **कहग** ; (दे १, १४५) ।

कहल्ल पुंन [**दे**] कर्पर, खप्पर ; (अंत १२) ।

कहा स्त्री [**कथा**] कथा, वार्ता, हकीकत ; (सुर २, २५० ; कुमा ; स्वप्न ८३) ।

कहाणग } **कहाणय** } न [**कथानक**] १ कथा, वार्ता ; (श्रा १२ ; उप पृ ११६) । २ प्रसंग, प्रस्ताव ; " कयं से नामं जालिणित्ति कहाणयविसेसेण" (स १३३ ; ५८८) । ३ प्रयोजन, कार्य ; "कहाणयविसेसेण समागओ पाडलावहं" (स ५८५) ।

कहाव सक [**कथय्**] कहलाना, बुलवाना । कहावेइ ; (महा) ।

कहावण पुं [**कार्षापण**] सिक्का-विशेष ; (हे २ , ७१ ; ९३ ; कुमा) ।

कहाविअ वि [**कथित**] कहलाया हुआ ; (सुपा ६५ ; ४५७) ।

कहि } **कहिआ** } **कहिं** } अ [**क्व, कुत्र**] कहां, किस स्थान में ? (उवा; भग; नाट ; कुमा ; उवा) ।

कहित्तु वि [**कथयितृ**] कहने वाला, भाषक ; (सम १५) ।

कहिय वि [**कथित**] कथित, उक्त ; (उव ; नाट) ।

कहिया स्त्री [**कथिका**] कथा, कहानी ; (उप १०३१ टी) ।

कहु (अप) अ [**कुतः**] कहां से, ? (षड्) ।

कहेड वि [**दे**] तरुण, जुवान ; (दे २, १३) ।

कहेत्तु देखो **कहित्तु** ; (ठा ४, २) ।

काइअ वि [**कायिक**] शारीरिक; शरीर-संबन्धी ; (श्रा ३४ ; प्रामा) ।

काइआ } **काइगा** } स्त्री [**कायिकी**] १ शरीर-सबन्धी क्रिया, शरीर से निर्वृत्त व्यापार ; (ठा २, १ ; सम १०; नव १७) । २ शौच-क्रिया ; (स ६४६) । ३ मूत्र, पेशाब; (ओघ २१६ ; उप पृ २७८)।

काइंदी स्त्री [**काकन्दी**] इस नाम की एक नगरी, बिहार की एक नगरी ; (संथा ७६) ।

काइणी स्त्री [**दे**] गुञ्जा, लाल रत्ती ; (दे २, २१) ।

काई स्त्री [**काकी**] कौए की मादा ; (विपा १, ३)।
काउ स्त्री [**कापोती**] लेश्या-विशेष, आत्मा का एक प्रकार का परिणाम ; (भग ; आचा)। °**लेसा** स्त्री [°**लेश्या**] आत्म-परिणाम विशेष ; (सम ; ठा ३, १)। °**लेस्स** वि [°**लेश्य**] कापोत लेश्या वाला ; (पराण १७ ; भग)। °**लेस्सा** देखो °**लेसा** ; (पराण १७)।
काउं देखो **कर**=कृ।
काउंबर पुं [**काकोदुम्बर**] नीचे देखो ; (राज)।
काउंबरी स्त्री [**काकोदुम्बरी**] ओषधि-विशेष ; "निबंब-उंबउंबरकाउंबरिबोरि—" (उप १०३१ टी ; पराण १)।
काउकाम वि [**कर्त्तु काम**] करने को चाहने वाला; (ओघ ५३७)।
काउड्डावण न [**कायोड्डायन**] उच्चाटन, दूर-स्थित दूसरे के शरीर का आकर्षण करना ; (णाया १, १४)।
काउदर पुं [**काकोदर**] साँप की एक जाति ; (पराह १, १)।
काउमण वि [**कर्त्तुमनस्**] करने की चाह वाला; (उव ; उप पृ ७० ; सं ६०)।
काउरिस पुं [**कापुरुष**] १ खराब आदमी, नीच पुरुष ; २ कातर, डरपोक पुरुष ; (अउड ; सुर ८, १५० ; सुपा १६२)।
काउल्ल पुं [**दे**] बक, बगुला ; (दे २, ६)।
काउसग्ग } पुं [**कायोत्सर्ग**] १ शरीर पर के ममत्व
काउस्सग्ग } का त्याग; (उत्त २६)। २ कायिक क्रिया का त्याग ; ३ ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता ; (पडि)।
काऊ देखो **काउ** ; (ठा १ ; कम्म ४ , १३)।
काऊण } देखो **कर**=कृ।
काऊणं }
काओदर देखो **काउदर** ; (स्वप्न ६८)।
काओली स्त्री [**काकोली**] कन्द-विशेष, वनस्पति-विशेष; (पराण १)।
काओवग पुं [**कायोपग**] संसारी आत्मा ; (सूअ २, ६)।
काओसग्ग देखो **काउसग्ग** ; (भवि)।
काक पुं [**काक**] १ कौआ, वायस ; (अनु ३)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २,-३—पत्र ७८)। °**जंघा** स्त्री [°**जङ्घा**] वनस्पति-विशेष, चकसेनी, घूंघची; (अनु ३)। देखो **काग**, **काय**=काक।
काकंदग पुं [**काकन्दक**] एक जैन महर्षि; (कप्प)।
काकंदिय पुं [**काकन्दिक**] एक जैन महर्षि ; (कप्प)।
काकंदिया स्त्री [**काकन्दिका**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।
काकंदी देखो **काइंदी** ; (णाया १, ६ ; ठा ५, १)।
काकणि देखो **कागणि** ; (विपा १, २)।
काकलि देखो **कागलि** ; (ठा १०—पत्र ४७१)।
काग देखो **काक** ; (दे १, १०६ ; प्रासू ६०)। °**ताल-संजीवगनाय** पुं [°**तालसंजीवकन्याय**] काकतालीय-न्याय ; (उप १४२ टी)। °**तालिज्ज**, °**तालीअ** न [°**तालीय**] जैसे कौए का अतर्कित आगमन और ताल-फल का अकस्मात् गिरना होता है ऐसा अवितर्कित संभव, अक-स्मात् किसी कार्य का होना ; (आचा ; दे ५, १५)। °**थल** न [°**स्थल**] देश-विशेष; (दे २, २७)। °**पाल** पुं [°**पाल**] कुष्ठ-विशेष ; (राज)। °**पिंडी** स्त्री [°**पिण्डी**] अग्र-पिण्ड ; (आचा २, १, ६)। देखो **काय**=काक।
कागंदी देखो **काइंदी** ; (अनु २)।
कागणि स्त्री [**दे**] १ राज्य ; " असोगसिरिणो पुत्तो अंधो जायइ कागणिं " (विसे ८६२)। २ मांस का छोटा टुकड़ा ; (औप)।
कागणी देखो **कागिणी** ; (श्रा २७ ; ठा ७)।
कागल पुं [**काकल**] ग्रीवास्थ उन्नत प्रदेश ; (अनु)।
कागलि } स्त्री [**काकलि**, °**ली**] १ सूक्ष्म गीत-ध्वनि,
कागली } स्वर-विशेष ; (सुपा ५६ ; उप पृ ३५)। २ देवी-विशेष, भगवान् अभिनन्दन की शासन-देवी; (पव २७)।
कागिणी स्त्री [**काकिणी**] १ कौड़ी, कपर्दिका; (उर ७, ३ ; उव ; श्रा २८ टी)। २ बीस कौडी के मूल्य का एक सिक्का ; (उप ५४५)। ३ रत्न-विशेष; (सम २७ ; उप ६८६ टी)।
कागी स्त्री [**काकी**] १ कौए की मादा ; (वव ३)। २ विद्या-विशेष ; (विसे २४५३)।
कागोणंद पुं [**काकोनन्द**] इस नाम की एक म्लेच्छ-जाति ; " मिच्छा कागोणंदा विक्खाया महियलम्मि ते सूरा " (पउम ३४, ४१)।
काण वि [**काण**] काना, एकाक्ष; (सुपा ६४३)।
काण वि [**दे**] १ सच्छिद्र, काना ; (आचा २, १, ८)। २ चुराया हुआ। °**क्कय** पुं [°**क्रय**] चुराई हुई चीज को खरीदना ; (सुपा ३४३ ; ३४४)।

काणच्छि } स्त्री [**दे**] टेढ़ी नजर से देखना, कटाक्ष ;
काणच्छिया } (दे २, २४ ; भवि) । "काणच्छियाओ य जहा विडो तहा करेइ " (आवम) ।

काणण न [**कानन**] १ वन, जंगल ; (पाअ) । २ बगीचा, उपवन ; (अनु ; औप) ।

काणत्थेव पुं [**दे**] विरल जल-वृष्टि, बुंद बुंद बरसना ; (दे २, २६) ।

काणद्धी स्त्री [**दे**] परिहास; (दे २, २८) ।

काणिक्का स्त्री [**दे**] बडी ईंट ; (बृह ३) ।

काणिट्ठा स्त्री [**काणेष्ठा**] लोहे की ईंट ; (वव ४) ।

काणिय न [**काण्य**] आँख का रोग ; " काणियं झिम्मियं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा " (आचा) ।

काणीण पुं [**कानीन**] कुँवारी कन्या से उत्पन्न पुत्र ; (भवि) ।

कादंब देखो **कायंब** ; (पण्ह १, १) ।

कादंबरी देखो **कायंबरी** ; (अभि १८८) ।

कापुरिस देखो **काउरिस** ; (गाया १, १) ।

काम सक [**कामय्**] चाहना, वाञ्छना । कामेइ ; (पि ४६१) । कामेंति ; (गउड) । वकृ—**कामेंत कामअमाण** ; (गा २५६ ; अभि ६१) ।

काम पुं [**काम**] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा; (उत्त १४; आचा ; प्रासू ६६) । २ सुन्दर शब्द, रूप वगैर : विषय; (भग ७, ७ ; ठा ४, ४) । ३ विषय का अभिलाष ; (कुमा) । ४ मदन, कन्दर्प ; (कुमा ; प्रासू १) । ५ इन्द्रिय-प्रीति ; (धर्म १) । ६ मैथुन ; (पण्ण २) । ७ छन्द-विशेष ; (पिंग) । °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**कम** न [°**कम**] लान्तक देव-लोक के इन्द्र का एक यात्रा-विमान ; (ठा १०—पत्र ४३७) । °**काम** वि [°**काम**] विषय की चाह वाला ; (पण्ण २) । °**कामि** वि [°**कामिन्**] विषयाभिलाषी ; (आचा) । °**कूड** न [°**कूट**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**गम** वि [°**गम**] १ स्वेच्छाचारी, स्वैरी ; (जीव ३) । २ न. देखो °**कम** ; (जीव ३) । °**गामि** स्त्री [°**गामी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३५) । °**गुण** न [°**गुण**] १ मैथुन ; (पण्ह १, ४) । २ शब्द-प्रमुख विषय ; (उत्त १४) । °**घड** पुं [°**घट**] ईप्सित चीज़ को देने वाला दिव्य कलश ; (श्रा १४) । °**जल** न [°**जल**] स्नान-पीठ, जिस पर बैठकर स्नान किया जाता है वह पट्ट ; "सिणाणपीढं तु कामजलं" (निचू १३) । °**जुग** पुं [°**युग**] पक्षि-विशेष ; (जीव ३) । °**ज्झय** न [°**ध्वज**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**ज्झया** स्त्री [°**ध्वजा**] इस नाम की एक वेश्या ; (विपा १, २) । °**ट्ठि** वि [°**र्थिन्**] विषयाभिलाषी ; (गाया १, १) । °**ड्ढिय** पुं [°**र्द्धिक**] १ जैन साधुओं का एक गण; (ठा ६—पत्र ४५१) । २ न. जैन मुनिओं का एक कुल; (राज) । °**णयर** न [°**नगर**] विद्याधरों का एक नगर; (इक) । °**दाइणी** स्त्री [°**दायिनी**] ईप्सित फल को देने वाली विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३५) । °**दुहा** स्त्री [°**दुघा**] काम-धेनु ; (श्रा १६) । °**देअ,** °**देव** पुं [°**देव**] १ अनंग, कन्दर्प; (नाट ; स्वप्न ५५) । २ एक जैन श्रावक का नाम ; (उवा) । °**धेणु** स्त्री [°**धेनु**] ईप्सित फल देने वाली गौ; (काल) । °**पाल** पुं [°**पाल**] १ देव-विशेष ; (दीव) । २ बलदेव, हलायुध ; (पाअ) । °**पिपासय** त्रि [°**पिपासक**] विषयाभिलाषी; (भग) । °**पुर** न [°**पुर**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर; (इक) । °**प्पभ** न [°**प्रभ**] देव विमान-विशेष ; (जीव ३) । °**फास** पुं [°**स्पर्श**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष ; (सुज्ज २०) । °**महावण** न [°**महावन**] बनारस के समीप का एक चैत्य ; (भग १५) । °**रूअ** पुं [°**रूप**] देश-विशेष, जो आसाम में है ; (पिंग) । °**लेस्स** न [°**लेश्य**] देव-विमाम विशेष ; (जीव ३) । °**वण्ण** न [°**वर्ण**] एक देव-विमान ; (जीव ३) । °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] रति-शास्त्र ; (धर्म २) । °**समणुण्ण** वि [°**समनोज्ञ**] कामासक्त, कामान्ध ; (आचा) । °**सिंगार** न [°**शृङ्गार**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**सिट्ठ** न [°**शिष्ट**] एक देव-विमान ; (जीव ३) । °**ावट्ट** न [°**ावर्त**] देव-विमान-विशेष ; (जीव ३) । °**ावसाइत्ता** स्त्री [°**ावशायिता**] योगी का एक तरह का ऐश्वर्य, जिसमें योगी अपनी इच्छा के अनुसार सर्व पदार्थों का अपने चित्त में समावेश करता है ; (राज) । °**ासंसा** स्त्री [°**ाशंसा**] विषयाभिलाष ; (ठा ४, ४) ।

कामं अ [**कामम्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अवधारण ; (सूअ २, १) । २ अनुमति, सम्मति ; (निचू १६) । ३ अभ्युपगम, स्वीकार ; (सूअ २, ६) । ४ अतिशय, आधिक्य ; (हे २, २१७ ;

कामंग न [**कामाङ्ग**] कन्दर्प का उत्तेजक स्नान वगैरः ; (सूत्र २, २)।

कामंदुहा स्त्री [**कामदुघा**] काम-धेनु, ईप्सित वस्तु को देने वाली दिव्य गौ ; (पउम ८२, १४)।

कामंध पुं [**कामान्ध**] विषयातुर, तीव्र-कामी ; (प्रासू १७६)।

कामकिसोर पुं [**दे**] गर्दभ, गधा ; (दे २, ३०)।

कामग वि [**कामक**] १ अभिलषणीय, वाञ्छनीय ; (पराह १, १)। २ चाहने वाला, इच्छुक ; (सूत्र १, २, २)।

कामण न [**कामन**] चाह, अभिलाष ; "परइत्थिकामणेणं जीवा नरयम्मि वच्चंति" (महा)।

कामय देखो **कामग** ; (उवा)।

कामि वि [**कामिन्**] विषयाभिलाषी ; (आचा ; गउड)।

कामिअ वि [**कामित**] वाञ्छित, अभिलषित ; (सुपा २५५)।

कामिअ वि [**कामिक**] १ काम-संबन्धी, विषय संबन्धी ; (भत्त १११)। २ न. तीर्थ-विशेष ; (ती २८)। ३ सरोवर-विशेष, जिसमें गिरने से ईप्सित जन्म मिलता है ; (राज)। ४ इच्छा पूर्ण करने वाला ; (स ३६०)। ५ वि. इच्छुक, इच्छा वाला, साभिलाष ; (विपा १, १)।

कामिआ स्त्री [**कामिका**] इच्छा, अभिलाषा; "अकामिआए चिणंति दुक्खं" (पराह १, ३)।

कामिंजुल पुं [**कामिञ्जुल**] पक्षि-विशेष ; (दे २, २६)।

कामिड्ढि पुं [**कामर्द्धि**] एक जैन मुनि, आर्य सुहस्ति-सूरि का एक शिष्य ; (कप्प)।

कामिड्ढिय न [**कामर्द्धिक**] जैन मुनिओं का एक कुल ; (कप्प)।

कामिणी स्त्री [**कामिनी**] कान्ता, स्त्री ; (सुपा ५)।

कामुअ } **कामुग** } वि [**कामुक**] कामी, विषयाभिलाषी ; (मै २५ ; महा)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] काम-शास्त्र, रति-शास्त्र ; (उप ५३० टी)।

कामुत्तरवडिंसग न [**कामोत्तरावतंसक**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३)।

काय पुं [**काय**] १ शरीर, देह ; (ठा ३, १ ; कुमा)। २ समूह, राशि ; (विसे ६००)। ३ देश-विशेष ; (पराह १, १)। ४ वि. उस देश में रहने वाला; (पराण १)। °**गुत्त** वि [°**गुप्त**] शरीर को वश में रखने वाला ; (भग)। °**गुत्ति** स्त्री [°**गुप्ति**] शरीर का वश में रखना, जितेन्द्रियता; (भग)। °**जोअ**, °**जोग** पुं [°**योग**] शरीर-व्यापार, शारीरिक क्रिया ; (भग)। °**जोगि** वि [°**योगिन्**] शरीर-जन्य क्रिया वाला ; (भग)। °**ट्ठिइ** स्त्री [°**स्थिति**] मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर रहना ; (ठा २, ३)। °**णिरोह** पुं [°**निरोध**] शरीर-व्यापार का परित्याग ; (आव ४)। °**तिगिच्छा** स्त्री [°**चिकित्सा**] १ शरीर-रोग की प्रतिक्रिया ; २ उसका प्रतिपादक शास्त्र ; (विपा १, ८)। °**भवत्थ** वि [°**भवस्थ**] माता के उदर में स्थित ; (भग)। °**वंझ** पुं [°**वन्ध्य**] ग्रह-विशेष ; (राज)। °**समिअ** स्त्री [°**समित**] शरीर की निर्दोष प्रवृति करने वाला; (भग)। °**समिइ** स्त्री [°**समिति**] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति ; (ठा ८)।

काय पुं [**काक**] १ कौआ, वायस ; (उप पृ २३ ; हेका १४८ ; वा २६)। २ वनस्पति-विशेष, काला उम्बर ; (पराण १—पत्र ३५)। देखो **काक, काग**।

काय पुं [**काच**] काँच, सीसा ; (महा ; आचा)।

काय पुं [**दे**] १ कावर, बहङ्गी, बोझ ढोने के लिए तराजूनुमाँ एक वस्तु, इसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं ; (णाया १, ८ टी—पत्र १५२)। °**कोडिय** पुं [°**कोटिक**] कावर से भार ढोने वाला ; (णाया १, ८ टी)। देखो **काव**।

काय पुं [**दे**] १ लक्ष्य, वेध्य, निशाना ; २ उपमान, जिस पदार्थ की उपमा दी जाय वह ; (दे २, २६)।

कायंचुल पुं [**दे**] कामिञ्जुल, जल-पक्षी विशेष ; (दे २, २६)।

कायंदी स्त्री [**दे**] परिहास, उपहास ; (दे २, २८)।

कायंदी देखो **काइंदी** ; (स ६)।

कायंधुअ पुं [**दे**] कामिञ्जुल, जल-पक्षी विशेष ; (दे २, २६)।

कायंब } **कायंबग** } पुं [**कादम्ब, °क**] १ हंस-पक्षी; (पाअ; कप्प)। २ गन्धर्व-विशेष ; ३ कदम्ब-वृक्ष ; (राज)। ४ वि. कदम्ब-वृक्ष-संबन्धी; "कायंबपुप्फगोलयमसूरअइमुत्तयस्स पुप्फं व" (पुप्फ २६८)।

कायंबर न [**कादम्बर**] मद्य-विशेष; गुड़ का दारू ; "कायंबरपसन्ना" (पउम १०२, १२२)।

कायंबरी स्त्री [**कादम्बरी**] १ मदिरा, दारू ; (पाअ ; पउम ११३, १०)। २ अटवी विशेष ; (स ५५१)।

कायक न [**दे. कायक**] हरा रंग की रूई से बना हुआ वस्त्र ; (आचा २, ५, १)।

कायत्थ पुं [**कायस्थ**] जाति-विशेष, कायथ जाति, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति, लेखक, लिखने का काम करने वाली मनुष्य-जाति ; (मुद्रा ७६ ; मृच्छ ११७)।

कायपिउच्छा, **कायपिउला** स्त्री [**दे**] कोकिला, कोयल, पिकी ; (दे २, ३० ; षड्)।

कायर वि [**कातर**] अधीर, डरपोक ; (णाया १, १ ; प्रासू ५८)।

कायर वि [**दे**] प्रिय, स्नेह-पात्र ; (दे २, ५८)।

कायरिय वि [**कातर**] १ डरपोक, भयभीत, अ-धीर ; "धीरेणवि मरियव्वं काउरिसेणावि अवस्समरियव्वं" (प्रासू १०६)। २ पुं. गोशालक का एक भक्त ; (भग ८, ५)।

कायरिया स्त्री [**कातरिका**] माया, कपट; (सूअ १, २, १)।

कायल पुं [**दे**] १ काक, कौआ ; (दे २, ५८ ; पाअ)। २ वि. प्रिय, स्नेह-पात्र ; (दे २, ५८)।

कायलि देखो **कागलि** ; (नाट—मृच्छ ६२)।

कायवंझ [**कायवन्ध्य**] ग्रह-विशेष; ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (राज)।

कायव्व देखो **कर**=कृ।

काया स्त्री [**काया**] शरीर, देह ; (प्रासू ११२)।

कायाग पुं [**कायाक**] नट-विशेष, बहुरूपिया ; (बृह ४)।

कार सक [**कारय्**] करवाना, बनवाना। कारेइ, कारेह ; (पि ४७२; सुपा ११३)। भूका—कारेत्था; (पि ५१७)। वकृ—**कारयंत** ; (सुर १६, १०); **कारेमाण**; (कप्प)। कवकृ—**कारिज्जंत** ; (सुपा ५७)। संकृ—**कारिऊण**; (पि ५८४)। कृ—**कारेयव्व** ; (पंचा ६)।

कार वि [**दे**] कटु, कड़वा, तीता ; (दे २, २६)।

कार पुंन. देखो **कारा**=कारा ; (स ६११; णाया १,१)।

कार पुं [**कार**] १ क्रिया, कृति, व्यापार ; (ठा १०)। २ रूप, आकृति ; ३ संघ का मध्य भाग ; (वव ३)।

°**कार** वि [°**कार**] करने वाला ; (पउम १७, ७)।

कारंकड वि [**दे**] परुष, कठिन ; (दे २, ३०)।

कारंड, **कारंडग**, **कारंडव** पुं [**कारण्ड**, °**क**] पक्षि-विशेष; "हंसकारंडवचक्कवाओवसोभियं" (भवि ; औप; स ६०१; णाया १, १ ; पण्ह १, १ ; विक्र ४१)।

कारग वि [**कारक**] १ करने वाला ; (पउम ८२, ७६ ; उप पृ २१५)। २ कराने वाला ; (श्रा ६ ; विसे)। ३ न. कर्ता, कर्म वगैरः व्याकरण-प्रसिद्ध कारक; (विसे ३३८४)। ४ कारण, हेतु ; "कारणं ति वा कारगं ति वा साहारणं ति वा एगट्ठा" (आचू १)। ५ उदाहरण, दृष्टान्त ; (ओघ १६ भा)। ६ पुंन. सम्यक्त्व-विशेष, शास्त्रानुसार शुद्ध क्रिया ; "जं जह भणियं तुमए तं तह करणम्मि कारगो होइ" (सम्य १४)।

कारण न [**कारण**] १ हेतु, निमित ; (विसे २०६८ ; स्वप्न १७)। २ प्रयोजन ; (आचा)। ३ अपवाद ; (कप्प)।

कारणिज्ज वि [**कारणीय**] प्रयोजनीय ; (स ३२६)।

कारणिय वि [**कारणिक**] १ प्रयोजन से किया जाता ; (उवर १०८)। २ कारण में प्रवृत्त ; (वव २)। ३ पुं. न्याय-कर्ता, न्यायाधीश ; (सुपा ११८)।

कारय देखो **कारग** ; (श्रा १६ ; विसे ३४२०)।

कारव सक [**कारय्**] करवाना, बनवाना। कारवेइ ; (उव)। वकृ—**कारविंत** ; (सुपा ६३२ ; पुप्फ ४७)। संकृ—**कारवित्ता** ; (कप्प)।

कारवण न [**कारण**] निर्मापन, बनवाना ; (राज)।

कारवस पुं [**कारवश**] देश-विशेष ; (भवि)।

कारवाहिय वि [**कारबाधित**] देखो **करवाहिय** ; (औप)।

कारविय वि [**कारित**] कराया हुआ ; (सुर १, २२६)।

कारह वि [**कारभ**] करभ-संबन्धी ; (गउड)।

कारा स्त्री [**कारा**] कैदखाना ; (दे २, २० ; पाअ)। °**गार** पुंन [°**गार**] कैदखाना, जेल ; (सुपा १२२ ; सार्ध ५२)। °**घर** न [°**गृह**] कैदखाना ; (अच्चु ८३)। °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] कैदखाना, जेलखाना ; (कप्प)।

कारा स्त्री [**दे**] लेखा, रेखा ; (दे २, ३६)।

कारायणी स्त्री [**दे**] शाल्मलि-वृक्ष, सेमल का पेड़ ; (दे २, १८)।

काराव देखो **कारव**। कारावेइ ; (पि ५५२)। भवि—कराविस्सं ; (पि ५२८)।

कारावण देखो **कारवण** ; (पण्ह १, ३ ; उप ४०६)।

कारावय वि [**कारक**] कराने वाला, विधापक; (स ५५७)।

काराविअ वि [**कारित**] करवाया हुआ, बनवाया हुआ ; (विसे १०१६ ; सुर ३, २४ ; स १६३) ।
कारि वि [**कारिन्**] कर्ता, करने वाला ; "एयस्स कारिणो बालिसत्तमारोविया जेण" (उव ५६७ टी) । "एयअणत्थस्स कारिणी अहयं" (सुर ८, ५६) ।
कारिम वि [**दे**] कृत्रिम, बनावटी, नकली ; (दे २, २७ ; गा ४५७ ; षड् ; उप ७२८ टी ; स ११६ ; प्रासू २०) ।
कारिय वि [**कारित**] कराया हुआ, बनवाया हुआ ; (पण्ह २, ५) ।
कारियल्लई स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, करैला का गाछ; (पण्ण १—पत्र ३३) ।
कारिया स्त्री [**कारिका**] करने वाली, कर्त्री ; (उवा) ।
कारिल्ली स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, करैला का गाछ; (सूक्त ६१) ।
कारीस पुं [**कारीष**] गोइठा का अग्नि, कंडा की आग; (उत्त १२) ।
कारु पुं [**कारु**] कारीगर, शिल्पी ; (पाअ ; प्रासू ८०) ।
कारुइज्ज वि [**कारुकीय**] कारीगर से संबन्ध रखने वाला; (पण्ह १, २) ।
कारुणिय वि [**कारुणिक**] दयालु, कृपालु ; (ठा ४, २ ; सण) ।
कारुण्ण } न [**कारुण्य**] दया, करुणा ; (महा ; उप
कारुन्न } ७२८ टी) ।
कारेमाण } देखो **कार**=कारय् ।
कारेयव्व }
कारेल्लय न [**दे**] करैला, तरकारी विशेष ; (अनु ६) ।
कारोडिय पुं [**कारोटिक**] १ कापालिक, भिक्षुक-विशेष ; २ ताम्बूल-वाहक, स्थगीधर ; (औप) ।
काल न [**दे**] तमिस्र, अन्धकार ; (दे २, २६ ; षड्) ।
काल पुं [**काल**] १ समय, वख्त ; (जी ४६) । २ मृत्यु, मरण ; (विसे २०६७ ; प्रासू ११२) । ३ प्रस्ताव, प्रसङ्ग, अवसर ; (विसे २०६७) । ४ विलम्ब, देरी ; (स्वप्न ६१) । ५ उमर, वय ; (स्वप्न ४२) । ६ ऋतु ; (स्वप्न ४२) । ७ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८) । ८ ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग ; (गण १६) । ६ सातवीँ नरक-पृथ्वी का एक नरकावास ; (ठा ५, ३—पत्र ३४१ ; सम ५८) । १० नरक के जीवों को दुःख देने वाले परमा-धार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २८) । ११ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १—पत्र १६८) । १२ प्रभञ्जन इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १—पत्र १६८) । १३ इन्द्र-विशेष, पिशाच-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३—पत्र ८५) । १४ पूर्वीय लवण समुद्र के पाताल-कलशों का अधिष्ठाता देव ; (ठा ४, २—पत्र २२६) । १५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र ; (निर १, १) । १६ इस नाम का एक गृहपति ; (णाया २, १) । १७ अभाव ; (बृह ४) । १८ पिशाच देवों की एक जाति ; (पण्ण १) । १६ निधि-विशेष ; (ठा ६—पत्र ४४६) । २० वर्ण-विशेष, श्याम-वर्ण ; (पण्ण २) । २१ न. देव-विमान-विशेष ; (सम ३५) । २२ निरयावली सूत्र का एक अध्ययन ; (निर १, १) । २३ काली-देवी का सिंहासन ; (णाया २) । २४ वि. कृष्ण, काला रंग का ; (सुर २, ५) । °**कंखि** वि [°**काङ्क्षिन्**] १ समय की अपेक्षा करने वाला; (आचा) । २ अवसर का ज्ञाता ; (उत्त ६) । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ समय-संबन्धी शास्त्रोय विधान ; २ उसका प्रतिपादक शास्त्र; (पंचभा) । °**काल** पुं [°**काल**] मृत्यु-समय ; (विसे २०६६) । °**कूड** न [°**कूट**] उत्कट विष-विशेष ; (सुपा २३८) । °**क्खेव** पुं [°**क्षेप**] विलम्ब, देरी ; (से १३, ४२) । °**गय** वि [°**गत**] मृत्यु-प्राप्त, मृत ; (णाया १, १ ; महा) । °**चक्क** न [°**चक्र**] १ वीस सागरोपम परिमित समय ; (णंदि) । २ एक भयंकर शस्त्र ; "जाहे एवमवि न सक्कइ ताहे कालचक्कं विउव्वइ" (आवम) । °**चूला** स्त्री [°**चूडा**] अधिक मास वगैरः का अधिक समय ; (निचू १) । °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] अवसर का जानकार ; (उप १७६ टी ; आचा) । °**दट्ठ** वि [°**दष्ट**] मौत से मरा हुआ ; (उप ७२८ टी) । °**देव** पुं [**देव**] देव-विशेष ; (दीव) । °**धम्म** पुं [°**धर्म**] मृत्यु, मरण ; (णाया १, १ ; विपा १, २) । °**न्न**, °**न्नु** देखो **ण्णु** ; (पि २७६ ; सुपा १०६) । °**परियाय** पुं [°**पर्याय**] मृत्यु-समय; (आचा) । °**परिहीण** न [°**परिहीन**] विलम्ब, देरी; (राय) । °**पाल** पुं [°**पाल**] देव-विशेष, धरणेन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १) । °**पास** पुं [°**पाश**] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग; (गण १८) । °**पिट्ठ**, °**पुट्ठ** पुंन [°**पृष्ठ**] १ धनुष ; २ कर्ण का धनुष ; ३ काला हरिण ; ४ क्रौञ्च पक्षी ; (पि ५३) ।

°पुरिस पुं [°पुरुष] जो पुं-वेद कर्म का अनुभव करता हो वह ; (सूअ १, ४, १, २ टी)। °प्पभ पुं [°प्रभ] इस नाम का एक पर्वत ; (ठा १०)। °फोडय पुंस्त्री [°स्फोटक] प्राणहर फोड़ा। स्त्री—°डिया ; (रंभा)। °मास पुं [°मास] मृत्यु-समय ; "कालमासे कालं किच्चा" (विपा १, १ ; २ ; भग ७, ६)। °मासिणी स्त्री [°मासिनी] गर्भिणी, गुर्विणी; (दस ५, १)। °मिग पुं [°मृग] कृष्ण मृग की एक जाति ; (जं २)। °रत्ति स्त्री [°रात्रि] प्रलय-रात्रि, प्रलय-काल; (गउड)। °वडिंसग न [°वतंसक] देव-विमान विशेष, काली देवी का विमान ; (णाया २)। °वाइ वि [°वादिन्] जगत् को काल-कृत मानने वाला, समय को ही सब कुछ मानने वाला ; (णंदि)। °वासि पुं [°वर्षिन्] अवसर पर बरसने वाला मेघ ; (ठा ४, ३—पत्र २६०)। °संदीव पुं [°संदीप] असुर-विशेष, त्रिपुरासुर ; (आक)। °समय पुं [°समय] समय, वख्त ; (सुज्ज ८)। °समा स्त्री [°समा] समय-विशेष, आरक-रूप समय ; (जो २)। °सार पुं [°सार] मृग की एक जाति, काला मृग; "एक्को वि कालसारो ण देइ गंतुं पयाहिणवलंतो" (गा २५)। °सोअरिय पुं [°सौकरिक] स्वनाम-ख्यात एक कसाई ; (आक)। °ागरु, °ागुरु, °ायरु न [°ागुरु] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में लाया जाता है ; (णाया १, १ ; कप्प ; औप ; गउड)। °ायस, °ास न [°ायस] लोहे की एक जाति ; (हे १, २६६ ; कुमा ; प्राप्र ; से ८, ४६)। °ासवेसियपुत्त पुं [°ास्यवैशिकपुत्र] इस नाम का एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में थे ; (भग)।

कालंजर पुं [**कालञ्जर**] १ देश-विशेष ; (पिंग)। २ पर्वत-विशेष ; (आवम)। देखो **कालिंजर**।

कालक्खर सक [**दे**] १ निर्भर्त्सना करना, फटकारना। २ निर्वासित करना, बाहर निकाल देना। "तो तेणं भणिया भज्जा, पिए ! पुत्तो कालक्खरियइ एसो, तो सा रोसेण भणइ तयभिमुहं, मइ जीवंतीए इमं न होइ ता जाउ दव्वंपि ; किं कज्जइ लच्छीए, पुत्तविउत्ताण पिउणा पियमम ! जयम्मि" (सुपा ३६६ ; ४००)।

कालक्खर पुंन [**कालाक्षर**] १ अल्प ज्ञान, अल्प शिक्षा ; २ वि. अल्प-शिक्षित ; "कालक्खरदूसिक्खिअ धम्मिअ रे निंबकीडअसरिच्छ" (गा ८७८)।

कालक्खरिअ वि [**दे**] १ उपालब्ध, निर्भर्त्सित ; २ निर्वासित ; "तहवि न विरमइ दुलहो अणाहकुलडाए संगमे, तत्तो कालक्खरिओ पिउणा" (सुपा ३८८); "तो पिउणा कालेणं कालक्खरिओ" (सुपा ४८८)।

कालक्खरिअ वि [**कालाक्षरिक**] अक्षर-ज्ञान वाला, शिक्षित; "भो तुम्हाणं सव्वाणं मज्झे अहं एक्को कालक्खरिओ" (कप्पू)।

कालग, **कालय** पुं [**कालक**] १ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (पुप्फ १५६; २४०)। २ भ्रमर, भमरा; (राज)। देखो **काल** ; (उवा; उप ६८६ टी)।

कालय वि [**दे**] धूर्त, ठग ; (दे २, २८)।

कालवट्ठ न [**दे. कालपृष्ठ**] धनुष ; (दे २, २८)।

कालवेसिय पुं [**कालवैशिक**] एक वेश्या-पुत्र ; (उत्त २)।

काला स्त्री [**काला**] १ श्याम-वर्ण वाली ; २ तिरस्कार करने वाली ; (कुमा)। ३ एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ५, १)। ४ वेश्या-विशेष ; (उत्त २)।

कालि पुं [**कालिन्**] बिहार का एक पर्वत ; (ती १३)।

कालिआ स्त्री [**दे**] १ शरीर, देह ; २ कालान्तर ; ३ मेघ, वारिस ; (दे २, ५८)। ४ मेघ-समूह, बादल ; (पाअ)।

कालिआ स्त्री [**कालिका**] १ देवी-विशेष ; (सुपा १८२)। २ एक प्रकार का तोफानी पवन ; (उप ७२८ टी ; णाया १, ६)।

कालिंग पुं [**कालिङ्ग**] १ देश-विशेष ; "पत्तो कालिंगदेसओ" (श्रा १२)। २ वि. कलिङ्ग देश में उत्पन्न ; (पउम ६६, ५५)।

कालिंगी स्त्री [**कालिङ्गी**] वल्ली-विशेष, तरबूज का गाछ ; (पण्ण १)।

कालिंजण न [**दे**] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़ ; (दे २, २६)।

कालिंजणी स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (दे २, २६)।

कालिंजर पुं [**कालिञ्जर**] १ देश-विशेष ; (पिंग)। २ पर्वत-विशेष ; (उत्त १३)। ३ न. जंगल-विशेष ; (पउम ५८, ६)। ४ तीर्थ-स्थान विशेष ; (ती ६)।

कालिंदी स्त्री [**कालिन्दी**] १ यमुना नदी ; (पाअ)। २ एक इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी ; (पउम १०२, १५६)।

कालिंय पुं [**दे**] १ शरीर, देह ; २ मेघ, वारिस ; (दे २, ५६)।

कालिग देखो **कालिय**=कालिक ; (राज)।

कालिगी स्त्री [**कालिकी**] संज्ञा-विशेष, बहुत समय पहले गुजरी हुई चीज का भी जिससे स्मरण हो सके वह ; (विसे ५०८)।

कालिज्ज न [**कालेय**] हृदय का गूढ़ मांस-विशेष ; (तंदु)।

कालिम पुंस्त्री [**कालिमन्**] श्यामता, कृष्णता, दागीपन ; (सुर ३, ४४ ; श्रा १२)।

कालिअ पुं [**कालिय**] इस नाम का एक सर्प ; (सुपा १८१)।

कालिय वि [**कालिक**] १ काल में उत्पन्न, काल-संबन्धी ; २ अनिश्चित, अव्यवस्थित ; "हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणागया" (उत्त ५; करु १६)। ३ वह शास्त्र, जिसको अमुक समय में ही पढ़ने की शास्त्रीय आज्ञा है; (ठा २, १—पत्र ४६)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष ; (णाया १, १७—पत्र २२८)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] एक जैन मुनि ; जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में से थे ; (भग)। °**सण्णि** वि [°**संज्ञिन्**] कालिकी संज्ञा वाला ; (विसे ५०६)। °**सुय** न [°**श्रुत**] वह शास्त्र जो अमुक समय में ही पढ़ा जा सके ; (णंदि)। °**णुओग** पुं [°**नुयोग**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (भग)।

काली स्त्री [**काली**] १ विद्या-देवी विशेष ; (संति ५)। २ चमरेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ५, १ ; णाया २, १)। ३ वनस्पति-विशेष, काकजङ्घा ; (अनु ४)। ४ श्याम-वर्ण वाली स्त्री ; "सामा गायइ महुरं, काली गायइ खरं च रुक्खं च" (ठा ७)। ५ राजा श्रेणिक की एक रानी ; (निर १, १)। ६ चौथी जैन शासन-देवी ; (संति ६) ७ पार्वती, गौरी ; (पाअ)। ८ इस नाम का एक छंद ; (पिंग)।

कालुण न [**कारुण्य**] दया, करुणा। °**वडिया** स्त्री [°**वृत्ति**] भीख माँग कर आजीविका करना ; (विपा १, १)।

कालुणिय देखो **कारुणिय** ; (सूअ १, १, १)।

कालुसिय न [**कालुष्य**] कलुषता, मलिनता ; (आउ)।

कालेज्ज न [**दे**] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़ ; (दे २, २६)।

कालेय न [**कालेय**] १ काली देवी का अपत्य ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, कालचन्दन ; (स ७५)। ३ हृदय का मांस-खण्ड, कलेजा ; (सूअ १, ५, १ ; रंभा)।

कालोद देखो **कालोय** ; (जीव ३)।

कालोदधि पुं [**कालोदधि**] समुद्र-विशेष ; (पण्ह १, ५)।

कालोदाइ पुं [**कालोदायिन्**] इस नाम का एक दार्शनिक विद्वान ; (भग ७, १०)।

कालोय पुं [**कालोद**] समुद्र-विशेष, जो धातकी-खण्ड द्वीप को चारों तरफ घिर कर स्थित है ; (सम ६७)।

काव } पुं [**दे**] १ कावर, बहङ्गी, बोझ ढ़ोनेके लिए तरा-
कावड } जूनुमाँ एक वस्तु, इसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं ; (जीव ३ ; पउम ७५, ५२)। °**कोडिय** पुं [°**कोटिक**] कावर मे भार ढ़ोने वाला ; (अणु)। देखो **काय**=(दे)।

कावडिअ पुं [**दे**] वैवधिक, कावर से भार ढोने वाला ; (पउम ७५, ५२)।

कावध पुं [**कावध्य**] एक महा-ग्रह, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (राज)।

कावलिअ वि [**दे**] अ-सहन, अ-सहिष्णु; (दे २, २८)।

कावलिअ वि [**कावलिक**] कवल-प्रक्षेप रूप आहार ; (भग ; संग १८१)।

कावालिअ पुं [**कापालिक**] वाम-मार्गी, अघोर सम्प्रदाय का मनुष्य ; (सुपा १७४ ; ३६७ ; दे १, ३१ ; प्रबो ११५)।

कावालिआ } स्त्री [**कापालिकी**] कापालिक-व्रत वाली
कावालिणी } स्त्री ; (गा ४०८)।

काविट्ठ न [**कापिष्ठ**] देव-विमान विशेष ; (सम २७ ; पउम २०, २३)।

काविल न [**कापिल**] १ सांख्य-दर्शन; (सम्म १४५)। २ वि. सांख्य मत का अनुयायी ; (औप)।

काविलिय वि [**कापिलीय**] १ कपिल-मुनि-संबन्धी ; २ न. कपिल-मुनि के वृत्तान्त वाला एक ग्रन्थांश; 'उत्तराध्ययन' सूत्र का आठवाँ अध्ययन ; (सम ६४)।

काविसायण देखो **कविसायण** ; (जीव ३)।

काबी स्त्री [**दे**] नीलवर्ण वाली, हरा रंग की चीज ; (दे २, २६)।

काबुरिस देखो **कापुरिस** ; (स ३७५)।

कावेअ न [**कापेय**] वानरपन, चञ्चलता ; (अच्चु ६२)।

कास देखो **कड्ढ**=कृष्। कासइ ; (षड्)।

कास अक [**कास्**] १ कहरना, रोग-विशेष से खराब आवाज करना। २ कासना, खाँसी की आवाज करना। ३ खोखार करना। ४ छींक खाना। वकृ—**कासंत, कासमाण** ; (पराह १, ३—पत्र ५४ ; आचा)। संकृ—**कासित्ता** ; (जीव ३)।

कास पुं [**काश, °स**] १ रोग-विशेष, खाँसी ; (गाया १, १३)। २ तृण-विशेष, कास ; "कासकुसुमंव मन्ने सुनिप्फलं जम्म-जीवियं निययं" (उप ७२८ टी) ; "कासकुसुमंव विहलं" (आप ५८)। ३ उसका फूल जो सफेद और शोभायमान होता है ; "ता तत्थ नियइ धूलिं ससहरहरहासकाससंकासं" (सुपा ४२८ ; कुमा)। ४ ग्रह-विशेष, ग्रह-देव-विशेष; (ठा २, ३)। ५ रस ; (ठा ७)। ६ संसार, जगत् ; (आचा)।

कास देखो **कंस**=कांस्य ; (हे १, २६ ; षड्)।

कासंकस वि [**कासङ्कष**] प्रमादी, संसार में आसक्त ; (आचा)।

कासग देखो **कासय** ; "जेण रोहंति बीजाइं, जेण जीवंति कासगा" (निचू १)।

कासण न [**कासन**] खोखारना, खाट्कार ; (ओघ २३५)।

कासमद्दग पुं [**कासमर्दक**] वनस्पति-विशेष, गुच्छ-विशेष ; (पराण १—पत्र ३२)।

कासय } पुं [**कर्षक**] कृषीबल, किसान ; (दे १, ८७;
कासव } पाअ) ;

"जह वा लुणाइ सस्साइं, कासवो परिणयाइं छित्तम्मि।
तह भूयाइं कयंतो, वत्थुसहावो इमो जम्हा"
(सुपा ६५१)।

कासव पुं [**कश्यप**] १ इस नाम का एक ऋषि ; (प्रामा)। २ हरिण की एक जाति ; ३ एक जात की मछली ; ४ दक्ष प्रजापति का जामाता ; ५ वि. दारू पीने वाला ; (हे १, ४३ ; षड्)।

कासव न [**काश्यप**] १ इस नाम का एक गोत्र ; (ठा ७; गाया १, १ ; कप्प)। २ पुं. भगवान् ऋषभदेव का एक पूर्व पुरुष ; ३ वि. काश्यप गोत्र में उत्पन्न-काश्यप-गोत्रीय ; (ठा ७—पत्र ३९० ; उत्त ७ ; कप्प; सूअ १, ६)। ४ पुं. नापित, हजाम ; (भग ६, १० ; आवम)। ५ इस नाम का एक गृहस्थ ; (अंत १८)। ६ न. इस नाम का एक 'अंतगडदसा' सूत्र का अध्ययन ; (अंत १८)।

कासविज्जया स्त्री [**काश्यपीया**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।

कासवी स्त्री [**काश्यपी**] १ पृथिवी, धरित्री ; (कुमा)। २ कश्यप-गोत्रीया स्त्री ; (कप्प)। **°रइ** स्त्री [**°रति**] भगवान् सुमतिनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२)।

कासा स्त्री [**कृशा**] दुर्बल स्त्री ; (हे १, १२७ ; षड्)।

कासाइया } स्त्री [**काषायी**] कषाय-रंग से रंगी हुई
कासाई } साड़ी, लाल साड़ी ; (कप्प ; उवा)।

कासाय वि [**काषाय**] कषाय-रंग से रंगा हुआ वस्त्रादि; (गउड)।

कासार न [**कासार**] १ तलाव, छोटा सरोवर ; (सुपा १६६)। २ पक्वान्न-विशेष, कँसार ; (स १८६)। ३ पुं. समूह, जत्था ; (गउड)। ४ प्रदेश, स्थान ; (गउड)। **°भूमि** स्त्री [**°भूमि**] नितम्ब-प्रदेश ; (गउड)।

कासार न [**दे**] धातु-विशेष, सीसपत्रक ; (दे २, २७)।

कासि पुं [**काशि**] १ देश-विशेष, काशी जिला ; "कासित्ति जणवओ" (सुपा ३१ ; उत्त १८)। २ काशी देश का राजा; (कुमा)। ३ स्त्री. काशी नगरी, बनारस शहर; (कुमा)। **°पुर** न [**°पुर**] काशी नगरी, बनारस शहर ; (पउम ६, १३७)। **°राय** पुं [**°राज**] काशी-देश का राजा ; (उत्त १८)। **°व** पुं [**°प**] काशी-देश का राजा ; (पउम १०४, ११)। **°वद्धण** पुं [**°वर्धन**] इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (ठा ८—पत्र ४३०)।

कासिअ न [**दे**] १ सूक्ष्म वस्त्र, बारीक कपड़ा ; २ सफेद वस्त्र ; (दे २, ५६)।

कासिअ न [**कासित**] छींक, क्षुत् ; (राज)।

कासिज्ज न [**दे**] काकस्थल-नामक देश ; (दे २, २७)।

कासिल्ल वि [**कासिक**] खाँसी रोग वाला; (विपा १, ७—पत्र ७२)।

कासी स्त्री [**काशी**] काशी, बनारस ; (गाया १, ८)। **°राय** पुं [**°राज**] काशी का राजा ; (पिंग)। **°स** पुं [**°श**] काशी का राजा ; (पिंग)। **°सर** पुं [**°श्वर**] काशी का राजा ; (पिंग)।

काहल वि [**दे**] १ मृदु, कोमल ; २ ठग, धूर्त; (दे २, ५८)।

काहल वि [**कातर**] कातर, डरपोक, अ-धीर ; (हे १, २१४ ; २५४)।

काहल पुंन [**काहल**] १ वाद्य-विशेष ; (सुर ३, ६६ ; औप ; णंदि)। २ अव्यक्त आवाज; (पण्ह २, २)।

काहला स्त्री [**काहला**] वाद्य-विशेष ; महा-ढक्का ; (विक ८७)।

काहली स्त्री [**दे**] तरुणी, युवति ; (दे २, २६)।

काहल्ली स्त्री [**दे**] १ खर्च करने का धान्यादि ; २ तवा, जिस पर पूरी वगैरः पकाया जाता है ; (२, ५६)।

काहार पुं [**दे**] कहार, पानी वगैरः ढोने का काम करने वाला नौकर ; (दे २, २७ ; भवि)।

काहावण पुं [**कार्षापण**] सिक्का-विशेष ; (हे २,७१ ; पण्ह १, २ ; षड् ; प्राप्र)।

काहिय वि [**काथिक**] कथा-कार, वार्ता करने वाला ; (बृह १)।

काहिल पुं [**दे**] गोपाल, ग्वाला ; स्त्री—°**ला** ; (दे २, २८)।

काहिलिआ स्त्री [**दे**] तवा, जिस पर पूरी आदि पकाया जाता है ; (पाअ)।

काहीइदाण न [**करिष्यतिदान**] प्रत्युपकार की आशा से दिया जाता दान ; (ठा १०)।

काहे अ [**कदा**] कब, किस समय ? (हे २, ६५ ; अंत २४ ; प्राप्र)।

काहेणु स्त्री [**दे**] गुञ्जा, लाल रत्ती ; (दे २, २१)।

कि देखो **किं** ; (हे १, २६ ; षड्)।

कि सक [**कृ**] करना, बनाना ; "डुक्कियं करणे" (विसे ३३००)। कवकृ—**किज्जंत**; (सुर १, ६० ; ३, १४ ; ५६)।

किअ देखो **कय**=कृत ; (काप्र ६२५ ; प्रासू १५ ; धम्म २४ ; मै ६५ ; वज्जा ४)।

किअ देखो **किव**=कृप ; (षड्)।

किअंत वि [**कियत्**] कितना ; (सण)।

किअंत देखो **कयंत** ; (अच्चु ५६)।

किआडिआ स्त्री [**कृकाटिका**] गला का उन्नत भाग ; (पाअ)।

किइ स्त्री [**कृति**] कृति, क्रिया, विधान ; (षड् ; प्राप्र ; उव)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ वन्दन, प्रणमन ; (सम २१)। २ कार्य-करण ; (भग १४, ३)।

किं स [**किम्**] कौन, क्या, क्यों, निन्दा, प्रश्न, अतिशय, अल्पता और सादृश्य को बतलाने वाला शब्द; (हे १, २६; ३, ५८; ७१ ; कुमा ; विपा १, १ ; निचू १३)। "किं बुल्लंति मणीओ जाउ सहस्सेहिं घिप्पंति" (प्रासू ४)। °**उण** अ [°**पुनः**] तब फिर, फिर क्या ? (प्राप्र)।

किंकत्तव्वया देखो **किंकायव्वया** ; (आचा २, २, ३)।

किंकम्म पुं [**किंकर्मन्**] इस नाम का एक गृहस्थ ; (अंत)।

किंकर पुं [**किङ्कर**] नौकर, चाकर, दास ; (सुपा ६० ; २२३)। °**सच्च** पुं [°**सत्य**] १ परमेश्वर, परमात्मा ; २ अच्युत, विष्णु ; (अच्चु २)।

किंकरी स्त्री [**किङ्करी**] दासी, नौकरानी ; (कप्पू)।

किंकायव्वया स्त्री [**किंकर्त्तव्यता**] क्या करना है यह जानना। °**मूढ** वि [°**मूढ**] किंकर्तव्य-विमूढ, हक्काबक्का, भौंचक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया जाय ; (महा)।

किंकिअ वि [**दे**] सफेद, श्वेत ; (दे २, ३१)।

किंकिच्चजड वि [**किंकृत्यजड**] हक्काबक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया जाय ; (श्रा २७)।

किंकिणिआ स्त्री [**किङ्किणिका**] क्षुद्र घण्टिका ; (सुपा १५६)।

किंकिणी स्त्री [**किङ्किणी**] ऊपर देखो ; (सुपा १५४; (कुमा)।

किंगिरिड पुं [**किङ्गिरिट**] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति ; (राज)।

किंच अ [**किञ्च**] समुच्चय-द्योतक अव्यय, और भी, दूसरा भी ; (सुर १, ४० ; ४१)।

किंचण न [**किञ्चन**] १ द्रव्य-हरण, चोरी ; (विसे ३४५१)। २ अ. कुछ, किञ्चित् ; (वव २)।

किंचहिय वि [**किञ्चिदधिक**] कुछ ज्याद ; (सुपा ४३०)।

किंचि अ [**किञ्चित्**] अल्प, ईषत्, थोड़ा ; (जी १ ; स्वप्न ४७)।

किंचिम्मत्त वि [**किञ्चिन्मात्र**] स्वल्प, बहुत थोड़ा, यत्किञ्चित् ; (सुपा १४२)।

किंचूण वि [**किञ्चिदून**] कुछ कम, पूर्ण-प्राय ; (औप)।
किंजक्क पुं [**किञ्जल्क**] पुष्प-रेणु, पराग ; (गाया १, १)।
किंजक्ख पुं [**दे**] शिरीष-वृक्ष, सिरस का पेड़ ; (दे २, ३१)।
किंणेदं (शौ) अ [**किमिदम्, किमेतत्**] यह क्या ? ; (षड् ; कुमा)।
किंतु अ [**किन्तु**] परन्तु, लेकिन ; (सुर ४, ३७)।
किंथुग्घ देखो **किंसुग्घ** ; (राज)।
किंदिय न [**केन्द्र**] १ वर्तुल का मध्य-स्थल ; २ ज्योतिष में इष्ट लग्न से पहला; चौथा, सातवाँ और दशवाँ स्थान ; " किंदियठाणट्ठियगुरुम्मि " (सुपा ३६)।
किंदुअ पुं [**कन्दुक**] कन्दुक, गेंद ; (भवि)।
किंधर पुं [**दे**] छोटी मछली ; (दे २, ३२)।
किंनर पुं [**किन्नर**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १, ४)। २ भगवान् धर्मनाथजी के शासन-देव का नाम ; (संति ८)। ३ चमरेन्द्र की रथ-सेना का अधिपति देव ; (ठा ५, १)। ४ एक इन्द्र ; (ठा २, ३)। ५ देव-गन्धर्व, देव-गायन ; (कुमा)। °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] किन्नर के कण्ठ जितना बड़ा एक मणि ; (जीव ३)।
किंनरी स्त्री [**किन्नरी**] किन्नर देव की स्त्री ; (कुमा)।
किंपय वि [**दे**] कृपण, कंजूस ; (दे २, ३१)।
किंपाग पुं [**किम्पाक**] १ वृक्ष-विशेष ; " हुंति मुहि चिय महुरा विसया किंपागभूरुहफलं व" (पुप्फ ३६२ ; औप)। २ न. उसका फल, जो देखने में और स्वाद में सुन्दर परन्तु खाने से प्राण का नाश करता है; " किंपागफलोवमा विसया " (सुर १२, १३८)।
किंपि अ [**किमपि**] कुछ भी ; (प्रासू ६०)।
किंपुरिस पुं [**किंपुरुष**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १, ४)। २ एक इन्द्र, किन्नर-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३)। ३ वैरोचन बलीन्द्र के रथ-सेना का अधिपति देव ; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] मणि की एक जाति, जो किंपुरुष के कण्ठ जितना बड़ा होता है ; (जीव ३)।
किंबोड वि [**दे**] स्खलित, गिरा हुआ, भुला हुआ ; (दे २, ३१)।
किंमज्झ वि [**किंमध्य**] असार, निःसार; (पण्ह २, ४)।
किंसारु पुं [**किंशारु**] सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग ; (दे २, ६)।
किंसुग्घ न [**किंस्तुघ्न**] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण ; (विसे ३३५०)।
किंसुअ पुं [**किंशुक**] १ पलाश का पेड़, टेसू, ढाक ; (सुर ३ ४६)। २ न. पलाश का पुष्प ; (हे १, २६ ; ८६)।
किक्किंडि पुं [**दे**] सर्प, साँप ; (दे २, ३२)।
किक्किंधा स्त्री [**किष्किन्धा**] नगरी-विशेष ; (से १४, ५५)।
किक्किंधि पुं [**किष्किन्धि**] १ पर्वत विशेष ; (पउम ६, ४५)। २ इस नाम का एक राजा; (पउम ६, १५४; १०, २०)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम ६, ४५)।
किच्च वि [**कृत्य**] १ करने योग्य, कर्तव्य, फरज ; (सुपा ४६५ ; कुमा)। २ वन्दनीय, पूजनीय ; "न पिट्ठओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ " (उत ३)। ३ पुं. गृहस्थ; (सूअ १, १, ४)। ४ न. शास्त्रोक्त अनुष्ठान, क्रिया कृति; (आचा २, २, २ ; सूअ १, १, ४)।
किच्चंत वि [**कृत्यमान**] १ छिन्न किया जाता, काटा जाता ; २ पीड़ित किया जाता, सताया जाता ; (राज)।
किच्चण न [**दे**] प्रक्षालन, धोना ; " हरिअच्छेयण छप्पइयघच्चणं किच्चणं च पोताणं" (आव १६८—पत्र ७२)।
किच्चा स्त्री [**कृत्या**] १ काटना, कर्तन ; (उप पृ ३५६)। २ क्रिया, काम, कर्म ; ३ देव वगैरः की मूर्ति का एक भेद; ४ जादुगिरी, जादू ; ५ रोग-विशेष, महामारी का रोग; (हे १, १२८)।
किच्चा देखो **कर**=कृ।
किच्चि स्त्री [**कृत्ति**] १ मृग वगैरः का चमड़ा; २ चमड़े का वस्त्र; ३ भूर्जपत्र, भोजपत्र; ४ कृतिका नक्षत्र; (हे २,१२; ८९ ; षड्)। °**पाउरण** पुं [°**प्रावरण**] महादेव, शिव; (कुमा)। °**हर** पुं [°**धर**] महादेव, शिव ; (षड्)।
किच्चिरं अ [**कियच्चिरम्**] कितने समय तक, कब तक ? (उप १२८ टी)।
किच्छ न [**कृच्छ्र**] १ दुःख, कष्ट ; (ठा ५, १)।

२ वि. कष्ट-साध्य, कष्ट-युक्त ; (हे १, १२८)। ३ क्रिवि. दुःख से, मुश्किल से ; (सुर ८, १४८)।

किज्ज वि [**क्रेय**] खरीदने योग्य; " अकिज्जं किज्जमेव वा" (दस ७)।

किज्जंत देखो **कि**=कृ।

किज्जिअ वि [**कृत**] किया गया, निर्मित ; (पिंग)।

किट्ट सक [**कीर्त्तय्**] १ श्लाघा करना, स्तुति करना। २ वर्णन करना। ३ कहना, बोलना। किट्टइ, किट्टेइ ; (आचा ; भग)। वकृ—**किट्टमाण** ; (पि २८६)। संकृ—**किट्टइत्ता, किट्टित्ता;** (उत्त २६ ; कप्प)। हेकृ—**किट्टित्तए** ; (कस)।

किट्ट स्त्रीन [**किट्ट**] १ धातु का मल, मैल ; (उप ५३२)। २ रंग-विशेष ; (उर ६, ५)। ३ तेल, घी वगैरः का मैल। स्त्री—°**ट्टी** ; (पभा ३३)।

किट्टण देखो **कित्तण** ; (बृह ३)।

किट्टि स्त्री [**किट्टि**] १ अल्पीकरण-विशेष, विभाग-विशेष; " अपुव्वविसोहीए अणुभागोणूणविभयणं किट्टी " (पंच १२; आवम)।

किट्टिय वि [**कीर्तित**] १ वर्णित, प्रशंसित ; (सूअ २, ६)। २ प्रतिपादित, कथित ; (सूअ २, २ ; ठा ७)।

किट्टिया स्त्री [**कीटिका**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १ ; भग ७, २)।

किट्टिस न [**किट्टिस**] १ खली, सरसों, तिल आदि का तैल-रहित चूर्ण ; (अणु)। २ एक प्रकार का सूत, सूता; (अणु ; आवम)।

किट्टी देखो **किट्ट**=किट्ट।

किट्टीकय वि [**किट्टीकृत**] आपस में मिला हुआ, एकाकार, जैसे सुवर्ण आदि का किट्ट उसमें मिल जाता है उस तरह मिला हुआ ; (उव)।

किट्ठ वि [**क्लिष्ट**] क्लेश-युक्त; (भग ३, २; जीव ३)।

किट्ठ वि [**कृष्ट**] जोता हुआ, हल-विदारित ; (सुर ११, ५६ ; भग ३, २)। २ न. देव-विमान विशेष; " जे देवा सिरिवच्छं सिरिदामकंडं मल्लं किट्टं (? ट्ठं) चावोण्णयं अरणावडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा " (सम ३६)।

किट्ठि स्त्री [**कृष्टि**] १ कर्षण; २ खींचाव, आकर्षण। ३ देव-विमान विशेष ; (सम ६)। °**कूड** न [°**कूट**] देव-विमान-विशेष ; (सम ६)। °**घोस** न [°**घोष**] विमान-विशेष ; (सम ६) °**जुत्त** न [°**युक्त**] विमान-विशेष ; (सम ६)। °**ज्झय** न [°**ध्वज**] विमान-विशेष ; (सम ६)। °**प्पभ** न [°**प्रभ**] देव-विमान विशेष ; (सम ६)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] विमान-विशेष ; (सम ६)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] विमान-विशेष ; (सम ६)। °**सिट्ठ** न [°**शिष्ट**] एक देव-विमान ; (सम ६)।

किट्ठियावत्त न [**कृष्टयावर्त्त**] देव-विमान विशेष; (सम ६)।

किट्ठुत्तरवडिंसग न [**कृष्टयुत्तरावतंसक**] इस नाम का एक देव-विमान, देव-भवन ; (सम ६)।

किडि पुं [**किरि**] सूकर, सूअर ; (हे १, २५१ ; षड्)।

किडिकिडिया स्त्री [**किटिकिटिका**] सूखी हड्डी का आवाज ; (णाया १, १—पत्र ७४)।

किडिभ पुं [**किटिभ**] रोग-विशेष, एक जात का क्षुद्र कोढ; (लहुअ १५ ; भग ७, ६)।

किडिया स्त्री [**दे**] खिड़की, छोटा द्वार ; (स ५८३)।

किड्ड अक [**क्रीड्**] खेलना, क्रीड़ा करना। वकृ—**किड्डंत;** (पि ३६७)।

किड्डकर वि [**क्रीडाकर**] क्रीड़ा-कारक ; (औप)।

किड्डा स्त्री [**क्रीडा**] १ क्रीड़ा, खेल; (विपा १, ७)। २ बाल्यावस्था ; (ठा १०—पत्र ५१६)।

किड्डाविया स्त्री [**क्रीडिका**] क्रीड़न-धात्री, बालक को खेल-कूद कराने वाली दाई ; (णाया १, १६—पत्न २११)।

किढि वि [**दे**] १ संभोग के लिए जिसको एकान्त स्थान में लाया जाय वह ; (वव ३)। २ स्थविर, वृद्ध ; (बृह १)।

किढिण न [**किठिन**] संन्यासिओं का एक पात्र, जो वाँस का बना हुआ होता है ; (भग ७, ६)।

किण सक [**क्री**] खरीदना। किणइ ; (हे ४, ५२)। वकृ—"से **किणं** किणावेमाणे हणं घायमाणे" (सूअ २, १)। **किणंत** ; (सुपा ३६६)। संकृ—**किणित्ता;** (पि ५८२)। प्रयो—किणावेइ ; (पि ५५१)।

किण पुं [**किण**] १ घर्षण-चिन्ह, घर्षण की निशानी ; (गउड)। २ मांस-ग्रन्थि; ३ सूखा घाव; (सुपा ३७०; वज्जा ३६)।

किणइय वि [**दे**] शोभित, विभूषित ; (पउम ६२, ६)।

किणण न [**क्रयण**] किनना, खरीद, क्रय; (उप पृ २५८)।

किणा देखो **किण्णा**; (प्राप्र; हे ३, ६६)।

किणिकिण अक [**किणिकिणय्**] किण किण आवाज करना। वकृ—**किणिकिणिंत**; (औप)।

किणिय वि [**क्रीत**] किना हुआ, खरीदा हुआ ; (सुपा ४३४)।

किणिय पुं [**किणिक**] १ मनुष्य की एक जाति, जो वादित्र बनाती और बजाती है ; (वव ३)। २ रस्सी बनाने का काम करने वाली मनुष्य-जाति ; " किणिया उ वरत्ताओ वलिंति " (पंचू)।

किणिय न [**किणित**] वाद्य-विशेष ; (राय)।

किणिया स्त्री [**किणिका**] छोटा फोड़ा, फुनसी ;

" अन्नेवि सइं महियलनिसीयणुप्पन्नकिणियपोंगिल्ला।
मलिणजरकप्पडोच्छइयविग्गहा कहवि हिंडंति "
(स १८०)।

किणिस सक [**शाणय्**] तीक्ष्ण करना, तेज करना। किणिसइ ; (पिंग)।

किणो अ [**किमिति**] क्यों, किस लिए ? (दे २, ३१ ; हे २, २१६ ; पाअ ; गा ६७ ; महा)।

किण्ण वि [**कीर्ण**] १ उत्कीर्ण, खुदा हुआ; "उवलकिण्णव्व कट्ठघडियव्व" (सुपा ५७१)। २ क्षिप्त, फेंका हुआ ; (ठा ६)।

किण्ण पुं [**किण्व**] १ फल वाला वृक्ष-विशेष, जिससे दारू बनता है ; (गउड ; आचा)। २ न. सुरा-बीज, किण्व-वृक्ष के बीज, जिस का दारू बनता है ; (उत्त २)। °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] किण्व-वृक्ष के फल से बनी हुई मदिरा ; (गउड)।

किण्ण वि [**दे**] शोभमान, राजमान ; (दे २, ३०)।

किण्णं अ [**किंनम्**] प्रश्नार्थक अव्यय; (उवा)।

किण्णर देखो **किंनर** ; (जं १ ; राय ; इक)।

किण्णा अ [**कथम्**] क्यों, क्यों कर, कैसे ? "किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता" (विपा २, १—पत्र १०६)।

किण्णु अ [**किंनु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ प्रश्न ; २ वितर्क ; ३ सादृश्य ; ४ स्थान, स्थल ; ५ विकल्प; (उवा ; स्वप्न ३४)।

किण्ह देखो **कण्ह** ; (गा ६५ ; णाया १, १ ; उर ६, ५ ; पण्ण १७)।

किण्ह न [**दे**] १ बारीक कपड़ा ; २ सफेद कपड़ा ; (दे २, ५६)।

किण्हा देखो **कण्हा** ; (ठा ५, ३—पत्र ३५१ ; कम्म ४ १३)।

कित्तव पुं [**कितव**] द्यूतकर, जूआरी ; (दे ४, ८)।

कित्त देखो **किट्ट**=कीर्तय्। भवि—कित्तइस्सं ; (पडि)। संकृ—**कित्तइत्ताण** ; (पच ११६)।

कित्तण न [**कीर्त्तन**] १ श्लाघा, स्तुति; "तव य जिणुत्तम संति कित्तणं" (अजि ४ ; से ११, १३३)। २ वर्णन, प्रतिपादन; ३ कथन, उक्ति; (विसे ६४० ; गउड; कुमा)।

कित्तवीरिअ देखो **कत्तवीरिअ** ; (ठा ८)।

कित्ति स्त्री [**कीर्त्ति**] १ यश, कीर्त्ति, सुख्याति ; (औप ; प्रासू ४३ ; ७४ ; ८२)। २ एक विद्या-देवी; (पउम ७, १४१)। ३ केसरि-द्रह की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२)। ४ देव-प्रतिमा विशेष; (णाया १, १ टी — पत्र ४३)। ५ श्लाघा, प्रशंसा ; (पंच ३)। ६ नीलवन्त पर्वत का एक शिखर ; (जं ४)। ७ सौधर्म देवलोक की एक देवी ; (निर)। ८ पुं. इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पांचवें बलदेव ने दीक्षा ली थी ; (पउम २०, २०५)। °**कर** वि [°**कर**] १ यशस्कर, ख्याति-कारक; (णाया १, १)। २ पुं. भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम ; (राज)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] नृप-विशेष ; (धम्म)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] इस नाम का एक राजा ; (दंस)। °**धर** पुं [°**धर**] १ नृप-विशेष ; (तंदु)। २ एक जैन मुनि, दूसरे बलदेव के गुरू; (पउम २०,२०५)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] कीर्ति-प्रधान पुरुष, वासुदेव वगैरः ; (ठा ६)। °**म** वि [°**मत्**] कीर्ति-युक्त। °**मई** स्त्री [°**मती**] १ एक जैन साध्वी, (आक)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री; (उत्त १३)। °**य** वि [°**द**] कीर्तिकर, यशस्कर ; (औप)।

कित्ति स्त्री [**कृत्ति**] चर्म, चमड़ा; "कुत्तो अम्हाण वग्घकित्तो य" (काप्र ८६३ ; गा ६४० ; वज्जा ४४)।

कित्तिम वि [**कृत्रिम**] बनावटी, नकली; (सुपा २४ ; ६१३)।

कित्तिय वि [**कीर्त्तित**] १ उक्त, कथित; "कित्तियवंदियमहिया" (पडि)। २ प्रशंसित, श्लाघित ; (ठा २, ४)। ३ निरूपित, प्रतिपादित ; (तंदु)।

कित्तिय वि [**कियत्**] कितना ; (गउड)।

किन्न वि [**क्लिन्न**] आर्द्र, गीला ; (हे ४, ३२९)।

किन्ह देखो **कण्ह** ; (कप्प)।

किपाड वि [**दे**] स्खलित, गिरा हुआ ; (षड्)।

किब्बिस न [**किल्बिष**] १ पाप, पातक ; (पण्ह १, २)। २ मांस ; "निग्गयं च से बीयपासेणं किब्बिसं" (स २६३)। ३ पुं. चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति ; (भग १२, ५)। ४ वि. मलिन; ५ अधम, नीच ; (उत्त ३)। ६ पापी, दुष्ट ; (धर्म ३)। ७ कर्बुर, चितकबरा ; (तंदु)।

किब्बिसिय पुं [**किल्बिषिक**] १ चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति ; (ठा ३, ४—पत्र १६२)। २ केवल वेषधारी साधु ; (भग)। ३ वि. अधम, नीच; (सूअ १, १, ३)। ४ पाप-फल को भोगने वाला दरिद्र, पंगु वगैरः ; (गाया १, १)। ५ भाण्ड-चेष्टा करने वाला ; (औप)।

किब्बिसिया स्त्री [**कैल्बिषिकी**] १ भावना-विशेष, धर्म-गुरु वगैरः की निन्दा करने की आदत ; (धर्म ३)। २ केवल वेष-धारी साधु की वृत्ति ; (भग)।

किम (अप) अ [**कथम्**] क्यों, कैसे ? (हे ४, ४०१)।

किमण देखो **किवण** ; (आचा)।

किमस्स पुं [**किमश्व**] नृप-विशेष, जिसने इन्द्र को संग्राम में हराया था और शाप लगने से जो मर कर अजगर हुआ था ; (निचू १)।

किमि पुं [**कृमि**] १ क्षुद्र जीव, कीट-विशेष; (पण्ह १,३)। २ पेट में, फुनसी में और बवासीर में उत्पन्न होता जन्तु-विशेष, (जी १५)। ३ द्वीन्द्रिय कीट-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र २३)। °**य** न [°**ज**] कृमि-तन्तु से उत्पन्न वस्त्र; "कोसेज्जपट्टमाई जं, किमियं तु पवुच्चइ" (पंचभा)। °**राग**, °**राय** पुं [°**राग**] किरमिजी का रंग ;(कम्म १, २० ; दे २, ३२:; पण्ह २, ४)। °**रासि** पुं [°**राशि**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३६)।

किमिघरवसण [**दे**] देखो **किमिहरवसण** ; (षड्)।

किमिच्छय न [**किमिच्छक**] इच्छानुसार दान ; (णाया १, ८—पत्र १५०)।

किमिण वि [**कृमिमत**] कृमि-युक्त ; "किमिणबहुदुरभिगंधेसु" (पण्ह २, ५)।

किमिराय वि [**दे**] लाक्षा से रक्त ; (दे २, ३२)।

किमिहरवसण न [**दे**] कौशेय वस्त्र ; (दे २, ३३)।

किमु अ [**किमु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ प्रश्न; २ वितर्क ; ३ निन्दा ; ४ निषेध ; (हे २, २१७ ;पिंग)।

किमुय अ [**किमुत**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ प्रश्न ; २ विकल्प ; ३ वितर्क ; ४ अतिशय ; (हे २, २१८) "अमरनररायमहियं ति पूइयं तेहिं, किमुय सेसेहिं" (विसे १०६१)।

किम्मिय न [**दे. किम्मित**] जड़ता, जाड्य ; (राज)।

किम्मीर वि [**किर्मीर**] १ कर्बर, कबरा; (पाअ)। २ पुं. राक्षस-विशेष, जिसको भीमसेन ने मारा था ; (वेणी ११७)। ३ वंश-विशेष; "जाया किम्मीरवंसे" (रंभा)।

कियत्थ देखो **कयत्थ** ; (भवि)।

कियव्व देखो **कइअव** ; (उप ७२८ टी)।

किया देखो **किरिया** ; "हयं नाणं कियाहीणं" (हे २, १०४) ; "मग्गणुसारी सद्धो पन्नवणिज्जो कियावरो चेव" (उप १६६ ; विसे ३५६३ टी ; कप्पू)।

कियाणं देखो **कर**=कृ ।

कियाणग न [**क्रयाणक**] किराना, करियाना, बेचने योग्य चीज ; (सुर १, ६०)।

किर पुं [**दे**] सूकर, सूअर ; (दे २, ३० ; षड्)।

किर अ [**किल**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ संभावना ; २ निश्चय ; ३ हेतु, निश्चित कारण ; ४ वार्ता-प्रसिद्ध अर्थ ; ५ अरुचि ; ६ अलीक, असत्य ; ७ संशय, संदेह ; (हे २, १८६ ; षड् ; गा १२६ ; प्रासू १७ ; दस १)। ७ पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (कम्म ४, ७६)।

किर सक [**कृ**] १ फेंकना। २ पसारना, फैलाना। ३ बिखेरना। वकृ—**किरंत** ; (से ४, ५८ ; १४, ५७)।

किरण पुंन [**किरण**] किरण, रश्मि, प्रभा ; (सुपा ३५१; गउड ; प्रासू ८२)।

किरणिल्ल वि [**किरणवत्**] किरण वाला, तेजस्वी ; (सुर २, २४२)।

किराड, **किराय** पुं [**किरात**] १ अनार्य देश-विशेष ; (पव १४८)। २ भील, एक जंगली जाति ; (सुर २, २७ ; १८० ; सुपा ३६१ ; हे १, १८३)।

किरि पुं [**किरि**] भालु का आवाज ; "कत्थइ किरिति कत्थइ हिरिति कत्थइ छिरिति रिच्छाणं सद्दो" (पउम ६४,४५)।

किरि पुं [**किरि**] सूकर, सूअर ; (गउड)।

किरिइरिआ, **किरिकिरिआ** स्त्री [**दे**] १ कर्णोपकर्णिका, एक कान से दूसरे कान गई हुई बात, गप ; २ कुतूहल, कौतुक ; (दे २, ६१)।

किरित्तण देखो **कित्तण** ; (नाट—माल ६७)।

किरिया स्त्री [**क्रिया**] १ क्रिया, कृति, व्यापार, प्रयत्न ; (सुअ २, १ ; ठा ३, ३)। २ शास्त्रोक्त अनुष्ठान, धर्मानुष्ठान ; (सुअ २, ४ ; पव १४६)। ३ सावद्य व्यापार ; (भग १७, १)। ४ °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] कर्म-बन्ध का कारण ; (सूअ २, २ ; आव ४)। °**वर** वि [°**पर**] अनुष्ठान-कुशल ; (षड्)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] १ आस्तिक, जीवादि का अस्तित्व मानने वाला ; (ठा ४, ४)। २ केवल क्रिया से ही मोक्ष होता है ऐसा मानने वाला ; (सम १०६)। °**विसाल** न [°**विशाल**] एक जैन ग्रन्थांश, तेरहवाँ पूर्व-ग्रन्थ ; (सम २६)।

किरीड पुं [**किरीट**] मुकुट, शिरो-भूषण ; (पाअ)।

किरीडि पुं [**किरीटिन्**] अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (वेणी १६२)।

किरीत वि [**क्रीत**] किना हुआ, खरीदा हुआ ; (प्राप्र)।

किरीय पुं [**किरीय**] १ एक म्लेच्छ देश; २ उसमें उत्पन्न म्लेच्छ जाति; (राज)।

किरोलय न [**किरोलक**] फल-विशेष, किरोलिका वल्ली का फल ; (उर ६, ५)।

किल देखो **किर**=किल ; (हे २, १८६ ; गउड ; कुमा)।

किलंत वि [**क्लान्त**] खिन्न, श्रान्त ; (षड्)।

किलंज न [**किलिञ्ज**] बाँस का एक पात्र, जिस में गैया वगैरः को खाना खिलाया जाता है ; (उवा)।

किलकिल अक [**किलकिलाय्**] 'किल किल' आवाज करना, हँसना। "किलकिलइ व्व सहरिसं मणिकंचीकिंकिणिरविण" (कप्पू)।

किलकिलाइय न [**किलकिलायित**] 'किलकिल' ध्वनि, हर्ष-ध्वनि ; (आवम)।

किलणी स्त्री [**दे**] रथ्या, गली ; (दे २, ३१)।

किलम्म अक [**क्लम्**] क्लान्त होना, खिन्न होना। किलम्मइ ; (कप्पू)। किलम्मसि ; (वज्जा ६२)। वकृ—**किलम्मंत** ; (पि १३६)।

किलाचक्क न [**क्रीडाचक्र**] इस नाम का एक छन्द—वृत्त ; (पिंग)।

किलाड पुं [**किलाट**] दूध का विकार-विशेष, मलाई ; (दे २, २२)।

किलाम सक [**क्लमय्**] क्लान्त करना, खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना। किलामेज्ज ; (पि १३६)। वकृ—**किलामेंत** ; (भग ५, ६)। कवकृ—**किलामीअमाण** ; (मा ४६)।

किलाम पुं [**क्लम**] खेद, परिश्रम, ग्लानि ; "खमणिज्जो भे किलामो" (पडि; विसे २४०४)।

किलामणया स्त्री [**क्लमना**] खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना ; (भग ३, ३)।

किलामिअ वि [**क्लमित**] खिन्न किया हुआ, हैरान किया हुआ, पीड़ित ; "तण्हाकिलामिअंगो" (पउम १०३, २२ ; सुर १०, ४८)।

किलिंच न [**दे**] छोटी लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा ; "दंतंतरसोहणयं किलिंचमित्तं पि अविदिन्नं" (भत्त १०२ ; पाअ ; दे २, ११)।

किलिंचिअ न [**दे**] ऊपर देखो ; (गा ८०)।

किलिंत देखो **किलंत** ; (नाट—मृच्छ २५ ; पि १३६)।

किलिकिंच अक [**रम्**] रमण करना, क्रीडा करना। किलिकिंचइ ; (हे ४, १६८)।

किलिकिंचिअ न [**रत**] रमण, क्रीडा, संभोग ; (कुमा)।

किलिकिल अक [**किलकिलाय्**] 'किल किल' आवाज करना। वकृ—**किलिकिलंत** ; (उप १०३१ टी)।

किलिकिलि न [**किलिकिलि**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक)।

किलिकिलिकिल देखो **किलकिल**। वकृ—**किलिकिलिकिलंत** ; (पउम ३३, ८)।

किलिगिलिय न [**किलिकिलित**] 'किल किल' आवाज करना, हर्ष-द्योतक ध्वनि-विशेष ; (स ३७० ; ३८५)।

किलिट्ठ वि [**क्लिष्ट**] १ क्लेश-युक्त ; (उत्त ३२)। २ कठिन, विषम ; ३ क्लेश-जनक ; (प्राप्र ; हे २, १०६ ; उव)।

किलिण्ण देखो **किलिन्न** ; (स्वप्न ८५)।

किलित्त वि [**क्लृप्त**] कल्पित, रचित ; (प्राप्र ; षड् ; हे १, १४५)।

किलित्ति स्त्री [**क्लृप्ति**] रचना, कल्पना ; (पि ५९)।

किलिन्न वि [**क्लिन्न**] आर्द्र, गीला ; (हे १, १४५ ; २, १०६)।

किलिम्म देखो **किलम्म**। किलिम्मइ ; (पि१७७)। वकृ—**किलिम्मंत** ; (से ६, ८० ; ११, ५०)।

किलिम्मिअ वि [**दे**] कथित, उक्त; (दे २, ३२)।
किलिव देखो **कीव** ; (वव २ ; मै ४३)।
किलिस अक [**क्लिश्**] खेद पाना, थक जाना, दुःखी होना। वकृ—**किलिसंत** ; (पउम २१, ३८)।
किलिस देखो **किलेस**; "मिच्छत्तमच्छभीयाण, किलिससलिलम्मि बुड्डाणं" (सुपा ६४)।
किलिसिअ वि [**क्लेशित**] आयासित, क्लेश-प्राप्त ; (स १४६)।
किलिस्स देखो **किलिस**=क्लिश्। किलिस्सइ ; (महा; उव)। वकृ—**किलिस्संत** ; (नाट—माल ३१)।
किलिस्सिअ वि [**क्लिष्ट**] क्लेश-प्राप्त, क्लेश-युक्त ; (उप पृ ११६)।
किलीण देखो **किलिण्ण** ; (भवि)।
किलीव देखो **कीव** ; (स ६०)।
किलेस पुं [**क्लेश**] १ खेद, थकावट; (ओप)। २ दुःख, पीड़ा, बाधा; (पउम २२, ७५ ; सुज्ज २०)। ३ दुःख का कारण ; ४ कर्म, शुभाशुभ कर्म ; (बृह १)। °**यर** वि [°**कर**] क्लेश-जनक ; (पउम २२, ७५)।
किलेसिय वि [**क्लेशित**] दुःखी किया हुआ ; (सुर ४, १६७ ; १६६)।
किल्ला देखो **किड्डा** ; (मै ६१)।
किव पुं [**कृप**] १ इस नाम का एक ऋषि, कृपाचार्य ; (हे १, १२८)। "भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणीं कीवं (? सउणिं किवं) आसत्थामं" (णाया १, १६—पत्र २०८)।
किवँ (अप) देखो **कहं** ; (कुमा)।
किवण वि [**कृपण**] १ गरीब, रंक, दीन ; (सूअ १, १, ३ ; अच्चु ६७)। २ दरिद्र, निर्धन ; (पराह १, २)। ३ कंजूस, अ-दाता ; (दे २, ३१)। ४ क्लीब, कायर ; (सूअ २, २)।
किवा स्त्री [**कृपा**] दया, मेहरबानी ; (हे १, १२८)। °**वन्न** वि [°**पन्न**] कृपा-प्राप्त, दयालु ; (पउम ६५,४७)।
किवाण पुंन [**कृपाण**] खड्ग, तलवार ; (सुपा १५८ ; हे १, १२८ ; गउड)।
किवालु वि [**कृपालु**] दयालु, दया करने वाला ; (पउम ३४, ५० ; ६७, २०)।
किविड न [**दे**] १ खलिहान, अन्न साफ करने का स्थान ; २ वि. खलिहान में जो हुआ हो वह ; (दे २, ६०)।
किविडी स्त्री [**दे**] १ किवाड़, पार्श्व-द्वार ; २ घर का पिछला आँगन ; (दे २, ६०)।
किविण देखो **किवण** ; (हे १, ४६ ; १२८ ; गा १३६; सुर ३, ४४ ; प्रासू ५१ ; पराह १, १)।
किस वि [**कृश**] १ दुर्बल, निर्बल ; (उवर ११३)। २ पतला ; (हे १, १२८ ; ठा ४, २)।
किसंग वि [**कृशाङ्ग**] दुर्बल शरीर वाला; (गा ६५७)।
किसर पुं [**कृशर**] १ पक्वान्न-विशेष, तिल, चावल और दूध की बनी हुई एक खाद्य चीज ; २ खिचड़ी, चावल और दाल का मिश्रित भोजन-विशेष ; (हे १, १२८)।
किसर देखो **केसर** ; "महमहिअदसणकिसरं" (हे १,१४६)।
किसरा स्त्री [**कृशरा**] खिचड़ी, चावल-दाल का मिश्रित भोजन-विशेष ; (हे १, १२८ ; दे १, ८८)।
किसल देखो **किसलय** ; (हे १, २६६ ; कुमा)।
किसलइय वि [**किसलयित**] अङ्कुरित, नये अङ्कुर वाला; (सुर ३, ३६)।
किसलय पुंन [**किसलय**] १ नूतन अङ्कुर ; (श्रा २०)। २ कोमल पत्ती ; (जी ६)। "सव्वोवि किसलओ खलु उग्गममाणो अणंतओ भणिओ" (पराण १)। °**माला** स्त्री [°**माला**] छन्द-विशेष ; (अजि १६)।
किसा देखो **कासा** ; (हे १, १२७)।
किसाणु पुं [**कृशानु**] १ अग्नि, वह्नि, आग ; २ वृक्ष-विशेष, चित्रक वृक्ष ; ३ तीन की संख्या ; (हे १, १२८ ; षड्)।
किसि स्त्री [**कृषि**] खेती, चास ; (विसे १६१५ ; सुर १५, २०० ; प्राप्र)।
किसिअ वि [**कृशित**] दुर्बलता-प्राप्त, कृशता-युक्त ; (गा ४० ; वज्जा ४०)।
किसिअ वि [**कृषित**] १ विलिखित, रेखा किया हुआ ; २ जोता हुआ, कृष्ट ; ३ खींचा हुआ ; (हे १, १२८)।
किसीवल पुं [**कृषीवल**] कर्षक, किसान ; "पायं परस्स धन्नं भक्खंति किसीवला पुव्विं" (श्रा १६)।
किसोर पुं [**किशोर**] बाल्यावस्था के बाद की अवस्था वाला बालक ; "सीहकिसोरोव्व गुहाओ निग्गओ" (सुपा ५४१)।
किसोरी स्त्री [**किशोरी**] कुमारी, अविवाहिता युवती ; (णाया १, ६)।

किस्स देखो **किलिस**=क्लिश् । संकृ—**किस्सइत्ता** ; (सूअ १, ३, २)।

किह } देखो **कहं**; (आचा; कुमा; भग ३, २; णाया १,१७) ।
किहं }

कीअ देखो **कीव** ; (षड् ; प्राप्र) ।

कीइस वि [**कीदृश**] कैसा, किस तरह का ; (स १४०) ।

कीकस पुं [**कीकश**] १ कृमि-जन्तु विशेष; २ न. हड्डी, हाड़ ; ३ कठिन, कठोर ; (राज) ।

कीचअ देखो **कीयग** ; (वेणी १७७) ।

कीड देखो **किड्ड**=क्रीड् । भवि—कीडिस्सं; (पि २२६) ।

कीड पुं [**कीट**] १ कीड़ा, क्षुद्र जन्तु ; (उव) । २ कीट-विशेष; चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (उत्त २) ।

कीडइल्ल वि [**कीटवत्**] कीड़ा वाला, कीटक-युक्त ; (गउड) ।

कीडण न [**क्रीडन**] खेल, क्रीड़ा ; (सुर १, ११८) ।

कीडय पुं [**कीटक**] देखो **कीड**=कीट ; (नाट ; सुपा ३७०) ।

कीडय न [**कीटज**] कीड़े के तन्तु से उत्पन्न होता वस्त्र, वस्त्र-विशेष ; (अणु) ।

कीडा देखो **किड्डा** ; (सुर ३, ११६ ; उवा) ।

कीडाविया देखो **किड्डाविया** ; (राज) ।

कीडिया स्त्री [**कीटिका**] पिपीलिका, चींटी; (सुर १०, १७६) ।

कीडी स्त्री [**कीटी**] ऊपर देखो ; (उप १४७ टी ; दे २, ३) ।

कीण सक [**क्री**] खरीदना, मोल लेना । कीणइ, कीणए ; (षड्) । भवि—कीणिस्सं ; (पि ५११ ; ५३४) ।

कीणास पुं [**कीनाश**] यम, जम ; (पाअ; सुपा १८३) । °**गिह** न [°**गृह**] मृत्यु, मौत ; (उप १३६ टी) ।

कीय वि [**क्रीत**] १ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ ; (सम ३६ ; पराह २, १ ; सुपा ३४५) । २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष; (ठा ३, ४)। ३ न. क्रय, खरीद; (दस ३ ; सूअ १, ६) । °**कड**, °**गड** वि [°**कृत**] १ मूल्य देकर लिया हुआ ; (बृह १) । २ साधु के लिए मोल से किना हुआ, जैन साधु के लिए भिक्षा-दोष-युक्त वस्तु ; (पि ३३०) ।

कीयग पुं [**कीचक**] विराट देश के राजा का साला, जिस-भीम ने मारा था ; (उप ६४८ टी) । "नवमं दूयं विराडनयरं, तत्थ णं तुमं कि(? की)यगं भाउसयसमग्गं" (णाया १, १६—पत्र २०८) ।

कीया स्त्री [**कीका**] नयन-तारा; "मरकतमसारकलितनयण-कीयरासिवन्ने" (णाया १, १ टी—पत्र ६) ।

कीर पुं [**दे.कीर**] शुक, तोता ; (दे २, २१ ; उर १, १४) ।

कीर पुं [**कीर**] १ देश-विशेष, काश्मीर देश ; २ वि. काश्मीर देश संबन्धी, ३ वि. काश्मीर देश में उत्पन्न ; (विसे ४६४ टी) ।

कीरंत } देखो **कर**=कृ ।
कीरमाण }

कीरल पुं [**कीरल**] देश-विशेष ; (पउम ६८, ६४) ।

कीरिस देखो **केरिस** ; (गा ३७४ ; मा ४) ।

कीरी स्त्री [**कीरी**] लिपि-विशेष, कीर देश की लिपि ; (विसे ४६४ टी) ।

कील अक [**क्रीड्**] क्रीड़ा करना, खेलना । कीलइ; (प्राप्र) । वकृ—**कीलंत, कीलमाण**; (सुर १, १२१; पि २४०) । संकृ—**कीलेत्ता, कीलिऊण**; (सुर १, ११७; पि २४०)।

कील वि [**दे**] स्तोक, अल्प, थोड़ा ; (दे २, २१) ।

कील देखो **खील** ; (पाअ) ।

कीलण न [**क्रीडन**] क्रीड़ा, खेल ; (औप) । °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] बालक को खेल-कूद कराने वाली दाई ; (णाया १, १) ।

कीलणअ न [**क्रीडनक**] खिलौना ; (अभि १४२) ।

कीलणिआ } स्त्री [**दे**] रथ्या, गली ; (दे २, ३१) ।
कीलणी }

कीला स्त्री [**दे**] १ नव-वधू, दुलहिन ; (दे २, ३३) ।

कीला स्त्री [**कीला**] सुरत समय में किया जाता हृदय-ताड़न विशेष ; (दे २, ६४) ।

कीला स्त्री [**क्रीडा**] खेल, क्रीडन ; (सुपा ३५८ ; सुर १, ११७)। °**वास** पुं [°**वास**] क्रीड़ा करने का स्थान; (इक)।

कीलाल न [**कीलाल**] रुधिर, खून, रक्त; (उप ८६; पाअ) ।

कीलालिअ वि [**कीलालित**] रुधिर-युक्त, खून वाला ; (गउड) ।

कीलावण न [**क्रीडन**] खेल कराना ; (णाया १, २)।

कीलावणय न [**क्रीडनक**] खिलौना ; (निर १, १) ।

कीलिअ न [**क्रीडित**] क्रीड़ा, रमण, क्रीड़न ; (सम १५ ; स २४१) ।

कीलिअ वि [**कीलित**] खूँटा ठोका हुआ ; " लिहियव्व कीलियव्व " (महा ; सुपा २५४) ।

कीलिआ स्त्री [**कीलिका**] १ छोटा खूँटा, खूँटी ; (कम्म १, ३६) । २ शरीर-संहनन विशेष, शरीर का एक प्रकार का बाँधा, जिसमें हड्डियां केवल खूँटो से बँधी हुई हों ऐसा शरीर-बन्धन ; (सम १४६; कम्म १, ३६) ।

कीव पुं [**क्लीव**] १ नपुंसक ; (वृह ४) । २ वि. कातर, अधीर ; (सुर २, १४ ; गाया १, १) ।

कीव पुं [**दे. कीव**] पक्षि-विशेष; (पगह १,१—पत्र ८) ।

कीस वि [**कीदृश**] कैसा, किस तरह का ; (भग ; पण्ण ३४) ।

कीस वि [**किंस्व**] कौन स्वभाव वाला, कैसे स्वभाव का ; (भग) ।

कीस अ [**कस्मात्**] क्यों, किस से, किस कारण से ? (उव ; हे ३, ६८) ।

कु अ [**कु**] १ अल्प, थोड़ा ; २ निषिद्ध, निवारित ; ३ कुत्सित, निन्दित ; (हे २, २१७ ; से १, २६; सम्म १) । ४ विशेष, ज्यादः ; (गाया १, १४) । °**उरिस** पुं [°**पुरुष**] खराब आदमी, दुर्जन ; (से १२, ३३) । °**चर** वि [°**चर**] खराब चाल-चलन वाला, सदाचार-रहित ; (आचा) । °**डंड** पुं [°**दण्ड**] पाश विशेष, जिसका प्रान्त भाग काष्ठ का होता है ऐसा रज्जु-पाश ; (पगह १, ३) । °**डंडिम** वि [°**दण्डिम**] दगड देकर छीना हुआ द्रव्य ; (विपा १, ३) । °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] १ जलाशय में ऊतरने का खराब मार्ग ; (प्रासू ६०) । २ दूषित दर्शन ; (सूअ १, १, १) । ३ °**तित्थि** वि [°**तीर्थिन्**] दूषित मत का अनुयायी ; (कुमा) । °**दंडिम** देखो **डंडिम** ; (गाया १, १---पत्र ३७) । °**दंसण** न [°**दर्शन**] दुष्ट मत, दूषित धर्म ; (पगण २) । °**दंसणि** वि [°**दर्शनिन्**] १ दुष्ट दार्शनिक; २ दूषित मत का अनुयायी; (श्रा ६) । °**दिट्ठि** स्त्री [°**दृष्टि**] १ कुत्सित दर्शन ; (उत्त २८) । २ दूषित मत का अनुयायी ; (धर्म २) । °**दिट्ठिय** वि [**दृष्टिक**] दुष्ट दर्शन का अनुयायी, मिथ्यात्वी; (पउम ३०, ४४) । °**प्पवयण** न [°**प्रवचन**] १ दूषित शास्त्र ; २ वि. दूषित सिद्धान्त को मानने वाला ; (अणु) । °**प्पावयणिय** वि [°**प्रावचनिक**] १ दूषित सिद्धान्त का अनुसरण करने वाला ; (सूअ १, २, २) । २ दूषित आगम-संबन्धी (अनुष्ठान); (अणु) । °**भत्त** न [°**भक्त**] खराब भोजन; (पउम २०, १६६) । °**मार** पुं [°**मार**] १ कुत्सित मार ; (सुअ २, २) । २ अत्यन्त मार, मृत-प्राय करने वाला ताडन ; (गाया १, १४) । °**रंडा** स्त्री [°**रण्डा**] राँड़, विधवा ; (श्रा १६) । °**रुव, °रूव** न [°**रूप**] १ खराब रूप ; (उप ३६२ टी ; पगह १, ४) । २ माया-विशेष ; (भग १२, ५) । °**लिंग** न [°**लिङ्ग**] १ कुत्सित भेष ; (दंस) । २ पुं. कीट वगैरः क्षुद्र जन्तु ; (विसे १७५४) । ३ वि. कुतीर्थिक, दूषित धर्म का अनुयायी ; (आदम) । °**लिंगि** पुं [**लिङ्गिन्**] १ कीट वगैरः क्षुद्र जन्तु ; (ओघ ७४८) । २ वि. कुतीर्थिक, असत्य धर्म का अनुयायी ; (पगह १, २) । °**वय** न [°**पद**] खराब शब्द ;

" सो सोहइ दूसंतो, कइयणरइयाइं विविहकव्वाइं ।
जो भंजिऊण कुवयं, अन्नपयं सुंदरं देइ "
(वज्जा ६) ।

°**वियप्प** पुं [°**विकल्प**] कुत्सित विचार ; (सुपा ४४) । °**वुरिस** देखो °**उरिस** ; (पउम ६५, ४५) । °**संसग्ग** पुं [°**संसर्ग**] खराब सोबत, दुर्जन-संगति ; (धर्म ३) । °**सत्थ** पुंन [°**शास्त्र**] कुत्सित शास्त्र, अनाप्त-प्रणीत सिद्धान्त ; " ईसरमयाइया सव्वे कुसत्था " (निचू ११) । °**समय** पुं [°**समय**] १ अनाप्त-प्रणीत शास्त्र; (सम्म १)। २ वि. कुतीर्थिक, कुशास्त्र का प्रणेता और अनुयायी ; (सम) । °**सल्लिय** वि [°**शल्यिक**] जिसके भीतर खराब शल्य घुस गया हो वह ; (पगह २, ४) । °**सील** न [°**शील**] १ खराब स्वभाव ; (आचा) । २ अब्रह्मचर्य, व्यभिचार ; (ठा ४, ४) । ३ वि. जिसका आचरण अच्छा न हो वह, दुराचारी ; (ओघ ७६३) । ४ अब्रह्मचारी, व्यभिचारी ; (ठा ५, ३) । °**स्सुमिण** पुंन [°**स्वप्न**] खराब स्वप्न; (श्रा ६) । °**हण** वि [°**धन**] अल्प धन वाला, दरिद्र ; (पगह २, १—पत्र १००) ।

कु स्त्री [**कु**] १ पृथिवी, भूमि; "कुसमयविसासणं " (सम्म १ टी—पत्र ११४ ; से १, २६) । °**त्तिअ** न [°**त्रिक**] १ तीनों जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; २ तीन जगत् में स्थित पदार्थ ; (औप) । °**त्तिअ** वि [°**त्रिज**] तीनों जगत् में उत्पन्न वस्तु ; (आवम) । °**त्तिआवण** पुंन [°**त्रिकापण**] तीनों जगत् के पदार्थ जहां मिल सके ऐसी दुकान ; (भग ; गाया १, १—पत्र ५३) ।

°**वलय** न [°**वलय**] पृथ्वी-मण्डल; (श्रा २७)।
कुअरी देखो **कुआँरी** ; (पि २५१)।
कुअलअ देखो **कुवलय** ; (प्राप्र)।
कुआँरी देखो **कुमारी** ; (गा २६८)।
कुइमाण वि [**दे**] म्लान, शुष्क ; (दे २, ४०)।
कुइय वि [**कुचित**] अवस्यन्दित, क्षरित ; (ठा ६)।
कुइय वि [**कुपित**] क्रुद्ध, कोप-युक्त ; (भवि)।
कुइयण्ण पुं [**कुविकर्ण**] इस नाम का एक गृहपति, एक गृहस्थ; (विसे ६३२)।
कुउअ पुंन [**कुतुप**] स्नेह-पात्र, घी तैल वगैरः भरनेका चमड़े का पात्र-विशेष; "तुप्पाइं को(? कु)उआइं" (पाअ)। देखो **कुतुव** ।
कुउआ स्त्री [**दे**] तुम्बी-पात्र, तुम्बा ; (दे २, १२)।
कुऊल न [**दे**] १ नीवी, नारा, इजारबन्द ; २ पहने हुए कपड़े का प्रांत भाग, अञ्चल; (दे २, ३८)।
कुऊहल न [**कुतूहल**] १ अपूर्व वस्तु देखने की लालसा — उत्सुकता ; २ कौतुक, परिहास ; (हे १, ११७ ; कुमा)।
कुओ अ [**कुतः**] कहांसे ? (षड्)। °**इ** अ [°**चित्**] कहींसे, किसीसे ; (स १८५)। °**वि** अ [°**अपि**] कहीं से भी ; (काल)।
कुंआरी स्त्री [**कुमारी**] वनस्पति-विशेष, कुवारपाठा, घी कुवार, घीगुवार ; (श्रा २० ; जी १०)।
कुंकण न [**दे**] १ कोकनद, रक्त कमल ; (पगण १— पत्र ४०)। २ पुं. क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीड़े की एक जाति ; (उत्त ३६)।
कुंकण पुं [**कोङ्कण**] देश-विशेष ; (अणु ; सार्ध ३४)।
कुंकुम न [**कुङ्कुम**] केसर, सुगन्धी द्रव्य-विशेष ; (कुमा; श्रा १८)।
कुंग पुं [**कुङ्ग**] देश-विशेष ; (भवि)।
कुंच सक [**कुञ्च्**] १ जाना, चलना ; २ अक. संकुचित होना ; ३ टेढ़ा चलना ; (कुमा; गउड)।
कुंच पुं [**क्रौञ्च**] १ पक्षि-विशेष ; (पगह १, १ ; उप पृ २०८; उर १, १४)। २ इस नाम का एक असुर; (पाअ)। ३ इस नामका एक अनार्य देश ; ४ वि. उसके निवासी लोग ; (पव २७४)। °**रवा** स्त्री [°**रवा**] दगडकारगय की इस नाम की एक नदी ; (पउम ४२, १५)। °**वीरग** न [°**वीरक**] एक प्रकार का जहाज ; (निचू १६)। °**ारि** पुं [°**ारि**] कार्त्तिकेय, स्कन्द ;(पाअ)। देखो **कोंच** ।
कुंचल न [**दे**] मुकुल, कलि, बौर ; (दे २, ३६ ; पाअ)।
कुंचि वि [**कुञ्चिन्**] १ कुटिल, वक्र ; २ मायावी, कपटी ; (वव १)।
कुंचिगा देखो **कोंचिगा** ।
कुंचिय वि [**कुञ्चित**] १ संकुचित ; (सुपा ५८)। २ कुगडल आकार वाला, गोलाकृति; (औप; जं २)। ३ कुटिल, वक्र ; (वव १)।
कुंचिय पुं [**कुञ्चिक**] इस नाम का एक जैन उपासक ; (भत्त १३३)।
कुंचिया देखो **कोंचिगा** । रूई से भरा हुआ पहनने का एक प्रकार का कपड़ा; (जीत)।
कुंजर पुं [**कुञ्जर**]हस्ती, हाथी ; (हे १, ६६ ; पाअ)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; हस्तिनापुर ; (पउम ६५, ३४)। °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक रानी ; (उत्त २६)। °**ावत्त** न [°**ावर्त**] नगर-विशेष ; (सुर ३, ८८)।
कुंट वि [**कुण्ट**] १ कुब्ज, वामन ; (आचा)। २ हाथ-रहित, हस्त-हीन ; (पत्र ११० ; निचू ११ ; आचा)।
कुंटलविंटल न [**दे**] १ मंत्र-तंत्रादि का प्रयोग, पाखगड-विशेष ; (आवम)। २ मंत्र-तंत्रादि से आजीविका चलाने वाला ; (आक)।
कुंटार वि [**दे**] म्लान, सूखा, मलिन ; (दे २, ४०)।
कुंटि स्त्री [**दे**] १ गठरी, गाँठ ; (दे २, ३४)। २ शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का औजार ; "मुसलुक्खलहलदंताल-कुंटिकुद्दालपमुहसत्थाणं" (सुपा ५२६)।
कुंठ वि [**कुण्ठ**] १ मंद, अलस; (श्रा १६)। २ मूर्ख, बुद्धि-रहित ; (आचा)।
कुंड न [**कुण्ड**] १ कूँड़ा, पात्र-विशेष ; (षड्)। २ जलाशय-विशेष ; (गांदि)। ३ इस नाम का एक सरोवर ; (ती ३४)। ४ आज्ञा, आदेश; "वेसमणकुंडधारिणो तिरियजंभगा देवा" (कप्प)। °**कोलिय** पुं [°**कोलिक**] एक जैन उपासक; (उवा)। °**ग्गाम** पुं [°**ग्राम**] मगध देश का एक गाँव; (कप्प; पउम २, २१)। °**धारि** वि [°**धारिन्**] आज्ञा-कारी ; (कप्प)। °**पुर** न [°**पुर**] ग्राम-विशेष ; (कप्प)।
कुंड न [**दे**] ऊख पीलने का जीर्ण कागड, जो बाँस का बना हुआ होता है ; (दे २, ३३ ; ४, ४५)।

कुंडभी स्त्री [**दे**] छोटी पताका ; (आवम)।

कुंडल पुंन [**कुण्डल**] १ कान का आभूषण ; (भग ; औप)। २ पुं. विदर्भ देश के एक राजा का नाम ; (पउम ३०, ७७)। ३ द्वीप-विशेष ; ४ समुद्र-विशेष ; ५ देव-विशेष; (जीव ३)। ६ पर्वत-विशेष; (ठा १०)। ७ गोल आकार; (सुपा ६२)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] कुण्डल-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। °**मंडिअ** वि [°**मण्डित**] १ कुण्डल से विभूषित। २ विदर्भ देश का इस नाम का एक राजा; (पउम ३०, ७४)। °**महाभद्द** पुं [°**महाभद्र**] देव-विशेष ; (जीव ३)। °**महावर** पुं [°**महावर**] कुण्डलवर समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (सुज्ज १६)। °**वर** पुं [°**वर**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; ३ देव-विशेष ; (जीव ३)। ४ पर्वत-विशेष ; (ठा ३, ४)। °**वरभद्द** पुं [°**वरभद्र**] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव; (जीव ३)। °**वरमहाभद्द** पुं [°**वरमहाभद्र**] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**वरोभास** पुं [°**वरावभास**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (जीव ३)। °**वरोभासभद्द** पुं [°**वरावभासभद्र**] कुण्डलवरावभास द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**वरोभासमहाभद्द** पुं [°**वराव-भासमहाभद्र**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (जीव ३)। °**वरो-भासमहावर** पुं [°**वरावभासमहावर**] कुण्डलवरावभास समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष; (जीव ३)। °**वरोभासवर** पुं [°**वरावभासवर**] समुद्र-विशेष का अधिपति देव-विशेष ; (जीव ३)।

कुंडला स्त्री [**कुण्डला**] विदेहवर्ष-स्थित नगरी-विशेष ; (ठा २, ३)।

कुंडलि वि [**कुण्डलिन्**] कुण्डल वाला ; (भास ३३)।

कुंडलिअ वि [**कुण्डलित**] वर्तुल, गोल आकार वाला ; (सुपा ६२ ; कप्पू)।

कुंडलिआ स्त्री [**कुण्डलिका**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

कुंडलोद पुं [**कुण्डलोद**] इस नाम का एक समुद्र ; (सुज्ज १६)।

कुंडाग पुं [**कुण्डाक**] संनिवेश-विशेष, ग्राम-विशेष ; (आवम)।

कुंडि देखो **कुंडी** ; (महा)।

कुंडिअ पुं [**दे**] ग्राम का अधिपति, गाँव का मुखिया ; (दे २, ३७)।

कुंडिअपेसण न [**दे**] ब्राह्मण-विष्टि, ब्राह्मण की नौकरी, ब्राह्मण की सेवा ; (दे २, ४३)।

कुंडिगा } स्त्री [**कुण्डिका**] नीचे देखो ; (रंभा ;
कुंडिया } अनु ५ ; भग ; णाया २, ५)।

कुंडी स्त्री [**कुण्डी**] १ कुण्डा, पात्र-विशेष ; "तेसिमहो-भूमीए ठविया कुंडी य तेल्लपडिपुन्ना" (सुपा २६६)। २ कमण्डलु, संन्यासी का जल-पात्र ; (महा)।

कुंढ देखो **कुंठ** ; (सुपा ४२२)।

कुंढय न [**दे**] १ चुल्ली, चुल्हा ; २ छोटा बरतन ; (दे २, ६३)।

कुंत पुं [**दे**] शुक, तोता ; (दे २, २१)।

कुंत पुं [**कुन्त**] १ हथियार विशेष, भाला ; (पगह १, १ ; औप)। २ राम के एक सुभट का नाम; (पउम ५६,३८)।

कुंतल पुं [**कुन्तल**] १ केश, बाल ; (सुर १, १ ; सुपा ६१ ; २००)। २ देश-विशेष ; (सुपा ६१ ; उव ४६५)। °**हार** पुं [°**हार**] धम्मिल्ल, संयत केश ; (पाअ)।

कुंतल पुं [**दे**] सातवाहन, नृप-विशेष ; (दे २, ३६)।

कुंतला स्त्री [**कुन्तला**] इस नाम की एक रानी; (दंस)।

कुंतली स्त्री [**दे**] करोटिका, परोसने का एक उपकरण ; (दे २, ३८)।

कुंतली स्त्री [**कुन्तली**] कुन्तल देश की रहने वाली स्त्री; कप्पू)।

कुंती स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर; (दे २, ३४)।

कुंती स्त्री [**कुन्ती**] पाण्डवों की माता का नाम ; (उप ६४८ टी)। °**विहार** पुं [°**विहार**] नासिक-नगर का एक जैन मन्दिर, जिसका जीर्णोद्धार कुन्तीजी ने किया था ; (ती २८)।

कुंतीपोट्टलय वि [**दे**] चतुष्कोण, चार कोण वाला ; (दे २, ४३)।

कुंथु पुं [**कुन्थु**] १ एक जिन-देव, इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न सतरहवाँ तीर्थंकर और छठवाँ चक्रवर्ती राजा ; (सम ४३ ; पडि)। २ हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ६८)। ३ चमरेन्द्र की हस्ति-सेना का अधिपति देव-विशेष; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ४ एक क्षुद्र जन्तु, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (उत्त ३६ ; जी १७)।

कुंद पुं [**कुन्द**] १ पुष्प-वृक्ष विशेष; (जं २)। २ न. पुष्प-विशेष, कुन्द का फूल; (सुर २, ७६ ; णाया १, १)। ३

विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। ४ पुंन. छन्द-विशेष; (पिंग)।

कुंदय वि [दे] कृश, दुर्बल ; (दे २, ३७)।

कुंदा स्त्री [**कुन्दा**] एक इन्द्राणी, मानिभद्र इंद्र की पटरानी; (इक)।

कुंदीर न [दे] बिम्बी-फल, कुन्दरुन का फल ; (दे २, ३६)।

कुंदुक्क पुं [**कुन्दुक्क**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १ —पत्र ४१)।

कुंदुरुक्क पुं [**कुन्दुरुक**] सुगन्धि पदार्थ-विशेष ; (णाया १, १—पत्र ४१ ; सम १३७)।

कुंदुल्लुअ पुं [दे] पक्षि-विशेष, ऊलुक, उल्लू ; (पाअ)।

कुंधर पुं [दे] छाटो मछली ; (दे २, ३२)।

कुंपय पुंन [**कूपक**] तेल वगैरः रखने का पात्र-विशेष ; (रयण ३१)।

कुंपल पुंन [**कुट्मल, कुड्मल**] १ इस नाम का एक नरक ; २ मुकुल, कलि, कलिका; (हे १, २६ ; कुमा ; षड्)।

कुंबर [दे] देखो **कुंधर** ; (पाअ)।

कुंभ पुं [**कुम्भ**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, भगवान् मल्लिनाथ का पिता ; (सम १५१; पउम २०, ४५)। २ स्वनाम-ख्यात जैन महर्षि, अठारहवें तीर्थंकर के प्रथम शिष्य; (सम १५२)। ३ कुम्भकर्ण का एक पुत्र; (से १२,६५)। ४ एक विद्याधर सुभट का नाम ; (पउम १०, १३)। ५ परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २६)। ६ कलश, घड़ा ; (महा ; कुमा)। ७ हाथी का गण्ड-स्थल; (कुमा)। ८ धान्य मापने का एक परिमाण ; (अणु)। ९ तरने का एक उपकरण ; (निचू १)। १० ललाट, भाल-स्थल ; (पव २)। ११ °**अण्ण** पुं [°**कर्ण**] रावण के छोटे भाई का नाम ; (से १५, ११)। °**आर** पुं [°**कार**] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का बरतन बनाने वाला; (हे १, ८)। °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (दंस)। °**गार** देखो °**आर** ; (महा)। °**ग्ग** न [°**ाग्र**] मगध-देश-प्रसिद्ध एक परिमाण; (णाया १, ८—पत्र १२५)। °**सेण** पुं [°**सेन**] उत्सर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर के प्रथम शिष्य का नाम; (तित्थ)।

कुंभंड न [**कूष्माण्ड**] फल-विशेष, कोहला ; (कप्पू)।

कुंभार पुं [**कुम्भकार**] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का बरतन बनाने वाला ; (हे १, ८)। °**ावाय** पुं [°**ापाक**] कुम्हार का बरतन पकाने का स्थान; (ठा ८)।

कुंभि पुं [**कुम्भिन्**] १ हस्ती, हाथी ; (सण)। २ नपुंसक-विशेष; एक प्रकार का षण्ढ पुरुष ; (पुप्फ १२७)।

कुंभिणी स्त्री [दे] जल का गर्त ; (दे २, ३८)।

कुंभिय वि [**कुम्भिक**] कुम्भ-परिमाण वाला ; (ठा ४,२)।

कुंभिल पुं [दे. **कुम्भिल**] १ चोर, स्तेन ; (दे २, ६२ ; विक ५६)। २ पिशुन, दुर्जन ; (दे २, ६२)।

कुंभिल्ल वि [दे] खोदने योग्य ; (दे २, ३६)।

कुंभी स्त्री [**कुम्भी**] १ पात्र-विशेष, घड़े के आकार वाला छोटा कोष्ठ ; (सम १२५)। २ कुंभ, घड़ा ; (जं ३)। °**पाग** पुं [°**पाक**] १ कुंभी में पकना ; (पण्ह २, ५)। २ नरक की एक प्रकार की यातना ; (सूअ १, १, १)।

कुंभी स्त्री [**कूष्माण्डी**] कोहले का गाछ; "चलिओ कुंभीफल दंतुरासु" (गउड)।

कुंभी स्त्री [दे] केश-रचना, केश-संयम ; (दे २, ३४)।

कुंभील पुं [**कुम्भील**] जलचर प्राणि-विशेष, नक्र, मगर ; (चारु ६४)।

कुंभुब्भव पुं [**कुम्भोद्भव**] ऋषि-विशेष, अगस्त्य ऋषि ; (कप्पू)।

कुकुला स्त्री [दे] नवोढ़ा, दुलहिन ; (दे २, ३३)।

कुकुस [दे] देखो **कुक्कुस** ; (दस ५, ३४)।

कुकुहाइय न [**कुकुहायित**] चलते समय का शब्द-विशेष ; (तंदु)।

कुकूल पुं [**कुकूल**] कारीषाग्नि, कंडे की आग ; (पण्ह १, १)।

कुक्क देखो **कोक्क**। कुक्कइ ; (पि १६७; ४८८)।

कुक्क पुं [दे] कुत्ता, कुक्कुर ; "कुक्केहि कुक्कहि अ बुक्कअंते" (मृच्छ ३६)।

कुक्कयय न [दे] आभरण-विशेष ; "अदु अंजणिं अलंकारं कुक्कययं मे पयच्छाहि" (सूअ १, ४, २, ७)। देखो **कुक्कुडय**।

कुक्की स्त्री [दे] कुत्ती, कुकुरी ; (मृच्छ ३६)।

कुक्कुअ वि [**कुत्कुच**] भाँड की तरह शरीर के अवयवों की कुचेष्टा करने वाला ; (धर्म २ ; पव ६)।

कुक्कुअ न [**कौकुच्य**] कुचेष्टा, कामोत्पादक अंग-विकार ; (पउम ११, ६७ ; आचा)।

कुक्कुअ वि [**कुकूज**] आक्रन्द करने वाला ; (उत्त २१)।

कुक्कुआ स्त्री [**कुचकुचा**] अवस्यन्दन, क्षरण; (बृह ६)।

कुक्कुइअ वि [**कौकुचिक**] भाँड की तरह कुचेष्टा करने वाला, काम-चेष्टा करने वाला ; (भग ; औप)।

कुक्कुइअ न [**कौकुच्य**] काम-कुचेष्टा ; " भंडाईण व नयणाइयाण सवियारकरणमिह भणियं। कुक्कुइयं" (सुपा ५०६; पडि)।

कुक्कुड पुं [**कुक्कुट**] १ कुक्कुट, मुर्गा ; (गा ५८२ ; उवा)। २ वनस्पति-विशेष ; (भग १५)। ३ विद्या द्वारा किया जाता हस्त-प्रयोग-विशेष ; (वव १)। °**मंसय** न [°**मांसक**] १ मुर्गा का मांस ; २ बीजपूरक वनस्पति का गुदा ; (भग १५)।

कुक्कुड वि [**दे**] मत्त, उन्मत्त ; (दे २, ३७)।

कुक्कुडय न [**कुक्कुटक**] देखो **कुक्कयय** ; (सूत्र १, ४, २, ७ टी)।

कुक्कुडिया } स्त्री [**कुक्कुटिका, टी**] कुक्कुटी, मुर्गी ;
कुक्कुडी } (णाया १, ३ ; विपा १, ३)।

कुक्कुडेसर न [**कुक्कुटेश्वर**] तीर्थ-विशेष ; (ती १६)।

कुक्कुर पुं [**कुक्कुर**] कुत्ता, श्वान ; (पउम ६४, ८० ; सुपा २७७)।

कुक्कुरुड पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे २, १३)।

कुक्कुस पुं [**दे**] धान्य आदि का छिलका, भूँसा ; (दे २, ३६ ; दस ५, ३४)।

कुक्कुह पुं [**कुक्कुभ**] पक्षि-विशेष ; (गउड)।

कुक्खि [**दे. कुक्षि**] देखो **कुच्छि**; (दे २, ३४; औप ; स्वप्न ६१ ; कप्प ३३)।

कुग्गाह पुं [**कुग्राह**] १ कदाग्रह, हठ ; (उप ८३३ टी)। २ जल-जन्तु विशेष ; " कुग्गाहगाहाइयजंतुसंकुला " (सुपा ६२६)।

कुच पुं [**कुच**] स्तन, थन ; (कुमा)।

कुच्च न [**कूर्च**] १ दाढ़ी-मूँछ ; (पाअ; अभि २१२)। २ तृण-विशेष ; (पण्ह २, ३)। देखो **कुच्चग**।

कुच्चंधरा स्त्री [**कूर्चधरा**] दाढ़ी-मूँछ धारण करने वाली ; (ओघ ८३ भा)।

कुच्चग } देखो **कुच्च** ; (आचा २, २, ३ ; काल)।
कुच्चय } ३ कूची, तृण-निर्मित तूलिका, जिससे दीवाल में चूना लगाया जाता है ; (उप पृ ३४३ ; कुमा)।

कुच्चिय वि [**कूर्चिक**] दाढ़ी-मूँछ वाला ; (बृह १)।

कुच्छ सक [**कुत्स्**] निन्दा करना, धिक्कारना। कृ—**कुच्छ, कुच्छणिज्ज** ; (श्रा २७ ; पण्ह १, ३)।

कुच्छ पुं [**कुत्स**] १ ऋषि-विशेष ; २ गोत्र-विशेष ; " थेरस्स णं अज्जसिवभूइस्स कुच्छसगुत्तस्स " (कप्प)।

कुच्छ देखो **कुच्छ**=कुत्स्।

कुच्छग पुं [**कुत्सक**] वनस्पति-विशेष ; (सूत्र २, २)।

कुच्छणिज्ज देखो **कुच्छ**=कुत्स्। " अन्नेसिं कुच्छणिज्जं साणाणं भवखणिज्जं हि " (श्रा २७)।

कुच्छा स्त्री [**कुत्सा**] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा; (ओघ ४४४; उप ३२० टी)।

कुच्छि पुंस्त्री [**कुक्षि**] १ उदर, पेट ; (हे १, ३५ ; उवा; महा)। २ अठचालीस अंगुल का मान ; (जं २)। °**किमि** पुं [°**कृमि**] उदर में उत्पन्न होता कीड़ा, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (पण्ण १)। °**धार** पुं [°**धार**] १ जहाज का काम करने वाला नौकर ; " कुच्छिधारकन्नधार-गब्भजसंजत्ताणावावाणियगा " (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ एक प्रकार का जहाज का व्यापारी ; (णाया १, १६)। °**पूर** पुं [°**पूर**] उदर-पूर्ति ; (वव ४)। °**वेयणा** स्त्री [°**वेदना**] उदर का रोग-विशेष; (जीव ३)। °**सूल** पुंन [°**शूल**] रोग-विशेष ; (णाया १, १३; विपा १, १)।

कुच्छिंभरि वि [**कुक्षिम्भरि**] एकलपेटा, पेटू, स्वार्थी; "हा तियचरित्तकुत्सिं(? च्छिं)भरिए ! " (रंभा)।

कुच्छिमई स्त्री [**दे. कुक्षिमती**] गर्भिणी, आपन्न-सत्त्वा; (दे २, ४१ ; षड्)।

कुच्छिय वि [**कुत्सित**] खराब, निन्दित, गर्हित ; (पंचा ७ ; भवि)।

कुच्छिल्ल न [**दे**] १ वृति का विवर, बाड़ का छिद्र ; (दे २, २४)। २ छिद्र, विवर ; (पाअ)।

कुच्छेअय पुं [**कौक्षेयक**] तलवार, खड्ग ; (दे १, १६१; षड्)।

कुज पुं [**कुज**] वृक्ष, पेड़ ; (जं २)।

कुजय पुं [**कुजय**] जूआरी, जूआखोर; (सूत्र १, २, २)।

कुज्ज वि [**कुब्ज**] १ कुब्ज, वामन ; (सुपा २ ; कप्पू)। २ पुंन पुष्प-विशेष ; (षड्)।

कुज्जय पुं [**कुब्जक**] १ वृक्ष-विशेष, शतपत्रिका ; (पउम ४२, ८ ; कुमा)। २ न उस वृक्ष का पुष्प ; "बंधेउं कुज्जयपसूणं" (हे १, १८१)।

कुज्झ सक [**क्रुध्**] क्रोध करना, गुस्सा करना। कुज्झइ ; (हे ४, २१७ ; षड्)।

कुट्ट सक [**कुट्ट्**] १ कूटना, पीटना, ताड़न करना। २ काटना, छेदना। ३ गरम करना। ४ उपालम्भ देना। भवि—कुट्टइस्सं ; (पि ५२८)। वकृ—**कुट्टिंत**; (सुर ११,

१)। कवकृ—**कुट्टिज्जंत, कुट्टिज्जमाण** ; (सुपा ३४० ; प्रासू ६६ ; राय)। संकृ—**कुट्टिय**; (भग १४, ८)।

कुट्ट पुं [**कुट**] घड़ा, कुम्भ ; (सूअ २, ७)।

कुट्ट पुंन [**दे**] १ काट, किला ; "दिज्जंति कवाडाइं कुट्टवरि भडा ठविज्जंति" (सुपा ५०३)। २ नगर, शहर; (सुर १५, ८१)। °**वाल** पुं [°**पाल**] कोटवाल, नगर-रक्षक ; (सुर १५, ८१)।

कुट्टण न [**कुट्टन**] १ छेदन, चूर्णन, भेदन ; (ओप)। २ कूटना, ताड़न ; (हे ४, ४३८)।

कुट्टणा स्त्री [**कुट्टना**] शारीरिक पीड़ा; (सूअ १, १२)।

कुट्टणी स्त्री [**कुट्टनी**] १ मूसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं ; (बृह १)। २ दूती, कूटनी, कुट्टिनी ; (रंभा)।

कुट्टा स्त्री [**दे**] गौरी, पार्वती ; (दे २, ३५)।

कुट्टाय पुं [**दे**] चर्मकार, मोची ; (दे २, ३७)।

कुट्टिंत देखो **कुट्ट**=कुट्ट्।

कुट्टिंतिया देखो **कोट्टंतिया** ; (राज)।

कुट्टिंब [**दे**] देखो **कोट्टिंब** ; (पाअ)।

कुट्टिणी स्त्री [**कुट्टिनी**] कूटनी, दूती ; (कप्पू ; रंभा)।

कुट्टिम देखो **कोट्टिम**=कुट्टिम ; (भग ८, ६ ; राय ; जीव ३)।

कुट्टिय वि [**कुट्टित**] १ कूटा हुआ, ताड़ित ; (सुपा १५ ; उत्त १६)। २ छिन्न, छेदित ; (बृह १)।

कुट्ठ पुंन [**कुष्ठ**] १ पसारी के यहां बेची जाती एक वस्तु ; (विसे २६३ ; पण्ह २, ५)। २ रोग-विशेष, कोढ़ ; (वव ६)।

कुट्ठ पुं [**कोष्ठ**] १ उदर, पेट ; "जहा विसं कुट्ठगयं मंतमूल-विसारया। वेज्जा हणंति मंतेहिं" (पडि)। २ कोठा, कुशूल, धान्य भरने का बड़ा भाजन ; (पण्ह २, १)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] एक बार जानने पर नहीं भूलने वाला ; (पण्ह २, १)। देखो **कोट्ठ, कोट्ठग**।

कुट्ठ वि [**क्रुष्ट**] १ शपित, अभिशप्त ; २ न. शाप, अभि-शाप-शब्द ; "उड्ढं कुट्ठं केहिं पेच्छंता। आगया इत्थ" (सुपा २५०)।

कुट्ठा स्त्री [**कुष्ठा**] इमली, चिञ्चा ; (बृह १)।

कुट्ठि वि [**कुष्ठिन्**] कुष्ठ रोग वाला ; (सुपा २४३ ; ५७६)।

कुड पुं [**कुट**] १ घड़ा, कलश ; (दे २, ३५ ; गा २२६ ; विसे १४५६)। २ पर्वत ; ३ हाथी वगैरः का बन्धन-स्थान ; (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ वृक्ष, पेड़ ; "तड्डवियसिहंडमंडियकुडग्गो" (सुपा ५६२)। °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] पात्र-विशेष, घड़ा के जैसा पात्र ; (दे २, २०)। °**दोहिणी** स्त्री [°**दोहिनी**] घट-पूर्ण दूध देने वाली ; (गा ६३७)।

कुडंग पुंन [**कुटङ्क**] १ कुञ्ज, निकुञ्ज, लता वगैरः से ढका हुआ स्थान ; (गा ६८० ; हेका १०५)। २ वन, जंगल ; (उप २२० टी)। ३ बाँस की जाली, बाँस की बनी हुई छत ; (बृह १)। ४ गह्वर, कोटर ; (राज)। ५ वंश-गहन ; (णाया १, ८ ; कुमा)।

कुडंग पुंन [**दे. कुटङ्क**] लता-गृह, लता से ढका हुआ घर ; (दे २, ३७ ; महा ; पाअ ; षड्)।

कुडंगा स्त्री [**कुटङ्का**] लता-विशेष ; (पउम ५३, ७६)।

कुडंगी स्त्री [**दे. कुटङ्की**] बाँस की जाली ; "एक्कपहारेण निवडिया वंसकुडंगी" (महा ; सुर १२, २०० ; उप पृ २८१)।

कुडंब देखो **कुडुंब** ; (महा ; गा ६०६)।

कुडग देखो **कुड** ; (आवम ; सूअ १, १२)।

कुडभी स्त्री [**कुटभी**] छोटी पताका ; (सम ६०)।

कुडय न [**दे**] लता-गृह, लता से आच्छादित घर, कुटीर, झोंपड़ा ; (दे २, ३७)।

कुडय पुंन [**कुटज**] वृक्ष-विशेष, कुरैया ; (णाया १,६; पण्ण १७; स १६४), "कुडयं दलइ" (कुमा)।

कुडव पुं [**कुडव**] अनाज नापने का एक माप ; (णाया १, ७ ; उप पृ ३७०)।

कुडाल देखो **कुड्डाल** ; (उवा)।

कुडिअ वि [**दे**] कुब्ज, वामन ; (पाअ)।

कुडिआ स्त्री [**दे**] बाड़ का विवर ; (दे २, २४)।

कुडिच्छ न [**दे**] १ बाड़ का छिद्र ; २ कुटी, झोंपडा। ३ वि. त्रुटित, छिन्न ; (दे २, ६४)।

कुडिल वि [**कुटिल**] वक्र, टेढा ; (सुर १, २० ; २, ८६)।

कुडिलविडल न [**दे. कुटिलविटल**] हस्ति-शिक्षा ; (राज)।

कुडिल्ल न [**दे**] १ छिद्र, विवर ; (पाअ)। २ वि. कुब्ज, कूबड़ा ; (पाअ)।

कुडिल्लय वि [**दे. कुटिलक**] कुटिल, टेढ़ा, वक्र ; (दे २, ४० ; भवि)।

कुडिव्वय देखो **कुलिव्वय** ; (राज)।

कुडी स्त्री [**कुटी**] छोटा गृह, झोंपड़ा, कुटीर; (सुपा १२० ; वज्जा ६४)।

कुडीर न [**कुटीर**] झोंपड़ा, कुटी ; (हे ४, ३६४ ; पउम ३३, ८५)।

कुडीर न [**दे**] बाड़ का छिद्र ; (दे २, २४)।

कुडुंग पुं [**दे**] लतागृह, लताओं से ढ़का हुआ घर ; (षड्; गा १७५ ; २३२ अ)।

कुडुंब न [**कुटुम्ब**] परिजन, परिवार, स्वजन-वर्ग ; (उवा ; महा ; प्रासू १६७)।

कुडुंबय पुं [**कुस्तुम्बक**] १ वनस्पति-विशेष, धनियाँ ; (पगण १—पत्र ४०)। २ कन्द-विशेष ; " पलंडुलसण-कंदे य कंदली य कुडुंबए " (उत्त ३६, ६८ का)।

कुडुंबि, **कुडुंबिअ** वि [**कुटुम्बिन्, °क**] १ कुटुम्ब-युक्त, गृहस्थ; २ कुनबे वाला, कर्षक ; (गउड)। ३ संबन्धी; " सोभागुणसमुदएणं आणणकुडुंबिएणं " (कप्प)।

कुडुंबीअ न [**दे**] सुरत, संभोग, मैथुन ; (षड्)।

कुडुंभग पुं [**दे**] जल-मण्डूक, पानी का मेढ़क; (निचू १)।

कुडुक्क पुं [**दे**] लता-गृह ; (षड्)।

कुडुच्चिअ न [**दे**] सुरत, संभोग, मैथुन ; (दे २, ४१)।

कुडुल्ली (अप) स्त्री [**कुटी**] कुटिया, झोंपड़ी; (कुमा)।

कुड्ड पुंन [**कुड्य**] १ भित्ति, भींत ; (पउम ६८, ६ ; हे २, ७८)।

" अज्जं गओत्ति अज्जं गओत्ति अज्जं गओत्ति गणिरीए।
पढमव्विअ दिअहद्धे कुड्डो लेहाहिं चित्तलिओ "
(गा २०८)।

कुड्ड न [**दे**] आश्चर्य, कौतुक, कुतूहल ; (दे २, ३३ ; पाअ ; षड् ; हे २, १७४)।

कुड्डगिलोई [**दे**] गृह-गोधा, छिपकली ; (दे २, १६)।

कुड्डलेवणी स्त्री [**दे. कुड्यलेपनी**] सुधा, खड़ी, खटिका ; (दे २, ४२)।

कुड्डाल न [**दे**] हल का ऊपला विस्तृत अंश ; (उवा)।

कुढ पुंन [**दे**] १ चुरायी हुई वस्तु की खोज में जाना ; (दे २, ६२ ; सुपा ५०३)। २ छीनी हुई चीज को छुड़ाने वाला, वापिस लेने वाला ; (दे २, ६२)।

कुढार पुं [**कुठार**] कुल्हाड़ा, फरसा ; (हे १, १६६ ; षड्)।

कुढावय न [**दे**] अनुगमन, पीछे जाना ; (त्रिसे १४३६ टी)।

कुढिय वि [**दे**] कूड, मूर्ख, बेसमझ ; " कुव्वंति नेउराइं पुणो पुणो कुढियपुरिसोव्व " (सुर ३, १४२)।

कुण सक [**कृ**] करना, बनाना। कुणइ, कुणउ, कुण ; (भग ; महा ; सुपा ३२०)। वकृ—**कुणंत, कुणमाण** ; (गा १६५ ; सुपा ३६ ; ११३ ; आचा)।

कुणक्क पुं [**कुणक**] वनस्पति-विशेष ; (पगण १—पत्र ३५)।

कुणव न [**कुणप**] १ मुरदा, मृत-शरीर ; (पाअ ; गउड)। २ वि. दुर्गन्धी ; (हे १, २३१)।

कुणाल पुं.ब. [**कुणाल**] १ देश-विशेष ; (णाया १, ८ ; उप ६८६ टी)। २ प्रसिद्ध महाराज अशोक का एक पुत्र; (विसे ८६१)। **°नयर** न [**°नगर**] एक शहर, उजैन ; " आसी कुणालनयरे " (संथा)।

कुणाला स्त्री [**कुणाला**] इस नाम की एक नगरी ; (सुपा १०३)।

कुणि, **कुणिअ** पुं [**कुणि**] १ हस्त-विकल, टूँठ, हाथ-कटा मनुष्य ; (पउम २, ७७)। २ जन्म से ही जिसका एक हाथ छोटा हो वह ; ३ जिसका एक पाँव छोटा हो, खञ्ज ; (पगह २, ५—पत्र १५० ; आचा)।

कुणिआ स्त्री [**दे**] वृति-विवर, बाड़ का छिद्र ; (दे २, २४)।

कुणिम पुंन [**दे.कुणप**] १ शव, मृतक, मुरदा ; (पगह २, ३)। २ मांस; (ठा ४, ४ ; औप)। ३ नरकावास-विशेष ; (सूअ १, ५, १)। ४ शव का रुधिर, वसा वगैरः ; (भग ७, ६)।

कुणुकुण अक [**कुणुकुणाय्**] शीत मे कम्प होने पर 'कड़ कड़' आवाज करना। वकृ —**कुणुकुणंत** ; (सुर २, १०३)।

कुण्हरिया स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पगण १—पत्र ३५)।

कुतत्ती स्त्री [**दे**] मनोरथ, वाञ्छा ; (दे २, ३६)।

कुतुव पुंन [**कुतुप**] १ तैल वगैरः भरने का चमड़े का पात्र; (दे ५, २२)। देखो **कुउअ**।

कुत्त पुं [**दे**] कुत्ता, कुक्कुर ; (रंभा)।

कुत्त न [दे. कुतक] ठेका, इजारा ; (विपा १, १—पत्र ११)।
कुत्तिय पुंस्त्री [दे] एक जात का कीड़ा, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष ; "करालिय कुत्तिय विच्छू" (श्राप १७ ; पभा ४१)।
कुत्ती स्त्री [दे] कुती, कुकुरी ; (रंभा)।
कुत्थ अ [कुत्र] कहां, किस स्थान में ? (उत्तर १०४)।
कुत्थ देखो **कढ**। कुत्थसि; कुत्थसु ; (गा ५०१ अ)।
कुत्थण न [कोथन] सड़ना, सड़ जाना ; (वव ४)।
कुत्थर न [दे] १ विज्ञान ; (दे २, १३)। २ कोटर, वृक्ष की पोल, गह्वर ; (सुपा २४६)। ३ सर्प वगैरः का बिल ; (उप ३५७ टी)।
कुत्थुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य-विशेष ; (राय)।
कुत्थुंभरी स्त्री [कुस्तुम्बरी] वनस्पति-विशेष, धनियाँ ; (पराण १—पत्र ३१)।
कुत्थुह पुंन [कौस्तुभ] मणि-विशेष, जो विष्णु की छाती पर रहता है ; (हेका २५७)।
कुत्थुहवत्थ न [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द ; (दे २, ३८)।
कुदो देखो **कुओ** ; (हे १, ३७)।
कुद्द वि [दे] प्रभूत, प्रचुर ; (दे २, ३४)।
कुद्दण पुं [दे] रासक, रासा ; (दे २, ३८)।
कुद्दव पुं [कोद्रव] धान्य-विशेष, कोदा, कोदव ; (सम्य १२)।
कुद्दाल पुं [कुद्दाल] १ भूमि खोदने का साधन, कुदार, कुदारी ; (सुपा ५२६)। २ वृक्ष-विशेष ; (जं २)।
कुद्ध वि [क्रुद्ध] कुपित, क्रोध-युक्त ; (महा)।
कुप्प अक [कुप्] कोप करना, गुस्सा करना। कुप्पइ ; (उव ; महा)। वकृ—**कुप्पंत** ; (सुपा १६७)। कृ-**कुप्पियव्व** ; (स ६१)।
कुप्प सक [भाष्] बोलना, कहना। कुप्पइ; (भवि)।
कुप्प न [कुप्य] सुवर्ण और चाँदी को छोड़ कर अन्य धातु और मिट्टी वगैरः के बने हुए गृह-उपकरण ; "लोहाई उवक्खरो कुप्पं" (बृह १ ; पडि)।
कुप्पढ पुं [दे] १ गृहाचार, घर का रिवाज ; २ समुदाचार; सदाचार ; (दे २, ३६)।
कुप्पर न [दे] सुरत के समय किया जाता हृदय-ताड़न-विशेष ; २ समुदाचार, सदाचार ; ३ नर्म, हाँसी, ठट्ठा; (दे २, ६४)।
कुप्पर पुं [कूर्पर] १ कफोणि, हाथ का मध्य भाग; २ जानु, घुटना ; ३ रथ का अवयव-विशेष ; (जं ३)।
कुप्पर पुं [कर्पर] देखो **कप्पर**। भींत को परत, भींत की जीर्ण-शीर्ण थर; "एयाओ पाडलावंडुकुप्परा जुगणभित्तीओ" (गउड)।
कुप्पल देखो **कुंपल** ; (पि २७७)।
कुप्पास पुं [कूर्पास] कञ्चुक, काँचली, जनानी कुरती ; (हे १, ७२ ; कप्पू ; पाअ)।
कुप्पिय वि [कुपित] १ कुपित, क्रुद्ध; २ न. क्रोध, गुस्सा; "कुप्पियं नाम कुज्झियं" (आचू ४)।
कुप्पिस देखो **कुप्पास** ; (हे १, ७२ ; दे २, ४०)।
] भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष ; (पव २७)।
कुबेर पुं [कुबेर] १ कुबेर, यक्ष-राज, धनेश ; (पाअ ; गउड)। २ भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठाता यक्ष-विशेष; (संति ८)। ३ काञ्चनपुर के एक राजा का नाम ; (पउम ७, ४५)। ४ इस नाम का एक श्रेष्ठी ; (उप ७२८ टी)। ५ एक जैन मुनि ; (कप्प)। °**दिसा** पुं [°दिश्] उत्तर दिशा ; (सुर २, ८५)। °**नयरी** स्त्री [°नगरी] कुबेर की राजधानी, अलका ; (पाअ)।
कुबेरा स्त्री [कुबेरा] जैन साधु-गण की एक शाखा ; (कप्प)।
कुब्बड वि [दे] कूबड़, कुब्ज, वामन ; (श्रा २७)।
कुब्बर पुं [कूबर] वैश्रमण के एक पुत्र का नाम; (अंत ५)।
कुभंड पुं [कुभाण्ड] देव-विशेष की जाति; (ठा २, ३—पत्र ८५)।
कुभंडिंद पुं [कुभाण्डेन्द्र] इन्द्र-विशेष, कुभाण्ड देवों का स्वामी ; (ठा २, ३)।
कुमर देखो **कुमार** ; (हे १, ६७; सुपा २४३; ६५६; कुमा)।
कुमरी देखो **कुमारी**; (कप्पू ; पाअ)।
कुमार पुं [कुमार] १ प्रथम-वय का बालक, पाँच वर्ष तक का लड़का ; (ठा १० ; णाया १, २)। २ युवराज, राज्यार्ह पुरुष ; (पगह १, ५)। ३ भगवान् वासुपूज्य का शासनाधिष्ठाता यक्ष ; (संति ७)। ४ लोहकार, लोहार ; "चवेडमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव" (उत्त २३)। ५ कार्त्तिकेय, स्कन्द ; (पाअ)। ६ शुक पक्षी ; ७ घुड़सवार ; ८ सिन्धु नद ; ९ वृक्ष-विशेष, वरुण-वृक्ष ; (हे १, ६७)। १० अ-विवाहित, ब्रह्मचारी ; (सम ५०)। °**ग्गाम** पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष ; (आचा २,३)। °**णंदि**

पुं [°नन्दिन्] इस नाम का एक सोनार ; (आवम)। °धम्म पुं [°धर्म] एक जैन साधु ; (कप्प)। °वाल पुं [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध जैन राजा ; (दे १, ११३ टी)।

कुमार पुं [दे] कुआँर का महीना, आश्विन मास ; (ठा२,१)।

कुमारा स्त्री [कुमारा] इस नाम का एक संनिवेश ; "तओ भगवं कुमाराए संनिवेसे गओ" (आवम)।

कुमारिय पुं [कुमारिक] कसाई, शौनिक ; (बृह १)।

कुमारिया स्त्री [कुमारिका] देखो **कुमारी** ; (पि ३५०)।

कुमारी स्त्री [कुमारी] १ प्रथम वय की लड़की ; २ अविवाहित कन्या ; (हे ३, ३२)। ३ वनस्पति-विशेष, घीकुआरी ; (पव ४)। ४ नवमल्लिका ; ५ नदी-विशेष ; ६ जम्बू-द्वीप का एक भाग; ७ वनस्पति-विशेष, अपराजिता ; ८ सीता ; ९ बड़ी इलाची ; १० वन्ध्या ककड़ी की लता ; ११ पक्षि-विशेष ; (हे ३, ३२)।

कुमारी स्त्री [दे. कुमारी] गौरी, पार्वती ; (दे २, ३५)।

कुमुअ पुं [कुमुद] १ इस नाम का एक बानर ;(से१,३४)। २ महाविदेह-वर्ष का एक विजय-युगल, भूमि-प्रदेश-विशेष ; (ठा२, ३— पत्र ८०)। ३ न. चन्द्र-विकासी कमल ; (णाया १, ३—पत्र ९९; से १, २६)। ४ संख्या-विशेष, कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। ५ शिखर-विशेष ; (ठा ८)। ६ वि. पृथ्वी में आनन्द पाने वाला; ७ खराब प्रीति वाला; (से १, २६)। देखो **कुमुद**।

कुमुअंग न [कुमुदाङ्ग] संख्या-विशेष, 'महाकमल' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो२)।

कुमुआ स्त्री [कुमुदा] १ इस नाम की एक पुष्करिणी ; (जं ४)। २ एक नगरी ; (दीव)।

कुमुइणी स्त्री [कुमुदिनी] १ चन्द्र-विकासी कमल का पेड़; (कुमा; रंभा)। २ इस नाम की एक रानी ; (उप १०३१ टी)।

कुमुद देखो **कुमुअ** ; (इक)। देव-विमान विशेष ; (सम ३३ ; ३५)। °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष; (सम ३५)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष ; (इक)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] इस नाम की एक पुष्करिणी ; (जं ४)। °वण न [°वन] मथुरा नगरी के समीप का एक जङ्गल; (ती २१)। °गर पुं [°कर] कुमुद-षण्ड, कुमुदों से भरा हुआ वन ; (पण्ह १, ४)।

कुमुदंग देखो **कुमुअंग** ; (इक)।

कुमुदग न [कुमुदक] तृण-विशेष; (सूअ २, २)।

कुमुल्ली स्त्री [दे] चुल्ली, चुल्हा ; (दे २, ३९)।

कुम्म पुं [कूर्म] कच्छप, कछुआ ; (पाअ)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] मगध देश के एक गाँव का नाम; (भग १५)।

कुम्मण वि [दे] म्लान, शुष्क ; (दे २, ४०)।

कुम्मास पुं [कुल्माष] १ अन्न-विशेष, उड़िद ; (ओघ ३५९ ; पण्ह २, ५)। २ थोड़ा भीजा हुआ मुंग वगैरः धान्य ; (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

कुम्मी स्त्री [कूर्मी] १ स्त्री-कछुआ, कच्छपी। २ नारद की माता का नाम ; (पउम ११, ५२)। °पुत्त पुं [°पुत्र] दो हाथ ऊँचा इस नाम का एक पुरुष, जिसने मुक्ति पाई थी ; (औप)।

कुम्ह पुंब. [कुश्मन्] देश-विशेष ; (हे २, ७४)।

कुय पुं [कुच] १ स्तन, थन। २ वि. शिथिल ; (वव ७)। ३ अस्थिर ; (निचू १)।

कुयवा स्त्री [दे] वल्ली-विशेष ; (पणण १—पत्र ३३)।

कुरंग पुं [कुरङ्ग] १ मृग की एक जाति ; (जं २)। २ कोई भी मृग, हरिण ; (पण्ह १, १; गउड)। स्त्री—°गी ; (पाअ)। °च्छी स्त्री [°ाक्षी] हरिण के नेत्र जैसे नेत्र वाली स्त्री, मृग-नयनी स्त्री ; (वाअ २०)।

कुरंटय पुं [कुरण्टक] वृक्ष-विशेष, पियवाँसा ; (उप १०३१ टी)।

कुरकुर देखो **कुरुकुर**। वकृ—**कुरकुराइंत** ; (रंभा)।

कुरय पुं [कुरक] वनस्पति-विशेष; (पणण १—पत्र ३५)।

कुरर पुं [कुरर] कुरल-पक्षी, उत्क्रोश ; (पण्ह १, १ ; उप १०२६)।

कुररी स्त्री [दे] पशु, जानवर ; (दे २, ४०)।

कुररी स्त्री [कुररी] १ कुरर पक्षी की मादा ; २ गाथा-छन्द का एक भेद ; (पिंग)। ३ मेषी, मेड़ी ; (रंभा)।

कुरल पुं [कुरल] १ केश, बाल ; "कुरलकुरलीहिं कलिओ तमालदलसामलो अइसणिद्धो" (सुपा २४ ; पाअ)। २ पक्षि-विशेष ; (जीव १)।

कुरली स्त्री [कुरली] १ केशों की वक्र सटा , (सुपा १ ; २४)। २ कुरल-पक्षिणी ; "कुरलिव्व नहंगणे भमइ" (पउम १७, ७९)।

कुरवय पुं [कुरबक] वृक्ष-विशेष, कटसरैया ; (गा ६ ; मा ४० ; विक्र २९ ; स ४१४ ; कुमा ; दे ५, ९)।

कुरा स्त्री [**कुरा**] वर्ष-विशेष, अकर्म भूमि विशेष ; (ठा २, ३ ; १०)।

कुरिण न [**दे**] बड़ा जंगल, भयंकर अटवी ; (ओघ ४४७)।

कुरु पुं.ब. [**कुरु**] १ आर्य देश-विशेष, जो उत्तर भारत में है ; (णाया १, ८ ; कुमा)। २ भगवान् आदिनाथ का इस नाम का एक पुत्र ; (ती १६)। ३ अकर्म-भूमि विशेष; (ठा ६)। ४ इस नाम का एक वंश ; (भवि)। ५ पुंस्त्री. कुरु वंश में उत्पन्न, कुरु-वंशीय ; (ठा ६)। °**अरा,** °**अरी** देखो नीचे °**चरा,** °**चरी;** (षड्)। °**खेत्त** °**क्खेत्त,** न [°**क्षेत्र**] १ दिल्ली के पास का एक मैदान, जहां कौरव और पाण्डवों की लड़ाई हुई थी ; २ कुरु देश की राजधानी, हस्तिनापुर नगर ; (भवि ; ती १६)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] इस नाम का एक राजा ; (धम्म ; आवम)। °**चर** वि [°**चर**] कुरु देश का रहने वाला। स्त्री—°**चरा,** °**चरी;** (हे ३, ३१)। °**जंगल** न [°**जङ्गल**] कुरु-भूमि ; देश-विशेष ; (भवि ; ती ७)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] दुर्योधन ; (गा ४४३ ; गउड)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] इस नाम का एक श्रेष्ठी और जैन महर्षि ; (उत २ ; संथा)। °**मई** स्त्री [°**मती**] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की पटरानी ; (सम १५२)। °**राय** पुं [°**राज**] कुरु देश का राजा ; (ठा ७)। °**वइ** पुं [°**पति**] कुरु देश का राजा ; (उप ७२८ टी)।

कुरुकुया स्त्री [**कुरुकुचा**] पाँव का प्रक्षालन ; (ओघ ३१८)।

कुरुकुरु अक [**कुरुकुराय्**] 'कुर कुर' आवाज करना, कुल-कुलाना, बड़बड़ाना। कुरुकुराअसि ; (पि ५५८)। वकृ—**कुरुकुराअंत** ; (कप्पू)।

कुरुकुरिअ न [**दे**] रणरणक, औत्सुक्य ; (दे २, ४२)।

कुरुगुर देखो **कुरुकुर**। कुरुगुरेंति ; (स ५०३)।

कुरुच्चिल्ल पुं [**दे**] १ कुलीर, जल-जन्तु-विशेष ; २ न. ग्रहण, उपादान ; (दे २, ४१)। देखो **कुरुविल्ल**।

कुरुच्छ वि [**दे**] अनिष्ट, अप्रिय ; (दे २, ३९)।

कुरुड वि [**दे**] १ निर्दय, निष्ठुर ; (दे २, ६३ ; भवि)। २ निपुण, चतुर ; (दे २, ६३ ; भवि)।

कुरुण न [**दे**] राजा का या दूसरे का धन ; (राज)।

कुरुय न [**दे. कुरुक**] माया, कपट ; (सम ७१)।

कुरुया स्त्री [**दे.कुरुका**] शरीर-प्रक्षालन, स्नान; (वव १)।

कुरुर देखो **कुरर** ; (कुमा)।

कुरुल पुं [**दे**] १ कुटिल केश, वक्र बाल ; (दे २, ६३ ; भवि)। २ वि. निर्दय ; ३ निपुण, चतुर ; (दे २, ६३)।

कुरुल अक [**कु**] आवाज करना, कौए का बोलना। कुरुलहि ; (भवि)।

कुरुलिअ न [**कुत**] वायस का शब्द, कौए का आवाज ; (भवि)।

कुरुव देखो **कुरु** ; (पउम ११८, ८३ ; भवि)।

कुरुवग देखो **कुरवय** ; (सुपा ७७)।

कुरुविंद पुं [**कुरुविन्द**] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति ; (गउड)। २ तृण-विशेष ; (पण्ण १ ; पण्ह १, ४—पत्र ७८)। ३ कुटिलिक-नामक रोग, एक प्रकार का जंघा रोग ; "एणीकुरुविंदचत्तवट्टाणुपुव्वजंघे" (औप)। °**ावत्त** पुंन [°**ावर्त्त**] भूषण-विशेष ; (कप्प)।

कुरुविंदा स्त्री [**कुरुविन्दा**] इस नाम की एक वणिग्-भार्या; (पउम ५५, ३८)।

कुरुविल्ल [**दे**] देखो **कुरुच्चिल्ल** ; (पाअ)।

कुल पुंन [**कुल**] १ कुल, वंश, जाति ;(प्रास १७)। २ पैतृक वंश ; (उत्त ३)। ३ परिवार, कुटुम्ब ; (उप ६७७)। ४ सजातीय समूह ; (पण्ह १, ३)। ५ गोत्र; (सुपा ८ ; ठा ४, १)। ६ एक आचार्य की संतति; (कप्प)। ७ घर, गृह ; (कप्प ; सुअ १, ४, १)। ८ सान्निध्य, सामीप्य ; (आचा)। ९ ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध नक्षत्र-संज्ञा; (सुज्ज १० ; इक)। "कुलो, कुलं" (हे १, ३३)। °**उव्व** पुं [°**पूर्व**] पूर्वज, पूर्व-पुरुष; (गउड)। °**कम** पुं [°**क्रम**] कुलाचार, वंश-परम्परा का रिवाज ; (सट्ठि ७४)। °**कर** देखो नीचे °**गर** ; (ठा १०)। °**कोडि** स्त्री [°**कोटि**] जाति-विशेष ; (पव १५१ ; ठा ६ ; १०)। °**क्कम** देखो **कम** ; (सट्ठि ६)। °**गर** पुं [°**कर**] कुल की स्थापना करने वाला, युग के प्रारम्भ में नीति वगैरः की व्यवस्था करने वाला महा-पुरुष; (सम १२६; धण ५)। °**गेह** न [°**गेह**] पितृ-गृह ; (सण)। °**घर** न [°**गृह**] पितृ-गृह; (औप)। °**ज** वि [°**ज**] कुलीन; खानदान कुल में उत्पन्न; (द्र ५)। °**जाय** वि [°**जात**] कुलीन, खानदान कुल का; (सुपा ५९८ ; पाअ)। °**जुअ** वि [°**युत**] कुलीन ; (पव ६४)। °**णाम** न [°**नामन्**] कुल के अनुसार किया जाना नाम ; (अणु)। °**तंतु** पुं [°**तन्तु**] कुल-संतान, कुल-संतति ; (वव ६)। °**तिलग** वि [°**तिलक**] कुल में श्रेष्ठ; (भग ११,११)। °**त्थ**

वि [°स्थ] कुलीन, खानदान वंश का; (णाया १, ५)। °त्थेर पुं [°स्थविर] श्रेष्ठ साधु ; (पंचू)। °दिणयर पुं [°दिनकर] कुल में श्रेष्ठ ; (कप्प)। °दीव पुं [°दीप] कुल-प्रकाशक, कुल में श्रेष्ठ; (कप्प)। °देव पुं [°देव] गोत्र-देवता ; (काल)। °देवया स्त्री [°देवता] गोत्र-देवता ; (सुपा ५६७)। °देवी स्त्री [°देवी] गोत्र-देवी; (सुपा ६०२)। °धम्म पुं [°धर्म] कुलाचार; (ठा१०)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष; (सम ६६; सुपा ४३)। °पुत्त पुं [°पुत्र] वंश-रक्षक पुत्र ; (उत १)। °बालिया स्त्री [°बालिका] कुलीन कन्या ; (सुर १,४३ ; हेका ३०१)। °भूसण न [°भूषण] १ वंश को दीपाने वाला, २ एक केवली भगवान् ; (पउम ३६, १२२)। °मय पुं [°मद] कुल का अभिमान ; (ठा १०)। °मयहरिया, °महत्तरिया स्त्री [°महत्तरिका] कुल में प्रधान स्त्री, कुटुम्ब की मुखिया ; (सुपा ७६; आवम)। °य देखो °ज ; (सुपा ५६८)। °रोग पुं [°रोग] कुल व्यापक रोग ; (जं २)। °वइ पुं [°पति] तापसों का मुखिया, प्रधान संन्यासी ; (सुपा १६०; उप ३१)। °वंस पुं [°वंश] कुल रूप वंश, वंश ; (भग ११, १०)। °वंस पुं [°वश्य] कुल में उत्पन्न, वंश में संजात ; (भग ६,३३)। °वडिंसय पुं [°ावतंसक] कुल-भूषण, कुल-दीपक; (कप्प)। °वहू स्त्री [°वधू] कुलीन स्त्री, कुलाङ्गना ; (आव ५ ; पि ३८७)। °संपण्ण वि [°संपन्न] कुलीन, खानदान कुल का ; (औप)। °समय पुं [°समय] कुलाचार ; (सूअ १, १, १)। °सेल पुं [°शैल] कुल-पर्वत ; (सुपा ६०० ; सं ११६)। °सेलया स्त्री [°शैलजा] कुल पर्वत से निकली हुई नदी ; "कुलसेलयावि सरिया नूणं नीययरमणुसरइ" (सुपा ६००)। °हर न [°गृह] पितृ-गृह, पिता का घर ; (गा १२१ ; सुपा ३६४; सं ६,५३)। °ाजीव वि [°ाजीव] अपने कुल की बड़ाई बतला कर आजीविका प्राप्त करने वाला; (ठा ५,१)। °ाय न [°ाय] पक्षी का घर, नीड़ ; (पाअ)। °ायार पुं [°ाचार] कुलाचार वंश-परम्परा से चला आता रिवाज; (वव १)। °ारिय पुं [°ार्य] पितृ-पक्ष की अपेक्षा से आर्य ; (ठा३, १)। °ालय वि [°ालय] गृहस्थों के घर भीख माँगने वाला ; (सूअ २, ६)।

कुलंकर पुं [**कुलङ्कर**] इस नाम का एक राजा ; (पउम ८२, ३६)।

कुलंप पुं [**कुलम्प**] इस नाम का एक अनार्य देश; २ उसमें रहने वाली जाति ; (सूअ २, २)।

कुलकुल देखो **कुरकुर**। कुलकुलइ ; (भवि)।

कुलक्ख पुं [**कुलक्ष**] १ एक म्लेच्छ देश ; २ उसमें रहने वाली जाति ; (पण्ह १, १ ; इक)।

कुलडा स्त्री [**कुलटा**] व्यभिचारिणी स्त्री, पुंश्चली ; (सुपा ३८४)।

कुलत्थ पुंस्त्री [**कुलत्थ**] अन्न-विशेष, कुलथी ; (ठा ५, ३ ; णाया १,५)। स्त्री—°त्था ; (श्रा १८)।

कुलफंसण पुं [**दे**] कुल-कलङ्क, कुल का दाग, कुल की अपकीर्ति ; (दे २, ४२ ; भवि)।

कुलल पुं [**कुलल**] १ पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)। २ गृद्ध पक्षी ; (उत १४)। ३ कुरर पक्षी ; (सूअ १,११)। ४ मार्जार, बिड़ाल ; "जहा कुक्कुडपायस्स णिच्चं कुललओ भयं" (दस ४)।

कुलव देखो **कुडव** ; (जो २)।

कुलसंतइ स्त्री [**दे**] चुल्ली, चुल्हा ; (दे २, ३६)।

कुलाण देखो **कुणाल** ; (राज)।

कुलाल पुं [**कुलाल**] कुम्भकार, कुम्हार ; (पाअ ; गउड)।

कुलाल पुं [**कुलाट**] १ मार्जार, बिलाड़ ; २ ब्राह्मण, विप्र ; (सूअ २, ६)।

कुलिंगाल पुं [**कुलाङ्गार**] कुल में कलंक लगाने वाला, दुराचारी ; (ठा ४, १—पत्र १८५)।

कुलिक } पुं [**कुलिक**] १ ज्योतिः-शास्त्र में प्रसिद्ध एक
कुलिय } कुयोग ; (गण १८)। २ न. एक प्रकार का हल ; (पण्ह १, १)।

कुलिय न [**कुड्य**] १ भींत, भित्ति ; (सूअ १,२,१)। २ मिट्टी की बनाई हुई भींत; (बृह २ ; कस)।

कुलिया स्त्री [**कुलिका**] भींत, कुड्य ; (बृह २)।

कुलिर पुं [**कुलिर**] मेष वगैरः बारह राशि में चतुर्थ राशि; (पउम १७, १०८)।

कुलिव्वय पुं [**कुटिव्रत**] परिव्राजक का एक भेद, तापस-विशेष, घर में ही रहकर क्रोधादि का विजय करने वाला; (औप)।

कुलिस पुंन [**कुलिश**] वज्र, इन्द्र का मुख्य आयुध; (पाअ ; उप ३२० टी)। °णिणाय पुं [°निनाद] रावण का इस नाम का एक सुभट ; (पउम ५६, २६)। °मज्झ न [°मध्य] एक प्रकार की तपश्चर्या ; (पउम २२, २४)।

कुलीकोस पुं [**कुटीक्रोश**] पक्षि-विशेष; (पगह १,१—पत्र ८) ।

कुलीण वि [**कुलीन**] उत्तम कुल में उत्पन्न; (प्रासू ७१) ।

कुलीर पुं [**कुलीर**] जन्तु-विशेष ; (पाअ ; दे २,४१)।

कुलुंच सक [**दह्, म्लै**] १ जलाना । २ म्लान करना । संकृ— "मालइकुसुमाइं **कुलुंचिऊण** मा जाणि णिव्वुओ सिसिरो" (गा ४२६) ।

कुलुक्किय वि [**दे**] १ जला हुआ; "विरहदवग्गिकुलुक्किय-कायहो" (भवि) ।

कुल्ल पुं [**दे**] १ ग्रीवा, कण्ठ; २ वि. असमर्थ, अशक्त; ३ छिन्न-पुच्छ, जिसका पूँछ कट गया हो वह; (दे २,६१) ।

कुल्ल अक [**कूर्द्**] कूदना । वकृ—"माराईरक्खगाण बज्झं मुक्कबुक्कारपाइक्क**कुल्लंत**वग्गंतपेणामुहं" (पउम ५३, ७६) ।

कुल्लउर न [**कुल्यपुर**] नगर विशेष ; (संथा) ।

कुल्लड न [**दे**] १ चुल्ली, चुल्हा; (दे २,६३) । २ छोटा पात्र, पुड़वा; (दे २,६३; पाअ) ।

कुल्लरिअ पुं [**दे**] कान्दविक, हलवाई, मीठाई बनाने वाला; (दे २,४१) ।

कुल्लरिया स्त्री [**दे**] हलवाई की दुकान; (आवम) ।

कुल्ला स्त्री [**कुल्या**] १ जल की नीक, सारिणी; (कुमा; हे २,७६) । २ नदी, कृत्रिम नदी; (कप्पू) ।

कुल्लाग पुं [**कुल्याक**] संनिवेश-विशेष, मगध देश का एक गाँव; (कप्प) ।

कुल्लुडिया स्त्री[**कुल्लुडिका**] घटिका, घड़ी; (सूअ१,४,२)।

कुल्हरिअ [**दे**] देखा **कुल्लरिअ** ; (महा) ।

कुल्ह पुं [**दे**] शृगाल, सियार ; (दे २,३४) ।

कुवणय न [**दे**] लकुट, यष्टि, लकड़ी ; (राज) ।

कुवलय न [**कुवलय**]१ नीलोत्पल, हरा रंग का कमल ; (पाअ) । २ चन्द्र-विकासी कमल ; (श्रा २७) । ३ कमल, पद्म ; (गा ५) ।

कुविंद पुं [**कुविन्द**] तन्तुवाय, कपड़ा बुनने वाला ; (सुपा १८८)। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] वल्ली-विशेष ; (पगण १- पत्र ३३) ।

कुविय वि [**कुपित**] क्रुद्ध, जिसको गुस्सा हुआ हो वह ; (पगह १, १ ; सुर २, ५; हेका ७३ ; प्रासू ६४) ।

कुविय देखो **कुप्प**=कुप्य; (पगह१,५; सुपा४०६) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] बिछौना आदि गृहोपकरण रखने की कुटिया, घर का वह भाग जिसमें गृहोपकरण रक्खे जाते हैं ; (पगह १,४—पत्र १३३) ।

कुवेणी स्त्री [**कुवेणी**] शस्त्र विशेष, एक जात का हथियार; (पगह १,३ —पत्र ४४) ।

कुवेर देखो **कुबेर** ; (महा) ।

कुव्व सक [**कृ, कुर्व्**] करना, बनाना । कुव्वइ ; (भग)। भूका—कुव्वित्था ; (पि ५१७) । वकृ—**कुव्वंत, कुव्वमाण** ; (आचा १५ भा ; णाया १,६) ।

कुस पुं न [**कुश**] १ तृण-विशेष, दर्भ, डाभ, काश ; (विपा १,६ ; निचू १) । २ पुं. दाशरथी राम के एक पुत्र का नाम ; (पउम १००, २) । °**ग्ग** न [°**ाग्र**] दर्भ का अग्र भाग जो अत्यन्त तीक्ष्ण होता है ; (उत ७) । °**ग्गनयर** न [°**ाग्रनगर**] नगर-विशेष, बिहार का एक नगर, राजगृह, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है ; (पउम २, ६८)। °**ग्गपुर** न [°**ाग्रपुर**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (सुर १, ८१) । °**ट्ट** पुं [°**ावर्त्त**] आर्य देश-विशेष ; (सत ६७ टी) । °**ट्ट** पुं [°**ार्त**] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी शौर्यपुर था ; (इक) । °**त्त** न [°**क्त, ाक्त**] आस्तरण-विशेष, एक प्रकार का बिछौना ; (णाया १, १—पत्र १३) । °**त्थलपुर** न [°**स्थलपुर**] नगर-विशेष ; (पउम २१, ७६) । °**मट्टिया** स्त्री [°**मृत्तिका**] डाभ के साथ कुटी जाती मिट्टी; (निचू १८) । °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष ; (अणु) ।

कुसण न [**दे**] तीमन, आर्द्र करना ; (दे २, ३५) ।

कुसल वि [**कुशल**] १ निपुण, चतुर, दक्ष, अभिज्ञ ; (आचा; णाया १, २) । २ न. सुख, हित ; (राय) । ३ पुण्य ; (पंचा ६) ।

कुसला स्त्री [**कुशला**] नगरी-विशेष, विनीता, अयोध्या ; (आवम) ।

कुसी स्त्री [**कुशी**] लोहे का बना हुआ एक हथियार ; (दे ८, ५) ।

कुसुंभ पुंन [**कुसुम्भ**] १ वृक्ष-विशेष, कसुम, करें ; (ठा ८ —पत्र ४०५) । २ न. कसुम का पुष्प, जिसका रंग बनता है ; (जं २) । ३ रंग-विशेष ; (श्रा १२) ।

कुसुंभिअ वि [**कुसुम्भित**] कुसुम्भ रंग वाला ; (श्रा१२) ।

कुसुंभिल पुं [**दे**] पिशुन, दुर्जन, चुगलीखोर; (दे२,४०) ।

कुसुंभी स्त्री [**कुसुम्भी**] वृक्ष-विशेष, कसुम का पेड़; (पाअ)।

कुसुम न [**कुसुम**] १ पुष्प, फूल; (पाअ; प्रासू ३४)। २ पुं. इस नाम का भगवान् पद्मप्रभ का शासनाधिष्ठायक यक्ष; (संति ७)। °**केउ** पुं [°**केतु**] अरुणवर द्वीप का अधिष्ठायक देव; (दीव)। °**चाय**, °**चाव** पुं [°**चाप**] कामदेव, मकरध्वज; (सुपा ५६;५३०; महा)। °**ज्झय** पुं [**ध्वज**] वसन्त ऋतु; (कुमा)। °**णयर** न [°**नगर**] नगर-विशेष, पाटलिपुत्र, आजकल जो 'पटना' नाम से प्रसिद्ध है; (आवम)। °**दंत** पुं [°**दन्त**] एक तीर्थङ्कर देव का नाम, इस अवसर्पिणी काल के नववें जिन-देव, श्री सुविधिनाथ; (पउम १, ३)। °**दाम** न [°**दामन्**] फूलों की माला ; (उवा)। °**धणु** न [**धनुष्**] कामदेव ; (कुमा)। °**पुर** न [°**पुर**] देखो ऊपर °**णयर**; (उप ४८६)। °**बाण** पुं [°**बाण**] कामदेव ; (सुर ३, १६२ ; पाअ)। °**रअ** पुं [°**रजस्**] मकरन्द ; (पाअ)। °**रद्द** पुं [°**रद**] देखो **दंत** ; (पउम २०, ५)। °**लया** स्त्री [°**लता**] छन्द-विशेष ; (अजि १५)। °**संभव** पुं [°**संभव**] मधु-मास, चैतमास ; (अणु)। °**सर** पुं [°**शर**] कामदेव ; (सुर ३, १०६)। °**ाअर** पुं [°**ाकर**] इस नाम का एक छन्द ; (पिंग)। °**ाउह** पुं [°**ायुध**] काम, कामदेव ; (स ५३८)। °**ावई** स्त्री [°**ावती**] इस नाम की एक नगरी ; (पउम ५, २६)। °**ासव** पुं [°**ासव**] किञ्जल्क, पराग, पुष्प-रेणु ; (णाया १, १ ; औप)।

कुसुमाल पुं [**दे**] चोर, स्तेन ; (दे २, १०)।

कुसुमालिअ वि [**दे**] शून्य-मनस्क, भ्रान्त-चित ; (दे २, ४२)।

कुसुमिअ वि [**कुसुमित**] पुष्पित, पुष्प-युक्त, खिला हुआ; (णाया १, १ ; पउम ३३ , १४८)।

कुसुमिल्ल वि [**कुसुमवत्**] ऊपर देखो ; (सुपा २२३)।

कुसुर [**दे**] देखो **भसुर**; (हे २, १७४ टि)।

कुसूल पुं [**कुशूल**] कोष्ठ, अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा पात्र ; (पाअ)।

कुह अक [**कुथ्**] सड़ जाना, दुर्गन्धी होना । कुहइ ; (भवि; हे ४, ३६५)।

कुह पुं [**कुह**] वृक्ष, पेड़, गाछ ; "कुहा महीरुहा वच्छा" (दस ७)।

कुह देखो **कहं** ; (गा ५०७ अ)।

कुहंड पुं [**कूष्माण्ड**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (औप)।

कुहंडिया स्त्री [**कूष्माण्डी**] कोहला का गाछ ; (राय)।

कुहग पुं [**कुहक**] कन्द-विशेष ; "लोहिणीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य" (उत्त ३६, ६६ का)।

कुहड वि [**दे**] कुब्ज, कूबड़ा ; (दे २, ३६)।

कुहण पुं [**कुहन**] १ वृक्षों का एक प्रकार, वृक्षों की एक जाति ; "से किं तं कुहणा ? कुहणा अणेगविहा पण्णत्ता" (पण्ण १—पत्र ३५)। २ वनस्पति-विशेष ; ३ भूमि स्फोट ; (पण्ण १—पत्र ३० ; आचा)। ४ देश-विशेष, ५ इस में रहने वाली जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४; इक)।

कुहण वि [**कोपन**] क्रोधी, क्रोध करने वाला ; (पण्ह १, ४—पत्र १००)।

कुहणी स्त्री [**दे**] कूर्पर, हाथ का मध्य-भाग ; (सुपा ४१२)।

कुहय पुंन [**कुहक**] १ वायु-विशेष, दौड़ते हुए अश्व उदर-प्रदेश के समीप उत्पन्न होता एक प्रकार का वायु; "घण-गज्जियहयकुहए" (गच्छ २)। २ इन्द्रजालादि कौतुक ; "अलोलुए अक्कुहए अमाई" (दस ६, २)।

कुहर न [**कुहर**] १ पर्वत का अन्तराल; (णाया १, १—पत्र ६३)। "गेहंव वित्तरहिअं णिज्जरकुहरं व सलिल-सुण्णविअं" (गा ६०७)। २ छिद्र, बिल, विवर ;(पण्ह १, ४ ; पासू २)। ३ पुं.व. देश-विशेष ; (पउम ६८, ६७)।

कुहाड पुं [**कुठार**] कुल्हाड, फरसा; (विपा १, ६ ; पउम ६६, २४ ; स २१४)।

कुहाडी स्त्री [**कुठारी**] कुल्हाड़ी, कुठार; (उप ६६३)।

कुहावणा स्त्री [**कुहना**] १ आश्चर्य-जनक दम्भ-क्रिया, दम्भ-चर्या ; २ लोगों से द्रव्य हासिल करने के लिए किया हुआ कपट-भेष ; (जीत)।

कुहिअ वि [**दे**] लिप्त, पोता हुआ ; (दे २, ३५)।

कुहिअ वि [**कुथित**] १ थोड़ी दुर्गन्ध वाला ; (णाया १, १२—पत्र १७३)। २ सड़ा हुआ; (उप ५६७ टी)। ३ विनष्ट ; (णाया १, १)। °**पूइय** वि [°**पूतिक**] अत्यन्त सड़ा हुआ ; (पण्ह २, ५)।

कुहिणी स्त्री [**दे**] १ कूर्पर, हाथ का मध्य भाग ; २ रथ्या, महल्ला ; (दे २, ६२)।

कुहिल पुंस्त्री [**कुहुमत्**] कोयल पक्षी ; (पिंग)।

कुहु स्त्री [**कुहु**] कोकिल पक्षी का आवाज ; (पिंग)।

कुहुण देखो **कुहण**=कुहन ; (उत्त ३६, का)।

कुहुव्वय पुं [**कुहुव्रत**] कन्द-विशेष ; (उत्त ३६, ६८) ।
कुहेड पुं [**दे**] ओषधी-विशेष, गुरंटक, एक जात का हर्रे का गाछ ; (दे २, ३५) ।
कुहेड } पुं [**कुहेट, °क**] १ चमत्कार उपजाने वाला मन्त्र-
कुहेडअ } तन्त्रादि ज्ञान ; "कुहेडविज्जासवदारजीवी न गच्छई सरणं तम्मि काले" (उत २०, ४५) । २ आभाणक, वक्रोक्ति-विशेष ; 'तेसु न विम्हयइ सयं आहट्टुकुहेडएहिं व" (पव ७३ ; बृह १) ।
कुहेडगा स्त्री [**कुहेटका**] कन्द-विशेष, पिण्डालु ; (पव ४)।
कूअण न [**कूजन**] १ अव्यक्त शब्द ; २ वि. ऐसा आवाज करने वाला ; (ठा ३, ३) ।
कूअणया स्त्री [**कूजनता**] कूजन, अव्यक्त शब्द ; (ठा ३, ३) ।
कूइय न [**कूजित**] अव्यक्त आवाज; (महा ; सुर ३, ४८)।
कूचिया स्त्री [**कूचिका**] बुद्बुद, बुलबुला, पानी का बुलका ; (विसे १४६७) ।
कूज अक [**कूज्**] अव्यक्त शब्द करना । कूजाहि ; (चारु २१) । वकृ—**कूजंत**; (मै २६) ।
कूजिअ न [**कूजित**] अव्यक्त आवाज ; (कुमा; मै २६)।
कूड पुं [**दे. कूट**] पाश, फाँसी, जाल ; (दे २, ४३ ; राय ; उत्त ५ ; सुअ १, ५, २) ।
कूड पुंन [**कूट**] १ असत्य, छल-युक्त, झूठा ; "कूडतुलकूडमाणे" (पडि) । २ भ्रान्ति-जनक वस्तु ; (भग ७, ६) । ३ माया, कपट, छल, दगा, धोखा ; (सुपा ६२७)। ४ नरक ; (उत ५) । ५ पीड़ा-जनक स्थान, दुःखोत्पादक जगह ; (सुअ १, ५, १ ; उत्त ६)। ६ शिखर, टोंच ; (ठा ४, २ ; रंभा) । ७ पर्वत का मध्य भाग ; (जं २) । ८ पाषाणमय यन्त्र-विशेष, मारने का एक प्रकार का यन्त्र ; (भग १५)। ६ समूह, राशि; (निर १, १) । **°कारि** वि [**°कारिन्**] धोखेबाज, दगाखोर ; (सुपा ६२७) । **°ग्गाह** पुं [**°ग्राह**] धोखे से जीवों को फँसाने वाला ; (विपा १, २) । स्त्री—**°ग्गाहणी** ; (विपा १, २) । **°जाल** न [**°जाल**] धोखे की जाल, फाँसी ; (उत्त १६)। **°तुला** स्त्री [**°तुला**] झूठा नाप, बनावटी नाप ; (उवा १) । **°पास** न [**°पाश**] एक प्रकार की मछली पकड़ने की जाल ; (विपा १, ८) । **°प्पओग** पुं [**°प्रयोग**] प्रच्छन्न पाप ; (आव ४) । **°लेह** पुं [**°लेख**] १ जाली लेख, दूसरे के हस्ताक्षर-तुल्य अक्षर बना कर धोखेबाजी करना ; २ दूसरे के नाम से झूठी चिट्ठी वगैरः लिखना ; (पडि ; उवा) । **°वाहि** पुं [**°वाहिन्**] बैल, बलीवर्द; (आव ५)। **°सक्ख** न [**°साक्ष्य**] झूठी गवाही; (पंचा १)। **°सक्खि** वि [**°साक्षिन्**] झूठी साक्षी देने वाला; (श्रा १४)। **°सक्खिज्ज** न [**°साक्ष्य**] झूठी गवाही ; (सुपा ३७५) । **°सामलि** स्त्री [**°शाल्मलि**] १ वृक्ष-विशेष के आकार का एक स्थान, जहां गरुड-जातीय देवों का निवास है; (सम १३; ठा २,३) । २ नरक स्थित वृक्ष-विशेष ; (उत्त २०) । **°ागार** न [**°ागार**] १ शिखर के आकार वाला घर; (ठा ४, २) । २ पर्वत पर बना हुआ घर; (आचा २,३,३) । ३ पर्वत में खुदा हुआ घर ; (निचू १२) । ४ हिंसा-स्थान ; (ठा ४,२) । **°ागारसाला** स्त्री [**°ागारशाला**] षड्यन्त्र वाला घर, षड्यन्त्र करने के लिए बनाया हुआ घर ; (विपा १,३) । **°ाहच्च** न [**°ाहत्य**] पाषाण-मय यन्त्र की तरह मारना, कुचल डालना ; (भग १५) ।
कूडग देखो **कूड** ; (आवम) ।
कूण अक [**कूणय्**] संकुचित होना, संकोच पाना ; (गउड) ।
कूणिअ वि [**कूणित**] संकोच-प्राप्त, संकोचित ; (गउड) ।
कूणिअ वि [**दे**] ईषद् विकसित, थोड़ा खिला हुआ ; (दे २, ४४) ।
कूणिअ पुं [**कूणिक**] राजा श्रेणिक का पुत्र ; (औप) ।
कूय अक [**कूज्**] अव्यक्त आवाज करना । वकृ—**कूयंत, कूयमाण** ; (ओघ २१ भा ; विपा १,७) ।
कूय पुं [**कूप**] १ कूप, कुँआ ; (गउड) । २ घी, तैल वगैरः रखने का पात्र, कुतुप ; (णाया १,१—पत्र ५८ ; औप) । **°दद्दुर** पुं [**°दर्दुर**] १ कूप का मेढ़क ; २ वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो, अल्पज्ञ ; (उप ६४८ टी) । देखो **कूव** ।
कूर वि [**क्रूर**] १ निर्दय, निष्कृप, हिंसक ; (पण्ह १, ३)। २ भयंकर, रौद्र ; (णाया १,८ ; सुअ १, ७) । ३ पुं. रावण का इस नाम का एक सुभट ; (पउम ५६,२६) ।
कूर न [**कूर**] भात, ओदन; (दे २,४३) । **°गडुअ, °गड्डुअ** पुं [**°गडुक**] एक जैन महर्षि ; (आचा ; भाव ८) ।
कूर° अ [**ईषत्**] थोड़ा, अल्प; (हे २,१२६ ; षड्) ।
कूरपिउड न [**दे**] भोजन-विशेष, खाद्य-विशेष ; (आवम) ।
कूरि वि [**क्रूरिन्**] १ निर्दयी, क्रूर चित्त वाला ; २ निर्दय परिवार वाला ; (पण्ह १,३) ।

कूल न [**दे**] सैन्य का पिछला भाग; (दे २,४३ ; से १२, ६२)

कूल न [**कूल**] तट, किनारा ; (पात्र ; णाया १, १६)। °**धमग** पुं [°**ध्मायक**] एक प्रकार का वानप्रस्थ जो किनारे पर खड़ा हो आवाज कर भोजन करता है ; (औप)। °**वालग, °वालय** पुं [°**बालक**] एक जैन मुनि ; (आव; काल)।

कूलंकसा स्त्री [**कूलङ्कषा**] नदी, तीर को तोड़ने वाली नदी ; (वेणी १२०)।

कूव पुंन [**दे**] १ चुराई चीज की खोज में जाना ; (दे २, ६२ ; पात्र)। २ चुराई चीज को छुड़ाने वाला, छीनी हुई चीज को लड़ाई वगैरः कर वापिस लेने वाला ; "तए णं सा दोवदी देवी पउमणाभं एवं वयासी—एवं खलु देवा० जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवतीए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे मम प्पियभाउए परिवसति ; तं जइ णं से छण्हं मासाणं ममं कूवं नो हव्वमागच्छइ, तए णं अहं देवा० जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि" (णाया १, १६—पत्र २१५)। "दोवईए कूवग्गाहा" (उप ६४८ टी; दे ६, ६२)।

कूव / **कूवग** / **कूवय** पुं [**कूप,°क**] १ कूप, कुँआ, गर्त; (प्रासू ४५)। २ स्नेह-पात्र, कुतुप; (वज्जा ७२; उप पृ ४१२)। ३ जहाज का मध्य स्तम्भ, जहाँ पर सढ बाँधा जाता है ; (औप; णाया १,८)। °**तुला** स्त्री [°**तुला**] कूपतुला, ढेंकुवा ; (दे १, ६३ ; ८७) । °**मंडुक्क** पुं [°**मण्डूक**] १ कूप का मेढ़क; २ अल्पज्ञ मनुष्य, जो अपना घर छोड़ बाहर न जाता हो ; (निचू १)।

कूवय पुं [**कूपक**] देखो **कूव**=कूप ; (रयण ३२)। स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि ; (अंत ३)।

कूवर पुंन [**कूवर**] १ जहाज का एक अवयव, जहाज का मुख-भाग ; "संचुण्णियकट्ठकूवरा" (णाया १, ६—पत्र १५७)। २ रथ या गाड़ी वगैरः का एक अवयव, युगन्धर ; (से १२, ८४)।

कूवल न [**दे**] जघन-वस्त्र ; (दे २, ४३)।

कूविय न [**कूजित**] अव्यक्त शब्द ; "तह कहवि कुणइ सो सुरयकूवियं तप्पुरो जेण" (सुपा ५०८)।

कूविय पुं [**कूपिक**] इस नाम का एक संनिवेश—गाँव ; (आवम)।

कूविय वि [**दे**] मोष-व्यावर्तक, चुरायी हुई चीज की खोज कर उसे लेने वाला; (णाया १, १८—पत्र २३६)। २ चोर की खोज करने वाला ; (णाया १, १)।

कूविया स्त्री [**कूपिका**] १ छोटा कूप ; (उप ७२८ टी)। २ छोटा स्नेह-पात्र ; (राज)।

कूवी स्त्री [**कूपी**] ऊपर देखो ; "एयाओ अमयकूवीओ" (उप ७२८ टी)।

कूसार पुं [**दे**] गर्ताकार, गर्त जैसा स्थान, खड्डा ; "कूसारखलंतपओ" (दे २,४४ ; पात्र)।

कूहंड पुं [**कूष्माण्ड**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १,४)।

के सक [**क्री**] किनना, खरीदना । केइ, केअइ ; (षड्)।

के° वि [**कियत्**] कितना ? °**चिरेण** अ [°**चिरेण**] कितने समय में ? (अंत २४)। °**च्चिरं** अ [°**च्चिरं**] कितने समय तक ? (पि १४६)। °**च्चिरेण** देखो °**चिरेण** ; (पि १४६)। °**दूर** न [°**दूर**] कितना दूर ? "केदूरे सा पुरी लंका ?" (पउम ४८, ४७)। °**महालय** वि [°**महालय**] कितना बड़ा ? (णाया १,८)। °**महालिय** वि [°**महत्**] कितना बड़ा ? (पण्ण २१)। °**महिड्ढिय** वि [°**महर्द्धिक**] कितनी बड़ी ऋद्धि वाला ; (पि १४६)।

केअइ पुं [**केकय**] देश-विशेष, जिसका आधा भाग आर्य और आधा भाग अनार्य है, सिन्धु देश की सीमा पर का देश ; (इक)। "केयइअद्धं च आरियं भणियं" (पण्ण १ ; सत्त ६७ टी)।

केअई स्त्री [**केतकी**] वृक्ष-विशेष, केवड़ा का वृक्ष ; (कुमा; दे ८, २५)।

केअग / **केअय** पुं [**केतक**] १ वृक्ष-विशेष, केवड़ा का गाछ, केतकी ; (गउड)। २ न. केतकी-पुष्प, केवड़ा का फूल ; (गउड)। ३ चिन्ह, निशान; (टा १०)।

केअल देखो **केवल** ; (अभि २६)।

केअव देखो **कइअव**=कैतव ; "जं केअवेण पिम्मं" (गा७४४)।

केआ स्त्री [**दे**] रज्जु, रस्सी ; (दे २, ४४ ; भग १३,६)।

केआर पुं [**केदार**] १ क्षेत्र, खेत ; (सुर २, ७८)। २ आलवाल, क्यारी ; (पात्र ; गा ६६०)।

केआरवाण पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, पलाश का पेड़; (दे २,४५)।

केआरिआ स्त्री [**केदारिका**] घास वाली जमीन. गोचर-भूमि ; (कप्पू)।

केउ पुं [**केतु**] १ ध्वज, पताका ; (सुपा २२६)। २ ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २० ; गउड)। ३ चिन्ह, निशान ; (औप)। ४ तुला-सूत्र, रूई का सूता ; (गउड)। °**खेत्त** न [°**क्षेत्र**] मेघ-वृष्टि से ही जिसमें अन्न पैदा हो सकता हो ऐसा क्षेत्र-विशेष ; (आव ६)। °**मई** स्त्री [°**मती**] किन्नरेन्द्र और किंपुरुषेन्द्र की अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष ; (भग १०, ५ ; णाया २)। °**माल** न [°**माल**] वैताढ्य पर्वत पर स्थित इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक)।

केउ पुं [**दे**] कन्द, काँदा ; (दे २, ४४)।

केउग } पुं [**केतुक**] पाताल-कलश विशेष ; (सम ७१ ;
केउय } ठा ४, २—पत्र २२६)।

केऊर पुंन [**केयूर**] १ हाथ का आभूषण-विशेष, अङ्गद, बाजूबन्द ; (पाअ ; भग ६, ३३)। २ पुं. दक्षिण समुद्र का पाताल-कलश ; (पव २७२)।

केऊव पुं [**केयूप**] दक्षिण समुद्र का एक पाताल-कलश ; (इक)।

केंकाय अक [**केङ्काय्**] 'कें कें' आवाज करना। वकृ—"पेच्छइ तत्रो जडागिं **केंकायंतं** महीपडियं" (पउम ४४, ५४)।

केंसुअ देखो **किंसुअ** (कुमा)।

केकई स्त्री [**केकयी**] १ राजा दशरथ की एक रानी, केकय देश के राजा को कन्या ; (पउम २२, १०८ ; उप पृ ३७)। २ आठवें वासुदेव की माता ; (सम १५२)। ३ अपर-विदेह के विभीषण-वासुदेव की माता ; (आवम)।

केकय पुं [**केकय**] १ देश-विशेष, यह देश प्राचीन वाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर तथा सिंधु देश की सीमा पर स्थित है ; २ इस देश का रहने वाला ; (पगह १, १)। ३ केकय देश का राजा ; (पउम २२, १०८)।

केकसिया स्त्री [**कैकसिका**] रावण की माता का नाम ; (पउम ७, ५४)।

केका स्त्री [**केका**] मयूर-शब्द। °**रव** पुं [°**रव**] मयूर की आवाज, मयूर-वाणी ; (णाया १, १—पत्र २५)।

केकाइय न [**केकायित**] मयूर का शब्द ; (सुपा ७६)।

केक्कई देखो **केकई**; (पउम ७६, २६)।

केक्कसी स्त्री [**कैकसी**] रावण की माता ; (पउम १०३, ११४)।

केक्काइय देखो **केकाइय** ; (णाया १, ३—पत्र ६५)

केगई देखो **केकई** ; (पउम १, ६४ ; २०, १८४)।

केगाइय देखो **केकाइय** ; (राज)।

केज्ज वि [**क्रेय**] बेचने की चीज ; (ठा ६)।

केढ } पुं [**कैटभ**] १ इस नाम का एक प्रतिवासुदेव
केढव } राजा ; (पउम ५,१५६)। २ दैत्य-विशेष ; (हे १,२४० ; कुमा)। °**रिउ** पुं [°**रिपु**] श्रीकृष्ण, नारायण ; (कुमा)।

केत्तिअ } वि [**कियत्**] कितना ? (हे २, १५७ ; कुमा ;
केत्तिल } षड् ; महा)।

केत्तुल (अप) ऊपर देखो; (कुमा ; षड् ; हे ४,४०८)।

केत्थु (अप) अ [**कुत्र**] कहां, किस जगह ? (हे ४,४०५)।

केद्दह देखो **केत्तिअ** ; (हे २,१५७ ; प्राप्र)।

केम } (अप) देखो **कहं** ; (षड् ; हे ४, ४०१ ;
केम्व } ४१८)।

केय न [**केत**] १ गृह, घर; २ चिह्न, निशानी ; (पव ४)।

केयण न [**केतन**] १ वक्र वस्तु, टेढ़ी चीज ; २ चंगेरी का हाथा ; (ठा ४, २—पत्र २१८)। ३ संकेत, संकेत-स्थान ; (वव ४)। ४ धनुष की मूठ ; (उत्त ६)। ५ मछली पकड़ने की जाल ; (सूत्र १, ३, १)। ६ स्थान, जगह ; (आचा)।

केयय देखो **केकय**; (सुपा १४२)।

केर } वि [**दे. संबन्धिन्**] संबन्धी वस्तु, संबन्धी चीज;
केरय } (स्वप्न ५१ ; हे ४, ३५६ ; ३७३ ; प्राप्र ; भवि)।

केरव न [**कैरव**] १ कुमुद, सफेद कमल ; (पाअ ; सुपा ४६)। २ कैतव, कपट ; (हे १, १५२)।

केरिच्छ वि [**कीदृक्ष**] कैसा, किस तरह का ? (हे १, १०५ ; प्राप्र ; काल)।

केरिस वि [**कीदृश**] कैसा, किस तरह का ? (प्रामा)।

केरी स्त्री [**क्रकटी**] वृक्ष-विशेष, करीर का गाछ ; "निंबंब-बोरिकेरि—" (उप १०३१ टी)।

केल देखो **कयल**=कदल ; (हे १, १६७)।

केलाइय वि [**समारचित**] साफसुफ किया हुआ ; (कुमा)।

केलाय सक [**समा+रचय्**] समारचन करना, साफ कर ठीक करना। केलायइ ; (हे ४, ६५)।

केलास पुं [**कैलास**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पर्वत-विशेष ; (से ६, ७३ ; गउड ; कुमा)। २ इस नाम का एक नाग-राज ; (इक)। ३ इस नाग-राज का आवास-पर्वत;

(ठा ४, २)। ५ मिट्टी का एक तरह का पात्र ; (निर १, ३)। देखो **कइलास**।

केलि देखो **कयलि** ; (कुमा)।

केलि } स्त्री [**केलि, °ली**] १ क्रीड़ा, खेल, गम्मत ; (कुमा;
केली } पाअ ; कप्पू)। २ परिहास, हाँसी, ठट्ठा ; (पाअ ; औप)। ३ काम-क्रीड़ा ; (कप्पू ; औप)। **°आर** वि [**°कार**] क्रीड़ा करने वाला, विनोदी ; (कप्पू)। **°काणण** न [**°कानन**] क्रीड़ोद्यान; (कप्पू)। **°किल, °गिल** वि [**°किल**] १ विनोदी, क्रीड़ा-प्रिय ; (सुपा ३१४)। २ व्यन्तर-जातीय देव-विशेष ; (सुपा ३२०)। ३ स्थान-विशेष ; (पउम ५५, १७)। **°भवण** न [**°भवन**] क्रीड़ा-गृह, विलास-घर ; (कप्पू)। **°विमाण** न [**°विमान**] विलास-महल ; (कप्पू)। **°सअण** न [**°शयन**] काम-शय्या ; (कप्पू)। **°सेज्जा** स्त्री [**°शय्या**] काम-शय्या; (कप्पू)।

केली देखो **कयली** ; (हे १, १२०)।

केली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (दे २, ४४)।

केलीगिल वि [**केलीकिल**] केलीकिल स्थान में उत्पन्न; (पउम ५५, १७)।

केव° देखो **के°** ; (भग ; पण्ण १७—पत्र ५४५ ; विसे २८६१)।

केवँ (अप) देखो **कहं** ; (कुमा)।

केवइय वि [**कियत्**] कितना ? (सम १३४ ; विसे ६४६ टी)।

केवट्ट पुं [**कैवर्त्त**] धीवर, मच्छीमार ; (पाअ ; स २५८ ; हे २, ३०)।

केवड (अप) देखो **केत्तिअ** ; (हे ४, ४०८ ; कुमा)।

केवल वि [**केवल**] १ अकेला, असहाय ; (ठा २, १ ; औप)। २ अनुपम, अद्वितीय ; (भग ६, ३३)। ३ शुद्ध, अन्य वस्तु से अ-मिश्रित; (दस ४)। ४ संपूर्ण, परिपूर्ण ; (निर १, १)। ५ अनन्त, अन्त-रहित ; (विसे ८४)। ६ न. ज्ञान-विशेष, सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, भूत, भावि वगैरः सर्व वस्तुओं का ज्ञान, सर्वज्ञता; (विसे ८२७)। **°कप्प** वि [**°कल्प**] परिपूर्ण, संपूर्ण ; (ठा ३, ४)। **°णाण** न [**°ज्ञान**] सर्व-श्रेष्ठ ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान ; (ठा २, १)। **°णाणि, °नाणि** वि [**°ज्ञानिन्**] १ केवल-ज्ञान वाला, सर्वज्ञ; (कप्प; औप)। २ पुं. इस नाम के एक अर्हन् देव, अतीत उत्सर्पिणी-काल के प्रथम तीर्थङ्कर ; (पव ६)। **°ण्णाण, °नाण, °न्नाण** देखो **°णाण** ; (विसे ८२६ ; ८२६ ; ८२३)। **°दंसण** न [**°दर्शन**] परिपूर्ण सामान्य बोध ; (कम्म ४, १२)।

केवलं अ [**केवलम्**] केवल, फक्त, मात्र ; (स्वप्न ६२; ६३; महा)।

केवलाअ सक [**समा+रभ्**] आरम्भ करना, शुरू करना। केवलाअइ ; (षड्)।

केवलि वि [**केवलिन्**] केवल ज्ञान वाला, सर्वज्ञ ; (भग)। **°पक्खिय** वि [**पाक्षिक**] १ स्वयंबुद्ध; २ . जिनदेव, तीर्थकर ; (भग ६, ३१)।

केवलिअ वि [**केवलिक**] १ केवलज्ञान वाला ; (भग)। २ परिपूर्ण, संपूर्ण ; " सामाइयं केवलियं पसत्थं " (विसे २६८१)।

केवलिअ वि [**कैवलिक**] १ केवल ज्ञान से संबन्ध रखने वाला ; (दं १७)। २ केवलि-प्रोक्त ; (सूअ १,१४)। ३ केवल-ज्ञानि-संबन्धी; (ठा ४, २)। ४ न. केवल ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान ; (आव ४)।

केवलिअ न [**कैवल्य**] केवल ज्ञान ; " केवलिए संपत्ते " (सत्त ६७ टी ; विसे ११८०)।

केस पुं [**केश**] केश, बाल ; (उप ७६८ टी ; प्रयौ २६)। **°पुर** न [**°पुर**] वैताढ्य पर स्थित एक विद्याधर-नगर ; (इक)। **°लोअ** पुं [**°लोच**] केशों का उन्मूलन ; (भग ; पण्ह २, ४)। **°वाणिज्ज** न [**°वाणिज्य**] केश वाले जीवों का व्यापार ; (भग ८, ५)। **°हत्थ, °हत्थय** पुं [**°हस्त, °क**] केश-पाश, समारचित केश, संयत बाल ; (कप्प ; पाअ)।

केस देखो **किलेस** ; (उप ७६८ टी ; धम्म २२)।

केसर पुं [**कवीश्वर**] उत्तम कवि, श्रेष्ठ कवि ; (उप ७२८ टी)।

केसर पुंन [**केसर**] १ पुष्प-रेणु, किंजल्क ; (से १, ५० ; दे ६, १३)। २ सिंह वगैरः के स्कन्ध का बाल, केसरा ; (से १, ५० ; सुपा २१५)। ३ पुं. बकुल वृक्ष ; (कप्पू ; गउड ; पाअ)। ४ न. इस नाम का एक उद्यान, काम्पिल्य नगर का एक उपवन ; (उत्त १७)। ५ फल-विशेष ; (राज)। ६ सुवर्ण, सोना ; ७ छन्द-विशेष ; (हे १, १४६)। ८ पुष्प-विशेष ; (गउड ११२२)।

केसरा स्त्री [**केसरा**] १ सिंह वगैरः के स्कन्ध पर के बालों की सटा ; "केसरा य सीहाणं" (प्रासू ५१ ; गउड ; प्रामा)।

केसरि पुं [**केसरिन्**] १ सिंह, वनराज, कण्ठीरव ; (उप ७२८ टी ; से ८, ६४ ; पण्ह १, ४)। २ द्रह-विशेष, नीलवन्त पर्वत पर स्थित एक ह्रद ; (सम १०४)। ३ नृप-विशेष, भरत-क्षेत्र के चतुर्थ प्रतिवासुदेव ; (सम १५४)। °**द्दह** पुं [°**द्रह**] द्रह-विशेष ; (ठा २, ३)।

केसरिआ स्त्री [**केसरिका**] साफ करने का कपड़े का टुकड़ा ; (भग ; विसे २५५२ टी)।

केसरिल्ल वि [**केसरवत्**] केसर वाला ; (गउड)।

केसरी स्त्री [**केसरी**] देखो **केसरिआ** ; " तिदंडकुंडिय-छत्तछलुयंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए " (णाया १, ५—पत्र १०५)।

केसव पुं [**केशव**] १ अर्ध-चक्रवर्ती राजा ; (सम)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव, नारायण; (गउड)।

केसि वि [**क्लेशिन्**] क्लेश-युक्त, क्लिष्ट ; (विसे ३१५४)।

केसि पुं [**केशि**] १ एक जैन मुनि, भगवान् पार्श्वनाथ के शिष्य ; (राय ; भग)। २ असुर-विशेष, अश्व के रूप को धारण करने वाला एक दैत्य, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ; (मुद्रा २६२)।

केसि पुं [**केशिन्**] देखो **केसव** ; (पउम ७५, २०)।

केसिअ वि [**केशिक**] केश वाला, बाल युक्त। स्त्री—°**आ**; (सूअ १, ४, २)।

केसी स्त्री [**केशी**] सातवें वासुदेव की माता ; (पउम २०, १८४)।

°**केसी** स्त्री [°**केशी**] केश वाली स्त्री; "विइण्णकेसी" (उवा)।

केसुअ देखो **किंसुअ** ; (हे १, २९ ; ८६)।

केह (अप) वि [**कीदृश**] कैसा, किस तरह का ? (भवि; षड् कुमा)।

केहिं (अप) अ लिए, वास्ते ; (दे ४, ४२५)।

कैअव न [**कैतव**] कपट, दम्भ ; (हे १, १ ; गा १२४)।

कोअ देखो **कोक** ; (दे २, ४५ टी)।

कोअ देखो **कोव** ; (गउड)।

कोअंड देखो **कोदंड** ; (पाअ)।

कोआस अक [**वि+कस्**] विकसना, खीलना। कोआसइ ; (हे ४, १९५)।

कोआसिय वि [**विकसित**] विकसित, प्रफुल्ल ; (कुमा ; जं २)।

कोइल पुं [**कोकिल**] १ कोयल, पिक ; (पण्ह १, ४ ; उप २३ ; स्वप्न ६१)। २ छन्द का एक भेद ; (पिंग)। °**च्छय** पुं [°**च्छद**] वनस्पति-विशेष, तलकण्टक ; (पण्ण १७—पत्र ५२७)।

कोइला स्त्री [**कोकिला**] स्त्री-कोयल, पिकी ; "कोइला पंचमं सरं" (अणु ; पाअ)।

कोइला स्त्री [**दे**] कोयला, काष्ठ के अंगार; (दे २, ४८)।

कोउआ स्त्री [**दे**] गाइठा का अग्नि, करीषाग्नि ; (दे २, ४८ ; पाअ)।

कोउग } न [**कौतुक**] १ कुतूहल, अपूर्व वस्तु देखने का
कोउय } अभिलाष ; (सुर २, २२६)। २ आश्चर्य, विस्मय ; (वव १)। ३ उत्सव ; (राय)। ४ उत्सुकता, उत्कण्ठा ; (पंचव १)। ५ दृष्टि-दोषादि से रक्षा के लिए किया जाता मषी-तिलक, रक्षा-बन्धनादि प्रयोग ; (राय ; औप ; विपा १, १ ; पण्ह १, २ ; धर्म ३)। ६ सौभाग्य आदि के लिए किया जाता स्नपन, विस्मापन, धूप, होम वगैरः कर्म ; (वव १ ; णाया १, १४)।

कोउहल } देखो **कुऊहल** ; (हे १, ११७ ; १७१ ; २,
कोउहल्ल } ९९ ; कुमा ; प्राप्र)।

कोउहल्लि वि [**कुतूहलिन्**] कुतूहली, कौतुकी, कुतूहल-प्रिय ; (कुमा)।

कोऊहल } देखो **कुऊहल**; (कुमा ; पि ६१)।
कोऊहल्ल }

कोंकण पुं [**कोङ्कण**] देश-विशेष ; (स ४१२)।

कोंकणग पुं [**कोङ्कणक**] १ अनार्य देश-विशेष ; (इक)। २ वि. उस देश में रहने वाला ; (पण्ह १, १ ; विसे १४१२)।

कोंच पुं [**क्रौञ्च**] १ इस नाम का एक अनार्य देश ; (पण्ह १, १)। २ पक्षि-विशेष ; (ठा ७)। ३ द्वीप-विशेष ; (ती ४५)। ४ इस नाम का एक असुर ; (कुमा)। ५ वि. क्रौञ्च देश का निवासी ; (पण्ह १, १)। °**रिउ** पुं [°**रिपु**] कार्तिकेय, स्कन्द; (कुमा)। °**वर** पुं [°**वर**] इस नाम का एक द्वीप; (अणु)। °**वीरग** पुंन [°**वीरक**] एक प्रकार का जहाज ; (बृह १)। देखो **कुंच**।

कोंचिगा स्त्री [**कुञ्चिका**] ताली, कुञ्जी ; (उप १७७)।

कोंचिय वि [**कुञ्चित**] आकुञ्चित, संकुचित ; (पगह १, ४) ।

कोंटलय न [**दे**] १ ज्योतिष-संबन्धी सूचना ; २ शकुनादि निमित्त-संबन्धी सूचना; "पउंजणे कोंटलयस्स" (ओघ २२१ भा) ।

कोंठ देखो **कुंठ** ; (हे १, ११६ पि) ।

कोंड देखो **कुंड** ; (हे १, २०२) ।

कोंड पुं [**कौण्ड, गौड**] देश-विशेष ; (इक) ।

कोंडल देखो **कुंडल** ; (राज) । °**मेत्तग** पुं [°**मित्रक**] एक व्यन्तर देव का नाम ; (बृह ३) ।

कोंडलग पुं [**कुण्डलक**] पक्षि-विशेष ; (औप) ।

कोंडलिआ स्त्री [**दे**] १ श्वापद जन्तु-विशेष, साही, श्वाविद्; २ कीड़ा, कीट ; (दे २, ५०) ।

कोंडिअ पुं [**दे**] ग्राम-निवासी लोगों में फूट करा कर छल से गाँव का मालिक बन बैठने वाला ; (दे २, ४८) ।

कोंडिया देखो **कुंडिया** ; (पगह २, ५) ।

कोंडिण्ण देखो **कोडिन्न** ; (राज) ।

कोंढ देखो **कुंद** ; (हे १, ११६) ।

कोंदुल्लु पुं [**दे**] उलूक, उल्लू, पक्षि-विशेष; (दे २, ४६) ।

कोंत देखो **कुंत**; (पगह १, १ सुर २, २८) ।

कोंती देखो **कुंती** ; (गाया १, १६—पत्त २१३) ।

कोक पुं [**कोक**] १ चक्रवाक पक्षी ; (दे ८, ४३) । २ वृक, भेड़िया ; (इक) ।

कोकंतिय पुंस्त्री [**दे**] जन्तु-विशेष, लोमड़ी, लोखरिया ; (पगह १, १) । स्त्री—°**या**; (गाया १, १—पत्त ६५) ।

कोकणय न [**कोकनद**] १ रक्त कुमुद ; २ रक्त कमल ; (पगण १; स्वप्न ७२) ।

कोकासिय [**दे**] देखो **कोक्कासिय** ; (पगह १, ४—पत्त ७८) ।

कोकुइय देखो **कुक्कुइअ** ; (ठा ६—पत्र ३७१) ।

कोक्क सक [**व्या+हृ**] बुलाना, आह्वान करना । कोक्कइ; (हे १, ७६ ; षड्) । वकृ— **कोक्कंत** ; (कुमा) । संकृ—**कोक्किवि**; (भवि) । प्रयो—कोक्कावइ; (भवि)।

कोक्कास पुं [**कोक्कास**] इस नाम का एक वर्धकि, बढ़ई ; (आचू १) ।

कोक्कासिय [**दे**] देखो **कोआसिअ** ; (दे २, ५०) ।

कोक्किय वि [**व्याहृत**] आहूत, बुलाया हुआ ; (भवि) ।

कोक्कुइय देखो **कुक्कुइअ**; (कस ; औप) ।

कोखुब्भ देखो **खोखुब्भ** । वकृ—**कोखुब्भमाण** ; (पि ३१६) ।

कोच्चप्प न [**दे**] अलीक-हित, झूठी भलाई, दीखावटी हित; (दे २, ४६) ।

कोच्चिय पुंस्त्री [**दे**] शैक्षक, नया शिष्य ; (वव ६) ।

कोच्छ न [**कौत्स**] १ गोत्र-विशेष ; २ पुंस्त्री. कौत्स गोत्र में उत्पन्न ; (ठा ७—पत्र ३६०) ।

कोच्छ वि [**कौक्ष**] १ कुक्षि-संबन्धी, उदर से संबन्ध रखने वाला ; २ न. उदर-प्रदेश ; " गणियायारकणेरुकोत्थ(? च्छ)हत्थी" (गाया १, १—पत्र ६४) ।

कोच्छभास पुं [**दे. कुत्सभाष**] काक, कौआ, वायस ; "न मणी सयसाहस्सो आविज्झइ कोच्छभासस्स" (उव) ।

कोच्छेअय देखो **कुच्छेअय** ; (हे १, १६१ ; कुमा ; षड्)।

कोज्ज देखो **कुज्ज** ; (कप्प) ।

कोज्जप्प न [**दे**] स्त्री-रहस्य; (दे २,४६) ।

कोज्जय देखो **कुज्जय** ; (गाया १,८—पत्र १२५) ।

कोज्जरिअ वि [**दे**] आपूरित, पूर्ण किया हुआ, भरा हुआ; (षड्) ।

कोज्झरिअ वि [**दे**] ऊपर देखो; (दे २, ५०) ।

कोटुंभ पुंन [**दे**] हाथ से आहत जल ; "कोटुंभो जलकरप्फालो" (पाअ) । देखो **कोट्टुंभ** ।

कोट्ट देखो **कुट्ट=कुट्ट्** । कवकृ—**कोट्टिज्जमाण** ; (आवम) । संकृ—**कोट्टिय** ; (जीव ३) ।

कोट्ट न [**दे**] १ नगर, शहर ; (दे २, ४५) । २ कोट, किला, दुर्ग ; (गाया १,८—पत्त१३४; उत्त ३० ; बृह १; सुपा ११८) । °**वाल** पुं [°**पाल**] कोटवाल, नगर-रक्षक ; (सुपा ४१३) ।

कोट्टंतिया स्त्री [**कुट्टयन्तिका**] तिल वगैरः को चूरने का उपकरण ; (गाया १,७—पत्र ११७) ।

कोट्टग पुं [**कोट्टाक**] १ वर्धकि, बढ़ई ; (आचा२, १,२)। २ न. हरे फलों को सूखाने का स्थान-विशेष ; (बृह १) ।

कोट्टण देखो **कुट्टण** ; (उप १७६ ; पगह १, १) ।

कोट्टर देखो **कोडर** ; (महा ; हे ४, ४२२ ; गा ५६३ अ) ।

कोट्टवीर पुं [**कोट्टवीर**] इस नाम का एक मुनि, आचार्य शिवभूति का एक शिष्य ; (विसे २५५२) ।

कोट्टा स्त्री [दे] १ गौरी, पार्वती ; (दे २,३५—१,१७४) । २ गला, गर्दन ; (उप ६६१) ।

कोट्टिंब पुं [दे] द्रोणी, नौका, जहाज ; (दे २,४७) ।

कोट्टिम पुंन [कुट्टिम] १ रत्नमय भूमि ; (णाया १,२) । २ फरस-बंध जमीन, बँधी हुई जमीन ; (जं १) । ३ भूमि-तल ; (सुर ३,१००)। ४ एक या अनेक तला वाला घर; (वव४)। ५ झोंपड़ा, मढ़ी ; ६ रत्न की खान ; ७ अनार का पेड़ ; (हे १,११६ ; प्राप्र) ।

कोट्टिम वि [कृत्रिम] बनावटी, बनाया हुआ, अ-कुदरती ; (पउम ६६,३६) ।

कोट्टिल } पुं [कौट्टिक] मुद्गर, मुगरी, मुगरा ; (राज ; **कोट्टिल्ल** } पा १.६—पत्र ६६ ; ६६) ।

कोट्टी स्त्री [दे] १ दोह, दोहन ; २ विषम स्खलना ; (दे २, ६४) ।

कोट्टुंभ पुंन [दे] हाथ से आहत जल; "कोट्टुंभं करहए तोए" (दे २,४७) ।

कोट्टुम अक [रम्] क्रीड़ा करना, रमण करना । कोट्टुमइ ; (हे ४, १६८) ।

कोट्टुवाणी स्त्री [कोट्टुवाणी] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (कप्प) ।

कोट्ठ देखो **कुट्ठ**=कुष्ठ ; (भग १६, ६ ; णाया १, १७)।

कोट्ठ } देखो **कुट्ठ**=कोष्ठ ; (णाया १, १ ; ठा ३, १ ;
कोट्ठग } पात्र) । ३ आश्रय-विशेष, आवास-विशेष, (ओघ
कोट्ठय } २००; वव १) । ४ अपवरक, कोठरी; (दस ५,१; उप ४८६) । ५ चैत्य-विशेष ; (णाया २,१) । °**ागार** न [°ागार] धान्य भरने का घर ; (औप ; कप्प) । २ भाण्डागार, भण्डार ; (णाया १, १) ।

कोट्ठार पुंन [कोष्ठागार] भाण्डागार, भण्डार; (पउम २, ३)।

कोट्ठि वि [कुष्ठिन] कुष्ठ-रोगी ; (आचा) ।

कोट्ठिया स्त्री [कोष्ठिका] छोटा कोष्ठ, लघु कुशूल ; (उवा) ।

कोट्ठु पुं [क्रोष्टु] शृगाल, सियार ; (षड्) ।

कोडंड देखो **कोदंड** ; (स २५६) ।

कोडंडिय देखो **कोदंडिय** ; (कप्प) ।

कोडंब न [दे] कार्य, काम, काज; (दे २, २) ।

कोडय [दे] देखो **कोडिअ** ; (पात्र) ।

कोडर न [कोटर] गह्वर, वृक्ष का पोला भाग, विवर ; (गा ५६२) ।

कोडल्ल पुं [कोटर] पक्षि-विशेष ; (राज) ।

कोडाकोडि स्त्री [कोटाकोटि] संख्या-विशेष, करोड़ को करोड़ से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (सम १०५ ; कप्प ; उव) ।

कोडाल पुं [कोडाल] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक पुरुष ; २ न. गोत्र विशेष ; (कप्प) ।

कोडि स्त्री [कोटि] १ संख्या विशेष, करोड़, १०००००००; (णाया १,८; सुर १, ६७; ४, ६१)। २ अग्र-भाग, अणी, नोक ; (से १२,२६ ; पात्र) । ३ अंश, विभाग, भाग ; 'नत्थिक्कसो पएसो लोए वालग्गकोडिमित्तोवि'' (पउम ३६ ; ठा ६) । °**कोडि** देखो **कोडाकोडि**; (सुपा २६६) । °**बद्ध** वि [°बद्ध] करोड़ संख्या वाला ; (वव ३) । °**भूमि** स्त्री [°भूमि] एक जैन तीर्थ ; (ती ४३) । °**सिला** स्त्री [°शिला] एक जैन तीर्थ ; (पउम ४८, ६६) । °**सो** अ [°शस्] करोड़ों, अनेक करोड़; (सुपा ४२०)। देखो **कोडी**।

कोडिअ न [दे] १ छोटा मिट्टी का पात्र, लघु शराव ; (दे २,४७) ।२ पुं. पिशुन, दुर्जन, चुगलीखोर ; (षड्) ।

कोडिअ पुं [कोटिक] १ एक जैन मुनि ; (कप्प) । २ एक जैन मुनि-गण ; (कप्प ; ठा ६) ।

कोडिण्ण } न [कौण्डिन्य] १ इस नाम का एक नगर ; **कोडिन्न** } (उप ६४८ टी) । २ वासिष्ठ गोत्र की शाखा रूप एक गोत्र ; (कप्प) । ३ पुं. कौण्डिन्य गोत्र का प्रवर्तक पुरुष; ४ वि. कौण्डिन्य-गोत्रीय; (ठा ७—पत्र ३६०; कप्प) । ५ पुं. एक मुनि, जो शिवभूति का शिष्य था; (विसे २५५२)। ६ महागिरिसूरि का शिष्य, एक जैन मुनि ; (कप्प) । ७ गोतम-स्वामी के पास दीक्षा लेने वाले पाँच सौ तापसों का गुरू ; (उप १४२ टी) ।

कोडिन्ना स्त्री [कौण्डिन्या] कौण्डिन्य-गोत्रीय स्त्री; (कप्प)।

कोडिल्ल पुं [दे] पिशुन, दुर्जन, चुगलीखोर ; (दे २,४० ; षड्) ।

कोडिल्ल देखो **कोट्टिल** ; (राज) ।

कोडिल्ल पुं [कौटिल्य] इस नाम का एक ऋषि, चाणक्य मुनि ; (वव १ ; अणु) ।

कोडिल्लय न [कौटिल्यक] चाणक्य-प्रणीत नीति-शास्त्र ; (अणु) ।

कोडी देखो **कोडि** ; (उव ; ठा ३, १ ; जी ३७)। °**करण** न [°**करण**] विभाग, विभजन ; (पिंड ३०७)। °**णार** न [°**नार**] इस नाम का सोरठ देश का एक नगर; (ती ५६)। °**मातसा** स्त्री [°**मातसा**] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७—पत्र ३६३)। °**वरिस** न [°**वर्ष**] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष ; (इक; पव १७४)। °**वरिसिया** स्त्री [°**वर्षिका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प)। °**सर** पुं [°**श्वर**] करोड़-पति, कोटीश; (सुपा ३)।

कोडीण न [**कोडीन**] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा रूप है ; २ वि. इस गोत्र में उत्पन्न ; (ठा ७—पत्र ३६०)।

कोडुंबि देखो **कुडुंबि** ; (ठा ३, १—पत्र १२५)।

कोडुंबिय पुं [**कौटुम्बिक**] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया; (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का बड़ा आदमी; (पण्ह १,५—पत्र ६४)। ३ वि. कुटुम्ब में उत्पन्न, कुटुम्ब से संबन्ध रखने वाला, कुटुम्ब-संबन्धी ; (महा; जीव ३)।

कोडूसग पुं [**कोदूषक**] अन्न-विशेष, कोद्रव की एक जाति ; (राज)।

कोड्ड [**दे**] देखो **कुड्ड** ; (दे २,३३ ; स ६४१ ; ६४२ ; हे ४, ४२२ ; णाया १, १६—पत्र २२४ ; उप ८६२ ; भवि)।

कोड्डम देखो **कोट्टुम** ; (कुमा)।

कोड्डमिअ न [**रत**] रति-क्रीड़ा-विशेष ; (कुमा)।

कोड्डिय वि [**दे**] कुतुहली, कुतुकी, उत्कण्ठित; (उप ७६८ टी)।

कोड्ड } पुं [**कुष्ठ**] रोग-विशेष, कुष्ठ-रोग; (पि ६६; णाया
कोढ } १, १३ ; श्रा २०)।

कोढि वि [**कुष्ठिन्**] कुष्ठ-रोग से ग्रस्त; कुष्ठ-रोगी ; (आचा)।

कोढिक } वि [**कुष्ठिक**] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-ग्रस्त; (पण्ह २, ५ ;
कोढिय } विपा १,७)।

कोण वि [**दे**] १ काला, श्याम वर्ण वाला ; (दे २, ४५)। २ पुं. लकुट, लकड़ी, यष्टि; (दे २, ४५ ; निचू १ ; पाअ)। ३ बीणा वगैरः बजाने की लकड़ी, वीणा-वादन-दण्ड; (जीव ३)।

कोण } पुंन [**कोण**] कोण, अस्र, घर का एक भाग;
कोणग } (गउड ; दे २, ४५ ; रंभा)।

कोणव पुं [**कौणप**] राक्षस, पिशाच ; (पाअ)।

कोणालग पुं [**कोनालक**] जलचर पक्षि-विशेष ; (पण्ह १,१)।

कोणाली स्त्री [**दे**] गोष्ठी, गोठ; (बृह १)।

कोणिअ } पुं [**कोणिक**] राजा श्रेणिक का पुत्र, नृप-विशेष ;
कोणिग } (अंत; णाया १, १ ; महा ; उव)।

कोणु स्त्री [**दे**] लेखा, रेखा ; (दे २, २६)।

कोण्ण पुं [**दे. कोण**] गृह-कोण, घर का एक भाग ; (दे २, ४५)।

कोतव न [**कौतव**] मूषक के रोम से निष्पन्न सूता ; (राज)।

कोतुहल देखो **कुऊहल** ; (काल)।

कोत्तलंका स्त्री [**दे**] दारू परोसने का भाण्ड, पात्र-विशेष ; (दे २, १४)

कोत्तिअ वि [**कौतुकिक**] कौतूकी, कुतुहली; (गा ६७२)।

कोत्तिअ पुं [**कोत्रिक**] १ भूमि-शयन करने वाला वान-प्रस्थ ; (औप)। २ न. एक प्रकार का मधु ; (ठा ६)।

कोत्थ देखो **कोच्छ**=कौत्स।

कोत्थर न [**दे**] १ विज्ञान ; (दे २, १३)। २ कोटर, गह्वर ; (सुपा २४७ ; निचू १५)।

कोत्थल पुं [**दे**] १ कुशूल, कोष्ठ; (दे २,४८)। २ कोथली, थैला; (स १६२)। °**कारा** स्त्री [°**कारी**] भमरी, कीट-विशेष; (बृह १)।

कोत्थुभ } पुं [**कौस्तुभ**] वासुदेव के वक्षःस्थल का
कोत्थुह } मणि ; (ती १० ; प्राप्र ; महा ; गा १५१ ;
कोथुभ } पण्ह १, ४)।

कोदंड पुं [**कोदण्ड**] धनुष, धनु, कार्मुक, चाप ; (अंत १६)।

कोदंडिम } देखो **कु-दंडिम** ; (जं ३ ; कप्प)।
कोदंडिय }

कोदूसग देखो **कोडूसग** ; (भग ६, ७)।

कोद्दव देखो **कुद्दव** ; (भवि)।

कोद्दाल देखो **कुद्दाल** ; (पण्ह १, १—पत्र २३)।

कोद्दालिया स्त्री [**कुद्दालिका**] छोटा कुदार, कुदारी ; (विपा १, ३)।

कोध पुं [**कोध**] इस नाम का एक राजा; जिसने दाशरथि भरत के साथ जैन दीक्षा ली थी ; (पउम ८५, ४)।

कोप्प देखो **कुप्प**=कुप्। कोप्पइ ; (नाट)।

कोप्प पुं [**दे**] अपराध, गुनाह ; (दे २, ४५)।

कोप्प वि [**कोप्य**] द्वेष्य, अप्रीतिकर ; "अकोप्पजंघजुगला" (पण्ह १, ३)।

कोप्पर पुंन [**कूर्पर**] १ हाथ का मध्य भाग ; (ओघ २६६ भा ; कुमा ; हे १, १२४) । २ नदी का किनारा, तट, तीर ; (ओघ ३०) ।
कोबेरी स्त्री [**कौबेरी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२) ।
कोभग } पुं [**कोभक**] पक्षि-विशेष ; (अंत ; औप) ।
कोभगक }
कोमल वि [**कोमल**] मृदु, सुकुमार ; (जी १० ; पाअ ; कप्पू) ।
कोमार वि [**कौमार**] १ कुमार से संबन्ध रखने वाला, कुमार-संबन्धी ; (विपा १, ७१) । २ कुमारी-संबन्धी ; (पाअ) । ३ कुमारी में उत्पन्न ; (दे १, ८१) । स्त्री—°**रिया,** °**री** ; (भग १५) । °**भिच्च** न [°**भृत्य**] वैद्यक शास्त्र-विशेष, जिसमें बालकों के स्तन-पान-संबन्धी वर्णन है ; (विपा १, ७—पत्र ७५) ।
कोमारी स्त्री [**कौमारी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३७)।
कोमुइया स्त्री [**कौमुदिका**] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी, जो उत्सव की सूचना के समय बजाई जाती थी ; (विसे १४७६ ;) ।
कोमुई स्त्री [**दे**] पूर्णिमा, कोई भी पूर्णिमा ; (दे २, ४८) ।
कोमुई स्त्री [**कौमुदी**] १ शरद् ऋतु की पूर्णिमा ; (दे २, ४८) । २ चन्द्रिका, चाँदनी ; (औप ; धम्म ११ टी) । ३ इस नाम की एक नगरी ; (पउम ३६, १००) । ४ कार्त्तिक की पूर्णिमा ; (राय) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] चन्द्रमा, चाँद ; (धम्म ११ टी) । °**महूसव** पुं [°**महोत्सव**] उत्सव-विशेष ; (पि ३६६) ।
कोमुदिया देखो **कोमुइया** ; (णाया १, ५—पत्र १००) ।
कोमुदी देखो **कोमुई**=कौमुदी ; (णाया १, १ ; २) ।
कोयवग } पुं [**दे**] रूई से भरे हुए कपड़े का बना हुआ
कोयवय } प्रावरण-विशेष ; (णाया १, १७—पत्र २२६) ।
कोयवी स्त्री [**दे**] रूई से भरा हुआ कपड़ा ; (बृह ३) ।
कोरंग पुं [**कोरङ्क**] पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १—पत्र ८)।
कोरंट } पुं [**कोरण्ट,** °**क**] १ वृक्ष-विशेष ; (पाअ) ।
कोरंटग } २ न. इस नाम का भृगुकच्छ (भडौच) शहर का एक उपवन ; (वव १) । ३ कोरण्टक वृक्ष का पुष्प ; (पण्ह १, ४ ; जं १) ।
कोरय } पुंन [**कोरक**] फलोत्पादक मुकुल, फल की कली;
कोरव } (पाअ) । "चत्तारि कोरवा पन्नत्ता" (ठा ४, १—पत्र १८५) ।

कोरव्व पुंस्त्री [**कौरव्य**] १ कुरु-वंश में उत्पन्न ; (सम १५२ ; ठा ६) । २ कौरव्य-गोत्रीय ; ३ पुं. आठवाँ चक्रवर्ती राजा ब्रह्मदत्त ; (जीव ३) ।
कोरव्वीया स्त्री [**कौरवीया**] इस नाम की षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) ।
कोरिंट } देखो **कोरंट** ; (णाया १, १—पत्र १६ ;
कोरिंटय } कप्प ; पउम ४२, ८ ; औप ; उवा) ।
कोरेंट }
कोल पुं [**दे**] ग्रीवा, नोक, गला ; (दे २, ४५) ।
कोल पुं [**क्रोड**] १ सूअर, वराह; (पण्ह १, १—पत्र ७; स १११) । २ उत्सङ्ग, कोला ; "कोलीकय—" (गउड) ।
कोल पुं [**कोल**] १ देश-विशेष ; (पउम ६८, ६६) । २ घुण, काष्ठ-कीट; (सम ३६) । ३ शूकर, वराह, सूअर; (उप ३२० टी ; णाया १, १; कुमा ; पाअ) । ४ मूषिक के आकार का एक जन्तु ; (पण्ह १, १—पत्र ७) । ५ अस्त्र-विशेष ; (धम्म ५) । ६ मनुष्य की एक नीच जाति ; (आचू ४) । ७ बदरी-वृक्ष, बैर का गाछ ; ८ न. बदरी-फल, बैर ; (दस ५, १ ; भग ६, १०) । °**पाग** न [°**पाक**] नगर-विशेष, जहां श्रीऋषभदेव भगवान् का मंदिर है, यह नगर दक्षिण में है ; (ती ४५) । °**पाल** पुं [°**पाल**] देव-विशेष, धरणेन्द्र का लोकपाल ; (ठा ३, १—पत्र १०७) । °**सुणय,** °**सुणह** पुंस्त्री [°**शुनक**] १ बड़ा शूकर, सूअर की एक जाति, जंगली वराह ; (आचा २, १, ५) । २ शिकारी कुत्ता; (पण्ण ११) । स्त्री—°**णिया** ; (पण्ण ११) । °**वास** पुंन [°**वास**] काष्ठ, लकड़ी ; (सम ३६) ।
कोल वि [**कौल**] १ शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी ; २ तान्त्रिक मत से संबन्ध रखने वाला ; "कोलो धम्मो कस्स णो भाइ रम्मो" (कप्पू) । ३ न. बदर-फल-संबन्धी ; (भग ६, १०) । °**चुण्ण** न [°**चूर्ण**] बैर का चूर्ण, बैर का सत्तु; (दस ५, १) । °**ट्ठिय** न [°**अस्थिक**] बैर की गुठिया ; (भग ६, १०) ।
कोलंब पुं [**दे**] पिठर, स्थाली ; (दे २, ४७; पाअ) । २ गृह, घर ; (दे २, ४७) ।
कोलंब पुं [**कोलम्ब**] वृक्ष की शाखा का नमा हुआ अग्र भाग ; (अनु ५) ।
कोलगिणी स्त्री [**कोली, कोलकी**] कोल-जातीय स्त्री ; (आचू ४) ।

कोलघरिय वि [**कौलगृहिक**] कुल-गृह-संबन्धी, पितृ-गृह-संबन्धी, पितृ-गृह से संबन्ध रखने वाला ; (उवा)।

कोलज्जा स्त्री [**दे**] धान्य रखने का एक तरह का गर्त ; (आचा २, १, ७)।

कोलर देखो **कोटर** ; (गा ५६३ अ)।

कोलव न [**कौलव**] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध एक करण; (विसे ३३४८)।

कोलाल वि [**कौलाल**] १ कुम्भकार-संबन्धी ; २ न. मिट्टी का पात्र ; (उवा)।

कोलालिय पुं [**कौलालिक**] मिट्टी का पात्र बेचने वाला; (बृह २)।

कोलाह पुं [**कोलाभ**] साँप की एक जाति ; (पण्ण १)।

कोलाहल पुं [**दे**] पक्षी का आवाज, पक्षि-शब्द ; (दे २, ५०)।

कोलाहल पुं [**कोलाहल**] तुमुल, शोरगुल, रौला, बहुत दूर जाने वाला अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द ; (दे २, ५०; हेका १०५ ; उत्त ६)।

कोलाहलिय वि [**कोलाहलिक**] कोलाहल वाला, शोर-गुल वाला ; (पउम ११७, १६)।

कोलिअ पुं [**दे**] कोली, तन्तुवाय, कपड़ा बुनने वाला ; (दे २,६५ ; णंदि ; पव २ ; उप पृ २१०)। २ जाल का कीड़ा, मकड़ा ; (दे २, २५ ; पाअ ; श्रा २० ; आव ४ ; बृह १)।

कोलित्त न [**दे**] उल्मुक, लूका ; (दे २, ४६)।

कोलीकय वि [**क्रोडीकृत**] स्वीकृत, अंगीकृत ; (गउड)।

कोलीण न [**कौलोन**] १ किंवदन्ती, लोक-वार्ता, जन-श्रुति; (मा ३७)। २ वि. वंश-परंपरागत, कुलक्रम से आयात ; ३ उत्तम कुल में उत्पन्न ; ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी ; (नाट—महावी १३३)।

कोलीर न [**दे**] लाल रंग का एक पदार्थ, कुरुविन्द ; "कोलीररत्तणयणेअं" (दे २, ४६)।

कोलुण्ण न [**कारुण्य**] दया, अनुकम्पा, करुणा; (निचू११)। °**पडिया**, °**वडिया** स्त्री [°**प्रतिज्ञा**] अनुकम्पा की प्रतिज्ञा; (निचू ११)।

कोल्ल पुंन [**दे**] कोयला, जली हुई लकड़ी का टुकड़ा ; (निचू १)।

कोल्लइर न [**कोल्लकिर**] १ वार्धक्य, बुढ़ापन ; (पिंड)। २ नगर-विशेष ; (आव ३)।

कोल्लपाग न [**कोल्लपाक**] दक्षिण देश का एक नगर, जहां श्री ऋषभदेव का मन्दिर है ; (ती ४५)।

कोल्लर पुं [**दे**] पिठर, स्थाली ; (दे २,४७)।

कोल्ला देखो **कुल्ला**; (कुमा)।

कोल्लाग देखो **कुल्लाग** ; (अंत)।

कोल्लापुर न [**कोल्लापुर**] दक्षिण देश का एक नगर ; (ती ३४)।

कोल्लासुर पुं [**कोल्लासुर**] इस नाम का एक दैत्य ; (ती ३४)।

कोल्लुग [**दे**] देखो **कोल्हुअ** ; (वव १; बृह १)।

कोल्हाहल न [**दे**] फल-विशेष, बिम्बी-फल; (दे२,३६)।

कोल्हुअ पुं [**दे**] १ शृगाल, सियार ; (दे २, ६५ ; पाअ ; पउम ७, १७ ; १०५, ४२)। २ कोल्हू, चरखी, ऊख से रस निकालने की कल ; (दे २, ६५ ; महा)।

कोव पुं [**कोप**] क्रोध, गुस्सा ; (विपा १,६ ; प्रासू १७५)।

कोवण वि [**कोपन**] क्रोधी, क्रोध-युक्त; (पाअ; सुपा ३८५ ; सम ३४७ ; स्वप्न ८२)।

कोवासिअ देखो **कोआसिय**; (पाअ)।

कोवि वि [**कोपिन्**] क्रोधी, क्रोध-युक्त ; (सुपा २८१ ; श्रा २०)।

कोविअ वि [**कोविद**] निपुण, विद्वान् , अभिज्ञ; (आचा ; सुपा १३० ; ३६२)।

कोविअ वि [**कोपित**] १ क्रुद्ध किया हुआ। २ दूषित, दोष-युक्त किया हुआ ; "वइरो किर दाहो वायणंति नवि कोवियं वयणं" (उव)।

कोविआ स्त्री [**दे**] शृगाली, स्त्री-सियार ; (दे २, ४६)।

कोविआर पुं [**कोविदार**] वृक्ष-विशेष ; (विक्र ३३)।

कोविणी स्त्री [**कोपिनी**] कोप-युक्त स्त्री ; (श्रा १२)।

कोस पुं [**दे**] १ कुसुम्भ रंग से रक्त वस्त्र ; २ समुद्र, जलधि, सागर ; (दे २, ६५)।

कोस पुं [**क्रोश**] कोस, मार्ग की लम्बाई का परिमाण, दो मील ; (कप्प ; जी ३२)।

कोस पुं [**कोश**, °**ष**] १ खजाना, भण्डार; (णाया १,१३१; पउम ५, २४)। २ तलवार की म्यान ; (सूअ १, ६)। ३ कुड्मल, "कमलकोसव्व" (कुमा)। ४ मुकुल, कली ; (गउड)। ५ गोल, वृत्ताकार; "ता मुहमेलियकर-कोसपिहियपसरंतदंतकरपसरं" (सुपा २७ ; गउड)। ६ दिव्य-भेद, तप्त लोहे का स्पर्श वगैरः शपथ ; "एत्थ अम्हे

कोसक्किसएहिं पच्चाएमो" (स ३२४)। ७ अभिधान-शास्त्र, शब्दार्थ-निरूपक ग्रन्थ, जैसा प्रस्तुत पुस्तक। ८ पुंन. पान-पात्र, चषक ; (पाअ)। ९ न. नगर-विशेष ; "कोसं नाम नयरं" (स १३३)। °पाण न [°पान] सौगन, शपथ ; (गा ४४८)। °हिव पुं [°धिप] खजानची, भंडारी ; (सुपा ७३)।

कोसंब पुं [**कोशाम्र**] फल-वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३१)। °**गंडिया** स्त्री [°**गण्डिका**] खड्ग-विशेष, एक प्रकार की तलवार ; (राज)।

कोसंबिया स्त्री [**कौशाम्बिका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प)।

कोसंबी स्त्री [**कौशाम्बी**] वत्स देश की मुख्य नगरी ; (ठा १० ; विपा १, ५)।

कोसग पुं [**कोशक**] साधुओं का एक चर्म-मय उपकरण, चमड़े की एक प्रकार की थैली ; (धर्म ३)।

कोसट्टइरिआ स्त्री [**दे**] चण्डी, पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी; (दे २, ३५)।

कोसय न [**दे. कोशक**] लघु शराव, छोटा पान-पात्र ; (दे २, ४७; पाअ)।

कोसल न [**कौशल**] कुशलता, निपुणता, चातुरी; (कुमा)।

कोसल न [**दे**] नीवी, नारा, इजारबन्द ; (दे २, ३८)।

कोसल } पुं [**कोसल, °क**] १ देश-विशेष ; (कुमा ;
कोसलग } महा)। २ एक जैन महर्षि, सुकोसल मुनि ; (पउम २२, ४४)। ३ कोसल देश का राजा ; ४ वि. कोशल देश में उत्पन्न ; (ठा ५, २)। ५ °**पुर** न [°**पुर**] अयोध्या नगरी; (आक १)।

कोसला स्त्री [**कोसला**] १ नगरी-विशेष, अयोध्या-नगरी; (पउम २०, २८)। २ अयोध्या-प्रान्त, कोसल-देश ; (भग ७, ६)।

कोसलिअ वि [**कौशलिक**] १ कोसल देश में उत्पन्न, कोसल-देश-संबन्धी ; (भग २०, ८)। २ अयोध्या में उत्पन्न, अयोध्या-संबन्धी ; (जं २)।

कोसलिअ न [**दे.कौशलिक**] प्राभृत, भेंट, उपहार ; (दे २, १२ ; सण ; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसलिआ स्त्री [**दे.कौशलिका**] ऊपर देखो ; (दे २, १२ ; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसल्ल न [**कौशल्य**] निपुणता, चतुराई ; (कुमा ; सुपा १६ ; सुर १०, ८०)।

कोसल्ल न [**दे**] प्राभृत, भेंट, उपहार ; "तं पुरजणकोसल्लं नरवइणा अप्पियं कुमारस्स" (महा)।

कोसल्लया स्त्री [**कौशल्य**] निपुणता, चतुराई; "तह मज्झ-नीइकोसल्लया य लीलाच्छिय इयाणिं" (सुपा ६०३)।

कोसल्ला स्त्री [**कौशल्या**] दाशरथि राम की माता; (उप पृ ३७४)।

कोसल्लिअ न [**दे.कौशलिक**] भेंट, उपहार; (दे २, १२; महा ; सुपा ४१३ ; ५२७ ; सण)।

कोसा स्त्री [**कोशा**] इस नाम की एक प्रसिद्ध वेश्या, जिसके यहां जैन महर्षि श्रीस्थूलभद्र मुनि ने निर्विकार भाव से चातुर्मास किया था ; (विवे ३३)।

कोसिण वि [**कोष्ण**] थोड़ा गरम ; (नाट—वेणी)।

कोसिय न [**कौशिक**] १ मनुष्य का गोत्र विशेष ; (अभि ४१ ; ठा ३६०)। २ वीसवें नक्षत्र का गोत्र; (चंद १०)। ३ पुं. उलूक, घूक, उल्लू ; (पाअ; सार्ध ५६)। ४ साँप-विशेष, चण्डकोशिक-नामक दृष्टि-विष सर्प, जिसको भगवान् श्रीमहावीर ने प्रबोधित किया था ; (आवम)। ५ वृक्ष-विशेष ; ६ इन्द्र ; ७ नकुल; ८ कोशाध्यक्ष, खजानची ; ९ प्रीति, अनुराग ; १० इस नाम का एक राजा ; ११ इस नाम का एक असुर ; १२ सर्प को पकड़ने वाला, गारुडिक ; १३ अस्थि-सार, मज्जा ; १४ शृङ्गार रस ; (हे १, १५६)। १५ इस नाम का एक तापस ; (भवि)। १६ पुंस्त्री. कौशिक गोत्र में उत्पन्न, कौशिक-गोत्रीय ; (ठा ७—पत्र ३६०); स्त्री—**कोसिई** ; (मा १६)।

कोसिया स्त्री [**कोशिका**] १ भारतवर्ष की एक नदी; (कस)। २ इस नाम की एक विद्याधर-राज-कन्या; (पउम ७, ५४)। ३ चमड़े का जूता ; "कोसियमालाभूसियसिरोहरो विगय-वसणो य" (स २२३)। देखो **कोसी**।

कोसियार पुं [**कोशिकार**] १ कीट-विशेष, रेशम का कीड़ा; (पण्ह १, ३)। २ न. रेशमी वस्त्र ; (ठा ५, ३)।

कोसी स्त्री [**कोशी**] देखो **कोसिया** ; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। २ गोलाकार एक वस्तु; 'कंचणकोसीपविट्ठदंताणं'(औप)।

कोसुम वि [**कौसुम**] फूल-संबन्धी, फूल का बना हुआ ; "कोसुमा बाणा" (गउड)।

कोसेअ } न [**कौशेय**] १ रेशमी वस्त्र, रेशमी कपड़ा
कोसेज्ज } (दे २, ३३; सम १५३ ; पण्ह १, ४)। २ तसर का बना हुआ वस्त्र ; (जीव ३)।

कोह पुं [**क्रोध**] गुस्सा, कोप ; (ओघ २ भा ; ठा ४, १)। °**मुंड** वि [°**मुण्ड**] क्रोध-रहित ; (ठा ५, ३) ।

कोह पुं [**कोथ**] सड़ना, शीर्णता ; (भग ३, ६) ।

कोह पुं [**दे. कोथ**] कोथली थैला ; (विसे २६८८) ।

कोह वि [**क्रोधवत्**] क्रोध-युक्त, कोप-सहित; "कोहाए माणाए मायाए लोभाए......आसायणाए" (पडि) ।

कोहंगक पुं [**कोभङ्गक**] पक्षि-विशेष ; (औप) ।

कोहज्झाण न [**क्रोधध्यान**] क्रोध-युक्त चिन्तन; (आउ ११)।

कोहंड न [**कूष्माण्ड**] १ कुष्माण्डी-फल, कोहला ; (पि ७६; ८६; १२७) । २ न. देव-विमान-विशेष ; (ती ५६) । ३ पुं. व्यन्तर-श्रेणीय देव-जाति-विशेष ; (पव १६४) ।

कोहंडी स्त्री [**कूष्माण्डी**] कोहले का गाछ ; (हे १, १२४ ; दे २, ५० टी) ।

कोहण वि [**क्रोधन**] १ क्रोधी, गुस्साखोर ; (सम ३७ ; पउम ३५, ७) । २ पुं. इस नाम का रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३२) ।

कोहल देखो **कुऊहल** ; (हे १, १७१) ।

कोहलिअ वि [**कुतूहलिन्**] कुतूहली ; कुतूहल-प्रेमी । स्त्री— °**आ**; (गा ७६८) ।

कोहलिआ स्त्री [**कूष्माण्डिका**] कोहले का गाछ ;
"जह लंघेसि परवइं, निययवइं भरसहंपि मोत्तूणं ।
तह मण्णे कोहलिए, अज्जं कल्लंपि फुट्टिहिसि" (गा ७६८)।

कोहली देखो **कोहंडी** ; (हे २, ७३ ; दे २, ५० टी) ।

कोहल्ल देखो **कोहल** ; (षड्) ।

कोहल्ली स्त्री [**दे**] तापिका, तवा, पचन-पात्र विशेष; (दे २, ४६) ।

कोहल्ली देखो **कोहंडी** ; (षड्) ।

कोहि } वि [**क्रोधिन्**] क्रोधी, क्रोध-स्वभावी, गुस्सा-
कोहिल्ल } खोर ; (कम्म ४, १४० ; बृह २) ।

°**क्किसिय** देखो **किसिय**=कृषित ; (उप ७२८ टी) ।

°**क्कूर** देखो **कूर**=क्रूर ; (वा २६) ।

°**क्केर** देखो °**केर** ; (हे २, ६६) ।

°**क्खंड** देखो **खंड** ; (गउड) ।

°**क्खंभ** देखो **खंभ** ; (से ३, ५६) ।

°**क्खम** देखो **खम** ; (प्रासू २७) ।

°**क्खलण** देखो **खलण** ; (गउड) ।

°**क्खिंसा** देखो **खिंसा** ; (सुपा ५१०) ।

°**क्खु** देखो **खु** ; (कप्पू ; अभि ३७ ; चारु १४) ।

°**क्खुत्त** देखो **खुत्त** ; (गउड) ।

°**क्खेड्ड** देखो **खेड्ड** ; (सुपा ५५२) ।

°**क्खेव** देखो **खेव**; " खारक्खेवं व खए" (उप ७२८ टी) ।

°**क्खोडी** देखो **खोडी** ; (पगह १, ३) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे कयाराइसद्दसंकलणो
दसमो तरंगो समत्तो ।

ख

ख पुं [**ख**] १ व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है ; (प्रामा ; प्राप)। २ न. आकाश, गगन ; " गज्जंते खे मेहा," (हे १, १८७ ; कुमा ; दे ६, १२१)। ३ इन्द्रिय ; (विसे ३४४३)। °**ग** पुं [°**ग**] १ पक्षी, खग ; (पाअ ; दे २, ५०)। २ मनुष्य की एक जाति, जो विद्या के बल से आकाश में गमन करते हैं, विद्याधर-लोक ; (आरा ५६)। देखो **खय**=खग। °**गइ** स्त्री [°**गति**] १ आकाश-गति ; २ कर्म-विशेष, जो आकाश-गति का कारण है ; (कम्म २, ३; नव ११)। °**गामिणी** स्त्री [°**गामिनी**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है ; (पउम ७, १४५)। °**पुप्फ** न [°**पुष्प**] आकाश-कुसुम, असंभवित वस्तु; (कुमा)।

खइ वि [**क्षयिन्**] १ क्षय वाला, नाश वाला। २ क्षय रोग वाला, क्षय-रोगी ; (सुपा २३३ ; ५७६)।

खइअ वि [**क्षपित**] नाशित, उन्मूलित ; (औप ; भवि)।

खइअ वि [**खचित**] १ व्याप्त, जटित ; २ मण्डित, विभूषित ; (हे १, १९३ ; औप ; स ११४)।

खइअ वि [**खादित**] १ खाया हुआ, भुक्त, ग्रस्त ; (पाअ ; स २५० ; उप पृ ४६)। २ आक्रान्त ; " तह य होंति उ कसाया। खइओ जेहिं मणुस्सो कज्जाकज्जाइं न मुणेइ " (स ११४)। ३ न. भोजन, भक्षण ; "खइएण व पीएण व न य एसो ताइओ हवइ अप्पा" (पञ्च ६२ ; ठा ४, ४—पत्र २७६)।

खइअ वि [**क्षयित**] क्षय-प्राप्त, क्षीण ; "किमिकायखइय-देहो " (सुर १६, १६१)।

खइअ पुं [**दे**] हेवाक, स्वभाव ; (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

खइअ) पुं [**क्षायिक**] १ क्षय, विनाश, उन्मूलन ; "से किं तं **खइग**) खइए? खइए अट्ठण्हं कम्मपयडीणं खइएणं " (अणु)। २ वि. क्षय से उत्पन्न, क्षय-संबन्धी, क्षय से संबन्ध रखने वाला; ३ कर्म-नाश से उत्पन्न ; " कम्मक्खय-सहावो खइओ ". (विसे ३४६५ ; कम्म १, १५ ; ३, १६ ; ४, २२ ; सम्य, २३ ; औप)।

खइत्त न [**क्षैत्र**] खेतों का समूह, अनेक खेत; (पि ६१)।

खइया स्त्री [**खदिका**] खाद्य-विशेष, सेका हुआ व्रीहि ; " दहियपायसखइयनिओए " (भवि)।

खइर पुं [**खदिर**] वृक्ष-विशेष, खैर का गाछ ; (आचा ; कुमा)।

खइर वि [**खादिर**] खदिर-वृक्ष-संबन्धी; (हे १, ६७; सुपा १५१)।

खइव [**दे**] देखो **खइअ** ; (ठा ४, ४—पत्र १७६ टी)।

खउड पुं [**खपुट**] स्वनाम प्रसिद्ध एक जैनाचार्य; (आवम ; आचू)।

खउर अक [**क्षुभ्**] १ क्षुब्ध होना, डर से विह्वल होना। २ सक. कलुषित करना। खउरइ; (हे ४, १५४; कुमा)। " खउरेंति धिइग्गहणं " (स ५, ३)।

खउर वि [**दे**] कलुषित ; " दरदड्ढविवण्णविद्दुमर-अक्खउरा " (स ५, ४७ ; स ५७८)।

खउर न [**क्षौर**] क्षौर-कर्म, हजामत ; (हेका १८६)।

खउर पुंन [**खपुर**] खैर वगैरः का चिकना रस, गोंद ; (बृह ३ ; निचू १६)। °**कढिणय** न [°**कठिनक**] तापसों का एक प्रकार का पात्र ; (विसे १४६५)।

खउरिअ वि [**क्षुब्ध**] कलुषित ; (पाअ ; बृह ३)।

खउरिअ वि [**क्षौरित**] मुण्डित, लुञ्चित, केश-रहित किया हुआ ; (स १०, ४३)।

खउरिअ वि [**खपुरित**] खरण्टित, चिपकाया हुआ; (निचू५)।

खउरीकय वि [**खपुरीकृत**] गोंद वगैरः की तरह चिकना किया हुआ ;

"कलुसीकओ य किट्टीकओ य खउरीकओ य मलिणिओ।
कम्मेहि एस जीवो, नाऊणवि मुज्झई जेण" (उव)।

खओवसम पुं [**क्षयोपशम**] कुछ भाग का विनाश और कुछ का दबना ; (भग)।

खओवसमिय वि [**क्षयोपशमिक**] १ क्षयोपशम से उत्पन्न, क्षयोपशम-संबन्धी ; (सम १४५ ; ठा २,१; भग)। २ क्षया-पशम ; (भग ; विसे २१७५)।

खंखर पुं [**दे**] पलाश वृक्ष ; (ती ५३)।

खंगार पुं [**खङ्गार**] राजा खेंगार, विक्रम की बारहवीं शताब्दी का सौराष्ट्र देश का एक भूपति, जिसको गूजरात के राजा सिद्धराज ने मारा था ; (ती ५)। °**गढ** पुं [°**गढ**] नगर-विशेष, सौराष्ट्र का एक नगर, जो आजकल 'जूनागढ़' के नाम से प्रसिद्ध है ; (ती ५)।

खंच सक [**कृष्**] १ खींचना। २ वश में करना। खंचइ ; (भवि)। "ता गच्छ तुरियतुरियं तुरयं मा खंच मुंच मुक्क-लयं" (सुपा १६८)।

खंचिय वि [**कृष्ट**] १ खींचा हुआ ; (स ५७४)। २ वश में किया हुआ ; (भवि)।

खंज अक [**खञ्ज्**] लंगड़ा होना ; (कप्पू)।

खंज वि [**खञ्ज**] लंगड़ा, पङ्गु, लूला ; (सुपा २७६)।

खंजण पुं [**खञ्जन**] १ पक्षि-विशेष, खञ्जरीट ; (दे २, ७०)। २ वृक्ष-विशेष ; "ताडवडखज्जखंजणसुक्खयरगहीर-दुक्खसंचारे" (स २५६)।

खंजण पुं [**दे**] १ कर्दम, कीच ; (दे २,६६ ; पात्र)। २ कज्जल, काजल, मषी ; (ठा ४,२)। ३ गाड़ी के पहिए के भीतर का काला कीच ; (पण्ण १७—पत्र ५२५)।

खंजर पुं [**दे**] सूखा हुआ पेड़ ; (दे २, ६८)।

खंजा स्त्री [**खञ्जा**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

खंजिअ त्रि [**खञ्जित**] जो लंगड़ा हुआ हो, पंगूभूत ; (कप्पू)।

खंड सक [**खण्डय्**] तोड़ना, टुकड़ा करना, विच्छेद करना। खंडइ; (हे ४,३६७)। कवकृ—**खंडिज्जंत**; (से १३,३२ ; सुपा १३४)। हेकृ—**खंडित्तए**; (उवा)। कृ —**खंडियव्व**; (उप ७२८ टी)।

खंड पुंन [**खण्ड**] १ टुकड़ा, अंश, हिस्सा ; (हे २,६७; कुमा)। २ चीनी, मिश्री ; (उर ६,८)। ३ पृथ्वी का एक हिस्सा ; "छक्खंड—" (सण)। °**घडग** पुं [°**घटक**] भिक्षुक का जल-पात्र ; (णाया १, १६)। °**प्पवाया** स्त्री [°**प्रपाता**] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा ; (ठा २,३)। °**भेय** पुं [°**भेद**] विच्छेद-विशेष, पदार्थ का एक तरह का पृथक्करण, पटके हुए घड़े की तरह पृथग्भाव ; (भग ५, ४)। °**मल्लय** पुंन [°**मल्लक**] भिक्षा-पात्र ; (णाया १, १६)। °**सो** अ [°**शस्**] टुकड़ा टुकड़ा, खण्ड-खण्ड ; (पि ५१६)। °**भेय** देखो °**भेय** ; (ठा १०)।

खंड न [**दे**] १ मुण्ड, शिर, मस्तक ; २ दारू का बरतन, मद्य-पात्र ; (दे २, ६८)।

खंडई स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; (दे २,६७)।

खंडग न [**खण्टक**] शिखर-विशेष ; (ठा ६ ; इक)।

खंडण न [**खण्डन**] १ विच्छेद, भञ्जन, नाश ; (णाया १, ८)। २ कण्डन, धान्य वगैरः का छिलका अलग करना ; "खंडणदलणाइं गिहकम्मे" (सुपा १४)। ३ वि. नाश करने वाला, नाशक ; (सुपा ४३२)।

खंडणा स्त्री [**खण्डना**] विच्छेद, विनाश; (कप्पू; निचू १)।

खंडपट्ट पुं [**खण्डपट्ट**] १ द्यूतकार, जूआरी; (विपा १,३)। २ धूर्त, ठग; ३ अन्याय से व्यवहार करने वाला; (विपा १,३)।

खंडरक्ख पुं [**खण्डरक्ष**] १ दाण्डपाशिक, कोटवाल; (णाया १,१ ; पण्ह १,३ ; औप)। २ शुल्कपाल, चुंगी वसूल करने वाला ; (णाया १,१ ; विसे १३६० ; औप)।

खंडव न [**खाण्डव**] इन्द्र का वन-विशेष, जिसको अर्जुन ने जलाया बतलाया जाता है ; (नाट — वेणी ११४)।

खंडा स्त्री [**खण्ड**] मिश्री, चीनी, सक्कर ; (ओघ ३७३)।

खंडा स्त्री [**खण्डा**] इस नाम की एक विद्याधर-कन्या ; (महा)।

खंडाखंडि अ [**खण्डशस्**] टुकड़े टुकड़ा, खण्डखण्ड ; (उवा ; णाया १,६)। °**डीकय** वि [°**कृत**] टुकड़े टुकड़ा किया हुआ ; (सुर १६, ५६)।

खंडामणिकंचण न [**खण्डामणिकाञ्चन**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक)।

खंडावत्त न [**खण्डावर्त्त**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक)।

खंडाहंड वि [**खण्डखण्ड**] टुकड़े टुकड़ा किया हुआ ; (सुपा ३८५)।

खंडिअ पुं [**खण्डिक**] छात्र, विद्यार्थी ; (औप)।

खंडिअ वि [**खण्डित**] छिन्न, विछिन्न; (हे १, ५३ ; महा)।

खंडिअ पुं [**दे**] १ मागध, बिरुद-पाठक ; २ वि. अनिवार, निवारण करने को अशक्य ; (दे २, ७८)।

खंडिआ स्त्री [**खण्डिका**] खण्ड, टुकड़ा ; (अभि ६२)।

खंडिआ स्त्री [**दे**] नाप-विशेष, बीस मन का नाप ; (सं २४)।

खंडी स्त्री [**दे**] १ अपद्वार, छोटा गुप्त द्वार ; (णाया १, १८—पत्र २३६)। २ किले का छिद्र; (णाया १, २—पत्र ७६)।

खंडुअ न [**दे**] बाहु-वलय, हाथ का आभूषण-विशेष ; (मृच्छ १८१)।

खंत देखो **खा**।

खंत वि [**क्षान्त**] क्षमा-शील, क्षमा-युक्त; (उप ३२० टी; कप्पू; भवि)।

खंतव्व वि [**क्षन्तव्य**] क्षमा-योग्य, माफ करने लायक; (विक ३८; भवि)।

खंति स्त्री [**क्षान्ति**] क्षमा, क्रोध का अभाव; (कप्प; महा; प्रासू ४८)।

खंति देखो **खा**।

खंद पुं [**स्कन्द**] १ कार्त्तिकेय, महादेव का एक पुत्र; (हे २, ५; प्राप्र; णाया १,१—पत्र ३६)। २ रा... नाम का एक सुभट ; (पउम ६७, ११)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक जैन मुनि ; (उव)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] १ स्कन्द-कृत उपद्रव; स्कन्दावेश; (जं २)। २ ज्वर-विशेष ; (भग ३, ६)। °**मह** पुं [°**मह**] स्कन्द का उत्सव ; (णाया १,१)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] एक चोर-सेनापति की भार्या का नाम ; (विपा १, ३)।

खंदग } पुं [**स्कन्दक**] १-२ ऊपर देखो । ३ एक जैन **खंदय** } मुनि ; (उव ; भग ; अंत ; सुपा ४०८)। ४ एक परिव्राजक, जिसने भगवान् महावीर के पास पीछे से जैन दीक्षा ली थी ; (पुप्फ ८४)।

खंदिल पुं [**स्कन्दिल**] एक प्रख्यात जैनाचार्य, जिसने मथुरा में जैनागमों को लिपि-बद्ध किया; (गच्छ १)।

खंध पुं [**स्कन्ध**] १ पुद्गल-प्रचय, पुद्गलों का पिण्ड ; (कम्म ४, ६६)। २ समूह, निकर ; (विसे ६००)। ३ कन्धा, काँध ; (कुमा)। ४ पेड़ का धड़, जहां से शाखा निकलती है ; (कुमा)। ५ छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**करणी** स्त्री [°**करणी**] साध्वीओं को पहनने का उप-करण-विशेष ; (ओघ ६७७)। °**मंत** वि [°**मत्**] स्कन्ध वाला ; (णाया १, १)। °**बीय** पुं [°**बीज**] स्कन्ध ही जिसका बीज होता है ऐसा कदली वगैरः गाछ ; (ठा ५, २)। °**सालि** पुं [°**शालिन्**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (राज)।

खंधग्गि पुं [**दे. स्कन्धाग्नि**] स्थूल काष्ठों की आग; (दे २, ७० ; पाअ)।

खंधमंस पुं [**दे**] हाथ, भुजा, बाहु ; (दे २, ७१)।

खंधमसी स्त्री [**दे**] स्कन्ध-यष्टि, हाथ ; (षड्)।

खंधय देखो **खंध** ; (पिंग)।

खंधयट्ठि स्त्री [**दे**] हाथ, भुजा ; (दे २, ७१)।

खंधर पुंस्त्री [**कन्धर**] ग्रीवा, डोक; (सण)। स्त्री—°**रा**; (महा)।

खंधलट्ठि स्त्री [**दे**] स्कन्ध-यष्टि, हाथ, भुजा ; (षड्)।

खंधवार देखो **खंधावार**; (महा)।

खंधार पुं. ब. [**स्कन्धार**] देश-विशेष ; (पउम ६८, ६६)।

खंधार देखो **खंधावार** ; (पउम ६६, २८ ; महा ; विसे २४४१)।

खंधाल वि [**स्कन्धमत्**] स्कन्ध वाला ; (सुपा १२६)।

खंधावार पुं [**स्कन्धावार**] छावनी, सैन्य का पड़ाव, शिबिर ; (णाया १, ८ ; स ६०३ ; महा)।

खंधि वि [**स्कन्धिन्**] स्कन्ध वाला ; (औप)।

खंधी स्त्री. देखो **खंध** ; (औप)।

खंधोधार पुं [**दे**] बहुत गरम पानी की धारा ; (दे २, ७२)।

खंप सक [**सिच्**] सिञ्चना, छिटकना। खंपइ ; (भवि)।

खंपणय न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; "बहुसेयसिन्नमलमइलखंपणय-चिक्कणसरीरो" (सुपा ११)।

खंभ पुं [**स्तम्भ**] खंभा, थंभा ; (हे १, १८७ ; २, ४; ६ ; भग ; महा)।

खंभल्लिअ वि [**स्तम्भनिगडित**] खंभे से बाँधा हुआ ; (से ६, ८५)।

खंभाइत्त न [**स्तम्भादित्य**] गूर्जर देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम से प्रसिद्ध है ; (ती २३)।

खंभालण न [**स्तम्भालगन**] थम्भे से बाँधना ; (पण्ह १, ३)।

खक्खरग पुंन [**दे**] सूखी हुई रोटी ; (धर्म २)।

खग्ग पुं [**खड्ग**] १ पशु-विशेष, गेंडा ; (उप १४८ ; पण्ह १, १)। २ पुंन. तलवार, असि ; (हे १, ३४ ; स ५३१)। °**धेणुआ** स्त्री [°**धेनु**] छुरी, चाकू ; (दंस)। °**पुरा** स्त्री [°**पुरा**] विदेह-वर्ष की स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी ; (ठा २, ३)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (इक)।

खग्गि पुं [**खड्गिन्**] जन्तु-विशेष, गेंड़ा ; (कुमा)।

खग्गिअ पुं [**दे**] ग्रामेश, गाँव का मुखिया ; (दे २, ६६)।

खग्गी स्त्री [**खड्गी**] विदेह वर्ष की नगरी-विशेष ; (ठा २, ३)।

खग्गूड वि [**दे**] १ शठ-प्राय, धूर्त-सदृश ; (ओघ ३६ भा)। २ धर्म-रहित, नास्तिक-प्राय ; (ओघ ३५ भा)। ३ निद्रालु ; ४ रस-लम्पट ; (बृह १)।

खच सक [**खच्**] १ पावन करना, पवित्र करना । २ कस कर बाँधना । खचइ ; (हे ४, ८६)।

खचिअ देखो **खइअ**=खचित ; (कुमा)। ३ पिञ्जरित ; (कप्प)।

खच्चल्ल पुं [**दे**] ऋच्छ, भल्लूक, भालू ; (दे २, ६६)।

खच्चोल पुं [**दे**] व्याघ्र, शेर ; (दे २, ६६)।

खज्ज पुं [**खर्ज**] वृक्ष-विशेष ; (स २५६)।
खज्ज वि [**खाद्य**] १ खाने योग्य वस्तु; (पण्ह १, २)। २ न. खाद्य-विशेष ; (भवि)।
खज्ज वि [**क्षय्य**] जिस का क्षय किया जा सके वह; (षड्)।
खज्जंत देखो **खा**।
खज्जग देखो **खज्ज**=खाद्य ; (भग १५)।
खज्जमाण देखो **खा**।
खज्जय देखो **खज्ज**=खाद्य ; (पउम ६६, १६)।
खज्जिअ वि [**दे**] १ जीर्ण, सड़ा हुआ ; २ उपालब्ध, जिसको उलहना दिया गया हो वह ; (दे २, ७८)।
खज्जिर (अप) वि [**खाद्यमान**] जो खाया गया हो वह ; (सण)।
खज्जू स्त्री [**खर्जू**] खुजली, पामा; (राज)।
खज्जूर पुं [**खर्जूर**] १ खजूर का पेड़; (कुमा ; उत्त ३४)। २ न. खजूर-फल ; (पउम ४१, ६ ; सुपा ५७)।
खज्जूरी स्त्री [**खर्जूरी**] खजूर का गाछ; (पाअ; पण्ण १)।
खज्जोअ पुं [**दे**] नक्षत्र ; (दे २, ६६)।
खज्जोअ पुं [**खद्योत**] कीट-विशेष, जुगनू ; (सुपा ४७ ; गाया १, ८)।
खट्ट न [**दे**] १ तीमन, कढ़ी ; (दे २, ६७)। २ वि. खट्टा, अम्ल ; (पण्ण १ —पत्र २७ ; जीव १)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] खट्टे जल की वर्षा; (भग ७, ६)।
खट्टंग न [**दे**] छाया, आतप का अभाव ; (दे २, ६८)।
खट्टंग न [**खट्वाङ्ग**] १ शिव का एक आयुध; (कुमा)। २ चारपाई का पाया या पाटी ; ३ प्रायश्चित्तात्मक भिक्षा माँगने का एक पात्र ; ४ तान्त्रिक मुद्रा-विशेष ;

"हत्थट्ठियं कवालं, न मुयइ नूणं खणंपि खट्टंगं।
सा तुह विरहे बालय, बाला कावालिणी जाया"
(वज्जा ८८)।

खट्टक्खड पुं [**खट्वाक्षक**] रत्नप्रभा-नामक पृथिवी का एक नरकावास ; "कालं काऊण रयणप्पभाए पुढवीए खट्टक्खडाभिहाणे नरए पलिओवमाऊ चेव नारगो उववन्नोत्ति" (स ८६)।
खट्टा स्त्री [**खट्वा**] खाट, पलंग, चारपाई; (सुपा ३३७; हे १, १६५)। °**मल्ल** पुं [°**मल्ल**] बिमारी की प्रबलता से जो खाट से उठ न सकता हो वह ; (बृह १)।
खट्टिअ } [**दे. खट्टिक**] खटीक, शौनिक, कसाई; (गा
खट्टिक्क } ६८२ ; सुअ २, २ ; दे २, ७०)।
खड न [**दे**] तृण, घास ; (दे २, ६७ ; कुमा)।
खडइअ वि [**दे**] संकुचित, संकोच-प्राप्त ; (दे २, ७२)।
खडंग न [**षडङ्ग**] छः अंग, वेद के ये छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त। °**वि** वि [°**वित्**] छहों अंगों का जानकार ; (पि २६५)।
खडक्कय पुंन [**खटत्कृत**] आहट देना, ध्वनि के द्वारा सूचना, भिकली वगैरः का आवाज; 'वियडकवाडकडाणं खडक्कओ निसुणिओ तत्तो" (सुपा ४१४)।
खडक्कार पुं [**खटत्कार**] ऊपर देखो; (सुर ११, ११२; विक्र ६०)।
खडक्किआ } स्त्री [**दे**] खिडकी, छोटा द्वार ; (कप्पू;
खडक्की } महा ; दे २, ७१)।
खडखड पुं [**खडखड**] देखो **खाडखड** ; (इक)।
खडखडग वि [**दे**] छोटा और लम्बा ; (राज)।
खडणा स्त्री [**दे**] गैया, गौ ; (गा ६३६ अ)।
खडहड पुं [**खटखट**] साँकल वगैरः का आवाज, खटत्कार ; (सुपा ५०२)।
खडहडी स्त्री [**दे**] जन्तु-विशेष, गिलहरी, गिल्ली: (दे २,७२)।
खडिअ देखो **खट्टिअ** ; (गा ६८२ अ)।
खडिअ देखो **खलिअ** ; (गा १६२ अ)।
खडिआ स्त्री [**खटिका**] खड़ी, लड़कों को लिखने की खड़ी; (कप्पू)।
खडी स्त्री [**खटी**] ऊपर देखो ; (प्राकृ)।
खडुआ स्त्री [**दे**] मौक्तिक, मोती ; (दे २, ६८)।
खडुक्क अक [**आविस्+भू**] प्रकट होना, उत्पन्न होना। खडुक्कंति ; (वज्जा ४६)।
खड्ड सक [**मृद्**] मर्दन करना। खड्डइ ; (हे ४, १२६)।
खड्ड } न [**दे**] १ श्मश्रु, दाढी-मूँछ; (दे २, ६६ ;
खड्डग } पाअ)। २ बड़ा, महान् ; (विसे २५७६ टी)। ३ गर्त के आकार वाला ; (उवा)।
खड्डा स्त्री [**दे**] १ खानि, आकर ; (दे २, ६६)। २ २ पर्वत का खात, पर्वत का गर्त; (दे २, ६६)। ३ गर्त्त, गढ़ा, खड्डा ; (सुर २, १०३ ; स १५२ ; सुपा १५ ; श्रा १६ ; महा ; उत्त २ ; पंचा ७)।
खड्डिअ वि [**मृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह ; (कुमा)।
खड्डुया स्त्री [**दे**] ठोकर, आघात ; " खड्डुया मे चवेडा मे" (उत्त १, ३८)।

खड्डोलय पुं [**दे**] खड्डा, गर्त्त, गढ़ा ; (स ३६३)।
खण सक [**खन्**] खोदना। खणइ ; (महा)। कर्म—खम्मइ, खणिज्जइ ; (हे ४, २४४) । वकृ—खणेमाण ; (सुर २, १०३) । संकृ —**खणेत्तु** ; (आचा) । कवकृ—**खन्नमाण** ; (पि ५४०) ।
खण पुं [**क्षण**] काल-विशेष, बहुत थोड़ा समय ; (ठा २, ४ ; हे २, २०; गउड; प्रासू १३४)। °**जोइ** वि [°**योगिन्**] क्षणमात्र रहने वाला ; (सुअ १, १, १) । °**भंगुर** वि [°**भङ्गुर**] क्षण-विनश्वर, क्षणिक ; (पउम ८, १०५ ; गा ४२३ ; भवि ११४) । °**या** स्त्री [°**दा**] रात्रि, रात ; (उप ७६८ टी) ।
खणक्खण } अक [**खणखणाय्**] 'खण-खण' आवाज
खणखणखण } करना । खणखणंति ; (पउम ३६, ५३)। वकृ—**खणक्खणंत** ; (स ३८४) ।
खणग वि [**खनक**] खोदने वाला ; (णाया १, १८) ।
खणण न [**खनन**] खोदना ; (पउम ८६, ६०; उप पृ २२१)।
खणय देखो **खण** = क्षण ; (आचा; उवा) ।
खणय वि [**खनक**] खोदने वाला ; (दे १, ८५) ।
खणाविय वि [**खानित**] खुदाया हुआ; (सुपा ४५४; महा)।
खणि स्त्री [**खनि**] खान, आकर ; (सुपा ३५०) ।
खणित्त न [**खनित्र**] खोदने का अस्त्र, खन्ती; (दे ४, ४)।
खणिय वि [**क्षणिक**] १ क्षण-विनश्वर, क्षण-भंगुर ; (विसे १६७२) । २ वि. फुरसद वाला, काम-धंधा से रहित ; "नो तुम्हे विव अम्हे खणिया इय वुत्तु नीहरिओ" (धम्म ८ टी)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] सर्व पदार्थ को क्षण-विनश्वर मानने वाला, बौद्धमत का अनुयायी ; (राज) ।
खणिय वि [**खनित**] खुदा हुआ ; (सुपा २५६) ।
खणी देखो **खणि** ; (पाअ) ।
खणुसा स्त्री [**दे**] मन का दुःख, मानसिक पीड़ा; (दे २, ६८)।
खण्ण न [**दे**] खात, खोदा हुआ ; (दे २, ६६; बृह ३ ; वव १) ।
खण्ण वि [**खन्य**] खोदने योग्य ; (दे २, ३६) ।
खण्णु देखो **खाणु** ; (दे २, ६६ ; षड्) ।
खण्णुअ पुं [**दे. स्थाणुक**] कीलक, खोंटी ; (दे २, ६८; गा ६४ ; ४२२ अ) ।
खत्त न [**दे**] १ खात, खोदा हुआ ; (दे २, ६६ ; पाअ)। २ शस्त्र से तोड़ा हुआ ; (ओघ ३४०) । ३ सेंध, चोरी करने के लिए दीवाल में किया हुआ छेद ; (उप पृ ११६ ; णाया १, १८) । ४ खाद, गोवर ; (उप ५६७ टी) । °**खणग** पुं [**खनक**] सेंध लगाकर चोरी करने वाला ; (णाया १,१८)। °**खणण** न [**खनन**] सेंध लगाना; (णाया १, १८)। °**मेह** पुं [**मेघ**] करीष के समान रस वाला मेघ ; (भग ७, ६) ।
खत्त पुं [**क्षत्र**] क्षत्रिय, मनुष्य-जाति-विशेष; (सुपा १६७; उत्त १२) ।
खत्त वि [**क्षात्र**] १ क्षत्रिय-संबन्धी, क्षत्रिय का ; २ न. क्षत्रियत्व, क्षत्रियपन ; "अहह अखत्तं करेइ कोइ इमो" (धम्म ८ टी ; नाट) ।
खत्तय पुं [**दे**] १ खेत खोदने वाला ; २ सेंध लगाकर चोरी करने वाला । ३ ग्रह-विशेष, राहु ; (भग १२, ६)।
खत्ति पुंस्त्री [**क्षत्रिन्**] नीचे देखो; "खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के" (सुअ १, ६, २२) ।
खत्तिअ पुंस्त्री [**क्षत्रिय**] मनुष्य की एक जाति, क्षत्री, राजन्य ; (पिंग ; कुमा ; हे २, १८५ ; प्रासू ८०) । °**कुंडग्गाम** पुं [°**कुण्डग्राम**] नगर-विशेष, जहां श्रीमहावीर देव का जन्म हुआ था ; (भग ६, ३३) । °**कुंडपुर** न [°**कुण्डपुर**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (आचा २, १५, ४)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] धनुर्विद्या ; (सुअ २, २) ।
खत्तिणी } स्त्री [**क्षत्रियाणी**] क्षत्रिय जाति की स्त्री;
खत्तियाणी } (पिंग ; कप्प) ।
खद्ध वि [**दे**] १ भुक्त, भक्षित ; (दे २, ६७; सुपा ६१० ; उप पृ २५२ ; सण ; भवि) । २ प्रचुर, बहुत ; "खद्धे भवदुक्खजले तरइ विणा नेय सुगुरुतरिं" (सार्ध ११४ ; दे २, ६७ ; पव २ ; बृह ४) । ३ विशाल, बड़ा ; (ओघ ३०७; ठा ३, ४) । ४ अ. शीघ्र, जल्दी ; (आचा २, १, ६) । °**दाणिअ** वि [°**दानिक**] समृद्ध, ऋद्धि-संपन्न ; (ओघ ८६) ।
खन्न [**दे**] देखो **खण्ण** ; (पाअ) ।
खन्नमाण देखो **खण**=खन् ।
खन्नुअ [**दे**] देखो **खण्णुअ** ; (पाअ) ।
खपुसा स्त्री [**दे**] एक प्रकार का जूता ; (बृह ३) ।
खप्पर पुं [**कर्पर**] १ मनुष्य-जाति-विशेष ; "पत्ते तम्मि दसण्णगेसु पवलं जं खप्पराणं बलं" (रंभा) । २ भिक्षा-पात्र, कपाल ; (सुपा ४६५) । ३ खोपड़ी, कपाल ; (हे १, १८१) । ४ घट वगैरः का टुकड़ा ; (पउम २०, १६६) ।

खप्पर } वि [**दे**] रूक्ष, रूखा, निष्ठुर ; (दे २, ६६ ;
खप्पुर } पात्र)।

खम सक [**क्षम्**] १ क्षमा करना, माफ करना। २ सहन करना। **खमइ** ; (उवर ८३; महा)। कर्म—**खमिज्जइ** ; (भवि)। कृ—**खमियव्व**; (सुपा ३०७; उप ७२८ टी; सुर ४, १६७)। प्रयो—**खमावइ** ; (भवि)। संकृ—**खमावइत्ता, खमावित्ता** ; (पडि ; काल)। कृ—**खमावियव्व** ; (कप्प)।

खम वि [**क्षम**] १ उचित, योग्य ; "सचित्तो आहारो न खमो मणसा वि पत्थेउं" (पच्च ५४ ; पात्र)। २ समर्थ, शक्तिमान् ; (दे १, १७ ; उप ६५० ; सुपा ३)।

खमग पुं [**क्षमक, क्षपक**] तपस्वी जैन साधु ; (उप पृ ३६२ ; ओघ १४० ; भत्त ४४)।

खमण न [**क्षपण, क्षमण**] १ उपवास ; (बृह १ ; निचू २०)। २ पुं. तपस्वी जैन साधु ; (ठा १०—पत्र ५१४)।

खमय देखो **खमग** ; (ओघ ५६४; उप ४८६; भत्त ४०)।

खमा स्त्री [**क्षमा**] १ पृथिवी, भूमि ; "उव्वूढखमाभारो" (सुपा ३४८)। २ क्रोध का अभाव, क्षान्ति ; (हे २, १८)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा, नृप, भूपति ; (धर्म १६)। °**समण** पुं [°**श्रमण**] साधु, ऋषि, मुनि ; (पडि)। °**हर** पुं [°**धर**] १ पर्वत, पहाड़ ; २ साधु, मुनि ; (सुपा ६२६)।

खमावणया } स्त्री [**क्षमणा**] खमाना, माफी माँगना ;
खमावणा } (भग १७, ३ ; राज)।

खमाविय वि [**क्षमित**] माफ किया हुआ ; (हे ३, १५२ ; सुपा ३६४)।

खम्मक्खम पुं [**दे**] १ संग्राम, लड़ाई ; २ मन का दुःख ; ३ पश्चात्ताप का नीसास ; (दे २, ७६)।

खय देखो **खच**। **खअइ** ; (षड्)।

खय अक [**क्षि**] क्षय पाना, नष्ट होना। **खअइ** ; (षड्)।

खय देखो **ख-ग** ; (पात्र)। ३ आकाश तक ऊँचा पहुँचा हुआ ; (से ६, ४२)। °**राय** पुं [°**राज**] पक्षियों का राजा ; गरुड़-पक्षी ; (पात्र)। °**वइ** पुं [°**पति**] गरुड़-पक्षी ; (से १५, ५०)।

खय न [**क्षत**] १ व्रण, घाव ; "खारक्खेवं व खए" (उप ७२८ टी)। २ व्रणित, घवाया हुआ ; "सुणओव्व कीडखओ" (श्रा १४ ; सुपा ३४६ ; सुर १२, ६१)। °**यार** पुंस्त्री [°**चार**] शिथिलाचारी साधु या साध्वी ; (वव ३)।

खय वि [**खात**] खोदा हुआ ; (पउम ६१, ४२)।

खय पुं [**क्षय**] १ क्षय, प्रलय, विनाश ; (भग ११, ११)। २ रोग-विशेष, राज-यक्ष्मा ; (लहुअ १५)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] नाश-कारक ; (सुपा ६५५)। °**काल,** °**गाल** पुं [°**काल**] प्रलय-काल ; (भवि; हे ४, ३७७)। °**ग्गि** पुं [°**ग्नि**] प्रलय-काल की आग ; (स १२, ८१)। °**नाणि** पुं [°**ज्ञानिन्**] केवलज्ञानी, परिपूर्ण ज्ञान वाला, सर्वज्ञ ; (विसे ५१८)। °**समय** पुं [°**समय**] प्रलय-काल ; (लहुअ २)।

खयंकर वि [**क्षयकर**] नाश-कारक ; (पउम ७, ८१ ; ६६, ३४ ; पुप्फ ८२)।

खयंतकर वि [**क्षयान्तकर**] नाश-कारक ; (पउम ७, १७०)।

खयर पुंस्त्री [**खचर**] १ आकाश में चलने वाला, पक्षी ; (जो २०)। २ विद्याधर, विद्या बल से आकाश में चलने वाला मनुष्य ; (सुर ३, ८८; सुपा २४०)। °**राय** पुं [°**राज**] विद्याधरों का राजा ; (सुपा १३४)।

खयर देखो **खइर**=खदिर ; (अंत १२ ; सुपा ५६३)।

खयाल पुंन [**दे**] वंश-जाल, बाँस का वन ; (भवि)।

खर अक [**क्षर्**] १ झरना, टपकना। २ नष्ट होना। **खरइ** ; (विसे ४५५)।

खर वि [**खर**] १ निष्ठुर, रूखा, परुष, कठोर ; (सुर २, ६ ; दे २, ७८ ; पात्र)। २ पुंस्त्री. गर्दभ, गधा ; (पण्ह १, १ ; पउम ५६, ४४)। ३ पुं. छन्द-विशेष ; (पिंग)। ४ न. तिल का तैल ; (ओघ ४०६)। °**कंट** न [°**कण्ट**] बबूल वगैरः की शाखा ; (ठा ३, ४)। °**कंड** न [°**काण्ड**] रत्नप्रभा पृथिवी का प्रथम काण्ड—अंश-विशेष ; (जीव ३)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] जिसमें अनेक जीवों की हानि होती हो ऐसा काम, निष्ठुर धंधा ; (सुपा ५०५)। °**कम्मिअ** वि [°**कर्मिन्**] १ निष्ठुर कर्म करने वाला ; २ कोटवाल, दाण्डपाशिक ; (ओघ २१८)। °**किरण** पुं [°**किरण**] सूर्य, सूरज ; (पिंग ; सण)। °**दूसण** पुं [°**दूषण**] इस नाम का एक विद्याधर राजा, जो रावण का बनोई था ; (पउम १०, १७)। °**नहर** पुं [°**नखर**] श्वापद जन्तु, हिंसक प्राणी ; (सुपा १३६; ४७४)। °**निस्सण** पुं [°**निःस्वन**] इस नाम का रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३०)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ अनार्य देश-विशेष

का निवासी ; (पण्ह १, ४) । °मुही स्त्री [°मुखी] १ वाद्य-विशेष; (पउम ५७, २३; सुपा ५०; औप) । २ नपुंसक दासी ; (वव ६) । °यर वि [°तर] १ विशेष कठोर ; (सुपा ६०६) । २ पुं. इस नाम का एक जैन गच्छ; (राज) । °सन्नय न [°संज्ञक] तिल का तैल ; (ओघ ४०६) । °साविआ स्त्री [°शाविका] लिपि-विशेष ; (सम ३५) । °स्सर पुं [°स्वर] परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २९) ।

खर वि [क्षर] विनश्वर, अस्थायी ; (विसे ४५७) ।

खरंट सक [खरण्टय्] १ धूत्कारना, निर्भर्त्सना करना । २ लेप करना । खरंडए ; (सूक्त ४६) ।

खरंट वि [खरण्ट] १ धूत्कारने वाला, तिरस्कारक ; २ उपलिप्त करने वाला ; ३ अशुचि पदार्थ ; (ठा ४, १ ; सूक्त ४६) ।

खरंटण न [खरण्टन] १ निर्भर्त्सन, परुष भाषण; (वव १) । २ प्रेरणा ; (ओघ ४० भा) ।

खरंटणा स्त्री [खरण्टना] ऊपर देखो ; (ओघ ७५) ।

खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना । संकृ —**खरडिवि**; (सुपा ४१५)

खरड पुं [खरट] एक जघन्य मनुष्य-जाति ; "अह केणइ खरडेणं किणिउं हट्टम्मि वरुणवणियस्स" (सुपा ३६२) ।

खरडिअ वि [दे] १ रूक्ष, रुखा ; २ भग्न, नष्ट ; (दे २, ७९) ।

खरडिअ वि [लिप्त] जिसको लेप किया गया हो वह, पोता हुआ ; (ओघ ३७३ टी) ।

खरण न [दे] बबूल वगैरः की कण्टक-मय डाली ; (ठा ४, ३) ।

खरय पुं [दे] १ कर्मकर, नौकर ; (ओघ ४३८) । २ राहु ; (भग १२, ६) ।

खरहर अक [खरखराय्] 'खर-खर' आवाज करना । वकृ— **खरहरंत** ; (गउड) ।

खरहिअ पुं [दे] पौत्र, पोता, पुत्र का पुत्र ; (दे २, ७२) ।

खरा स्त्री [खरा] जन्तु-विशेष, नकुल की तरह भुज से चलने वाला जन्तु-विशेष ; (जीव २) ।

खरिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित ; (दे २, ६७ ; भवि) ।

खरिआ स्त्री [दे] नौकरानी, दासी ; (ओघ ४३८) ।

खरिंसुअ पुं [दे. खरिंशुक] कन्द-विशेष ; (श्रा २०) ।

खरुट्ठी स्त्री [खरोष्ट्री] देखो **खरोट्ठिआ** ; (पण्ण १) ।

खरुल्ल वि [दे] १ कठिन, कठोर ; २ स्थपुट, विषम और ऊँचा ; (दे २, ७८) ।

खरोट्ठिआ स्त्री [खरोष्ट्रिका] लिपि-विशेष ; (सम ३५) ।

खल अक [स्खल्] १ पड़ना, गिरना । २ भूलना । ३ रुकना । खलइ ; (प्राप्र) । वकृ—**खलंत, खलमाण** ; (से २, २७ ; गा ५४६ ; सुपा ६४१) ।

खल वि [खल] १ दुर्जन, अधम मनुष्य ; (सुर १, १९) । २ न. धान साफ करने का स्थान ; (विपा १, ८; श्रा १४) । °पू वि [°पू] खले को साफ करने वाला ; (कुमा ; षड् ; प्रामा) ।

खलइअ वि [दे] रिक्त, खाली ; (दे २, ७१) ।

खलक्खल अक [खलखलाय्] 'खल-खल' आवाज करना । खोलक्खलेइ ; (पि ५५८) ।

खलगंडिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त ; (दे २, ६७) ।

खलण न [स्खलन] १ नीचे देखो ; (आचा ; से ८, ५५ ; गा ४६६; वज्जा २६) ।

खलणा स्त्री [स्खलना] १ गिर जाना, निपतन ; (दे २, ६४) । २ विराधना, भञ्जन ; (ओघ ७८८) । ३ अटकायत, रुकावट ; "होज्जा गुणो, ण खलणं करेमि जइ अस्स वसणस्स" (उप ३३९ टी) ।

खलभलिय वि [दे] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त ; (भवि) ।

खलहर } पुं [खलखल] नदी के प्रवाह का आवाज ; "वह-
खलहल } माणवाहिणीणं दिसिदिसिसुव्वंतखलहरासद्दो" (सुर ३, ११ ; २, ७५) ।

खला अक [दे] खराब करना, नुकसान करना । "ताणवि खलो खलाइ य" (पउम ३७, ६३) ।

खलिअ वि [स्खलित] १ रुका हुआ; २ गिरा हुआ, पतित; (हे २, ७७ ; पाअ) । ३ न. अपराध, गुनाह ; ४ भूल ; (से १, ९) ।

खलिअ वि [खलिक] खल से व्याप्त, खलि-खचित ; (दे ४, १०) ।

खलिण [खलिन] १ लगाम ; (पाअ) । २ कायोत्सर्ग का एक दोष ; (पव ५) ।

खलिया स्त्री [खलिका] तिल वगैरः का तैल-रहित चूर्ण; (सुपा ४१४) ।

खलियार सक [खली+कृ] १ तिरस्कार करना, धूत्कारना । २ ठगना । ३ उपद्रव करना । खलियारसि, खलियारेंति ; (सुपा २३७ ; स ४६८) ।

खलियार पुं [**खलिकार**] तिरस्कार, निर्भर्त्सना ; (पउम ३६, ११६)।
खलियारण न [**खलीकरण**] तिरस्कार ; (पउम ३६,८४)।
खलियारणा स्त्री [**खलीकरणा**] वञ्चना, ठगाई; (स २८)।
खलियारिअ वि [**खलीकृत**] १ तिरस्कृत ; (पउम ६६, २)। २ वञ्चित, ठगा हुआ ; (स २८)।
खलिर वि [**स्खलितृ**] स्खलना करने वाला ; (वज्जा ५८ ; सण)।
खली स्त्री [**दे. खली**] तिल-पिण्डिका, तिल वगैरः का स्नेह-रहित चूर्ण ; (दे २, ६६ ; सुपा ४१५ ; ४१६)।
खलीकय देखो **खलियारिअ** ; (चउ ४४)।
खलीकर देखो **खलियार**=खली+कृ । खलीकरेइ ; (स २७)। कर्म—खलीकरीयइ, खलीकिज्जइ; (स २८ ; सण)।
खलीण न [**खलीन**] देखो **खलिण**; (सुपा ७७ ; स ५७४)। २ नदी का किनारा; "खलीणमट्टियं खणमाणे" (विपा १,१—पत्र—१६)।
खलु अ [**खलु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ अव-धारण, निश्चय ; (जी ७)। २ पुनः, फिर ; (आचा)। ३ पादपूर्त्ति और वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है; (आचा ; निचू १०)। °**खित्त** न [°**क्षेत्र**] जहां पर जरूरी चीज मिले वह क्षेत्र ; (वव ८)।
खलुंक पुं [**दे**] १ गली बैल, अविनीत बैल; (ठा ४, ३—पत्र २४८)। २ अविनीत शिष्य, कुशिष्य ; (उत्त २७)।
खलुंकिज्ज वि [**दे**] १ गली बैल संबन्धी; २ उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक अध्ययन ; (उत्त २७)।
खलुय न [**खलुक**] गुल्फ, पाँव का मणि-बन्ध ; (विपा १, ६)।
खल्ल न [**दे**] १ बाड़ का छिद्र ; २ विलास ; (दे २, ७७)। ३ खाली, रिक्त; "जाया खल्लकवोला परिसोसियमंससोणिया धणियं" (उप ७२८ टी ; दे १, ३८)।
खल्लइअ वि [**दे**] १ संकुचित, संकोच-युक्त; २ प्रहृष्ट, हर्ष-युक्त ; (दे २, ७६ ; गउड)।
खल्लग } **खल्लय** } पुंन [**दे**] १ पाँव का रक्षण करने वाला चमड़ा, एक प्रकार का जूता ; (धर्म ३)। २ थैला ; (उप १०३१ टी)।
खल्ला स्त्री [**दे**] चर्म, चमड़ा, खाल ; (दे २, ६६ ; पाअ)।
खल्लाड देखो **खल्लीड** ; (निचू २०)।
खल्लिरा स्त्री [**दे**] संकेत ; (दे २, ७०)।
खल्लिहड (अप) देखो **खल्लीड** ; (हे ४, ३८६)।
खल्ली स्त्री [**दे**] सिर का वह चमड़ा, जिसमें केश पैदा न होता हो ; (आवम)।
खल्लीड पुं [**खल्वाट**] जिसके सिर पर बाल न हो, गञ्जा, चंदला ; (हे १, ७४ ; कुमा)।
खल्लूड पुं [**खल्लूट**] कन्द-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३६)।
खव सक [**क्षपय्**] १ नाश करना । २ डालना, प्रक्षेप करना। ३ उल्लंघन करना। खवेइ ; (उत्र)। खव-यंति ; (भग १८, ७)। कर्म—खविज्जंति ; (भग)। वकृ—**खवेमाण** ; (णाया १, १८)। संकृ—**खवइत्ता**, **खवित्तु** , **खवेत्ता**; (भग १५ ; सम्य १६ ; औप)।
खव पुं [**दे**] १ वाम हस्त, बायाँ हाथ ; २ गर्दभ, रासभ ; (दे २, ७७)।
खवग वि [**क्षपक**] १ नाश करने वाला, क्षय करने वाला; २ पुं. तपस्वी जैन मुनि ; (उव ; भाव ८)। ३ क्षपक श्रेणि में आरूढ़; (कम्म ५)। °**सेढि** स्त्री [°**श्रेणि**] क्षपण-क्रम, कर्मों के नाश की परिपाटी ; (भग ६, ११ ; उवर ११४)।
खवडिअ वि [**दे**] स्खलित, स्खलना-प्राप्त ; (दे २, ७१)।
खवण } **खवणय** } न [**क्षपण**] १ क्षय, नाश; (जीत)। २ डालना, प्रक्षेप ; (कम्म ४, ७५)। ३ पुं. जैन मुनि ; (विसे २५८५ ; मुद्रा ७८)।
खवय पुं [**दे**] स्कन्ध, कंधा ; (दे २, ६७)।
खवय देखो **खवग** ; (सम २६ ; आरा १३ ; आचा)।
खवलिअ वि [**दे**] कुपित, क्रुद्ध ; (दे २, ७२)।
खवल्ल पुं [**खवल्ल**] मत्स्य-विशेष ; (विपा १, ८—पत्र ८३ टी)।
खवा स्त्री [**क्षपा**] रात्रि, रात। °**जल** न [°**जल**] अवश्याय, हिम ; (ठा ४, ४)।
खविअ वि [**क्षपित**] १ विनाशित, नष्ट किया हुआ; (सुर ४, ५७ ; प्राप)। २ उद्वेजित ; (गा १३४)।
खव्व पुं [**दे**] १ वाम कर, बाँया हाथ ; २ रासभ, गधा ; (दे २, ७७)।
खव्व वि [**खर्व**] वामन, कुब्ज ; (पाअ)।

खच्चुर देखो **कच्चुर**; (विक्र २८)।

खच्चुल न [**दे**] मुख, मुँह ; (दे २, ६८)।

खस अक [**दे**] खिसकना, गिर पड़ना। खसइ ; (पिंग)।

खस पुं.ब [**खस**] १ अनार्य देश-विशेष, हिन्दुस्थान की उत्तर में स्थित इस नाम का एक पहाड़ी मुलक ; (पउम ६८, ६६)। २ पुंस्त्री. खस देश में रहने वाला मनुष्य; (पगह १— पत्र १४; इक)।

खसखस पुं [**खसखस**] पोस्ता का दाना, उशीर, खस; (सं ६६)।

खसफस अक [**दे**] खसना, खिसकना, गिर पड़ना। वकृ— **खसफसेमाण** ; (सुर २, १५)।

खसफसि वि [**दे**] व्याकुल, अधीर। °**हूअ** वि [°**भूत**] व्याकुल बना हुआ ; (हे ४, ४२२)।

खसर देखो **कसर** = दे कसर ; (जं २ ; स ४८०)।

खसिअ देखो **खइअ** = खचित ; (हे १, १६३)।

खसिअ न [**कस्मित**] रोग-विशेष, खाँसी; (हे १, १८१)।

खसिअ वि [**दे**] खिसका हुआ ; (सुपा २८१)।

खसु पुं [**दे**] रोग-विशेष, पामा ; गुजराती में 'खस'; (सण)।

खह देखो **ख** ; (ठा ३, १)।

खहयर देखो **खयर** ; (औप ; विपा १, १)।

खहयरी स्त्री [**खचरी**] १ पक्षिणी, मादा पक्षी। २ विद्याधरी, विद्याधर की स्त्री ; (ठा ३, १)।

खा } सक [**खाद्**] खाना, भोजन करना, भक्षण करना। खाइ,
खाअ } खाअइ ; खाउ ; (हे ४, २२८)। खंति ; (सुपा ३७० ; महा)। भवि—खाहिइ ; (हे ४, २२८)। कर्म—खज्जइ ; (उत्त)। वकृ—**खंत, खायंत, खायमाण** ; (करु १४ ; पउम २२, ७५ ; विपा १, १)। "खंता पिअंता इह जे मरंति, पुणोवि ते खंति पिअंति रायं !" (करु १४)। कवकृ—**खज्जंत, खज्जमाण** ; (पउम २२, ४३; गा २४८; पउम १७, ८१; ८२, ४०)। हेकृ— **खाइउं** ; (पि ५७३)।

खाअ वि [**ख्यात**] प्रसिद्ध, विश्रुत ; (उप ३२६ ; ६२३; नव २७ ; हे २, ६०)। °**कित्तीय** वि [°**कीर्त्तिक**] यशस्वी, कीर्तिमान् ; (पउम ७, ४८)। °**जस** वि [°**यशस्**] वही अर्थ ; (पउम ५, ८)।

खाअ वि [**खादित**] भुक्त, भक्षित; "खाउग्गिगण —" (गा ६६८ ; भवि)।

खाअ वि [**खात**] १ खुदा हुआ; २ न. खुदा हुआ जलाशय ; "खाओदगाइं" (कप्प)। ३ ऊपर में विस्तार वाली और नीचे में संकट ऐसी परिखा ; ४ ऊपर और नीचे समान रूप मे खुदी हुई परिखा ; (औप)। ५ खाई, परिखा ; (पाअ)।

खाइ स्त्री [**खाति**] खाई, परिखा ; (सुपा २३४)।

खाइ स्त्री [**ख्याति**] प्रसिद्धि, कीर्ति ; (सुपा ५२६ ; ठा ३, ४)।

खाइ [**दे**] देखो **खाइं**; (औप)।

खाइअ देखो **खइअ** = क्षायिक ; (विसे ४६ ; २१७५ ; सत्त ६७ टी)।

खाइअ वि [**खादित**] खाया हुआ, भुक्त, भक्षित ; (प्राप; निर १, १)।

खाइआ स्त्री [**दे. खातिका**] खाई, परिखा; (दे २, ७३ ; पाअ ; सुपा ५२६ ; भग ५, ७ ; पगह २, ५)।

खाइं अ [**दे**] १—२ वाक्य की शोभा और पुनः शब्द के अर्थ का सूचक अव्यय ; (भग ५, ४ ; औप)।

खाइग देखो **खाइअ** = क्षायिक ; (सुपा ५५१)।

खाइम न [**खादिम**] अन्न-वर्जित फल, औषध वगैरः खाद्य चीज; (सम ३६; ठा ४२; औप)।

खाइर वि [**खादिर**] खदिर-वृक्ष-संबन्धी; (हे १,६७)।

खाओवसम } देखो **खओवसमिय** ; (सुपा ५५१ ;
खाओवसमिअ } ६४८ ; सम्य २३)।

खाडइअ वि [**दे**] प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित ; (दे २, ७३)।

खाडखड पुं [**खाडखड**] चौथी नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६)।

खाडहिला स्त्री [**दे**] एक प्रकार का जानवर, गिलहरी, गिल्ली ; (पगह १, १; उप पृ २०५ ; विसे ३०४ टी)।

खाण न [**खादन**] भोजन, भक्षण ; "खाणेण अ पाणेण अ तह गहिओ मंडलो अडअणाए" (गा ६६२ ; पउम १४, १३६)।

खाण न [**ख्यान**] कथन, उक्ति ; (राज)।

खाणि स्त्री [**खानि**] खान, आकर ; (दे २, ६६ ; कुमा ; सुपा ३४८)।

खाणिअ वि [**खानित**] खुदवाया हुआ ; (हे ३, ५७)।

खाणी देखो **खाणि** ; (पाअ)।

खाणु } पुं [**स्थाणु**] स्थाणु, ठूठा वृक्ष; (पराह २, ५;
खाणुय } हे २, ७ ; कस)।

खाम सक [**क्षमय्**] खमाना, माफी माँगना। खामेइ ; (भग)। कर्म—खामिज्जइ, खामीअइ ; (हे ३, १५३)। संकृ—**खामेत्ता** ; (भग)।

खाम वि [**क्षाम**] १ कृश, दुर्बल ; "खामपंडुकवोलं" (उप ६८६ टी ; पाअ)। २ क्षीण, अशक्त; (दे ६, ४६)।

खामणा स्त्री [**क्षमणा**] क्षमापना, माफी माँगना, क्षमा-याचना ; (सुपा ५६४ ; विंव ७६)।

खामिय वि [**क्षमित**] १ जिसके पास क्षमा माँगी गई हो वह, खमाया हुआ ; (विसे २३८८ ; हे ३, १५२)। २ सहन किया हुआ ; ३ विलम्बित , विलम्ब किया हुआ ; "तिरिण अहोरत्ता पुण न खामिया मे कयंतेण" (पउम ४३, ३१ ; हे ३, १५३)।

खार पुं [**क्षार**] १ क्षरण, झरना, संचलन ; (ठा ८)। २ भस्म, खाक ; (गाया १, १२)। ३ खार, क्षार ; लवण-विशेष ; (सूत्र १, ७)। ४ लवण, नोन ; (बृह ४)। ५ जानवर-विशेष ; (पराण १)। ६ सर्जिका, सज्जी; (सूत्र १, ४, २)। ७ वि कटुक स्वाद वाला, कटुक चीज; (पराण १७—पत्र ५३०)। ८ खारी चीज, लवण स्वाद वाली वस्तु; (भग ७, ६; सूत्र १, ७)। °**तउसी** स्त्री [°**त्रपुषी**] कटु तपुषी, वनस्पति-विशेष ; (पराण १७)। °**तिल्ल** न [°**तैल**] खारे से संस्कृत तैल ; (पराह २, ५)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] क्षार रस वाले पानी की वर्षा ; (भग ७, ६)। °**वत्तिय** वि [°**पात्रिक**] क्षार-पात्र में जिमाया हुआ; २ क्षार-पात्र का आधार-भूत ; (औप)। °**वत्तिअ** वि [°**वृत्तिक**] खार में फेंका हुआ, खारसे सिञ्चा हुआ ; (औप ; दसा ६)। °**वावी** स्त्री [°**वापी**] क्षार से भरी हुई वापी ; (पराह १,१)।

खारंफिडी स्त्री [**दे**] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष ; (दे २, ७३)।

खारदूसण वि [**खारदूषण**] खरदूषण का, खरदूषण-संबन्धी ; (पउम ४५, १५)।

खारय न [**दे**] मुकुल, कली ; (दे २,७३)।

खारायण पुं [**क्षारायण**] १ ऋषि-विशेष ; २ माराडव्य गोत्र की शाखाभूत एक गोत्र ; (ठा ७)।

खारि स्त्री [**खारि**] एक प्रकार का नाप; (गा ८१२)।

खारिंभरी स्त्री [**खारिम्भरी**] खारी-परिमित वस्तु जिसमें अट सके ऐसा पात्र भर कर दूध देने वाली ; (गा ८१२)।

खारिय वि [**क्षरित**] १ स्रावित, झराया हुआ; (वव ६)। २ पानी में घिसा हुआ ; (भवि)।

खारी देखो **खारि** ; (गा ८१२ ; जो १)।

खारुगणिय पुं [**क्षारुगणिक**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ उसमें रहने वाली म्लेच्छ जाति ; (भग १२, २)।

खारोदा स्त्री [**क्षारोदा**] नदी-विशेष ; (राज)।

खाल सक [**क्षालय्**] धोना, पखारना, पानी से साफ करना। कृ—**खालणिज्ज** ; (उप ३२६)।

खाल स्त्रीन [**दे**] नाला, मोरी, अशुचि निकलने का मार्ग ; (ठा २, ३)। स्त्री—**खाला** ; (कुमा)।

खालण न [**क्षालन**] प्रक्षालन, पखारना ; (सुपा ३२८)।

खालिअ वि [**क्षालित**] धौत, धोया हुआ ; (ती १३)।

खावणा स्त्री [**ख्यापना**] प्रसिद्धि, प्रकथन ; "अक्खाणं खावणाभिहाणं वा" (विसे)।

खावियंत वि [**खाद्यमान**] जिसको खिलाया जाता हो वह; "कागणिमंसाइं खावियंतं" (विपा १, २—पत्र २४)।

खावियग वि [**खादितक**] जिसको खिलाया गया हो वह ; "कागणिमंसखावियगा" (औप)।

खावेंत वि [**ख्यापयत्**] प्रख्याति करता हुआ, प्रसिद्धि करता ; (उप ८३३ टी)।

खास पुं [**कास**] रोग-विशेष, खाँसी की बिमारी, खाँसी ; (विपा १,१ ; सुपा ४०४ ; सण)।

खासि वि [**कासिन्**] खाँसी का रोग वाला; (सुपा ५७६)।

खासिअ न [**कासित**] खाँसी, खाँसना ; (हे १,१८१)।

खासिअ पुं [**खासिक**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ उसमें रहने वाली म्लेच्छ-जाति ; (पराह १, १—पत्र १४ ; इक ; सूत्र १, ५, १)।

खिइ स्त्री [**क्षिति**] पृथिवी, धरा ; (पउम २०, १५६ ; स ४१६)। °**गोयर** पुं [°**गोचर**] मनुष्य, मानुष, आदमी ; (पउम ५३, ४३)। °**पइट्ठ** न [°**प्रतिष्ठ**] नगर-विशेष ; (स ६)। °**पइट्ठिय** न [°**प्रतिष्ठित**] १ इस नाम का एक नगर ; (उप ३२० टी ; स ७)। २ राजगृह नाम का नगर, जो आजकल बिहार में 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है ; (ती १०)। °**सार** पुं [°**सार**] इस नाम का एक दुर्ग ; (पउम ८०, ३)।

खिंखिणिया स्त्री [**किङ्किणिका**] क्षुद्र घण्टिका ; (उवा)।

खिंखिणी स्त्री [**किङ्किणी**] ऊपर देखो ; (ठा १० ; णाया १, १ ; अजि २७)।

खिंखिणी स्त्री [**दे**] शृगाली, स्त्री-सियार; (दे २, ७४)।

खिंग पुं [**खिङ्ग**] रंडीबाज, व्यभिचारी ; "अणेगखिंगजणउव्वासियरसणे" (रंभा)।

खिंस सक [**खिंस्**] निन्दा करना, गर्हा करना, तुच्छ करना। खिंसए; (आचा)। कर्म—खिंसिज्जइ; (बृह १)। कवकृ—**खिंसिज्जंत** ; (उप ५८८)। कृ—**खिंसणिज्ज**; (णाया १,३)।

खिंसण न [**खिंसन**] अवर्णवाद, निन्दा, गर्हा ; (औप)।

खिंसणा स्त्री [**खिंसना**] निन्दा, गर्हा ; (औप ; उप १३४ टी)।

खिंसा स्त्री [**खिंसा**] ऊपर देखो ; (ओघ ६० ; द्र ४२)।

खिंसिय वि [**खिंसित**] निन्दित, गर्हित ; (ठा ६)।

खिखिखंड पुं [**दे**] कृकलास, गिरगिट, सरट; (दे २, ७४)।

खिक्खियंत वि [**खिखीयमान**] 'खि-खि' आवाज करता ; (पण्ह १,३—पत्र ४६)।

खिक्खिरी स्त्री [**दे**] डोम वगैरः की स्पर्श रोकने की लकडी; (दे २, ७३)।

खिच्च पुंन [**दे**] खीचड़ी, कृसरा ; (दे १, १३४)।

खिज्ज अक [**खिद्**] १ खेद करना, अफसोस करना। २ उद्विग्न होना, थक जाना। खिज्जइ, खिज्जए ; (स ३४ ; गउड; पि ४५७)। कृ—**खिज्जियव्व** ; (महा ; गा ५१३)।

खिज्जणिया स्त्री [**खेदनिका**] खेद-क्रिया, अफसोस, मन का उद्वेग ; (णाया १, १६—पत्र २०२)।

खिज्जिअ न [**दे**] उपालम्भ, उलहना ; (दे २, ७४)।

खिज्जिअ वि [**खिन्न**] १ खेद-प्राप्त ; २ न. खेद ; (स ५५५)। ३ प्रणय-जन्य रोष ; (णाया १,६—पत्र १६५)।

खिज्जिअग न [**खेदितक**] छन्द-विशेष ; (अजि ७)।

खिज्जिर वि [**खेदितृ**] खेद करने वाला, खिन्न होने की आदत वाला ; (कुमा ७, ६०)।

खिड्ड न [**खेल**] खेल, क्रीड़ा, मजाक ; "खिड्डेण मए भणियं एयं" (सुपा ३०२)। "बालत्तणं खिड्डपरो गमेइ" (सत्त ६८)। °**कर** वि [°**कर**] खेल करने वाला, मजाक करने वाला ; (सुपा ७८)।

खिण्ण वि [**खिन्न**] १ खिन्न, खेद-प्राप्त ; २ श्रान्त, थका हुआ ; (दे १, १२४ ; गा २६६)।

खिण्ण देखो **खीण** ; (प्राप)।

खित्त वि [**क्षिप्त**] १ फेंका हुआ सुर ३. १०२ ; सुपा ३५७)। २ प्रेरित ; (दे १, ६३)। °**इत्त**, °**चित्त** वि [°**चित्त**] भ्रान्त-चित्त, विक्षिप्त-मनस्क, पागल ; (ठा ५, २ ; ओघ ४६७ ; ठा ५, १)। °**मण** वि [°**मनस्**] चित्त-भ्रम वाला ; (महा)।

खित्त देखो **खेत्त** ; (अणु ; प्रासू ; पडि)। °**देवया** स्त्री [°**देवता**] क्षेत्र का अधिष्ठायक देव ; (श्रा ४७)। °**वाल** पुं [°**पाल**] देव-विशेष, क्षेत्र-रक्षक देव ; (सुपा १५२)।

खित्तय न [**क्षिप्तक**] छन्द-विशेष ; (अजि २४ ; २५)।

खित्तय न [**दे**] १ अनर्थ, नुकसान ; २ वि. दीप्त, प्रज्वलित ; (दे २, ७६)।

खित्तिअ वि [**क्षैत्रिक**] १ क्षेत्र-संबन्धी ; २ पुं. व्याधि-विशेष ; "तालुपुडं गरलाणं जह बहुवाहीण खित्तिओ वाही" (श्रा १२)।

खिन्न देखो **खिण्ण**=खिन्न ; (पाअ ; महा)।

खिप्प वि [**क्षिप्र**] शीघ्र, त्वरा-युक्त। °**गइ** वि [°**गति**] १ शीघ्र गति वाला। २ पुं. अमितगति इन्द्र का एक लोक-पाल ; (ठा ४, १)।

खिप्पं अ [**क्षिप्रम्**] तुरन्त, शीघ्र, जल्दी ; (प्रासू ३७ ; पडि)।

खिप्पंत देखो **खिव**।

खिप्पामेव अ [**क्षिप्रमेव**] शीघ्र ही, तुरन्त ही; (जं ३ ; महा)।

खिर अक [**क्षर्**] १ गिरना, गिर पड़ना। २ टपकना, झरना। खिरइ; (हे ४, १७३)। वकृ—**खिरंत**; (पउम १०, ३२)।

खिरिय वि [**क्षरित**] १ टपका हुआ ; २ गिरा हुआ ; (पाअ)।

खिल न [**खिल**] अकृष्ट-भूमि, ऊषर जमीन; (पण्ह १, २—पत्र २६)।

खिलीकरण न [**खिलीकरण**] खाली करना, शून्य करना; "जुवजणधीरखिलीकरणकवाडओ वेसवाडओ" (मै ८)।

खिल्ल सक [**कीलय्**] रोकना, रुकावट डालना। "भणइ इमाणं बन्धव ! गमणं खिल्लेमि कड्ढिउं रेहं" (सुपा १३७)।

खिल्ल अक [**खेल्**] क्रीड़ा करना, खेल करना, तमाशा करना। वकृ—**खिल्लंत** ; (सुपा ३६६)।

खिल्लण न [**खेलन**] खिलौना, खेलनक ; (सुर १५,२०८)।

खिल्लहड } पुं [**दे. खिल्लहड**]। कन्द-विशेष; (श्रा २० ;
खिल्लहल } धर्म २)।

खिव सक [**क्षिप्**] १ फेंकना। २ प्रेरना। ३ डालना। खिवइ, खिवेइ ; (महा)। वकृ—**खिवेमाण** ; (णाया १, २)। कवकृ—**खिप्पंत**; (काल)। संकृ—**खिविय** ; (कम्म ४, ७४)। कृ—**खिवियव्व**; (सुपा १५०)।

खिवण न [**क्षेपण**] १ फेंकना, क्षेपण ; (से १२,३६)। २ प्रेरण, इधर उधर चलाना ; (से ५, ३)।

खिविय वि [**क्षिप्त**] १ क्षिप्त, फेंका हुआ ; २ प्रेरित ; (सुपा २)।

खिव्व देखो **खिव**। संकृ—"अह **खिव्विऊण** सव्वं, पोए ते पत्थिया रयणभूमिं" (धम्म १२ टी)।

खिस अक [**दे**] सरकना, खिसकना। संकृ—"नियगामे गच्छंतस्स **खिसिऊण** वाहणाहिंतो पडियं" (सुपा ५२७ ; ५२८)।

खीण देखो **खिण्ण**=खिन्न ; "कोवित्थ सुरयखीणो" (पउम ३२, ३)।

खीण वि [**क्षीण**] १ क्षय-प्राप्त, नष्ट, विच्छिन्न ; (सम्म ६० ; हे २, ३)। २ दुर्बल, कृश ; (भग २, ५)। °**दुह** वि [°**दुःख**] दुःख-रहित; (सम १५३)। °**मोह** वि [°**मोह**] १ जिसका मोह नष्ट हो गया हो वह; (ठा ३, ४)। २ वि. बारहवाँ गुण-स्थानक ; (सम २६)। °**राग** वि [°**राग**] १ वीतराग, राग-रहित ; २ पुं. जिन-देव, तीर्थंकर देव ; (गच्छ १)।

खीयमाण वि [**क्षीयमाण**] जिसका क्षय होता जाता हो वह ; (गा ६८६ टी)।

खीर न [**क्षीर**) १ दुग्ध, दूध ; (हे २, १७ ; प्रासू १३ ; १६८)। २ पानी, जल ; (हे २, १७)। ३ पुं. क्षीरवर समुद्र का अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। ४ समुद्र-विशेष, क्षीर-समुद्र ; (पउम ६६, १८)। °**कयंब** पुं [°**कदम्ब**] इस नाम का एक ब्राह्मण-उपाध्याय ; (पउम ११, ६)। °**काओली** स्त्री [°**काकोली**] वनस्पति-विशेष, खीरविदारी; (पगण १)। °**जल** पुं [°**जल**] क्षीर-समुद्र, समुद्र-विशेष; (दीव)। °**जलनिहि** पुं [°**जलनिधि**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सुपा २६५)। °**दुम, °द्दुम** पुं [°**द्रुम**] दूध वाला पेड़, जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति ; (ओघ ३४६ ; निचू १)। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] दूध पिलाने वाली दाई ; (णाया १,१)। °**पूर** पुं [°**पूर**] उबलता हुआ दूध ; (पगण १७)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] क्षीरवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] दूध-समान स्वाद वाले पानी की वर्षा; (तित्थ)। °**वई** स्त्री [°**वती**] प्रभूत दूध देने वाली ; (बृह ३)। °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष ; (जीव ३)। °**वारि** न [°**वारि**] क्षीर समुद्र का जल ; (पउम ६६, १८)। °**हर** पुं [°**गृह**, °**धर**] क्षीर-सागर; (वज्जा २४)। °**ासव** पुं [°**ाश्रव**] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से वचन दूध की तरह मधुर मालूम हो; २ ऐसी लब्धि वाला जीव ; (पगह २,१ ; औप)।

खीरइय वि [**क्षीरकित**] संजात-क्षीर, जिसमें दूध उत्पन्न हुआ हो वह ; "तए णं साली पत्तिया वत्तिआ गब्भिया पसूया आगयगन्धा खीरा(?र)इया बद्धफला" (णाया १, ७)।

खीरि वि [**क्षीरिन्**] १ दूध वाला ; २ पुं. जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति ; (उप १०३१ टी)।

खीरिज्जमाण वि [**क्षीर्यमाण**] जिसका दोहन किया जाता हो वह ; (आचा २, १, ४)।

खीरिणी स्त्री [**क्षीरिणी**] १ दूध वाली ; (आचा २, १, ४)। २ वृक्ष-विशेष ; (पगण १—पत्र ३१)।

खीरी स्त्री [**क्षैरेयी**] खीर, पक्वान्न-विशेष ; (सुपा ६३६ ; पाअ)।

खीरोअ पुं [**क्षीरोद**] समुद्र-विशेष, क्षीर-सागर ; (हे २, १८२ ; गा ११७ ; गउड ; उप ५३० टी ; स ३४४)।

खीरोआ स्त्री [**क्षीरोदा**] इस नाम की एक नदी ; (इक ; ठा २, ३)।

खीरोद देखो **खीरोअ** ; (ठा ७)।

खीरोदक, **खीरोदय** पुं [**क्षीरोदक**] क्षीर-सागर; (णाया १, ८ ; औप)।

खीरोदा देखो **खीरोआ** ; (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

खील, **खीलग**, **खीलय** पुं [**कील**, °**क**] खीला, खूँट, खूँटो ; (स १०६ ; सूअ १, ११ ; हे १, १८१ ; कुमा)। °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] मार्ग-विशेष, जहां धूली ज्यादः रहने से खूँटे के निशान बनाये गये हों ; (सूअ १, ११)।

खीलावण न [**क्रीडन**] खेल कराना, क्रीड़ा कराना। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] खेल-कूद कराने वाली दाई; (णाया १, १—पत्र ३७)।

खीलिया स्त्री [**कीलिका**] छोटी खूँटी; (आवम)।

खीव पुं [**क्षीब**] मद-प्राप्त, मदोन्मत्त ; (दे ८, ६६)।

खु अ [**खलु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय, अवधारण ; २ वितर्क, विचार ; ३ संशय, संदेह ; ४ संभा-

बना ; ५ विस्मय, आश्चर्य ; (हे २, १६८ ; षड् ; गा ६ ; १४२ ; ४०१ ; स्वप्न ६ ; कुमा) ।

खु° देखो **खुहा** ; (पराह २, ४ ; सुपा १६८ ; गाया १, १३) ।

खुइ स्त्री [**क्षुति**] १ छींक ; २ छींक का निशान ; (गाया १, १६ ; भग ३, १) ।

खुंखुणय पुं [**दे**] नाक का छिद्र ; (दे २, ७६ ; पाश्र) ।

खुंखुणी स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला ; (दे २, ७६) ।

खुंट पुं [**दे**] खूँट, खूँटी । °**मोडय** वि [°**मोटक**] १ खूँटे को मोड़ने वाला, उससे छूटकर भाग जाने वाला; २ पुं. इस नाम का एक हाथी ; (नाट—मृच्छ ८४) ।

खुंडय वि [**दे**] स्खलित; स्खलना-प्राप्त ; (दे २, ७१) ।

खुंपा स्त्री [**दे**] वृष्टि को रोकने के लिए बनाया जाता एक तृणमय उपकरण ; (दे २, ७५) ।

खुंभण वि [**क्षोभण**] क्षोभ उपजाने वाला ; (पराह १, १—पत्त २३) ।

खुज्ज } **खुज्जय** } वि [**कुब्ज**] १ कूबड़ा; २ वामन; (हे १, १८१; गा ५३४) । ३ वक्र, टेढ़ा ; (ओघ) । ४ एक पार्श्व से हीन ; (पव ११०) । ५ न. संस्थान-विशेष, शरीर का वामन आकार ; (ठा ६ ; सम १४६ ; औप) । स्त्री—**खुज्जा**; (गाया १, १) ।

खुज्जिय वि [**कुब्जिन्**] कूबड़ा ; (आचा) ।

खुट्ट सक [**तुड्**] १ तोड़ना, खण्डित करना, टुकड़ा करना । २ अक. खूटना, क्षीण होना । ३ टूटना, त्रुटित होना । खुट्टइ ; (नाट—साहित्य २२६ ; हे ४, ११६)। खुट्टंति; (उव) ।

खुट्ट वि [**दे**] त्रुटित, खण्डित, छिन्न ; (हे २, ७४ ; भवि) ।

खुड देखो **खुट्ट**=तुड् । खुडइ ; (हे ४, ११६) । खुडेंति; (से ८, ४८) । वकृ—" पवंगभिन्नमत्थया **खुडंत**दित्तमालिया " (पउम ५३, ११२ ; स ४४८) । संकृ—**खुडिऊण** ; (स ११३) ।

खुडक्किअ [**दे**] देखो **खुडुक्किअ** ; (गा २२६) ।

खुडिअ वि [**खण्डित**] त्रुटित, खण्डित, विच्छिन्न ; (हे १, ५३ ; षड्)

खुडुक्क अक [**दे**] १ नीचे उतरना । २ स्खलित होना । ३ शल्य की तरह चुभना । ४ गुस्सा से मौन रहना । खुडुक्कइ ; (हे ४, ३९५)। वकृ—**खुडुक्कंत** ; (कुमा) ।

खुडुक्किअ वि [**दे**] १ शल्य की तरह चुभा हुआ, खटका हुआ ; (उप ३५५) । २ रोष-मूक, गुस्सा से मौन धारण करने वाला । स्त्री—°**आ** ; (गा २२६ अ) ।

खुड्ड } **खुड्डग** } वि [**दे. क्षुद्र, क्षुल्लक**] १ लघु, छोटा; (दे २, ७४ ; कप्प ; दस ३ ; आचा २,२,३ ; उत्त १) । २ नीच, अधम, दुष्ट ; (पुप्फ ४४१) । ३ पुं. छोटा साधु, लघु शिष्य ; (सूत्र १, ३, २) । ४ पुंन. अंगुलीय-विशेष, एक प्रकार की अंगूठी ; (औप ; उप २०४) ।

खुड्डमड्डा अ [**दे**] १ बहु, अत्यन्त ; २ फिर फिर ; (निचू २०) ।

खुड्डय देखो **खुड्ड** ; (हे २, १७४; षड् ; कप्प; सम ३५ ; गाया १, १) ।

खुड्डाग } **खुड्डाय** } देखो **खुड्डग** ; (औप ; पराण ३६ ; गाया १, ७ ; कप्प) । °**णियंठ** न [°**नैर्ग्रन्थ**] उत्तराध्ययन सूत्र का छठवाँ अध्ययन ; (उत्त ६) ।

खुड्डिअ न [**दे**] सुरत, मैथुन, संभोग ; (दे २, ७५)।

खुड्डिआ स्त्री [**दे. क्षुद्रिका**] १ छोटी, लघु; (ठा २, ३; आचा २, १, ३)। २ डबरा, नहीं खुदा हुआ छोटा तलाव; (जं १ ; पराह २, ५) ।

खुणुक्खुडिआ स्त्री [**दे**] घ्राण, नाक, नासिका ; (दे २, ७६) ।

खुण्ण वि [**क्षुण्ण**] १ मर्दित ; (गा ४४५; निचू १) । २ चूर्णित ; (दे ५, ४५) । ३ मग्न, लीन ; " अजरामरपहखुण्णा साहू सरणं सुकयपुण्णा" (चउ ३८ ; संथा)।

खुण्ण वि [**दे**] परिवेष्टित ; (दे २, ७५) ।

खुत्त वि [**दे**] निमग्न, डूबा हुआ ; (दे २, ७४ ; गाया १, १ ; गा २७६ ; ३२४ ; संथा ; गउड) ।

°**खुत्तो** अ [**कृत्वस्**] वार, दफा; (उव; सुर १४, ६१)।

खुद्द वि [**क्षुद्र**] तुच्छ, नीच, दुष्ट, अधम ; (पराह १, १ ; ठा ६) ।

खुद्द न [**क्षौद्र्य**] क्षुद्रता, तुच्छता, नीचता; (उप ६१५) ।

खुद्दिमा स्त्री [**क्षुद्रिमा**] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७—पत्र ३६३) ।

खुद्ध वि [**क्षुब्ध**] क्षोभ-प्राप्त, घबड़ाया हुआ ; (सुपा ३२५) ।

खुध्यि वि [**क्षुधित**] क्षुधातुर, भूखा; (सूत्र १, ३,१) ।

खुन्न देखो **खुण्ण**=क्षुण्ण ; (पि ५६८)।
खुन्न देखो **खुण्ण**=(दे) ; (पाअ)।
खुप्प अक [**मस्ज्**] डूबना, निमग्न होना। खुप्पइ ; (हे ४, १०१)। वकृ—**खुप्पंत** ; (गउड ; कुमा ; ओघ २३ ; से १३, ६७)। हेकृ—**खुप्पिउं**; (तंदु)।
खुप्पिवासा स्त्री [**क्षुत्पिपासा**] भूख और प्यास ; (पि ३१८)।
खुब्भ अक [**क्षुभ्**] १ क्षोभ पाना, क्षुभित होना। २ नीचे डूबना। वकृ—**खुब्भंत** ; (ठा ७—पत्र ३८३)।
खुब्भण न [**क्षोभण**] क्षोभ, घबड़ाहट ; (राज)।
खुभ अक [**क्षुभ्**] डरना, घबड़ाना। खुभइ ; (रयण १८)। कृ—**खुभियव्व**; (पण्ह २, ३)।
खुभिय वि [**क्षुभित**] १ क्षोभ-युक्त, घबड़ाया हुआ ; (पण्ह १, ३)। २ न. क्षोभ, घबड़ाहट ; (ओघ)। ३ कलह, झगड़ा ; (बृह ३)।
खुम्मिय वि [**दे**] नमित, नमाया हुआ; (णाया १,१—पत्र ४७)।
खुर पुं [**खुर**] जानवर के पाँव का नख; (सुर १, २४८ ; गउड ; प्रासू १७१)।
खुर पुं [**क्षुर**] छूरा, अस्तूरा ; (णाया १, ८ ; कुमा ; प्रयौ १०७)। °**पत्त** न [°**पत्र**] अस्तूरा, छूरा ; (विपा १, ६)।
खुरप्प पुं [**क्षुरप्र**] १ घास काटने का अस्त्र-विशेष, खुरपा; (सम १३४)। २ शर-विशेष, एक प्रकार का बाण ; (वेणी ११७)।
खुरसाण पुं [**खुरशान**] १ देश-विशेष ; (पिंग)। २ खुरशान देश का राजा ; (पिंग)।
खुरहखुडी स्त्री [**दे**] प्रणय-कोप ; (षड्)।
खुरासाण देखो **खुरसाण** ; (पिंग)।
खुरि वि [**खुरिन्**] खुर वाला जानवर ; (आव ३)।
खुरु पुं [**खुरु**] प्रहरण-विशेष, आयुध-विशेष ; (सुर १३, १६३)।
खुरुडुक्खुडी स्त्री [**दे**] प्रणय-कोप ; (दे २, ७६)।
खुरुप्प देखो **खुरप्प** ; (पउम ५६, १६; स ३८४)।
खुलिअ देखो **खुडिअ** ; (पिंग)।
खुलुह पुं [**दे**] गुल्फ, पैर की गाँठ, फीली ; (दे २, ७५ ; पाअ)।
खुल्ल न [**दे**] कुटी, कुटीर ; (दे २, ७४)।
खुल्ल } वि [**क्षुल्ल**, °**क**] १ छोटा, लघु, क्षुद्र; (पण्ण १)।
खुल्लग } २ पुं द्वीन्द्रिय जीव-विशेष ; (जीव १)।
खुल्लण (अप) देखो **खुड्ड** ; (पिंग)।
खुल्लय वि [**क्षुल्लक**] १ लघु, क्षुद्र, छोटा ; (भवि)। २ कपर्दक-विशेष, एक प्रकार की कौड़ी ; (णाया १, १८—पत्र २३५)।
खुल्लिरी स्त्री [**दे**] संकेत ; (दे २, ७०)।
खुव पुं [**क्षुप**] जिसकी शाखा और मूल छोटे होते हैं ऐसा एक वृक्ष ; (णाया १, १—पत्र ६५)।
खुवय पुं [**दे**] तृण-विशेष, कण्टकि-तृण; (दे २, ७५)।
खुव्व देखो **खुभ**। खुव्वइ; (षड्)।
खुव्वय न [**दे**] पत्ते का पुड़वा ; (वव २)।
खुह देखो **खुभ**। कृ—**खुहियव्व** ; (सुपा ६१६)।
खुहा स्त्री [**क्षुध्**] भूख, बुभुक्षा ; (महा ; प्रासू १७३)। °**परिसह**, °**परीसह** पुं [°**परिषह**, °**परीषह**] भूख की वेदना को शान्ति से सहन करना ; (उत्त २ ; पंचा १)।
खुहिअ वि [**क्षुभित**] १ क्षोभ-प्राप्त ; (से १, ४६ ; सुपा २४१)। २ क्षोभ, संत्रास ; (ओघ ७)।
खूण न [**क्षूण**] नुकसान, हानि; (सुर ४, ११३ ; महा)। २ अपराध, गुनाह ; (महा)। ३ न्यूनता, कमी ; (सुपा ७ ; ४३०)।
खेअ सक [**खेदय्**] खिन्न करना, खेद उपजाना। खेएइ ; (विसे १४७२ ; महा)।
खेअ पुं [**खेद**] १ खेद, उद्वेग, शोक; (उप ७२८ टी)। २ तकलीफ, परिश्रम ; (स ३१५)। ३ संयम, विरति ; (उत्त १५)। ४ थकावट, श्रान्ति; (आचा)। °**ण**, °**न्न** वि [°**ज्ञ**] निपुण, कुशल, चतुर, जानकार ; (उप ६०८ ; ओघ ६४७)।
खेअ देखो **खेत्त**; (सुअ १, ६ ; आचा)।
खेअ पुं [**क्षेप**] त्याग, मोचन ; (से १२, ४८)।
खेअण न [**खेदन**] १ खेद, उद्वेग। २ वि. खेद उपजाने वाला; (कुमा)।
खेअर देखो **खयर** ; (कुमा ; सुर ३, ६)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] विद्याधरों का राजा ; (पउम २८, ५७)। °**ाहिवइ** पुं [°**ाधिपति**] विद्याधरों का राजा , (पउम २८, ४४)।
खेअरिंद पुं [**खेचरेन्द्र**] खेचरों का राजा; (पउम ६,५२)।
खेअरी देखो **खहयरी** ; (कुमा)।

खेआलु वि [**दे**] १ निःसह, मन्द, आलसी ; २ अ-सहिष्णु, ईर्ष्यालु ; (दे २, ७७) ।
खेइय वि [**खेदित**] खिन्न किया हुआ; (स ६३४) ।
खेचर देखो **खेअर** ; (ठा ३, १) ।
खेज्जणा स्त्री [**खेदना**] खेद-सूचक वाणी, खेद ; (णाया १, १८) ।
खेड सक [**कृष्**] खेती करना, चास करना । खेडइ ; (सुपा २७६) । "अह अन्नया य दुन्निवि हलाइं खेडंति अप्प-णच्चेव" (सुपा २३७) ।
खेड न [**खेट**] १ धूली का प्राकार वाला नगर ; (औप ; पण्ह १, २) । २ नदी और पर्वतों से वेष्टित नगर ; (सुअ २, २) । ३ पुं. मृगया, शिकार ; (भवि) ।
खेडग न [**खेटक**] फलक, ढ़ाल ; (पण्ह १, ३) ।
खेडण न [**कर्षण**] खेती करना ; (सुपा २३७) ।
खेडण न [**खेटन**] खदेड़ना, पीछे हटाना; (उप २२६) ।
खेडणअ न [**खेलनक**] खिलौना; (नाट—रत्ना ६२) ।
खेडय पुं [**क्ष्वेटक**] १ विष, जहर ; (हे २, ६) । २ ज्वर-विशेष ; (कुमा) ।
खेडय वि [**स्फेटक**] नाशक, नाश करने वाला ; (हे २, ६; कुमा) ।
खेडय न [**खेटक**] छोटा गाँव ; (पाअ ; सुर २, १६२) ।
खेडावग वि [**खेलक**] खेल करने वाला, तमासगिर (उप पृ १८८) ।
खेडिअ वि [**कृष्ट**] हल से विदारित ; (दे १, १३६) ।
खेडिअ पुं [**स्फेटिक**] १ नाश वाला, नश्वर ; २ अनादर वाला ; (हे २, ६) ।
खेड्ड अक [**रम्**] क्रीड़ा करना, खेल करना । खेड्डइ ; (हे ४, १६८)। खेड्डंति ; (कुमा) ।
खेड्ड, **खेड्डय** न [**खेल**] १ क्रीड़ा, खेल, तमाशा, मजाक ; (हे २, १८४ ; महा; सुपा २७८ ; स ५०६) । २ बहाना, छल ; "मयखेड्डयं विहेऊण" (सुपा ५२३) ।
खेड्डा स्त्री [**क्रीडा**] क्रीड़ा, खेल, तमाशा ; (औप ; पउम ८, ३७ ; गच्छ २) ।
खेड्डिया स्त्री [**दे**] बारी, दफा ; "भद्द! पच्छिमा खेड्डिया" (स ४८५) ।
खेत्त पुंन [**क्षेत्र**] १ आकाश ; (विसे २०८८) । २ कृषि-भूमि, खेत ; (बृह १) । ३ जमीन, भूमि ; ४ देश, गाँव, नगर वगैरः स्थान ; (कप्प ; पंचू ; विसे) । ५ भार्या, स्त्री ; (ठा १०) । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ देश का रिवाज ; (बृह ६) । २ क्षेत्र-संबन्धी अनुष्ठान ; ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें क्षेत्र-विषयक आचार का प्रतिपादन हो; (पंचू)। °**पलिओवम** न [°**पल्योपम**] काल का नाप-विशेष ; (अणु) । °**ारिय** पुं [°**ार्य**] आर्य भूमि में उत्पन्न मनुष्य ; (पण्ण १) । देखो **खित्त**=क्षेत्र।
खेत्ति वि [**क्षेत्रिन्**] क्षेत्र वाला, क्षेत्र का स्वामी ; (विसे १४६२) ।
खेम न [**क्षेम**] १ कुशल, कल्याण, हित ; (पउम ६५, १७ ; गा ४६६ ; भत्त ३६ ; रयण ६) । २ प्राप्त वस्तु का परिपालन ; (णाया १, ५) । ३ वि. कुशलता-युक्त, हित-कर, उपद्रव-रहित ; (णाया १, १ ; दस ७) । ४ पुं. पाटलिपुत्र के राजा जितशत्रु का एक अमात्य ; (आचू १) । °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] १ नगरी-विशेष; (पउम २०, ७)। २ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३) ।
खेमंकर पुं [**क्षेमङ्कर**] १ कुलकर पुरुष-विशेष ; (पउम ३, ५२) । २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ कुलकर-पुरुष ; (सम १५३) । ३ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि; (पउम २१, ८०)। ५ वि. कल्याण-कारक, हित-जनक ; (उप २११ टी) ।
खेमंधर पुं [**क्षेमन्धर**] १ कुलकर पुरुष-विशेष; (पउम ३, ५२) । २ ऐरवत क्षेत्र का पाँचवाँ कुलकर पुरुष-विशष ; (सम १५३) । ३ वि. क्षेम-धारक, उपद्रव-रहित ; (राज)।
खेमग पुं [**क्षेमक**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक अन्तकृद् जैन मुनि ; (अंत) ।
खेमलिज्जिया स्त्री [**क्षेमलिया**] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प) ।
खेमा स्त्री [**क्षेमा**] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३) । २ क्षेमपुरी-नामक नगरी-विशेष; (पउम २०, १०) ।
खेरि स्त्री [**दे**] १ परिशाटन, नाश ; "धगणखेरिं वा" (बृह २) । २ खेद, उद्वेग ; ३ उत्कण्ठा, उत्सुकता ; (भवि) ।
खेल अक [**खेल्**] खेलना, क्रीड़ा करना, तमाशा करना । खेलइ ; (कप्पू) । खेलउ ; (गा १०६) । वकृ—**खेलंत** ; (पि २०६) ।
खेल पुं [**श्लेष्मन्**] श्लेष्मा, कफ, निष्ठीवन, थूथू ; (सम १० ; औप ; कप्प ; पडि) ।
खेलण, **खेलणय** न [**खेलन**, °**क**] १ क्रीड़ा, खेल । २ खिलौना ; (आक ; स १२७) ।

खेलोसहि स्त्री [**श्लेष्मौषधि**] १ लब्धि-विशेष, जिससे श्लेष्म औषधि का काम देने लगे ; (पराह २, १ ; संति ३)। २ वि. ऐसी लब्धि वाला ; (आवम ; पव २७०)।

खेल्ल देखो **खेल**=खेल्। खेल्लइ ; (पि २०६)। वकृ—**खेल्लमाण** ; (स ४४)। प्रयो, संकृ—**खेल्लावेऊण** ; पि २०६)।

खेल्ल देखो **खेल**=श्लेष्मन ; (राज)।

खेल्लण देखो **खेलण** ; (स २६५)।

खेल्लावण) न [**खेलनक**] १ खेल कराना, क्रीड़ा कराना।
खेल्लावणय) २ न. खिलौना ; (उप १४२ टी)। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] खेल कराने वाली दाई ; (राज)।

खेल्लिअ न [**दे**] हसित, हाँसी, ठट्ठा ; (दे २, ७६)।

खेल्लुड देखो **खल्लूड** ; (राज)।

खेव पुं [**क्षेप**] १ क्षेपण, फेंकना, (उप ७२८ टी)। २ न्यास, स्थापना ; (विसे ६१२)। ३ संख्या-विशेष ; (कम्म ४, ८१ ; ८४)।

खेव पुं [**खेद**] उद्वेग, खेद, क्लेश ; "न हु कोइ गुरू खेवं वच्चइ सीसेसु सत्तिसुमहेसु (?); (पउम ६७, २३)।

खेवण न [**क्षेपण**] प्रेरण ; (णाया १, २)।

खेवय वि [**क्षेपक**] फेंकने वाला ; (गा २४२)।

खेविय वि [**खेदित**] खिन्न किया हुआ ; (भवि)।

खेह पुंन [**दे**] धूली, रज ; "वग्गिरतुरंगखरखुरक्खयखेहा-इन्नरिक्खपहं" (सुर ११, १७१)।

खोंटग) पुं [**दे**] खूँटी, खूँटा ; (उप २७८ ; स २६३)।
खोंटय)

खोक्ख अक [**खोख्**] वानर का बोलना, बन्दर का आवाज करना। खोक्खइ ; (गा १७१ अ)।

खोक्खा) स्त्री [**खोखा**] वानर की आवाज ; (गा ५३२)।
खोखा)

खोखुब्भ अक [**चोक्षुभ्य्**] अत्यन्त भयभीत होना, विशेष व्याकुल होना। वकृ—**खोखुब्भमाण** ; (औप; पराह १,३)।

खोट्ट सक [**दे**] खटखटाना, ठकठकाना, ठोकना। कवकृ—**खोट्टिज्जंत** ; (ओघ ५६७ टी)। संकृ—**खोट्टिउं** ; (ओघ ५६७ टी)।

खोट्टी स्त्री [**दे**] दासी, चाकरानी ; (दे २, ७७)।

खोड पुं [**दे**] १ सीमा-निर्धारक काष्ठ, खूँटा ; २ वि. धार्मिक, धर्मिष्ठ ; (दे २, ८०)। ३ खञ्ज, लँगड़ा ; (दे २, ८० ; पिंग)। ४ शृगाल, सियार; (मृच्छ १८३)। ५ प्रदेश, जगह ; "सिंगक्खोडे कलहो" (ओघ ७६ भा)। ६ प्रस्फोटन, प्रमार्जन ; (ओघ २६५)। ७ न. राजकुल में देने योग्य सुवर्ण वगैरः द्रव्य ; (वव १)।

खोडपज्जालि पुं [**दे**] स्थूल काष्ठ की अग्नि; (दे २,७०)।

खोडय पुं [**क्ष्वोटक**] नख से चर्म का निष्पीड़न ; (हे २, ६)।

खोडय पुं [**स्फोटक**] फोड़ा, फुनसी ; (हे २, ६)।

खोडिय पुं [**खोटिक**] गिरनार पर्वत का क्षेत्रपाल देवता ; (ती २)।

खोडी स्त्री [**दे**] १ बड़ा काष्ठ ; (पराह १, ३—पत्र ५३)। २ काष्ठ की एक प्रकार की पेटी ; (महा)।

खोणि स्त्री [**क्षोणि**] पृथिवी, धरणी ; (सण)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा, भूपति ; (उप ७६८ टी)।

खोणिंद पुं [**क्षोणीन्द्र**] राजा, भूमि-पति ; (सण)।

खोणी देखो **खोणि** ; (सुर १२, ६१; सुपा २३८; रंभा)।

खोद पुं [**क्षोद**] १ चूर्णन, विदारण ; (भग १७, ६)। २ इक्षु-रस; ऊख का रस; (सुज्ज १,६)। °**रस** पुं [°**रस**] समुद्र-विशेष ; (दीव)। °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष; (जीव ३)।

खोदोअ) पुं [**क्षोदोद**] १ समुद्र-विशेष, जिसका पानी
खोदोद) इक्षु-रस के तुल्य मधुर है ; (जीव ३ ; इक)। २ मधुर पानी वाली वापी ; (जीव ३)। ३ न. मधुर पानी, इक्षु-रस के समान मिष्ट जल; (पराण १)।

खोद्द न [**क्षौद्र**] मधु, शहद; (भग ७, ६)।

खोभ सक [**क्षोभय्**] १ विचलित करना, धैर्य से च्युत करना। २ आश्चर्य उपजाना। ३ रंज पैदा करना। खोभेइ; (महा)। वकृ—**खोभंत** ; (पउम ३, ६६ ; सुपा ४६३)। हेकृ—**खोभित्तए, खोभइउं** ; (उवा ; पि ३१६)।

खोभ पुं [**क्षोभ**] १ विचलता, संभ्रम ; (आव ५)। २ इस नाम का रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३२)।

खोभण न [**क्षोभण**] क्षोभ उपजाना, विचलित करना; "तेलोक्कखोभणकरं" (पउम २, ८२ ; महा)।

खोभिय वि [**क्षोभित**] विचलित किया हुआ ; (पउम ११७, ३१)।

खोम) न [**क्षौम**] १ कार्पासिक वस्त्र, कपास का बना
खोमग) हुआ वस्त्र ; (णाया १, १—पत्र ४३ टी ; उवा १)। २ सन का बना हुआ वस्त्र ; (सम १२३ ; भग ११,११ ; पराह १,४)। ३ रेशमी वस्त्र; (उप१४६; स२००)। ४ वि. अतसी-संबंधी, सन-संबन्धी , (ठा १० ; भग १,१

११)। °पसिण न [प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे वस्त्र में देवता का आह्वान किया जाता है; (ठा १०)।

खोमिय न [क्षौमिक] १ कपास का बना हुआ वस्त्र (ठा ३, ३)। २ सन का बना हुआ वस्त्र; (कप्प)।

खोय देखो **खोद**; (सम १५१ ; इक)।

खोर } न [दे] पात्र-विशेष, कचोलक; (उप पृ ३१५ ;
खोरय } णांदि)।

खोल पुं [दे] १ छोटा गधा; (दे २, ८०)। २ वस्त्र का एक देश; (दे २, ८०; ५, ३०; बृह १)। ३ मद्य का नीचला कीट-कर्दम; (आचा २, १, ८; बृह १)।

खोल्ल न [दे] कोटर, गह्वर " खोल्लं कोत्थरं " (निचू १५)।

खोसलय वि [दे] दन्तुर, लम्बे और बाहर निकले हुए दाँत वाला; (दे २,७७)।

खोह देखो **खोभ**=क्षोभय्। खोहइ; (भवि)। वकृ—**खोहंत**; (से १५, ३३)। कवकृ—**खोहिज्जंत**; (से २, ३)।

खोह देखो **खोभ**=क्षोभ; (पण्ह १, ४; कुमा; सुपा ३६७)।

खोहण देखो **खोभण**; (श्रा १२; सुपा ५०२)।

खोहिय देखो **खोभिय**; (सण)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवे** खआराइसद्दसंकलणो
एआरहमो तरंगो समत्तो।

ग

ग पुं [**ग**] व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है; (प्रामा; प्राप)।

ग वि [**ग**] १ जाने वाला; २ प्राप्त होने वाला; जैसे—पारग, तसग; (आचा ; महा)।

गइ स्त्री [**गति**] १ ज्ञान, अवबोध ; (विमे २५०२)। २ प्रकार, भेद ; (से १, ११)। ३ गमन, चलन, देशान्तर-प्राप्ति ; (कुमा)। ४ जन्मान्तर-प्राप्ति, भवान्तर-गमन ; (ठा १, १ ; दं)। ५ देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, नरक और मुक्त जीव की अवस्था, देवादि-योनि ; (ठा ५, ३)। °**तस** पुं [°**त्रस**] अग्नि और वायु के जीव ; (कम्म ३, १३ ; ४, १६)। °**नाम** न [°**नामन्**] देवादि-गति का कारण-भूत कर्म ; (सम ६७)। °**प्पवाय** पुं [°**प्रपात**] १ गति की नियतता ; (पगण १६)। २ ग्रन्थांश-विशेष ; (भग ८, ७)।

गइंद पुं [**गजेन्द्र**] १ ऐरावण हाथी, इन्द्र-हस्ती ; २ श्रेष्ठ हाथी ; (गउड ; कुमा)। °**पय** न [°**पद**] गिरनार पर्वत पर का एक जल-तीर्थ ; (ती ३)।

गउ } पुं [**गो**] बैल, वृषभ, साँढ़ ; (हे १, १५८)।
गउअ } °**पुच्छ** पुंन [°**पुच्छ**] १ बैल का पूँछ; २ बाण-विशेष ; (कुमा)।

गउअ पुं [**गवय**] गो-तुल्य आकृति वाला जंगली पशु-विशेष ; (कुमा)।

गउआ स्त्री [**गो**] गैया, गौ ; (हे १, १५८)।

गउड पुं [**गौड**] १ स्वनाम-ख्यात देश, बंगाल का पूर्वी भाग ; (हे १, २०२ ; सुपा ३८६)। २ गौड देश का निवासी ; (हे १, २०२)। ३ गौड़ देश का राजा ; (गउड ; कुमा)। °**वह** पुं [°**वध**] वाक्पतिराज का बनाया हुआ प्राकृत-भाषा का एक काव्य-ग्रन्थ ; (गउड)।

गउण वि [**गौण**] अ-प्रधान, अ-मुख्य ; (दे १, ३)।

गउणी स्त्री [**गौणी**] शक्ति-विशेष, शब्द की एक शक्ति ; (दे १, ३)।

गउरव देखो **गारव** ; (कुमा; हे १, १६३)।

गउरविय वि [**गौरवित**] गौरव-युक्त किया हुआ, जिसका आदर—सम्मान किया गया हो वह; "तज्जणयाइं तत्थागयाइं थेवेहिं चेव दियहेहिं, गउरवियाइं रयणायरेण" (सुपा ३५६ ; ३६०)।

गउरी स्त्री [**गौरी**] १ पार्वती, शिव-पत्नी; (सुपा १०६)। २ गौर वर्ण वाली स्त्री ; ३ स्त्री-विशेष ; (कुमा)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] पार्वती का पुत्र, स्कन्द, कार्तिकेय; (सुपा ४०१)।

गंअ देखो **गय** = गत ; " भीया जहागयगइं पडिवज्ज गंए " (रंभा)।

गंग पुं [**गङ्ग**] मुनि-विशेष, द्विक्रिय मत का प्रवर्तक आचार्य; (ठा ७ ; विसे २४२५)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक जैन मुनि, जो षष्ठ वासुदेव के पूर्व-जन्म के गुरु थे; (स १५३)। २ नववें वासुदेव के पूर्वजन्म का नाम ; (पउम २०, १७१)। ३ इस नाम का एक जैन श्रेष्ठी ; (भग १६, ५)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] एक सार्थवाह की स्त्री का नाम ; (विपा १, ७)।

गंग देखो **गंगा**। °**प्पवाय** पुं [°**प्रपात**] हिमाचल पर्वत पर का एक महान् ह्रद, जहां से गंगा निकलती है ; (ठा २, ३)। °**सोअ** पुं [°**स्रोतस्**] गंगा नदी का प्रवाह ; (पि ८५)।

गंगली स्त्री [**दे**] मौन, चुप्पी ; (सुपा २७८ ; ४८७)।

गंगा स्त्री [**गङ्गा**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध नदी ; (कस ; सम २७ ; कप्प)। २ स्त्री-विशेष ; (कुमा)। ३ गोशालक के मत से काल-परिमाण-विशेष ; (भग १५)। ४ गंगा नदी की अधिष्ठायिका देवी; (आवम)। ५ भीष्मपितामह की माता का नाम ; (णाया १, १६)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] हिमाचल पर्वत पर स्थित ह्रद-विशेष, जहां से गंगा निकलती है ; (ठा ८)। °**कूड** न [°**कूट**] हिमाचल पर्वत का एक शिखर ; (ठा २, ३)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष, जहां गंगा-देवी का भवन है; (ठा २, ३)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] गंगा की अधिष्ठायिका देवी, देवी-विशेष; (इक)। °**वत्त** पुं [°**वर्त्त**] आवर्त-विशेष ; (कप्प)। °**सय** न [°**शत**] गोशालक के मत में एक प्रकार का काल-परिमाण ; (भग १५)। °**सागर** पुं [°**सागर**] प्रसिद्ध तीर्थ-विशेष, जहां गंगा समुद्र में मिलती है; (उत्त १८)।

गंगेअ पुं [**गाङ्गेय**] १ गंगा का पुत्र, भीष्मपितामह ; (णाया १, १६; वेणी १०४)। २ द्वैक्रिय मत का प्रवर्तक आचार्य ; (आचू १)। ३ एक जैन मुनि, जो भगवान् पार्श्वनाथ के वंश के थे ; (भग ६, ३२)।

गंछ } पुं [**दे**] वरुड, इस नाम की एक म्लेच्छ जाति ;
गंछय } (दे २, ८४)।

३ एक अर्थ के अधिकार वाली ग्रन्थ-पद्धति ; (मम १२६)।
गंडिल देखो **गंधिल** ; (इक)।
गंडिलावई देखो **गंधिलावई** ; (इक)।
गंडी स्त्री [**गण्डी**] १ सोनार का एक उपकरण ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। २ कमल की कर्णिका; (उत्त ३६)। °**तिंदुग** न [°**तिन्दुक**] यक्ष-विशेष; (ती ३८)। °**पय** पुं [°**पद**] हाथी वगैरः चतुष्पद जानवर ; (ठा ४, ४)। °**पोत्थय** पुंन [°**पुस्तक**] पुस्तक-विशेष ; (ठा ४, २)।
गंडीरी स्त्री [**दे**] गण्डेरी; ऊख का टुकड़ा ; (दे २, ८२)।
गंडीव न [**गाण्डीव**] १ अर्जन का धनुष; (वेणी ११२)।
गंडीव न [**दे. गाण्डीव**] धनुष, कार्मुक; (दे २, ८४ ; महा ; पाअ)।
गंडीवि पुं [**गाण्डीविन्**] अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (वेणी ५८ ।
गंडुअ न [**गण्डु**] ओसीसा, सिरहना; (महा)।
गंडुअ न [**गण्डुत**] तृण-विशेष ; (दे २, ७५)।
गंडुल पुं [**गण्डोल**] कृमि-विशेष, जो पेट में पैदा होता है ; (जी १५)।
गंडूपय पुं [**गण्डूपद**] जन्तु-विशेष ; (राज)।
गंडूल देखो **गंडुल** ; (पराह १, १—पत्र २३)।
गंडूस पुं [**गण्डूष**] पानी का कुल्ला ; (गा २७० ; सुपा ४४६), " बहुमइरागंडूसपाणं " (उप ६८६ टी)।
गंत देखो **गा**।
गंतव्व } देखो **गम**=गम्।
गंता }
गंतिय न [**गन्तृक**] तृण-विशेष; (पराण १—पत्र ३३)।
गंती स्त्री [**गन्त्री**] गाड़ी, शकट ; (धम्म १२ टी; सुपा २७७)।
गंतुं देखो **गम**=गम्।
गंतुंपच्चागया स्त्री [**गत्वाप्रत्यागता**] भिक्षा-चर्या-विशेष, जैन मुनिओं की भिक्षा का एक प्रकार ; (ठा ६)।
गंतुकाम वि [**गन्तुकाम**] जाने की इच्छा वाला ; (श्रा १४)। °**तुमण** वि [**गन्तुमनस्**] ऊपर देखा ; (वसु)।
गंतूण } देखो **गम**=गम्।
°**तूणं** }
गंथ देखो **गंठ**—ग्रन्थ्। गंथइ ; (पि ३३३)। **कर्म**— गंथीअंति ; (पि ५४८)।
गंथ पुं [**ग्रन्थ**] १ शास्त्र, सूत्र, पुस्तक ; (विसे ८६४ ; १३८३)। २ धन-धान्य वगैरः बाह्य और मिथ्यात्व, क्रोध, मान आदि आभ्यन्तर उपधि, परिग्रह ; (ठा २, १ ; बृह १ ; विसे २५७३)। ३ धन, पैसा ; (स २३६)। ४ स्वजन, संबन्धी लोग ; (पराह २, ४)। °**ाईअ** पुं [°**ातीत**] जैन साधु ; (सूअ १, ६)।
गंथि देखो **गंठि** ; (पराह १, ३—पत्र ४४)।
गंथिम देखो **गंठिम** ; (णाया १, १३)।
गंदिला स्त्री [**गन्दिला**] देखो **गंधिल** ; (इक)।
गंदीणी स्त्री [**दे**] क्रीड़ा—विशेष, जिसमें आँख बंद की जाती है ; (दे २, ८३)।
गंदुअ देखो **गेंदुअ** ; (षड्)।
गंध पुं [**गन्ध**] १ गन्ध, नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों की वास, महक ; (औप; भग ; हे १, १७७)। २ लव, लेश ; (से ६, ३)। ३ चूर्ण-विशेष ; (पराह १, १)। ४ वानव्यन्तर देवों की एक जाति ; (इक)। ५ न. देव-विमान-विशेष; (निर १, ४)। ६ वि. गन्ध-युक्त पदार्थ ; (सूअ १, ६)। °**उडी** स्त्री [°**कुटी**] गन्ध-द्रव्य का घर ; (गउड; हे १, ८)। °**कासाइया** स्त्री [°**काषायिका**] सुगन्धि कषाय रंग की साड़ी; (उवा; भग ६, ३३)। °**गुण** पुं [°**गुण**] गन्धरूप गुण ; (भग)। °**ट्टय** न [°**ाट्टक**] गन्ध-द्रव्य का चूर्ण ; (ठा ३, १—पत्र ११७)। °**ड्ढ** वि [°**ाढ्य**] गन्ध-पूर्ण, सुगन्ध-पूर्ण ; (पंचा २)। °**णाम** न [°**नामन्**] गन्ध का हेतुभूत कर्म-विशेष ; (अणु)। °**तेल्ल** न [°**तैल**] सुगन्धित तैल ; (कप्पू)। °**दव्व** न [°**द्रव्य**] सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य ; (उत्त १)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] देवी-विशेष, सौधर्म देवलोक की एक देवी ; (निर १, ४)। °**घाणि** स्त्री [°**घ्राणि**] गन्ध-तृप्ति; (णाया १, १—पत्र २५; औप)। °**नाम** देखो °**णाम** ; (सम ६७)। °**मय** पुं [°**मृग**] कस्तूरी-मृग, कस्तुरिया हरिन ; (सुपा २)। °**मंत** वि [°**मत्**] १ सुगन्धित, सुगन्ध-युक्त ; २ अतिशय गन्ध वाला, विशेष गन्ध से युक्त ; (ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °**मादण**, °**मायण** पुं [°**मादन**] १ पर्वत-विशेष, इस नाम का एक पहाड़ ; (सम १०३ ; पराह २, २ ; ठा २, ३—पत्र ६६)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर ; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ नगर-विशेष ; (इक)। °**वई**

स्त्री [°वती] भूतानन्द-नामक नागेन्द्र का आवास-स्थान ; (दीव)। °वट्टय न [°वर्तक] सुगन्धित लेप-द्रव्य ; (विपा १, ६) । °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] गन्ध-द्रव्य की बनाई हुई गोली ; (णाया १,१ ; औप) । °वह पुं [°वह] पवन, वायु ; (कुमा ; गा ५४२) । °वास पुं [°वास] १ सुगन्धित वस्तु का पुट ; २ चूर्ण-विशेष ; (सुपा ६७)। °समिद्ध वि [°समृद्ध] १ सुगन्धित, सुगन्ध-पूर्ण ; २ न. नगर-विशेष ; (आवम ; इक) । °सालि पुं [°शालि] सुगन्धित व्रीहि ; (आवम) । °हत्थि पुं [°हस्तिन्] उत्तम हस्ती, जिसको गन्ध से दूसरे हाथी भाग जाते हैं ; (सम १ ; पडि) । °हरिण पुं [°हरिण] कस्तुरिया हरन ; (कप्पू)। °हारग पुं [°हारक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश ; २ गन्धहारक देश का निवासी ; (पण्ह १, १ —पत्र १४) ।

गंधपिसाय पुं [दे] गन्धिक, पसारी ; (दे २, ८७) ।

गंधय देखो **गंध** ; (महा) ।

गंधलया स्त्री [दे] नासिका, घ्राण ; (दे २, ८५) ।

गंधव्व पुं [गन्धर्व] १ देव-गायन, स्वर्ग-गायक ; (उत्त १; सण) । २ एक प्रकार की देव-जाति, व्यंतर देवों की एक जाति; (पण्ह १, ४; औप) । ३ यक्ष-विशेष, भगवान् कुन्थु-नाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष ; (संति ८) । ४ न. मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१) । ५ नृत्य-युक्त गीत, गान ; (विपा १, २) । °कंठ न [°कण्ठ] रत्न की एक जाति; (राय) । °घर न [°गृह] संगीत-गृह, संगीतालय, संगीत का अभ्यास-स्थान; (जं १) । °णगर, °नगर न [°नगर] असत्य-नगर, संध्या के समय में आकाश में दिखाता मिथ्या-नगर, जो भावि उत्पात का सूचक है ; (अणु ; पव १६८) । °पुर न [°पुर] देखो °णगर ; (गउड)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष ; (सम ३५) । °विवाह पुं [°विवाह] उत्सव-रहित विवाह, स्त्री-पुरुष की इच्छा के अनुसार विवाह ; (सण) । °साला स्त्री [°शाला] गान-शाला, संगीत-गृह, संगीतालय; (वव १०) ।

गंधव्व वि [गान्धर्व] १ गंधर्व-संबधी, गंधर्व से संबन्ध रखने वाला ; (जं १ ; अभि ११५) । २ पुं. उत्सव-हीन विवाह, विवाह-विशेष; "गंधव्वेण विवाहेण सयमेव विवाहिया" (आवम) । ३ न. गीत, गान ; (पाअ) ।

गंधव्विअ वि [गान्धर्विक] १ गंधर्व-विद्या में कुशल ; (सुपा १९९) ।

गंधा स्त्री [गन्धा] नगरी-विशेष ; (इक) ।

गंधाण न [गन्धान] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

गंधार पुं [गन्धार] देश-विशेष, कन्धार ; (स ३८) । २ पर्वत-विशेष ; (स ३९) । ३ नगर-विशेष ; (स ३८) ।

गंधार पुं [गान्धार] स्वर-विशेष, गागिनी-विशेष; (ठा ७)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] १ सती-विशेष, कृष्ण वासुदेव की एक स्त्री ; (पडि ; अंत १५) । २ विद्या-देवी-विशेष ; (संति ६) । ३ भगवान् नमिनाथ की शासन-देवी ; (संति १०)।

गंधावइ } पुं [गन्धापातिन्] स्वनाम-प्रसिद्ध एक वृत्त
गंधावाइ } वैताढ्य पर्वत; (इक ; ठा २, ३—पत्र ६९; ८० ; ठा ४, २—पत्र २२३) ।

गंधि वि [गन्धिन्] गंध-युक्त, गंध वाला ; (कप्प ; गउड)।

गंधिअ वि [दे] दुर्गन्ध, खराब गन्ध वाला; (दे २, ८३) ।

गंधिअ पुं [गान्धिक] गन्ध-द्रव्य बेचने वाला, पसारी ; (दे २, ८७) ।

गंधिअ वि [गन्धिक] गंध-युक्त; "सुगन्धवरगन्धगन्धिए" (औप) । °साला स्त्री [°शाला] दारू वगैरः गन्ध वाली चीज की दुकान ; (वव ६) ।

गंधिअ वि [गन्धित] गन्ध-युक्त, गन्ध वाला; (स ३७२; गा ५४५ ; ८७२) ।

गंधिल पुं [गन्धिल] वर्ष-विशेष, विजय-क्षेत्र विशेष ; (ठा २, ३ ; इक) ।

गंधिलावई स्त्री [गन्धिलावती] १ क्षेत्र-विशेष, विजय-वर्ष-विशेष ; (ठा २, ३ ; इक) २ नगरी-विशेष; (इ ६१) । °कूड न [°कूट] १ गन्धमादन पर्वत का एक शिखर; (जं ४)। २ वैताढ्य पर्वत का शिखर-विशेष ; (ठा ६) ।

गंधिल्ली स्त्री [दे] छाया, छाँहो ; (उप १०३१ टी) ।

गंधुत्तमा स्त्री [गन्धोत्तमा] मदिरा, सुरा ; (दे २,८६) ।

गंधेल्ली स्त्री [दे] १ छाया, छाँही , २ मधु-मक्षिका ; (दे २, १००) ।

गंधोदग } न [गन्धोदक] सुगन्धित जल, सुगन्ध-वासित
गंधोदय } पानी ; (औप ; विपा १, ६) ।

गंधोल्ली स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा ; २ रजनी, रात ; (दे २, ९९) ।

गंप्पि } देखो **गम**=गम् ।
गंप्पिणु }

गंभीर वि [गम्भीर] १ गम्भीर, अस्ताघ, अ-तुच्छ, गहरा; (औप ; से ६, ४४ ; कप्प) । २ पुंन. गहन-स्थान, गहन

प्रदेश, जहां प्रतिशब्द उत्थित हो ; (विसे ३४०४ : बृह १) ३ पुं. रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३) । ४ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र ; (अंत ३) । ५ न. समुद्र के किनारे पर स्थित इस नाम का एक नगर; (सुर १३,३०) । °**पोय** न [°**पोत**] नगर-विशेष ; (णाया १, १७) । °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] महाविदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३) ।

गंभीरा स्त्री [**गम्भीरा**] १ गंभीर-हृदया स्त्री ; (वव ५)। २ मात्रा-छन्द का एक भेद ; (पिंग) । ३ क्षुद्र जंतु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष ; (पण्ण १) ।

गंभीरिअ न [**गाम्भीर्य**] गम्भीरता, गम्भीरपन ; (हे २, १०७) ।

गंभीरिम पुंस्त्री [**गाम्भीर्य**] ऊपर देखो ; (सण) ।

गगण न [**गगन**] आकाश, अम्बर ; (कप्प ; स ३४८) । °**णंदण** न [°**नन्दन**] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर ; (इक) । °**वल्लभ,** °**वल्लह** न [°**वल्लभ**] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर ; (राज ; इक) ।

गगणंग पुंन [**गगनाङ्ग**] छन्द-विशेष; (पिंग) ।

गग्ग पुं [**गर्ग**] १ ऋषि-विशेष ; २ गोत्र-विशेष, जो गौतम गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७) ।

गग्ग पुं [**गार्ग्य**] गर्ग गोत्र में उत्पन्न ऋषि-विशेष; (उत्त २६)।

गग्गर वि [**गद्गद**] १ गद्गद आवाज वाला; अति अस्पष्ट वक्ता; (प्राप्र) । २ आनंद या दुःख से अव्यक्त कथन; (हे १, २१९ ; कुमा) ।

गग्गरी स्त्री [**गर्गरी**] गगरी, छोटा घड़ा; (दे २, ८६; सुपा ३३६) ।

गग्गिर देखो **गग्गर**; "रुज्जगग्गिरं गेअं" (गा ८४३; सण) ।

गच्छ सक [**गम्**] १ जाना, गमन करना। २ जानना । ३ प्राप्त करना। गच्छइ ; (प्राप्र ; षड्) । भवि— गच्छं ; (हे ३, १७१ ; प्राप्र)। वकृ—**गच्छंत, गच्छमाण** ; (सुर ३, ६६ ; भग०१२, ६) । संकृ—**गच्छिअ** ; (कुमा)। हेकृ—**गच्छित्तए** ; (पि ५६८) ।

गच्छ पुंन [**गच्छ**] १ समूह, सार्थ, संघात ; (स १४८) । २ एक आचार्य का परिवार; (औप; सं ४७) । ३ गुरु-परिवार; "गुरुपरिवारो गच्छो, तत्थ वसंताण णिज्जरा विउला" (पंचव; धर्म ३) । °**वास** पुं [°**वास**] गुरु-कुल में रहना, गच्छ-परिवार के साथ निवास; (धर्म ३) । °**विहार** पुं [°**विहार**] गच्छ की समाचारी, गच्छ का आचार; (वव १) । °**सारणा** स्त्री [°**सारणा**] गच्छ का रक्षण ; (राज) ।

गच्छागच्छिं अ. गच्छ २ से होकर (औप) ।

गच्छिल्ल वि [**गच्छवत्**] गच्छ वाला, गच्छ में रहने वाला ; (बृह १) ।

गज देखो **गय** = गज ; (षड् ; प्रासू १७१; इक) । °**सार** पुं [°**सार**] एक जैन मुनि, दण्डक-ग्रन्थ का कर्ता; (दं ४७) ।

गज्ज पुं [**दे**] जव, यव, अन्न-विशेष ; (दे २, ८१ ; पाअ)।

गज्ज न [**गद्य**] छन्द-रहित वाक्य, प्रबन्ध ; (ठा ४, ४—पत्र २८७) ।

गज्ज अक [**गर्ज्**] गरजना, घड़घड़ाना । गज्जइ ; (हे ४, ६८) । वकृ—**गज्जंत, गज्जयंत** ; (सुर २, ७५ ; रयण ५८) ।

गज्जण न [**गर्जन**] १ गर्जन, भयानक ध्वनि, मेघ या सिंह का नाद । २ नगर-विशेष ; (उप ७६५) ।

गज्जणसद्द पुं [**दे. गर्जनशब्द**] पशु और हाथी का आवाज; (दे २, ८८) ।

गज्जभ पुं [**गर्जभ**] पश्चिमोत्तर दिशा का पवन ; (आवम)।

गज्जर पुं [**दे**] कन्द-विशेष, गाजर, गजरा, इसका खाना धर्म-शास्त्र में निषिद्ध है ; (श्रा १६ ; जी ६) ।

गज्जल वि [**गर्जल**] गर्जन करने वाला ; (निचू ७) ।

गज्जह देखो **गज्जभ** ; (आवम) ।

गज्जि स्त्री [**गर्जि**] गर्जन, हाथी वगैरः की आवाज; (कुमा सुपा ८६ ; उप पृ ११७) ।

गज्जिअ वि [**गर्जित**] १ जिसने गर्जन किया हो वह, स्तनित ; (पाअ) । २ न. गर्जन, मेघ वगैरः की आवाज ; (पण्ह १, ३) ।

गज्जित्तु, **गज्जिर** वि. [**गर्जितृ**] गर्जन करने वाला, गरजने वाला; (ठा ४,४—पत्र २६९ ; गा ५५) ।

गज्जिल्लिअ न [**दे**] १ गुदगुदी, गुदगुदाहट ; २ अंग-स्पर्श से होने वाला रोमांच, पुलक ; (षड्) ।

गज्झ वि [**ग्राह्य**] ग्रहण-योग्य ; (स १४० ; विसे १७०७)।

गट्टण पुं [**गट्टन**] धरणेंद्र की नाट्य-सेना का अधिपति ; (राज) ।

गट्ठिआ स्त्री [**दे**] गठिया, गुटली; "अंबगट्ठिया" (निचू १५)।

गड न [**गड**] १ विस्तीर्ण शिला, मोटा पत्थर ; (दे २, ११०) । २ गर्त, खाई ; (सुर १३, ४१) ।

गड (मा) देखो **गय**=गत ; (प्राप्र)।

गडयड पुंन [**दे**] गर्जन, भयानक ध्वनि, हाथी वगैरः की आवाज ; "ता गडयडं कुणंतो, समागश्रो गयवरो तत्थ", "इत्थंतरे सयं .चिय, सो जक्खो गडयडं पकुव्वंतो" (सुपा २८१ ; ५४२)।

गडयड अक [**दे**] गर्जन करना, भयानक आवाज करना। वकृ—**गडयडंत** ; (सुपा १६४)।

गडयडी स्त्री [**दे**] वज्र-निर्घोष, गड़गड़ आवाज, मेघ-ध्वनि ; (दे २, ८५ ; सण)।

गडवड न [**दे**] गड़बड़, गोलमाल ; (सुपा ५४१)।

गडिअ } देखो **गम**=गम्।
गडुअ }

गडुल न [**दे**] चावल वगैरः का धावन-जल ; (धर्म २)।

ड्डु पुंस्त्री [**गर्त्त**] गड़हा, गड्डा ; (हे २, ३५ ; प्राप्र ; सुपा ११४)। स्त्री—**गड्डा** ; (हे १, ३५)।

गड्डरिगा } स्त्री [**दे**] भेडी, मेषी, ऊर्णायु; "गड्डरिगपवाहेणं
गड्डरिया } गयाणुगइयं जणं वियाणंतो" (धम्म ; सुश्र १, ३, ४)।

गड्डरी स्त्री [**दे**] १ छागी, अजा, बकरी; (दे २, ८४)। २ भेडी, मेषी ; (सट्टि ३८)।

गड्डह पुंस्त्री [**गर्दभ**] गदहा, गधा, खर ; (हे २, ३७)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] रावण, दशानन ; (कुमा)।

गड्डिआ } स्त्री [**दे**] गाड़ी, शकट ; (ओघ ३८६ टी ;
गड्डी } दे २, ८१ ; सुपा २५२)।

गड्डु न [**दे**] शय्या, बिछौना ; (दे २, ८१)।

गढ देखो **घड**=घट्। गढइ ; (हे ४, ११२)।

गढ पुंस्त्री [**दे**] गढ, दुर्ग, किला, कोट ; (दे २, ८१ ; सुपा २५ ; १०५)। स्त्री—**गढा** ; (कुमा)।

गढिअ वि [**घटित**] गढ़ा हुआ, जटित ; (कुमा)।

गढिअ वि [**ग्रथित**] १ गूँथा हुआ, निबद्ध ; "नेहनिगड-गढियाणं" (उप ६८६ टी ; पण्ह १, ४)। २ रचित, गुम्फित, निर्मित ; (ठा २, १)। ३ गृद्ध, आसक्त ; (आचा २, २, २ ; पण्ह १, २)।

गण सक [**गणय्**] १ गिनना, गिनती करना। २ आदर करना। ३ अभ्यास करना, आवृत्ति करना। ४ पर्यालोचन करना। गणइ, गणेइ ; (कुमा ; महा)। वकृ—**गणंत**, **गणेंत** ; (पंचा ४ ; से ४, १५)। कृ—**गणेयव्व** ; (उप ५५५)।

गण पुं [**गण**] १ समूह, समुदाय, यूथ, थोक ; (जी ३४ ; कुमा ; प्रासू ४ ; ७५ ; १५१)। २ गच्छ, समान आचार व्यवहार वाले साधुओं का समूह; (कप्प)। ३ छन्दः-शास्त्र प्रसिद्ध मात्रा-समूह ; (पिंग)। ४ शिव का अनुचर; (पाअ ; कुमा)। ५ मल्लों का समुदाय ; (अणु)। °**ओ** अ [°**तस्**] अनेकशः, बहुशः; (सुअ २, ६)। °**नायग** पुं [°**नायक**] गण का मुखिया ; (णाया १, १)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया ; (सुपा २, १०)। २ गणधर, जिन-देव का प्रधान शिष्य ; (पउम १२, ६)। ३ आचार्य, सूरि ; (सार्ध २३)। °**भाव** पुं [°**भाव**] विवेक-विशेष ; (गउड)। °**राय** पुं [°**राज**] १ सामन्त राजा ; (भग ७, ६)। २ सेनापति ; (आव ३ ; कप्प)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ गण का स्वामी ; २ गणेश, गजानन, शिव-पुत्र; (गा ३७२ ; गउड)। ३ जिन देव का मुख्य शिष्य; गणधर ; (सिग्ध २)। °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] गण का मुखिया, गण-धर ; (उप २८० टी)। °**हर** पुं [°**धर**] १ जिन-देव का प्रधान शिष्य ; (सम ११३)। २ अनुपम ज्ञानादि-गुण-समूह का धारण करने वाला जैन साधु, आचार्य वगैरः ; "सेज्जंभवं गणहरं" (आवम ; पव २७६)। °**हरिंद** पुं [°**धरेन्द्र**] गणधरों में श्रेष्ठ, प्रधान गणधर ; (पउम ३, ४३ ; ५८, १)। °**हारि** पुं [°**धारिन्**] देखो °**हर** ; (गण २३; सार्ध १)। °**ाजीव** पुं [°**ाजीव**] गण के नाम से निर्वाह करने वाला; (ठा ५, १)। °**ावच्छेइय**, °**ावच्छेद्य**, °**ावच्छेयय** पुं [°**ावच्छेदक**] साधु-गण के कार्य की चिन्ता करने वाला साधु ; (आचा २, १, १० ; ठा ३, ३ ; कप्प)। °**ाहिवइ** पुं [°**ाधिपति**] १ शिव-पुत्र, गजानन, गणेश ; (गा ४०३ ; पाअ)। २ जिन-देव का प्रधान शिष्य ; (पउम २६, ४)।

गणग पुं [**गणक**] १ ज्योतिषी, जोशी, ज्योतिष-शास्त्र का जानकार ; (णाया १, १)। २ भंडारी, भाण्डागारिक ; (णाया १, १—पत्र १६)।

गणण न [**गणन**] गिनती, संख्यान ; (वव १)।

गणणा स्त्री [**गणना**] गिनती, संख्या, संख्यान ; (सुर २, १३२ ; प्रासू १०० ; सूअ १, २)।

गणणाइआ स्त्री [दे. **गण-नायिका**] पार्वती, चण्डी, शिव-पत्नी ; (दे २, ८७)।

गणय देखो **गणग** ; (औप ; सुपा २०३)।

गणसम वि [**दे**] गोष्ठी-रत, गाठ में लीन ; (दे २, ८६) ।

गणायमह पुं [**दे**] विवाह-गणक ; (दे २, ८६) ।

गणाविअ वि [**गणित**] गिनती कराया हुआ; (स ६२६)।

गणि वि [**गणिन्**] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया। स्त्री—**गणिणी**; (सुपा ६०२) । २ पुं. आचार्य, गच्छ-नायक, साधु-समुदाय का नायक ; (ठा ८) । ३ जिन-देव का प्रधान साधु-शिष्य ; (पउम ६१, १०) । ४ परिच्छेद, निश्चय, सिद्धान्त ; (गंदि) । °**पिडग** न [°**पिटक**] १ बारह मुख्य जैन आगम ग्रन्थ, द्वादशाङ्गी ; (सम १ ; १०६) । २ निर्युक्ति वगैरः से युक्त जैन आगम; (औप)। ३ पुं. यक्ष-विशेष, जिन-शासन का अधि-ष्ठायक देव ; (संति ४) । ४ निश्चय-समूह, सिद्धान्त-समूह; (गंदि) । °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] १ शास्त्र-विशेष ; २ ज्योतिष और निमित्त शास्त्र का ज्ञान ; (गंदि) ।

गणिम न [**गणिम**] गिनती से बेची जाती वस्तु, संख्या पर जिसका भाव हो वह ; (श्रा १८ ; णाया १, ८) ।

गणिअ वि [**गणित**] १ गिना हुआ; २ न. गिनती, संख्या; (ठा ६ ; जं २) । ३ जैन साधुओं का एक कुल ; (कप्प) । ४ अंक-गणित, गणित-शास्त्र ; (गंदि ; अणु)। °**लिवि** स्त्री [°**लिपि**] लिपि-विशेष, अंक-लिपि ; (सम ३५) ।

गणिय पुं [**गणिक**] गणित-शास्त्र का ज्ञाता ; "गणियं जाणइ गणिओ" (अणु) ।

गणिया स्त्री [**गणिका**] वेश्या, गणिका ; (श्रा १२ ; विपा १, २) ।

गणिर वि [**गणयितृ**] गिनती करने वाला; (गा २०८) ।

गणेत्तिआ) स्त्री [**दे**] १ रुद्राक्ष का बना हुआ हाथ का
गणेत्ती) आभूषण-विशेष ; (णाया १, १६—पत्र २१३; औप ; भग ; महा) । २ अक्ष-माला ; (दे २, ८१)।

गणेसर पुं [**गणेश्वर**] १ गण का नायक । २ छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

गत्त न [**गात्र**] देह, शरीर ; (औप ; पाअ ; सुर २, १०१) ।

गत्त देखो **गड्ड** ; (भग १५) । स्त्री—**गत्ता** ; (सुपा २१४) ।

गत्त न [**दे**] १ ईषा, चौपाई की लकड़ी विशेष ; २ पंक, कर्दम ; (दे २, ६६) । ३ वि. गत, गया हुआ; (षड्) ।

गत्ताडी) स्त्री [**दे**] १ गवादनी, वनस्पति-विशेष ; (दे
गत्ताडी) २, ८२) । २ गायिका, गाने वाली स्त्री; (षड्; दे २, ८२) ।

गत्थ वि [**ग्रस्त**] कवलित, ग्रास किया हुआ ; "अइमहच्छ-लोभगच्छा (? त्था)" (पगह १, ३—पत्र ४४ ; नाट—चैत १४६) ।

गद सक [**गद्**] बोलना, कहना । वकृ—**गदंत**; (नाट—चैत ४५)।

गद्दतोय पुं [**गर्दतोय**] लोकान्तिक देवों की एक जाति ; (सम ८५ ; णाया १, ८) ।

गद्दभ पुं [**दे**] कटु-ध्वनि, कर्ण-कटु आवाज ; (दे २, ८२ ; पाअ ; स १११ ; ४२०) ।

गद्दभ देखो **गद्दह**=गर्दभ ; (आक) ।

गद्दभय देखो **गद्दहय** ; (आचा २, ३, १ ; आवम) ।

गद्दभाल पुं [**गर्दभाल**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक परिव्राजक ; (भग) ।

गद्दभालि पुं [**गर्दभालि**] एक जैन मुनि; (ती २५) ।

गद्दभिल्ल पुं [**गर्दभिल्ल**] उज्जयिनी का एक राजा ; (निचू १० ; पि २६१ ; ४००) ।

गद्दभी स्त्री [**गर्दभी**] १ गधी, गदही ; (पि २६१) । २ विद्या-विशेष ; (काल) ।

गद्दह पुं [**गर्दभ**] १ गदहा, गधा, खर ; (सम ५० ; दे २, ८० ; पाअ ; हे २, ३७) । २ इस नाम का एक मन्त्रि-पुत्र ; (बृह १) ।

गद्दह न [**दे**] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल ; (दे २,८३) ।

गद्दहय पुं [**गर्दभक**] १ क्षुद्र जन्तु-विशेष, जो गो-शाला वगैरः में उत्पन्न होता है; (जी १७) । २ देखो **गद्दह** ; (नाट) ।

गद्दही देखो **गद्दभी** ; (नाट—मृच्छ ५८ ; निचू १०) ।

गद्दिअ वि [**दे**] गर्वित, गर्व-युक्त ; (दे २, ८३) ।

गद्ध पुं [**गृध्र**] पक्षि-विशेष, गीध, गिद्ध ; (औप) ।

गन्न वि [**गण्य**] १ माननीय, आदरास्पद; "हियमप्पणो फरेंतो, कस्स न होइ गरुओ गुरुगन्नो", "सव्वो गुणेहि गन्नो" (उव) । २ न. गणना, गिनती ; "मुल्लस्स कुणइ गन्नं" (सुपा २५३) ।

गब्भ पुं [**गर्भ**] १ कुक्षि, पेट, उदर ; (ठा ५, १)। २ उत्पत्ति-स्थान, जन्म-स्थान ; (ठा २, ३)। ३ भ्रूण, अन्तरापत्य ; (कप्प)। ४ मध्य, अन्तर, भीतर का ; (णाया १, ८)। °**करा** स्त्री [°**करी**] गर्भाधान करने वाली विद्या-विशेष (सूत्र २, २)। °**घर** न [°**गृह**] भीतर का घर, घर का भीतरी भाग ; (णाया १, ८)। °**ज** वि [°**ज**] गर्भ में उत्पन्न होने वाला प्राणी, मनुष्य, पशु वगैरः (पउम १०२, ६७)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ गर्भ में रहने वाला ; २ गर्भ से उत्पन्न होने वाला मनुष्य वगैरः ; (ठा २, २)। °**मास** पुं [°**मास**] कार्तिक से लेकर माघ तक का महीना ; (वव ७)। °**य** देखो °**ज** ; (जी २३)। °**वई** स्त्री [°**वती**] गर्भिणी स्त्री ; (सुपा २७६)। °**वक्कंति** स्त्री [°**व्युत्क्रान्ति**] १ गर्भाशय में उत्पत्ति; (ठा २, ३)। °**वक्कंतिअ** वि [°**व्युत्क्रान्तिक**] गर्भाशय में जिसकी उत्पत्ति होती है वह ; (सम २ ; २५)। °**हर** देखो **घर** ; (सुर ६, २१ ; सुपा १८२)।

गब्भर न [**गह्वर**] १ कोटर, गुहा; २ गहन, विषम स्थान; (आव ४ ; पि ३३२)।

गब्भिज्ज पुं [**दे. गर्भज**] जहाज का निम्न-श्रेणिस्थ नौकर ; " कुच्छिधारकन्नधारगब्भिज(? ज्ज)संजत्ताणावावाणियगा " (णाया १, ८—पत्र १३३ ; राज)।

गब्भिण } वि [**गर्भित**] १ जिसको गर्भ पैदा हुआ हो
गब्भिय } वह, गर्भ-युक्त ; (हे १, २०८ ; प्राप्र ; णाया १, ७)। २ युक्त, सहित ; " वेडिसदलनीलभित्तिगब्भिणयं " (कुमा ; षड्)।

गब्भिल्ल देखो **गब्भिज्ज** ; (णाया १, १७—पत्र २२८)।

गम सक [**गम्**] १ जाना, गति करना, चलना। २ जानना, समझना। ३ प्राप्त करना। भूका—गमिही; (कुमा)। कर्म-गम्मइ, गमिज्जइ; (हे ४,२४९)। कवकृ—**गम्ममाण**; (स ३४०)। संकृ—**गंतुं, गमिअ, गंता, गंतूण, गंतूणं**; (कुमा ; षड् ; प्राप्र ; औप ; कप्प ;), **गडुअ, गडिअ, गदुअ** (शौ) ; (हे ४, २७२; पि ५८१; नाट—मालती ४०), **गमेप्पि, गमेप्पिणु, गंप्पि, गंप्पिणु** (अप); (कुमा)। हेकृ—**गंतुं** ; (कप्प; श्रा १४)। कृ—**गंतव्व, गमणिज्ज, गमणीअ**; (णाया १, १; गा २४९ ; उत्र; भग ; नाट)।

गम सक [**गमय्**] १ ले जाना। २ व्यतीत करना, पसार करना, गुजारना। गमेंति ; (गउड)। "बुद्दा ! मुद्दा मा दियहे गमेह" (सत ४)। कर्म—गमिज्जंति; (गउड)। वकृ—**गमंत** ; (सुपा २०२)। संकृ—**गमिऊण**, (पि) हेकृ—**गमित्तए** ; (पि ५७८)।

गम पुं [**गम**] १ गमन, गति, चाल ; (उप २२० टी)। २ प्रवेश ; (पउम १, २९)। ३ शास्त्र का तुल्य पाठ, एक तरह का पाठ, जिसका तात्पर्य भिन्न हो; (दे १, १; विसे ५४९ ; भग)। ४ व्याख्या, टीका ; (विसे ९१३)। ५ बोध, ज्ञान, समझ ; (अणु ; णंदि)। ६ मार्ग, रास्ता ; (ठा ७)।

गमग वि [**गमक**] बोधक, निश्चायक ; (विसे ३१५)।

गमण न [**गमन**] गमन, गति ; (भग ; प्रासू १३२)। २ वेदन, बोध ; (णंदि)। ३ व्याख्यान, टीका ; ४ पुष्य वगैरः नव नक्षत्र ; (राज)।

गमणया } स्त्री [**गमन**] गमन, गति ; "लोगंतगमणयाए"
गमणा } (ठा ४, ३)। "पायवंदए पहारित्थ गमणाए" (णाया १, १—पत्र २९)।

गमणिज्ज देखो **गम**=गम्।

गमणिया स्त्री [**गमनिका**] १ संक्षिप्त व्याख्यान, दिग्-दर्शन ; (राज)। २ गुजारना, अतिक्रमण ; "कालगमणिया एत्थ उवाओ" (उप ७२८ टी)

गमणी स्त्री [**गमनी**] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है ; (णाया १, १६—पत्र २१३)। २ जूता; "सव्वोवि जणो जलं विगाहिंतो उत्तारइ गमणीओ चरणाहिंतो" (सुपा ६१०)।

गमणीअ देखो **गम** = गम्।

गमय देखो **गमग** ; (विसे २९७३)।

गमाव देखो **गम** = गमय्। गमावइ ; (सण)।

गमिद वि [**दे**] १ अपूर्ण ; २ गूढ ; ३ स्खलित ; (षड्)।

गमिय वि [**गमित**] १ गुजारा हुआ, अतिक्रांत ; (गउड)। २ ज्ञापित, बोधित, निवेदित ; (विसे ५५६)।

गमिय न [**गमिक**] शास्त्र-विशेष, सदृश पाठ वाला शास्त्र; "भंग-गणियाइं गमियं सरिसगमं च कारणवसेण" (विसे ५४९ ; ५५४)।

गमिर वि [**गन्तृ**] जाने वाला; (हे २, १४५)।

गमेप्पि } देखो **गम**=गम्।
गमेप्पिणु }

गमेस देखो **गवेस**। गमेसइ; (हे ४, १८९)। गमेंति; (कुमा)।

गम्म वि [**गम्य**] १ जानने योग्य; २ जो जाना जा सके; (उवर १७०; सुपा ४२६) ३ हराने योग्य, आक्रमणीय; (सुर २, १२९; १५, १४४) ४ जाने योग्य; ५ भोगने योग्य स्वपत्नी वगैरः; (सुर १२, ५२)।

गम्ममाण देखो **गम**=गम्।

गय वि [**दे**] १ घूर्णित, भ्रमित, घुमाया गया; (दे २, ८६; षड्)। २ मृत, मरा हुआ, निर्जीव; (दे २, ८६)।

गय वि [**गत**] १ गया हुआ; (सुपा ३३४)। २ अतिक्रान्त, गुजरा हुआ; (दे १, ५६)। ३ विज्ञात, जाना हुआ; (गउड)। ४ नष्ट, हत; (उप ७२८ टी)। ५ प्राप्त; "आवईगयंपि सुहए" (प्रासू ८३; १०७)। ६ स्थित, रहा हुआ; "मणगयं" (उत्त १)। ७ प्रविष्ट, जिसने प्रवेश किया हो; (ठा ४, १)। ८ प्रवृत्त; (सूअ १, १, १)। ९ व्यवस्थित; (औप)। १० न. गति, गमन; "उसभो गइदमयगलपुलत्तियगयविक्कमो भयवं" (वपु; सुपा ५७८; आचा)। °**पाण** वि [°**प्राण**] मृत, मरा हुआ; (श्रा २७)। °**राय** वि [°**राग**] राग-रहित, वीतराग, निरीह; (उप ७२८ टी)। °**वइया**, °**वई** स्त्री [°**पतिका**] १ विधवा, रांड़; (औप; पउम २९, ४२)। २ जिसका पति विदेश गया हो वह स्त्री; प्रोषित-भर्तृका; (गा ३३२; पउम २९, ४२)। °**वय** वि [°**वयस्**] वृद्ध, बुड्ढा; (पाअ)। °**णुगइअ** वि [°**ानुगतिक**] अंध-परम्परा का अनुयायी, अंध-श्रद्धालु; (उवर ४६

गय पुं [**गज**] १ हाथी, हस्ती, कुञ्जर; (अणु; औप; प्रासू १५४; सुपा ३३४)। २ एक अंतकृत् जैन मुनि, गज-सुकुमाल मुनि; (अंत ३)। ३ इस नाम का एक शेठ; (उप ७६८टी)। ४ रावण का एक सुभट; (पउम ५९, २)। °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष, कुरु देश का प्रधान नगर, हस्तिनापुर; (उप १०१४; महा; सण)। °**कण्ण**, °**कन्न** पुं [°**कर्ण**] १ द्वीप-विशेष; २ उसमें रहने वाला; (जीव ३; ठा ४, २)। °**कलभ** पुं [°**कलभ**] हाथी का बच्चा; (राय)। °**गय** वि [°**गत**] हाथी ऊपर आरूढ़; (औप)। °**ग्गपय** पुं [°**ाग्रपद**] पर्वत-विशेष; (आक)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] हाथी ऊपर स्थित; (पउम ८, ८९)। °**पुर** देखो °**उर**; (सूअ १, ५, १)। °**बंधय** पुं [°**बन्धक**] हाथी को पकड़ने वाली जाति; (सुपा ६४२)। °**मारिणी** स्त्री [°**मारिणी**] वनस्पति, विशेष-गुच्छ विशेष; (पण्ण १—पत्र ३२)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ गणेश, गणपति, शिव-पुत्र; (पाअ)। २ यक्ष-विशेष; (गण ११)। °**राय** पुं [°**राज**] प्रधान हाथी, श्रेष्ठ हस्ती; (सुपा ३८९)। °**वइ** पुं [°**पति**] गजेंद्र, श्रेष्ठ हस्ती; (णाया १ १६; सुपा २८९)। °**वर** पुं [°**वर**] प्रधान हाथी। °**वरारि** पुं [°**वरारि**] सिंह, शार्दूल, वनराज; (पउम १७, ७९)। °**वहू** स्त्री [°**वधू**] हथिनी, हस्तिनी; (पाअ)। °**वीही** स्त्री [°**वीथी**] शुक्र वगैरः महा-ग्रहों का चार-क्षेत्र-विशेष; (ठा ९)। °**ससण** पुं [°**श्वसन**] हाथी की सूँढ; (औप)। °**सुकुमाल** पुं [°**सुकुमाल**] एक प्रसिद्ध जैन मुनि, उसी भव में मुक्ति-गत जैन साधु-विशेष; (अंत, पडि)। °**ारि** पुं [°**ारि**] सिंह, पञ्चानन; (भवि)। °**ारोह** पुं [°**ारोह**] हस्तिपक, महावत; (पाअ)।

गय पुं [**गद**] रोग, बिमारी; (औप; सुपा ५७८)।

गयंक पुं [**गजाङ्क**] देवों की एक जाति, दिक्कुमार देव; (औप)।

गयंद पुं [**गजेन्द्र**] श्रेष्ठ हाथी; (गउड)।

गयण न [**गगन**] गगन, आकाश, अम्बर; (हे २, १६४; गउड)। °**गइ** पुं [°**गति**] एक राज-कुमार, (दंस)। °**चर** वि [°**चर**] आकाश में चलने वाला, पक्षी, विद्याधर वगैरः (सुपा २५०)। °**मंडल** पुं [°**मण्डल**] एक राजा; (दंस)।

गयणरइ पुं [**दे**] मेघ, मेह, बादल; (दे २, ८८)।

गयणिंदु पुं [**गगनेन्दु**] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४५)।

गयसाउल } **गयसाउल्ल** } वि [**दे**] विरक्त, वैरागी (दे २, ८७; षड्)

गया स्त्री [**गदा**] लोहे का या पाषाण का अस्त्र-विशेष, लोहे का मुग्दर या लाठी; (राय)। °**हर** पुं [°**धर**] वासुदेव; (उत्त ११)।

गया स्त्री [**गया**] स्वनाम-प्रसिद्ध नगर-विशेष; (उप २५१)।

°**गर** वि [°**कर**] करने वाला, कर्ता; (सण)।

गर पुं [**गर**] १ विष-विशेष, एक प्रकार का जहर; (निचू१)। २ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध बवादि करणों में से एक; (विसे ३३४८)

°**गरण** देखो **करण**; (रयण ६३)।

गरल न [**गरल**] १ विष, जहर; (पाअ प्रासू ३९)। २ रहस्य; ३ वि. अव्यक्त, अस्पष्ट; "अ-गरलाए अ-मम्मणाए"; (औप)।

गरलिगाबद्ध वि [**गरलिकाबद्ध**] निक्षिप्त, उपन्यस्त ; (निचू १)।

गरह सक [**गर्ह्**] निन्दा करना, घृणा करना। गरहइ; गरहह; (भग)। वकृ—**गरहंत**; (द्र १५)। कवकृ—**गरहिज्जमाण**; (णाया १, ८)। संकृ—**गरहित्ता**; (आचा २, १५)। हेकृ-**गरहित्तए** ; (कस; ठा २, १)। कृ—**गरहणिज्ज, गरहणीय, गरहियव्व** ; (सुपा १८४ ; ३७६ ; पराह २, १)।

गरहण न [**गर्हण**] निन्दा, घृणा ; (पि १३२)।

गरहणया, **गरहणा** स्त्री [**गर्हणा**] निन्दा, घृणा ; (भग १७, ३; औप ; पराह २, १)।

गरहा स्त्री [**गर्हा**] निन्दा, घृणा ; (भग)।

गरहिअ वि [**गर्हित**] निन्दित, घृणित ; (सं ६३ ; द ३३ ; सण)।

°**गरिअ** वि [**कृत**] किया हुआ, निर्मित ; (दे ७, ११)।

गरिट्ठ वि [**गरिष्ठ**] अति गुरु, बड़ा भारी ; (सुपा १० ; १२८ ; प्रासु १५४)।

गरिम पुंस्त्री [**गरिमन्**] गुरुता, गुरुत्व, गौरव ; (हे १, ३५ ; सुपा २३ ; १०६)।

गरिह देखो **गरह**। गरिहइ , गरिहामि ; (महा ; पडि)।

गरिह पुं [**गर्ह**] निन्दा, गर्हा ; (प्राप्र)।

गरिहा स्त्री [**गर्हा**] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा ; (ओघ ७६१ ; स १६०)।

गरु देखो **गुरु** ; "गरुयरगत्ताए खिविऊण" (सुपा २१४)।

गरुअ वि [**गुरुक**] गुरू, बड़ा, महान् ; (हे १, १०६ ; प्राप्र ; प्रासू ३६)।

गरुअ सक [**गुरुकाय्**] गुरू करना, बड़ा बनाना। गरुएइ ; (पि १२३)।

> "हंसाण सरेहिं सिरी, सारिज्जेइ अह सराण हंसेहिं।
> अरणण्णं चिअ एए, अप्पाणं णवर गरुअंति"
> (हेका २५५)।

गरुआ, **गरुआअ** अक [**गुरुकाय्**] १ बडा बनना। २ बड़े की तरह आचरण करना। गरुआइ, गरुआअइ; (हे ३, १३८)।

गरुइअ वि [**गुरुकित**] बड़ा किया हुआ ; (से ६, २० ; गउड)

गरुई, **गरुवी** स्त्री [**गुर्वी**] बड़ी, ज्येष्ठा, महती ; (हे १,१०७; प्राप्र ; निचू १)।

गरुक्क देखो **गरुअ** ; "णवजोव्वणरूअपसाहिणा सिंगारगुणगरुक्केण" (प्राप)।

गरुड देखो **गरुल** ; (संति १ ; स२६५; पिंग)। छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**त्थ** न [°**स्त्र**] अस्त्र-विशेष, उरगास्त्र का प्रतिपत्ती अस्त्र ; (पउम १२, १३० ; ७१, ६६)। °**द्धय** पुं [°**ध्वज**] विष्णु, वासुदेव ; (पउम ६१, ५७)। °**वूह** पुं [°**व्यूह**] सेना की एक प्रकार की रचना ; (महा ; पि २४०)।

गरुडंक पुं [**गरुडाङ्क**] १ विष्णु, वासुदेव ; २ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ७)।

गरुल पुं [**गरुड**] १ पक्षि-राज, पक्षि-विशेष ; (पराह १, १)। २ यक्ष-विशेष, भगवान् शान्तिनाथ का शासन-यक्ष ; (संति ८)। ३ भवनपति देवों की एक जाति, सुपर्णकुमार देव; (पराह १, ४)। ४ सुपर्णकुमार देवों का इन्द्र , (सूअ १, ६)। °**केउ** पुं [°**केतु**] देखो °**ज्झय** ; (राज)। °**ज्झय**, °**द्धय** पुं [°**ध्वज**] १ गरुड़ पक्षी के चित्र वाली ध्वजा ; (राय)। २ वासुदेव कृष्ण ; ३ देव-जाति विशेष ; सुपर्णकुमार देव ; (आवम; सम ; पि)। °**व्वूह** देखो **गरुड-वूह** ; (जं २) ; °**सत्थ** न [°**शस्त्र**] गरुड़ास्त्र, अस्त्र-विशेष ; (महा)। °**सण** न [°**सन**] आसन-विशेष ; (राय)। °**ववाय** न [°**पपात**] शास्त्र-विशेष, जिसका याद करने से गरुड़ देव प्रत्यक्ष होता है ; (ठा १०)। देखो **गरुड**।

गरुवी देखो **गरुई** ; (कुमा)।

गल अक [**गल्**] १ गल जाना, सड़ना। २ खतम होना, समाप्त होना। ३ झरना, टपकना, गिरना। ४ पिघलना, नरम होना। ५ सक. गिराना, टपकाना। "जाव रत्ती गलइ" (महा)। वकृ—" नवेण रस-सोएहिं **गलंतम्** असुइरसं " (महा ; सुर ४, ६८ ; सुपा २०४)। **गलिंत** ; (पराह १, ३; प्रासू ७२)। प्रयो, वकृ—**गलावेमाण**; (णाया १, १२)।

गल, **गलअ** पुं [**गल**] १ गला, ग्रीवा, कण्ठ ; (सुपा ३३ ; पाअ)। २ बडिश, मच्छी पकड़ने का काँटा ; (उप १८८; विपा १, ८ ; सुर ८, १४०)। °**गज्जि** स्त्री [°**गर्जि**] गले की गर्जना ; (महा)। °**गज्जिय** न [°**गर्जित**] गल-गर्जन; (महा)। °**लाय** वि [°**लात** गले में लगाया हुआ, कण्ठ न्यस्त ; (औप)।

गलई स्त्री [**गलवी**] वनस्पति-विशेष ; (राज)।

गलग देखो **गलअ** ; (पगह १, १) ।

गलत्थ देखो **खिव** । गलत्थइ ; (हे ४, १४३ ; भवि) ।

गलत्थण न [**क्षेपण**] १ क्षेपण, फेंकना ; २ प्रेरण ; (से ५, ५३ ; सुपा २८) ।

गलत्थलिअ वि [**दे**] १ क्षिप्त, फेंका हुआ ; २ प्रेरित ; (दे २, ८७) ।

गलत्थल्ल पुं [**दे**] गलहस्त, हाथ से गला पकड़ना; (णाया १, ६ ; पगह १, ३—पत्र ५३) ।

गलत्थल्लिअ [**दे**] देखो **गलत्थलिअ** ; (से ५, ४३ ; ८, ६१) ।

गलत्था स्त्री [**दे**] प्रेरणा ;

"गरुयाणं चिय भुवणम्मि आवया न उण हुंति लहुयाण ।
गहकल्लोलगलत्था, ससिसूराणं न ताराणं"

(उप ७२८ टी) ।

गलत्थिअ वि [**क्षिप्त**] १ प्रेरित ; (सुपा ६३५) । २ फेंका हुआ ; (दे २, ८७; कुमा)। ३ बाहर निकाला हुआ; (पाअ) ।

गलद्धअ पुं [**दे**] प्रेरित, क्षिप्त ; (षड्) ।

गलाण देखो **गिलाण** ; (नाट —चैत ३४) ।

गलि } वि [**गलि, °क**] दुर्विनीत, दुर्दम ; (श्रा १२ ;
गलिअ } सुपा २७६) । °**गद्दह** पुं [°**गर्दभ**] अविनीत गदहा ; (उत्त २७) । °**बइल्ल** पुं [°**बलीवर्द**] दुर्विनीत बैल ; (कप्पू)। °**स्स** पुं [°**श्व**] दुर्दम घोड़ा ; (उत्त १) ।

गलिअ वि [**गलित**] १ गला हुआ, पिघला हुआ ; (कप्प)। २ चालित; प्रचालित; (कुमा) । ३ स्खलित, पतित ; (से १, २) । ४ नष्ट, नाश-प्राप्त; (सुपा २४३; गण) ।

गलिअ वि [**दे**] स्मृत, याद किया हुआ ; (दे २, ८१)।

गलिंत देखो **गल**=गल् ।

गलिर वि [**गलितृ**] निरन्तर पिघलता, टपकता; "बहुसोग-गलिरनयणेण" (श्रा १४) ।

गलुल देखो **गरुल**; (अच्चु १; षड्) ।

गलोई } स्त्री [**गडूची**] वल्ली-विशेष, गिलोय , गुरच ;
गलोया } (हे १, १२४ ; जी १०) ।

गल्ल पुं [**गल्ल**] १ गाल, कपाल ; (दे २, ८१ ; उवा)। २ हाथी का गगड-स्थल, कुम्भ-स्थल ; (षड्) । **मसूरिया** स्त्री [°**मसूरिका**] गाल का उपधान ; (जीव) ।

गल्लक्क पुंन [**दे**] १ स्फटिक मणि ; (प्राप ; पि २९६) ।

गल्लत्थ देखो **गलत्थ** । गल्लत्थइ ; (षड्) ।

गल्लप्फोड पुं [**दे**] डमरुक, वाद्य-विशेष ; (दे २, ८६) ।

गल्लोल्ल न [**दे**] गडुक, पात्र-विशेष ; (निवू १) ।

गव पुंस्त्री [**गो**] पशु, जानवर ; (सूअ १, २, ३) ।

गवक्ख पुं [**गवाक्ष**] १ गवाक्ष, वातायन ; (औप ; पगह २, ४) । २ गवाक्ष के आकृति का रत्न-विशेष ; (जीव ३) । °**जाल** न [°**जाल**] १ रत्न-विशेष का ढग ; (जीव ३ ; राय)। २ जाली वाला वातायन ; (औप) ।

गवच्छ पुं [**दे**] आच्छादन, ढकना ; (राय) ।

गवच्छिय वि [**दे**] आच्छादित, ढका हुआ ; (राय; जीव ३) ।

गवत्त न [**दे**] घास, तृण ; (दे २, ८५) ।

गवय पुं [**गवय**] गो की आकृति का जङ्गली पशु-विशेष ; (पगह १, १) ।

गवर पुं [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पगण १ —पत्र ३४) ।

गवल पुं [**गवल**] १ जङ्गली पशु-विशेष ; जंगली महिष; (पउम ८८, ६) । २ न. महिष का सिंग ; (पगण १७ ; सुपा ६२) ।

गवा स्त्री [**गो**] गैया, गाय ; (पउम ८०, १३) ।

गवायणी स्त्री [**गवादनी**] इन्द्रवारुणी, वनस्पति-विशेष ; (दे २, ८२) ।

गवार वि [**दे**] गँवार, छोटे गाँव का निवासी; (वज्जा ४)।

गवालिय न [**गवालीक**]गो के विषय में अनृत भाषण; (पगह १, २) ।

गविअ वि [**दे**] अवधृत, निश्चित ; (षड्) ।

गविट्ठ वि [**गवेषित**] खोजा हुआ ; (सुपा १५४ ; ६४०; स ४८४ ; पाअ) ।

गविल न [**दे**] जात्य चीनी, शुद्ध मिश्री ; (उर ५, ६) ।

गवेधुआ स्त्री [**गवेधुका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प) ।

गवेलग पुंस्त्री [**गवेलक**] १ मेष, भेड़ ; (णाया १, १ ; औप) । २ गौ और भेड़; (ठा ७) ।

गवेस सक [**गवेषय्**] गवेषणा करना, खोजना, तलास करना। गवेसइ ; (महा ; षड्) । भूका —गवेसित्था ; (आचा)। वकृ—**गवेसंत, गवेसयंत, गवेसमाण** ; (श्रा १२ ;

सुपा ४१० ; सुर १, २०२ ; गाया १, ४)। हेक्र—**गवेसित्तए** ; (कप्प)।

गवेसइत्तु वि [**गवेषयितृ**] खोज करने वाला, गवेषक ; (ठा ४, २)।

गवेसग वि [**गवेषक**] ऊपर देखो ; (उप पृ ३३)।

गवेसण न [**गवेषण**] खोज, अन्वेषण ; (औप ; सुर ४, १४३)।

गवेसणया, **गवेसणा** स्त्री [**गवेषणा**] १ खोज, अन्वेषण; (औप; सुपा २३३)। २ शुद्ध भिक्षा की याचना; (ओघ ३)। ३ भिक्षा का ग्रहण ; (ठा ३, ४)।

गवेसय देखो **गवेसग**; (भवि)।

गवेसाविय वि [**गवेषित**] १ दूसरे से खोजवाया हुआ, दूसरे द्वारा खोज किया गया ; (स २०७ ; ओघ ६२२ टी)। २ गवेषित, अन्वेषित, खोजा हुआ ; (स ६८)।

गवेसि वि [**गवेषिन्**] खोज करने वाला, गवेषक; (पुप्फ ४४०)।

गवेसिअ वि [**गवेषित**] अन्वेषित, खोजा हुआ ; (सुर १५, १२६)।

गव्व पुं [**गर्व**] मान, अहंकार, अभिमान ; (भग १५ ; पव २१६)।

गव्वर न [**गह्वर**] कोटर, गुहा ; (स ३६३)।

गव्वि वि [**गर्विन्**] अभिमानी, गर्व-युक्त ; (श्रा १२ ; दे ७, ६१)।

गव्विट्ठ वि [**गर्विष्ठ**] विशेष अभिमानी, गर्व करने वाला ; (दे १, १२८)।

गव्विय वि [**गर्वित**] गर्व-युक्त, जिसको अभिमान उत्पन्न हुआ हो वह ; (पाअ ; सुपा २७०)।

गव्विर वि [**गर्विन्**] अहंकारी, अभिमानी; (हे २, १५६ ; हेका ४५)। स्त्री—°**री** ; (हेका ४५)।

गस सक [**ग्रस्**] खाना, निगलना, भक्षण करना। गसइ; (हे ४, २०४ ; षड्)। वकृ—**गसंत**; (उप ३२० टी)।

गसण न [**ग्रसन**] भक्षण, निगलना; (स ३५७)।

गसिअ वि [**ग्रस्त**] भक्षित, निगलित ; (कुमा ; सुर ६, ६० ; सुपा ४८६)।

गह सक [**ग्रह्**] १ ग्रहण करना, लेना। २ जानना। गहेइ; (सण)। वकृ—**गहंत** ; (श्रा २७)। संकृ—**गहाय**, **गहिअ**, **गहिऊण**, **गहिया**, **गहेउं** ; (पि ५६१ ; नाट; पि ५८६; सूअ १, ४, १; १, ५, २)। कृ—**गहीअव्व**, **गहेअव्व** ; (रयण ७० ; भग)।

गह पुं [**ग्रह**] १ ग्रहण, आदान, स्वीकार ; (विसे ३७१ ; सुर ३, ६२)। २ सूर्य, चन्द्र वगैरः ज्योतिष्क देव ; (गउड ; पण्ह १, २)। ३ कर्म का बन्ध ; (दस ४)। ४ भूत वगैरः का आक्रमण, आवेश ; (कुमा ; सुर २, १४४)। ५ गृद्धि, आसक्ति, तल्लीनता ; (आचा)। ६ संगीत का रस-विशेष ; (दस २)। °**खोभ** पुं [°**क्षोभ**] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंकेश ; (पउम ५, २६६)। °**गज्जिय** न [°**गर्जित**] ग्रहों के संचार से होने वाली आवाज; (जीव ३)। °**गहिय** वि [°**गृहीत**] भूतादि से आक्रान्त, पागल ; (कुमा ; सुर २, १४४)। °**चरिय** न [°**चरित**] १ ज्योतिष-शास्त्र ; (वव ४)। २ ज्योतिष-शास्त्र का परिज्ञान ; (सम ८३)। °**दंड** पुं [°**दण्ड**] दण्डाकार ग्रह-पंक्ति; (भग ३, ७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] १ सूर्य, सूरज ; (श्रा २८)। २ चन्द्र, चन्द्रमा ; (उप ७२८ टी)। °**मुसल** न [°**मुशल**] मुशलाकार ग्रह-पंक्ति ; (जीव ३)। °**सिंघाडग** न [°**शृङ्गाटक**] १ पानी-फल के आकार वाली ग्रह-पङ्क्ति ; (भग ३, ७)। २ ग्रह-युग्म, ग्रह की जोड़ी; (जीव ३)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] सूर्य, सूरज ; (श्रा २८)।

गह° न [**गृह**] घर, मकान। °**वइ** पुं [°**पति**] गृहस्थ, गृही, संसारी ; (पउम २०, ११६ ; प्राप्र ; पाअ)। °**वइणी** स्त्री [°**पत्नी**] गृहिणी, स्त्री ; (सुपा २२६)।

गहकल्लोल पुं [**दे. ग्रहकल्लोल**] राहु, ग्रह-विशेष; (दे २, ८६ ; पाअ)।

गहगह अक [**दे**] हर्ष से भर जाना, आनन्द-पूर्ण होना। गहगहइ ; (भवि)।

गहण न [**ग्रहण**] १ आदान, स्वीकार; (से ४, ३३ ; प्रासू १४)। २ आदर, सम्मान ; ३ ज्ञान, अवबोध ; (से ४, ३३)। ४ शब्द, आवाज; (आचा २, ३, ३; आवम)। ५ ग्रहण करने वाला; ६ इन्द्रिय ; (विसे १७०७)। ७ चन्द्र-सूर्य का उपराग; (भग १२, ६)। ८ ग्राह्य, जिसका ग्रहण किया जाय वह; (उत्त ३२)। ६ शिक्षा-विशेष; (आव)।

गहण न [**ग्राहण**] ग्रहण कराना, अंगीकार कराना ; "जो आसि बंभचेरग्गहणगुरू" (कुमा)।

गहण वि [**गहन**] १ निबिड़, दुर्भेद्य, दुर्गम ; "काले अणाइणिहणे जोणीगहणम्मि भीसणे इत्थ" (जी ४६) ;

"फलभारणलिणिगहणा" (गउड)। २ वन, झाड़ी, घना कानन; (पाअ; भग)। ३ वृक्ष-गह्वर, वृक्ष का कोटर; (विपा १, ३—पत्र ४६)।

गहण न [दे] १ निर्जल स्थान, जल-रहित प्रदेश; (दे २, ८२; आचा २, ३, ३)। २ बन्धक, धरोहर, गिरों; (सुपा ५४८)।

गहणय न [दे] गहना, आभूषण; (सुपा १५४)।

गहणया स्त्री [ग्रहण] ग्रहण, स्वीकार, उपादान; (औप)।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] गुदाशय, गाँड़; (पराह १, ४; औप)।

गहणी स्त्री [दे] जबरदस्ती हरण की हुई स्त्री, बाँदी; (दे २, ८४; से ६, ४७)।

गहत्थि पुं [गभस्ति] किरण, त्विषा; (पाअ)।

गहर पुं [दे] गृध्र, गीध पक्षी; (दे २, ८४; पाअ)।

गहवइ पुं [दे] १ ग्रामीण, गाँव का रहने वाला; (दे २, १००)। २ चन्द्रमा, चाँद; (दे २, १००; पाअ; वाअ १५)।

गहिअ वि [दे] वक्रित, मोड़ा हुआ, टेढ़ा, किया हुआ; (दे २, ८५)।

गहिअ वि [गृहीत] १ उपात्त, स्वीकृत; (औप; ठा ४, ४)। २ पकड़ा हुआ; (पराह १, ३)। ३ ज्ञात, उपलब्ध, विदित; (उत्त २; षड्)।

गहिअ वि [गृद्ध] आसक्त, तल्लीन; (आचा)।

गहिआ स्त्री [दे] १ काम-भोग के लिए जिसकी प्रार्थना की जाती हो वह स्त्री; (दे २, ८५)। २ ग्रहण करने योग्य स्त्री; (षड्)।

गहिर वि [गभीर] गहरा, गम्भीर, अ-स्ताघ; (दे १, १०१; काप्र ६२५; कप्प; गउड; औप; प्राप्र)।

गहिल वि [ग्रहिल] भूतादि से आविष्ट, पागल; (श्रा १४)।

गहिलिय, **गहिल्ल** वि [दे. ग्रहिल] आवेश-युक्त, पागल, भ्रान्त-चित; (पउम ११३, ४३; षड्; श्रा १२; उप ५६७ टी; भवि)।

गहीअ देखो **गहिअ**=गृहीत; (श्रा १२; रयण ६८)।

गहीर देखो **गभीर**; (प्रासू ६)।

गहीरिअ न [गाभीर्य] गहराई, गम्भीरपन; (हे २, १०७)।

गहीरिम पुंस्त्री [गभीरिमन्] गहराई, गम्भीरता; (हे ४, ४१९)।

गहेअव्व, **गहेउं** देखो **गह**=ग्रह्।

गह्ण (अप) देखो **गह**=ग्रह्। गह्णइ; (षड्)।

गा, **गाअ** सक [गै] १ गाना, आलापना। २ वर्णन करना। ३ श्लाघा करना। गाइ, गाअइ; (हे ४,६)। वकृ—**गंत, गाअंत, गायमाण**; (गा ५४६; पि ४७९; पउम ६४,२४)। कवकृ—**गिज्जंत**; (गउड; गा ६४२; सुपा २१; सुर ३, ७९)। संकृ—**गाइउं**; (महा)।

गाअ पुं [गो] बैल, वृषभ, साँढ़; (हे १, १५८)।

गाअ न [गात्र] १ शरीर, देह; (सम ६०)। २ शरीर का अवयव; (औप)।

गाअ वि [गायक] गाने वाला; (कुमा)।

गाअंक पुं [गवाङ्क] महादेव, शिव; (कुमा)।

गाअण वि [गायन] गाने वाला, गवैया; (सुपा ५५; सण)।

गाइअ वि [गीत] १ गाया हुआ; "किन्नरेण तं गाइयं गीयं" (सुपा १६)। २ न. गीत, गान, गाना; (प्रत ४)।

गाइआ स्त्री [गायिका] गाने वाली स्त्री; (गा ६४४)।

गाइर वि [गाथक] गाने वाला, गवैया; (सुपा ५४)।

गाई स्त्री [गो] गैया, गौ; (हे १, १५८; दे ४, १८; गा २७१; सुर ७, ६५)।

गाउ, **गाउअ**, **गाऊअ** न [गव्यूत] १ कोस, क्रोश, दो हजार धनुष-प्रमाण जमीन; (पि २५४; औप; इक; जी १८; विसे ८२ टी)। २ दो कोस, क्रोश-युग्म (ओघ १२)।

गागर पुं [दे] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष, घघरा; गुजराती में 'घाघरा'; (पराह १,४)। २ मत्स्य-विशेष; (पराण १)।

गागरी [दे] देखो **गगरी**; (पि ६२)।

गागलि पुं [गागलि] एक जैन मुनि; (उत्त १०)।

गागेज्ज वि [दे] मथित, आलोड़ित; (दे २, ८८)।

गागेज्जा स्त्री [दे] नवोढ़ा, दुलहिन; (दे २, ८८)।

गाडिअ वि [दे] विधुर, वियुक्त; (दे २,८३)।

गाढ वि [गाढ] १ गाढ, निबिड़, सान्द्र; (पाअ; सुर १४, ४८)। २ मजबूत, दृढ़; (सुर ४,२३७)। ३ क्रि. अत्यन्त, अतिशय; (कप्प)।

गाण न [गान] गीत, गाना; (हे ४,६)।

गाण वि [गायन] गवैया, गीत प्रयोक्ता; (दे २, १०८)।

गाणंगणिअ पुं [**गाणङ्गणिक**] छ हो मास के भीतर एक साधु-गण से दूसरे गण में जाने वाला साधु ; (बृह १)।

गाणी स्त्री [**दे**] गवादनी, वनस्पति-विशेष, इन्द्रवारुणी ; (दे २, ८२)।

गाथा देखो **गाहा** ; (भग ; पिंग)।

गाध वि [**गाध**] स्ताघ, अ-गहरा ; (दे ५, २४)।

गाम पुं [**ग्राम**] १ समूह, निकर ; 'चवलो इंदियगामो" (सुर २, १३८)। २ प्राणि-समूह, जन्तु-निकर ; (विसे २८६६)। ३ गाँव, वसति, ग्राम; (कप्प; णाया १,१८; औप)। ४ इन्द्रिय-समूह ; (भग; औव)। °**कंडग,** °**कंडय** पुं [°**कण्टक**] १ इन्द्रिय-समूह रूप काँटा ; (भग ; औप)। २ दुर्जनों का रूक्ष आलाप, गाली ; (आचा)। °**घायग** वि [°**घातक**] गाँव का नाश करने वाला ; (पण्ह १,३)। °**णिद्धमण** न [°**निर्धमन**] गाँव का पानी जाने का रास्ता, नाला ; (कप्प)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] १ विषयाभिलाष, विषय की वाञ्छा ; (ठा १०)। २ इन्द्रियों का स्वभाव ; ३ विषय-प्रवृत्ति ; (आचा)। ४ मैथुन ; (सुत्र १, २,२)। ५ शब्द, रूप वगैरः इन्द्रियों का विषय; (पण्ह १,४)। ६ गाँव का धर्म, गाँव का कर्तव्य ; (ठा १०)। °**द्ध** पुंन [°**ार्ध**] आधा गाँव। २ उत्तर भारत, भारत का उत्तर प्रदेश ; (निचू १२)। °**मारी** स्त्री [°**मारी**] गाँव भर में फैली हुई बिमारी-विशेष ; (जीव ३)। °**रोग** पुं [°**रोग**] ग्राम-व्यापक बिमारी; (जं २)। °**वइ** पुं [°**पति**] गाँव का मुखिया ; (पात्र)। °**ाणुग्गाम** न [°**ानुग्राम**] एक गाँव से दूसरे गाँव ; (औप)। °**ायार** पुं [°**ाचार**] विषय ; (आवम)।

गामउड } **गामऊड** } पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २, ८९ ; बृह ३)।

गामंतिय न [**ग्रामान्तिक**] १ गाँव की सीमा ; (आचा)। २ वि. गाँव की सीमा में रहने वाला ; (दसा १)। ३ पुं. जैनेतर दार्शनिक विशेष ; (सूत्र २,२)।

गामगोह पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २, ८९)।

गामड पुं [**ग्रामक**] गाँव, छोटा गाँव ; (श्रा १६)।

गामण न [**दे. गमन**] भूमि में गमन, भू-सर्पण ; (भग ११, ११)।

गामणह न [**दे**] ग्राम-स्थान, ग्राम-प्रदेश ; (षड्)।

गामणि देखो **गामणी** ; (दे २, ८९; षड्)।

गामणिसुअ पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २,८९)।

गामणी पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २,८९ ; प्रामा)।

गामणी वि [**ग्रामणी**] १ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक ; (से ७, ६० ; धण १ ; गा ४४६ ; षड्)। २ पुं. तृण-विशेष ; (दे २, ११२)।

गामपिंडोलग पुं [**दे**] भीख से पेट भरने के लिए गाँव का आश्रय लेने वाला भीखारी ; (आचा)।

गामरोड पुं [**दे**] छल से गाँव का मुखिया बन बैठने वाला ; गाँव के लोगों में फूट उत्पन्न कर गाँव का मालिक होने वाला; (दे २, ६०)।

गामहण न [**दे**] १ ग्राम-स्थान, गाँव का प्रदेश; (दे २,६०)। २ छोटा गाँव ; (पात्र)।

गामाग पुं [**ग्रामाक**] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक सन्निवेश ; (आवम)।

गामार वि [**दे. ग्रामीण**] ग्रामीण, छोटे गाँव का रहने वाला ; (वज्जा ४)।

गामि वि [**गामिन्**] जाने वाला ; (गा १६७ ; आचा)। स्त्री—°**णी**; (कप्प)।

गामिअ वि [**ग्रामिक**] १ देखो **गामिल्ल**; (दे २, १००)। २ ग्राम का मुखिया ; (निचू २)। ३ विषयाभिलाषी ; (आचा)।

गामिणिआ स्त्री [**गामिनिका**] गमन करने वाली स्त्री ; "ललिअहंसवहुगामिणिआहिं" (अजि २६)।

गामिल्ल } **गामिल्लुअ** } **गामीण** } वि [**ग्रामीण**] गाँव का निवासी, गँवार ; (पउम ७७, १०८; विसे १ टी; दे ८, ४७)। स्त्री— °**ल्ली** ; (कुमा)।

गामुअ वि [**गामुक**] जाने वाला ; (स १७५)।

गामेइआ स्त्री [**ग्रामेयिका**] गाँव की रहने वाली स्त्री, गँवार स्त्री ; (गउड)।

गामेणी स्त्री [**दे**] छागी, अजा, बकरी ; (दे २, ८४)।

गामेयग वि [**ग्रामेयक**] गाँव का निवासी, गँवार; (बृह १)।

गामेरड [**दे**] देखो **गामरोड**; (षड्)।

गामेलुअ } **गामेल्ल** } देखो **गामिल्ल** ; (मृच्छ २७५ ; विपा १,१ ; विसे १४११)।

गामेस पुं [**ग्रामेश**] गाँव का अधिपति; (दे २,३७)।

गायरी स्त्री [**दे**] गर्गरी, कलशी, छोटा घड़ा; (दे २,८९)।

°**गार** वि [°**कार**] कारक, कर्ता; (भवि)।

गार पुं [**दे. ग्रावन्**] पत्थर, पाषाण, कङ्कर; (वव ४)।

गार न [**अगार**] गृह, घर, मकान; (ठा ६)। °**त्थ** पुंस्त्री [°**स्थ**] गृहस्थ, गृही; (निचू१)। °**त्थिय** पुंस्त्री [°**स्थित**]

गृहस्थ, गृही, संसारी; "गारत्थियजणउचियं भासासमिश्रो न भासिज्जा" (पुप्फ १८१; ठा ६) ।

°गारय वि [**कारक**] कर्ता, करने वाला; (स १५१) ।

गारव पुंन [**गौरव**] १ अभिमान, अहंकार; २ अभिलाष, लालसा; "तश्रो गारवा पण्णत्ता" (ठा ३,४ ; श्रा ३५; सम ८) । ३ महत्व, गुरुत्व, प्रभाव ; (कुमा) । ४ आदर, सम्मान ; (षड् ; प्राप्र) ।

गारविय वि [**गौरवित**] १ गौरवान्वित, महत्वशाली । २ गर्व-युक्त, अभिमानी ; ३ लालसा वाला, अभिलाषी ; (सूत्र १,१,१) ।

गारविल्ल वि [**गौरववत्**] ऊपर देखो ; (कम्म १,५६) ।

गारि पुंस्त्री [**अगारिन्**] गृही, संसारी, गृहस्थ; (उत्त ५,१६) ।

गारिहत्थिय स्त्रीन [**गार्हस्थ्य**] गृहस्थ-संबन्धी, संसारि-संबन्धी । स्त्री—**°या** ; (पव २३५) ।

गारुड } वि [**गारुड**] १ गरुड़-संबन्धी ; २ सर्प के विष
गारुल } को उतारने वाला, सर्प-विष को दूर करने वाला ; ३ पुं. सर्प-विष को दूर करने वाला मन्त्र ; (उप ६८६ टी ; से १४, ५७) । ४ न. शास्त्र-विशेष, मन्त्र-शास्त्र-विशेष, सर्प-विष-नाशक मन्त्र का जिसमें वर्णन हो वह शास्त्र ; (ठा ६) । **°मंत** पुं [**°मन्त्र**] सर्प-विष का नाशक मन्त्र ; (सुपा २१६) । **°विउ** वि [**°वित्**] गारुड मन्त्र का जानकार, गारुड शास्त्र का जानकार ; (उप ६८६ टी) ।

गाल सक [**गालय्**] १ गालना, छानना । २ नाश करना । ३ उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना । गालयइ ; (विसे ६४) । वकृ—**गालेमाण** : (भग ६,३३) । कवकृ—**गालिज्जंत** ; (सुपा १७३) । प्रयो—गालावेइ ; (णाया १, १२) ।

गालण न [**गालन**] छानना, गालना; (पण्ह १, १ ; उप पृ ३७६) ।

गालणा स्त्री [**गालना**] १ गालना, छानना ; २ गिरवाना; ३ पिघलवाना ; (विपा १,१) ।

गालवाहिया स्त्री [**दे**] छोटी नौका, डोंगी ; "एत्थंतरम्मि समागया गालवाहियाए निज्जामया" (स ३५१) ।

गालि स्त्री [**गालि**] गाली, अपशब्द, असभ्य वचन; (सुपा ३७०) ।

गालिय वि [**गालित**] १ छाना हुआ । २ अतिक्रान्त । ३ विनाशित; ४ क्षिप्त ; "गालियमिंठो निरंकुसो वियरिश्रो राय-हत्थी" (महा) ।

गाली स्त्री [**गाली**] देखो **गालि** ; (पव ३८) ।

गाव (अप) देखो **गा** । गावइ ; (पिंग) । वकृ—**गावंत** ; (पि २५४) ।

गाव (अप) देखो **गव्व** ; (भवि) ।

गाव वि [**दे**] गत, गया हुआ, गुजरा हुआ ; (षड्) ।

गाव } पुं [**ग्रावन्**] १ पत्थर, पाषाण; (पाअ) । २
गावाण } पहाड़, गिरि ; (हे ३, ५६) ।

गावि (अप) देखो **गव्विय** ; (भवि) ।

गावी स्त्री [**गो**] गौ, गैया ; (हे २, १७४ ; विपा १, २ ; महा) ।

गास पुं [**ग्रास**] ग्रास, कवल ; (सुपा ४८८) ।

गाह देखो **गह**=ग्रह् । कर्म—गाहिज्जइ ; (प्राप्र) ।

गाह सक [**ग्राहय्**] ग्रहण कराना । गाहेइ ; (औप) ।

गाह सक [**गाह्**] १ गाहना, ढूँढ़ना । २ पढ़ना, अभ्यास करना । ३ अनुभव करना । ४ टोह लगाना । गाहदि (शौ) ; (मृच्छ ७२) । कवकृ—**गाहिज्जंत** ; (वज्जा ४) ।

गाह पुं [**गाध**] स्ताघ, थाह ; (ठा ४, ४) ।

गाह पुं [**ग्राह**] १ गाह, कुंभीर, नक्र, जल-जन्तु विशेष ; (दे २, ८६ ; णाया १, ४ ; जी २०) । २ आग्रह, हठ ; (विसे २५८६; पउम १६, १२) । ३ ग्रहण, आदान; (निचू १) । ४ गारुड़िक, सर्प को पकड़ने वाली मनुष्य-जाति ; (बृह १) । **°वई** स्त्री [**°वती**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ८०) ।

गाहग वि [**ग्राहक**] १ ग्रहण करने वाला, लेने वाला; (सुपा ११) । २ समझने वाला, जानने वाला; (सुपा ३४३) । ३ समझाने वाला, शिक्षक, आचार्य, गुरू ; (औप) । ४ ज्ञापक, बोधक । स्त्री—**गाहिगा** ; (औप) ।

गाहण न [**ग्राहण**] १ ग्रहण कराना ; २ ग्रहण, आदान ; "गाहण तवचरियस्सा गहणं चिय गाहणा होंति" (पंचभा) । ३ शास्त्र, सिद्धान्त ; (वव ४) । ४ बोधक वचन, शिक्षा, उपदेश ; (पण्ह २, २) ।

गाहणया } स्त्री [**ग्राहणा**] ऊपर देखो ; (उप पृ ३१४ ;
गाहणा } आचा ; गच्छ १) ।

गाहय देखो **गाहग** ; (विसे ८३१ ; स ४६८) ।

गाहा स्त्री [**गाथा**] १ छन्द-विशेष, आर्या, गीति ; (ठा ५, ३ ; अजि ३७ ; ३८) । २ प्रतिष्ठा ; ३ निश्चय ; "सेसपयाण य गाहा" (आव ४) । ४ सूत्रकृतांग सूत्र का सोलहवाँ अध्ययन ; (सूत्र १, १, १) ।

गाहा स्त्री [**दे**] गृह, घर, मकान ; "गाहा घरं गिहमिति एगट्ठा" (वव ८)। °**वइ** पुंस्त्री [°**पति**] १ गृहस्थ, गृही, संसारी; (ठा ४,४ ; सुपा २२६)। २ धनी, धनाढ्य; (उत्त १)। ३ भंडारी, भाण्डागारिक ; (सम २७)। स्त्री—°**णी**; (णाया १, ५ ; उवा)।

गाहाल पुं [**ग्राहाल**] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जीव १)।

गाहावई स्त्री [**ग्राहावती**] १ नदी-विशेष ; २ द्वीप-विशेष; ३ ह्रद-विशेष, जहां से ग्राहावती नदी निकलती है; (जं ४)।

गाहाविय वि [**ग्राहित**] जिसको ग्रहण कराया गया हो वह ; (सुर ११, १८३)।

गाहिणी स्त्री [**गाहिनी**] १ गाहने वाली स्त्री। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

गाहिपुर न [**गाधिपुर**] नगर-विशेष ; (गउड)।

गाहिय वि [**ग्राहित**] १ जिसको ग्रहण कराया गया हो वह ; २ आमित, ऊकसाया हुआ ; (सूअ १, २, १)।

गाहीकय वि [**गाथीकृत**] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ ; (सूअ १, १६)।

गाहु स्त्री [**गाहु**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

गाहुलि पुंस्त्री [**दे**] ग्राह, नक्र, क्रूर जल-जन्तु विशेष ; (दे २, ८६)।

गाहुलिया देखो **गाहा**=गाथा ; (सुपा २६४)।

गिंठि स्त्री [**गृष्टि**] १ एक बार व्यायी हुई ; २ एक बार व्यायी हुई गौ ; (हे १, २६)।

गिंधुअ [**दे**] देखो **गेंदुअ**; (पाअ)।

गिंधुल्ल [**दे**] देखो **गेंदुल्ल** ; (पाअ)।

गिंभ (अप) देखो **गिम्ह** ; (हे ४, ४४२)।

गिंह देखो **गिम्ह** ; (षड्)।

गिज्जंत देखो **गा**।

गिज्झ अक [**गृध्**] आसक्त होना, लम्पट होना। गिज्झइ ; (हे ४, २१७)। गिज्झह ;(णाया १, ८)। वकृ—**गिज्झंत**; (औप)। कृ—**गिज्झियव्व**; (पण्ह २, ५)।

गिज्झ वि [**गृह्य, ग्राह्य**] १ ग्रहण करने योग्य ; २ अपनी तरफ में किया जा सके ऐसा ; (ठा ३, २)।

गिट्ठि देखो **गिंठि** ; "वारेंतस्सवि बला दिट्ठी गिट्ठिव्व जवसम्मि" (उप ७२८ टी ; पाअ ; गा ६४०)।

गिड्डिया स्त्री [**दे**] गेड़ी, गेंद खेलने की लकड़ी ; (पव ३८)।

गिण देखो **गण**=गणय्। गिणंति ; (सट्ठि ६७)।

गिण्ह देखो **गह**=ग्रह्। गिण्हइ ; (कप्प)। वकृ—**गिण्हंत, गिण्हमाण**; (सुपा ६१६ ; णाया १, १)। संकृ—**गिण्हिउं, गिण्हिऊण, गिण्हित्ता**; (पि ५७४ ; ५८५ ; ५८२)। हेकृ—**गिण्हित्तए** ; (कप्प)। कृ—**गिण्हियव्व, गिण्हेयव्व**; (अणु; सुपा ५१३)।

गिण्हणा स्त्री [**ग्रहण**] उपादान, आदान ; (उत्त १६, २७)।

गिद्ध पुं [**गृध्र**] पक्षि-विशेष, गीध; (पाअ ; णाया १,१६)।

गिद्ध वि [**गृद्ध**] आसक्त, लम्पट, लोलुप ; (पण्ह १, २ ; आचू ३)।

गिद्धि स्त्री [**गृद्धि**] आसक्ति, लम्पटता, गार्ध्य ; (सूअ १, ६)।

गिम्ह पुं [**ग्रीष्म**] ऋतु-विशेष, गरमी की मोसिम ; (हे २, ७४ ; प्राप्र)।

गिर सक [**गॄ**] १ बोलना, उच्चारण करना। २ गिलना, निगलना। गिरइ ; (षड्)।

गिरा स्त्री [**गिर्**] वाणी, भाषा, वाक् ; (हे १, १६)।

गिरि पुं [**गिरि**] १ पहाड़, पर्वत ; (गउड ; हे १, २३)। °**अडी** स्त्री [°**तटी**] पर्वतीय नदी; (गउड)। °**कण्णई**, °**कण्णी** स्त्री [°**कर्णी**] वल्ली-विशेष, लता-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३३ ; श्रा २०)। °**कूड** न [°**कूट**] १ पर्वत का शिखर। २ पुं. रामचन्द्र का महल ; (पउम ८०, ४)। °**जण्ण** पुं [°**यज्ञ**] कोंकण देश में वर्षा-काल में किया जाता एक प्रकार का उत्सव ; (बृह १)। °**णई** स्त्री [°**नदी**] पर्वतीय नदी; (पि ३८५)। °**णाल** पुं [°**नार**] प्रसिद्ध पर्वत विशेष, जो काठियावाड़ में आज-कल भी "गिरनार" के नाम से विख्यात है ; (ती ३)। °**दारिणी** स्त्री [°**दारिणी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३६)। °**नई** देखो °**णई** ; (सुपा ६३५)। °**पक्खंदण** न [°**प्रस्कन्दन**] पहाड़ पर से गिरना ; (निचू ११)। °**यडय** न [°**कटक**] पर्वत-नितम्ब ; (गउड)। °**पब्भार** पुं [°**प्राग्भार**] पर्वत-नितम्ब ; (संथा)। °**राय** पुं [°**राज**] मेरु पर्वत ; (इक)। °**वर** पुं [°**वर**] प्रधान पर्वत, उत्तम पहाड़ ; (सुपा १७६)। °**वरिंद** पुं [°**वरेन्द्र**] मेरु पर्वत; (श्रा २७)। °**सुआ** स्त्री [°**सुता**] पार्वती, गौरी ; (पिंग)।

गिरि पुं [**दे**] बीज-कोश ; (दे ६, १४८)।

गिरिंद पुं [गिरीन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत; २ मेरु पर्वत ; ३ हिमाचल ; (कप्पू)।

गिरिडी स्त्री [दे] पशुओं के दाँत को बाँधने का उपकरण-विशेष ; "दंतगिरिडिं पबंधइ" (सुपा २३७)।

गिरिस पुं [गिरिश] महादेव, शिव; (पाअ ; दे ६,१२१)। °**वास** पुं [°वास] कैलाश पर्वत; (से ६, ७५)।

गिरीस पुं [गिरीश] १ हिमाचल पर्वत; २ महादेव, शिव ; (पिंग)।

गिल सक [गॄ] गिलना, निगलना, भक्षण करना। संकृ—**गिलिऊण** ; (नाट)।

गिलण न [गरण] निगरण, भक्षण ; (हे ४,४४५)।

गिला } अक [ग्लै] १ ग्लान होना, बिमार होना। २
गिलाअ } खिन्न होना, थक जाना। ३ उदासीन होना। गिलाइ, गिलायइ, गिलाएमि ; (भग ; कस; आचा)। वकृ—**गिलायमाण** ; (ठा ३,३)।

गिला स्त्री [ग्लानि] १ बिमारी, रोग ; २ खेद, थाक ; (ठा ८)।

गिलाण वि [ग्लान] १ बिमार, रोगी ; (सूअ १, ३,३)। २ अशक्त, असमर्थ, थका हुआ ; (ठा ३,४)। ३ उदासीन, हर्ष-रहित ;(णाया १, १३ ; हे २, १०६)।

गिलाणि स्त्री [ग्लानि] ग्लानि, खेद, थकावट ; (ठा ५,१)।

गिलायय वि [ग्लायक] ग्लानि-युक्त, ग्लान ; (औप)।

गिलासि पुंस्त्री [ग्रासिन्] व्याधि-विशेष, भस्मक रोग ; (आचा)। स्त्री—°**णी** ; (आचा)।

गिलिअ वि [गिलित] निगला हुआ, भक्षित ; (सुपा ३, २०६ ; सुपा ६४०)।

गिलिअवंत वि [गिलितवत्] जिसने भक्षण किया हो वह ; (पि ५६६)।

गिलोइया } स्त्री [दे] गृह-गोधा, छिपकली ; (सुपा
गिलोई } ६४० ; पुप्फ २६७)।

गिल्लि स्त्री [दे] १ हाथी की पीठ पर कसा जाता होदा, हौदा ; (णाया १,१—पत्र ४३ टी ; औप)। २ डोली, दो आदमी से उठाई जाती एक प्रकार की शिबिका ; (सूअ २,२; दसा ६)।

गिव्वाण पुं [गीर्वाण] देव, सुर, त्रिदश ; (उप ५३० टी)।

गिह न [गृह] घर, मकान ; (आचा; श्रा २३; स्वप्न ६४)। °**त्थ** पुंस्त्री [°स्थ] गृहस्थ, गृही, संसारी ; (कप्प ; द ५)। स्त्री—°**त्था**; (पउम ४६, ३३)। °**नाह** पुं [°नाथ] घर का मालिक ; (श्रा २८)। °**लिंगि** पुंस्त्री [°लिङ्गिन्] गृहस्थ, गृही, संसारी; (दंस)। °**वइ** पुंस्त्री [°पति] गृहस्थ, गृही, घर का मालिक; (ठा ५, ३; सुपा २३४)। °**वास** पुं [°वास] १ घर में निवास ; २ द्वितीयाश्रम, संसारिपन ; "गिहवासं पासं पिव मन्नंतो वसइ दुक्खिओ तम्मि" (धम्म ; सूअ १,६)। °**ावट्ट** पुं [°ावर्त] द्वितीय आश्रम, संसारिपन ; (सूअ १,४,१)। °**ासम** पुं [°ाश्रम] घरवास, द्वितीयाश्रम ; (स १४८)।

गिहि पुं [गृहिन्] गृही, संसारी, गृहस्थ ; (ओघ १७ भा ; नव ४३)। °**धम्म** पुं [°धर्म] गृहस्थ-धर्म, श्रावक-धर्म ; (राज)। °**लिंग** न [°लिङ्ग] गृहस्थ का वेष ; (बृह १)।

गिहिणी स्त्री [गृहिणी] गृहिणी, भार्या, स्त्री ; (सुपा ८३; श्रा १६)।

गिहीअ वि [गृहीत] आत्त, उपात्त, ग्रहण किया हुआ ; (स ४२८)।

गिहेलुअ पुं [गृहेलुक] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी ; (निचू १३)।

गी स्त्री [गिर्] वाणी, भाषा, वाक् ; "थिरमुज्जलं च छाया-घणं च गोविलसियं जस्स" (गउड)।

गीआ स्त्री [गीता] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

गीइ स्त्री [गीति] १ छन्द-विशेष, आर्या-वृत्त का एक भेद ; २ गान, गीत ; (ठा ७ ; उप १३० टी)।

गीइया स्त्री [गीतिका] ऊपर देखो ; (औप ; णाया १,१)।

गीय वि [गीत] १ पद्य-मय वाक्य, गेय, जो गाया जाय वह; (पण्ह २,५ ; अणु)। २ कथित, प्रतिपादित; (णाया १,१)। ३ प्रसिद्ध, विख्यात; (संथा)। ४ न. गान, ताल और बाजे के अनुसार गाना ; (जं२; उत१)। ५ संगीत-कला, गान कला, संगीत-शास्त्र का परिज्ञान ; (णाया १,१)। ६ पुं. गीतार्थ, उत्सर्ग-अपवाद वगैरः का जानकार जैन साधु, विद्वान् जैन मुनि; (उप७७३)। °**जस** पुं [°यशस्] इन्द्र-विशेष, गन्धर्व देवों का एक इन्द्र ; (ठा२,३ ; इक)। °**त्थ** पुं [°ार्थ] १ विद्वान् जैन मुनि ; (उप ८३३ टी; वव ४; सुपा १२७)। २ संगीत-रहस्य ; (मै१४)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष ; (पउम ५५,५३)। °**रइ** स्त्री [°रति] १ संगीत-क्रीड़ा ; (औप)। २ पुं. गन्धर्व देवों का एक इन्द्र ; (इक; भग३,८)। ३ गन्धर्व-सेना का अधिपति देव-विशेष; (ठा ७)। ४ वि. संगीत-प्रिय, गान-प्रिय ; (विपा१,२)।

गीवा स्त्री [ग्रीवा] कण्ठ, डोक ; (पाअ)।

गुंछ देखो **गुच्छ** ; (हे १,२६)।

गुंछा स्त्री [**दे**] १ बिन्दु ; २ दाढ़ी-मूँछ ; ३ अधम, नीच ; (दे २,१०१)।

गुंज अक [**हस्**] हसना, हास्य करना। गुंजइ; (हे४,१९६)।

गुंज अक [**गुञ्ज्**] १ गुन गुन करना, भ्रमर आदि का आवाज करना। २ गर्जना, सिंह वगैरः का आवाज करना। "गुंजंति सीहा" (महा)। वकृ--**गुंजंत**; (णाया १,१—पत्र ५; रंभा)।

गुंज पुं [**गुञ्ज**] १ गुञ्जारव करता वायु; (पउम १३,४३)। २ पर्वत-विशेष; " गुंजवरपव्वयं ते" (पउम ८,६०; ६४)।

गुंजा स्त्री [**गुञ्जा**] १ लता- विशेष; (सुर ३,६)। २ फल-विशेष, घुङ्गची ; (णाया १,१; गा३१०)। ३ भम्भा, वाद्य-विशेष ; (आचा)। ४ परिमाण-विशेष; (ठा४,१)। ५ गुञ्जारव, गुञ्जन, गुन गुन आवाज; "गुंजाचक्ककुहरोवगूढं" (राय)। ६ वायु-विशेष, गुञ्जारव करता वायु; (जीव१; जी७)। °**फल**, °**हल** न [°**फल**] फल-विशेष, घुङ्गची; (सुर२,६;सुपा२६१)।

गुंजालिया स्त्री [**गुञ्जालिका**] वक्र-सारिणी, टेढ़ी कियारी; (णाया १,१)। २ गोल पुष्करिणी ; (निचू १२)। ३ वक्र नदी; (पण्ण ११)।

गुंजाविअ वि [**हासित**] हसाया हुआ ; (कुमा ७,४१)।

गुंजिअ न [**गुञ्जित**] गुन गुन आवाज, भ्रमर वगैरः का शब्द ; (कुमा)।

गुंजिर वि [**गुञ्जितृ**] गुन गुन आवाज करने वाला; (उप १०३१ टी)।

गुंजुल्ल देखो **गुंजोल्ल**। गुंजुल्लइ ; (हे ४,२०२)।

गुंजेल्लिअ वि [**दे**] पिण्डोकृत, इकट्ठा किया हुआ; (दे२,६२)।

गुंजोल्ल अक [**उत्+लस्**] उल्लास पाना, विकसित होना। गुंजोल्लइ ; (हे ४, २०२)।

गुंजोल्लिअ वि [**उल्लसित**] उल्लसित, विकसित; (कुमा)।

गुंठ सक [**उद्+धूलय् गुण्ठ्**] धूल वाला करना, धूली के रङ्ग का करना, धूसरित करना। गुंठइ; (हे४,२९)। वकृ—**गुंठंत** ; (कुमा)।

गुंठ पुं [**दे**] १ अधम अश्व, दुष्ट घोड़ा; (दे२,६१; स ४५४)। २ वि. मायावी, कपटी ; (वव३)।

गुंठा स्त्री [**दे**] माया, दम्भ, छल ; (वव ३)।

गुंठिअ वि [**गुण्ठित**] १ धूसरित; २ व्याप्त; ३ आच्छादित; (दे १, ८५)।

गुंठी स्त्री [**दे**] नीरंगी, स्त्री का वस्त्र-विशेष ; (दे२,९०)।

गुंड न [**दे**] मुस्ता से उत्पन्न होने वाला तृण-विशेष; (दे २, ९१)।

गुंडण न [**गुण्डन**] धूलि का लेप, धूल का शरीर में लगाना ; "रयरेणुगुंडणाणि य ना सम्मं सहसि" (णाया १, १—पत्र ७१)।

गुंडिअ वि [**गुण्डित**] १ धूलि लिप्त, धूलि युक्त; (पाअ)। २ लिप्त, पोता हुआ; "चुण्णगुंडिअगात्तं" (विपा १, २—पत्र २४)। ३ घिरा हुआ ; "सउणी जह पमुगुंडिया" (सूअ १, २, १)। ४ आच्छादित, प्रावृत ; (आचा)। ५ प्ररित ; (पण्ह १, ३)।

गुंथण न [**ग्रन्थन**] गूँथना, गठना ; (रयण १८)।

गुंद पुं [**गुन्द्र**] वृक्ष-विशेष ; (पाअ)।

गुंदल न [**दे. गुन्द्रल**] १ आनन्द-ध्वनि, खुशी का आवाज, हर्ष का तुमुल ध्वनि ; "मत्तवरकामिणीसंवक्कयगुंदलं" (सुर ३, ११५)। "करिणीहिं कलहेहिं य खणमेक्कं हरिसगुंदलं काउं" (सुपा १३७)। २ हर्ष-भर, आनन्द-संदोह, खुशी की वृद्धि ; "अमंदआणंदगुंदलगुरुयं", "आणंदगुंदलेणं ललइ लीलावईहिं परिकलिओ" (सुपा २२; १३६)। ३ वि. आनन्द-मग्न, खुशी में लीन : "तं तह दट्ठुं आणंदगुंदलं" (सुपा १३४)।

गुंदवडय न [**दे**] एक जात की मीठाई, गुजराती में जिसका 'गुंदवडा' कहते हैं ; (सुपा ४८५)।

गुंदा } स्त्री [**दे**] १ बिन्दु, २ अधम, नीच ; (दे २,
गुंपा } १०१)।

गुंफ सक [**गुम्फ्**] गूँथना, गठना। गुंफइ ; (षड्)। वकृ —**गुंफंत** ; (कुमा)।

गुंफ पुं [**गुम्फ**] १ रचना, गूँथना, ग्रन्थन; (उप १०३१ टी ; दे १, १५० ; ६, १४२)।

गुंफ पुं [**दे**] गुप्ति, कारागार, जेल ; (दे २, ९०)।

गुंफण न [**दे**] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष ; "गंफणफेरणतुंकारएहिं" (सुर २, ८)।

गुंफी स्त्री [**दे**] शतपदी, क्षुद्र कीट-विशेष, गोजर, कनखजूरा; (दे २, ९१)।

गुग्गुल पुं [**गुग्गुल**] सुगन्धित द्रव्य विशेष, गूगल ; (सुपा १५१)।

गुग्गुली स्त्री [**गुग्गुल**] गूगल का पेड़ ; (जी १०)।

गुग्गुलु देखो **गुग्गुल** ; (स ४३६)।

गुच्छ } पुं [**गुच्छ**] १ गुच्छा, गुच्छक, स्तवक; (उत्त २;
गुच्छय } स्वप्न ७२)। २ वृक्षों की एक जाति ; (पराण १)। ३ पत्ती का समूह ; (जं १)।

गुच्छय देखो **गोच्छय** ; (ओघ ६६८)।

गुच्छिय वि [**गुच्छित**] गुच्छा वाला, गुच्छ-युक्त ; "निच्चं गुच्छिया" (राय)।

गुज्ज देखो **गोज्ज** ; (सुपा २८१)।

गुज्जर पु [**गूर्जर**] १ भारत का एक प्रान्त, गुजरात देश ; (पिंग)। २ वि. गुजरात का निवासी। स्त्री—°री; (नाट)।

गुज्जरत्ता स्त्री [**गूर्जरत्रा**] गुजरात देश ; (सार्ध ६८)।

गुज्जलिअ वि [**दे**] संघटित ; (षड्)।

गुज्झ } वि [**गुह्य**] १ गोपनीय, छिपाने योग्य ; (णाया
गुज्झअ } १, १ ; हे २, १२४)। २ न. गुप्त बात, रहस्य; "सिमंतिणिहिययगयं गुज्झं पिव तक्खणा फुट्टं" (उप ७२८ टी)। ३ लिंग, पुरुष-चिन्ह ; ४ योनि, स्त्री-चिन्ह ; (धर्म २)। ५ मैथुन, संभोग ; (पगह १, ४)। °**हर** वि [°**धर**] गुप्त बात को प्रकट नहीं करने वाला ; (दे २, ४३)। °**हर** वि [°**हर**] रहस्य-भेदी, गुप्त बात को प्रसिद्ध करने वाला ; (दे २, ६३)।

गुज्झअ } पुं [**गुह्यक**] देवों की एक जाति; (ठा ५, ३)।
गुज्झग }

गुट्ठ न [**दे**] स्तम्ब, तृण-काण्ड; "अज्जुणगुट्ठं व तस्स जाणूइं" (उवा)।

गुट्ठ देखो **गोट्ठ** ; (पाअ ; भत्त १६२)।

गुट्ठी देखो **गोट्ठी** ; (सूक्त ५८)।

गुड सक [**गुड्**] १ हाथी को कवच वगैरः से सजाना। २ लड़ाई के लिए तय्यार करना, सजाना। "गुडह गइंदे पउणीकरेह रहचक्कपाइक्के" (सुपा २८८)। कवकृ—"गुडिअगुडिज्जंतभडं" (से १२, ८७)।

गुड पुं [**गुड**] १ गुड़, ईख का विकार, लाल शक्कर; (हे १, २०२; प्रासू १५१)। २ एक प्रकार का कवच; (राज)। °**सत्थ** न [°**सार्थ**] नगर-विशेष ; (आक)।

गुडदालिअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ; (दे २, ६२)।

गुडा स्त्री [**गुडा**] १ हाथी का कवच ; २ अश्व का कवच ; (विपा १, २)।

गुडिअ वि [**गुडित**] कवचित, वर्मित, कृत-संनाह ; (से १२, ७३ ; ८७ ; विपा १, २)।

गुडिआ स्त्री [**गुटिका**] गोली ; (गा १७७)।

गुडोलद्धिआ स्त्री [**दे**] चुम्बन ; (दे २, ६१)।

गुण सक [**गुणय्**] १ गिनना। २ आवृत्ति करना, याद करना। गुणइ ; (सूक्त ५१ ; हे ४, ४२२)। गुणेइ ; (उव)। वकृ—**गुणमाण** ; (उप पृ ३६६)।

गुण पुंन [**गुण**] १ गुण, पर्याय, स्वभाव, धर्म ; (ठा ५, ३)। २ ज्ञान, सुख वगैरः एक ही साथ रहने वाला धर्म ; (सम्म १०७ ; १०६)। ३ ज्ञान, विनय, दान, शौर्य, सदाचार वगैरः दोष-प्रतिपक्षी पदार्थ ; (कुमा ; उत्त १६ ; अणु ; ठा ४, ३ ; से १, ४)। ४ लाभ, फायदा ; "विहवेहिं गुणाइं मग्गंति" (हे १, ३४ ; सुपा १०३)। ५ प्रशस्तता, प्रशंसा ; (णाया १, १)। ६ रज्जू, डोरा, धागा ; (से १, ४)। ७ व्याकरण-प्रसिद्ध ए, आ और अर् रूप स्वर-विकार ; (सुपा १०३)। ८ जैन गृहस्थ को पालने का व्रत-विशेष, गुण-व्रत ; (पंचव ३)। ६ रूप, रस, गन्ध वगैरः द्रव्याश्रित धर्म ; "गुण-पच्चक्खतणओ गुणीवि जाओ घडोव्व पच्चक्खो" (ठा१,१; उत्त २८)। १० प्रत्यञ्चा, धनुष का रोदा; (कुमा)। ११ कार्य, प्रयोजन; (भग २,१०)। १२ अप्रधान, अ-मुख्य, गौण; (हे १,३४)। १३ अंश, विभाग; (अणु)। १४ उपकार, हित ; (पंचा ५)। °**कर** वि [°**कर**] १ लाभ-कारक ; २ उपकार-कारक; (पंचा ५)। °**कार** पुं [°**कार**] गुना करना, अभ्यास-राशि; (सम ६०)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ एक राज-कुमार ; (आवम)। २ एक जैन मुनि और ग्रन्थकार; ३ श्रेष्ठि-विशेष ; (राज)। °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] गुणों का स्वरूप-विशेष, मिथ्यादृष्टि वगैरः चउदह गुण-स्थानक ; (कम्म ४; पव ६०)। °**ट्ठिअ** पुं [°**ार्थिक**] गुण को प्रधान मानने वाला मत, नय-विशेष; (सम्म १०७)। °**ड्ढ** वि [°**ाढ्य**] गुणी, गुणवान् ; (सुर ३, २०; १३०)। °**ण्ण** °**ण्णु**, °**न्न**, °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] गुण का जानकार ; (गउड ; उवर ८६ ; उप ५३० टी; सुपा १२२)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] गुणी पुरुष; (सूअ १, ४)। °**मंत** वि [°**वत्**] गुणी, गुण-युक्त ; (आचा २, १, ६)। °**रयणसंवच्छर** न [°**रत्नसंवत्सर**] तपश्चर्या-विशेष ; (भग)। °**व**, °**वंत** वि [°**वत्**] गुणी, गुण-युक्त; (श्रा ३६; उप ८७५)। °**व्वय** न [°**व्रत**] जैन गृहस्थ को पालने योग्य व्रत-विशेष; (पडि)। °**सिलय** न [°**शिलक**] राजगृह नगर का एक चैत्य ; (णाया १, १)। °**सेढि** स्त्री [°**श्रेणि**] कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष ; (पंच)।

°**सेण** पुं [°**सेन**] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा; (स ६)। °**हर** वि [°**धर**] १ गुणों को धारण करने वाला, गुणी; २ तन्तु-धारक ; स्त्री— °**रा** ; (सुपा ३२७)। °**ायर** पुं [°**ाकर**] गुणों की खान, अनेक गुण वाला, गुणी ; (पउम १५,६८ ; प्रासू १३४)।

गुण देखो **एगूण**। "गुणसट्ठि अपमत्ते सुराउबंधं तु जइ इहा-गच्छे" (कम्म २,८ ; ४, ५४ ; ५६ ; श्रा ४४)।

°**गुण** वि [°**गुण**] गुना, आवृत ; "वीसगुणो तीसगुणो" (कुमा ; प्रासू २६)।

गुणा स्त्री [**दे**] मिष्टान्न-विशेष ; (भवि)।

गुणाविय वि [**गुणित**] पढाया हुआ, पाठित ; "तत्थ सो अज्झएण सयलाओ धणुव्वेयाइयाओ महत्थविज्जाओ गुणा-विओ" (महा)।

गुणि वि [**गुणिन्**] गुण-युक्त, गुण वाला ; (उप ५६७ टी ; गउड ; प्रासू २६)।

गुणिअ वि [**गुणित**] १ गुना हुआ, जिसका गुणा किया गया हो वह ; (श्रा ६)। २ चिन्तित, याद किया हुआ ; (से ११, ३१)। ३ पठित, अधीत ; (ओघ ६२)। ४ जिस पाठ की आवृत्ति की गई हो वह, परावर्तित ; (वव ३)।

गुणिल्ल वि [**गुणवत्**] गुणी, गुण-युक्त; (पि ५६५)।

गुत्त वि [**गुप्त**] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ ; (णाया १,४ ; सुर ७, २३४)। २ रक्षित; (उत्त १५)। ३ स्व-पर की रक्षा करने वाला, गुप्ति-युक्त, मन वगैरः की निर्दोष प्रवृत्ति वाला ; (उप ६०४)। ४ एक स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (आक)।

गुत्त देखो **गोत्त** ; (पाअ ; भग ; आवम)।

गुत्तण्हाण न [**दे**] पितृ-तर्पण; (दे २, ६३)।

गुत्ति स्त्री [**गुप्ति**] १ कैदखाना, जेल ; (सुर १,७३ ; सुपा ६३)। २ कठघरा ; (सुपा ६३)। ३ मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्ति का रोकना; ४ मन वगैरः की निर्दोष प्रवृत्ति ; (ठा २, १; सम ८)। °**गुत्त** वि [°**गुप्त**] मन वगैरः की निर्दोष प्रवृत्ति वाला, संयत; (पण्ह २,४)। °**पाल** पुं [°**पाल**] जेल का रक्षक, कैदखाना का अध्यक्ष ; (सुपा ४६७)। °**सेण** पुं [°**सेन**] ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव; (सम१५३)।

गुत्ति स्त्री [**दे**] १ बन्धन ; (दे २, १०१ ; भवि)। २ इच्छा, अभिलाषा ; ३ वचन, आवाज ; ४ लता, वल्ली ; ५ सिर पर पहनी जाती फूल की माला ; (दे २, १०१)।

गुत्तिंदिय वि [**गुप्तेन्द्रिय**] इंद्रिय-निग्रह करने वाला, संयतेंद्रिय ; (भग ; णाया १,४)।

गुत्तिय वि [**गौप्तिक**] रक्षक, रक्षण करने वाला ; "नगर-गुत्तिए सद्दावेइ" (कप्प)।

गुत्थ वि [**ग्रथित**] गुम्फित, गूँथा हुआ; (स ३०३ ; पाप; गा ६३ ; कप्पू)।

गुत्थंड पुं [**दे**] भास-पक्षी, पक्षि-विशेष ; (दे २, ६२)।

गुद पुंस्त्री [**गुद**] गाँड़, गुदा ; (दे ६, ४६)।

गुप्प अक [**गुप्**] व्याकुल होना। गुप्पइ ; (हे ४,१५० ; षड्)। वकृ—**गुप्पंत, गुप्पमाण** ; (कुमा ६, १०२; कप्प; औप)।

गुप्प वि [**गोप्य**] १ छिपाने योग्य। २ न. एकान्त, विजन ; (ठा ४,१)।

गुप्पई स्त्री [**गोष्पदी**] गौ का पैर डूबे उतना गहरा ; "को उत्तरिउं जलहिं, निब्बुड्डए गुप्पईनीरे" (धम्म १२ टी)।

गुप्पंत न [**दे**] १ शयनीय, शय्या ; २ वि. गोपित, रक्षित ; (दे २,१०२)। ३ संमूढ़, मुग्ध, घबड़ाया हुआ, व्याकुल ; (दे २, १०२ ; से १,२ ; २,४)।

गुप्पय देखो **गो-पय** ; (सूक्त ११)।

गुप्फ पुं [**गुल्फ**] फीली, पैर की गाँठ; (स ३३; हे २,६०)।

गुफगुमिअ वि [**दे**] सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त; (दे २, ६३)।

गुब्भ देखो **गुप्फ** ; (षड्)।

गुभ सक [**गुफ्**] गूँथना, गठना। गुभइ; (हे १,२३६)।

गुम सक [**भ्रम्**] घूमना, पर्यटन करना, भ्रमण करना। **गुमइ**; (हे ४, १६१)।

गुमगुम } अक [**गुमगुमाय्**] १ गुम गुम आवाज
गुमगुमाअ } करना। २ मधुर अव्यक्त ध्वनि करना। वकृ—**गुमगुमंत, गुमगुमिंत, गुमगुमायंत** ; (औप ; णाया१, १ ; कप्प; पउम ३३, ६)।

गुमगुमाइय वि [**गुमगुमायित**] जिसने गुम-गुम आवाज किया हो वह ; (औप)।

गुमिअ वि [**भ्रमित**] भ्रमित, घुमाया हुआ ; (कुमा)।

गुमिल वि [**दे**] १ मूढ़, मुग्ध ; २ गहन, गहरा ; ३ प्रस्खलित ; ४ आपूर्ण, भरपूर ; (दे २, १०२)।

गुमुगुमुगुम देखो **गुमगुम**। वकृ—**गुमुगुमुगुमंत, गुमुगुमुगुमेंत**; (पउम २, ४० ; ६३, ६)।

गुम्म अक [**मुह्**] मुग्ध होना, घबड़ाना, व्याकुल होना। गुम्मइ ; (हे ४, २०७)।

गुम्म पुंन [**गुल्म**] १ लता, वल्ली, वनस्पति-विशेष ; (णाया १)। २ झाड़ी, वृक्ष-घटा ; (पाअ)। ३ सेना-विशेष, जिसमें

२७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़ा और १३५ प्यादा हो ऐसी सेना ; (पउम ५६,५)। ४ वृन्द, समूह ; (औप ; सूअ २, २)। ५ गच्छ का एक हिस्सा, जैन मुनि-समाज का एक अंश ; (औप)। ६ स्थान, जगह ; (ओघ १६३)।

गुम्मइअ वि [**दे**] १ मूढ़, मूर्ख ; (दे २, १०३ ; ओघ १३६ ; पाअ ; षड्)। २ अपूरित, पूर्ण नहीं किया हुआ ; (षड्)। ३ पूरित, पूर्ण किया हुआ ; (दे २,१०३)। ४ स्खलित ; ५ संचलित, मूल से उच्चलित ; ६ विघटित, वियुक्त ; (दे २, १०३ ; षड्)।

गुम्मड देखो **गुम्म**। गुम्मडइ ; (हे ४, २०७)।

गुम्मडिअ वि [**मोहित**] मोह-युक्त, मुग्ध किया हुआ ; (कुमा ७, ४७)।

गुम्मागुम्मि अ. जत्थाबन्ध होकर ; (औप)।

गुम्मिअ वि [**मुग्ध**] १ मोह-प्राप्त, मूढ़ ; (कुमा ७,४७)। २ घूर्णित, मद से घूमता हुआ ; (बृह १)।

गुम्मिअ पुं [**गौल्मिक**] कोटवाल, नगर-रक्षक ; (ओघ १६३ ; ७६६)।

गुम्मिअ वि [**दे**] मूल से उखाड़ा हुआ, उन्मूलित ; (दे २, ६२)।

गुम्मी स्त्री [**दे**] इच्छा, अभिलाषा ; (दे २,६०)।

गुम्ह सक [**गुम्फ्**] गूँथना, गढ़ना। गुम्हदु (शौ); (स्वप्न ५३)।

गुय्ह देखो **गुज्झ**; (हे २, १२४)।

गुरव देखो **गुरु**; "जो गुरवे साहीणे धम्मं साहेइ पोढबुद्धिओ" (पउम ६, ११४)।

गुरु } पुं [**गुरु**] १ शिक्षक, विद्या-दाता, पढ़ाने वाला ; **गुरुअ** } (वव १; अणु)। २ धर्मोपदेशक, धर्माचार्य ; (विसे ६३०)। ३ माता, पिता वगैरः पूज्य लोग ; (ठा १०)। ४ बृहस्पति, ग्रह-विशेष ; (पउम १७, १०८ ; कुमा)। ५ स्वर-विशेष, दो मात्रा वाला आ, ई वगैरः स्वर, जिसके पीछे अनुस्वार या संयुक्त व्यञ्जन हो ऐसा भी स्वर-वर्ण; (पिंग)। ६ वि. बड़ा, महान्; (उवा; से ३, ३८)। ७ भारी, बोझील; (ठा १, १ ; कम्म १)। ८ उत्कृष्ट, उत्तम ; (कम्म ४, ७२ ; ७६)। °**कम्म** वि [°**कर्मन्**] कर्मों का बोझ वाला, पापी ; (सुपा २६५)। °**कुल** न [°**कुल**] १ धर्माचार्य का सामीप्य; (पंचा ११)। २ गुरु-परिवार ; (उप ६७७)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] गति-विशेष, भारीपन से ऊँचा,-नीचा गमन ; (ठा ८)। °**लाघव** न [°**लाघव**] सारासार, अच्छा और बुरापन; (वव ४)। °**सज्झिल्लग** पुं[°**सहाध्यायिक**]गुरु के भाई; (बृह ४)।

गुरुई देखो **गरुई**; (णाया १,१)।

गुरुणी स्त्री [**गुर्वी**] १ गुरु-स्थानीय स्त्री; (सुर ११, २११)। २ धर्मोपदेशिका, साध्वी; (उप ७२८ टी)।

गुरेड न [**गुरेट**] तृण-विशेष ; (दे १, ५४)।

गुल देखो **गुड**=गुड ; (ठा ३, १ ; ६ ; णाया १, ८ ; गा ५५४ ; औप)।

गुल न [**दे**] चुम्बन ; (दे २, ६१)।

गुलगुंछ सक [**उत्+क्षिप्**] ऊँचा फेंकना। गुलगुंछइ ; (हे ४, १४४)। संकृ—**गुलगुंछिऊण** ; (कुमा)।

गुलगुंछ देखो **गुलुगुंछ**=उद्+नमय्। गुलगुंछइ; (हे ४,३६)।

गुलगुल अक [**गुलगुलाय्**] गुलगुल आवाज करना, हाथी का हर्ष से गरजना। वकृ—**गुलगुलंत, गुलगुलेंत** ; (उप १०३१ टी ; उवा ; पउम ८, १७१ ; १०२,२०)।

गुलगुलाइय } न [**गुलगुलायित**] हाथी की गर्जना ; **गुलगुलिय** } (जं ५ ; सुपा १३७)।

गुलल सक [**चाटौ कृ**] खुशामद करना। गुललइ; (हे ४, ७३)। वकृ—**गुललंत**; (कुमा)।

गुलिअ वि [**दे**] मथित, विलोड़ित ; (दे २, १०३ ; षड्)। २ पुं. गेंद, कन्दुक ; "कंदुओ गुलिओ" (पाअ)।

गुलिआ स्त्री [**दे**] १ बुसिका ; २ गेंद, कन्दुक ; ३ स्तबक, गुच्छा ; (दे २, १०३)।

गुलिआ स्त्री [**गुलिका**] १ गोली, गुटिका ; (महा ; णाया १, १३ ; सुपा २६२)। २ वर्णक द्रव्य-विशेष, सुगन्धित द्रव्य-विशेष ; (औप ; णाया १,१—पत्र २४)।

गुलुइय वि [**दे**] गुल्मित, गुल्म वाला, लता समूह वाला ; (औप ; भग)।

गुलुंछ पुं [**गुलुञ्छ**] गुच्छ, गुच्छा ; (दे २, ६२)।

गुलुगुंछ देखो **गुलगुंछ**=उत्+क्षिप्। गुलुगुंछइ; (हे ४,१४४)।

गुलुगुंछ सक [**उत्+नमय्**] ऊँचा करना, उन्नत करना। गुलुगुंछइ ; (हे ४,३६)।

गुलुगुंछिअ वि [**उन्नमित**] ऊँचा किया हुआ, उन्नामित ; (दे २, ६३ ; कुमा)।

गुलुगुंछिअ वि [**दे**] बाड़ से अन्तरित ; (दे २, ६३)।

गुलुगुल देखो **गुलगुल**। गुलुगुलंति ; (भवि)। वकृ—**गुलुगुलेंत** ; (पि ५५८)।

गुलुगुलाइय } देखो **गुलगुलाइअ** ; (औप ; पण्ह १, ३ ; **गुलुगुलिय** } स ३६६)।

गुलुच्छ वि [दे] भ्रमित, घुमाया हुआ, फिराया हुआ ; (दे २, ६२)।

गुलुच्छ पुं [**गुलुच्छ**] गुच्छा, स्तबक ; (पाअ)।

गुल्लइय वि [**गुल्मवत्**] लता-समूह वाला, गुल्म-युक्त ; (णाया १,१—पत्र ५) ।

गुव देखो **गुप्प**=गुप्। गुवंति; (भग १५)।

°**गुवलय** देखो **कुवलय**। "मुद्दियगुवलयनिहाणं" (णंदि)।

गुवालिया [दे] देखो **गोआलिआ** ; (जी १७)।

गुविअ वि [**गुप्त**] व्याकुल, क्षुब्ध ; (ठा ३,४—पत्र १६१)।

गुविल वि [**गुपिल**] १ गहन, गहरा, गाढ़, निबिड़ ; (सुर ६, ६६; उप पृ ३० ; पण्ह १, ३)। २ न. झाड़ी, जंगल ; (उप ८३३ टी) ;

"इक्को करेइ कम्मं, इक्को अणुहवइ दुक्कयविभारं ।
इक्को संसरइ जिओ, जरमरणचउग्गइगुविलं" (पच ४४)।

गुविल वि [दे] चीनी का बना हुआ, मिस्री वाला (मिष्टान्न) ; (उर ५, १०)।

गुव्विणी स्त्री [**गुर्विणी**] गर्भवती स्त्री ; (सुपा २७७)।

गुह देखो **गुभ**। गुहइ ; (हे १, २३६)।

गुह पुं [**गुह**] कार्तिकेय, एक शिव-पुत्र ; (पाअ)।

गुहा स्त्री [**गुहा**] गुफा, कन्दरा ; (पाअ ; ठा २, ३ ; प्रासू २७१)।

गुहिर वि [दे] गम्भीर, गहरा ; (पाअ ; कप्प)।

गूढ वि [**गूढ**] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ ; (पण्ह १, ४ ; जी १०)। °**दंत** पुं [°**दन्त**] १ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष ; २ द्वीप-विशेष का निवासी ; (ठा ४, २)। ३ एक जैन मुनि; ४ अनुत्तरोपपातिक दशा सूत्र का एक अध्ययन; (अनु २)। ५ भरत क्षेत्र का एक भावी चक्रवर्ती राजा ; (सम १५४)।

गूह सक [**गुह्**] छिपाना, गुप्त रखना। वकृ—**गूहंत** ; (स ६१०)।

गूह न [**गूथ**] गू, विष्ठा; (तंदु)।

गूहण न [**गूहन**] छिपाना ; (सम ७१)।

गूहिय वि [**गूहित**] छिपाया हुआ ; (स १८६)।

गृण्ह } (अप) देखो **गिण्ह**। गृन्हइ ; (कुमा)। संकृ—
गृन्ह } **गृण्हेप्पिणु** ; (हे ४, ३६४)।

गेअ वि [**गेय**] १ गाने योग्य, गाने लायक, गीत ; (ठा ४, ४—पत्र २८७ ; वज्जा ४४)। २ न. गीत, गान ; "मणहरगेयझुणीए" (सुर ३, ६६ ; गा ३३४)।

गेंठुअ न [दे] स्तनों के ऊपर की वस्त्र-ग्रन्थि ; (दे २, ६३)।

गेंठुल्ल न [दे] कञ्चुक, चोली ; (दे २, ६४)।

गेंड न [दे] देखो **गेंठुअ** ; (दे २, ६३)।

गेंडुई स्त्री [दे] क्रीड़ा, खेल, गम्मत ; (दे २, ६४)।

गेंदुअ पुं [**कन्दुक**] गेंद, गेंदा, खेलने की एक वस्तु ; (हे १, ५७ ; १८२ ; सुर १, १२१)।

गेज्ज वि [दे] मथित, विलोडित ; (दे २, ८८)।

गेज्जल न [दे] ग्रीवा का आभरण ; (दे २, ६४)।

गेज्झ वि [**ग्राह्य**] ग्रहण-योग्य ; (हे १, ७८)।

गेडण न [दे] १ फेंकना, क्षेपण ; २ दे देना; "तत्तुंबगेडणकए ससंभमा आसमाउ लहु" (उप ६४८ टी)।

गेडु न [दे] १ पङ्क, कीच, कादा ; २ यव, अन्न-विशेष ; (दे २, १०४)।

गेड्डी स्त्री [दे] गेड़ी, गेंद खेलने की लकड़ी ; (कुमा)।

गेण्ह देखो **गिण्ह**। गेण्हइ ; (हे ४, २०६; उव ; महा)। भूका— गेण्हीअ ; (कुमा)। भवि—गेण्हिस्सइ; (महा)। वकृ—**गेण्हंत, गेण्हमाण**; (सुर ३, ७४; विपा १, १)। संकृ—**गेण्हित्ता, गेण्हिऊण, गेण्हिअ**; (भग; पि ५८६; कुमा)। कृ—**गेण्हियव्व** ; (उत्त १)।

गेण्हण न [**ग्रहण**] आदान, उपादान, लेना; (उप ३३६; स ३७५)।

गेण्हणया स्त्री [**ग्रहणा**] ग्रहण, आदान ; (उप ५२६)।

गेण्हाविय वि [**ग्राहित**] ग्रहण कराया हुआ; (स ५२६; महा)।

गेण्हिअ न [दे] उरः-सूत्र, स्तनाच्छादक वस्त्र ; (दे २, ६४)।

गेद्ध देखो **गिद्ध**; (औप)।

गेरिअ } पुंन [**गैरिक**] १ गेरु, लाल रङ्ग की मिट्टी ;
गेरुअ } (स २२३ ; पि ६० ; ११८)। २ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति ; (पण्ण १—पत्र २६)। ३ वि. गेरु रंग का ; (कप्पू)। ४ पुं. त्रिदण्डी साधु, सांख्य मत का अनुयायी परिव्राजक ; (पव ६४)।

गेलण्ण } न [**ग्लान्य**] रोग, बिमारी, ग्लानि ; (विसे
गेलन्न } ५४० ; उप ४६६ ; ओघ ७७ ; २२१)।

गेविज्ज } न [**ग्रैवेयक**] १ ग्रीवा का आभूषण, गले का
गेवेज्ज } गहना; (औप; णाया १, २)। २ ग्रैवेयक
गेवेज्जय } देवों का विमान; (ठा ६)। ३ पुं. उत्तम

श्रेणी के देवों की एक जाति ; (कप्प ; ओप; भग; जी ३३ ; इक)।

गेह न [**गेह**] गृह, घर, मकान; (स्वप्न १६ ; गउड)। °**जामाउय** पुं [°**जामातृक**] घरजमाई, सर्वदा ससुर के घर में रहने वाला जामाता ; (उत्त पृ ३६६)। °**गार** वि [°**ाकार**] १ घर के आकार वाला ; २ पुं. कल्पवृक्ष की एक जाति ; (सम १७)। °**ालु** वि [°**वत्**] घर वाला, गृही, संसारी ; (षड्)। °**ासम** पुं [°**ाश्रम**] गृहस्थाश्रम ; (पउम ३१, ८३)।

गेहि वि [**गृद्ध**] लोलुप, अत्यासक्त ; (ओघ ८७)।

गेहि स्त्री [**गृद्धि**] आसक्ति, गार्ध्य, लालच ; (स ११३; पगह १, ३)।

गेहि वि [**गेहिन्**] नीचे देखो; (गाया १, १४)।

गेहिअ वि [**गेहिक**] १ घर वाला, गृही। २ पुं. भर्ता, धनी, पति ; (उत्त २)।

गेहिअ वि [**गृद्धिक**] अत्यासक्त, लोलुप, लालची ; (पगह १, ३)।

गेहिणी स्त्री [**गेहिनी**] गृहिणी, स्त्री ; (सुपा ३४१ ; कुमा ; कप्पू)।

गो पुं [**गो**] १ रश्मि, किरण ; (गउड)। २ स्वर्ग, देव-भूमि ; (सुपा १४२)। ३ बैल, बलीवर्द ; ४ पशु, जानवर ; ५ स्त्री. गैया ; "अपरप्पेरियतिरियानियमियदिग्गमणओणिलो गोव्व" (विसे १७५८ ; पउम १०३, ५०; सुपा २७५)। ६ वाणी, वाग् ; (सूत्र १, १३)। ७ भूमि ; "जं महइ विंभवणगोयराण लोआ पुलिंदाण" (गउड; सुपा १४२)। °**आल** देखो °**वाल** ; (पुप्फ २१६)। °**इल्ल** वि [°**मत्**] गो-युक्त, जिसके पास अनेक गौ हों वह; (दे २, ६८)। °**उल** न [°**कुल**] १ गौओं का समूह ; (आव ३)। २ गोष्ठ, गो-बाड़ा; "सामी गोउलगओ" (आवम)। °**उलिय** वि [°**कुलिक**] गो-कुल वाला, गो-कुल का मालिक, गोवाला ; (महा)। °**किलंजय** न [°**किलञ्जक**] पात्र-विशेष, जिसमें गौ को खाना दिया जाता है ; (भग ७, ८)। °**कीड** पुं [°**कीट**]:पशुओं की मक्खी, बघी, (जी १६)। °**क्खीर**, °**खीर** न [°**क्षीर**] गैया का दूध ; (सम ६०; गाया १, १)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] गौ की चोरी, गौ को छीनना ; (पगह १, ३)। °**ग्गहण** न [°**ग्रहण**] गो-ग्रह ; (गाया १, १८)। °**णिसज्जा** स्त्री [°**निषद्या**] आसन विशेष, गौ की तरह बैठना ; (ठा १, १)। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] १ गौओं का तालाव आदि में उतरने का रास्ता ; क्रम से नीची जमीन; (जीव ३)। २ लवण समुद्र वगैरः की एक जगह ; (ठा १०)। °**त्तास** वि [°**त्रास**] १ गौओं का त्रास देने वाला ; २ पुं. एक कूटग्राह का पुत्र; (विपा १, २)। °**दास** पुं [°**दास**] १ एक जैन मुनि, भद्रबाहु स्वामी का प्रथम शिष्य ; २ एक जैन मुनि-गण ; (कप्प ; ठा ६)। °**दोहिया** स्त्री [°**दोहिका**] १ गौ का दोहन ; २ आसन-विशेष, गौ दोहने के समय जिस तरह बैठा जाता है उस तरह का उपवेशन ; (ठा ५, १)। °**दुह** वि [°**दुह्**] गौ को दोहने वाला ; (षड्)। °**धूलिआ** स्त्री [°**धूलिका**] लग्न-विशेष, गौओं को चरा कर पीछे धुमने का समय, सायंकाल ; "वेलव्व गोधूलिया" (रंभा)। °**पय**, °**प्पय** न [°**प्पद**] १ गौ का पैर डूबे उतना गहरा; "लद्धम्मि जम्मि जीवाण जायइ गोपयं व भवजलही" (आप ६६)। २ गो-पद-परिमित भूमि; (अणु)। ३ गौ का पैर ; (ठा ४, ४)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] श्रेष्ठि-विशेष, शालिभद्र के पिता का नाम ; (ठा १०)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] गौओं को चरने की जगह ; (आवम)। °**म** वि [°**मत्**] गौ वाला ; (विसे १४६८)। °**मड** न [°**मृत**] गौ का शव; (गाया १, ११—पत्र १७३)। °**मय** न [°**मय**] गोबर, गौ का मल, गो-विष्ठा ; (भग ५, २)। °**मुत्तिया** स्त्री [°**मूत्रिका**] १ गौ का मूत्र, गो-मूत्र; (ओघ ६४ भा)। २ गो-मूत्र के आकार वाली गृह-पंक्ति; (पंचव २)। °**मुहिअ** न [°**मुखित**] गौ के मुख का आकार वाली ढाल; (गाया १, १८)। °**रहग** पुं [°**रथक**] तीन वर्ष का बैल ; (सूत्र १, ४, २)। °**रोयण** स्त्रीन [°**रोचन**] स्वनाम-ख्यात पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष, गोमस्तकस्थित शुष्क पित्त; (सुर १, १३७) ; स्त्री—°**णा**; (पंचा ४)। °**लेहणिया** स्त्री [°**लेहनिका**] ऊषर भूमि ; (निचू ३)। °**लोम** पुं [°**लोम**] १ गौ का रोम, बाल; २ द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जीव १)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ इन्द्र ; २ सूर्य ; ३ राजा ; (सुपा १४२)। ४ महादेव ; ५ बैल; (हे १, २३१)। °**वइय** पुं [°**व्रतिक**] गौओं की चर्या का अनुकरण करने वाला एक प्रकार का तपस्वी; (गाया १, १५)। °**वय** देखो °**पय**; (राज)। °**वाड** पुं [°**वाट**] गौओं का वाड़ा ; (दे १, १४६)। °**व्वइय** देखो °**वइय** ; (ओप)। °**साला** स्त्री [°**शाला**]

गौओं का वाड़ा ; (निचू ८) । °हण न [°धन] गौओं का समूह ; (गा ६०६ ; सुर १, ४६) ।

गोअ देखो **गोव**=गोपय् । कृ—**गोअणिज्ज**; (नाट—मालती १२१) ।

गोअंट पुं [**दे**] १ गौ का चरण ; २ स्थल-शृङ्गाट, स्थल में होने वाला शृङ्गाट का पेड़ ; (दे २, ६८) ।

गोअग्गा स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला ; (दे २, ६६) ।

गोअल्ला स्त्री [**दे**] दूध बेचने वाली स्त्री ; (दे २, ६८) ।

गोआ स्त्री [**गोदा**] नदी-विशेष, गोदावरी नदी ; "गोआण-इकच्छकुडंगवासिणा दरिअसीहेण" (गा १७५) ।

गोआ स्त्री [**दे**] गर्गरी, कलशो, छोटा घड़ा; (दे २, ८६) ।

गोआअरी स्त्री [**गोदावरी**] नदी-विशेष, गोदावरी ; (गा ३५५) ।

गोआलिआ स्त्री [**दे**] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष ; (दे २, ६८) ।

गोआवरी देखो **गोआअरी** ; (हे २, १७४) ।

गोउर न [**गोपुर**] नगर का दरवाजा ; (सम १३७ ; सुर १, ५६) ।

गोंजी } स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ६५) ।
गोंठी }

गोंड देखो **कोंड**=कौगड ; (इक) ।

गोंड न [**दे**] कानन, बन, जंगल ; (दे २, ६४) ।

गोंडी स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ६५) ।

गोंदल देखो **गुंदल**; (भवि) ।

गोंदीण न [**दे**] मयूर-पित्त, मोर का पित्त ; (दे २, ६७) ।

गोंफ पुं [**गुल्फ**] पाद-ग्रन्थि, पैर की गाँठ ; (पण्ह १, ४) ।

गोकण्ण } पुं [**गोकर्ण**] १ गौ का कान । २ दो खुर
गोकन्न } वाला चतुष्पद-विशेष ; (पण्ह १, १) । ३ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष ; ४ गोकर्ण-द्वीप का निवासी मनुष्य ; (ठा ४, २) ।

गोक्खुरय पुं [**गोक्षुरक**] एक ओषधि का नाम, गोखरू ; (स २५६) ।

गोच्चय पुं [**दे**] प्राजन-दण्ड, कोड़ा ; (दे २, ६७) ।

गोच्छ देखो **गुच्छ** ; (से ६, ४७ ; गा ५३२) ।

गोच्छअ } पुंन [**गोच्छक**] पात्र वगैरः साफ करने का
गोच्छग } वस्त्र-खण्ड ; (कस ; पण्ह २, ५) ।

गोच्छड न [**दे**] गोमय, गो-विष्ठा ; (मृच्छ ३४) ।

गोच्छा स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ६५) ।

गोच्छिय देखो **गुच्छिय** ; (औप ; णाया १, १) ।

गोछड देखो **गोच्छड**; (नाट—मृच्छ ४१) ।

गोजलोया स्त्री [**गोजलौका**] क्षुद्र कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (पण्ण १५) ।

गोज्ज पुं [**दे**] १ शारीरिक दोष वाला बैल; (सुपा २८१)। २ गाने वाला, गवैया, गायक ;

" वीणावंससणाहं, गीयं नडनट्टछत्तगोज्जेहिं ।
बंदिजणेण सहरिसं, जयसद्दालायणं च कयं "
(पउम ८५, १६) ।

गोट्ठ पुं [**गोष्ठ**] गोवाड़ा, गौओं के रहने का स्थान ; (महा ; पउम १०३, ४० ; गा ४४७) ।

गोट्ठामाहिल पुं [**गोष्ठामाहिल**] कर्म-पुद्गलों को जीव प्रदेश से अबद्ध मानने वाला एक जैनाभास आचार्य ; (ठा ७) ।

गोट्ठि देखो **गोट्ठी** ; (आवम) ।

गोट्ठिल्ल } पुं [**गौष्ठिक**] एक मण्डली के सदस्य,
गोट्ठिल्लग } समान-वयस्क दोस्त ; (णाया १, १६—पत्र
गोट्ठिल्लय } २०५ ; विपा १, २—पत्र ३७) ।

गोट्ठी स्त्री [**गोष्ठी**] १ मण्डली, समान वय वालों की सभा ; (प्राप; दसनि १ ; णाया १, १६) । २ वार्त्तालाप, परामर्श ; (कुमा) ।

गोड पुं [**गौड**] १ देश-विशेष; (स २८६) । २ वि. गौड़ देश का निवासी ; (पण्ह १, १) ।

गोड पुं [**दे**] गोड़, पाद, पैर ; (नाट—मृच्छ १५८) ।

गोडा स्त्री [**गोला**] नदी-विशेष, गोदावरी ; (गा ५८ ; १०३) ।

गोडी स्त्री [**गौडी**] गुड़ की बनी हुई मदिरा, गुड़ का दारू ; (बृह २) ।

गोड्ड वि [**गौड**] १ गुड़ का बना हुआ ; २ मधुर, मिष्ट ; (भग १८, ६) ।

गोड्ड [**दे**] देखो **गोड** ; (मृच्छ १२०) ।

गोण पुं [**दे**] १ साक्षी ; (दे २, १०४) । २ बैल, वृषभ, बलीवर्द ; (दे २, १०४ ; कुमा ; हे २, १७४ सुपा ५४७ ; औप ; दस ५, १ ; आचा २, ३, ३ ; उप ६०४ ; विपा १, १) । °इन्न वि [°वत्] गौ वाला, गौओं का मालिक ; (सुपा ५४७) । °वइ पुंस्त्री [पति] गौओं का मालिक, गौ वाला ; (सुपा ५४७) ।

गोण वि [**गौण**] १ गुण-निष्पन्न, गुण-युक्त, यथार्थ ; (विपा १,२ ; औप)। २ अ-प्रधान, अ-मुख्य ; (औप)।
गोणंगणा स्त्री [**गवाङ्गना**] गैया, गौ ; (सुपा ४६५)।
गोणत्त } पुंन [**दे**] वैद्य का औजार रखने का थैला ;
गोणत्तय } (उप ३१७ ; स ४८४)।
गोणस पुं [**गोनस**] सर्प की एक जाति, फण-रहित साँप की एक जाति ; (पण्ह १,१ ; उप पृ ४०३)।
गोणा स्त्री [**दे**] गौ, गैया ; (षड्)।
गोणिक्क पुं [**दे**] गो-समूह, गौओं का समूह ; (दे २,९७; पाअ)।
गोणिय वि [**दे**] गौओं का व्यापारी ; (वव ६)।
गोणी स्त्री [**दे**] गौ, गैया ; (ओघ २३ भा)।
गोण्ण देखो **गोण**=गौण ; (कप्प ; णाया १,१—पत्र ३७)।
गोत्त पुं [**गोत्र**] १ पर्वत, पहाड; (श्रा १४)। २ न. नाम, अभिधान, आख्या ; (से १५, १०)। ३ कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से प्राणी उच्च या नीच जाति का कहलाता है ; (ठा२, ४)। ४ पुंन. गोत, वंश, कुल, जाति ; "सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता" (ठा ७)। °**क्खलिय** न [°**स्खलित**] नाम-विपर्यास, एक के बदले दूसरे के नाम का उच्चारण; (से ११,१७)। °**देवया** स्त्री [°**देवता**] कुल-देवी; (श्रा १४)। °**फुस्सिया** स्त्री [°**स्पर्शिका**] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १)।
गोत्ति वि [**गोत्रिन्**] समान गोत्र वाला, कुटुम्बी, स्वजन ; (सुपा १०९)।
गोत्ति देखो **गुत्ति** ; (स २४२)।
गोत्तिअ वि [**गोत्रिक**] समान गोत्र वाला, स्वजन; (श्रा २७)।
गोत्थुभ देखो **गोथुभ** ; (इक)।
गोत्थूभा देखो **गोथूभा** ; (इक)।
गोथुभ } पुं [**गोस्तूप**] १ ग्यारहवें जिन-देव का प्रथम
गोथूभ } शिष्य ; (सम १५२ ; पि २०८)। २ वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत ; (सम ६६)। ३ न. मानुषोत्तर पर्वत का एक शिखर ; (दीव)।
गोथूभा स्त्री [**गोस्तूपा**] १ वापी-विशेष, अञ्जन पर्वत पर की एक वापी ; (ठा ३, ३)। २ शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी की राजधानी ; (ठा ४,२)।
गोदा स्त्री [**दे. गोदा**] नदी-विशेष, गोदावरी; (षड् ; गा ९५५)।
गोध पुं [**गोध**] १ म्लेच्छ देश ; २ गोध देश का निवासी मनुष्य ; (राज)।
गोधा स्त्री [**गोधा**] गोह, हाथ से चलने वाली एक साँप की जाति; (पण्ह १,१ ; णाया १, ८)।
गोन्न देखो **गोण्ण** ; (णाया १,१६—पत्र २००)।
गोपुर देखो **गोउर** ; (उत्त ६ ; अभि १८५)।
गोप्फणा स्त्री [**दे**] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष ; (राज)।
गोमट्टा स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला ; (दे २, ९६)।
गोमाअ } पुं [**गोमायु**] शृगाल, गीदड़ ; (नाट—मृच्छ
गोमाउ } ३२०; पि १६५; णाया १,४ ; स २२६; पाअ)।
गोमाणसिया स्त्री [**गोमानसिका**] शय्याकार स्थान विशेष; (जीव ३)।
गोमाणसी स्त्री [**गोमानसी**] ऊपर देखो ; (जीव ३)।
गोमि } वि [**गोमिन्**] जिसके पास अनेक गौ हों वह,
गोमिअ } (अणु; निचू २)।
गोमिअ देखो **गोम्मिअ** ; (राज)।
गोमी स्त्री [**दे**] कनखजूरा, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जी १६)।
गोमुह पुं [**गोमुख**] १ यक्ष-विशेष, भगवान् ऋषभदेव का शासन-यक्ष ; (संति ७)। २ एक अन्तर्द्वीप द्वीप-विशेष ; ३ गोमुख-द्वीप का निवासी मनुष्य; (ठा ४,२)। ४ न. उपलेपन; (दे २, ९८)।
गोमुही स्त्री [**गोमुखी**] वाद्य-विशेष; (अणु ; राय)।
गोमेअ } पुं [**गोमेद**] रत्न की एक जाति ; (कुमा
गोमेज्ज } ७० ; उत्त २)।
गोमेह पुं [**गोमेध**] १ यक्ष-विशेष, भगवान् नेमिनाथ का शासन-देव ; (सं ८)। २ यज्ञ-विशेष, जिसमें गौ का वध किया जाता है ; (पउम ११,४१)।
गोम्मिअ पुं [**गौल्मिक**] कोटवाल, नगर-रक्षक; (पण्ह १,२)।
गोम्ही देखो **गोमी** ; (राज)।
गोय देखो **गोत्त** ; (सम ३३ ; कम्म १)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] अपने कुल को उत्तम मानने वाला, वंशाभिमानी ; (आचा)।
गोय न [**दे**] उदुम्बर वगैरः का फल ; (आव ६)।
गोयम पुं [**गोतम**] १ ऋषि-विशेष ; (ठा ७)। २ छोटा बैल ; (औप)। ३ न. गोत्र-विशेष ; (कप्प ; ठा ७)।
गोयम वि [**गौतम**] १ गोतम गोत्र में उत्पन्न, गोतम-गोत्रीय ; "जे गोयमा ते सत्तविहा पण्णत्ता" (ठा ७ ; भग ; जं १)। २ पुं. भगवान् महावीर का प्रधान शिष्य ; (भग १४, ७ ; उवा)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार, राजा

अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर्वत पर मुक्त हुआ था; (अंत २)। ४ एक मनुष्य-जाति, जो बैल द्वारा भिक्षा माँग कर अपना निर्वाह चलाती है; (णाया १, १४)। ५ एक ब्राह्मण; (उप ६१७)। ६ द्वीप-विशेष; (सम ८०; उप ५६७ टी)। °केसिज्ज न [°केशीय] उतराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन, जिसमें गौतमस्वामी और केशिमुनि का संवाद है; (उत्त २३)। °सगुत्त वि [°सगोत्र] गोतम गोत्रीय; (भग; आवम)। °सामि पुं [°स्वामिन्] भगवान् महावीर के सर्व-प्रधान शिष्य का नाम; (विपा १,१—पत्र २)।

गोयमज्जिया } स्त्री [गौतमार्यिका] जैन मुनि-गण की **गोयमेज्जिया** } एक शाखा; (राज; कप्प)।

गोयर पुं [गोचर] १ गौओं को चरने की जगह; "णो गोयरे णो वणगाणियाणं" (बृह ३)। २ विषय; "अंबुरुहगोयरं णमह...सयंभु" (गउड)। ३ इन्द्रिय का विषय, प्रत्यक्ष; "इअ राया उज्जाणं तं कासी नयणगोअरं सव्वं"(कुमा)। ४ भिक्षाटन, भिक्षा के लिए भ्रमण; (ओघ ६६ भा; दस ५,१)। ५ भिक्षा, माधुकरी; (उप २०४)। ६ वि. भूमि में बिचरने वाला, "विंझवणगोयराण पुलिंदाण" (गउड)। °चरिआ स्त्री [°चर्या] भिक्षा के लिए भ्रमण; (उप १३७ टी; पउम ४, ३)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ पशुओं को चरने की जगह; (दे ३, ४०)। २ भिक्षा-भ्रमण की जगह; (ठा ६)। °वत्ति वि [°वर्त्तिन्] भिक्षा के लिए भ्रमण करने वाला; (गा २०४)।

गोयरी स्त्री [गौचरी] भिक्षा, माधुकरी; (सुपा २६६)।

गोर पुं [गौर] १ शुक्ल वर्ण, सफेद रंग; २ वि. गौर वर्ण वाला, शुक्ल; (गउड; कुमा)। ३ अवदात, निर्मल; (णाया १,८)। °खर पुं [°खर] गर्दभ की एक जाति; (पण्ण १)। °गिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष, हिमाचल; (निचू १)। °मिग पुं [°मृग] १ हरिण की एक जाति; २ न. उस हरिण के चमड़े का बना हुआ वस्त्र; (आचा २, ५, १)।

गोरअ देखो **गोरव**; (गा ८६)।

गोरंग वि [गौराङ्ग] शुक्ल शरीर वाला: (कप्पू)।

गोरंफिडी स्त्री [दे] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष; (दे २,६८)।

गोरडित वि [दे] स्रस्त, ध्वस्त; (षड्)।

गोरव न [गौरव] १ महत्त्व, गुरुत्व; (प्रासू ३०)। २ आदर, सम्मान, बहुमान; (विसे ३४७३; रयण ५३)। ३ गमन, गति; (ठा ६)।

गोरविअ वि [गौरवित] सम्मानित, जिसका आदर किया गया हो वह; (दे ४,५)।

गोरस पुंन [गोरस] गोरस, दूध, दही, मठा वगैरः; (णाया १,८; ठा ४,१)।

गोरा स्त्री [दे] १ लाङ्गल-पद्धति, हल-रेखा; २ चक्षु, आँख; ३ ग्रीवा, डोक; (दे २, १०४)।

गोरि° देखो **गोरी**; (हे १, ४)।

गोरिअ न [गौरिक] विद्याधर का नगर-विशेष; (इक)।

गोरी स्त्री [गौरी] १ शुक्ल-वर्णा स्त्री; (हे ३,२८)। २ पार्वती, शिव-पत्नी; (कुमा; सुपा २४०; गा १)। ३ श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम; (अंत १५)। ४ इस नाम की एक विद्या-देवी; (संति ६)। °कूड न [°कूट] विद्याधर-नगर-विशेष; (इक)।

गोल पुं [दे] १ साक्षी; (दे २,६५)। २ पुरुष का निन्दा-गर्भ आमन्त्रण; (णाया १, ६)। ३ निष्ठुरता, कठोरता; (दस ७)

गोल पुं [गोल] १ वृक्ष-विशेष; "कदम्बगोलणिहकंटअंतणिअंगे" (अच्चु ५८)। २ गोलाकार, वृत्ताकार, मण्डलाकार वस्तु; (ठा ४,४; अनु ५)। ३ गोलक, कुंडा; (सुपा २७०)। ४ गेंद, कन्दुक; (सुअ १,४)।

गोलग } पुं [गोलक] ऊपर देखो; (सुअ २,२; उप पृ **गोलय** } ३६२ काल)।

गोला स्त्री [दे] गौ, गैया; (दे २, १०४; पाअ)। २ नदी, कोई भी नदी ३ सखी, सहेली, संगिनी; (दे २, १०४)। ४ गोदावरी नदी; (दे २,१०४; गा ५८; १७५; हेका २६७; पि ८५; १६४; पाअ; षड्)।

गोलिय पुं [गौडिक] गुड़ बनाने वाला; (वव ६)।

गोलिआ स्त्री [दे] १ गोली, गुटिका; (राय; अणु)। २ गेंद, लड़कों के खेलने की एक चीज; "तीए दासीए घडो गोलियाए भिन्ना" (दसनि २)। ३ बड़ा कुंडा, बड़ी थाली; (ठा ८)। °लिंछ, °लिच्छ न [°लिञ्छ, °लिच्छ] १ चुल्ली, चुल्हा; २ अग्नि-विशेष; (ठा ८—पत्र ४१७)।

गोलियायण न [गोलिकायन] १ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है; २ वि. गोलिकायन-गोत्रीय; (ठा ७)।

गोली स्त्री [दे] मथनी, मथनिया, दही मथने की लकड़ी; (दे २, ६५)।

गोल्ल न [दे] बिम्बी-फल, कुन्दरुन का फल; (णाया १,८; कुमा)।

गोल्ल पुं [**गौल्य**] १ देश-विशेष ; (आवम) । २ न. गोत्र-विशेष, जो काश्यप गोत्र की शाखा है ; ३ वि. गौल्य गोत्र में उत्पन्न ; (ठा ७) ।

गोल्हा स्त्री [**दे**] बिम्बी, वल्ली-विशेष, कुन्दरुन का पेड़ ; (दे २, ६५ ; आवम ; पाअ) ।

गोव सक [**गोपय्**] १ छिपाना । २ रक्षण करना । गोवए, गोवेइ; (सुपा ३४६; महा) । कवकृ—**गोविज्जंत**; (सुपा ३३७ ; सुर ११, १६२ ; प्रास् ६५) ।

गोव } पुं [**गोप**] गौओं का रक्षक, ग्वाला, गो-पाल ;
गोवअ } (उवा ७ ; दे २, ५८ ; कप्पू) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष ; "गोवगिरिसिहरसंठियचरमजिणा-ययणदारमवरुद्धं" (मुणि १०८६७) ।

गोवड्ढण देखो **गोवद्धण** ; (पि २९१) ।

गोवण न [**गोपन**] १ रक्षण ; २ छिपाना ; (श्रा २८ ; उप ५९७ टी) ।

गोवद्धण पुं [**गोवर्धन**] १ पर्वत-विशेष ; (पि २९१) । २ ग्राम-विशेष; (पउम २०, ११५) ।

गोवर पुंन [**दे**] गोबर, गोमय, गो-विष्ठा ; (दे २, ९६ ; उप ५९७ टी) ।

गोवर पुं [**गोवर**] १ मगध देश का एक गाँव, गौतम-स्वामी की जन्म-भूमि ; (आक) । २ वणिग्-विशेष ; (उप ५९७ टी) ।

गोवल न [**गोबल**] गोधन, गोकुल, गौओं का समूह ; "रिंति गोवलाइं" (सुपा ४३३) । २ गोत्र-विशेष ; (सुज्ज १०) ।

गोवलायण देखो **गोवल्लायण**; (सुज्ज १०) ।

गोवलिय पुं [**गोबलिक**] ग्वाला, अहीर; (सुपा ४३३)।

गोवल्लायण वि [**गोवलायन**] १ गोवल गोत्र में उत्पन्न; २ न. नक्षत्र-विशेष ; (इक) ।

गोवा पुं [**गोपा**] गौओं का पालन करने वाला, ग्वाला ; (प्रामा) ।

गोवाय सक [**गोपाय्**] १ छिपाना ; २ रक्षण करना । वकृ—**गोवायंत** ; (उप ३५७) ।

गोवाल पुं [**गोपाल**] गौ पालने वाला, ग्वाला, अहीर; (दे २, २८) । °**गुज्जरी** स्त्री [°**गुर्जरी**] भैरव राग वाली भाषा-विशेष, गुजरात के अहीरों का गीत ; (कुमा) ।

गोवालय पुं [**गोपालक**] ऊपर देखो; (पउम ५, ९६) ।

गोवालि पुं [**गोपालिन्**] ग्वाला, गोप, अहीर; (सुपा ४३२; ४३३) ।

गोवालिणी स्त्री [**गोपालिनी**] गोप-स्त्री, अहीरिन; (सुपा ४३२) ।

गोवालिय पुं [**गोपालिक**] गोप, अहीर, ग्वाला ; (सुपा ४३३) ।

गोवालिया स्त्री [**गोपालिका**] गोप-स्त्री, गोपी, अहीरिन ; (गाया १, १६) ।

गोवाली स्त्री [**गोपाली**] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १) ।

गोविअ वि [**दे**] अ-जल्पाक, नहीं बोलने वाला; (दे २,९७)।

गोविअ वि [**गोपित**] १ छिपाया हुआ ; २ रक्षित ; (सुर १, ८८; निर १, ३) ।

गोविआ स्त्री [**गोपिका**] गोपांगना, अहीरिन ; (कुमा ; गा ११४) ।

गोविंद पुं [**गोपेन्द्र**] १ स्वनाम-ख्यात एक योग-विषयक ग्रन्थ-कार ; २ एक जैन मुनि ; (पंचव ; णंदि)।

गोविंद पुं [**गोविन्द**] १ विष्णु, कृष्ण ; २ एक जैन मुनि; (ठा १०) । °**णिज्जुत्ति** स्त्री [°**निर्युक्ति**] इस नाम का एक जैन दार्शनिक ग्रन्थ ; (निचू ११) ।

गोविल्ल न [**दे**] कञ्चुक, चोली; (दे २, ९४) ।

गोवी स्त्री [**दे**] बाला, कन्या, कुमारी, लड़की ; (दे २, ९६) ।

गोवी स्त्री [**गोपी**] गोपाङ्गना, अहीरिन; (सुपा ४३५)।

गोव्वर [**दे**] देखो **गोवर** ; (उप ५६३ ; ५९७ टी) ।

गोस पुंन [**दे**] प्रभात, सुबह, प्रातः-काल ; (दे २, ९६ ; सण ; गउड ; वव ६ ; पंचव २ ; पाअ ; षड् ; पव ४) ।

गोसंधिय पुं [**गोसंधित**] गोपाल, अहीर ; (राज) ।

गोसग्ग पुंन [**दे. गोसर्ग**] प्रातः-काल, प्रभात ; (दे २, ९६ ; पाअ) ।

गोसण्ण [**दे**] मूर्ख, बेवकूफ; (दे २, ९७; षड्) ।

गोसाल } पुं. ब. [**गोशाल**] १ देश-विशेष ; (पउम
गोसालग } ९८, ६५)। २ पुं. भगवान् महावीर का एक शिष्य, जिसने पीछे अपना आजीविक मत चलाया था; (भग १५) ।

गोसाविआ स्त्री [**दे**] १ वेश्या, वाराङ्गना; (मृच्छ ५५) । २ मूर्ख-जननी ; (नाट—मृच्छ ७०)।

गोसिय वि [दे] प्राभातिक, प्रातःकाल-संबन्धी; (सण) ।

गोसीस न [गोशीर्ष] चन्दन-विशेष, सुगन्धित काष्ठ-विशेष ; (पण्ह २, ४ ; ५; कप्प ; सुर ४, १४ ; सण)।

गोह पुं [दे] १ गाँव का मुखिया; (दे २,८६) । २ भट, सुभट, योद्धा; (दे २, ८६ ; महा) । ३ जार, उपपति; (उप पृ २१५) । ४ सिपाही, पुलिस ; (उप पृ ३३५)। ५ पुरुष, आदमी, मनुष्य ; (मृच्छ ५७) ।

गोहा देखो **गोधा** ; (दे २, ७३ ; भग ८,३) ।

गोहिया स्त्री [**गोधिका**] १ गोधा, गोह, जलजन्तु-विशेष ; (सुर १०, १८६) । २ साँप की एक जाति ; (जीव २) । ३ वाद्य-विशेष ; (अनु) ।

गोहुर न [दे] गोमय, गो-विष्ठा ; (दे २, ६६) ।

गोहूम पुं [**गोधूम**] अन्न-विशेष, गेहूँ ; (कस) ।

गोहेर } पुं [**गोधेर**] जन्तु-विशेष, साँप की तरह का जनावर ; (पउम ४८, ६२ ; ६१) ।
गोहेरय }

°ग्गह देखो **गह**=ग्रह ; (गउड) ।

°ग्गहण देखो **गहण**=ग्रहण ; (अभि ५६) ।

°ग्गहण देखो **गहण**=ग्राहण ; (कुमा) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवे** गआराइसद्दसंकलणो
बारहमो तरंगो समत्तो ।
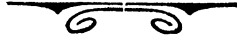
घ

घ पुं [**घ**] कण्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप ; प्रामा)।

घअंद न [**दे**] मुकुर, दर्पण ; (षड्)।

घइं (अप) अ. पाद-पूरक और अनर्थक अव्यय ; (हे ४, ४२४ ; कुमा)।

घओअ } पुं [**घृतोद**] १ समुद्र-विशेष, जिसका पानी
घओद } घी के तुल्य स्वादिष्ठ है ; (इक ; ठा ७)। २ मेघ-विशेष ; (तित्थ) ३ वि. जिसका पानी घी के समान मधुर हो ऐसा जलाशय। स्त्री—°**आ**, °**दा** ; (जीव ३; राय)।

घंघ पुं [**दे**] गृह, मकान, घर; (दे २, १०५)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] अनाथ-मण्डप, भिक्षुकों का आश्रय-स्थान ; (ओघ ६३६ ; वव ७ ; आचा)।

घंघल (अप) न [**झकट**] १ झगड़ा, कलह ; (हे ४, ४२२)। २ मोह, घबराहट ; (कुमा)।

घंघोर वि [**दे**] भ्रमण-शील, भटकने वाला; (दे २, १०६)।

घंचिय पुं [**दे**] तेली, तेल निकालने वाला ; गुजराती में 'घांची' ; (सुर १६०)।

घंट पुंस्त्री [**घण्ट**] घण्टा, कांस्य-निर्मित वाद्य-विशेष ; (ओघ ८६ भा)। स्त्री—°**टा**; (हे १, १६५ ; राय)।

घंटिय पुं [**घाण्टिक**] घण्टा बजाने वाला ; (कप्प)।

घंटिया स्त्री [**घण्टिका**] १ छोटा घण्टा ; (प्रामा)। २ किंकिणी ; (सुर १, २४८ ; जं २)। ३ आभरण-विशेष ; (णाया १, ६)।

घंस पुं [**घर्ष**] घर्षण, घिसन ; (णाया १, १—पत्र ६३)।

घंसण न [**घर्षण**] घिसन, रगड़ ; (स ४७)।

घंसिय वि [**घर्षित**] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ; (औप)।

घक्कूण देखो **घे**।

घग्घर न [**दे**] घघरा, लहँगा, स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र ; (दे २, १०७)।

घग्घर पुं [**घर्घर**] १ शब्द-विशेष ; (गा ८००)। २ खोखला गला ; "घग्घरगलम्मि" (दे ६, १७)। ३ खोखला आवाज; "रुयमाणी घग्घरेण सद्देण" (सुर २, ११२)। ४ न. शाड्वल, शैवाल वगैरः का समूह ; (गउड)।

घट्ट सक [**घट्ट्**] १ स्पर्श करना, छूना । २ हलना, चलना। ३ संघर्ष करना । ४ आहत करना । घट्टइ ; (सुपा ११६)। वकृ—**घट्टंत**, (ठा ७)। कवकृ—**घट्टिज्जंत**; (से २, ७)।

घट्ट अक [**भ्रंश्**] भ्रष्ट होना। घट्टइ ; (षड्)।

घट्ट पुं [**दे**] १ कुसुम्भ रंग से रँगा हुआ वस्त्र ; २ नदी का घाट ; ३ वेणु, वंश ; (दे २, १११)।

घट्ट पुं [**घट्ट**] १ शर्कराप्रभा-नामक नरक-भूमि का एक नरकावास; (इक)। २ पुंन. जमाव; (श्रा २८)। ३ समूह, जत्था ; "हयघट्टाइं" (सुपा २५६)। ४ वि. गाढा, निबिड़ ; "मूल-घट्टकररुहओ" (सुपा ११)।

घट्टंसुअ न [**दे.घट्टांशुक**] वस्त्र-विशेष, बूटेदार कौसुम्भ वस्त्र ; (कुमा)।

घट्टण न [**घट्टन**] १ छूना, स्पर्श करना। २ चलाना, हिलना ; (दस ४)।

घट्टणग पुं [**घट्टनक**] पात्र वगैरः को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता एक प्रकार का पत्थर ; (बृह ३)।

घट्टणया } स्त्री [**घट्टना**] १ आघात, आहनन ; (औप ;
घट्टणा } ठा ४, ४) । २ चलन, हिलन ; (ओघ ६)। ३ विचार ; ४ पृच्छा ; (बृह ४)। ५ कदर्थना, पीड़ा ; (आचा)। ६ स्पर्श, छूना ; (पण्ण १६)।

घट्टय देखो **घट्ट** ; (महा)।

घट्टिय वि [**घट्टित**] १ आहत, संघर्ष-युक्त ; (जं १)। २ प्रेरित, चालित ; (पण्ह १, ३)। ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ ; (जं १ ; राय)।

घट्ठ वि [**घृष्ट**] १ घिसा हुआ; (हे २, १७४; औप; सम १३७)।

घड सक [**घट्**] १ चेष्टा करना । २ करना, बनाना । ३ अक. परिश्रम करना । ४ संगत होना, मिलना । घडइ ; (हे १, १९५) वकृ—**घडंत**, **घडमाण**; (से १, ५ ; निचू १)। कृ—**घडियव्व** ; (णाया १,१—पत्र ६०)।

घड सक [**घटय्**] १ मिलाना, जोड़ना, संयुक्त करना। २ बनाना, निर्माण करना। ३ संचालन करना। घडेइ ; (हे ४, ५०)। भवि — घडिस्सामि; (स ३६४)।। वकृ— **घडंत** ; (सुपा २५५)। संकृ— **घडिअ** ; (दस ५, १)।

घड पुं [**घट**] घड़ा, कुम्भ, कलश ; (हे १,१९५)। °**कार** पुं [°**कार**] कुम्भकार, मिट्टी का बरतन बनाने वाला ; (उप पृ ४१५)। °**चेडिया** स्त्री [°**चेटिका**] पानी भरने वाली दासी, पनिहारी ; (सुपा ४६०)। °**दास** पुं [°**दास**] पानी भरने वाला नौकर ; (आचा)। °**दासी** स्त्री [°**दासी**] पानी भरने वाली, पनिहारी ; (सूअ १,१५)।

घड वि [दे] सुष्टीकृत, बनाया हुआ ; (षड्) ।

घडइअ वि [दे] संकुचित ; (षड्) ।

घडग पुं [**घटक**] छोटा घड़ा ; (जं २ ; अणु) ।

घडण न [**घटन**] १ घड़ना, कृति, निर्माण ; (से ७,७१) । २ यत्न, चेष्टा, परिश्रम ; (अनु ४ ; पराह २,१) ।

घडणा स्त्री [**घटना**] मिलान, मेल, संयोग ; (सुअ १,१,१) ।

घडय देखो **घडग** ; (जं २) ।

घडा स्त्री [**घटा**] समूह, जत्था ; (गउड) ।

घडाघडी स्त्री [**दे**] गोष्ठी, सभा, मण्डली ; (षड्) ।

घडाव सक [**घटय्**] १ बनाना । २ बनवाना । ३ संयुक्त करना, मिलाना । घडावइ ; (हे ४,३४०) । संकृ— **घडाविता** ; (आवम) ।

घडि° स्त्री [**घटी**] देखो **घडिआ**=घटिका ; (प्रासू ५५) । °**मंतय, °मत्तय** न [°**मात्रक**] छोटे घड़े के आकार का पात्र-विशेष ; (राज ; कस) । °**जंत** न [°**यन्त्र**] रेंट, पानी निकालने की कल ; (पात्र) ।

घडिअ वि [**घटित**] १ कृत, निर्मित; (पात्र) । २ संसक्त संबद्ध, श्लिष्ट, मिला हुआ ; (पात्र ; स १६४ ; औप; महा)।

घडिअघडा स्त्री [**दे**] गोष्ठी, मण्डली ; (दे २, १०५) ।

घडिआ स्त्री [**घटिका**] १ छोटा घड़ा, कलशी; (गा ४६०; श्रा २७) । २ घड़ी, मुहूर्त ; (सुपा १०८) । ३ समय बताने वाला यन्त्र, घटी-यन्त्र ; (पात्र) । °**लय** न [°**लय**] घण्टा-गृह, घण्टा बजाने का स्थान ; (सुर ७, १७) ।

घडिआ, **घडी** } स्त्री [**दे**] गोष्ठी, मण्डली ; (षड् ; दे२,१०५) ।

घडी स्त्री [**घटी**] देखो **घडिआ** ; (स २३८ ; प्रारू) ।

घडुक्कय पुं [**घटोत्कच**] भीम का पुत्र; (हे ४,२६६) ।

घडुब्भव वि [**घटोद्भव**] १ घट से उत्पन्न ; २ पुं. ऋषि-विशेष, अगस्त्य मुनि ; (प्रारू) ।

घढ न [**दे**] थूहा, टीला, स्तूप ; (पात्र) ।

घण पुं [**घन**] १ मेघ, बादल ; (सुर १३, ४५ ; प्रासू ७२) । २ हथौड़ा; (दे ६,११) । ३ गणित-विशेष, तीन अंकों का पूरण करना, जैसे दो का घन आठ होता है; (ठा १०—पत्र ४६६ ; विसे ३५४०) । ४ वाद्य का शब्द-विशेष, कांस्य-ताल वगैरः ; (ठा २,३) । ५ वि. दृढ़, ठोस ; (औप) । ६ अविरल, निबिड़, निश्छिद्र, सान्द्र ; (कुमा ; औप) । ७ गाढ़, प्रगाढ़ ; "जाया पीई घणा तेसिं" (उप ५६७ टी) । ८ अतिशय, अधिक, अत्यन्त ; (राय) । ६ कठिन, तरलता-रहित, स्त्यान ; (जी ७; ठा ३, ४) । १० न. देव-विमान-विशेष ; (सम ३७) । ११ पिण्ड ; (सूअ १,१,१) । १२ वाद्य-विशेष ; (सुज्ज १२) । °**उदहि** देखो **घणोदहि** ; (भग) । °**णिचिय** वि [°**निचित**] अत्यन्त निबिड़ ; (भग ७, ८; औप) । °**तव** न [°**तपस्**] तपश्चर्या-विशेष; (उत्त ३) । °**दंत** पुं [°**दन्त**] १ इस नाम का एक अन्त-द्वीप ; २ उसका निवासी मनुष्य ; (ठा ४,२) । °**माल** न [°**माल**] वैताढ्य पर्वत पर स्थित विद्याधर-नगर-विशेष ; (इक) । °**मुइंग** पुं [**मृदङ्ग**] मेघ की तरह गंभीर आवाज वाला वाद्य-विशेष ; (औप) । °**रह** पुं [°**रथ**] एक जैन मुनि ; (पउम २०, १६) । °**वाउ** पुं [°**वायु**] स्त्यान वायु, जो नरक-पृथ्वी के नीचे है ; (उत्त ३६) । °**वाय** पुं [°**वात**] देखो °**वाउ**; (भग; जी ७) । °**वाहण** पुं [°**वाहन**] विद्याधरों के एक राजा का नाम; (पउम ५,७७) । °**विज्जुआ** स्त्री [°**विद्युता**] देवी-विशेष, एक दिक्कुमारी देवी का नाम ; (इक) । °**समय** पुं [°**समय**] वर्षा-काल, वर्षा ऋतु ; (कुमा ; पात्र) ।

घणघणाइय न [**घनघनायित**] रथ का चीत्कार, अव्यक्त शब्द-विशेष ; (पराह १,३) ।

घणवाहि पुं [**दे**] इन्द्र, स्वर्ग-पति ; (दे २, १०७) ।

घणसार पुं [**घनसार**] कपूर ; (पात्र; भवि) । °**मंजरी** स्त्री [°**मञ्जरी**] एक स्त्री का नाम ; (कप्पू) ।

घणा स्त्री [**घना**] धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (णाया २,१—पत्र २५१) ।

घणा स्त्री [**घृणा**] घृणा, जुगुप्सा, गर्हा ; (प्राप्र) ।

घणिय न [**घनित**] गर्जना, गर्जन ; (सुज्ज २०) ।

घणोदहि पुं [**घनोदधि**] पत्थर की तरह कठिन जल-समूह ; (सम ३७) । °**वलय** न [°**वलय**] वलयाकार कठिन जल-समूह ; (पराण २) ।

घण्ण पुं [**दे**] १ उर, वक्षस्, छाती ; २ वि. रक्त, रंगा हुआ ; (दे २, १०५) ।

घत्त सक [**क्षिप्**] १ फेंकना, डालना । २ प्रेरना । घत्तइ ; (हे ४,१४३) । संकृ—"अंकाओ **घत्तिऊण** वरत्तीणं" (पउम ७८,२० ; स ३५१) ।

घत्त सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना । भवि—घत्तिस्सं; (प्रयौ३३) ।

घत्त सक [**गवेषय्**] खोजना, ढूँढ़ना । घत्तइ; (हे ४,१८६) । संकृ—**घत्तिअ** ; (कुमा) ।

घत्त वि [घात्य] १ मार डालने योग्य ; २ जो मारा जा सके ; (पि २८१ ; सूअ १, ७, ६ ; ८)।
घत्तण न [क्षेपण] फेंकना ; (कुमा)।
घत्ता स्त्री [घत्ता] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
घत्ताणंद न [घत्तानन्द] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
घत्तिय वि [क्षिप्त] प्रेरित ; (स २०७)।
घत्थ वि [ग्रस्त] १ भक्षित, निगला हुआ, कवलित ; (पउम ७१,५१ ; पराह १, ५)। २ आक्रान्त, अभिभूत ; (सुपा ३५२ ; महा)।
घम्म पुं [घर्म] घाम, गरमी, संताप ; (दे १, ८७ ; गा ४१४)। २ पसीना, स्वेद ; (हे ४,३२७)।
घम्मा स्त्री [घर्मा] पहली नरक-पृथिवी ; (ठा ७)।
घम्मोई स्त्री [दे] तृण-विशेष ; (दे २, १०६)।
घम्मोडी स्त्री [दे] १ मध्याह्न काल ; २ मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; ३ ग्रामणी-नामक तृण; (दे २, ११२)।
घय न [घृत] घी, घृत ; (हे १, १२६ ; सुर १६, ६३)। °**आसव** पुं [°आश्रव] जिसका वचन घी की तरह मधुर लगे ऐसा लब्धिमान् पुरुष ; (आवम)। °**किट्ट** न [°किट्ट] घी का मैल (धर्म २)। °**किट्टिया** स्त्री [°किट्टिका] घी का मैल ; (पव ४)। °**गोल** न [°गौल] घी और गुड़ की बनी हुई एक प्रकार की मीठाई, मिष्टान्न-विशेष; (सुपा ६३३)। °**घट्ट** पुं [°घट्ट] घी का मैल; (बृह १)। °**पुन्न** पुं [°पूर्ण] घेबर, मिष्टान्न-विशेष ; (उप १४२ टी)। °**पूर** पुं [°पूर] घेबर, मिष्टान्न-विशेष ; (सुपा ११)। °**पूसमित्त** पुं [°पुष्यमित्र] एक जैन मुनि, आर्यरक्षित सूरि का एक शिष्य; (आचू १)। °**मंड** पुं [°मण्ड] ऊपर का घी, घृतसार ; (जीव ३)। °**मिल्लिया** स्त्री [°इलिका] घी का कीट, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (जो १६)। °**मेह** पुं [°मेघ] घी के तुल्य पानी बरसने वाली वर्षा ; (जं ३)। °**वर** पुं [°वर] द्वीप-विशेष ; (इक)। °**सागर** पुं [°सागर] समुद्र-विशेष ; (दीव)।
घयण पुं [दे] भाण्ड, भडवा ; (उप पृ २०४ ; २७५ ; पंचव ४)।
घर पुंन [गृह] घर, मकान, गृह ; (हे २, १४४ ; ठा ५, १ ; प्रासू ४५)। °**कुडी** स्त्री [°कुटी] १ घर के बाहर की कोटरी ; २ चौक के भीतर की कुटिया ; (ओघ १०५)। ३ स्त्री का शरीर; (तंदु)। °**कोइला**, °**कोइलिआ** स्त्री [°कोकिला] गृहगोधा, छिपकली ; (पिंड; सुपा ६४०)। °**गोली** स्त्री [°गोली] गृहगोधा, छिपकली ; (दे २, १०५)। °**गोहिआ** स्त्री [°गोधिका] छिपकली, जन्तु-विशेष ; (दे २, १६)। °**जामाउय** पुं [°जामातृक] घर-जमाई, ससुर-घर में ही हमेशा रहने वाला जामाता ; (णाया १, १६)। °**त्थ** पुं [°स्थ] गृही, संसारी, घरबारी ; (प्रासू १३१)। °**नाम** न [°नामन्] असली नाम, वास्तविक नाम; (महा)। °**वाडय** न [°पाटक] ढकी हुई जमीन वाला घर; (पाअ)। °**वार** न [°द्वार] घर का दरवाजा ; (काप्र १६५)। °**सउणि** पुं [°शकुनि] पालतू जानवर ; (वव २)। °**समुदाणिय** पुं [°समुदानिक] आजीविक मत का अनुयायी साधु ; (औप)। °**सामि** पुं [°स्वामिन्] घर का मालिक ; (हे २, १४४)। °**सामिणी** स्त्री [°स्वामिनी] गृहिणी, स्त्री ; (पि ६२)। °**सूर** व [°शूर] अलीक शूर, झूठा शूर, घर में ही बहादुरी दखाने वाला ; (दे)।
घरंगण न [गृहाङ्गण] घर का आँगन, चौक; (गा ४४०)।
घरग देखो **घर** ; (जीव ३)।
घरघंट पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी ; (दे २, १०७ ; पाअ)।
घरघरग पुं [दे] ग्रीवा का आभूषण-विशेष ; (जं १)।
घरट्ट पुं [घरट्ट] अन्न पीसने का पाषाण यन्त्र; (गा ८००; सण)।
घरट्ट पुं [दे] अरघट्ट, अरहट, पानी का चरखा; (निचू १)।
घरट्टी स्त्री [घरट्टी] शतघ्नी, तोप ; (दे ३, १०)।
घरणी देखो **घरिणी** ; "तं वरघरणिं वरणिं व" ७२८ टी ; प्रासू ४५)।
घरयंद पुं [दे] आदर्श, दर्पण, शीशा ; (दे २, १०७)।
घरस पुं [दे, गृहवास] गृहाश्रम, गृहस्थाश्रम ; (बृह ३)।
घरसण देखो **घंसण** ; (सण)।
घरिणी स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, भार्या, पत्नी ; (उप ७२८ टी ; से २, ३८ ; सुर २, १०० ; कुमा)।
घरिल्ल पुं [गृहिन्] गृही, संसारी, घरबारी; (गा ७३६)।
घरिल्ला स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, पत्नी ; (कुमा)।
घरिल्ली स्त्री [दे] गृहिणी, पत्नी; (दे २, १०६)।
घरिस पुं [घर्ष] घर्षण, रगड़ ; (णाया १, १६)।
घरिसण न [घर्षण] घर्षण, रगड़ ; (सण)।
घरोइला स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकली ; (पि १६८)।

घरोल न [**दे**] गृह-भोजन-विशेष ; (दे २, १०६) ।

घरोलिया } स्त्री [**दे**] गृहगोधिका, छिपकली ; गुजराती में
घरोली } 'घरोली' ; (पण्ह १, १; दे २, १०५) ।

घलघल पुं [**घलघल**] 'घल घल' आवाज, ध्वनि-विशेष ; (विपा १, ६) ।

घल्ल सक [**क्षिप्**] फेंकना, डालना, घालना । घल्लइ ; घल्लति ; (भवि; हे ४, ३३४ ; ४२२) ।

घल्ल वि [**दे**] अनुरक्त, प्रेमी ; (दे २, १०५) ।

घल्लिअ वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ, डाला हुआ ; (भवि) ।

घल्लिअ वि [**दे**] घटित, निर्मित, किया हुआ; "अइरुद्देणं तेणवि घल्लिओ तिक्खखग्गगुरुघाओ" (सुपा २४६) ।

घस सक [**घृष्**] १ घिसना, रगड़ना । २ मार्जन करना, सफा करना । घसइ ; (महा ; षड्) । संकृ—"**घसिऊण** अरणिकट्ठं अग्गी पज्जालिओ मए पच्छा" (सुर ७, १८६) ।

घसण देखो **घंसण** ; (सुपा १४ ; दे १, १६६) ।

घसणिअ वि [**दे**] अन्विष्ट, गवेषित ; (षड्) ।

घसणी स्त्री [**घर्षणी**] सर्प-रेखा, वक्र लकीर; (स ३५७) ।

घसा स्त्री [**दे**] १ पोली जमीन; २ भूमि-रेखा , लकीर ; (राज) ।

घसिय वि [**घृष्ट**] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ ; (दसा ५) ।

घसिर वि [**ग्रसितृ**] बहु-भक्षक, बहुत खाने वाला; (ओघ १३३ भा) ।

घसी स्त्री [**दे**] १ भूमि राजि, लकीर ; २ नीचे उतरना, अवतरण ; (राज) ।

घाइ वि [**घातिन्**] घातक, नाशक, हिंसक ; (गा ४३७ ; विसे १२३८ ; भग) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] कर्म-विशेष ; ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय. और अन्तराय ये चार कर्म ; (अंत) °**चउक्क** न [°**चतुष्क**] पूर्वोक्त चार कर्म ; (प्रारू) ।

घाइअ वि [**घातित**] १ मारित, विनाशित; (णाया १, ८; उव) । २ घवाया हुआ, जो शक्ति-शून्य हुआ हो, सामर्थ्य-रहित ; "करणाइं घाइयाइं जाया अह वेयणा मंदा" (सुर ४, २३६) ।

घाइआ स्त्री [**घातिका**] १ विनाश करने वाली स्त्री, मारने वाली स्त्री ; (जं २) । २ घात, हत्या; ३ घाव करना ; (सुर १६, १५०) ।

घाइज्जमाण } देखो **घाय=हन्** ।
घाइयव्व }

घाइयव्व देखो **घाय**=घातय् ।

घाइर वि [**घ्रायिन्**] सूँघने वाला ; (गा ८८६) ।

घाउकाम वि [**हन्तुकाम**] मारने की इच्छा वाला; (णाया १, १८) ।

घाएंत देखो **घाय=हन्**

घाड अक [**भ्रंश्**] भ्रष्ट होना, च्युत होना । घाडइ ; (षड्) ।

घाड पुं [**घाट**] १ मित्रता, सौहार्द ; (बृह णाया १, २) । २ मस्तक के नीचे का भाग ; (णाया १, ८—पत्र १३३) ।

घाडिय वि [**घाटिक**] वयस्य, मित्र ; (णाया १, २ ; बृह १) ।

घाडेरुय पुं [**दे**] खरगोश की एक जाति (?)
" जे तुह संगसुहासारज्जुनिबद्धा दुहं मए रुद्धा ।
घाडेरुयससया इव अबंधणा ते पलायंति "
(उप ७२८ टी) ।

घाण पुं [**दे**] १ घानी, कोल्हू, तिल-पोड़न-यन्त्र ; (पिंड) । २ घान, चक्की आदि में एक वार डालने का परिमाण ; (सुपा १४) ।

घाण पुंन [**घ्राण**] नाक, नासिका ; " दो घाणा" (पण्ण १५ ; उप ६४८ टी ; दे २, ७६) । °**रिस** पुंन [°**र्शस्**] नासिका में होने वाला रोग-विशेष ; (ओघ १८४ भा) ।

घाणिंदिय न [**घ्राणेन्द्रिय**] नासिका, नाक; (उत्त २६) ।

घाय सक [**हन्**] मारना, मार डालना, विनाश करना. वकृ—**घाएह** ; (उव) । वकृ—"**घाएंत** रिउभ. बहवे " (पउम ६०, १७) । **घायंत** ; (पउम २४ २६ ; विसे १७६३) कवकृ—" से भगवं चिलाएण चोरसेणावइणा पंचहिं चारसएहिं सद्धिं गहं **घाइज्जमाण** पासइ " (णाया १, १८) । वकृ—**घाइयव्व** ; (पउम ६६, ३४) ।

घाय सक [**घातय्**] मरवाना, दूसरे द्वारा मार डालना विनाश करवाना । वकृ—**घायमाण**; (सूअ २, १) । कृ—**घाइयव्व** ; (पउम ६६, ३४) ।

घाय पुं [**घात**] १ प्रहार, चोट, वार ; (पउम ५६ २५) । २ नरक ; (सूअ १, ५, १) । ३ हत्या विनाश, हिंसा , (सूअ १, १, २) । ४ संसार ; (सूअ १, ७)

घायग वि [**घातक**] मार डालने वाला, विनाशक ; (स २६४; सुपा २०७)।

घायण न [**हनन**] १ हत्या, नाश, हिंसा; (सुपा ३४६; द्र २६)। २ वि. हिंसक, मार डालने वाला; (स १०८)।

घायण पुं [**दे**] गायक, गवैया; (दे २, १०८; हे २, १७४; षड्)।

घायणा स्त्री [**हनन**] मारना, हिंसा, वध; (पण्ह १, १)।

घायय देखो **घायग**; (विसे १७६३; स २६७)।

घायावणा स्त्री [**घातना**] १ मरवाना, दूसरे द्वारा मारना; २ लुटपाट मचवाना; "बहुग्गामघायावणाहिं ताविया" (विपा १, ३)।

घार अक [**घारय्**] १ विष का फैलना, विष की असर से बेचैन होना। २ सक. विष से बेचैन करना। ३ विष से मारना। कर्म—"घारिज्जंतो य तओ विसेण" (स १८६) हेकृ— **घारिज्जिउं** ; (स १८६)।

घार पुं [**दे**] प्राकार, किला, दुर्ग; (दे २, १०८)।

घारंत पुं [**दे**] घृतपूर, घेबर, एक जात की मीठाई; (दे २, १०८)।

घारण न [**घारण**] विष की असर से होने वाली बेचैनी; (सुपा १२४)।

घारिय वि [**घारित**] जो विष की असर से बेचैन हुआ हो; "तत्तओ भोगो। सव्वत्थ तदुवघाया विसघारियभोगतुल्लोत्ति" (उप ४४२)। "विसवा(? घा)रियस्स जह वा घणचन्दणकामिणीसंगो" (उवर ६७)। "विसघारिओ सि धत्तूरिओ सि मोहेण किंव ठगिओ सि" (सुपा १२४ ; ४४७)।

घारिया स्त्री [**दे**] मिष्टान्न-विशेष, गुजराती में जिसे 'घारी' कहते हैं ; (भवि)

घारी स्त्री [**दे**] १ शकुनिका, पक्षि-विशेष ; (दे २,१०७; पाअ)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

घास पुं [**घास**] तृण, पशुओं को खाने का तृण ; (दे २, ८५ ; औप)।

घास पुं [**ग्रास**] १ कवल, कौर ; (औप ; उत्त २)। २ आहार, भोजन ; (आचा ; ओघ ३३०)।

घास पुं [**घर्ष**] घर्षण, रगड ; "जो मे उवज्जिओ इह करफंसघसेण चरणघासेण" (सुपा १४)।

घासेसणा स्त्री [**ग्रासैषणा**] आहार-विषयक शुद्धि अशुद्धि का पर्यालोचन ; (ओघ ३३८)।

घि देखो **घे**। भवि—घिच्छिइ;(विसे१०२३)।कर्म—घिप्पंति; (प्रास् ४)। संकृ—**घित्तूण** ; (कुमा ७, ४६)। हेकृ— **घित्तुं** ; (सुपा २०६)। कृ—**घित्तव्व** ; (सुर १४,७७)।

घिअ न [**घृत**] घी, घीव, आज्य ; (गा २२)।

घिअ वि [**दे**] भर्त्सित, तिरस्कृत, अवधीरित; (दे २,१०८)।

घिं / **घिंसु** पुं [**ग्रीष्म**] १ गरमी की ऋतु, ग्रीष्म काल ; "घिंसिसिरवासे" (ओघ ३१० भा ; उत्त २, ८ ; पि ६; १०१)। २ गरमी, अभिताप ; (सूअ १, ४, २)।

घिट्ठ वि [**दे**] कुब्ज, कूबड़ा ; (दे २, १०८)।

घिट्ठ वि [**घृष्ट**] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ ; (सुपा २७८ ; गा ६२६ अ)।

घिणा स्त्री [**घृणा**] १ जुगुप्सा ; २ दया, अनुकम्पा ; (हे १, १२८)।

घित्त (अप) वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ, डाला हुआ ; (भवि)।

घित्तुमण वि [**ग्रहीतुमनस्**] ग्रहण करने की इच्छा वाला; (सुपा २०६)।

घित्तूण / **घिप्पं** देखो **घि**।

घिस सक [**ग्रस्**] ग्रसना, निगलना, भक्षण करना। घिसइ ; (हे ४, २०४)।

घिसरा स्त्री [**दे**] मछली पकड़ने की जाल-विशेष ; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

घिसिअ वि [**ग्रस्त**] कवलित, निगला हुआ, भक्षित ; (कुमा ७, ४६)।

घुंघुरुड पुं [**दे**] उत्कर, ढ़ग, समूह ; (दे २, १०६)।

घुंट पुं [**दे**] घूँट, एक बार में पीने योग्य पानी आदि ; (हे ४, ४२३)।

घुग्घ / **घुग्घिअ** (अप) पुंन [**घुग्घिका**] कपि-चेष्टा, बन्दर की चेष्टा ; (हे ४, ४२३ ; कुमा)।

घुग्घुच्छण न [**दे**] खेद, तकलीफ, परिश्रम; (दे २,११०)।

घुग्घुरि पुं [**दे**] मण्डूक, भेक, मेढ़क ; (दे२,१०६)।

घुग्घुस्सुअ वि [**दे**] निःशंक होकर गया हुआ ; (षड्)।

घुग्घुस्सुसय न [**दे**] साशंक वचन, आशंका-युक्त वाणी ; (दे २, १०६)।

घुघुघुघुघुघ अक [**घुघुघुघाय्**] 'घुघु' आवाज करना, घूक का बोलना। वकृ—**घुघुघुघुघुघेंत** ; (पउम १०५,५६)।

घुघुय अक [**घुघूय्**] ऊपर देखो। वकृ—**घुघुयंत** ; (णाया १, ८—पत्र १३३)।

घुट्टघुणिअ न [दे] पहाड़ की बड़ी शिला ; (दे २, ११०)।
घुट्ठ वि [घुष्ट] घोषित, ऊँची आवाज से जाहिर किया हुआ ; (पउम ३, ११८ ; भवि)।
घुडुक्क अक [गर्ज्] गरजना, गर्जारव करना । घुडुक्कइ ; (हे ४, ३९५)।
घुण पुं [घुण] काष्ठ-भक्षक कीट ; (ठा ४, १ ; विसे १५३६)।
घुणाहुणिआ } स्त्री [दे] कर्णोपकर्णिका, कानाकानी ; (दे **घुणाहुणी** } २, ११० ; महा)।
घुणिय वि [घुणित] घुणों से विद्ध ; (बृह १)।
घुण्ण देखो **घुम्म** वकृ—**घुण्णंत** (नाट)।
घुण्णिअ वि [घूर्णित] १ घुमा हुआ ; २ भ्रान्त, भटका हुआ ; (दे ८, ४६)।
घुत्तिअ वि [दे] गवेषित, अन्वेषित ; (दे २, १०९)।
घुन्न } देखो **घुम्म**। घुमइ ; (पिंग)। वकृ— ; **घुम** } (पराह १, ३)।
घुमघुमिय वि [घुमघुमित] १ जिसने 'घुम घुम' आवाज किया हो वह ; २ न. 'घुम घुम' ध्वनि ; "महुरगंभीरघुमघुमियवरमद्दलं" (सुपा ५०)।
घुम्म अक [घुर्ण्] घूमना, चक्राकार फिरना । घुम्मइ ; (हे ४, ११७ ; षड्)। वकृ—**घुम्मंत, घुम्ममाण** ; (हेका ३३ ; गाया १, ९)। संकृ—**घुम्मिऊण** ; (महा)।
घुम्मण न [घूर्णन] चक्राकार भ्रमण ; (कुमा)।
घुम्मिय वि [घूर्णित] घुमा हुआ, चक्र की तरह फिरा हुआ; (सुपा ९४)।
घुम्मिर वि [घूर्णितृ] घुमने वाला, फिरने वाला, चक्राकार घूमने वाला ; (उप पृ ६२; गा १८०; गउड)।
घुयग पुं [दे] एक तरह का पत्थर, जो पात्र वगैरः को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता है ; (पिंड) ।
घुरहुर देखो **घुरुघुर**। वकृ—**घुरहुरंत** ; (श्रा१२)।
घुरुक्क अक [दे] घुरकना, घुड़कना, गरजना । "घुरुक्कंति वग्घा" (महा)।
घुरुघुर अक [घुरुघुराय्] घुरघुराना, 'घुर घुर' आवाज करना, व्याघ्र वगैरः का बोलना। घुरुघुरंति; (पि ५५८)। वकृ—**घुरुघुरायंत** ; (सुपा ५०५)।
घुरुघुरि पुं [दे] मगडूक, मेढक, भेक; (दे २,१०९)।
घुरुघुरु } देखो **घुरुघुर**। घुरुहुरइ ; (महा)। वकृ—**घुरुहुर** } **घुरुघुरुमाण** ; (महा)।
घुल देखो **घुम्म**। घुलइ ; (हे ४,११७)।
घुलकि स्त्री [दे] हाथी की आवाज, करि-शब्द; (पिंग)
घुलघुल अक [घुलघुलाय्] 'घुल घुल' आवाज करना। वकृ—**घुलघुलाअमाण** ; (पि ५५८)।
घुलिअ वि [घूर्णित] चक्राकार घुमा हुआ ; (कुमा)।
घुल्ला स्त्री [दे] कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (पराण १)।
घुसण देखो **घुसिण** ; (कुमा)।
घुसल सक [मथ्] मथना, विलोड़न करना । घुसलइ (हे ४, १२१)।
घुसलिअ वि [मथित] मथित, विलोड़ित ; (कुमा)।
घुसिण न [घुसृण] कुङ्कुम, सुगन्धित द्रव्य-विशेष, केसर ; (हे १, १२८)।
घुसिणल्ल वि [घुसृणवत्] कुङ्कुम वाला, कुङ्कुम-युक्त ; (कुमा)।
घुसिणिअ वि [दे] गवेषित, अन्विष्ट ; (दे २, १०९)।
घुसिम न [दे] घुसृण, कुङ्कुम ; (षड्)।
घुसिरसार न [दे] अग्रस्नान, विवाह के अवसर में स्नान के पहले लगाया जाता मसूरादि का पिसान ; (हे २, ११०)।
घूअ पुंस्त्री [घूक] उलूक, उल्लू, पक्षि-विशेष ; (गाया १, ८ ; पउम १०५, ५९)। स्त्री—**घूई** ; (विपा १, ३)। °**रि** पुं [°रि] काक, कौआ, वायस ; (तंदु)।
घूणाग पुं [घूणाक] स्वनाम-ख्यात सन्निवेश-विशेष, विशेष ; (आचू १)।
घूरा स्त्री [दे] १ जङ्घा, जाँघ ; २ खलका, शरीर का अवयव विशेष ; "गद्दभाण वा घूराओ कप्पेंति" (सुअ २, २, ४५)।
घे देखो **गह**=ग्रह् । घेइ ; (षड्)। भवि—घेच्छं ; (विसे ११२७)। कर्म—घेप्पइ ; (हे ४, २५६)। कवकृ—**घेप्पंत, घेप्पमाण** ; (गा ५८१; भग ; स १५२)। संकृ—**घेऊण, घक्कूण, घेक्कूण, घेत्तुआण, घेत्तुआणं, घेत्तूण, घेत्तूणं** ; (नाट—मालती ७१ ; पि ५८४ ; हे ४, २१० ; पि ; उव ; प्राप्र)। हेकृ—**घेत्तुं, घेत्तूण** ; (हे ४, २१० ; पउम ११८, २४)। कृ—**घेत्तव्व** ; (हे ४, २१० ; प्राप्र)।

घेउर पुंन [दे] घेवर, घृतपूर, मिष्टान्न-विशेष ; "सा भणइ नियगेहेवि हु घयघेउरभायणं समाकुणइ" (सुपा १३)।

घेक्कूण देखो **घे**।

घेत्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहण करने की इच्छा वाला; (पउम १११, १६)।

घेप्प°
घेप्पंत } देखो **घे**।
घेप्पमाण

घेवर [दे] देखो **घेउर** ; (दे २, १०८)।

घोट्ट } सक [पा] पीना, पान करना । घोट्टइ; (हे ४,
घोट्टय } १०)। वकृ—**घोट्टयंत** ; (स २५७)। हेकृ—**घोट्टिउं** ; (कुमा)।

घोड देखो । **घुम्म** घोडइ ; (से ५, १०)।

घोड } पुंस्त्री [**घोट,°क**] घोड़ा, अश्व, हय ; (दे २,
घोडग } १११ ; पंच ५२ ; उवा ; उप २०८)। २ पुं.
घोडय } कायोत्सर्ग का एक दोष ; (पव ५)। °**रक्खग** पुं [°**रक्षक**] अश्वपाल ; (उप ५६७ टी)। °**ग्गीव** पुं [°**ग्रीव**] अश्वग्रीव-नामक प्रतिवासुदेव, नृप-विशेष ; (आवम)। °**मुह** न [°**मुख**] जैनेतर शास्त्र-विशेष ; (अणु)।

घोडिय पुं [दे] मित्र, वयस्य ; (बृह ५)।

घोडी स्त्री [**घोटी**] १ घोड़ी ; २ वृक्ष-विशेष ; "सीयल्लिघोडिवच्चूलकयरखइराइसंकिण्णे" (स २५६)।

घोण न [**घोण**] घोड़े का नाक ; (सण)।

घोणस पुं [**घोनस**] एक जात का साँप ; (पउम ३९, १७)।

घोणा स्त्री [**घोणा**] १ नाक, नासिका ; (पाअ)। २ घोड़े का नाक; ३ सूअर का मुख-प्रदेश ; (से २, ६४ ; गउड)।

घोर अक [**घुर्**] निद्रा में घुर् घुर् आवाज करना। घोरंति ; (गा ८००)। वकृ—घोरंत ; (स ४२४; उप १०३१ टी)।

घोर वि [दे] १ नाशित, विनाशित ; २ पुं. गीध, पक्षि-विशेष; (दे २, ११२)।

घोर वि [**घोर**] भयंकर, भयानक, विकट ; (सूअ १, ५, १ ; सुपा ३४५ ; सुर २, २४३ ; प्रासू १३९)। २ निर्दय, निष्ठुर ; (पाअ)।

घोरि पुं [दे] शलभ-पशु की एक जाति ; (दे २, १११)।

घोल देखो **घुम्म** । घोलइ; (हे ४,११७)। वकृ—**घोलंत**; (कप्प ; गा ३७१ ; कुमा)।

घोल सक [**घोलय्**] १ घिसना, रगड़ना ; २ मिलाना ; (विसे २०४४ ; से ४, ५२)।

घोल न [दे] कपड़े से छाना हुआ दही ; (पभा ३३)।

घोलण न [**घोलन**] घर्षण, रगड़ ; (विसे २०४४)।

घोलणा स्त्री [**घोलना**] पत्थर वगैरः का पानी की रगड़ से गोलाकार होना ; (स ४७)।

घोलवड } न [दे] एक प्रकार का खाद्य द्रव्य, दहीवड़ा ;
घोलवडय } (पभा ३३ ; श्रा २० ; सुपा ४९५)।

घोलाविअ वि [**घोलित**] मिश्रित किया हुआ, मिलाया हुआ ; (से ४, ५२)।

घोलिअ न [दे] १ शिलातल ; २ हठ-कृत, बलात्कार ; (दे २, ११२)।

घोलिअ वि [**घूर्णित**] घुमाया हुआ ; (पाअ)।

घोलिअ वि [**घोलित**] रगड़ा हुआ, मर्दित ; (औप)।

घोलिर वि [**घूर्णितृ**] घुमने वाला, चक्राकार फिरने वाला ; (गा ३३८ ; स ५७८ ; गउड)।

घोस सक [**घोषय्**] १ घोषण करना, ऊँचे आवाज से जाहिर करना। २ घोखना, ऊँचे आवाज से अध्ययन करना। घोसइ ; (हे १,२६० ; प्रामा)। प्रयो—**घोसावेइ** ; (भग)।

घोस पुं [**घोष**] १ ऊँचा आवाज ; (स १०७ ; कुमा; गा ५४)। २ आभीर-पल्ली, अहीरों का महल्ला ; (हे १, २६०)। ३ गोष्ठ, गौओं का वाड़ा; (ठा २,४-पत्र ८६; पाअ)। ४ स्तनितकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २,३)। ५ उदात्त आदि स्वर-विशेष ; (वव १०)। ६ अनुनाद ; (भग ६, १)। ७ न. देव-विमान-विशेष (सम १२, १७)। °**सेण** पुं [°**सेन**] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्म का धर्म-गुरू, एक जैन मुनि; (पउम २०, १७६)।

घोसण न [**घोषण**] १ ऊँची आवाज; (निचू १)। २ घोषणा, ढिंढोरा पिटवा कर जाहिर करना; (राय)।

घोसणा स्त्री [**घोषणा**] ऊपर देखो ; (गाया १, १३; गा ५२४)।

घोसय न [दे] दर्पण का घरा, दर्पण रखने का उपकरण-विशेष ; (अंत)।

घोसाडई स्त्री [**घोषातकी**] लता-विशेष ; (पण्ण१७—पत्र ५३०)।

घोसालई } स्त्री [दे] शरद् ऋतु में होने वाली लता-विशेष;
घोसाली } (दे २, १११ ; पण्ण १ —पत्र ३३) ।
घोसावण न [**घोषण**) घोषणा, डोंडी पिटवा कर जाहिर करना ; (उप २११ टी) ।
घोसिअ वि [**घोषित**] जाहिर किया हुआ; (उव) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** घआराइसद्दसंकलणो तेरहमो तरंगो समत्तो।

च

च पुं [**च**] तालु-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण-विशेष; (प्राप; प्रामा)।
च अ [**च**] इन अर्थों में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ;—१ और, तथा ; (कुमा; हे २,१९७) । २ पुनः, फिर; (कम्म ४, २३ ; ६६ ; प्रासू ५) । ३ अवधारण, निश्चय; (पंच १३) । ४ भेद, विशेष; (निचू १) । ५ अतिशय, आधिक्य ; (आचा ; निचू ४) । ६ अनुमति, सम्मति (निचू १) । ७ पाद-पूर्त्ति, पाद-पूरण ; (निचू १) ।
चआ स्त्री [**त्वक्**] चमड़ी, त्वचा; (षड्) ।
चइअ वि [**शकित**] जो समर्थ हुआ हो, शक्त; (से ६, ५१) ।
चइअ देखो **चविअ** ; (पउम १०३, १२६) ।
चइअ वि [**त्यक्त**] मुक्त, परित्यक्त ; (कुमा ३,४६) ।
चइअ वि [**त्याजित**] छुड़वाया हुआ, मुक्त कराया हुआ ; (ओघ ११५) ।
चइअ देखो **चय**=त्यज् ।
चइअ देखो **चु** ।
चइइअ देखो **चेइअ**; (षड्) ।
चइउं } देखो **चय**=त्यज् ।
चइऊण }
चइऊण देखो **चु** ।
चइत्त देखो **चेइअ**; (हे २, १३ ; कुमा) ।
चइत्त पुं [**चैत्र**] मास-विशेष, चैत्र मास; (हे १,१५२) ।
चइत्ता देखो **चु** ।
चइत्ताणं } देखो **चय**=त्यज् ।
चइयव्व }
चइद (शौ) वि [**चकित**] भीत, शंकित ; (अभि २१३) ।
चइयव्व देखो **चु** ।
चउ वि [**चतुर्**] चार, संख्या-विशेष ; (उवा ; कम्म ४,२ ; जी ३३) । °**आलीस** स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] चौआलीस, ४४ ; (पि ७५ ; १६६) । °**कट्ठ** न [°**काष्ठ**] चारों दिशा ; (कुमा) । °**कट्ठी** स्त्री [°**काष्ठी**] चौकठा, चौखटा, द्वार के चारों ओर का काठ, द्वार का ढाँचा ; (निचू १) । °**क्कोण** वि [°**कोण**] चार कोण वाला, चतुरस्र ; (णाया १,१३) । °**ग** न देखो **चउक्क**=चतुष्क ; (दं ३०) । °**गइ** स्त्री [°**गति**] नरक, तिर्यग्, मनुष्य और देव की योनि; (कम्म ४, ६६) । °**गइअ** वि [°**र्गतिक**] चारों गति में भ्रमण करने वाला; (श्रा ६) । °**गमण** न [°**गमन**] चारों दिशाएं; (कप्प) । °**गुण**, °**ग्गुण** वि [°**गुण**] चौगुना; (हे १,१७१ ; षड्) । °**चत्ता** स्त्री [°**चत्वारिंशत्**] संख्या-विशेष, चौआलीस; (भग) । °**चरण** पुं [°**चरण**] चौपाया, चार पैर के जन्तु, पशु ; (उप ७६८ टी ; सुपा ४०६) । °**चूड** पुं [°**चूड**] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४५) । °**ट्ठ** देखो °**त्थ** ; (हे २, ३३) । °**ट्ठाणवडिअ** वि [°**स्थानपतित**] चार प्रकार का ; (भग) । °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] संख्या-विशेष, चौरानवे, ६४; (पि ४४६) । °**णउय** वि [°**नवत**] चौरानबवाँ, ६४ वाँ ; (पउम ६४, १०६) । °**णवइ** देखो °**णउइ** ; (सम ६७ ; श्रा ४४) । °**ण्ण** (अप) देखो °**प्पन्न** ; (पिंग) । °**तिस**, °**तीस** न [°**त्रिंशत्**] चौंतीस, ३४; (भग; औप) । °**तीसइम** देखो °**त्तीसइम** ; (पउम ३४, ६१) । °**तीसा** स्त्री. देखो °**तीस** (प्राकृ) । °**त्तालीस** वि [°**चत्वारिंश**] चौआलीसवाँ, ४४ वाँ ; (पउम ४४, ६८) । °**त्तीसइम** वि [°**त्रिंश**] १ चौतीसवाँ, ३४ वाँ; (कप्प)। २ न. सोलह दिनों का लगातार उपवास; (णाया १,१—पत्र ७२)। °**त्थ** वि [°**र्थ**] १ चौथा ; (हे १,१७१) । २ पुंन. उपवास ; (भग) । °**त्थचउत्थ** पुंन [°**र्थचतुर्थ**] एक एक उपवास ; (भग) । °**त्थभत्त** न [°**र्थभक्त**] एक दिन का उपवास ; (भग) । °**त्थभत्तिय** त्रि [°**र्थभक्तिक**] जिसमें एक उपवास किया हो वह ; (पण्ह २, १) । °**त्थिमंगल** न [°**र्थीमङ्गल**] वधू-वर के समागम का चतुर्थ दिन, जिसके बाद जामाता अकेला अपने घर जाता है ; (गा ६४६ अ) । °**त्थी** स्त्री [°**र्थी**] १ चौथी । २ संप्रदान-विभक्ति, चौथी विभक्ति ; (ठा ८)। ३ तिथि-विशेष; (सम ६)। °**दंत** देखो °**द्दंत**; (राज)। °**दस** त्रि. ब. [°**दशन्**] संख्या-विशेष, चौदह; (नव २; जी ४७) । °**दसपुव्वि** पुं [°**दशपूर्विन्**] चौदह पूर्व ग्रन्थों का ज्ञान वाला मुनि; (ओघ २)। °**दसम** वि. देखो °**द्दसम** ;

(णाया १, १४)। °दसहा अ [°दशधा] चौदह प्रकारों से ; (नव ५)। °दसी स्त्री [°दशी] तिथि-विशेष, चतुर्दशी ; (रयण ७१)। °द्द्ंत पुं [°दन्त] ऐरावत, इन्द्र का हाथी ; (कप्प)। °द्दस देखो °दस ; (भग)। °द्दसपुव्वि देखो °दसपुव्वि ; (भग ५, ४)। °द्दसम वि [°दश] १ चौदहवाँ, १४ वाँ ; (पउम १४, १५८)। २ लगातार छ दिनों का उपवास ; (भग)। °द्दसी देखो °दसी ; (कप्प)। °द्दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ चौदहवाँ, ११४ वाँ ; (पउम ११४,३५)। °द्दह देखो °द्दस ; (पि १६६; ४४३)। °द्दही देखो °दसो ; (प्राप्र)। °द्दिसं °द्दिसिं अ [°दिश्] चारों दिशाओं की तरफ, चारों दिशाओं में ; (भग ; महा ; ठा ४, २)। °द्धा अ [°धा] चार प्रकार से ; (उव)। °नाण न [°ज्ञान] मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यव ज्ञान ; (भग; महा)। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति वगैरः चार ज्ञान वाला ; (सुपा ८३ ; ३२०)। °पण्ण देखो °पन्न। °पण्णइम वि [°पञ्चाश] १ चौपनवाँ, ५४ वाँ ; २ न. लगातार छब्बीस दिनों का उपवास ; (णाया २—पत्र २५१)। °पन्न, °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, ५४; (पउम २०, १७; सम ७२; कप्प) °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] चौवनवाँ, ५४ वाँ ; (पउम ५४, ४८)। °पय देखो °प्पय ; (णाया १, ८ ; जी २१)। °पाल न [°पाल] सूर्याभ देव का प्रहरण-कोश ; (राय)। °पइया, °प्पइया स्त्री [°पदिका] १ छन्द-विशेष ; (पिंग)। २ जन्तु-विशेष की एक जाति ; (जीव २)। °प्पई स्त्री [°पदी] देखो °पइया ; (सुपा १६०)। °प्पन्न देखो °पन्न; (सम ७२)। °प्पय पुंस्त्री [°पद] १ चौपाया प्राणी, पशु ; (जी ३१)। २ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण ; (विसे ३३५०)। °प्पह पुं [°पथ] चौहट्टा, चौराहा, चौरास्ता ; (प्रयौ १००)। °प्पुड वि [°पुट] चार पुट वाला, चौसर, चौपड़ ; (विपा १,१)। °प्फाल वि [°फाल] देखो °प्पुड; (णाया १, १—पत्र ५३)। °ब्बाहु वि [°बाहु] १ चार हाथ वाला; २ पुं. चतुर्भुज, श्रीकृष्ण ; (नाट)। °ब्भुअ [°भुज] देखो °बाहु ; (नाट ; सूअ १, ३, १)। °भंग पुंन [°भङ्ग] चार प्रकार, चार विभाग ; (ठा ४, १)। °भंगी स्त्री [°भङ्गी] चार प्रकार, चार विभाग ; (भग)। °भाइया स्त्री [°भागिका] चौसठ पल का एक नाप; (अणु)। °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] कपड़े के साथ कूटी हुई मिट्टी ; (निचू १८)। °मंडलग न [°मण्डलक] लग्न-मण्डप, विवाह-मण्डप ; (सुपा ६३)। °मासिअ देखो चाउम्मासिअ; (श्रा ४७)। °मुह °म्मुह, पुं [°मुख] १ ब्रह्मा, विधाता ; (पउम ११,७२ ; २८,४८)। २ वि. चार मुँह वाला, चार द्वार वाला ; (औप ; सण)। °वग्ग पुंन [°वर्ग] चार वस्तुओं का समुदाय; (निचू १५)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, पचास और चार, ५४ ; (पि २६५ ; २७३ ; सम ७२)। °वार वि [°द्वार] चार दरवाजे वाला ; (गृह); (कुमा)। °विह वि [°विध] चार प्रकार का ; (दं ३२ ; नव ३)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] चौवीस, वीस और चार ; २४ ; (सम ४३ ; दं १ ; पि ३४)। °वीसइ (अप) स्त्री [°विंशति] वीस और चार, चौवीस; (पि ४४५)। °वीसइम वि [°विंशतितम] १ चौवीसवाँ ; (पउम २४, ४०)। २ न. ग्यारह दिनों का लगातार उपवास ; (भग)। °व्वग्ग देखो °वग्ग ; (आचा २,२)। °व्वार पुंन [°वार] चार वार, चार दफा ; (हे १, १७१ ; कुमा)। °व्विह देखो °विह ; (ठा ४,२)। °व्वीस देखो °वीस ; (सम ४३)। °व्वीसइम देखो °वीसइम ; (णाया १, १)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौसठ, साठ और चार ; (सम ७७ ; कप्प)। °सट्ठिम वि [°षष्टितम] चौसठवाँ ; (पउम ६४, ४७)। °स्सट्ठि देखो °सट्ठि ; (कप्पू)। °स्साल स्त्री [°शाल] चार शालाओं से युक्त घर ; (स्वप्न ५१)। °हट्ट, °हट्टय पुंन [°हट्ट, °क] चौहट्टा, बाजार ; (महा ; श्रा २७ ; सुपा ४५५)। °हत्तर वि [°सप्तत] चौहत्तरवाँ, ७४ वाँ ; (पउम ७४ , ४३)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] चौहत्तर, सत्तर और चार ; (पि २४५; २६४)। °हा अ [°धा] चार प्रकार से ; (ठा ३,१ ; जी १६)। देखो चो°।

चउक्क न [**चतुष्क**] चौकड़ी, चार वस्तुओं का समूह ; (सम ४० ; सुर १४, ७८ ; सुपा १४)। "वण्णचउक्केण" (श्रा २३)।

चउक्क [**दे. चतुष्क**] चौक, चौराहा, जहां चार रास्ता मिलता हो वह स्थान ; (दे ३, २ ; षड् ; णाया १, १; औप ; कप्प; अणु ; बृह १ ; जीव १ ; सुर १,६३ ; भग)। २ आँगन, प्राङ्गण ; (सुर ३, ७२)।

चउक्कर पुं [**दे**] कार्तिकेय, शिव का एक पुत्र; (दे ३, ५)।

चउक्कर वि [**चतुष्कर**] चार हाथ वाला, चतुर्भुज; (उत्त ८)।

चउक्किआ स्त्री [**दे. चतुष्किका**] आँगन, छोटा चौक ; (सुर ३, ७२)।

चउज्झाइया स्त्री [**दे**] नाप-विशेष ; (भग ७, ८)।

चउबोल स्त्रीन [**चौबोल**] छन्द-विशेष; (पिंग)। स्त्री-°**ला** ; (पिंग)।

चउर वि [**चतुर**] १ निपुण, दक्ष, हुशियार ; (पाअ ; वेणी ६६)। २ क्रिवि. निपुणता से, हुशियारी से ; "कसी गायइ चउरं" (ठा ७)।

चउरंग वि [**चतुरङ्ग**] १ चार अंग वाला, चार विभाग वाला; (सैन्य वगैरः) (सण)। २ न. चार अंग, चार प्रकार ; (उत्त ३)।

चउरंगि वि [**चतुरङ्गिन्**] चार विभाग वाला, (सैन्य वगैरः); स्त्री—°**णी** ; (सुपा ४५६)।

चउरंत वि [**चतुरन्त**] १ चार पर्यन्त वाला, चार सीमाएं वाला ; २ पुं. संसार; (औप)। स्त्री—°**ता** [°**ता**] पृथिवी, धरणी ; (ठा ४, १)।

चउरंस वि [**चतुरस्र**] चतुष्कोण, चार कोण वाला ; (भग ; आचा ; दं १२)।

चउरंसा स्त्री [**चतुरंसा**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

चउरय पुं [**दे**] चौरा, चबूतरा, गाँव का सभा-स्थान ; (सम १३८ टी)।

चउरस्स देखो **चउरंस** ; (विसे २७६७)।

चउरचिंध पुं [**दे**] सातवाहन, राजा शालिवाहन ; (दे ३, ७)।

चउराणण वि [**चतुरानन**] १ चार मुँह वाला। २ पुं. ब्रह्मा, विधाता ; (गउड)।

चउरासी } स्त्री [**चतुरशीति**] संख्या-विशेष, चौरासी,
चउरासीइ } ८४; (जी ४५; सण ; उवा; पउम २०,१०३ ; सम ६०; कप्प)।

चउरासीइम वि [**चतुरशीतितम**] चौरासीवाँ, ८४ वाँ ; (पउम ८४,१२ ; कप्प)।

चउरासीय स्त्रीन [**चतुरशीति**] चौरासी ; "चउरासीयं तु गणहरा तस्स उप्पन्ना" (पउम ४, ३५)।

चउरिंदिय वि [**चतुरिन्द्रिय**] त्वक्, जिह्वा, नाक और चक्षु इन चार इन्द्रिय वाला; (जन्तु); (भग; ठा १, १; जी १८)।

चउरिमा स्त्री [**चतुरिमन्**] चतुरता, चातुर्य, निपुणता ; (सट्ठि १६)।

चउरिया } स्त्री [**दे**] लग्न-मण्डप, विवाह-मण्डप ; गुजराती
चउरी } में 'चोरी' ; (रंभा ; सुपा ५५२)।

चउरुत्तरसय वि [**चतुरुत्तरशततम**] एकसौ चारवाँ, १०४ वाँ ; (पउम १०४,३५)।

चउसर वि [**दे**] चौसर, चार सरा वाला (हारादि); (सुपा ५१० ; ५१२)।

चउहार पुं [**चतुराहार**] चार प्रकार का आहार, अशन, पान, खादिम और स्वादिम ; "कंतासिज्जंपि न संछवेमि चउहारपरिहारो" (सुपा ५७३)।

चओर पुंन [**दे**] पात्र-विशेष; "भुत्तावसाणे य आयमणवेलाए अवणीएसु चओरेसु" (स २५२)।

चओर } पुंस्त्री [**चकोर**] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १;
चओरग } सुपा ३७)।

चओवचइय वि [**चयोपचयिक**] वृद्धि-हानि वाला; (उप २५८ टी; आचा)।

चंकम अक [**चङ्क्रम्**] १ वारंवार चलना। २ इधर उधर घूमना। ३ बहुत भटकना। ४ टेढ़ा चलना। ५ चलना-फिरना। वकृ—**चंकमंत**; (उप १३० टी; ६८६ टी)। हेकृ—**चंकमिउं**; (स ३५६)। कृ—**चंकमियव्व** ; (पि ५५६)।

चंकमण न [**चङ्क्रमण**] १ इधर उधर भ्रमण ; २ बहुत चलना; ३ वारंवार चलना; ४ टेढ़ा चलना; ५ चलना, फिरना; (सम १०६ ; णाया १,१)।

चंकमिय वि [**चंक्रमित**] १ जिसने चंक्रमण किया हो वह। २-६ ऊपर देखो ; (उप ७२८ टी; निचू १)।

चंकमिर वि [**चंक्रमितृ**] चंक्रमण करने वाला ; (सण)।

चंकम्म अक [**चंक्रम्य**] देखो **चंकम**। वकृ—**चंकम्मंत**, **चंकम्ममाण**; (गा ४६३ ; ६२३ ; उप पृ २३६; पण्ह २, ५; कप्प)।

चंकम्मण देखो **चंकमण**; (णाया १, १—पत्र ३८)।

चंकम्मिअ देखो **चंकमिअ** ; (से ११, ६६)।

चंकार पुं [**चकार**] च-वर्ण, 'च' अक्षर ; (ठा १०)।

चंग वि [**दे. चङ्ग**] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य; (दे ३,१; उप पृ १२६; सुपा १०६ ; कप्पू ३५ ; धम्म ६ टी ; कप्पू ; प्राप ; सण ; भवि)।

चंगवेर पुं [**दे**] काष्ठ-पात्री, काठ का बना हुआ छोटा पात्र-विशेष ; "पीढए चंगवेरे य" (दस ७)।

चंगिम पुंस्त्री [**दे. चङ्गिमन्**] सुन्दरता, सौन्दर्य, श्रेष्ठता, चारुपन;

(नाट)। स्त्री—°मा ; (विवे१०० ; उप पृ१८१; सुपा ५ ; १२३; २६३)।

चंगेरी स्त्री [दे] टोकरी, कठारी, तृण आदि का बना पात्र-विशेष; (विसे ७१० ; पण्ह १,१)।

चंच पुं [**चञ्च**] १ पङ्कप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (इक)। २ न. देव-विमान-विशेष ; (इक)।

चंचपुड पुं [दे] आघात, अभिघात ; "खुरवलयचंचपुडेहिं धरणिअलं अभिहणमाणं" (जं ३)।

चंचप्पर न [दे] असत्य, झूठ, अनृत; "चंचप्परं न भणिमो" (दे ३, ४)।

चंचरीअ पुं [**चञ्चरीक**] भ्रमर, भमरा; (दे ३,६)।

चंचल वि [**चञ्चल**] १ चपल, चञ्चल; (कप्प; चारु १)। २ पुं. रावण के एक सुभट का नाम ; (पउम ५६, ३६)।

चंचला स्त्री [**चञ्चला**] १ चञ्चल स्त्री। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

चंचलिअ वि [**चञ्चलित**] चञ्चल किया हुआ; "मणया-णिलचंचे(? च)ल्लिअकेसराइं" (विक्र २६)।

चंचा स्त्री [**चञ्चा**] १ नरकट की चटाई। २ चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-नगरी-विशेष ; (दीव)।

चंचाल (अप) देखो **चंचल** ; (सण)।

चंचु स्त्री [**चञ्चु**] चोंच, पक्षी का ठोंठ ; (दे ३,२३)।

चंचुच्चिय न [दे. **चञ्चुरित, चञ्चूच्चित**] कुटिल गमन, टेढ़ी चाल ; (औप)।

चंचुमालइय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित; (कप्प; औप)।

चंचुय पुं [**चञ्चुक**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ उस देश का निवासी मनुष्य ; (पण्ह१,१)।

चंचुर वि [**चञ्चुर**] चपल, चंचल ; (कप्पू)।

चंछ सक [**तक्ष्**] छिलना। चंछइ ; (षड्)।

चंड सक [**पिष्**] पीसना। चंडइ ; (षड्)।

चंड देखो **चंद** ; (इक)।

चंड वि [**चण्ड**] १ प्रबल, उग्र, प्रखर, तीव्र ; (कप्प)। २ भयानक, डरावना ; (उत्त २६ ; औप)। ३ अति क्रोधी, क्रोध-स्वभावी ; (उत्त १; १०; पिंग; णाया १,१८)। ४ तेजस्वी, तेजिल ; (उप पृ ३२१)। ५ पुं. राक्षस वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५,२६४)। ६ क्रोध, कोप; (उत्त १)। °**किरण** पुं [°**किरण**] सूर्य, रवि; (उप पृ ३२१)। °**कोसिय** पुं [°**कौशिक**] एक सर्प, जिसने भगवान् महावीर को सताया था; (कप्प)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष; (इक)। °**पज्जोअ** पुं [°**प्रद्योत**] उज्जयिनी के एक प्राचीन राजा का नाम ; (आवम)। °**भाणु** पुं [°**भानु**] सूर्य, सूरज; (कुम्मा १३)। °**रुद्द** पुं [°**रुद्र**] प्रकृति-क्रोधी एक जैन आचार्य ; (भाव१७)। °**वडिंसय** पुं [°**वतंसक**] नृप-विशेष ; (महा)। °**वाल** पुं [°**पाल**] नृप-विशेष ; (कप्पू)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक राजा का नाम ; (कप्पू)। °**लिय** न [°**लीक**] क्रोध-वश कहा हुआ झूठ; (उत्त १)।

चंडंसु पुं [**चण्डांशु**] सूर्य, सूरज, रवि ; (कप्पू)।

चंडमा पुं [**चन्द्रमस्**] चन्द्रमा, चाँद ; (पिंग)।

चंडा स्त्री [**चण्डा**] १ चमरादि इन्द्रों की मध्यम परिषद् ; (ठा ३,२; भग ४,१)। २ भगवान् वासुपूज्य की शासन-देवी; (संति१०)।

चंडातक न [**चण्डातक**] स्त्री का पहनने का वस्त्र, चोली, लहँगा; (दे ३,१३)।

चंडार पुंन [दे] भण्डार, भाण्डागार ; (कुमा)।

चंडाल पुं [**चण्डाल**] १ वर्णसंकर जाति-विशेष, शूद्र और ब्राह्मणी से उत्पन्न ; (आचा ; सूअ १, ८)। २ डोम ; (उत्त १ ; अणु)।

चंडालिय वि [**चण्डालिक**] चण्डाल-संबन्धी, चण्डाल जाति में उत्पन्न ; (उत्त १)।

चंडाली स्त्री [**चण्डाली**] १ चण्डाल-जातीय स्त्री। २ विद्या-विशेष ; (पउम ७, १४२)।

चंडिअ वि [दे] कृत्त, छिन्न, काटा हुआ ; (दे ३, ३)।

चंडिक्क पुंन [दे. **चाण्डिक्य**] रोष, गुस्सा, क्रोध, रौद्रता ; (दे ३, २ ; षड् ; सम ७१)।

चंडिक्किअ वि [दे. **चाण्डिक्यित**] १ रोष-युक्त, रौद्राकार वाला, भयंकर ; (णाया १, १ ; पण्ह २, २ ; भग ७, ८ ; उवा)।

चंडिज्ज पुं [दे] कोप, क्रोध, गुस्सा ; २ वि. पिशुन, खल, दुर्जन ; (दे ३, २०)।

चंडिम पुंस्त्री [**चण्डिमन्**] चण्डता, प्रचण्डता ; (सुपा ६६)।

चंडिया स्त्री [**चण्डिका**] देखो **चंडी** ; (स २६२ ; नाट)।

चंडिल वि [दे] पीन, पुष्ट ; (दे ३, ३)।

चंडिल पुं [**चण्डिल**] हजाम, नापित ; (दे ३, २ ; पाअ ; गा २६१ अ)।

विकम्प-क्षेत्र ; (जो १०)। °**विमाण** न [°**विमान**] चंद्र का विमान ; (जं ७)। °**विलासि** वि [°**विलासिन्**] चन्द्र के तुल्य मनोहर; (राय)। °**वेग** पुं [°**वेग**] एक विद्याधर-नरेश ; (महा)। °**संवच्छर** पुं [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष, चान्द्र मासों से निष्पन्न संवत्सर ; (चंद १०)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] अट्टालिका, कटारी ; (दे ३, ६)। °**सालिया** स्त्री [°**शालिका**] अट्टालिका ; (गाया १,१)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] देव-विमान-विशेष ; (सम ८)। °**सिट्ठ** न [°**शिष्ट**] एक देव-विमान ; (सम ८)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] द्वितीय कुलकर पुरुष की माँ का नाम ; (आचू १)। °**सिहर** पुं [°**शिखर**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४३)। °**सूरदंसावणिया**, °**सूरपासणिया** स्त्री [°**सूरदर्शनिका**] बालक का जन्म होने पर तीसरे दिन उसको कराया जाता चन्द्र और सूर्य का दर्शन, और उसके उपलक्ष में किया जाता उत्सव ; (भग ११,११; विपा १,२)। °**सूरि** पुं [°**सूरि**] स्वनाम-विख्यात एक जैन आचार्य ; (सण)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र ; २ एक विद्याधर राज-कुमार; (महा)। °**सेहर** पुं [°**शेखर**] १ भूप-विशेष ; (ती ३८)। २ महादेव, शिव ; (पि ३६५)। °**हास** पुं [°**हास**] खड्ग-विशेष ; (से १४, ५२ ; गउड)।

चंद वि [**चान्द्र**] चन्द्र-संबन्धी ; (चंद १२)। °**कुल** न [°**कुल**] जैन मुनियों का एक कुल; (गच्छ ४)।

चंदअ देखो **चंद** = चन्द्र ; (हे २, १६४)।

चंदइल्ल पुं [**दे**] मयूर, मोर; (दे ३, ५)।

चंदंक पुं [**चन्द्राङ्क**] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा ; (पउम ५, ४३)।

चंदग [**चन्द्रक**] देखो **चंद**। °**विज्झ**, °**वेज्झ** न [°**वेध्य**] राधावेध ; "चंदगविज्झं लद्धं, केवलसरिसं समाउपरिहीणं" (संथा १२२ ; निचू ११)।

चंदट्ठिआ स्त्री [**दे**] १ भुज, शिखर, कन्धा ; २ गुच्छा, स्तबक ; (दे ३, ६)।

चंदण पुंन [**चन्दन**] १ सुगन्धित वृक्ष-विशेष, चन्दन का पेड़ ; (प्रासू ६)। २ न. सुगन्धित काष्ठ-विशेष, चन्दन की लकड़ी ; (भग ११, ११ ; हे २,१८२)। ३ घिसा हुआ चन्दन ; (कुमा)। ४ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (जं)। °**कलस** पुं [°**कलश**] चन्दन-चर्चित कुम्भ, माङ्गलिक घट ; (औप)। °**घड** पुं [°**घट**] मंगल-कारक घड़ा; (जीव ३)। °**बाला** स्त्री [°**बाला**] एक साध्वी स्त्री, भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या ; (पडि)। °**वइ** पुं [°**पति**] स्वनाम-ख्यात एक राजा; (उप ६८६टी)।

चंदणग पुंन [**चन्दनक**] १ ऊपर देखो। २ पुं. द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, जिसके कलेवर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं ; (पगह १,१ ; जी १५)।

चंदणा स्त्री [**चन्दना**] भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या, चन्दनबाला; (सम १५२ ; कप्प)।

चंदणी स्त्री [**दे**] चन्द्र की पत्नी, रोहिणी ; "चंदो विय चंदणीजोगो" (महा)।

चंदम पुं [**चन्द्रमस्**] चन्द्रमा, चाँद ; (भग)।

चंदवडाया स्त्री [**दे**] जिसका आधा शरीर ढका और आधा नंगा हो ऐसी स्त्री ; (दे ३,७)।

चंदा स्त्री [**चन्द्रा**] चन्द्र-द्वीप की राजधानी ; (जीव ३)।

चंदाअव पुं [**चन्द्रातप**] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, चन्द्र की प्रभा ; (से १, २७)। देखो **चंदायय**।

चंदाणण पुं [**चन्द्रानन**] ऐरवत क्षेत्र के प्रथम जिन-देव ; (सम १५३)।

चंदाणणा स्त्री [**चन्द्रानना**] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद उत्पन्न करने वाली; २ शाश्वती जिन-प्रतिमा-विशेष; (ठा १,१)।

चंदाभ वि [**चन्द्राभ**] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद जनक। २ पुं. आठवाँ जिनदेव, चन्द्रप्रभ स्वामी ; (आचू २)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार ; (पउम ३, ५५)। ४ न. एक देव-विमान; (सम १४)।

चंदायण न [**चान्द्रायण**] तप-विशेष ; (पंचा १६)।

चंदायण न [**चन्द्रायण**] चन्द्र का छ छ मास पर दक्षिण और उत्तर दिशा में गमन ; (जो ११)।

चंदायय देखो **चंदाअव**। २ आच्छादन-विशेष, वितान, चँदवा ; (सुर ३, ७२)।

चंदालग न [**दे**] ताम्र का भाजन-विशेष ; (सुअ १,४,२)।

चंदावत्त न [**चन्द्रावर्त्त**] एक देव-विमान ; (सम ८)।

चंदाविज्झय देखो **चंदग-विज्झ** ; (णंदि)।

चंदिआ स्त्री [**चन्द्रिका**] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना ; (से ५, २ ; गा ७७)।

चंदिण न [**दे**] चन्द्रिका, चन्द्रप्रभा ;

"मेहाण दाणं चंदाण, चंदिणं तरुवराण फलनिवहो।
सप्पुरिसाण विढत्तं, सामन्नं सयललोआणं ॥" (श्रा१०)।

चंदिम देखो **चंदम** ; (औप ; कप्प)। २ एक जैन मुनि ; (अनु २)।

चंदिमा स्त्री [**चन्द्रिका**] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना ; (हे १, १८५)।

चंदिमाइय न [**चान्द्रिक**] 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन ; (राज)।

चंदिल पुं [**चन्दिल**] नापित, हजाम; (गा २६१; दे ३,२)।

चंदुत्तरवडिंसग न [**चन्द्रोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान ; (सम ८)।

चंदेरी स्त्री [**दे**] नगरी-विशेष ; (ती ४५)।

चंदोज्ज } न [**दे**] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल ;
चंदोज्जय } (दे ३, ४)।

चंदोत्तरण न [**चन्द्रोत्तरण**] कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान ; (विपा १, ५—पत्र ६०)।

चंदोयर पुं [**चन्द्रोदर**] एक राज-कुमार ; (धम्म)।

चंदोवग न [**चन्द्रोपक**] संन्यासी का एक उपकरण ; (ठा ४, २)।

चंदोवराग पुं [**चन्द्रोपराग**] चन्द्र-ग्रहण, चन्द्रमो का ग्रहण, राहु-ग्रास ; (ठा १० ; भग ३, ६)।

चंद्र देखो **चंद** ; (हे २, ८० ; कुमा)।

चंप सक [**दे**] चाँपना, दाबना, दबाना। चंपइ; (आरा २५)। कर्म—चंपिज्जइ ; (हे ४, ३९५)।

चंप सक [**चर्च्**] चर्चा करना। चंपइ ; (प्राप्र)। संकृ—**चंपिऊण** ; (वज्जा ६४)।

चंपग देखो **चंपय** ; "असुइट्ठाणे पडिया, चंपगमाला न कोरइ सीसे" (आव ३)।

चंपडण न [**दे**] प्रहार, आघात ; "सरभसचलंतविअडगुडिअ-गंधसिंधुरणिवहचलणचंपडणसमुप्पइआ ...... धूलीजालोली" (विक्र ८४)।

चंपण न [**दे**] चाँपना, दबाना ; (उप १३७ टी)।

चंपय पुं [**चम्पक**] १ वृक्ष-विशेष, चम्पा का पेड़ ; (स १५२ ; भग)। २ देव-विशेष ; (जीव ३)। ३ न. चम्पा का फूल ; (कुमा)। °**माला** स्त्री [°**माला**] १ छन्द-विशेष ; (पिंग)। २ चम्पा के फूलों का हार ; (आव ३)। °**लया** स्त्री [°**लता**] १ लताकार चम्पक वृक्ष ; २ चम्पक वृक्ष की शाखा ; (जं १ ; औप)। °**वण** न [°**वन**] चम्पक वृक्षों की प्रधानता वाला वन ; (भग)।

चंपा स्त्री [**चम्पा**] अंग देश की राजधानी, नगरी-विशेष,-जिसको आजकल 'भागलपुर' कहते हैं ; (विपा १, १ ; कप्प) °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] वही अर्थ ; (पउम ८, १५६)।

चंपा स्त्री. देखो **चंपय**। °**कुसुम** न [°**कुसुम**] चम्पा का फूल ; (राय)। °**वण्ण** वि [°**वर्ण**] चम्पा के फूल के तुल्य रंग वाला, सुवर्ण-वर्ण। स्त्री—°**ण्णी** (अप) ; (हे ४, ३३०)।

चंपारण (अप) पुं [**चम्पारण्य**] १ देश-विशेष, चंपारन, भागलपुर का प्रदेश ; २ चंपारन का निवासी ; (पिंग)।

चंपिअ वि [**दे**] चाँपा हुआ, दबाया हुआ, मर्दित ; (सुपा १३७ ; १३८)।

चंपिज्जिया स्त्री [**चम्पीया**] जैन मुनि गण की एक शाखा; (कप्प)।

चंभ पुं [**दे**] हल से विदारित भूमि-रेखा ; (दे ३, १)।

चकप्पा स्त्री [**दे**] त्वक्, त्वचा, चमड़ी ; (दे ३,३)।

चकिद देखो **चइद** ; (कुमा)।

चकोर पुंस्त्री [**चकोर**] पक्षि-विशेष, चकोर पक्षी ; (सुपा ४५७)। स्त्री—°**री** ; (रयण ४६)।

चक्क पुं [**चक्र**] १ पक्षि-विशेष, चक्रवाक पक्षी ; (पाअ ; कुमा ; सण)। "तो हरिसपुलइयंगो चक्को इव दिट्ठउग्गयपयंगो" (उप ७२८ टी)। २ न. गाड़ी का पहिया ; (पराह १,१)। ३ समूह ; (सुपा १५०; कुमा)। ४ अस्त्र-विशेष ; (पउम ७२, ३१ ; कुमा)। ५ चक्राकार आभूषण, मस्तक का आभरण-विशेष ; (औप)। ६ व्यूह-विशेष, सैन्य की चक्राकार रचना-विशेष; (णाया १, १ ; औप)। °**कंत** पुं [°**कान्त**] देव-विशेष, स्वयंभूरमण समुद्र का अधिष्ठाता देव; (दीव)। °**जोहि** पुं [°**योधिन्**] १ चक्र से लड़ने वाला योद्धा ; (ठा ६)। २ वासुदेव, तीन खंड पृथिवी का राजा ; (आव १)। °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] चक्र के निशान वाली ध्वजा ; (जं १)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] चक्रवर्ती राजा ; (सण)। °**पाणि** पुं [°**पाणि**] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट्। २ वासुदेव, अर्ध-चक्रवर्ती राजा ; (पउम ७३, ३)। °**पुरा, पुरी** स्त्री [°**पुरी**] विदेह वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३; इक)। °**प्पहु** देखो °**पहु**; (सण)। °**यर** पुं [°**चर**] भिक्षुक, भीखमंगा ; (उप ६१७)। °**रयण** न [°**रत्न**] अस्त्र-विशेष, चक्रवर्ती राजा का मुख्य आयुध ; (पराह १,४)। °**वइ** पुं [°**पति**] सम्राट् ; (पिंग)। °**वइ, वट्टि** पुं [°**वर्तिन्**] छ खण्ड भूमि का अधिपति राजा, सम्राट् ; (पिंग ; सण ; ठा ३,१ ; पडि ; प्रासू १७५)। °**वट्टित्त** न [°**वर्तित्व**] सम्राट्पन, साम्राज्य ; (सुर ४, ६१)।

°**वत्ति** देखो °**वट्टि**; (पि २८६)। °**विजय** पुं [°**विजय**] चक्रवर्ती राजा से जीतने योग्य क्षेत्र-विशेष; (ठा ८)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] वह मकान, जहाँ तिल पीला जाता हो, तैलिक-गृह ; (वव १०)। °**सुह** पुं [°**शुभ**, °**सुख**] देव-विशेष, मानुषोत्तर पर्वत का अधिपति देव ; (दीव)। °**सेण** पुं [°**सेन**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (दंस)। °**हर** पुं [°**धर**] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् ; (सम ११६ ; पउम ३, ८५ ; ४, ३६ ; कप्प)। २ वासुदेव, अर्ध-चक्री राजा ; (राज)।

चक्कआअ देखो **चक्कवाय** ; (पि ८२)।

चक्कंग पुं [**चक्राङ्ग**] पक्षि-विशेष ; (सुपा ३४)।

चक्कणभय न [**दे**] नारंगी का फल ; (दे ३, ७)।

चक्कणाहय न [**दे**] ऊर्मि, तरङ्ग, कल्लोल ; (दे ३,६)।

चक्कम } **चक्कम्म** } अक [**भ्रम्**] घूमना, भटकना, भ्रमण करना। चक्कमइ ; (दे २, ६)। चक्कम्मइ ; (हे ४, १६१)। वकृ—**चक्कमंत**; (स ६१०)।

चक्कम्मविअ वि [**भ्रमित**] घुमाया हुआ, फिराया हुआ ; (कुमा)।

चक्कय देखो **चक्क** ; (पण्ण १)।

चक्कल न [**दे**] कुण्डल, कर्ण का आभूषण ; २ दोला-फलक, हिंडोला का पटिया ; (दे ३, २०)। ३ वि. वर्तुल, गोलाकार पदार्थ ; (दे ३, २० ; भवि ; वज्जा ६४ ; आवम; षड्)। ४ विशाल, विस्तीर्ण; (दे ३,२०;भवि)।

चक्कलिअ वि [**दे**] चक्राकार किया हुआ; (से ११, ६८ ; स ३८४ ; गउड)। °**भिण्ण** वि [°**भिन्न**] गोलाकार खण्ड, गोल टुकड़ा ; (बृह १)।

चक्कवाई स्त्री [**चक्रवाकी**] चक्रवाक-पक्षी की मादा ; (रंभा)।

चक्कवाग } **चक्कवाय** } पुं [**चक्रवाक**] पक्षि-विशेष ; (णाया १, १ ; पण्ह १, १ ; स ३३७ ; कप्पू ; स्वप्न ५१)।

चक्कवाल न [**चक्रवाल**] १ चक्राकार भ्रमण " रीइज्ज न चक्कवालेण" (पुप्फ १७८)। २ मण्डल, चक्राकार पदार्थ, गोल वस्तु ; (पण्ण ३६ ; औप ; णाया १, १६)। ३ गोल जलाशय ; "संसारचक्कवाले" (पच्च ५२)। ४ गोल जल-समूह, जल-राशि ; "जह खुहियचक्कवाले पोयं रयणभरियं समुद्दम्मि। निज्जामगा धरिंती" (पच्च ७६)। ५ आवश्यक कार्य, नित्य-कर्म ; (पंचव ४)। ६ समूह, राशि, ढग; (आउ)। ७ पुं. पर्वत विशेष; (ठा १०)। °**विक्खंभ** पुं [°**विष्कम्भ**] चक्राकार घेरा, गोल परिधि; (भग ; ठा २, ३)। °**सामायारी** स्त्री [°**सामाचारी**] नित्य-कर्म-विशेष; (पंचव ४)।

चक्कवाला स्त्री [**चक्रवाला**] गोल पंक्ति; चक्राकार श्रेणी ; (ठा ७)।

चक्काअ देखो **चक्कवाय**; (हे १, ८)।

चक्काग न [**चक्रक**] चक्राकार वस्तु ; "चक्कागं भंजमाणस्स समो भंगो य दीसइ" (पण्ण १ ; पि १६७)।

चक्कार पुं [**चकार**] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६३)। °**बद्ध** न [°**बद्ध**] शकट, गाड़ी ; (दस ५, १)।

चक्काह पुं [**चक्राभ**] सोलहवें जिन-देव का प्रथम शिष्य ; (सम १५२)।

चक्काहिव पुं [**चक्राधिप**] चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; (सण)।

चक्काहिवइ पुं [**चक्राधिपति**] ऊपर देखो ; (सण)।

चक्किक } **चक्किय** } वि [**चक्रिन्**, **चक्रिक**] १ चक्र वाला, चक्र विशिष्ट। २ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् ; (सण)। ३ तेली ; ४ कुम्भार ; (कप्प ; औप ; णाया १,१)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] तेल वेचने की दुकान ; (वव ६)।

चक्किय वि [**चकित**] भयभीत ; "समुद्दगंभीरसमा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहंसिया" (उत्त ११)।

चक्किय पुं [**चाक्रिक**] १ चक्र से लड़ने वाला योद्धा ; २ भिक्षुक की एक जाति ; (औप ; णाया १, १)।

चक्किया क्रि [**शक्नुयात्**] सके, कर सके, समर्थ हो सके ; (कप्प ; कस ; पि ४६५)।

चक्की स्त्री [**चक्री**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

चक्कुलंडा स्त्री [**दे**] सर्प की एक जाति ; (दे ३, ५)।

चक्केसर पुं [**चक्रेश्वर**] १ चक्रवर्ती राजा ; (भवि)। २ विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन ग्रन्थकार मुनि ; (राज)।

चक्केसरी स्त्री [**चक्रेश्वरी**] १ भगवान् आदिनाथ की शासन-देवी ; (संति ६)। २ एक विद्या-देवी ; (संति ५)।

चक्कोडा स्त्री [**दे**] अग्नि-भेद, अग्नि-विशेष; (दे ३,२)।

चक्ख सक [**आ+स्वादय्**] चखना, चीखना, स्वाद लेना। चक्खइ ; (पि २०२)। वकृ—**चक्खंत** ; (गा १७१)। कवकृ—**चक्खिज्जंत, चक्खीअंत** ; (पि२०२)। संकृ—

चक्खिऊण ; (से १३, ३६) । हेकृ—**चक्खिउं** ; (वज्जा ४६) ।
चक्खडिअ न [**दे**] जीवितव्य, जीवन ; (दे ३, ६) ।
चक्खण न [**आस्वादन**] आस्वादन, चीखना ; (उप पृ २५२) ।
चक्खिअ वि [**आस्वादित**] आस्वादित, चीखा हुआ ; (हे ४, २५८ ; गा ६०३ ; वज्जा ४६) ।
चक्खिंदिय न [**चक्षुरिन्द्रिय**] नयनेन्द्रिय, आँख, चक्षु ; (उत्त २६, ६३) ।
चक्खु पुंन [**चक्षुष्**] १ आँख, नेत्र, चक्षु ; (हे १, ३३ ; सुर ३, १५३ ; सम १) । २ पुं. इस नाम का एक कुलकर पुरुष; (पउम ३, ५३) । ३ न. देखो नीचे °**दंसण**; (कम्म ३, १७ ; ४, ६) । ४ ज्ञान, बोध ; (ठा ३, ४) । ५ दर्शन, अवलोकन ; (आचा) । °**कंत** पुं [°**कान्त**] देव-विशेष, कुण्डलोद समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] एक कुलकर पुरुष की पत्नी ; (सम १५०) । °**दंसण** न [°**दर्शन**] चक्षु से वस्तु का सामान्य ज्ञान ; (सम १५) । °**दंसणवडिया** स्त्री [°**दर्शनप्रतिज्ञा**] आँख से देखने का नियम, नयनेन्द्रिय का संयम ; (निचू ६ ; आचा २, २) । °**दय** वि [°**दय**] ज्ञान-दाता ; (सम १ ; पडि) । °**पडिलेहा** स्त्री [°**प्रतिलेखा**] आँख से देखना ; (निचू १) । °**परिन्नाण** न [°**परिज्ञान**] रूप-विषयक ज्ञान, आँख से होने वाला ज्ञान; (आचा) । °**पह** पुं [°**पथ**] नेत्र-मार्ग, नयन-गोचर; (पण्ह १, ३) । °**फास** पुं [°**स्पर्श**] दर्शन, अवलोकन ; (औप) । °**भीय** वि [°**भीत**] अवलोकन मात्र से ही डरा हुआ ; (आचा) । °**म, °मंत** वि [°**मत्**] १ लोचन-युक्त, आँख वाला ; (विसे) । २ पुं. एक कुलकर पुरुष का नाम ; (सम १५०) । °**लोल** वि [°**लोल**] देखने का शौकीन, जिसकी नयनेन्द्रिय संयत न हो वह ; (कस) । °**लोलुय** वि [°**लोलुप**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (कस) । °**ल्लोयणलेस्स** वि [°**लोकनलेश्य**] सुरूप, सुन्दर रूप वाला; (राय; जीव ३) । °**विसिहय** वि [**वृत्तिहत**] दृष्टि से अपरिचित ; (वव ८) । °**स्सव** पुं [°**श्रवस्**] सर्प, साँप ; (स ३३४) ।
चक्खुडुण न [**दे**] प्रेक्षणक, तमाशा ; (दे २, ४) ।
चक्खुय देखो **चक्खुस** ; (आवम) ।
चक्खुरक्खणी स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम ; (दे ३, ७) ।
चक्खुस वि [**चाक्षुष**] आँख से देखने योग्य वस्तु, नयन-ग्राह्य ; (पण्ह १, १; विसे ३३११) ।
चगोर देखो **चओर** ; (प्राकृ) ।
चच्च पुं [**चर्च**] समालम्भन, चन्दन वगैरः का शरीर में उपलेप ; (दे ६, ७६) ।
चच्चर न [**चत्वर**] चौहट्टा, चौरास्ता, चौक ; (णाया १, १ ; पण्ह १, ३ ; सुर १, ६२; हे २, १२; कुमा) ।
चच्चरिअ पुं [**दे. चञ्चरीक**] भ्रमर, भमरा; (षड्) ।
चच्चरिया स्त्री [**चर्चरिका**] १ नृत्य-विशेष ; (रंभा) । २ देखो **चच्चरी** ; (स ३०७) ।
चच्चरी स्त्री [**चर्चरी**] १ गीत-विशेष, एक प्रकार का गान; "वित्थरियचच्चरीरवमुहरियउज्जाणभूभागे" (सुर ३, ५४); "पारंभियचच्चरीगीया" (सुपा ५५) । २ गाने वाली टोली, गाने वालों का यूथ ; "पवत्ते मयणमहूसवे निग्गयासु विचित्तवेसासु नयरचच्चरीसु" , "कहं नीयचच्चरी अम्हाण चच्चरीए समासन्नं परिव्वयइ" (स ४२) । ३ छन्द-विशेष ; (पिंग) । ४ हाथ की ताली का आवाज; (आव १) ।
चच्चसा स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष; "अट्ठसयं चच्चसाणं, अट्ठसयं चच्चसावायगाणं" (राय) ।
चच्चा स्त्री [**दे**] १ शरीर पर सुगन्धि पदार्थ का लगाना, विलेपन ; (दे ३, १६ ; पाअ ; जं १ ; णाया १, १ ; राय) । २ तल-प्रहार, हाथ की ताली ; (दे ३,१६; षड्) ।
चच्चार सक [**उपा+लभ्**] उपालम्भ देना, उलहना देना । चच्चारइ ; (षड्) ।
चच्चिक्क वि [**दे**] १ मण्डित, विभूषित; "चंदुज्जयचच्चिक्का दिसाउ" (दे ३,४) । "तणुप्पहापडलचच्चिक्को" (धम्म ६टी) ; "साहू गुणरयणचच्चिक्का" (चउ ३६) । २ पुं. विलेपन, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का शरीर पर मसलना; (हे २,७४) ; "चच्चिक्को" (षड्); "कुंकुमचच्चिक्कछुरियंगो" (पउम २८,२८); "पेच्छइ सुवन्नकलसं सुरचंदणपंकचच्चिक्कं" (उप ७६८ टी); " घणलेहिदपंकचच्चिक्को" (मृच्छ११०) ।
चच्चुप्प सक [**अर्पय्**] अर्पण करना, देना । चच्चुप्पइ ; (हे ४,३६) ।
चच्छ सक [**तक्ष्**] छिलना, काटना । चच्छइ; (हे ४,१६४)।
चच्छिअ वि [**तष्ट**] छिला हुआ ; (कुमा) ।
चज्ज सक [**दृश्**] देखना, अवलोकन करना । चज्जइ ; (दे ३, ४ ; षड्)।
चज्जा स्त्री [**चर्या**] १ आचरण, वर्तन; २ चलन, गमन ।

३ परिभाषा, संकेत; (विसे २०४४)।

चज्जिय वि [**दृष्ट**] अवलोकित, देखा हुआ ; (महा)।

चट्टुंअ देखो **चट्टुअ** ; (गा१६२)।

चट्ट सक [**दे**] चाटना, अवलेह करना। "न य अलोणियं सिलं कोइ चट्टेइ" (महा)।

चट्ट पुंन [**दे**] १ भूख, बुभुक्षा; "जीवंति उदहिपडिआ, चट्ट-च्छिन्ना न जीवंति" (सूक्त ७०)। २ पुं. चट्टा, विद्यार्थी। °**साला** स्त्री [°**शाला**] चटशाला, छोटे बालकों की पाठ-शाला ; (बृह १)।

चट्टि वि: [**चट्टिन्**] चाटने वाला ; (कप्पू)।

चट्टु, **चट्टुअ**, **चट्टुल** पुं [**दे**] दारु-हस्त, काठ की कलछी, परोसने का पात्र-विशेष ; (दे३,१ ; गा१६२अ)।

चड सक [**आ+रुह्**] चढ़ना, ऊपर बैठना, आरूढ़ होना। चडइ; (हे ४,२०६)। संकृ—**चडिउं**,**चडिऊण**; (सुपा ११४; कुमा)।

चड पुं [**दे**] शिखा, चोटी; (दे ३,१)।

चडक्क पुंन [**दे**] १ चटत्कार, चटका; (हे ४,४०६; भवि)। २ शस्त्र-विशेष; (पउम ७,२६)।

चडक्कारि वि [**चटत्कारिन्**] 'चटत्' शब्द करने वाला (पवन आदि) ; (गउड)।

चडग देखो **चडय** (पण्ण १)।

चडगर पुं [**दे**] १ समूह, यूथ, जत्था; (पउम ६०, १५ ; णाया १, १—पत्र ४६)। २ आडम्बर, आटोप ; "महया चडगरत्तणेणं अत्थकहा हणइ" (दस ३)।

चडचड पुं [**चडचड**] 'चड-चड' आवाज; (विपा १, ६)।

चडचडचड अक [**चडचडाय्**] 'चड-चड' आवाज करना। चडचडचडंति ; (विपा १, ६)।

चडड पुं [**चटट**] ध्वनि-विशेष, बिजली के गिरने का आवाज ; (सुर २, ११०)।

चडण न [**आरोहण**] चढ़ना, ऊपर बैठना ; (श्रा १४ ; प्रासू १०१ ; उप ७२८ टी ; आघ ३०; सहि १४२ ; वज्जा ५४)।

चडय पुंस्त्री [**चटक**] पक्षि-विशेष, गौरैया पक्षी ; (दे २, १०७)। स्त्री—°**या** ; (दे ८, ३६)।

चडवेला स्त्री देखो **चवेडा** ; (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

चडावण न [**आरोहण**] चढ़ाना ; (उप १५२)।

चडाविय वि [**आरोहित**] चढ़ाया हुआ, ऊपर स्थापित ; "रयणखंभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा" (मुणि १०६०१ ; सुर १३, ३६; महा)।

चडाविय वि [**दे**] प्रेषित, भेजा हुआ ; "चाउद्दिसिंपि तेणं चडावियं साहणं तआ सोवि" (सुपा ३६५)।

चडिअ वि [**आरूढ**] चढ़ा हुआ, आरूढ़ ; (सुपा १३७ ; १५३ ; १५६ ; हे ४, ४४५)।

चडिआर पुं [**दे**] आटोप, आडम्बर ; (दे ३, ५)।

चडु पुं [**चटु**] १ प्रिय वचन, प्रिय वाक्य ; २ व्रती का एक आसन ; ३ उदर, पेट ; ४ पुंन. प्रिय संभाषण, खुशामद ; (हे १, ६७ ; प्राप्र)। °**आर** वि [°**कार**] खुशामद करने वाला, खुशामदी ; (पण्ह १, ३)। °**आरअ** वि [°**कारक**] खुशामदी ; (गा ६०५)।

चडुल वि [**चटुल**] १ चंचल, चपल ; (से २, ४५ ; पउम ४२, १६)। २ कंप वाला, हिलता हुआ; (से १, ५२)।

चडुला स्त्री [**दे**] रत्न-तिलक, सोने की मेखला में लटकता हुआ रत्न-निर्मित तिलक ; (दे ३, ८)।

चडुलातिलय न [**दे**] ऊपर देखो ; (दे ३, ८)।

चडुलिया स्त्री [**दे**] अन्त भाग में जला हुआ घास का पूला, घास की अंटिया ; (पंदि)।

चड्ड सक [**मृद्**] मर्दन करना, मसलना। चड्डइ ; (हे ४, १२६)। प्रयो—चड्डावए ; (सुपा ३३१)।

चड्ड सक [**पिष्**] पीसना। चड्डइ; (हे ४, १८५)।

चड्ड सक [**भुज्**] भोजन करना, खाना। चड्डइ ; (हे ४, ११०)।

चड्ड न [**दे**] तैल-पात्र, जिसमें दीपक किया जाता है; गुजराती में 'चाडुं' ; (सुपा ६३८ ; बृह १)।

चड्डण न [**भोजन**] १ भोजन, खाना। २ खाने की वस्तु, खाद्य-सामग्री ; (कुमा)।

चड्डावल्ली स्त्री [**चड्डावल्ली**] इस नाम की एक नगरी, जहां श्रीधनेश्वर मुनि ने विक्रम की ग्यारहवीं सदी में 'सुरसुंदरी-चरिअ' नामक प्राकृत काव्य रचा था ; (सुर १६, २४६)।

चड्डिअ वि [**मृदित**] मसला हुआ, जिसका मर्दन किया गया हो वह ; (कुमा)।

चड्डिअ वि [**पिष्ट**] पीसा हुआ; (कुमा)।

चण, **चणअ** पुं [**चणक**] चना, अन्न-विशेष ; (जं ३; कुमा; गा ५५७ ; दे १, २१)।

चणइया स्त्री [**चणकिका**] मसूर, अन्न-विशेष; (ठा ५,३) ।
चणग देखो **चणअ** ; (सुपा ६३१ ; सुर ३, १४८) । °**गाम** पुं [°**ग्राम**] ग्राम-विशेष, गौड़ देश का एक ग्राम ; (राज) । °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष, राजगृह-नगर का असली नाम ; (राज) ।
चत्त पुंन [**दे**] तर्कु, तकुआ, सूत बनाने का यन्त्र ; (दे ३, १ ; धर्म २) ।
चत्त वि [**त्यक्त**] छोड़ा हुआ, परित्यक्त ; (पराह २, १ ; कुमा १, १६) ।
चत्तर देखो **चच्चर** ; (पि २६६ ; नाट) ।
चत्ता देखो **चत्तालीसा** ; (उवा) ।
चत्ताल वि [**चत्वारिंश**] चालीसवाँ; (पउम ४०, १७)।
चत्तालीस न [**चत्वारिंशत्**] १ चालीस, ४० ; "चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता" (सम ६६ ; कप्प) । २ चालीस वर्ष की उम्र वाला; "चत्तालीसस्स विन्नाणं" (तंदु) ।
चत्तालीसा स्त्री [**चत्वारिंशत्**] चालीस, ४० ; "तीसा चत्तालीसा " (पराण २) ।
चत्थरि पुंस्त्री [**दे. चस्तरि**] हास, हास्य; (दे ३, २) ।
चपेटा स्त्री [**दे. चपेटा**] कराघात, थप्पड़, तमाचा; (षड्) ।
चप्प सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना, दबाना । संकृ— **चप्पिवि** ; (भवि) ।
चप्पडग न [**दे**] काष्ठ-यन्त्र-विशेष; (पराह १,३—पत्र ५३) ।
चप्पलअ वि [**दे**] १ असत्य, झूठा ; (कुमा ८, ७६)। २ बहुमिथ्यावादी, बहुत झूठ बोलने वाला ; (षड्) ।
चप्पिय वि [**आक्रान्त**] आक्रान्त, दबाया हुआ; (भवि)।
चप्पुडिया, **चप्पुडी** स्त्री [**चप्पुटिका**] चपटी, अंगुष्ठ के साथ अंगुली की ताली ; (णाया १, ३—पत्र ६५ ; दे ८, ४३) ।
चप्फल, **चप्फलय** न [**दे**] १ शेखर-विशेष, एक तरह का शिरो-भूषण; २ वि. असत्य, झूठा, मिथ्याभाषी; (दे ३, २० ; हे ३, ३८ ; कुमा ८, २५) ।
चमक्क पुं [**चमत्कार**] विस्मय, आश्चर्य ; "संजणियजण-चमक्को" (धम्म ६ टी; उप ७६८ टी) । °**यर** वि [°**कर**] विस्मय-जनक ; (सण) ।
चमक्क, **चमक्कर** सक [**चमत्+कृ**] विस्मित करना, आश्चर्यान्वित करना । चमक्केइ, चमक्कंति ; (विवे ४३ ; ४८) । वकृ—**चमक्करंत** ; (विक ६६) ।
चमक्कार पुं [**चमत्कार**] आश्चर्य, विस्मय ; (सुर १०, ८ ; वज्जा २४) ।
चमक्किअ वि [**चमत्कृत**] विस्मित, आश्चर्यान्वित ; (सुपा १२२) ।
चमड, **चमढ** सक [**भुज्**] भोजन करना, खाना । चमडइ ; (षड्) । चमढइ ; (हे ४, ११०) ।
चमढ सक [**दे**] १ मर्दन करना, मसलना । २ प्रहार करना । ३ कदर्थन करना, पीड़ना । ४ निन्दा करना । ५ आक्रमण करना । ६ उद्विग्न करना, खिन्न करना । कवकृ— **चमढिज्जंत** ; (ओघ १२८ भा ; बृह १) ।
चमढण न [**भोजन**] भोजन, खाना ; (कुमा) ।
चमढण न [**दे**] १ मर्दन, अवमर्दन ; (ओघ १८७ भा ; स २२) । २ आक्रमण ; (स ५७६) । ३ कदर्थन, पीड़न ; ४ प्रहार ; (ओघ १६३) । ५ निन्दा, गर्हण ; (ओघ ७६) । ६ त्रि. जिसकी कदर्थना की जाय वह ; (ओघ २३७) ।
चमढणा स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (बृह १) ।
चमढिअ वि [**दे**] मर्दित, विनाशित ; (वव २) ।
चमर पुं [**चमर**] पशु-विशेष, जिसके बालों का चामर बनता है; "वराहरुरुचमरसेविए रण्णे" (पउम ६४, १०५ ; पराह १, १) । २ पुं. पाँचवें जिनदेव का प्रथम शिष्य; (सम १५२) । ३ दक्षिण दिशा के असुरकुमारों का इन्द्र ; (ठा २, ३) । °**चंच** पुं [°**चञ्च**] चमरेन्द्र का आवास-पर्वत ; (भग १३, ६)। °**चंचा** स्त्री [°**चञ्चा**] चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-पुरी विशेष ; (णाया २) । °**पुर** न [°**पुर**] विद्याधरों का नगर-विशेष ; (इक) ।
चमर पुंन [**चामर**] चँवर, चामर, बाल-व्यजन ; (हे १, ६७) । °**धारी**, °**हारी** स्त्री [°**धारिणी**] चामर बीजने वाली स्त्री ; (सुपा ३३६ ; सुर १०, १५७) ।
चमरी स्त्री [**चमरी**] चमर-पशु की मादा ; (से ७, ४८ ; स ४४१ ; औप ; महा) ।
चमस पुंन [**चमस**] चमचा, कलछी, दर्वी ; (औप) ।
चमुक्कार पुं [**चमत्कार**] १ आश्चर्य, विस्मय ; " पेच्छागयसुरकिन्नरचित्तचमुक्कारकारयं " (सुर १३, ६७) । २ बिजली का प्रकाश ; " ताव य विज्जुचमक्कारणंतरं चंडचडडसंसद्दो " (सुर २, ११०) ।
चमू स्त्री [**चमू**] १ सेना, सैन्य, लश्कर ; (आवम) । २ सेना-विशेष, जिसमें ७२६ हाथी, ७२६ रथ, २१८७

घोड़े और ३६४५ पैदल हो ऐसा लश्कर; (पउम ५६, ६)। **चम्म** न [**चर्मन्**] छाल, त्वक्, चाम, खाल ; (हे १, ३२ ; स्वप्न ७० ; प्रासू १७१)। °**किड** वि [°**किट**] चमड़े से सीआ हुआ ; (भग १३, ६)। °**कोस**, °**कोसय** पुं [°**कोश**, °**क**] १ चमड़े का बना हुआ थैला; २ एक तरह का चमड़े का जूता ; (ओघ ७२८ ; आचा २, ३, ३ ; वव ८)। °**कोसिया** स्त्री [°**कोशिका**] चमड़े की बनी हुई थैली ; (सूअ २, २)। °**खंडिय** वि [°**खण्डिक**) १ चमड़े का परिधान वाला ; २ सब उपकरण चमड़े का ही रखने वाला ; (णाया १, १५)। °**ग** वि [°**क**] चमड़े का बना हुआ, चर्ममय ; (सूअ २, २)। °**पक्खि** पुं [°**पक्षिन्**] चमड़े की पाँख वाला पत्ती ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] चमड़े का पट्टा, वध्रं ; (विपा १, ६)। °**पाय** न [°**पात्र**] चमड़े का पात्र ; (आचा २,६, १)। °**यर** पुं [°**कर**] मोची, चमार ; (स २८६ ; दे २, ३७)। °**रयण** न [°**रत्न**] चक्रवर्ती का रत्न-विशेष, जिससे सुवह में बोये हुए शालि वगैरः उसी दिन पक कर खाने योग्य हो जाते हैं ; (पव २१२)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] वृत्त-विशेष ; (भग ८, ३)।

चम्मट्ठि स्त्री [**चर्मयष्टि**] चर्म-मय यष्टि, चर्म-दण्ड ; (कप्पू)।

चम्मट्ठिअ अक [**चर्मयष्टीय्**] चर्म-यष्टि की तरह आचरण करना। वकृ—**चम्मट्ठिअंत** ; (कप्पू)।

चम्मट्ठिल पुं [**चर्मास्थिल**] पत्ति-विशेष; (पगह १, १)।

चम्मार पुं [**चर्मकार**] चमार, मोची ; (विसे २६८८)।

चम्मारय पुं [**चर्मकारक**] ऊपर देखो ; (प्राप)।

चम्मिय वि [**चर्मित**] चर्म से बँधा हुआ, चर्म-वेष्टित ; (औप)।

चम्मेट्ठ पुं [**चर्मेष्ट**] प्रहरण-विशेष, चमड़े से वेष्टित पाषाण वाला आयुध ; (पगह १, १)।

चय सक [**त्यज्**] छोड़ना, त्याग करना। चयइ ; (पाअ; हे ४, ८६)। कर्म—चइज्जइ; (उव)। वकृ—**चयंत**; (सुपा ३८८)। संकृ—**चइअ, चइउं, चिच्चा, चइऊण, चइत्ता, चइत्ताणं, चइत्तु** ; (कुमा ; उत्त १८ ; महा ; उवा ; उत्त १)। कृ—**चइयव्व**; (सुपा ११६ ; ४०५ ; ५२१)।

चय सक [**शक्**] सकना, समर्थ होना। चयइ ; (हे ४, ८६)। वकृ—**चयंत**; (सूअ १, ३, ३ ; से ६, ५०)।

चय अक [**च्यु**] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। चयइ; (भवि)। चयंति ; (भग)। वकृ—**चयमाण** ; (कप्प)।

चय पुं [**चय**] १ शरीर, देह ; (विपा १, १ ; उवा)। २ समूह, राशि, ढग ; (विसे २२१६ ; सुपा ५७१; कुमा)। ३ इकट्ठा होना ; (अणु)। ४ वृद्धि ; (आचा)।

चय पुं [**च्यव**] च्यव, जन्मान्तर-गमन ; (ठा ८; कप्प)।

चयण न [**चयन**] १ इकट्ठा करना ; (पव २)। २ ग्रहण, उपादान ; (ठा २, ४)।

चयण न [**त्यजन**] त्याग, परित्याग ; (सट्ठि ३६)।

चयण न [**च्यवन**] १ मरण, जन्मान्तर-गमन ; (ठा १—पत्र १६)। २ पतन, गिर जाना। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ पतन-प्रकार, चारित्र वगैरः से गिरने का प्रकार ; २ शिथिल साधुओं का विहार; (गच्छ १; पंचभा)।

चर सक [**चर्**] १ गमन करना, चलना, जाना। २ भक्षण करना। ३ सेवना। ४ जानना। चरइ ; (उव ; महा)। भूका—चरिंसु ; (गउड)। भवि—चरिस्सं ; (पि १७३)। वकृ—**चरंत, चरमाण**; (उत्त २ ; भग ; विपा१, १)। संकृ—**चरिअ, चरिऊण**; (नाट—मृच्छ १०; आवम)। हेकृ—**चरिउं,चारए**; (ओघ ६५; कस)। कृ—**चरियव्व**; (भग ६, ३३)। प्रयो, कृ—**चारियव्व** ; (गगण १७—पत्र ४६७)।

चर पुं [**चर**] १ गमन, गति ; २ वर्तन ; (दंस ; आवम)। ३ दूत, जासूस ; (पाअ; भवि)।

°**चर** वि [°**चर**] चलने वाला ; (आचा)।

चरंती स्त्री [**चरन्ती**] जिस दिशा में भगवान् जिनदेव वगैरः ज्ञानी पुरुष विचरते हों वह ; (वव १)।

चरग पुं [**चरक**] १ देखो **चर**=चर। २ संन्यासिओं का झुंड विशेष, यूथबंध घूमने वाले त्रिदण्डिओं की एक जाति ; (भग ; गच्छ २)। ३ भिक्षुकों की एक जाति ; (पगगा २०)। ४ दंश-मशकादि जन्तु ; (राज)।

चरचरा स्त्री [**चरचरा**] 'चर चर' आवाज; (स २५७)।

चरड पुं [**चरट**] लुटेरे की एक जाति ; (धम्म १२ टी ; सुपा २३२ ; ३३३)।

चरण न [**चरण**] १ संयम, चारित्र, व्रत, नियम ; (ठा ३, १ ; ओघ २ ; विसे १)। २ चरना, पशुओं का तृणादि-

भक्षण; (सुर २, ३)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा; (पिंग)। ४ गमन, विहार; (णंदि ; सुअ १, १०, २)। ५ सेवन, आदर; (जीव ३)। ६ पाद, पाँव; (३,७)। °**करण** न [°**करण**] संयम का मूल और उत्तर गुण; सुअ१,१ सम्म १६४)। °**करणाणुओग** पुं [°**करणानुयोग**] संयम के मूल और उत्तर गुणों की व्याख्या; (निचू १५)। °**कुसील** पुं [°**कुशील**] चारित्र को मलिन करने वाला साधु, शिथिलाचारी साधु; (पव २)। °**णय** [°**न** क्रिया को मुख्य मानने वाला मत; (आचा)। °**मोह** पुंन [°**मोह**] चारित्र का आवारक कर्म-विशेष; (कम्म १)।

चरम वि [**चरम**] १ अन्तिम, अन्त का, पर्यन्तवर्ती; (ठा २, ४ ; भग ८,३ ; कम्म ३, १७ ; ४, १६ ; १७)। २ अनन्तर भव में मुक्ति पाने वाला; ३ जिसका विद्यमान भव अन्तिम हो वह; (ठा २, २)। °**काल** पुं [°**काल**] मरण-समय; (पंचव ४)। °**जलहि** पुं [°**जलधि**] अन्तिम समुद्र, स्वयंभूरमण समुद्र; (लहुअ २)।

चरमंत पुं [**चरमान्त**] सब से अन्तिम, सब से प्रान्त-वर्ती; (सम ६६)।

चरय देखो **चरग**; (औप ; णाया १, १५)।

चरिगा देखो **चरिया**=चरिका; (राज)।

चरित्त न [**चरित्र**] १ चरित, आचरण; २ व्यवहार; (भवि ; प्रासू ४०)। ३ स्वभाव, प्रकृति; (कुमा)।

चरित्त न [**चारित्र**] संयम, विरति, व्रत, नियम; (ठा २, ४ ; ४,४ ; भग)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] संयमानुष्ठान का प्रतिपादक ग्रन्थ; (पंचभा)। °**मोह** पुंन [°**मोह**] कर्म-विशेष, संयम का आवारक कर्म; (भग)। °**मोहणिज्ज** न [°**मोहनीय**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (ठा २, ४)। °**ाचरित्त** न [°**ाचारित्र**] आंशिक संयम, श्रावक-धर्म; (पडि ; भग ८,२)। °**ायार** पुं [°**ाचार**] संयम का अनुष्ठान; (पडि)। °**ारिय** पुं [°**ार्य**] चारित्र से आर्य, विशुद्ध चारित्र वाला, साधु, मुनि; (पराण १)।

चरित्ति पुंस्त्री [**चारित्रिन्**] संयम वाला, साधु, मुनि; (उप ६६६ ; पंचव १)।

चरिम देखो **चरम**; (सुर १,१०; औप ; भग ; ठा २, ४)।

चरिय पुं [**चरक**] चर-पुरुष, जासूस, दूत; (सुपा ५२८)।

चरिय न [**चरित**] १ चेष्टित, आचरण; (औप ; प्रासू ८६)। २ जीवनी, जीवन-चरित; (सुपा २)। ३ चरित्र-ग्रन्थ; (सुपा ६५८)। ४ सेवित, आश्रित; (पराह १,३)।

चरिया स्त्री [**चरिका**] १ परिव्राजिका, संन्यासिनी; (ओघ ५६८)। २ किला और नगर के बीच का मार्ग; (सम १३७ ; पराण १,१)।

चरिया स्त्री [**चर्या**] १ आचरण, अनुष्ठान; "दुक्करचरिया मुणिवराणं" (पउम १४, १५२)। २ गमन, गति, विहार; (सुअ १, १, ४)।

चरु पुं [**चरु**] स्थाली-विशेष, पात्र-विशेष; (औप; भवि)।

चरुगिणय देखो **चारुइणय**; (इक)।

चरुल्लेव न [**दे**] नाम, आख्या; (दे ३, ६)।

चल सक [**चल्**] १ चलना, गमन करना। २ अक. काँपना, हिलना। चलइ; (महा ; गउड)। वकृ—**चलंत, चलमाण**; (गा ३५६ ; सुर ३,४० ; भग)। हेकृ—**चलिउं**; (गा ४८४)। प्रयो, संकृ—**चलइत्ता**; (दस ५, १)।

चल वि [**चल**] १ चंचल, अस्थिर; (स ४२० ; वज्जा ६६)। २ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३६)।

चलचल वि [**चलचल**] १ चंचल, अस्थिर; "चलचलयकोडिमोडणकराइं नयणाइं तरुणीणं" (वज्जा ६०)। २ पुं. घी में तलाती चीज का पहला तीन घान; (निचू ४)।

चलण पुं [**चरण**] पाँव, पैर, पाद; (औप ; से ६,१३)। °**मालिया** स्त्री [°**मालिका**] पैर का आभूषण-विशेष; (पराह २, ५ ; औप)। °**वंदण** न [°**वन्दन**] पैर पर सिर झुका कर प्रणाम, प्रणाम-विशेष; (पउम ८, २०६)।

चलण न [**चलन**] चलना, गति, चाल; (से ६, १३)।

चलणा स्त्री [**चलना**] १ चलन, गति; २ कम्प, हिलन; (भग १६, ६)।

चलणाउह पुं [**चरणायुध**] कुक्कुट, मुर्गा; (दे ३, ७)।

चलणाओह पुं [**दे. चरणायुध**] ऊपर देखो; (षड्)।

चलणिया स्त्री [**चलनिका**] नीचे देखो; (ओघ ६७६)।

चलणी स्त्री [**चलनी**] १ साध्वीओं का एक उपकरण; (ओघ ३१५ भा)। २ पैर तक का कीच; (जीव ३; भग ७, ६)।

चलवलण न [**दे**] चटपटाई, चंचलता; (पउम १०२,६)।

चलाचल वि [**चलाचल**] चंचल, अस्थिर; (पउम ११२,६)।

चलिंदिय वि [**चलेन्द्रिय**] इन्द्रिय-निग्रह करने में असमर्थ, जिसकी इन्द्रियाँ काबू में न हों वह; (आचा २, ५, १)।

चलिअ न [**चलित**] १ विकलता, अस्थैर्य, चंचलता; (पाअ)। २ चला हुआ, कम्पित; (आवम)। ३ प्रवृत्त; (पाअ ; औप)। ४ विनष्ट; (धम्म २)।

चलिर वि [**चलितृ**] चलने वाला, अस्थिर, चपल, चंचल ; "चलिरभमराली" (उप ६८६; सुपा ७६ ; २५७ ; स ४१)।
चल्ल देखो **चल**=चल्। चल्लइ ; (हे ४, २३१ ; षड्)।
चल्लणग न [**दे**] जघनांशुक, कटी-वस्त्र ; (षड्)।
चल्लि स्त्री [**दे**] नाचते समय की एक प्रकार की गति ; (कप्पू)।
चल्लिअ देखो **चलिअ** ; (सुर २, ६१ ; उप पृ ५०)।
चव सक [**कथय्**] कहना, बोलना। चवइ ; (हे ४,२)। कर्म—चविज्जइ ; (कुमा)। वकृ—**चवंत** ; (भवि)।
चव अक [**च्यु**] मरना, जन्मान्तर में जाना। चवइ ; (हे ४, २३३)। संकृ—**चविऊण** ; (प्राकृ)। कृ—**चवियव्व** ; (ठा ३, ३)।
चव पुं [**च्यव**] मरण, मौत ; "मन्नंता अपुणच्चवं ; (उत्त ३, १४)।
चवचव पुं [**चवचव**] 'चव-चव' आवाज, ध्वनि-विशेष ; (ओघ २८६ भा)।
चवण न [**च्यवन**] १ मरण, जन्मान्तर-प्राप्ति ; (सुर २, १३६; ७, ८; दं ४)। २ पतन, गिर जाना; (बृह १)।
चवल वि [**चपल**] १ चंचल, अस्थिर ; (सुर १२, १३८; प्रासू १०३)। २ आकुल, व्याकुल ; (औप)। ३ पुं. रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३६)।
चवल पुं [**दे**] चावल, तण्डुल ; (श्रा १८)।
चवला स्त्री [**चपला**] विद्युत्, बिजली ; (जीव ३)।
चविअ वि [**च्युत**] मृत, जन्मान्तर-प्राप्त ; (कुमा २,२६)।
चविअ वि [**कथित**] उक्त, कहा हुआ ; (भवि)।
चविआ स्त्री [**चविका**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १७—पत्र ५३१)।
चविडा, **चविला**, **चवेला** स्त्री [**चपेटा**] तमाचा, थप्पड़ ; (हे १, १४६ ; कुमा)।
चवेडी स्त्री [**दे**] १ शिलष्ट कर-संपुट ; २ संपुट, समुद्ग, डिब्बा ; (दे ३, ३)।
चवेण न [**दे**] वचनीय, लोकापवाद ; (दे ३, ३)।
चवेला देखो **चवेडा** ; (प्राकृ)।
चव्वक्किअ वि [**दे**] धवलित, चूने से पोता हुआ ; "चव्वक्किया य चुन्नेण नासिया" (सुपा ४५५)।
चव्वाइ देखो **चव्वागि** ; (राज)।
चव्वाक, **चव्वाग** पुं [**चार्वाक**] नास्तिक, बृहस्पति का शिष्य, लोकायतिक ; (प्रबो ७८ ; राज)।
चव्वागि वि [**चार्वाकिन्**] १ चबाने वाला ; २ दुर्व्यवहारी ; (वव ३)।
चव्विय वि [**चर्वित**] चबाया हुआ ; (सुर १३, १२३)।
चस सक [**चष्**] चखना, आस्वाद लेना। वकृ—**चसंद** (शौ) ; (रंभा)। हेकृ—**चसिदुं** (शौ) ; (रंभा)।
चसग, **चसय** पुं [**चषक**] १ दारू पीने का प्याला ; (जं ५ ; पाअ)। २ पान-पात्र, प्याला ; (सुर २, ११ ; पउम ११३, १०)। ३ पक्षि-विशेष ; (दे ६, १४५)।
चहुंतिया स्त्री [**दे**] चुटकी, चुटकीभर ; "जोगचुण्णचहुंतियामेत्तपक्खेवेण" (काल)।
चहुट्ट वि [**दे**] १ निमग्न, लीन; (दे ३, २ ; वज्जा ३८)। "मण-भमरो पुण तीए मुहारविंदे च्चिय चहुट्टो" (उप ७२८ टी)।
चहोड पुं [**दे**] एक मनुष्य-जाति ; (भवि)।
चाइ वि [**त्यागिन्**] १ त्याग करने वाला, छोड़ने वाला ; २ दानी, दान देने वाला, उदार ; (सुर १, २१७ ; ४, ११८)। ३ निःसंग, निरीह, संयमी ; (आचा)।
चाइय वि [**शकित**] जो समर्थ हुआ हो ; (पउम ७, १२१ ; सूअ १, १४)। "सव्वोवाएहिं जया घेत्तूण न चाइया सुरिंदेणं। ताहे ते नेरइया" (पउम ११८, २४)।
चाउंड पुं [**चामुण्ड**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लङ्का-पति ; (पउम ५, २६३)।
चाउक्काल न [**चतुष्काल**] चार वख्त, चार समय ; (विसे २५७६)।
चाउक्कोण वि [**चतुष्कोण**] चार कोना वाला, चतुरस्र; (जीव ३)।
चाउग्घंट, **चाउघंट** वि [**चतुर्घण्ट**] चार घंटा वाला, चार घण्टाओं से युक्त; (णाया १, १; भग ६, ३३; निर १)।
चाउज्जाम न [**चातुर्याम**] चार महाव्रत, साधु-धर्म, अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अ-परिग्रह ये चार साधु-व्रत ; (णाया १, ७ ; ठा ४, १)।
चाउज्जाय न [**चातुर्जात**] दालचीनी, तमालपत्र, इलाची और नागकेसर ; (उप पृ १०६ ; महा)।
चाउत्थिय पुं [**चातुर्थिक**] रोग-विशेष, चौथे चौथे दिन पर होने वाला ज्वर, चौथिया बुखार ; (जीव ३)।

चाउद्दसिया स्त्री [**चतुर्दशिका**] तिथि-विशेष, चतुर्दशी, चौदस ; "होणपुरणचाउद्दसिया" (उवा)।

चाउद्दसी स्त्री [**चतुर्दशी**] ऊपर देखो ; (भग ; जो ३)।

चाउद्दह (अप) त्रि. ब. [**चतुर्दशन्**] चौदह, १४; (पिंग)।

चाउद्दिसिं देखो **चउ द्दिसिं**; (महा ; सुपा ३६५)।

चाउमास } पुंन [**चातुर्मास**] १ चौमासा, जैसे आषाढ़
चाउम्मास } से लेकर कार्तिक तक के चार महीने ; (उप पृ ३६०; पंचा १७)। २ आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी ; "पक्खिए चाउमासे" (लहुअ १६)।

चाउम्मासिअ वि [**चातुर्मासिक**] १ चार मास संबन्धी, जैसे आषाढ़ से लेकर कार्तिक तक के चार महीने से संबंध रखने वाला ; (णाया १, ५ ; सुर १४, २२८)। २ न. आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि, पर्व-विशेष ; (श्रा ४७ ; अजि ३८)।

चाउम्मासी स्त्री [**चतुर्मासी**] चार मास, चौमासा, आषाढ़ से कार्तिक, कार्तिक से फाल्गुन और फाल्गुन से आषाढ़ तक के चार महीने ; (पउम ११८, ५८)।

चाउम्मासी स्त्री [**चातुर्मासी**] देखो **चाउम्मासिअ** ; (धर्म २ ; आव)।

चाउरंग देखो **चउरंग** ; (पउम २, ७५)।

चाउरंगि देखो **चउरंगि** ; (भग ; णाया १, १—पत्र ३२)।

चाउरंगिज्ज वि [**चतुरङ्गीय**] १ चार अंगो से संबन्ध रखने वाला ; २ न. उतराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन ; (उत्त ४)।

चाउरंत देखो **चउरंत**; (सम १ ; ठा ३, १; हे १, ४४)।

चाउरंत पुं [**चातुरन्त**] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् ; (पगह १, ४)। २ न. लग्न-मगडप, चौरी ; (स ७८)।

चाउरक्क वि [**चातुरक्य**] चार वार परिणत। °**गोखीर** न [°**गोक्षीर**] चार वार परिणत किया हुआ गो-दुग्ध, जैसे कतिपय गौओं का दूध दूसरी गौओं को पिलाया जाय, फिर उनका अन्य गौओं को, इस तरह चार वार परिणत किया हुआ गो-दुग्ध ; (जीव ३)

चाउल पुं [**दे**] चावल, तगडुल; (दे ३, ८; आचा २, १, ३ ; ६ ; ८ ; उप पृ २३१ ; ओघ ३४४ ; सुपा ६३६ ; रयण ६० ; कप्प)।

चाउल्लग न [**दे**] पुरुष का पुतला---,कृत्रिम पुरुष; (निचू १)।

चाउवन्न } वि [**चातुर्वर्ण**] १ चार वर्ण वाला, चार
चाउव्वण्ण } प्रकार वाला; २ पुं. साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय ; (ठा ५, २—पत्र ३२१); " चाउव्वगणस्स समणसंघस्स " (पउम २०, १२०)। ३ न. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार मनुष्य-जाति ; (भग १५)।

चाउव्वेज्ज न[**चातुर्वैद्य**] १ चार प्रकार की विद्या—न्याय, व्याकरण, साहित्य और धर्म-शास्त्र। २ पुं. चौबे, ब्राह्मणों की एक अल्ल; " पउरचाउव्वेज्जलोएण " (महा)।

चाएंत देखो **चाय**=चय।

चाँउंडा स्त्री [**चामुण्डा**] स्वनाम-ख्यात देवी ; (हे १, १७४)। °**काउअ** पुं [°**कामुक**] महादेव, शिव ; (कुमा)।

चाग देखो **चाय**=त्याग; (पंचव १)।

चागि देखो **चाइ** ; (उप पृ १०५)।

चाड वि [**दे**] मायावी, कपटी ; (दे ३, ८)।

चाडु पुंन [**चाटु**] १ प्रिय वाक्य ; २ खुशामद ; (हे १, ६७ ; प्राप्र)। °**यार** वि [°**कार**] खुशामदी ; (पगह १, २)।

चाडुअ न [**चाटुक**] ऊपर देखो ; (कुमा)।

चाणक्क पुं [**चाणक्य**] १ राजा चन्द्रगुप्त का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री ; (मुद्रा १४४)। २ एक मनुष्य-जाति; (भवि)।

चाणक्की स्त्री [**चाणक्यी**] लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी)।

चाणिक्क देखो **चाणक्क** ; (आक)।

चाणूर पुं [**चाणूर**] मल्ल-विशेष, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ; (पगह १, ४ ; पिंग)।

चामर पुंन [**चामर**] चँवर, बाल-व्यजन; (हे १, ६७)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**गाहि** वि [°**ग्राहिन्**] चामर वीजने वाला नौकर। स्त्री—°**णी** ; (भवि)। °**छायण** न [°**च्छायन**] स्वाति नक्षत्र का गोत्र; (इक)। °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] चामर-युक्त पताका ; (औप)। °**धार** वि [°**धार**] चामर बीजने वाला; (पउम ८०, ३८)।

चामरा स्त्री. ऊपर देखो; (औप; वसु ; भग ६, ३३)।

चामीअर न [**चामीकर**] सुवर्ण, सोना ; (पात्र ; सुपा ७७ ; णाया १, ४)।

चामुंडा देखो **चाँउंडा** ; (विसे ; पि)।

चाय देखो **चय**=शक्। वकृ—**चायंत, चाएंत**; सूत्र १, ३, १ ; वव ३)।

चाय देखो **चाव** ; (सुपा ५३० ; से १४, १५ ; पिंग)।

चाय पुं [**त्याग**] १ छोड़ना, परित्याग ; (प्रासू ८; पंचव १)। २ दान ; (सुर १, ६५)।

चायग, **चायव** पुं [**चातक**] पक्षि-विशेष, चातक-पक्षी; (सण ; पात्र ; दे ६, ६०)।

चार पुं [**चार**] १ गति, गमन ; "पायचारेण" (महा ; उप पृ १२३ ; रयण १५)। २ भ्रमण, परिभ्रमण ; (स १६)। ३ चर-पुरुष, जासूस ; (विपा १, ३ ; महा ; भवि)। ४ कारागार, कैदखाना ; (भवि)। ५ संचार, संचरण ; (औप)। ६ अनुष्ठान, आचरण ; (आचानि ४५ ; महा)। ७ ज्योतिष-क्षेत्र, आकाश; (ठा २, २)।

चार पुं [**दे**] १ वृक्ष-विशेष, पियाल वृक्ष, चिरोंजी का पेड़ ; (दे ३, २१ ; अणु ; पराण १६)। २ बन्धन-स्थान ; (दे ३, २१)। ३ इच्छा, अभिलाष ; (दे ३, २१; भवि ; सुपा ५११)। ४ न. फल-विशेष, मेवा विशेष ; (पराण १६)। °**क्कय** पुं [°**क्रय**] बेचने वाले की इच्छानुसार दाम देकर खरीदना ; (सुपा ५११)।

चारए देखो **चर**=चर्।

चारग दे [**चारक**] देखो **चार** ; (औप ; णाया १, १ ; पण्ह १, ३ ; उप ३५७ टी)। °**पाल** पुं [°**पाल**] जेलखाना का अध्यक्ष ; (विपा १, ६—पत्र ६५)। °**पालग** पुं [°**पालक**] कैदखाना का अध्यक्ष; जेलर ; (उप पृ ३३७)। °**भंड** न [°**भाण्ड**] कैदी को शिक्षा करने का उपकरण ; (विपा १, ६)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] कैदखाना का अध्यक्ष, जेलर ; (उप पृ ३३७)।

चारण पुं [**दे**] ग्रन्थि-च्छेदक, पाकेटमार, चोर-विशेष ; (दे ३, ६)।

चारण पुं [**चारण**] १ आकाश में गमन करने की शक्ति रखने वाले जैन मुनिओं की एक जाति ; (औप ; सुर ३, १५ ; अजि १६)। २ मनुष्य-जाति-विशेष, स्तुति करने वाली जाति, भाट ; (उप ७६८ टी ; प्रामा)। ३ एक जैन मुनि-गण ; (ठा ६)।

चारणिआ स्त्री [**चारणिका**] गणित-विशेष; (ओघ २१ टी)।

चारभड पुं [**चारभट**] शूर पुरुष, लड़वैया, सैनिक; (पण्ह १, २ ; १, ३ ; बृह १)।

चारय देखो **चारग** ; (सुपा २०७ ; स १५)।

चारवाय पुं [**दे**] ग्रीष्म ऋतु का पवन ; (दे ३, ६)।

चारहड देखो **चारभड** ; (धम्म १२ टी ; भवि)।

चारहडी स्त्री [**चारभटी**] शौर्यवृत्ति, सैनिक-वृत्ति ; (सुपा ४४१ ; ४४२ ; हे ४, ३६६)।

चारागार न [**चारागार**] कैदखाना, जेलखाना ; (सुर १६, १७)।

चारि स्त्री [**चारि**] चारा, पशुओं के खाने की चीज, घास आदि ; (ओघ २३८)।

चारि वि [**चारिन्**] १ प्रवृत्ति करने वाला ; (विसे २४३ टी ; उव ; आचा)। २ चलने वाला, गमन-शील ; (औप ; कप्पू)।

चारिअ वि [**चारित**] १ जिसको खिलाया गया हो वह ; (से २, २७)। २ विज्ञापित, जताया हुआ ; (पराण १७ —पत्र ४६७)।

चारिअ पुं [**चारिक**] १ चर पुरुष, जासूस ; (पण्ह १, २ ; पउम २६, ६५)। "चोरुत्ति चारिउत्ति य होइ जम्रो परदारगामित्ति" (विसे २३७३)। २ पंचायत का मुखिया पुरुष, समुदाय का अगुआ ; (स ४०६)।

चारित्त देखो **चरित्त**=चारित्र ; (ओघ ६ भा ; उप ६७७ टी)।

चारित्ति देखो **चरित्ति** ; (पुप्फ १५४)।

चारियव्व देखो **चर**=चर्।

चारी स्त्री [**चारी**] देखो **चारि**=चारि; (स ४८७; ओघ २३८ टी)।

चारु वि [**चारु**] १ सुन्दर, शोभन, प्रवर ; (उवा ; औप)। २ पुं. तीसरे जिनदेव का प्रथम शिष्य; (सम १५२)। ३ न. प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष ; (जीव १ ; राय)।

चारुइणय पुं [**चारुकिनक**] १ देश-विशेष; २ वि. उस देश का निवासी; (औप; अंत)। स्त्री—°**णिया** ; (औप)।

चारुणय पुं [**चारुनक**] ऊपर देखो ; (औप)। स्त्री—°**णिया** ; (औप ; णाया १, १)।

चारुवच्छि पुं. ब. [**चारुवत्सि**] देश-विशेष ; (पउम ६८, ६४)।

चारुसेणी स्त्री [**चारुसेनी**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

चाल सक [**चालय्**] १ चलाना, हिलाना, कँपाना। २ विनाश करना। चालेइ ; (उव; स ४७४; महा)। कर्म—चालिज्जइ ; (उव)। वकृ—**चालंत, चालेमाण** ; (सुपा २२४ ; जीव ३)। कवकृ—**चालिज्जमाण** ; (णाया १, १)। हेकृ—**चालित्तए** ; (उवा)।

चालण न [**चालन**] १ चलाना, हिलाना ; (रंभा)। २ विचार ; (विसे १००७)।

चालणा स्त्री [**चालना**] शङ्का, पूर्वपक्ष, आक्षेप ; (अणु ; बृह १)।

चालणिया स्त्री [**चालनिका**] नीचे देखो; (उप १३४ टी)।

चालणी स्त्री [**चालनी**] आखा, छानने का पात्र ; (आवम)।

चालवास पुं [**दे**] सिर का भूषण-विशेष ; (दे ३, ८)।

चालिय वि [**चालित**] चलाया हुआ, हिलाया हुआ ; "पुप्फवईए चालियाए सियसंकेयपडागाए" (महा)।

चालिर वि [**चालयितृ**] १ चलाने वाला। २ चलने वाला ; "खरपवणचाडुचालिरदवग्गिसरिसेण पेम्मेण" (वज्जा ७०)।

चाली स्त्री [**चत्वारिंशत्**] चालीस, ४० ; (उवा)।

चालीस स्त्रीन [**चत्वारिंशत्**] चालीस, ४० ; (महा ; पिंग)। स्त्री—°**सा** ; (ति ५)।

चालुक्क पुंस्त्री [**चौलुक्य**] १ चालुक्य वंश में उत्पन्न; २ पुं. गुजरात का प्रसिद्ध राजा कुमारपाल ; (कुमा)।

चाव सक [**चर्व्**] चबाना। कृ—**चावेयव्व** ; (उत्त १६, ३८)।

चाव पुं [**चाप**] धनुष, कार्मुक ; (स्वप्न ५५)।

चावल न [**चापल**] चपलता, चंचलता; (अभि २४१)।

चावल्ल न [**चापल्य**] ऊपर देखो ; (स ५२६)।

चावाली स्त्री [**चावाली**] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक गाँव ; (आवम)।

चाविय वि [**च्यावित**] मरवाया हुआ ; (पण्ह २, १)।

चावेडी स्त्री [**चापेटी**] विद्या-विशेष, जिससे दूसरे को तमाचा मारने पर बिमार आदमी का रोग चला जाता है; (वव ५)।

चावेयव्व देखो **चाव**=चर्व्।

चावोण्णय न [**चापोन्नत**] विमान-विशेष, एक देव-विमान ; (सम ३६)।

चास पुं [**चाष**] पक्षि-विशेष, स्वर्ण-चातक, लहटोरवा ; (पण्ह १, १ ; पण्ण १७ ; णाया १, १; ओघ ८४ भा; उर १, १४)।

चास पुं [**दे**] चास, हल-विदारित भूमि-रेखा, खेती ; (दे ३, १)।

चाह सक [**वाञ्छ्**] १ चाहना, वाँछना। २ अपेक्षा करना। ३ याचना। चाहइ, चाहसि ; (भवि ; पिंग)।

चाहिय वि [**वाञ्छित**] १ वाञ्छित, अभिलषित ; २ अपेक्षित ; ३ याचित ; (भवि)।

चाहुआण पुं [**चाहुयान**] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश ; चौहान वंश; २ पुंस्त्री चौहान वंश में उत्पन्न; (सुपा ५५६)।

चि देखो **चिण**। कर्म—चिव्वइ, चिम्मइ, चिज्जंति ; (हे ४, २४३ ; भग)।

चिअ अ [**एव**] निश्चय को बतलाने वाला अव्यय ; "अणुबद्धं तं चिअ कामिणीणं" (हे २, १८४ ; कुमा ; गा १६, ४६ ; दं १)।

चिअ अ [**इव**] १—२ उपमा और उत्प्रेक्षा का सूचक अव्यय ; (प्राप)।

चिअ वि [**चित**] १ इकट्ठा किया हुआ ; (भग)। २ व्याप्त ; (सुपा २४१)। ३ पुष्ट, मांसल ; (उप ८७५ टी)।

चिआ स्त्री [**त्विष्**] कान्ति, तेज, प्रभा ; (षड्)।

चिआ देखो **चियगा** ; (सुपा २४१ ; महा)।

चिइ स्त्री [**चिति**] १ उपचय, पुष्टि, वृद्धि ; (पव २)। २ इकट्ठा करना ; (उत ६)। ३ बुद्धि, मेधा ; (पाअ)। ४ भींत वगैरः बनाना ; ५ चिता; (पण्ह १, १—पत्र ८)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] वन्दन, प्रणाम-विशेष ; (आव ३)।

चिइ देखो **चेइअ** ; (उप ५६७ ; चैत्य १२ ; पंचा १)।

चिइगा देखो **चियगा** ; (जं १)।

चिइच्छ सक [**चिकित्स्**] १ दवा करना, इलाज करना। २ शङ्का करना, संशय करना। चिइच्छइ ; (हे २, २१; ४, २४०)।

चिइच्छअ वि [**चिकित्सक**] १ दवा करने वाला, इलाज करने वाला ; २ पुं. वैद्य ; (मा ३३)।

चिइय देखो **चिंतिय** ; "जेण एस सुचरियतवोवि सुचिइयजिणिंदवयणोवि" (महा)।

चिउर पुं [**चिकुर**] १ केश, बाल ; (गा १८८)। २ पीत रङ्ग का गन्ध-द्रव्य-विशेष ; (पण्ण १७—पत्र ५२८ ; राय)।

चिंच } सक [**मण्डय्**] विभूषित करना, अलंकृत करना।
चिंचअ } चिंचइ, चिंचअइ; (हे ४, ११५ : षड्)।

चिंचइअ वि [**मण्डित**] शोभित, विभूषित, अलंकृत; (पउम १५, १३; सुपा ८८; महा; पाअ; प्राप; कुमा)।

चिंचइअ वि [**दे**] चलित, चला हुआ; (दे ३, १३)।

चिंचणिआ } स्त्री [दे] देखो **चिंचिणो**; (कुमा; सुपा १२; ५८३)।
चिंचणिगा }
चिंचणी }

चिंचणी स्त्री [**दे**] घरट्टिका, अन्न पीसने की चक्की; (दे ३, १०)।

चिंचा स्त्री [**चञ्चा**] १ तृण की बनाई हुई चटाई वगैरः। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] तृण का मनुष्य, जो पशु, पक्षी आदि को डराने के लिए खेतों में गाड़ा जाता है; (सुपा १२४)।

चिंचा स्त्री [**दे. चिञ्चा**] इमली का पेड़; (दे ३, १०; पाअ; विपा १, ६; सुपा १२४; ५८२; ५८३)।

चिंचिअ वि [**मण्डित**] भूषित, अलंकृत; (कुमा)।

चिंचिणिआ } स्त्री [**दे**] इमली का पेड़; (ओघ २६; दे ३, १०; सुपा ५८४; पाअ)।
चिंचिणिचिंचा }
चिंचिणी }

चिंचिल्ल सक [**मण्डय्**] विभूषित करना, अलंकृत करना। चिंचिल्लइ; (हे ४, ११५; षड्)।

चिंचिल्लिअ वि [**मण्डित**] विभूषित, अलंकृत; (पाअ; कुमा)।

चिंत सक [**चिन्तय्**] १ चिन्ता करना, विचार करना। २ याद करना। ३ ध्यान करना। ४ फीकिर करना, अफसोस करना। चिंतेइ, चिंतेमि; (उव; कुमा)। वकृ—**चिंतंत, चिंतेंत, चिंतिंत, चिंतयंत, चिंतयमाण, चिंतेमाण**; (कुमा; उव; पउम १०, ४; अभि ५७; हे ४, ३२२; ३१०; सुर ४, २३)। कवकृ—**चिंतिज्जंत**; (गा ६५१)। संकृ—**चिंतिउं, चिंतिऊण**; (महा; गा ३५८)। कृ—**चिंतणीय, चिंतियव्व, चिंतेयव्व**; (उप ७३२; पंचा २; पउम ३१, ७७; सुपा ४४५)।

चिंत वि [**चिन्त्य**] चिन्तनीय, विचारणीय, विचार-योग्य; (उप ६८५)।

चिंतग वि [**चिन्तक**] चिन्ता करने वाला, विचारक; (उप पृ ३३३; ३३६ टी)।

चिंतण न [**चिन्तन**] १ विचार, पर्यालोचन; (महा)। २ स्मरण, स्मृति; (उत्त ३२; महा)।

चिंतणा स्त्री [**चिन्तना**] ऊपर देखो; (उप ६८६ टी)।

चिंतणिया स्त्री [**चिन्तनिका**] याद करना, चिन्तन करना; (ठा ५, ३)।

चिंतय वि [**चिन्तक**] चिन्ता करने वाला; (स ५६५; निर १, १)।

चिंतव देखो **चिंत**=चिंतय्। चिंतवइ; (कुमा; भवि)।

चिंतविय वि [**चिन्तित**] जिसकी चिंता की गई हो वह; (भवि)।

चिंता स्त्री [**चिन्ता**] १ विचार, पर्यालोचन; (पाअ; कुमा)। २ अफसोस, शोक, दिलगीरी; (सुर २, १६१; सूअ १, १; प्रासू ६१)। ३ ध्यान; (आव ४)। ४ स्मृति, स्मरण; (णंदि)। ५ इष्ट-प्राप्ति का संदेह; (कुमा)। °**उर** वि [°**तुर**] शोक से व्याकुल; (सुर ६, ११६)। °**दिट्ठ** वि [°**दृष्ट**] विचार-पूर्वक देखा हुआ; (पाअ)। °**मइअ** वि [°**मय**] चिन्ता-युक्त; "सअणे चिंतामइअं काऊण पिअं" (गा१३३)। °**मणि** पुं [°**मणि**] १ मनोवाञ्छित अर्थ को देनेवाला रत्न-विशेष, दिव्य मणि; (महा)। २ वीतशोक नगरी का एक राजा; (पउम २०, १४२)। °**वर** वि [°**पर**] चिन्ता-मग्न; (पउम १०, १३)।

चिंतायग } वि [**चिन्तक**] चिन्ता करने वाला; (आवम)।
चिंतावग } स्त्री—°**गा**; (सुपा २१)।

चिंतिय वि [**चिन्तित**] १ विचारित, पर्यालोचित; (महा)। २ याद किया हुआ, स्मृत; (णाया १, १; षड्)। ३ जिसको चिन्ता उत्पन्न हुई हो वह; (जीव ३; औप)। ४ न. स्मरण, स्मृति; (भग ६, ३३; औप)।

चिंतिर वि [**चिन्तयितृ**] चिन्ता-शील, चिन्ता करने वाला; (श्रा २७; सण)।

चिंध न [**चिह्न**] १ चिन्ह, लाञ्छन, निशानी; (हे २,५०; प्राप्र; णाया १, १६)। २ ध्वजा, पताका; (पाअ)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] निशानी रूप वस्त्र-खण्ड; (णाया १, १)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] १ दाढ़ी-मूँछ वगैरः पुरुष की निशानी वाला नपुंसक; २ पुरुष का वेष धारण करने वाली स्त्री वगैरः; (ठा ३, १)।

चिंधाल वि [**चिह्नवत्**) चिह्न-युक्त, निशानी वाला; (पउम १०६, ७)।

चिंधाल वि [**दे**] १ रम्य, सुन्दर, मनोहर; २ मुख्य, प्रधान, प्रवर ; (दे ३, २२)।

चिंधिय वि [**चिह्नित**] चिह्न-युक्त ; (पि २६७)।

चिंफुल्लणी स्त्री [**दे**] स्त्री का पहनने का वस्त्र-विशेष, लहँगा; (दे ३, १३)।

चिकिच्छ देखो **चिइच्छ**। चिकिच्छामि ; (स ४८५)। कृ—**चिकिच्छिअव्व** ; (अभि १६७)।

चिकुर देखो **चिउर** ; (पि ५०६)।

चिक्क वि [**दे**] १ स्तोक, थोड़ा, अल्प; २ न. क्षुत्, छींक ; (षड्)।

चिक्कण वि [**चिक्कण**] चिकना, स्निग्ध ; (पण्ह १, १; सुपा ११)। २ निबिड, घना; "जं पावं चिक्कणं तए बद्धं" (सुर १४, २०६)। ३ दुर्भेद्य, दुःख से छूटने योग्य ; (पण्ह १,१)।

चिक्का स्त्री [**दे**] १ थोड़ी चीज; २ हलकी मेघ-वृष्टि, सूक्ष्म छींटा ; (दे ३, २१)।

चिक्कार पुं [**चीत्कार**] चिल्ला, हटचिंघाड़ ; (सण)।

चिक्किण देखो **चिक्कण** ; (कुमा)।

चिक्खअण वि [**दे**] सहिष्णु, सहन करने वाला ; (षड्)।

चिक्खल्ल पुं [**दे**] कर्दम, पंक, कीच; (दे ३, ११; हे ३, १४२ ; पण्ह १, १)।

चिक्खल्लय न [**चिक्खल्लक**] काठियावाड़ का एक नगर; (ती २)।

चिक्खिल्ल, **चखल्ल**, **चिखिल्ल** [**दे**] देखो **चिक्खल्ल**; (गा ६७; ३२४ ; ४४५ ; ६८४ ; औप)।

चिगिचिगाय अक [**चिकचिकाय्**] चकचकाट करना, चमकना। वकृ—**चिगिचिगायंत** ; (सुर २, ८६)।

चिगिच्छग देखो **चिइच्छअ** ; (विवे ३०)।

चिगिच्छण न [**चिकित्सन**] चिकित्सा, इलाज ; (उप १३५ टी)।

चिगिच्छय देखो **चिइच्छअ** ; (स २७८; णाया १, ५—पत्र १११)।

चिगिच्छा स्त्री [**चिकित्सा**] दवा, प्रतीकार, इलाज ; (स १७)। °**संहिया** स्त्री (°**संहिता**) चिकित्सा-शास्त्र, वैद्यक-शास्त्र ; (स १७)।

चिच्च वि [**दे**] १ चिपिट नासिका वाला, बैठी हुई नाक वाला; (दे ३, ६)। २ न. रमण, संभोग, रति; (दे ३, १०)।

चिच्च वि [**त्याज्य**] छोड़ने योग्य, परिहरणीय ; "खर-कम्माइं पि चिच्चाइं" (सुपा ४६८)।

चिच्चर वि [**दे**] चिपिट नासिका वाला ; (दे ३, ६)।

चिच्चा देखो **चय** = त्यज्।

चिच्चि पुं [**चिच्चि**] चीत्कार, चिल्लाहट, भयंकर आवाज; "चिच्चीसर—" (विपा १, २—पत्र २६)।

चिच्चि पुं [**दे**] हुताशन, अग्नि ; (दे ३, १०)।

चिट्ठ अक [**स्था**] बैठना, स्थिति करना। चिट्ठइ ; (हे १, १६)। भूका—चिट्ठिंसु ; (आचा)। वकृ—**चिट्ठंत, चिट्ठेमाण** ; (कुमा ; भग)। संकृ—**चिट्ठिउं, चिट्ठिऊण, चिट्ठिण, चिट्ठित्ता, चिट्ठित्ताण** ; (कप्प ; हे ४, १६ ; राज ; पि)। हेकृ—**चिट्ठित्तए** ; (कप्प)। कृ—**चिट्ठणिज्ज, चिट्ठिअव्व** ; (उप २६४ टी ; भग)।

चिट्ठ देखो **चेट्ठ**। वकृ—**चिट्ठमाण** ; (पंचा २)।

चिट्ठइत्तु वि [**स्थातृ**] बैठने वाला ; (भग ११, ११ ; दसा ३)।

चिट्ठणा स्त्री [**स्थान**] स्थिति, बैठना, अवस्थान ; (बृह ६)।

चिट्ठा देखो **चेट्ठा** ; (सुर ४, २४५ ; प्रासू १२५)।

चिट्ठिय वि [**चेष्टित**] १ जिसने चेष्टा की हो वह ; (पण्ह १, ३ ; णाया १, १)। २ न. चेष्टा, प्रयत्न ; (पण्ह २, ४)।

चिट्ठिय वि [**स्थित**] १ अवस्थित, रहा हुआ। २ न. अवस्थान, स्थिति ; (चंद २०)।

चिडिग पुं [**चिटिक**] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १)।

चिण सक [**चि**] १ इकट्ठा करना। २ फूल वगैरः तोड़ कर इकट्ठा करना। चिणइ ; (हे ४, २३८)। भूका—चिणिंसु ; (भग)। भवि—चिणिहिइ ; (हे ४, २४३)। कर्म—चिणिज्जइ ; (हे ४, २४२)। संकृ—**चिणिऊण, चिणेऊण** ; (षड्)।

चिण देखो **चण** ; (श्रा १८)।

चिणिअ वि [**चित**] इकट्ठा किया हुआ ; (सुपा ३२३ ; कुमा)।

चिणोट्ठी स्त्री [**दे**] गुंजा, घुंगची, लाल रत्ती, गुजराती में 'चणोठी' ; (दे ३, १२)।

चिण्ण वि [**चीर्ण**] १ आचरित, अनुष्ठित ; (उत्त १३)। २ अंगीकृत, आदृत ; (उत्त ३१)। ३ विहित, कृत ; (उत्त १३)।

चिण्ह न [**चिह्न**] निशानी, लांछन ; (हे २, ५० ; गउड) ।

चित्त सक [**चित्रय्**] चित्र बनाना, तसवीर खींचना । चित्तेइ; (महा) । कवकृ— **चित्तिज्जंत** ; (उप पृ ३४१) ।

चित्त न [**चित्त**] १ मन, अन्तःकरण, हृदय ; (ठा ४, १ ; प्रासू ६१ ; १५५) । २ ज्ञान, चेतना ; (आचा) । ३ बुद्धि, मति; (आव ४) । ४ अभिप्राय, आशय ; (आचा)। ५ उपयोग, ख्याल ; (अणु) । °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] दिल का जानकार; (उप पृ १७६) । °**निवाइ** वि [°**निपातिन्**] अभिप्राय के अनुसार बरतने वाला ; (आचा) । °**मंत** वि [°**वत्**] सजीव वस्तु ; (सम ३६ ; आचा) ।

चित्त देखो **चइत्त**=चैत्र ; (रंभा ; जं २ ; कप्प) ।

चित्त न [**चित्र**] १ छवि, आलेख्य, तसवीर ; (सुर १, ८६ ; स्वप्न १३१) । २ आश्चर्य, विस्मय ; (उत्त १३) । ३ काष्ठ-विशेष ; (अनु ५) । ४ वि. विलक्षण, विचित्र ; (गा ६१२ ; प्रासू ४२) । ५ अनेक प्रकार का, विविध, नानाविध ; (ठा १०) । ६ अद्भुत, आश्चर्य-जनक ; (विपा १, ६ ; कप्प) । ७ कबरा, चितकबरा ; (णाया १, ८) । ८ पुं. एक लोकपाल ; (ठा ४, १—पत्र १६७) । ९ पर्वत-विशेष ; (पण्ह १, ५—पत्र ६४)। १० चित्रक, चित्ता, श्वापद-विशेष ; (णाया १, १—पत्र ६५) । ११ नक्षत्र-विशेष, चित्रा नक्षत्र, "हत्थो चित्तो य तहा, दस बुद्धिकराइं नाणस्स" (सम १७) । °**उत्त** पुं [°**गुप्त**] भरतक्षेत्र के एक भावी जिन-देव ; (सम १५४) । °**कणगा** स्त्री [°**कनका**] देवी-विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी ; (ठा ४, १) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] आलेख्य, छवि, तसवीर ; (गा ६१२) । °**कर** देखो °**गर** ; (अणु) । °**कह** वि [°**कथ**] नाना प्रकार की कथाएं कहने वाला ; (उत्त ३) । °**कूड** पुं [°**कूट**] १ सीतानदी के उत्तर किनारे पर स्थित एक वक्षस्कार-पर्वत ; (जं ४) । २ पर्वत-विशेष ; (पउम ३३, ६) । ३ न. नगर-विशेष, जो आजकल मेवाड़ में "चितौड़" नाम से प्रसिद्ध है ; (रयण ६४) । ४ शिखर-विशेष ; (ठा २, ३) । °**क्खरा** स्त्री [°**क्षरा**] छन्द-विशेष ; (अजि २७) । °**गर** पुं [°**कर**] चित्रकार, चितेरा ; (सुर १, १०४; णया १, ८) । °**गुत्ता** स्त्री [°**गुप्ता**] १ देवी-विशेष, सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १)। २ दक्षिण रुचक पर्वत पर वसने वाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष ; (ठा ८) । °**पक्ख** पुं [°**पक्ष**] १ वेणु-देव-नामक इन्द्र का एक लोकपाल, देव-विशेष ; (ठा ४, १)। २ क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष ; (जीव १) । °**फल**, °**फलग**, °**फलय** न [°**फलक**] तसवीर वाला तख्ता ; (महा ; भग १५ ; पि ५१६) । °**भित्ति** स्त्री [°**भित्ति**] १ चित्र वाली भींत; २ स्त्री की तसवीर ; (दस ८) । °**यर** देखो °**गर**; (णाया १, ८) । °**रस** पुं [°**रस**] भोजन देने वाले कल्पवृक्षों की एक जाति ; (सम १७ ; पउम १०२, १२२) । °**लेहा** स्त्री [°**लेखा**] छन्द-विशेष ; (अजि १३) । °**संभूइय** न [°**संभूतीय**] चित्र और संभूत नामक चाण्डाल-विशेष के वृत्तान्त वाला उत्तराध्ययनसूत्र का एक अध्ययन ; (उत्त १३) । °**सभा** स्त्री [°**सभा**] तसवीर वाला गृह ; (णाया १, ८) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] चित्र-गृह ; (हेका ३३२) ।

चित्तंग पुं [**चित्राङ्ग**] पुष्प देने वाले कल्प-वृक्षों की एक जाति ; (सम १७) ।

चित्तग देखो **चित्त**=चित्र ; (उप पृ ३०) ।

चित्तट्ठिअ वि [**दे**] परितोषित, खुश किया हुआ ; (दे ३, १२) ।

चित्तदाउ पुं [**दे**] मधु-पटल, मधपुड़ा ; (दे ३, १२) ।

चित्तपरिच्छेय वि [**दे**] लघु, छोटा ; (भग ७, ६) ।

चित्तय देखो **चित्त**=चित्र ; (पाअ) ।

चित्तल वि [**दे**] १ मण्डित, विभूषित ; २ रमणीय, सुन्दर ; (दे ३, ४) ।

चित्तल वि [**चित्रल**] १ चितला, कबरा, चितकबरा ; (पाअ) । २ जंगली पशु-विशेष, हरिण के आकार वाला द्विखुरा पशु-विशेष ; (जीव १ ; पण्ह १, १) ।

चित्तलि पुंस्त्री [**चित्रलिन्**] साँप की एक जाति; (पण्ण १)।

चित्तलिअ वि [**चित्रलित, चित्रित**] चित्र-युक्त किया हुआ; "पढम व्विअ दिअहद्धे कुड्डो रेहाहिं चित्तलिओ" (गा २०८)।

चित्तविअअ वि [**दे**] परितोषित ; (षड्) ।

चित्ता स्त्री [**चित्रा**] १ नक्षत्र-विशेष; (सम २)। २ देवी-विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी; (ठा ४, १) । ३ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की स्त्री, देवी-विशेष ; (ठा ४, १—पत्र २०४) । ४ ओषधि-विशेष ; (सुर १०, २२३ ; पण्ण १७) ।

चित्ति पुं [**चित्रिन्**] चित्रकार, चितेरा; (कम्म १, २३)।
चित्तिअ वि [**चित्रित**] चित्र-युक्त किया हुआ ; (औप ; कप्प; उप ३६१ टी ; दे १, ७५)।
चित्तिया स्त्री [**चित्रिका**] स्त्री-चित्ता, श्वापद-विशेष की मादा; (पगण ११)।
चित्ती स्त्री [**चैत्री**] चैत्र मास की पूर्णिमा; (इक)।
चिद्दविअ } वि [**दे**] निर्णाशित, विनाशित (दे ३,
चिद्दाविअ } १३ ; पाअ ; भवि)।
चिन्न देखो **चिण्ण** ; (सुपा ४; सण ; भवि)।
चिप्पिडय पुं [**दे**] अन्न विशेष ; (दसा ६)।
चिप्पिण पुं [**दे**] १ केदार, क्यारी ; २ क्यारी वाला प्रदेश ; ३ किनारे का प्रदेश, तट-प्रदेश ; (भग ५, ७)।
चिबुअ न [**चिबुक**] होठ के नीचे का अवयव, (कुमा)।
चिब्भड न [**चिर्भिट**] खीरा, ककड़ी फल विशेष; गुजराती में " चीभडुं "; (दे ६, १४८)।
चिब्भडिया स्त्री [**चिर्भिटिका**] १ वल्ली-विशेष, ककड़ी का गाछ। २ मत्स्य की एक जाति ; (जीव १)।
चिब्भिड देखो **चिब्भड** ; (सुपा ६३० ; पाअ)।
चिमिट्ठ } वि [**चिपिट**] चपटा, बैठा हुआ (नाक) ;
चिमिढ } (गाया १, ८; पि २०७; २४८)।
चिमिण वि [**दे**] रोमश, रोमाञ्चित, पुलकित; (दे ३, ११; षड्)।
चियका } स्त्री [**चिता**] मुर्दे को फूंकने के लिए चुनी हुई
चियगा } लकड़ियों का ढ़ेर; (पगह १,३—पत्र ४५ ; सुपा ६५७ ; स ४१६)।
चियत्त देखो **चत्त** ; (भग २, ५ ; १०, २ ; कप्प ; निचू १)।
चियत्त वि [**दे**] १ अभिमत, सम्मत ; (ठा ३, ३)। २ प्रीतिकर, राग-जनक ; (औप)। ३ न. प्रीति, रुचि; ४ अप्रीति का अभाव ; (ठा ३, ३—पत्र १४७)।
चियया देखो **चियगा** ; (पउम ६२, २३)।
चियाग } देखो **चाय**=त्याग ; (ठा ५, १; सम १६)।
चियाय }
चिर न [**चिर**] १ दीर्घ काल, बहुत काल ; (स्वप्न ८३ ; गा १४७)। २ विलम्ब, देरी ; (गा ३४)। ३ वि. दीर्घ काल तक रहने वाला ; " हियइच्छियपियलंभा चिरा सया कस्स जायंति " (वज्जा ५२)। °**आरअ** वि [°**कारक**] विलम्ब करने वाला; (गा ३४)। °**जीवि** वि [°**जीविन्**] दीर्घ काल तक जीने वाला; (पि ५६७)। °**जीविअ** वि [°**जीवित**] दीर्घ काल तक जीया हुआ, वृद्ध; (वाअ २, ३४)। °**ट्ठिइ**, °**ट्ठिइय**, °**ट्ठिईय** वि [°**स्थितिक**] लम्बा आयुष्य वाला, दीर्घ काल तक रहने वाला ; (भग ; सूअ १, ५, १)। " एयाइँ फासाइँ फुसंति बालं, निरंतरं तत्थ चिरट्ठिईयं " (सूअ १, ५, २)। °**राअ** पुं [°**रात्र**] बहु काल, दीर्घ काल ; (आचा)।
चिर अक [**चिरय्**] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। चिरअदि (शौ); (पि ४६०)।
चिरं अ [**चिरम्**] दीर्घ काल तक, अनेक समय तक ; (स्वप्न २६ ; जी ४६)। °**तण** वि [°**तन**] पुराना, बहुत काल का ; (महा)।
चिरडी स्त्री [**दे**] वर्ण-माला, अक्षरावली ; " चिरडिंपि अयाणंता लोआ लोएहिं गोरवब्भहिआ " (दे १, ६१)।
चिरड्डिहिल्ल [**दे**] देखो **चिरिड्डिहिल्ल** ; (पाअ)।
चिरया स्त्री [**दे**] कुटी, झोपड़ी ; (दे ३, ११)।
चिरस्स अ [**चिरस्य**] बहुत काल तक ; (उत्तर १७६ ; कुमा)।
चिराअ देखो **चिर**=चिरय्। चिरायइ ; (स १२६)। चिराअसि ; (मै ६२)। भवि—चिराइस्सं; (गा २०)। वकृ—**चिराअमाण** ; (नाट—मालती २७)।
चिराइय वि [**चिरादिक**] पुराना, प्राचीन ; (गाया १, १ ; औप)।
चिराईय वि [**चिरातीत**] पुराना, प्राचीन; (विपा १,१)।
चिराणय (अप) वि [**चिरन्तन**] पुरातन, प्राचीन; (भवि)।
चिराण वि [**चिरन्तन**] ऊपर देखो; (बृह ३)।
चिराव अक [**चिरय्**] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। ३ सक. विलम्ब कराना, रोक रखना चिरावइ; (भवि)। चिरावेह; (काल)। " मा णे चिरावेहि" (पउम ३, १२६)।
चिराविय वि [**चिरायित**] १ जिसने विलम्ब किया हो वह; २ विलम्बित, रोका गया। ३ न. विलम्ब, देरी ; "भणिओ चँदाभाए किं अज्ज चिरावियं सामि ! " (पउम १०५, १०१)।
चिरिंचिरा स्त्री [**दे**] जलधारा, वृष्टि ; (दे ३, १३)।
चिरिक्का स्त्री [**दे**] १ पानी भरने का चर्म-भाजन, मशक; २ अल्प वृष्टि ; ३ प्रातः-काल, सुबह ; (दे ३, २१)।
चिरिचिरा [**दे**] देखो **चिरिंचिरा** ; (दे ३, १३)।

चिरिडी देखो **चिरडी** ; (गा १६१ अ)।

चिरिड्डिहिल्ल न [**दे**] दधि, दही ; (दे ३, १४)।

चिरिहिट्टी स्त्री [**दे**] गुञ्जा; घुंगची, लाल रत्ती ; (दे ३, १२)।

चिलाअ पुं [**किरात**] १ अनार्य देश-विशेष; २ किरात देश में रहने वाली म्लेच्छ-जाति, भिल्ल, पुलिंद; (हे १, १८३ ; २५४ ; पराह १, १ ; औप ; कुमा)। ३ धन सार्थवाह का एक दास—नौकर; (गाया १, १८)।

चिलाइया स्त्री [**किरातिका**] किरात देश की रहने वाली स्त्री ; (गाया १, १)।

चिलाई स्त्री [**किराती**] ऊपर देखो ; (इक)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] एक दासी-पुत्र और जैन-महर्षि ; (पडि ; गाया १, १८)।

चिलिचिलिआ स्त्री [**दे**] धारा, वृष्टि; (षड्)।

चिलिचिल्ल, **चिलिच्चिल**, **चिलिच्चील** वि [**दे**] आर्द्र, गिला; (पराह १, ३—पत्र ४५ ; दे ३, १२)।

चिलिण [**दे**] देखो **चिलीण** ; " छक्कायसंजमम्मि अ चिलिणे सेहन्नहाभावो " (ओघ १६५)।

चिलिमिणी, **चिलिमिलिगा**, **चिलिमिलिया**, **चिलिमिली** स्त्री [**दे**] यवनिका, परदा, आच्छादन-पट; (ओघ ६४ भा ; सुअ २, २, ४८; कस ; ओघ ७८ ; ८०)।

चिलीण न [**दे**] अशुचि, मैला, मल-मूत्र ; " सज्जंति चिलीणे मच्छियाओ घणचंदणं मोत्तुं " (उप १०३१ टी)।

चिल्ल पुं [**दे**] १ बाल, बच्चा, लड़का ; (दे ३, १०)। २ चेला, शिष्य ; (आवम)।

चिल्ल पुं [**चिल्ल**] १ वृक्ष-विशेष ; (राज)। २ न. पुष्प-विशेष ;

" पूयं कुणंति देवा, कंचणकुसुमेसु जिणवरिंदाणं।
इह पुण चिल्लदलेसुं, नरेण पूया विरइयव्वा "
(पउम ६६, १६)।

चिल्लअ न [**दे**] देदीप्यमान, चमकता ; " मंडणोडुण-प्पगारएहिं केहिं केहिंवि अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं " (अजि २८ ; औप)।

चिल्लग [**दे**] देखो **चिल्लिय** ; (पराह १, ४—पत्र ७१ टी)।

चिल्लड [**दे**] देखो **चिल्लल** (दे); (आचा २, ३, ३)।

चिल्लणा स्त्री [**चिल्लणा**] एक सती स्त्री, राजा श्रेणिक की पत्नी ; (पडि)।

चिल्लल पुं [**चिल्वल**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ उस देश का निवासी ; (इक)।

चिल्लल पुंस्त्री [**दे**] १ श्वापद पशु-विशेष, चित्ता ; (पराह १, १—पत्र ७ ; गाया १, १—पत्र ६५)। स्त्री—°**लिया**; (पराण ११)। २ न. कादा वाला जलाशय, छोटा तलाव आदि; (गाया १, १—पत्र ६३)। ३ देदीप्यमान, चमकता ; (गाया १, १६—पत्र २११)।

चिल्ला स्त्री [**दे**] चील, पक्षि-विशेष, शकुनिका ; (दे ३, ६ ; ८, ८ ; पाअ)।

चिल्लिय वि [**दे**] १ लीन, आसक्त; (गाया १, १)। २ देदीप्यमान ; (गाया १, १ ; औप ; कप्प)।

चिल्लिरि पुं [**दे**] मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (दे ३, ११)।

चिल्लूर न [**दे**] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते है ; (दे ३, ११)।

चिल्हय पुं [**दे**] चक्र-मार्ग, पहिये की लकीर, गुजराती में 'चीलो'; (सुपा २८०)।

चिविट्ठ, **चिविड** वि [**चिपिट**] चिपटा, बैठा या धँसा हुआ (नाक) ; " चिविडनासा " (पि २४८ ; पउम २७, ३२; गउड)।

चिविडा स्त्री [**चिपिटा**] गन्ध-द्रव्य-विशेष ; (दे ३, ७१)।

चिविढ देखो **चिविड** ; (सुर १३, १८१)।

चिहुर पुं [**चिकुर**] केश, बाल ; (पाअ ; सुपा २८१)।

ची, **चीअ** देखो **चेइअ** ; (हे १, १५१ ; सार्ध ५७ ; ६३)।

चीअ न [**चिता**] मुर्दे को फूँकने के लिए चुनी हुई लकड़ियों का ढेर ; " चीए बंधुस्स व अट्ठिआइं रुअई समुच्चिणइ" (गा १०४)।

चीइ देखो **चेइअ**; (सुर ३, ७५)।

चीण वि [**चीन**] १ छोटा, लघु; "चीणचिमिढवंकभग्गणासं" (गाया १, ८—पत्र १३३)। २ पुं. म्लेच्छ देश-विशेष, चीन देश ; (पराह १, १ ; स ४४३)। ३ चीन देश का निवासी, चीना ; (पराह १, १)। ४ धान्य-विशेष,

व्रीहि का एक भेद ; (सण)। "चीणाकूरं छलियातक्केण दिन्नं" (महा)। °पट्ट पुं [°पट्ट] चीन देश में होने वाला वस्त्र-विशेष ; (पण्ह १, ४)। °पिट्ठ न [°पिष्ट] सिन्दूर-विशेष ; (राय ; पण्ण १७)।

चीणंसु, चीणंसुय पुं [**चीनांशु °क**] १ कीट-विशेष, जिसके तन्तुओं से वस्त्र बनता है ; (बृह १)। २ चीन देश का वस्त्र-विशेष ; "चीणंसुसमूसियधयविराइयं" (सुपा ३४ ; अणु ; जं २)।

चीया स्त्री. देखो **चीअ** = चिता ; "चीयाए पक्खिविउं तत्तो उद्दीविओ जलणो" (सुर ६, ८८)।

चीर न [**चीर**] वस्त्र-खण्ड, कपड़े का टुकड़ा ; (ओघ ६३ भा ; श्रा १२ ; सुपा ३६१)। °**कंडूसगपट्ट** पुं [°**कण्डूसकपट्ट**] जैन साधुओं का एक उपकरण, रजोहरण का बन्धन-विशेष (निचू ५)।

चीरग पुं [**चीरक**] नीचे देखो ; (गच्छ २)।

चीरिय पुं [**चीरिक**] १ रास्ता में पड़े हुए चीथड़ों को पहनने वाला भिक्षुक; २ फटा-टूटा कपड़ा पहनने वाली एक साधु-जाति ; (णाया १, १५—पत्र १६३)।

चीरिया स्त्री [**चीरिका**] नीचे देखो ; (सुर ८, १८८)।

चीरी स्त्री [**चीरी**] १ वस्त्र-खण्ड, वस्त्र का टुकड़ा ; "तो तेण निययवत्थंचलाउ चीरीउ करेऊण" (सुपा ५८४)। २ क्षुद्र कीट-विशेष, झींगुर; (कुमा ; दे १, २६)।

चीवट्टी स्त्री [**दे**] भल्ली, भाला, शस्त्र-विशेष ; (दे ३, १४)।

चीवर न [**चीवर**] वस्त्र, कपडा ; (सुर ८, १८८ ; ठा ५, २)।

चीहाडी स्त्री [**दे**] चीत्कार, चिल्लाहट, पुकार, हाथी की गर्जना ; (सुर १०, १८२)।

चीही स्त्री [**दे**] मुस्ता का तृण-विशेष ; (दे ३, १४ ; ६१)।

चु अक [**च्यु**] १ मरना, जन्मान्तर में जाना। २ गिरना। भवि—चइस्सामि; (कप्प)। संकृ—**चइऊण, चइत्ता, चइअ** ; (उत्त ६; ठा ८ ; भग)। कृ—**चइयव्व** ; (ठा ३, ३)।

चुअ अक [**श्चुत्**] झरना, टपकना। चुअइ ; (हे २, ७७)।

चुअ वि [**च्युत**] १ च्युत, मृत, एक जन्म से दूसरे जन्म में अवतीर्ण ; (भग ; महा ; ठा ३, १)। २ विनष्ट, "चुअकलिकलुसं" (अजि १८)। ३ भ्रष्ट, पतित ; (णाया १, ३)।

चुइ स्त्री [**च्युति**] च्यवन, मरण ; (राज)।

चुंचुअ पुं [**दे**] शेखर, अवतंस, मस्तक का भूषण ; (दे ३, १६)।

चुंचुअ पुं [**चुञ्चुक**] १ म्लेच्छ देश विशेष ; २ उस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति ; (इक)।

चुंचुण पुं [**चुञ्चुन**] इभ्य जाति-विशेष, एक वैश्य-जाति ; (ठा ६—पत्र ३५८)।

चुंचुणिअ वि [**दे**] १ चलित, गत ; २ च्युत, नष्ट ; (दे ३, २३)।

चुंचुणिआ स्त्री [**दे**] १ गोष्ठी का प्रतिध्वनि ; २ रमण, रति, संभोग ; ३ इम्ली का पेड़ ; ४ द्यूत विशेष, मुष्टि-द्यूत; ५ यूका, क्षुद्र कीट-विशेष ; (दे ३, २३)।

चुंचुमालि वि [**दे**] १ अलस, आलसी, दीर्घसूत्री ; (दे ३, १८)।

चुंचुलि पुं [**दे**] १ चञ्चु, चोंच ; २ चुलुक, पसर, एक हाथ का संपुटाकार ; (दे ३, २३)।

चुंचुलिअ वि [**दे**] १ अवधारित, निश्चित , २ न. तृष्णा, सस्पृहता; (दे ३, २३)।

चुंचुलिपूर पुं [**दे**] चुलुक, चुल्लू, पसर ; (दे ३, १८)।

चुंछ वि [**दे**] परिशोषित, सुखाया हुआ ; (दे ३, १५)।

चुंछिअ वि [**दे**] सूखा हुआ, परिशोषित ; "चुंछियगल्लं एयं, मा भत्तारं हला कुणसु" (सुपा ३४६)।

चुंट सक [**चि**] फूल वगैरः को तोड़ कर इकट्ठा करना। वकृ—**चुंटंत** ; (सुपा ३३२)।

चुंढी स्त्री [**दे**] थोड़ा पानी वाला अ-खात जलाशय ; (णाया १, १—पत्र ३३)।

चुंपालय [**दे**] देखो **चुप्पालय** ;

"ताव य सेज्जासु ठिओ, चंदगइखेयरो निसासमए।
चुंपालएण पेच्छइ, निवडंतं रयणपज्जलियं"
(पउम २६, ८०)।

चुंब सक [**चुम्ब्**] चुम्बन करना। चुंबइ ; (हे ४, २३६)। वकृ—**चुंबंत** ; (गा १७६ ; ५१६)। कवकृ—**चुंबिज्जंत** ; (से १, ३२)। संकृ—**चुंबिवि** (अप) ; (हे ४, ४३६)। कृ—**चुंबिअव्व** ; (गा ४६५)।

चुंबण न [**चुम्बन**] चुम्बन, चुम्बा, चूमा ; (गा २१३; कप्पू)।

चुंबिअ वि [**चुम्बित**] १ चुम्बा लिया हुआ, कृत-चुम्बन; २ न. चुम्बन, चुम्बा; (दे ६, ६८)।

चुंबिर वि [**चुम्बितृ**] चुम्बन करने वाला; (भवि)।

चुंभल पुं [**दे**] शेखर, अवतंस, शिरो-भूषण; (दे ३, १६)।

चुक्क अक [**भ्रंश्**] १ चूकना, भूल करना। २ भ्रष्ट होना, रहित होना, वञ्चित होना। ३ सक. नष्ट करना, खण्डन करना। चुक्कइ; (हे ४, १७७; षड्)। "सो सव्वविरइवाई, चुक्कइ देसं च सव्वं च" (विसे २६८४)।

चुक्क वि [**भ्रष्ट**] १ चूका हुआ, भूला हुआ, विस्मृत; "चुक्कसंकेआ", "चुक्कविणअम्मि" (गा ३१८; १६५)। २ भ्रष्ट, वञ्चित, रहित; "दंसणमेत्तपसण्णे चुक्का सि सुहाण वहुआणं" (गा ४६५; चउ ३६; सुपा ८७)। ३ अनवहित, बे-ख्याल; (से १, ६)।

चुक्क पुं [**दे**] मुष्टि, मुट्ठी; (दे ३, १४)।

चुक्कार पुं [**दे**] आवाज, शब्द; (से १३, २५)।

चुक्कुड पुं [**दे**] छाग, बकरा, अज; (दे ३, १६)।

चुक्ख [**दे**] देखो **चोक्ख**; (सुक्त ४६)।

चुचुय } न [**चुचुक**] स्तन का अग्र भाग, थन का वृन्त;
चुच्चुय } (पण्ह १, ४; राय)।

चुच्छ वि [**तुच्छ**] १ अल्प, थोड़ा, हलका; २ हीन, जघन्य, नगण्य; (हे १, २०४; षड्)।

चुज्ज न [**दे**] आश्चर्य; (दे ३, १४; सट्टि ८३)।

चुडण न [**दे**] जीर्णता, सड़ जाना; (ओघ ३४६)।

चुडलिअ न [**दे**] गुरु-वन्दन का एक दोष, रजोहरण को अलात की तरह खड़ा रख कर वन्दन करना; (गुभा २५)।

चुडली [**दे**] देखो **चुडुली**; (पव २)।

चुडुप्प न [**दे**] १ खाल उतारना; (दे ३, ३)। २ घाव, क्षत; (गउड)। ३ चमड़ी, त्वचा; (पाअ)।

चुडुप्पा स्त्री [**दे**] त्वचा, चमड़ी, खाल; (दे ३, ३)।

चुडुली स्त्री [**दे**] उल्का, अलात, उल्मुक; (दे ३, १५; पाअ; सुर १३, १५६; स २४२)।

चुण सक [**चि**] चुनना, पक्षीओं का खाना। चुणइ; (हे ४,२३८)। "काओ लिंबोहलिं चुणइ" (सुक्त ८६)।

चुणअ पुं [**दे**] १ चाण्डाल; २ बाल, बच्चा; ३ छन्द, इच्छा; ४ अरुचि, भोजन की अप्रीति; ५ व्यतिकर, सम्बन्ध; ६ वि. अल्प, थोड़ा; ७ मुक्त, त्यक्त; ८ आघ्रात, सूँघा हुआ; (दे ३, २२)।

चुणिअ वि [**दे**] विधारित, धारण किया हुआ; (दे ३,१५)।

चुण्ण सक [**चूर्णय्**] चूरना, टुकड़े टुकड़ा करना। संकृ—**चुण्णिय**; (राज)।

चुण्ण पुंन [**चूर्ण**] १ चूर्ण, चूर, बुकनी, बारीक खण्ड; (बृह १; हे १, ८४; आचा)। २ आटा, पिसान; (आचा २, २, १)। ३ धूली, रज, रेणु; (दे ३, १७)। ४ गन्ध-द्रव्य की रज, बुकनी; (भग ३, ७)। ५ चूना; (हे १, ८४; विपा १,२)। ६ वशीकरणादि के लिए किया जाता द्रव्य-मिलान; (णाया १, १४)। °**कोसय** न [°**कोशक**] भक्ष्य-विशेष; (पण्ह २, ५)।

चुण्ण न [**चौर्ण**] पद-विशेष, गंभोरार्थक पद, महार्थक शब्द; (दसनि २)।

चुण्णइअ वि [**दे**] चूर्णाहत, चूरन से आहत; जिस पर चूर्ण फेंका गया हो वह; (दे ३, १७; पाअ)।

चुण्णा स्त्री [**चूर्णा**] छन्द-विशेष, वृत्त-विशेष; (पिंग)।

चुण्णाआ स्त्री [**दे**] कला, विज्ञान; (दे ३, १६)।

चुण्णासी स्त्री [**दे**] दासी, नौकरानी; (दे ३, १६)।

चुण्णि स्त्री [**चूर्णि**] ग्रन्थ की टीका-विशेष; (निचू)।

चुण्णिअ वि [**चूर्णित**] १ चूर चूर किया हुआ; (पाअ)। २ धूली से व्याप्त; (दे ३, १७)।

चुण्णिआ स्त्री [**चूर्णिका**] भेद-विशेष, एक तरह का पृथग्भाव, जैसे पिसान का अवयव अलग २ होता है; (पण्ण ११)।

चुद्दस देखो **चउ-द्दस**; (सुर ८, ११८)।

चुन्न देखो **चुण्ण**; (कुमा; ठा ३, ४; प्रासू १८; भाव २; पभा ३१)।

चुन्निअ देखो **चुण्णिअ**; (पण्ह २, ४)।

चुन्निआ देखो **चुण्णिआ**; (भास ७)।

चुप्प वि [**दे**] स-स्नेह, स्निग्ध; (दे ३, १५)।

चुप्पल पुं [**दे**] शेखर, अवतंस; (दे ३, १६)।

चुप्पलिअ न [**दे**] नया रंगा हुआ कपड़ा; (दे ३, १७)।

चुप्पालय पुं [**दे**] गवाक्ष, वातायन; (दे ३, १७)।

चुरिम न [**दे**] खाद्य-विशेष; (पव ४)।

चुलचुल अक [**चुलचुलाय्**] उत्कण्ठित होना, उत्सुक होना। वकृ—**चुलचुलंत**; (गा ४८१)।

चुलणी स्त्री [**चुलनी**] १ द्रुपद राजा की स्त्री; (णाया १, १६; उप ६४८ टी)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की माता;

(महा)। °पिय पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक मुख्य उपासक ; (उवा)।

चुलसी स्त्री [चतुरशीति] चौरासी, अस्सी और चार, ८४ ; (महा ; जी ४७)। "चुलसीए नागकुमारावाससयसहस्सेसु" (भग)।

चुलसीइ देखो **चुलसी** ; (पउम २०, १०२ ; जं २)।

चुलिआला स्त्री [**चुलियाला**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

चुलुअ पुंन [**चुलुक**] चुल्लू, पसर, एक हाथ का संपुटाकार ; (दे ३, १८ ; सुपा २१६ ; प्रासू ५७)।

चुलुचुल अक [**स्पन्द्**] फरकना, थोड़ा हिलना। चुलुचुलइ ; (हे ४, १२७)।

चुलुचुलिअ वि [**स्पन्दित**] १ फरका हुआ, कुछ हिला हुआ ; २ न. स्फुरण, स्पन्दन ; (पाअ)।

चुलुप्प पुं [**दे**] छाग, अज, बकरा ; (दे ३, १६)।

चुल्ल पुं [**दे**] १ शिशु, बालक ; २ दास, नौकर ; (दे ३, २२)। ३ वि. छोटा लघु ; (ठा २, ३)। °**ताय** पुं [°**तात**] पिता का छोटा भाई, चाचा ; (पि ३२५)। °**पिउ** पुं [°**पितृ**] चाचा, पिता का छोटा भाई ; (विपा १, ३)। °**माउया** स्त्री [°**मातृ**] १ छोटी माँ, माता की छोटी सपत्नी, विमाता-विशेष ; (उप २६४ टी ; णाया १, १ ; विपा १, ३)। २ चाची, पिता के छोटे भाई की स्त्री ; (विपा १, ३ —पत्र ४०)। °**सयग**, °**सयय** पुं [°**शतक**] भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासकों में से एक ; (उवा)। °**हिमवंत** पुं [°**हिमवत्**] छोटा हिमवान् पर्वत, पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम १२ ; इक)। °**हिमवंतकूड** न [°**हिमवत्कूट**] १ क्षुद्र हिमवान् पर्वत का शिखर-विशेष; २ पुं. उसका अधिपति देव-विशेष; (जं४)। °**हिमवंतगिरिकुमार** पुं [°**हिमवद्गिरिकुमार**] देव-विशेष, जो क्षुद्र हिमवत्कूट का अधिष्ठायक है ; (जं ४)।

चुल्लग [**दे**] देखो **चोल्लक** ; (आक)।

चुल्लि, **चुल्ली** स्त्री [**चुल्लि**, °**ल्ली**] चूल्हा, जिसमें आग रख कर रसोई की जाती है वह; (दे १,८७; सुर २,१०३)।

चुल्ली स्त्री [**दे**] शिला, पाषाण-खण्ड ; (दे ३, १५)।

चुल्लोडय पुं [**दे**] बड़ा भाई; (दे ३, १७)।

चूअ पुं [**दे**] स्तन-शिखा, थन का अग्र भाग ; (दे३,१८)।

चूअ पुं [**चूत**] १ वृक्ष-विशेष, आम्र, आम का गाछ ; (गउड ; भग; सुर ३, ४८)। २ देव-विशेष ; (जीव ३)। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] विमान का अवतंस-विशेष ; (राय)। °**वडिंसा** स्त्री [°**ावतंसा**] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (इक ; जीव ३)।

चूआ स्त्री [**चूता**] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (इक ; ठा ४, २)।

चूड पुं [**दे**] चूड़ा, बाहु-भूषण, वलयावली ; (दे ३, १८ ; ७, ५२ ; ५६ ; पाअ)।

चूडा देखो **चूला**; (सुर २, २४२ ; गउड ; णाया १,१ ; सुपा १०४)।

चूडुल्लअ (अप) देखो **चूड** ; (हे ४, ३९५)।

चूर सक [**चूरय्**, **चूर्णय्**] खण्ड करना, तोड़ना, टुकड़ टुकड़ा करना। चूरेमि ; (धम्म ६ टी)। भवि—चूरइस्सं ; (पि ५२८)। वकृ—**चूरंत**; (सुपा २६१ ; ५६०)।

चूर (अप) पुंन [**चूर्ण**] चूर, भुरभुर ; "जिह गिरिसिंगहु पडिअ सिल, अन्नुवि चूरु करेइ" (हे ४, ३३७)।

चूरिअ वि [**चूर्ण**, **चूर्णित**] चूर चूर किया हुआ, टुकड़े टुकड़ा किया हुआ ; (भवि)।

चूल° देखो **चूला**। °**मणि** न [°**मणि**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)।

चूलअ [**दे**] देखो **चूड** ; (नाट)।

चूला स्त्री [**चूडा**] १ चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा ; (पाअ)। २ शिखर, टोंच; "अवि चलइ मेरुचूला" (उप ७२८ टी)। ३ मयूर-शिखा ; ४ कुक्कुट-शिखा ; ५ शेर की केसरा ; ६ कुंत वगैरः का अग्र भाग ; ७ विभूषण, अलंकार ;

> "तिविहा य दव्वचूला, सच्चित्ता मोसगा य अच्चित्ता।
> कुक्कुड सीह मोरसिहा, चूलामणि अग्गकुंतादी ॥
> चूला विभूसणंति य, सिहरंति य होंति एगट्ठा" (निचू१)।

८ अधिक मास ; ६ अधिक वर्ष ; १० ग्रन्थ का परिशिष्ट ; (दसचू १)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] संस्कार-विशेष, मुण्डन ; (आवम)। °**मणि** पुंस्त्री [°**मणि**] १ सिर का सर्वोत्तम आभूषण-विशेष, मुकुट-रत्न, शिरो-मणि ; (औप ; राय)। २ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ ; "तिलायचूलामणि नमो ते" (धण १)।

चूलिय पुं [**चूलिक**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ उस देश का निवासी ; (पण्ह १, १)। ३ स्त्रीन. संख्या विशेष, चूलिकांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २, ४) स्त्री—°**या** ; (राज)।

चूलियंग न [**चूलिकाङ्ग**] संख्या-विशेष, प्रयुत को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; जीव ३)।

चूलिया देखो **चूला** ; (सम ६६ ; सुर ३, १२ ; णंदि ; निचू १ ; ठा ४, ४)।

चूव (अप) देखो **चूअ** ; (भवि)।

चूह सक [**क्षिप्**] फेंकना, डालना, प्रेरना। चूहइ ; (षड्)।

चे अ [**चेत्**] यदि, जा ; (उत्त १६)। "एवं च कम्मो तित्थं, न चेदचेलोत्ति को गाहो ?" (विसे २५८६)।

चे देखो **चय**=त्यज्। चेइ ; (आचा)। संकृ—**चेच्चा** ; (कप्प ; औप)।

चे } देखो **चि**। चेइ, चेअइ, चेए, चेअए ; (षड्)।
चेअ }

चेअ अक [**चित्**] १ चेतना, सावधान होना, ख्याल रखना। २ सुध आना, स्मरण करना, याद आना। चेयइ ; (स ५३८)। ३ सक. जानना; ४ अनुभव करना। चेयए ; (आवम)।

चेअ सक [**चेतय्**] १ ऊपर देखो। २ देना, अर्पण करना, वितरण करना। ३ करना, बनाना। "जो अंतरायं चेएइ" (सम ५१)। चेएइ, चेएसि, चेएमि ; (आचा)। वकृ—**चेते[ए]माण** ; (ठा ५, २—पत्र ३१४ ; सम ३६)।

चेअ अ [**एव**] अवधारण-सूचक अव्यय, निश्चय बताने वाला अव्यय ; (हे २, १८४)।

चेअ न [**चेतस्**] १ चेत, चेतना, ज्ञान , चैतन्य ; (विसे १६६१ ; भग १६) । २ मन, चित्त, अन्तःकरण ; (दस ५, १ ; ठा ६, २)।

चेइ पुं [**चेदि**] देश-विशेष; (इक ; सत्त ६७ टी)। °**वइ** पुं [°**पति**] चेदि देश का राजा; (पिंग)।

चेइ° } पुंन [**चैत्य**] १ चिता पर बनाया हुआ स्मारक,
चेइअ } स्तूप, कबर वगैरः स्मृति-चिह्न ; " मडयदाहेसु वा मडयथूभियासु वा मडयचेइएसु वा " (आचा २, २, ३)। २ व्यन्तर का स्थान, व्यन्तरायतन ; (भग ; उवा ; राय ; निर १, १ ; विपा १, १; २)। ३ जिन-मन्दिर, जिन-गृह, अर्हन्मन्दिर ; (ठा ४, २—पत्र ४३० ; पंचभा ; पंचा १२ ; महा ; द्र ४; २७), " पडिमं कासी य चेइए रम्मे " (पव ७६)। ४ इष्ट देव की मूर्ति, अभीष्ट देवता की प्रतिमा ; " कल्लाणं मंगलं चेइयं पज्जुवासामो " (औप ; भग)। ५ अर्हत्प्रतिमा, जिन-देव की मूर्ति ; (ठा ३, १; उवा; पण्ह २, ३ ; आव २ ; पडि), " बिइएणं उप्पाएणं नंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ, तहिं चेइयाइं वंदइ" (भग २०, ६), "जिणबिंबे मंगल-चेइयंति समयन्नुणो बिंति " (पव ७६)। ६ उद्यान, बगीचा ; " मिहिलाए चेइए वच्छे सीअच्छाए मणोरमे " (उत्त ६, ६)। ७ सभा-वृक्ष, सभा-गृह के पास का वृक्ष; ८ चबूतरा वाला वृक्ष ; ६ देवों का चिह्न-भूत वृक्ष ; १० वह वृक्ष जहां जिनदेव को केवलज्ञान उत्पन्न होता है ; (ठा ८ ; सम १३; १५६)। ११ वृक्ष, पेड़ ; " वाएण हीरमाणम्मि चेइयम्मि मणोरमे " (उत्त ६, १०)। १२ यज्ञ स्थान ; १३ मनुष्यों का विश्राम स्थान ; (षड् ; हे २, १०७)। °**खंभ** पुं [°**स्तम्भ**] स्तूप, थुभ ; (सम ६३ ; राय ; सुज्ज १८)। °**घर** न [°**गृह**] जिन-मन्दिर, अर्हन्मन्दिर ; (पउम २, १२ ; ६४, २६)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] जिन-प्रतिमा-संबन्धी महोत्सव-विशेष; (धर्म ३)। °**थूभ** पुं [°**स्तूप**] जिन-मन्दिर के समीप का स्तूप ; (ठा ४, २; ज १)। °**दव्व** न [°**द्रव्य**] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-संबन्धी स्थावर या जंगम मिल्कत (वव ६ ; पंचभा ; उप ४०७ ; द्र ४)। °**परिवाडी** स्त्री [°**परिपाटी**] क्रम से जिन मन्दिरों की यात्रा ; (धर्म २)। °**मह** पुं [°**मह**] चैत्य-संबन्धी उत्सव; (आचा २, १, २)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] १ चबूतरा वाला वृक्ष, जिसके नीचे चौतरा बाँधा हो ऐसा वृक्ष ; २ जिन-देव को जिसके नीचे केवलज्ञान उत्पन्न होता है वह वृक्ष; ३ देवताओं का चिह्न भूत वृक्ष ; ४ देव-सभा के पास का वृक्ष ; (सम १३; १५६ ; ठा ८)। °**वंदण** न [°**वन्दन**] जिन-प्रतिमा की मन, वचन और काया से स्तुति; (पव १; संघ १; ३)। °**वंदणा** स्त्री [°**वन्दना**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (संघ १)। °**वास** पुं [°**वास**] जिन-मन्दिर में यतिओं का निवास ; (दंस)। °**हर** देखो °**घर**; (जीव १ ; पउम ६५ , ६२ ; सुपा १३ ; द्र ६५ ; उकर १६०)।

चेइअ वि [**चेतित**] कृत, विहित ; " तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं चेइआइं भवंति " (आचा २, १, २, २), "चेइअं कडमेगट्ठं" (बृह २; कस)।

चेंध देखो **चिंध** ; (प्राप्र)।

चेच्चा देखो **चे**=त्यज्।

चेट्ठ अक [**चेष्ट्**] प्रयत्न करना, आचरण करना। वकृ—**चेट्ठमाण**; (काल)।

चेट्ठ देखो **चिट्ठ**=स्था; (दे १, १७४)।

चेट्ठण न [**स्थान**] स्थिति, अवस्थान; (वव ४)।

चेट्ठा स्त्री [**चेष्टा**] प्रयत्न, आचरण; (ठा ३, १; सुर २, १०६)।

चेट्ठिय देखो **चिट्ठिय**=चेष्टित; (औप; महा)।

चेड पुं [**दे**] बाल, कुमार, शिशु; (दे ३, १०; णाया १, २; बृह १)।

चेड, **चेडग**, **चेडय** पुं [**चेट, °क**] १ दास, नौकर; (औप; कप्प)। २ नृप-विशेष, वैशालिका नगरी का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा; (आचू १; भग ७, ६; महा)। ३ मैला देवता, देव की एक जघन्य जाति; (सुपा २१७)।

चेडिआ स्त्री [**चेटिका**] दासी, नौकरानी; (भग ६, ३३; कप्पू)।

चेडी स्त्री [**चेटी**] ऊपर देखो; (आवम)।

चेडी स्त्री [**दे**] कुमारी, बाला, लड़की; (पाअ)।

चेत्त न [**चैत्य**] चैत्य-विशेष; (षड्)।

चेत्त पुं [**चैत्र**] १ मास-विशेष, चैत मास; (सम २६; हे १, १५२)। २ जैन मुनिओं का एक गच्छ; (वृह ६)।

चेदि देखो **चेइ**; (सण)।

चेदीस पुं [**चेदीश**] चेदि देश का राजा; (सण)।

चेयग वि [**चेतक**] दाता, देने वाला; (उप ६५७)।

चेयण पुं [**चेतन**] १ आत्मा, जीव, प्राणी; (ठा ४, ४)। २ वि. चेतना वाला, ज्ञान वाला; "भुवि चेयणं च किमरूवं" (विसे १८४५)।

चेयणा स्त्री [**चेतना**] ज्ञान, चेत, चैतन्य, सुध, ख्याल; (आव ६; सुर ४, २४५)।

चेयण्ण, **चेयन्न** न [**चैतन्य**] ऊपर देखो; (विसे ४७५; सुपा २०; सुर १४, ८)।

चेयस देखो **चेअ**=चेतस्;

"ईसादासेण आविट्ठे, कलुसाविलचेयसे।
जे अंतरायं चेएइ, महामोहं पकुव्वइ" (सम ५१)।

चेया देखो **चेयणा**; "पत्तेयमभावाओ, न रेणुतेल्लं व समुदए चेया" (विसे १६५२)।

चेल, **चेलय** न [**चेल**] वस्त्र, कपड़ा; (आचा; औप)। °**कण्ण** न [°**कर्ण**] व्यजन-विशेष, एक तरह का पंखा; (स ५४६)। °**गोल** न [°**गोल**] वस्त्र का गेंद, कन्दुक; (सूअ १, ४, २)। °**हर** न [°**गृह**] तम्बू, पट-मण्डप, रावटी; (स ५३७)।

चेलय न [**दे**] तुला-पात्र; "दिट्ठीतुलाए भुवणं, तुलंति जे चित्तचेलए निहियं" (वज्जा ५६)।

चेलिय देखो **चेल**; "रयणकंचणचेलियबहुधन्नभरभरिया" (पउम ६६, २५; आचा)।

चेलुंप न [**दे**] मुशल, मूषल; (दे ३, ११)।

चेल्ल, **चेल्लअ** [**दे**] देखो **चिल्ल** (दे); (पउम ६७, १३; १६; स ४६६; दसनि १; उप २६८)।

चेल्लग, **चेल्लय** [**दे**] देखो **चिल्लग**; (पण्ह १, ४—पत्र ६८; ती ३३)।

चेव अ [**एव, चैव**] १ अवधारण-सूचक अव्यय, निश्चय-दर्शक शब्द; "जो कुणइ परस्स दुहं पावइ तं चेव सो अणंत-गुणं" (प्रासु २६; महा)। "अवहारणे चेव-सद्दो यं" (विसे ३५६५)। २ पाद-पूरक अव्यय; (पउम ८, ८८)।

चेव अ [**इव**] सादृश्य-द्योतक अव्यय; "पेच्छइ गणहर-वसहं सरयरविं चेव तेएणं" (पउम ३, ४; उत्त १६, ३)।

चो° देखो **चउ**; (हे १, १७१; कुमा; सम ६०; औप; भग; णाया १, १; १४; विपा १, १; सुर १४, ६७)। °**आला** स्त्री [°**चत्वारिंशत्**] चालीस और चार, ४४; (विसे २३०४)। °**वट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] चौसठ, ६४; (कप्प)। °**वत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] सतर और चार, ७४; (सम ८४)।

चोअ सक [**चोदय्**] १ प्रेरणा करना। २ कहना। चोएइ; (उव; स १५)। कवकृ—**चोइज्जंत, चोइज्जमाण**; (सुर २, १०; णाया १, १६)। संकृ—**चोइऊण**; (महा)।

चोअअ वि [**चोदक**] प्रेरक, प्रश्न-कर्ता, पूर्व-पक्षी; (अणु)।

चोअण न [**चोदन**] प्रेरण, प्रेरणा; (भत्त ३६; उत्त २८)।

चोइअ वि [**चोदित**] प्रेरित; (स १५; सुपा १५०; औप; महा)।

चोक्क [**दे**] देखो **चुक्क**=(दे); (महा)।

चोक्ख वि [दे] चोखा, शुद्ध, शुचि, पवित्र ; (णाया १, १ ; उप १४२ टी ; बृह १ ; भग ६, ३३ ; राय ; औप)।

चोक्खा स्त्री [चोक्षा] परिव्राजिका-विशेष, इस नाम की एक संन्यासिनी ; (णाया १, ८)।

चोज्ज न [दे] आश्चर्य, विस्मय ; (दे ३, १४ ; सुर ३, ४ ; सुपा १०३ ; सट्टि १५६ ; महा)।

चोज्ज न [चौर्य] चोरी, चोर-कर्म ; "तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबंभसेवणं" (उत्त ३५, ३ ; णाया १, १८)।

चोज्ज न [चोद्य] १ प्रश्न, पृच्छा ; २ आश्चर्य, अद्भुत; ३ वि. प्रेरणा-योग्य ; (गा ४०६)।

चोट्टी स्त्री [दे] चोटी, शिखा ; (दे ३, १)।

चोड्डु न [दे] वृन्त, फल और पत्ती का बन्धन ; (विक्र २८)।

चोढ पुं [दे] बिल्व, वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़; (दे ३, १६)।

चोण्ण न [दे] १ कलह, झगड़ा ; (निचू २०)। २ काष्ठानयन आदि जघन्य कर्म ; (सूअ २, २)।

चोत्त } पुंन [दे] प्रतोद, प्राजन-दण्ड; (दे ३, १६; पाअ)।
चोत्तअ }

चोद [दे] देखो **चोय** ; (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

चोदग देखो **चोअअ** ; (ओघ ४ भा)।

चोप्पड सक [म्रक्ष्] स्निग्ध करना, घी-तेल वगैरः लगाना। चोप्पडइ; (हे ४, १९१)। वकृ—**चोप्पडमाण** ; (कुमा)।

चोप्पड न [म्रक्षण] घी, तैल वगैरः स्निग्ध वस्तु ; " गेह-व्वयस्स जोग्गं किंचिवि कणचोप्पडाईयं " (सुपा ४३०)।

चोप्पाल न [दे] मत्तवारण, वरण्डा; (जं २)।

चोप्फुच्च वि [दे] स्निग्ध, स्नेह वाला, प्रेम-युक्त; (दे ३, १५)।

चोय } न [दे] त्वचा, छाल; (पण्ह २, ५—पत्र १५० टी)। २ आम वगैरः का रुंछा ; (निचू १५ ; आचा २, १, १०)। ३ गन्ध-द्रव्य विशेष ; (अणु ; जीव १ ; राय)।
चोयग }

चोयग देखो **चोअअ** ; (णंदि)।

चोयणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा ; (स १५ ; उप ६४८ टी)।

चोर पुं [चोर] तस्कर, दूसरे का धन चुराने वाला; (हे ३, १३४ ; पण्ह १, ३)। °**कीड** पुं [°**कीट**] विष्ठा में उत्पन्न होता कीट ; (जी १७)।

चोरंकार पुं [चौर्यकार] चोर, तस्कर ; " चोरंकारकरं जं थूलमदत्तं तयं वज्जे " (सुपा ३३४)।

चोरग वि [चोरक] १ चुराने वाला। २ पुंन. वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।

चोरण न [चोरण] १ चोरी, चुराना ; (सुर ८, १२२)। २ वि. चोर, चोरी करने वाला ; (भवि)।

चोरली स्त्री [दे] श्रावण मास की कृष्ण चतुर्दशी ; (दे ३, १६)।

चोराग पुं [चोराक] संनिवेश-विशेष, इस नाम का एक छोटा गाँव ; (आवम)।

चोरासी } देखो **चउरासी** ; (पि ४३६ ; ४४६)।
चोरासीइ }

चोरिअ न [चौर्य] चोरी, अपहरण; (हे २, १०७ ; ठा १, १ ; प्रासू ६५ ; सुपा ३७६)।

चोरिअ वि [चौरिक] १ चोरी करने वाला ; (पव ४१)। २ पुं. चर, जासस ; (पण्ह १, १)।

चोरिअ वि [चोरित] चुराया हुआ ; (विसे ८५७)।

चोरिआ स्त्री [चौर्य,चौरिका] चोरी, अपहरण; (गा २०६; षड्; हे १, ३५ ; सुर ६, १७८)।

चोरिक्क न [चौरिक्य] ऊपर देखो ; (पण्ह १, ३)।

चोरी स्त्री [चौरी] चोरी, अपहरण ; (श्रा २७)।

चोल वि [दे] १ वामन, कुब्ज ; (दे ३, १८)। २ पुं. पुरुष-चिह्न, लिङ्ग ; (पव ६१)। ३ न. गन्ध-द्रव्य विशेष ; मञ्जिष्ठा ; (उर ६, ४)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] जैन मुनि का कटी-वस्त्र ; (ओघ ३४)। °**य** पुं [°**ज**] मजीठ का रंग ; (उर ६, ४)।

चोल पुं [चोल] देश-विशेष, द्रविड़ और कलिङ्ग के बीच का देश ; (पिंग ; सण)।

चोलअ न [दे] कवच, वर्म ; (नाट)।

चोलअ } न [चौल, °क] संस्कार-विशेष, मुण्डन; "विहिणा चूलाकम्मं बालाणं चोलयं नाम " (आवम ; पण्ह १, २)।
चोलग }

चोलुक्क देखो **चालुक्क** ; (ती ५)।

चोलोयणग } न [चूलापनयन] १ चूलोपनयन, संस्कार-विशेष, मुण्डन; (णाया १, १—पत्र ३८)। २ शिखा-धारण, चूड़ा-धारण; (भग ११, ११—पत्र ५४४ ; औप)।
चोलोवणय }
चोलोवणयण }

चोल्लक [दे] देखो **चोलग** ; (पण्ह २, ४)

चोल्लक } पुंन [**दे**] १ भोजन ; (उप पृ १२ ; आवम;
चोल्लग } उत्त ३)। २ वि. क्षुद्रक, छोटा, लघु ; (उप पृ ३१)।

चोल्लय पुंन [**दे**] थैला, बोरा, गोन ; "परं मम समक्खं तोलेह चोल्लए "राइणा उक्केल्लाविआइं चोल्लयाइं" (महा)।

चोव्वड देखो **चोप्पड**=म्रक्ष्। चोव्वडइ; (षड्)।

च्च अ [**एव**] अवधारण-सूचक अव्यय ; (हे २, १८४; कुमा ; षड्)।

च्चिअ देखो **चिअ**=एव ; (हे २, १८४ ; कुमा)।

च्चेअ } देखो **चेव**=एव; (पि ६२ ; जी ३२)।
च्चेव }

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि चयाराइसद्दसंकलणो चउद्दसमो तरंगो समत्तो।

छ

छ पुं [**छ**] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप; प्रामा)। २ आच्छादन, ढकना ; "छ ति य दोसाण छायणे होइ" (आवम)।

छ त्रि. ब. [**षष्**] संख्या-विशेष; छह, "छ छंडिआओ जिणसासणम्मि" (श्रा ६; जी ३२; भग १, ८)। °**उत्तरसय** वि [°**उत्तरशततम**] एक सौ और छठवाँ ; (पउम १०६, ४६)। °**क्कम्म** न [°**कर्मन्**] छः प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्तव्य हैं, यथा—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह ; (निचू १३)। °**क्काय** न [°**काय**] छः प्रकार के जीव, पृथिवी, अग्नि, पानी, वायु, वनस्पति और त्रस जीव ; (श्रा ७ ; पंचा १५)। °**गुण**, °**ग्गुण** वि [°**गुण**] छगुना ; (ठा ६ ; पि २७०)। °**च्चरण** पुं [°**चरण**] भ्रमर, भमरा; (कुमा)। °**ज्जीवनिकाय** पुं [°**जीवनिकाय**] देखो °**क्काय**; (आचा)। °**ण्णउइ**, °**ण्णवइ** [°**णवति**] संख्या-विशेष, छानवे, ६६ ; (सम ६८; अजि १०)। °**त्तीस** स्त्रीन [°**त्रिंशत्**] संख्या-विशेष, छत्तीस, ३६ ; (कप्प)। °**त्तीसइम** वि [°**त्रिंशत्तम**] छत्तीसवाँ; (पउम ३६, ४३; पण्ण ३६)। °**द्दस** त्रि. ब. [**षोडशन्**] षोडश, सोलह। °**द्दसहा** अ [**षोडशधा**] सोलह प्रकार का ; (वव ४)। °**द्दिसि** न [°**दिश्**] छः दिशाएं—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा ; (भग)। °**द्धा** अ [°**धा**] छह प्रकार का; (कम्म १, ३८)। °**नवइ**, °**नुवइ**, °**न्नउइ** देखो °**ण्णउइ**; (कम्म ३, ४ ; १२ ; सम ७०)। °**न्नउय** वि [°**णवत**] छानहवाँ, ६६ वाँ ; (पउम ६६, ५०)। °**प्पण्ण**, °**प्पन्न** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] छप्पन, ५६ ; (राज ; सम ७३)। °**प्पन्न** वि [°**पञ्चाश**] छप्पनवाँ ; (पउम ५६, ४८)। °**ब्भाय** पुं [°**भाग**] छठवाँ हिस्सा ; (पि २७०)। °**ब्भासा** स्त्री [°**भाषा**] प्राकृत, संस्कृत, मागधी, शौरसेनी, पैशाचिका और अपभ्रंश ये छः भाषाएं ; (रंभा)। °**मासिय**, °**म्मासिय** वि [**षाण्मासिक**] छह मास में होने वाला, छह मास संबन्धी ; (सम २१ ; औप)। °**वरिस** वि [°**वार्षिक**] छह वर्ष की उम्र वाला; (सार्ध २६)। °**वीस** देखो °**व्वीस**; (पिंग)। °**व्विह** वि [°**विध**] छह प्रकार का ; (कस ; नव ३)। °**व्वीस** स्त्रीन [°**विंशति**] छव्वीस, वीस और छह ; (सम ४५)। °**व्वीसइम** वि [°**विंशतितम**] १ छव्वीसवाँ, २६ वाँ; (पउम २६, १०३)। २ लगातार बारह दिनों का उपवास ; (णाया १, १)। °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] संख्या-विशेष, साठ और छह ; (कम्म २, १८)। °**स्सयरि** स्त्री [°**सप्तति**] छिहत्तर; (कम्म २, १७)। °**हा** देखो °**द्धा** ; (कम्म १, ५ ; ८)।

छइ देखो **छवि**=छवि ; (वा १२)।

छइअ वि [**स्थगित**] आवृत, आच्छादित, तिरोहित; (हे २, १७ ; षड्)।

छइल } वि [**दे**] विदग्ध, चतुर, हुशियार ; (पिंग ; दे ३,
छइल्ल } २४ ; गा ७२० ; वज्जा ४ ; पाअ ; कुमा)।

छउअ वि [**दे**] तनु, कृश, पतला ; (दे ३, २५)।

छउम पुंन [**छद्मन्**] १ कपट, शठता, माया ; (सम १ ; षड्)। २ छल, बहाना ; (हे २, ११२ ; षड्)। ३ आवरण, आच्छादन; (सम १ ; ठा २, १)।

छउमत्थ वि [**छद्मस्थ**] १ अ-सर्वज्ञ, संपूर्ण ज्ञान से वञ्चित ; २ राग-सहित, सराग ; (ठा ४, १ ; ६ ; ७)।

छउलूअ देखो **छलूअ** ; (राज ; विसे २५०८)।

छंकुई स्त्री [**दे**] कपिकच्छू, वृक्ष-विशेष, केवाँच ; (दे ३, २४)।

छंट पुं [दे] छींटा, जल का छींटा, जल-च्छटा; २ वि. शीघ्र, जल्दी करने वाला; (दे ३, ३३)।
छंट सक [सिच्] सींचना। छंटसु; (सुपा २६८)।
छंटण न [सेचन] सिंचन, सिंचना; (सुपा १३६; कुमा)।
छंटा स्त्री [दे] देखो **छंट** ; (पाअ)।
छंटिअ वि [सिक्त] सींचा हुआ ; (सुपा १३८)।
छंड देखो **छड्ड=**मुच्। छंडइ ; (आरा ३२ ; भवि)।
छंडिअ वि [दे] छन्न, गुप्त ; (षड्)।
छंडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त, छाडा हुआ ; (आरा ; भवि)।
छंद सक [छन्द्] १ चाहना, वाञ्छना। २ अनुज्ञा देना, संमति देना। ३ निमन्त्रण देना। कवकृ—
"अंतेउरपुरबलवाहणेहि वरसिरिघरेहि मुणिवसभा।
कामेहि बहुविहेहि य **छंदिज्जंतावि** नेच्छंति" (उव)।
संकृ—**छंदिअ** ; (दस १०)।
छंद पुंन [छन्द] १ इच्छा, मरजी, अभिलाषा ; (आचा ; गा २०२; स २३६; उव; प्रासू ११)। २ अभिप्राय, आशय; (आचा; भग)। ३ वशता, अधीनता; (उत्त ४; हे १, ३३)। °**चारि** वि [°**चारिन्**] स्वच्छन्दी, स्वैरी; (उप ७६८ टी)। °**इत्त** वि [°**वत्**] स्वैरी ; (भवि)। °**णुवत्तण** न [°**ानुवर्त्तन**] मरजी के अनुसार बरतना ; (प्रासू १४)। °**णुवत्तय** वि [°**ानुवर्त्तक**] मरजी का अनुसरण करने वाला; (णाया १, ३)।
छंद पुंन [**छन्दस्**] १ स्वच्छन्दता, स्वैरिता ; (उत्त ४)। २ अभिलाष, इच्छा ; ३ आशय, अभिप्राय ; (सूअ १, २, २ ; आचा ; हे १,३३)। ४ छन्दः-शास्त्र ; (सुपा २८७ ; औप)। ५ वृत्त, छन्द ; (वज्जा ४)। °**ण्णुय** वि [°**ज्ञ**] छन्द का जानकार ; (गउड)।
छंदण न [**वन्दन**] वन्दन, प्रणाम, नमस्कार; (गुभा ४)।
छंदणा स्त्री [**छन्दना**] १ निमन्त्रण ; (पंचा १२)। २ प्रार्थना ; (बृह १)।
छंदा स्त्री [**छन्दा**] दीक्षा का एक भेद, अपने या दूसरे के अभिप्राय-विशेष से लिया हुआ संन्यास ; (ठा २, २ ; पंचभा)।
छंदिअ वि [**छन्दित**] अनुज्ञात, अनुमत ; (ओघ ३८०)। २ निमन्त्रित ; (निचू २)।
°**द्दो**° देखो **छंद**=छन्दस् ; (आचा ; अभि १२६)।

छक्क वि [**षट्क**] छक्का, छः का समूह; "अंतररिउछक्का-अक्कंता" (सुपा ५१६ ; सम ३५)।
छग देखो **छ**=षष् ; (कम्म ४)।
छग न [**दे**] पुरीष, विष्ठा ; (पण्ह १, ३—पत्र ५४ ; ओघ ७२)।
छगण न [**दे**] गोमय, गोबर ; (उप ५६७ टी , पंचा १३; निचू १२)।
छगणिया स्त्री [**दे**] गोइंठा, कंडा ; (अनु ५)।
छगल पुंस्त्री [**छगल**] छाग, अज ; (पण्ह १, १ ; औप)। स्त्री—°**ली** ; (दे २, ८४)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (ठा १०)।
छग्ग देखो **छक्क** ; (दं ११)।
छग्गुरु पुं [**षड्गुरु**] १ एक सौ और अस्सी दिनों का उपवास ; २ तीन दिनों का उपवास ; (ठा २, १)।
छच्छुंदर पुंन [**दे**] छछुन्दर, मूसे की एक जाति; (सं १६)।
छज्ज अक [**राज्**] शोभना, चमकना। छज्जइ; (हे ४,१००)।
छज्जिअ वि [**राजित**] शोभित, अलंकृत ; (कुमा)।
छज्जिआ स्त्री [**दे**] पुष्प-पात्र, चंगेरी ; (स ३३४)।
छट्टा [**दे**] देखो **छंटा** ; (षड्)।
छट्ठ वि [**षष्ठ**] १ छठवाँ ; (सम १०४ ; हे १, २६५)। २ न. लगातार दो दिनों का उपवास ; (सुर ४, ५५)। °**क्खमण** न [°**क्षमण, °क्षपण**] लगातार दो दिनों का उपवास ; (अंत ६ ; उप पृ ३४३)। °**क्खमय** पुं [°**क्षमक, °क्षपक**] दो दो दिनों का बराबर उपवास करने वाला तपस्वी ; (उप ६२२)। °**भत्त** न [°**भक्त**] लगातार दो दिनों का उपवास ; (धर्म ३)। °**भत्तिय** वि [°**भक्तिक**] लगातार दो दिनों का उपवास करने वाला ; (पण्ह १,१)।
छट्ठी स्त्री [**षष्ठी**] १ तिथि-विशेष ; (सम २६)। २ विभक्ति-विशेष, संबन्ध-विभक्ति ; (णंदि ; हे १, २६५)। ३ जन्म के बाद किया जाता उत्सव-विशेष ; (सुपा ५७८)।
छड सक [**आ+रुह्**] आरूढ़ होना, चढ़ना। छडइ ; (षड्)।
छडक्खर पुं [**दे**] स्कन्द, कार्तिकेय ; (दे ३, २६)।
छडछडा स्त्री [**छटच्छटा**] सूर्य वगैरः से अन्न को झाड़ते समय होता एक प्रकार का अव्यक्त आवाज; (णाया १, ७—पत्र ११६)।
छडा स्त्री [**दे**] विद्युत, बिजली ; (दे ३, २४)।

छड्डा स्त्री [**छटा**] १ समूह, परम्परा ; (सुर ४, २४३ ; वा १२) । २ छींटा, पानी का बुंद ; (पाअ) ।

छड्डाल वि [**छटावत्**] छटा वाला ; (पउम ३५,१८) ।

छड्ड सक [**छर्दय्, मुच्**] १ वमन करना । २ छोड़ना, त्याग करना । ३ डालना, गिराना । छड्डइ ; (हे २, ३६ ; ४, ६१ ; महा ; उव) । कर्म—छड्डिज्जइ ; (पि २६१) । वकृ—**छड्डंत** ; (भग) । संकृ—**छड्डेउं** "भूमीए खीरं जह पियइ दुट्ठमज्जारो" (विसे १४७१), **छड्डित्तु** ; (वव २) ।

छड्डण न [**छर्दन, मोचन**] १ परित्याग, विमोचन ; (उप १७६ ; ओघ ८६) । २ वमन, वान्ति ; (विपा १, ८) ।

छड्डवण न [**छर्दन, मोचन**] १ छुड़वाना, मुक्त करवाना । २ वमन कराना । ३ वमन कराने वाला ; ४ छुडाने वाला ; (कुमा) ।

छड्डवय वि [**छर्दक, मोचक**] त्याग कराने वाला, त्याजक ; (दे २, ६२) ।

छड्डावण देखो **छड्डवण** ; (सुपा ५१७) ।

छड्डाविय वि [**छर्दित, मोचित**] १ वमन कराया हुआ ; २ छुड़वाया हुआ ; (आवम; बृह १) ।

छड्डि स्त्री [**छर्दि**] वमन का रोग ; (षड् ; हे २, ३६) ।

छड्डि स्त्री [**छर्दिस्**] छिद्र, दूषण ; "जो जग्गइ परछड्डिं, सो नियछड्डीए किं सुयइ" (महा) ।

छड्डिय } वि [**छर्दित, मुक्त**] १ वान्त, वमन
छड्डियल्लिय } किया हुआ । २ त्यक्त, मुक्त ; (विसे २६०६ ; दे १, ४६ ; औप) ।

छण सक [**क्षण्**] हिंसा करना । छणे; (आचा) । प्रयो— छणावेइ ; (पि ३१८) ।

छण पुं [**क्षण**] १ उत्सव, मह ; (हे २, २०) । २ हिंसा ; (आचा) । °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] शरद ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा ; (स ३७१) । °**ससि** पुं [°**शशिन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सुपा ३०६) ।

छणण न [**क्षणन**] हिंसन, हिंसा ; (आचा) ।

छणिंदु पुं [**क्षणेन्दु**] शरद ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्र ; (सुपा ३३ ; ४०४) ।

छण्ण वि [**छन्न**] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपाया हुआ ; (बृह १ ; प्राप) । २ आच्छादित, ढका हुआ ; (गा ५८०) । ३ न. माया, कपट; (सूअ १, २, २) । ४ निर्जन, विजन, रहस् ; ५ क्रिवि. गुप्त रीति से, प्रच्छन्न रूप से ;

"जं छण्णं आयरियं, तइया जणणीए जोव्वणमएण ।
तं पडिव(? यडि) उजइ इण्हिं सुएहिं सीलं चयंतेहिं"
(उप ७२८ टी) ।

छण्णालय न [**दे. षण्णालक**] त्रिकाष्ठिक, तिपाई, संन्यासीओं का एक उपकरण ; (भग ; औप ; णाया १, ५) ।

छत्त न [**छत्र**] छाता, आतपत्र ; (णाया १, ५ ; प्रासू ५२) । °**धार** पुं [°**धार**] छाता धारण करने वाला नौकर ; (जीव ३) । °**पडागा** स्त्री [°**पताका**] १ छत्र-युक्त ध्वज ; २ छत्र के ऊपर की पताका ; (औप) । °**पलासय** न [°**पलाशक**] कृतमंगला नगरी का एक चैत्य ; (भग) । °**भंग** पुं [°**भङ्ग**] राज-नाश, नृप-मरण ; (राज) । °**हार** देखो °**धार** ; (आवम) । °**इच्छत्त** न [°**तिच्छत्र**] १ छत्र के ऊपर का छाता ; (सम १३७) । २ पुं. ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध योग-विशेष ; (सुज्ज १२) ।

छत्त पुं [**छात्र**] विद्यार्थी, अभ्यासी ; (उप पृ ३३१; १६६ टी) ।

छत्तंतिया स्त्री [**छत्रान्तिका**] परिषद्-विशेष, सभा-विशेष ; (बृह १) ।

छत्तच्छय (अप) पुं [**सप्तच्छद**] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन ; (सण) ।

छत्तधन्न न [**दे**] घास, तृण ; (पाअ) ।

छत्तवण्ण देखो **छत्तिवण्ण** ; (प्राप्र) ।

छत्ता स्त्री [**छत्रा**] नगरी-विशेष ; (आवम) ।

छत्तार पुं [**छत्रकार**] छाता बनाने वाला कारीगर ; (पण्ण १) ।

छत्ताह पुं [**छत्राभ**] वृक्ष-विशेष ; "णग्गोहसत्तिवण्णे, सालं पियए पियंगुछत्ताहे" (सम १५२) ।

छत्ति वि [**छत्रिन्**] छत्र-युक्त, छाता वाला ; (भास ३३) ।

छत्तिवण्ण पुं [**सप्तपर्ण**] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन, (हे १, २६५ ; कुमा) ।

छत्तोय पुं [**छत्रौक**] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३५) ।

छत्तोव पुं [**छत्रौप**] वृक्ष-विशेष ; (औप ; अंत) ।

छत्तोह पुं [**छत्रौघ**] वृक्ष-विशेष ; (औप ; पण्ण १—पत्र ३१ ; भग) ।

छद्दवण देखो **छड्डवण** ; (राज) ।

छद्दी स्त्री [**दे**] शय्या, बिछौना ; (दे ३, २४) ।

छन्न देखो **छण्ण** ; (कप्प ; उप ६४८ टी ; प्रासू ८२) ।

छप्पइगिल्ल वि [**षट्पदिकावत्**] यूका-युक्त, यूका वाला; (बृह ३)।

छप्पइया स्त्री [**षट्पदिका**] यूका, जू ; (ओघ ७२४)।

छप्पंती स्त्री [**दे**] नियम-विशेष, जिसमें पद्म लिखा जाता है; (दे ३, २५)।

छप्पण्ण } वि [**दे. षट्प्रज्ञक**] विदग्ध, चतुर, चालाक;
छप्पण्णय } (दे ३, २४ ; पाअ ; वज्जा ५८)।

छप्पत्तिआ स्त्री [**दे**] १ चपत, थप्पड़, तमाचा ; २ चपाती, रोटी, फुलका

"छप्पत्तिआवि खज्जइ, निप्पत्ते पुत्ति ! एत्थ को देसो ? ।
निअपुरिसंवि रमिज्जइ, परपुरिसविवज्जिए गामे "
(गा ८८७)।

छप्पन्न [**दे**] देखो **छप्पण्ण** ; (जय ६)।

छप्पय पुं [**षट्पद**] १ भ्रमर, भमरा; (हे १, २६५ ; जीव ३)। २ वि. छः स्थान वाला ; ३ छः प्रकार का ; (विसे २८६१)। ४ न. छन्द-विशेष ; (पिंग)।

छब्बय न [**दे**] वंश-पिटक, घी वगैरः को छानने का उपकरण विशेष ; " मुइंगाईमक्कोडएहिं संसत्तगं च नाऊणं । गालेज्ज छब्बएणं " (ओघ ५५८)।

छब्भामरी स्त्री [**षड्भ्रामरी**] एक प्रकार की वीणा ; (णाया १, १७—पत्र २२६)।

छमच्छम अक [**छमच्छमाय्**] 'छम् छम्' आवाज करना, गरम चीज पर दिया जाता पानी का आवाज। छमच्छमइ ; (वज्जा ८८)।

छम° देखो **छमा**। °**रुह** पुं [°**रुह्**] वृक्ष, पेड़, दरख्त; (कुमा)।

छमलय पुं [**दे**] सप्तच्छद, वृक्ष-विशेष, सतौना ; (दे ३, २५)।

छमा स्त्री [**क्षमा, क्ष्मा**] पृथिवी, धरिणी, भूमि ; (हे २, १८)। °**हर** पुं [°**धर**] पर्वत, पहाड़; (षड्)। देखो **छम°**।

छमी स्त्री [**शमी**] वृक्ष-विशेष, अग्नि-गर्भ वृक्ष; (हे१, २६५)।

छम्म देखो **छउम**; (हे २, ११२; षड् ; पउम ४०, ५; सण)।

छम्मुह पुं [**षण्मुख**] १ स्कन्द, कार्तिकेय ; (हे१,२६५)। २ भगवान् विमलनाथ का अधिष्ठायक देव ; (संति ८)।

छय न [**छद**] १ पर्ण, पत्ती, पत्र ; (औप)। २ आवरण, आच्छादन ; (से ६, ४७)।

छय न [**क्षत**] १ व्रण, घाव; (हे २, १७)। २ पीड़ित, व्यथित ; (सूअ १, २, २)।

छयल्ल [**दे**] देखो **छइल्ल** ; (रंभा)।

छरु पुं [**त्सरु**] खड्ग-मुष्टि, तलवार का हाथा ; (पण्ह १, ४)। °**प्पवाय** न [°**प्रवाद**] खड्ग-शिक्षा-शास्त्र ; (जं २)।

छल सक [**छलय्**] ठगना, वञ्चना। छलिज्जेज्जा ; (स २१३)। संकृ—**छलिउं, छलिऊण**; (महा)। कृ—**छलिअव्व**; (श्रा १४)।

छल न [**छल**] १ कपट, माया ; (उव)। २ व्याज, बहाना ; (पाअ ; प्रासू ११४)। ३ अर्थ-विघात, वचन-विघात, एक तरह का वचन-युद्ध; (सूअ १, १२)। °**ायणण** न [°**ायतन**] छल, वचन-विघात; (सूअ १, १२)।

छलंस वि [**षडस्र**] षट्-कोण, छह कोण वाला; (ठा ८)।

छलण न [**छलन**] ठगाई, वञ्चना ; (सुर ६, १८१)।

छलणा स्त्री [**छलना**] १ ठगाई, वञ्चना ; (ओघ ७८५ ; उप ७७६)। २ छल, माया, कपट ; (विसे २५४५)।

छलत्थ वि [**षडर्थ**] छह अर्थ वाला ; (विसे ६०१)।

छलसीअ स्त्रीन [**षडशीति**] संख्या-विशेष, अस्सी और छह, ८६ ; (भग)।

छलसीइ स्त्री. ऊपर देखो; (सम ६२)।

छलिअ वि [**छलित**] १ वञ्चित, विप्रतारित, ठगा हुआ ; (भवि ; महा)। २ शृङ्गार-काव्य ; ३ चोर का इसारा, तस्कर-संज्ञा ; (राज)।

छलिअ वि [**दे**] विदग्ध, चालाक, चतुर ; (दे ३, २४ ; पाअ)।

छलिअ न [**छलिक**] नाट्य-विशेष ; (मा ४)।

छलिअ वि [**स्खलित**] स्खलना-प्राप्त ; (ओघ ७८६)।

छलिया देखो **छालिया** ; " चीणाकूरं छलियातक्केण दिन्नं " (महा)।

छलुअ } पुं [**षडुलूक**] वैशेषिक मत-प्रवर्तक कणाद ऋषि;
छलुग } (कप्प ; ठा ७; विसे २३०२); " दव्वाइछ-
छलूअ } प्पयत्थोवएसणाओ छलूउत्ति " (विसे २५०८ ; २४५५)।

छल्ली स्त्री [**दे**] त्वचा, वल्कल, छाल ; (दे ३, २४ ; जी १३ ; गा ११५ ; ठा ४, १ ; णाया १, १३)।

छल्लुय देखो **छलुअ** ; (पि १४८)।

छव देखो **छिव**। छवेमि ; (सुपा ५७३)।

छवडी स्त्री [**दे**] चर्म, चाम, चमड़ा; (दे ३, २५)।

छवि स्त्री [**छवि**] १ कान्ति, तेज ; (कुमा ; पाअ)। २ अंग, शरीर ; (पगह १, १)। ३ चर्म, चमड़ी; (पाअ; जीव ३)। ४ अवयव ; (पडि)। ५ अंगी, शरीरी; (ठा ४, १)। ६ अलङ्कार-विशेष ; (अणु)। °**च्छेअ** पुं [°**च्छेद**] अङ्ग का विच्छेद, अवयव-कर्तन ; (पडि)। °**च्छेयण** न [°**च्छेदन**] अंग-च्छेद ; (पगह १, १)। °**त्ताण** न [°**त्राण**] चमड़ी का आच्छादन, कवच, वर्म ; (उत २)।

छविअ वि [**स्पृष्ट**] छूआ हुआ ; (श्रा २७)।

छव्वग [**दे**] देखो **छव्वय** ; (राज)।

छव्विअ वि [**दे**] पिहित, आच्छादित ; (गउड)।

छह (अप) देखो **छ**=षष् ; (पि ४४१)।

छहत्तर वि [**षट्सप्तत**] छहत्तरवाँ, ७६ वाँ ; (पउम ७६, २७)।

छाइअ वि [**छादित**] आच्छादित, ढ़का हुआ ; (पउम ११३, ५४ ; कुमा)।

छाइल्ल वि [**छायावत्**] छाया वाला, कान्ति-युक्त ; (हे २, १५६ ; षड्)।

छाइल्ल पुं [**दे**] १ प्रदीप, दीपक; "जोइक्खं तह छाइल्लयं च दीवं मुणेज्जाहि" (वज्ज ७ ; दे ३, ३५)। २ वि. सदृश, समान, तुल्य ; ३ ऊन, अधूरा ; (दे ३, ३५)। ४ सुरूप, सुडौल, रूपवान् ; (दे ३, ३५ ; षड्)।

छाई देखो **छाया** ; (षड्)।

छाई स्त्री [**दे**] माता, देवी, देवता ; (दे ३, २६)।

छाउमत्थिय वि [**छाद्मस्थिक**] केवलज्ञान उत्पन्न होने के पहले की अवस्था में उत्पन्न, सर्वज्ञता की पूर्वावस्था से संबन्ध रखने वाला ; (सम ११ ; पगण ३६)।

छाओवग वि [**छायोपग**] १ छाया-युक्त, छाया वाला ; (वृक्षादि) ; २ पुं. सेवनीय पुरुष, माननीय पुरुष ; (ठा ४,३)।

छागल वि [**छागल**] १ अज-संबन्धी ; (ठा ५, ३)। २ पुं. अज, बकरा ; स्त्री— °**ली** ; (पि २३१)।

छागलिय पुं [**छागलिक**] छागों से आजीविका करने वाला, अजा-पालक ; (विपा १, ४)।

छाण न [**दे**] १ धान्य वगैरः का मलना ; (दे ३, ३४)। २ गोमय, गोबर ; (दे ३, ३४ ; सुर १२, १७ ; गाया १, ७ ; जीव १)। ३ वस्त्र, कपड़ा ; (दे ३,३४ ; जीव३)।

छाणण न [**दे**] छानना, गालन ; "भूमीपेहणजलछाणणाइं जयणाओ होइ न्हाणाइं" (सद्धि ४५ टी)।

छाणवइ (अप) देखो **छण्णवइ** ; (पिंग)।

छाणी स्त्री [**दे**] १ धान्य वगैरः का मलन ; २ वस्त्र, कपड़ा ; (दे ३,३४)। ३ गोमय,गोबर ; (दे ३, ३४ ; धर्म २)।

छाय सक [**छादय्**] आच्छादन करना, ढ़कना। छायइ ; (हे ४, २१)। वकृ—**छायंत** ; (पउम ७, १४)।

छाय वि [**दे**] १ बुभुक्षित, भूखा; (दे ३, ३३ ; पाअ ; उप ७६८ टी ; ओघ २६० भा)। २ कृश, दुर्बल ; (दे ३, ३३ ; पाअ)।

छायंसि वि [**छायावत्**] कान्तिमान्, तेजस्वी ; (सम १५२)।

छायण न [**छादन**] आच्छादन, ढ़कना ; (पिंग ; महा ; सं ११)।

छायणिया } स्त्री [**दे**] डेरा, पड़ाव, छावनी ; "तो तत्थेव **छायणी** } ठिओ एसो कुणिता गिहछायणिं" (श्रा १२ ; महा)।

छाया स्त्री [**छाया**] १ आतप का अभाव; छाँही; (पाअ)। २ कान्ति, प्रभा, दीप्ति; (हे १, २४९ ; औप ; पाअ)। ३ शोभा; (औप)। ४ प्रतिबिम्ब, परछाई; (प्रासू ११४ ; उत २)। ५ धूप-रहित स्थान, अनातप देश ; (ठा २, ४)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] १ छाया के अनुसार गमन ; २ छाया के अवलम्बन से गति ; (पगण १६)। °**पास** पुं [°**पार्श्व**] हिमाचल पर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति ; (ती ४५)।

छाया स्त्री [**दे**] १ कीर्ति, यश, ख्याति ; २ भ्रमरी, भमरी ; (दे ३, ३४)।

छायाइत्तय वि [**छायावत्**] छाया-वाला, छाया-युक्त। स्त्री—°**इत्तिआ** ; (हे २, २०३)।

छायाला स्त्री [**षट्चत्वारिंशत्**] छियालीस, चालीस और छह, ४६ ; (भग)।

छायालीस स्त्रीन. ऊपर देखो; (सम ६९ ; कप्प)।

छायालीस वि [**षट्चत्वारिंश**] छियालीसवाँ, ४६वाँ; (पउम ४६, ६६)।

छार वि [**क्षार**] १ पिघलने वाला, झरने वाला ; २ खारा, लवण-रस वाला; ३ पुं. लवण, नोन,-निमक; ४ सज्जी, सज्जी-खार ; ५ गुड़; (हे २, १७ ; प्राप्र)। ६ भस्म, भूति; (विसे १२५६; स ४४; प्रासू १४५; गाया १,२)। ७ मात्सर्य, असहिष्णुता; (जीव ३)।

छार पुं [**दे**] अच्छभल्ल, भालूक ; (दे ३, २६) ।
छारय देखो **छार**; (श्रा २७) ।
छारय न [**दे**] १ इक्षु-शल्क, ऊख की छाल; (दे ३,३४)। २ मुकुल, कली ; (दे ३, ३४; पाअ) ।
छाल पुं [**छाग**] अज, बकरा ; (हे १, १९१) ।
छालिया स्त्री [**छागिका**] अजा, छागी ; (सुर ७,३०; सण)।
छाली स्त्री [**छागी**] ऊपर देखो ; (प्रामा) ।
छाव पुं [**शाव**] बालक, बच्चा, शिशु ; (हे १, २६५ ; प्राप्र ; वव १) ।
छावण देखो **छायण** ; (बृह १) ।
छावट्ठि स्त्री [**षट्षष्टि**] छाछठ, छियासठ, ६६ ; (सम ७८ ; विसे २७६१) ।
छावत्तरि स्त्री [**षट्सप्तति**] छिहत्तर, सत्तर और छ, ७६ ; (पउम १०२,८९ ; सम ८५) । °**म** वि [°**तम**] छिहत्तरवाँ ; (भग) ।
छावलिय वि [**षडावलिक**] छः आवलिका-परिमित समय वाला ; (विसे ५३१) ।
छासट्ठ वि [**षट्षष्ट**] छियासठवाँ ; (पउम ६६, ३७) ।
छासी स्त्री [**दे**] छाछ, तक्र, मठा ; (दे ३, २६) ।
छासीइ स्त्री [**षडशीति**] छियासी, अस्सी और छ । °**म** वि [°**तम**] छियासीवाँ, ८६ वाँ ; (पउम ८६, ७४) ।
छाहत्तरि (अप) देखो **छावत्तरि** ; (पि २४५) ।
छाहा, **छाहिया**, **छाही** स्त्री [**छाया**] १ छाँही, आतप का अभाव ; २ प्रतिबिम्ब, परछाई ; (षड् ; प्राप ; सुर २, २४७; ६, ६५ ; हे १, २४९ ; गा ३४) ।
छाही स्त्री [**दे**] गगन, आकाश । °**मणि** पुं [°**मणि**] सूर्य, सूरज ; (दे ३, २६) ।
छिअ देखो **छीअ** ; (दे ८, ७२ ; प्रामा) ।
छिंछई स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; (हे २, १७४ ; गा ३०१ ; ३५० ; पाअ) ।
छिंछटरमण न [**दे**] क्रीड़ा-विशेष, चक्षु-स्थगन की क्रीड़ा; (दे ३, ३०) ।
छिंछय पुं [**दे**] १ देह, शरीर ; २ जार, उपपति ; ३ न. फल-विशेष, शलाटु-फल ; (दे ३, ३६) ।
छिंछोली स्त्री [**दे**] छोटा जल-प्रवाह ; (दे ३, २७ ; पाअ) ।
छिंड न [**दे**] १ चूड़ा, चोटी ; (दे ३, ३५ ; पाअ) । २ छत्र, छाता ; ३ धूप-यन्त्र ; (दे ३, ३५) ।
छिंडिआ स्त्री [**दे**] १ बाड़ का छिद्र ; २ अपवाद ; " छ छिंडिआओ जिणसासणम्मि " (पव १४८ ; श्रा ६) ।
छिंडी स्त्री [**दे**] बाड़ का छिद्र; (णाया १, २—पत्र ७९)।
छिंद सक [**छिद्**] छेदना, विच्छेद करना । छिंदइ ; (प्राप्र; महा) । भवि—छेच्छं ; (हे ३, १७१) । कर्म—छिज्जइ; (महा)। वकृ —**छिंदमाण**; (णाया १, १)। कवकृ—**छिज्जंत, छिज्जमाण**; (श्रा ६ ; विपा १, २) । संकृ— **छिंदिऊण, छिंदित्ता, छिंदित्तु, छिंदिय, छेत्तूण**; (पि ५८५; भग १४, ८; पि ५०६ ; ठा ३, २ ; महा) । कृ— **छिंदियव्व** ; (पण्ह २, १) । हेकृ—**छेत्तुं**; (आचा) ।
छिंदण न [**छेदन**] छेद, खण्डन, कर्तन; (ओघ १५४ भा) ।
छिंदावण न [**छेदन**] कटवाना, दूसरे द्वारा छेदन कराना ; (महानि ७) ।
छिंदाविय वि [**छेदित**] विच्छिन्न कराया गया; (स २२९) ।
छिंपय पुं [**छिम्पक**] कपड़ा छापने का काम करने वाला; (दे १, ९८ ; पाअ) ।
छिक्क न [**दे**] क्षुत, छींक ; (दे ३, ३६ ; कुमा) ।
छिक्क वि [**दे. छुप्त**] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (दे ३, ३६ ; हे २, १३८ ; से ३, ४६ ; स ४४४) । °**परोइया** स्त्री [°**प्ररोदिका**] वनस्पति-विशेष ; (विसे १७५४) ।
छिक्क वि [**छीत्कृत**] छी छो आवाज से आहूत; "पुव्विंपि वीरसुणिआ छिक्काछिक्का पहावए तुरियं" (ओघ १२४ भा)।
छिक्कंत वि [**दे**] छींक करता हुआ ; (सुपा ११९) ।
छिक्का स्त्री [**दे**] छिक्का, छींक ; (स ३२२) ।
छिक्कारिअ वि [**छीत्कारित**] छी छो आवाज से आहूत, अव्यक्त आवाज से बुलाया हुआ; (ओघ १२४ भा. टी) ।
छिक्किय न [**दे**] छींकना, छींक करना ; (स ३२४) ।
छिक्कोअण वि [**दे**] असहन, असहिष्णु ; (दे ३, २९)।
छिक्कोट्टली स्त्री [**दे**] १ पैर का आवाज ; २ पाँव से धान्य का मलना ; ३ गोइठा का टुकड़ा, गोबर-खण्ड ; (दे ३, ३७) ।
छिक्कोलिअ वि [**दे**] तनु, पतला, कृश ; (दे ३, २५) ।
छिक्कोवण [**दे**] देखो **छिक्कोअण**; (ठा ६—पत्र ३७२) ।
छिच्चोलय पुं [**दे**] देखो **छिव्वोल्ल** ; (पाअ) ।
छिच्छई देखो **छिंछई** ; (षड्) ।
छिच्छय देखो **छिंछय** ; (षड्) ।

छिछि अ [दे. **धिक्धिक्**] छी छी, धिक् धिक्, अनेक धिक्कार; (हे २, १७४ ; षड्)।
छिज्ज वि [**छेद्य**] १ जो खण्डित किया जा सके ; २ छेदने योग्य ; (सूअ २, ५)। ३ न. छेद, विच्छेद, द्विधाकरण; "पावंति बंधवहरहछिज्जमरणावसाणाइं" (ओघ ४६ भा ; पुप्फ १८६)।
छिज्जंत वि [**क्षीयमाण**] क्षय पाता, दुर्बल होता ; "छिज्जंतेहिं अणुदिणं, पच्चक्खम्मिवि तुमम्मि अंगेहिं" (गा ३४७)।
छिज्जंत } देखो **छिंद**।
छिज्जमाण }
छिड्ड न [**छिद्र**] १ छिद्र, विवर; (पउम २०, १६२ ; अनु ६ ; उप पृ १३८)। २ अवकाश, अवसर ; (पण्ह १, ३)। ३ दूषण, दोष ; (सुपा ३६०)। °**पाणि** पुं [°**पाणि**] एक प्रकार का जैन साधु; (आचा २,१, ३)।
छिण्ण देखो **छिन्न** ; (णाया १, १८ ; सूअ १, ८)।
छिण्ण पुं [**दे**] जार, उपपति ; (दे ३, २७ ; षड्)।
छिण्णच्छोडण न [**दे**] शीघ्र, तुरंत, जल्दी ; (दे ३,२९)।
छिण्णयड वि [**दे**] टंक से छिन्न ; (पाअ)।
छिण्णा स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; (दे ३, २७)।
छिण्णाल पुं [**दे**] जार, उपपति ; (दे ३, २७ ; षड् ; उत्त २७)।
छिण्णालिआ } स्त्री [**दे**] असती, कुलटा, पुंश्चली ;
छिण्णाली } (मृच्छ ५५ ; दे ३, २७)।
छिण्णोब्भवा स्त्री [**दे**] दूर्वा, दाभ ; (दे ३, २९)।
छित्त देखो **खित्त**=क्षेत्र ; (औप ; उप ८३३ टी ; हेका ३०)।
छित्त वि [**दे**] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (दे ३, २७; गा १३; सुपा ५०४ ; पाअ)।
छित्तर [**दे**] देखो **छेत्तर**; (स ८ ; २२३ ; उप पृ ११७ ; ५३० टी)।
छित्ति स्त्री [**छित्ति**] छेद, विच्छेद, खण्डन ; (विसे १४५८ ; अजि ५)।
छिद्द देखो **छिड्ड** ; (णाया १,२ ; ठा ५,१ ; पउम ६४,६)।
छिद्द पुं [**दे**] छोटी मछली; (दे ३, २६)।
छिद्दिय वि [**छिद्रित**] छिद्र-युक्त, छिद्र वाला ; (गउड)।
छिन्न वि [**छिन्न**] १ खण्डित, त्रुटित, छेद-युक्त ; (भग ; प्रासू १४६)। २ निर्धारित, निश्चित; (बृह १)। ३ न. छेद, खण्डन; (उत्त १५)। °**गंथ** वि [°**ग्रन्थ**] स्नेह-रहित, स्नेह-मुक्त ; (पण्ह २, ५)। २ पुं. त्यागी, साधु, मुनि, निर्ग्रन्थ ; (ठा ६)। °**च्छेअ** पुं [°**च्छेद**] नय-विशेष, प्रत्येक सूत्र को दूसरे सूत्र की अपेक्षा से रहित मानने वाला मत ; (णंदि)। °**द्धाणंतर** वि [°**ध्वान्तर**] मार्ग-विशेष, जहाँ गाँव, नगर वगैरः कुछ भी न हो ऐसा रास्ता; (बृह १)। °**मडंब** वि [°**मडम्ब**] जिस गाँव या शहर के समीप में दूसरा गाँव वगैरः न हो ; (निचू १०)। °**रुह** वि [°**रुह**] काट कर बोने पर भी पैदा होने वाली वनस्पति ; (जीव १० ; पण्ण ३६)।
छिप्प न [**क्षिप्र**] जल्दी, शीघ्र। °**तूर** न [°**तूर्य**] शीघ्र २ बजाया जाता वाद्य ; (विपा १, ३ ; णाया १, १८)।
छिप्प न [**दे**] १ भिक्षा, भीख; (दे ३,३६ ; सुपा ११५)। २ पुच्छ, लाङ्गूल ; (दे ३, ३६ ; पाअ)।
छिप्पंत देखो **छिव**=स्पृश्।
छिप्पंती स्त्री [**दे**] १ व्रत-विशेष ; २ उत्सव-विशेष ; (दे ३, ३७)।
छिप्पंदूर न [**दे**] १ गोमय-खण्ड, गोबर-खण्ड ; २ वि. विषम, कठिन ; (दे ३, ३८)।
छिप्पाल पुं [**दे**] सस्यासक्त बैल, खाने में लगा हुआ बैल ; (दे ३, ३८)।
छिप्पालुअ न [**दे**] पूँछ, लाङ्गूल ; (दे ३, २९)।
छिप्पिंडी स्त्री [**दे**] १ व्रत-विशेष ; २ उत्सव-विशेष ; ३ पिष्ट, पिसान ; (दे ३, ३७)।
छिप्पिअ वि [**दे**] क्षरित, झरा हुआ, टपका हुआ; (पाअ)।
छिप्पीर न [**दे**] पलाल, तृण ; (दे ३, २८)।
छिप्पोल्ली स्त्री [**दे**] अजादि की विष्ठा ; (निचू १)।
छिमिछिमिछिम अक [**छिमिछिमाय्**] छिम छिम आवाज करना। वकृ—**छिमिछिमिछिमंत** ; (पउम २६, ४८)।
छिरा स्त्री [**शिरा**] नस, नाडी, रग ; (ठा २,१ ; हे १,२६६)।
छिरि पुं [**दे**] भालूक का आवाज; (पउम ६४, ४५)।
छिल्ल न [**दे**] १ छिद्र, विवर ; (दे ३, ३५ ; षड्)। २ कुटी, कुटिया, छोटा घर; ३ बाड़ का छिद्र; (दे ३,३५)। ४ पलाश का पेड़ ; (ती ६)।
छिल्लर न [**दे**] पल्वल, छोटा तलाव ; (दे ३, २८ ; सुर ४, २२६)।
छिल्ली स्त्री [**दे**] शिखा, चोटी ; (दे ३, २७)।
छिव सक [**स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना। **छिवइ** ; (हे ४, १८२)। कर्म— छिप्पइ, छिविज्जइ ; (हे ४, २५७)।

वक्र—**छिवंत** ; (गा २६६)। कवक्र —**छिप्पंत, छिविज्जमाण** ; (कुमा ; गा ४४३ ; स ६३२ ; श्रा १२)।

छिवट्ठ [**दे**] देखो **छेवट्ठ** ; (कम्म २, ४)।

छिवण न [**स्पर्शन**] स्पर्श, छूना; (उप १८७ टी; ६७७)।

छिवा स्त्री [**दे**] श्लक्ष्ण कश, चीकना चाबुक; "छिवापहारे य" (णाया १, २—पत्र ८६ ; पण्ह १, ३ ; विपा १,६)।

छिवाडिआ } स्त्री [**दे**] १ वल्ल वगैरः की फली, सीम; **छिवाडी** } (जं१)। २ पुस्तक विशेष, पतले पन्ने वाला ऊँचा पुस्तक, जिसके पन्ने विशेष लंबे और कम चौड़े हों ऐसा पुस्तक ; (ठा ४, २ ; पव ८०)।

छिविअ त्रि [**स्पृष्ट**] १ छूआ हुआ; (दे ३, २७)। २ न. स्पर्श, छूना ; (से २, ८)।

छिविअ न [**दे**] ईख का टुकड़ा ; (दे ३, २७)।

छिवोल्लअ [**दे**] देखो **छिव्वोल्ल** ; (गा ६०५ अ)।

छिव्व वि [**दे**] कृत्रिम, बनावटी ; (दे ३, २७)।

छिव्वोल्ल न [**दे**] १ निन्दार्थक मुख-विकूणन, अरुचि-प्रकाशक मुख-विकार-विशेष ; २ विकूणित मुख ; (दे ३, २८)।

छिह सक [**स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना। छिहइ ; (हे ४, १८२)।

छिहंड न [**शिखण्ड**] मयूर की शिखा; (णाया १, १—पत्र ५७ टी)।

छिहंडअ पुं [**दे**] दही का बना हुआ मिष्टान्न, दधिसर ; गुजराती में जिसे 'सिखंड' कहते हैं ; (दे ३, २६)।

छिहंडि पुं [**शिखण्डिन्**] १ मयूर, मोर । २ वि. मयूर-पिच्छ को धारण करने वाला ; (णाया १,१ —पत्र ५७टी)।

छिहली स्त्री [**दे**] शिखा, चोटी ; (बृह ४)।

छिहा स्त्री [**स्पृहा**] स्पृहा, अभिलाष; (कुमा; हे १,१२८; षड्)।

छिहिंडिभिल्ल न [**दे**] दधि, दही ; (दे ३, ३०)।

छिहिअ वि [**स्पृष्ट**] छूआ हुआ ; (कुमा)।

छीअ स्त्रीन [**क्षुत**] छिक्का, छींक; (हे १, ११२; २, १७ ; ओघ ६४३ ; पडि)। स्त्री—°**आ** ; (श्रा २७)।

छीअमाण वि [**क्षुवत्**] छींक करता ; (आचा २,२,३)।

छीण वि [**क्षीण**] क्षय-प्राप्त, कृश, दुर्बल ; (हे २, ३ ; गा ८४)।

छीर न [**क्षीर**] १ जल, पानी ; २ दुग्ध, दूध ; (हे २, १७ ; गा ५६७)। °**बिराली** स्त्री [°**बिडाली**] वनस्पति-विशेष, भूमि-कुष्माण्ड ; (पण्ण १—पत्र ३५)।

छीरल पुं [**क्षीरल**] हाथ से चलने वाला एक तरह का जन्तु, साँप की एक जाति; (पण्ह १, १)।

छीवोल्लअ [**दे**] देखो **छिव्वोल्ल** ; (गा ६०३)।

छु सक [**क्षुद्**] १ पीसना। २ पीलना। कर्म—छुज्जइ; (उव)। कवक्र—**छुज्जमाण** ; (संथा ६०)।

छुअ देखो **छीअ** ; (प्राप्र)।

छुई स्त्री [**दे**] बलाका, बक-पङ्क्ति; (दे ३, ३०)।

छुंछुई स्त्री [**दे**] कपिकच्छु, केवाँच का पेड़ ; (दे ३, ३४)।

छुंछुमुसय न [**दे**] रणरणक, उत्सुकता, उत्कण्ठा ; (दे ३, ३१)।

छुंद सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना। छुंदइ ; (हे ४, १६० ; षड्)।

छुंद वि [**दे**] बहु, प्रभूत ; (दे ३, ३०)।

छुक्कारण न [**धिक्कारण**] धिक्कारना, निंदा ; (बृह २)।

छुच्छ वि [**तुच्छ**] तुच्छ, क्षुद्र, हलका ; (हे १, २०४)।

छुच्छुक्कर सक [**छुच्छु + कृ**] 'छु छु' आवाज करना, श्वानादि को बुलाने को आवाज करना। छुच्छुक्करेंति; (आचा)।

छुज्जमाण देखो **छु**।

छुट्ट अक [**छुट्**] छूटना, बन्धन-मुक्त होना। छुट्टइ; (भवि)। छुट्टइ ; (धम्म ६ टी)।

छुट्ट वि [**छुटित**] छुटा हुआ, बन्धन-मुक्त ; (सुपा ४०७ ; सूक्त ८६)।

छुट्ट वि [**दे**] छोटा, लघु ; (पाअ)।

छुट्टण न [**छोटन**] छुटकारा, मुक्ति ; (श्रा २७)।

छुड्ड वि [**दे**] १ लिप्त ; २ क्षिप्त, फेंका हुआ ; (भवि)।

छुडु अ [**दे**] १ यदि, जो; (हे ४, ३८५; ४२२)। २ शीघ्र, तुरन्त ; (हे ४, ४०१)।

छुड्ड वि [**क्षुद्र**] क्षुद्र, तुच्छ, हलका, लघु ; (औप)।

छुड्डिया स्त्री [**क्षुद्रिका**] आभरण-विशेष ; (पण्ह २, ५—पत्र १५६ टी)।

छुण्ण वि [**क्षुण्ण**] १ चूर्णित, चूर २ किया हुआ ; २ विहत, विनाशित ; ३ अभ्यस्त ; (हे २, १७ ; प्राप्र)।

छुत्त वि [**छुप्त**] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (हे २, १३८ ; कुमा)।

छुत्ति स्त्री [**दे**] छूत, अशौच ; (सूक्त ८६)।

छुद्दहीर पुं [**दे**] १ शिशु, बच्चा, बालक ; २ शशी, चन्द्रमा ; (दे ३, ३८)।

छुद्दिया देखो **छुड्डिया** ; (पण्ह २, ५—पत्र १४६)।

छुद्द देखो **खुद्द** ; (प्राप्र) ।

छुद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित ; (सण) ।

छुन्न देखो **छुण्ण** ; "जंतम्मि पावमइणा छुन्ना छन्नेण कम्मेण" (संथा ५६) ।

छुप्पंत देखो **छुव** ।

छुब्भ अक [क्षुभ्] क्षुब्ध होना, विचलित होना । छुब्भंति ; (पि ६६) ।

छुब्भत्थ [दे] देखो **छोब्भत्थ** ; (दे ३, ३३) ।

छुभ देखो **छुह** । छुभइ, छुभेइ ; (महा ; रयण २०) । संकृ—**छुभित्ता** ; (पि ६६) ।

छुमा देखो **छमा** ; (दसचू १) ।

छुर सक [छुर्] १ लेप करना, लीपना । २ छेदन करना, छेदना । ३ व्याप्त करना ; (वा १२ ; पउम २८,२८) ।

छुर पुं [क्षुर] १ छुरा, नापित का अस्त्र ; २ पशु का नख, खुर ; ३ वृक्ष-विशेष, गोखरू ; ४ बाण, शर, तीर ; (हे २, १७ ; प्राप्र) । ५ न. तृण-विशेष; (पण्ण १) । °**घरय** न [°**गृहक**] नापित की छुरा वगैरः रखने की थैली; (निचू १)।

छुरण न [क्षुरण] अवलेपन ; (कप्पू) ।

छुरमड्डि पुं [दे] नापित, हजाम ; (दे ३, ३१) ।

छुरहत्थ पुं [दे. क्षुरहस्त] नापित, हजाम; (दे ३,३१) ।

छुरिआ स्त्री [दे] मृत्तिका, मिट्टी ; (दे ३, ३१) ।

छुरिआ } स्त्री [क्षुरिका] छुरी, चाकू ; (महा ; सुपा
छुरिगा } ३८१ ; स १४७) ।

छुरिय वि [छुरित] १ व्याप्त ; २ लिप्त ; (पउम २८,२८) ।

छुरी स्त्री [क्षुरी] छुरी, चाकू ; (दे २, ४ ; प्रासू ६५) ।

छुल्ल देखो **छुड्ड** ; (सुपा १५६) ।

छुव सक [छुप्] स्पर्श करना, छूना । कर्म—छुप्पइ, छुविज्जइ ; (हे ४, २४६) । कवकृ—**छुप्पंत** ; (उप ३३६ ; ७२८ टी) ।

छुह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना । छुहइ ; (उव; हे ४, १४३) । संकृ—**छोढूण, छोढूणं**; (स ८५; विसे ३०१) ।

छुहा स्त्री [सुधा] १ अमृत, पीयूष ; (हे १, २६५ ; कुमा) । २ खड़ी, मकान पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष, चूना ; (दे १, ७८ ; कुमा) । °**अर** पुं [°**कर**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (षड्) ।

छुहा स्त्री [क्षुध्] क्षुधा, भूख, बुभुक्षा ; (हे १, १७ ; दे २, ४२) ।

छुहाइअ वि [क्षुधित] भूखा, बुभुक्षित ; (पाअ) ।

छुहाउल वि [क्षुदाकुल] ऊपर देखो ; (गा ५८१) ।

छुहालु वि [क्षुधालु] ऊपर देखो; (उप पृ १६०; १५० टी)।

छुहिअ वि [क्षुधित] ऊपर देखो ; (उव ; उप ७२८ टी ; प्रासू १८०) ।

छुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ ; (दे ३, ३०) ।

छूढ वि [क्षिप्त] क्षिप्त, प्रेरित ; (हे २, ९२ ; १२७ ; कुमा) ।

छूहिअ न [दे] पार्श्व का परिवर्तन ; (षड्) ।

छेअ सक [छेदय्] १ छिन्न करना । २ तोड़वाना, छेदवाना । कर्म—छेइज्जंति; (पि ५४३) । संकृ—**छेएत्ता**; (महा) ।

छेअ पुं [दे] १ अन्त, प्रान्त, पर्यन्त ; (दे ३, ३८ ; पाअ; से ७, ४८ ; कम्म १, ३९)। २ देवर, पति का छोटा भाई; (दे ३, ३८) । ३ एक देश, एक भाग ; (से १, ७) । ४ निर्विभाग अंश ; (कम्म ४, ८२) ।

छेअ वि [छेक] निपुण, चतुर, हुशियार ; (पाअ ; प्रासू १७२ ; औप ; णाया १, १) । °**यरिय** पुं [°**ाचार्य**] शिल्पाचार्य, कलाचार्य ; (भग ७, ६) ।

छेअ पुं [छेद] १ नाश, विनाश ; "विज्जाच्छेओ कओ भद्द" (सुर ५, १६४) । २ खण्ड, विभाग ; (से १, ७) । ३ छेदन, कर्तन ; "जीहाछेअं" (गा १५३; से ७, ४८) । ४ छः जैन आगम-ग्रन्थ, वे ये हैं ;—निशीथसुत्र, महानिशीथसुत्र, दशा-श्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहारसुत्र, पञ्चकल्पसुत्र; (विसे २२९५) । ५ छिन्न विभाग, अलग किया हुआ अंश; (से ७, ४८) । ६ कमी, न्यूनता ; (पंचा १६) । ७ प्रायश्चित्त विशेष ; (ठा ४,१) । ८ शुद्धि-परीक्षा का एक अंग, धर्म-शुद्धि जानने का एक लक्षण, निर्दोष बाह्य आचरण ; "सो छेएण सुद्धोत्ति" (पंचव ३) । °**रिह** न [°**ार्ह**] प्रायश्चित्त-विशेष ; (ठा १०) ।

छेअअ } वि [छेदक] छेदन करने वाला, काटने वाला;
छेअग } (नाट ; विसे ५१३) ।

छेअण न [छेदन] १ खण्डन, कर्तन, द्विधा करण; (सम ३९; प्रासू १४०) । २ कमी, न्यूनता, ह्रास ; (आचा) । ३ शस्त्र, हथियार; (सुअ २, ३) । ४ निश्चायक वचन; (बृह १) ५ सूक्ष्म अवयव; (बृह १) । ६ जल-जीव विशेष ; (सुअ २, ३) ।

छेओवट्ठावण न [छेदोपस्थापन] जैन संयम-विशेष, बड़ी दीक्षा ; (नव २६ ; चा ११) ।

छेओवट्ठावणिय न [छेदोपस्थापनीय] ऊपर देखो ; (सक)।

छेंछई [दे] देखो **छिंछई** ; (गा ३०१)।
छेंड [दे] देखो **छिंड** ; (दे ३, ३५)।
छेंडा स्त्री [दे] १ शिखा, चोटी; २ नवमालिका, लता-विशेष; (दे ३, ३६)।
छेंडी स्त्री [दे] छोटी गली, छोटा रास्ता ; (दे ३, ३१)।
छेग देखो **छेअ**=छेक ; (दे ३, ४७)।
छेज्ज देखो **छिज्ज** ; (दस २ ; महा)।
छेण पुं [दे] स्तेन, चोर ; (षड्)।
छेत्त देखो **खेत** ; (गा ६ ; उप ३५७टी ; स १६४ ; भवि)।
छेत्तर न [दे] शूर्प वगैरः पुराना गृहोपकरण; (दे ३, ३२)।
छेत्तसोवणय न [दे] खेत में जागना ; (दे ३, ३२)।
छेत्तु वि [**छेत्त**] छेदने वाला, काटने वाला ; (आचा)।
छेद देखो **छेअ**=छेदय्। कर्म—छेदीअंति ; (पि ५४३)। संकृ—**छेदिऊण, छेदेत्ता** ; (पि ५८६ ; भग)।
छेद देखो **छेअ**=छेद ; (पउम ४४, ६७ ; औप ; वव १)।
छेदअ वि [**छेदक**] छेदने वाला ; (पि २३३)।
छेदोवट्ठावणिय देखो **छेओवट्ठावणिय** ; (ठा ३, ४)।
छेध पुं [दे] १ स्थासक, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का विलेपन ; २ चोर, चोरी करने वाला ; (दे ३, ३६)।
छेप्प न [दे. शेप] पुच्छ, लाङ्गूल ; (गा ६२ ; विपा १, २ ; गउड)।
छेभय पुं [दे] चन्दन आदि का विलेपन, स्थासक ; (दे ३,३२)।
छेल } **छेलग** } **छेलय** } पुंस्त्री [दे] अज, छाग, बकरा ; (दे ३, ३२ ; स १५०)। स्त्री—°**लिआ**, °**ली** ; (पि २३१ ; पण्ह १, १—पत्र १४)।
छेलावण न [दे] १ उत्कृष्ट हर्ष-ध्वनि ; २ बाल-क्रीडन ; ३ चीत्कार, ध्वनि-विशेष ; "छेलावणमुक्किट्ठाइ बालकीलावणं च सेंटाइ" (आवम)।
छेलिय न [दे] सेण्टित, चीत्कार करना, अव्यक्त ध्वनि-विशेष; (पण्ह १, ३ ; विसे ५०१)।
छेली स्त्री [दे] थोड़े फूल वाली माला ; (दे ३, ३१)।
छेवग न [दे] मारी वगैरः फैली हुई बिमारी ; (वव ५ ; निचू १)।
छेवट्ट } **छेवट्ठ** } न [दे. **सेवार्त्त, छेदवृत्त**] १ संहनन-विशेष, शरीर-रचना-विशेष, जिसमें मर्कट-बन्ध, बेठन, और खीला न हो कर यों ही हड्डियाँ आपस में जुडी हों ऐसी शरीर-रचना ; (सम ४४ ; १४६ ; भग ; कम्म १, ३६)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पूर्वोक्त संहनन की प्राप्ति होती है वह कर्म ; (कम्म १, ३६)।
छेवाडी [दे] देखो **छिवाडी** ; (पत्र ८० ; निचू १२ ; जीव ३)।
छेह पुं [दे. क्षेप] प्रेरण, क्षेपण ; "तो वअपरिणामोणअभुमआवलिरुब्भमाणदिट्ठिच्छेहो" (से ४, १७)।
छेहत्तरि (अप) देखो **छाहत्तरि** ; (पिंग)।
छोइअ पुं [दे] दास, नौकर ; (दे ३, ३३)।
छोइआ स्त्री [दे] छिलका, ईख वगैरः की छाल; (उप ७६८ टी), "उच्छुखंडे पत्थिए छोइयं पणामेइ"(महा)।
छोड सक [**छोटय्**] छोड़ना, बन्धन से मुक्त करना। छोडइ, छोडेइ ; (भवि ; महा)। संकृ—**छोडिवि**; (सुपा २४६)।
छोडाविय वि [**छोटित**] छुड़वाया हुआ, बन्धन-मुक्त कराया हुआ ; (स ६२)।
छोडि स्त्री [दे] छोटी, लघु, क्षुद्र ; (पिंग)।
छोडिअ वि [**छोटित**] १ छोड़ा हुआ, बन्धन-मुक्त किया हुआ; "वत्थाओ छोडिओ गंठी" (सुपा ५०४; स ४३१)। २ घट्टित, आहत ; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।
छोडिअ देखो **फोडिअ** ; (औप)।
छोढूण } **छोढूण** } देखो **छुह**।
छोब्भ पुं [दे] पिशुन, खल, दुर्जन ; (दे ३, ३३)। देखो **छोभ**।
छोब्भ वि [**क्षोभ्य**] क्षोभ-योग्य, क्षोभणीय , "होंति सत्तपरिवज्जिया य छोभा(? ब्भा) सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया" (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।
छोब्भत्थ वि [दे] अप्रिय, अनिष्ट ; (दे ३, ३३)।
छोब्भाइत्ती स्त्री [दे] १ अस्पृश्या, छूने को अयोग्या ; २ द्वेष्या, अप्रीतिकर स्त्री ; (दे ३, ३६)।
छोभ [दे] देखो **छोब्भ** ; (दे ३, ३३ टि)। २ निस्सहाय, दीन ; (पण्ह १, ३—पत्र ५५)। ३ न. अभ्याख्यान, कलंक-आरोपण, दोषारोप ; (बृह १ ; वव २)। ४ न. वन्दन-विशेष, दो खमासमण-रूप वन्दन ; (गुभा १)। ५ आघात; "कोवेण धमधमंतो दंतच्छोभे य देइ सो तम्मि" (महा)।
छोम देखो **छउम** ; (णाया १, ६—पत्र १५७)।
छोयर पुं [दे] छोरा, लड़का, छोकरा ; (उप पृ २१५)।
छोलिअ देखो **छोडिअ**=छोटित ; (पिंग)।

छोल्ल सक [**तक्ष्**] छीलना, छाल उतारना। छोल्लइ; (षड्)। कर्म—छोल्लिज्जंतु ; (हे ४, ३९५)।
छोल्लण न [**तक्षण**] छीलना, निस्तुषीकरण, छिलका उतारना ; (गाया १, ७)।
छोल्लिय वि [**तष्ट**] छिलका उतारा हुआ, तुष-रहित किया हुआ ; (उप १७५)।
छोह पुं [**दे**] १ समूह, यूथ, जत्था ; २ विक्षेप ; (दे ३, ३९)। ३ आघात ; "ताव य सो मायंगो छोहं जा देइ उत्तरिज्जम्मि" (महा)।
छोह पुं [**क्षेप**] १ क्षेपण, फेंकना ; "नियदिट्ठिच्छोहअमय-धाराहिं" (सुपा २९८)।
छोहर [**दे**] देखो **छोयर** ; (सुपा ५५२)।
छोहिय वि [**क्षोभित**] क्षोभ-प्राप्त, घबड़ाया हुआ, व्याकुल किया गया ; (उप १३७ टी)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि छआराइसद्दसंकलणो पंचदसमो तरंगो समत्तो।

ज

ज पुं [**ज**] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा ; प्राप)।
ज स [**यत्**] जो, जो कोई ; (ठा ३, १ ; जी ८ ; कुमा ; गा १०६)।
°**ज** वि [°**ज**] उत्पन्न ; "आलाइयरत्तलेओ होइ विसेसेण णेहजो दहणो" (गा ७९९)। "आरंभज"— (आचा)।
जअड अक [**त्वर्**] त्वरा करना, शीघ्रता करना। जअडइ; (हे ४, १७० ; षड्)। वकृ—**जअडंत** ; (हे ४, १७०)। प्रयो— जअडावंति ; (कुमा)।
जअल वि [**दे**] छन्न, आच्छादित ; (षड्)।
जइ पुं [**यति**] १ साधु, जितेन्द्रिय, संन्यासी ; (औप ; सुपा ४४४)। २ छन्द-शास्त्र में प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, कविता का विश्राम-स्थान ; (धम्म १ टी)।
जइ अ [**यदा**] जिस समय, जिस वख्त ; (प्राप्र)।
जइ अ [**यदि**] यदि, जो ; (सम १५५; विपा १,१)।
°**वि** अ [°**अपि**] जो भी ; (महा)।
जइ अ [**यत्र**] जहां, जिस स्थान में ; (षड्)।
जइ वि [**जयिन्**] जीतने वाला, विजयी ; (कुमा)।
जइआ अ [**यदा**] जिस समय, जस वख्त ; (उव ; हे ३, ६५)।
जइच्छा स्त्री [**यदृच्छा**] १ स्वतन्त्रता ; २ स्वेच्छाचार ; (राज)।
जइण वि [**जैन**] १ जिन-देव का भक्त, जिन-धर्म ; २ जिन भगवान् का, जिन-देव से संबन्ध रखने वाला; (विसे ३८३ ; धम्म ६ टी; सुर ८, ९४)। स्त्री—°**णी**; (पंचा ३)।
जइण वि [**जयिन्**] जीतने वाला; "मणपवणजइणवेगं" (उत्ता ; गाया १, १—पत्र ३१)।
जइण वि [**जविन्**] वेग वाला, वेग-युक्त, त्वरा-युक्त; "उवइयउप्पइयचवलजइणसिग्घवेगाहिं" (औप)।
जइत्त वि [**जैत्र**] १ जीतने वाला, विजयी ; (ठा ६)। २ पुं. नृप-विशेष; (रंभा)।
जइत्ता देखो **जय**=जि।
जइय वि [**जयिक**] जयावह, विजयी; (गाया १, ८—पत्र १३३)।
जइय वि [**यष्टृ**] याग करने वाला; "तुब्भे जइया जन्नाणं" (उत्त २५, ३८)।
जइयव्व देखो **जय**=यत्।
जइवा अ [**यदिवा**] अथवा, या; (वव १)।
जइस (अप) वि [**यादृश**] जैसा, जिस तरह का; (षड्)।
जउ न [**जतु**] लाक्षा, लाख ; (ठा ४,४ ; उप पृ २४)।
जउ पुं [**यदु**] १ स्वनाम-ख्यात एक राजा ; २ सुप्रसिद्ध क्षत्रिय वंश ; (उत्त)। °**णंदण** पुं [°**नन्दन**] १ यदु-वंशीय, यदुवंश में उत्पन्न। २ श्रीकृष्ण ; (उत्त)।
जउ पुं [**यजुष्**] वेद-विशेष, यजुर्वेद , (अणु)।
जउण पुं [**यमुन**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ; (उप ४५७)।
जउणा, **जउण**°, **जउणा** स्त्री [**यमुना**] भारत की एक प्रसिद्ध नदी ; (ठा १, २ ; हे १, ४ ; १७८)।
जओ अ [**यतः**] १ क्योंकि, कारण कि ; (श्रा २८)। २ जिससे, जहां से; (प्रासू ८२, १४८)।
जं अ [**यत्**] १ क्योंकि, कारण कि ; २ वाक्यान्तर का संबन्ध-सूचक अव्यय ; (हे १, २४ ; महा ; गा ६६)।
°**किंचि** अ [°**किञ्चित्**] १ जो कुछ, जो कोई; (पडि ; पण्ह १, ३)। २ असंबद्ध, अयुक्त, तुच्छ, नगण्य; (पंचव४)।

जंकयसुकय वि [दे] अल्प सुकृत से ग्राह्य, थोड़े उपकार से अधीन होने वाला ; (दे ३, ४५)।

जंगम वि [जंगम] १ चलने वाला, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में जा सकता हो वह (ठा ६ ; भवि)। २ छन्द विशेष ; (पिंग)।

जंगल पुं [जङ्गल] १ देश-विशेष, सपादलक्ष देश ; (कुमा ; सत्त ६७ टी)। २ निर्जल प्रदेश ; (बृह १)। ३ न. मांस; "गयकुंभवियारियमोत्तिएहिं जं जंगलं किणइ" (वज्जा ४२)।

जंगा स्त्री [दे] गोचर-भूमि, पशुओं को चरने की जगह ; (दे ३, ४०)।

जंगिअ वि [जाङ्गमिक] १ जंगम वस्तु से संबन्ध रखने वाला, जंगम-संबन्धी। २ न. जंगम जीवों के रोम का बना हुआ कपड़ा; (ठा ३, ३ ; ५, ३ ; कस)।

जंगुलि स्त्री [जाङ्गुलि] विष उतारने का मन्त्र, विष-विद्या ; (ती ४५)।

जंगुलिय पुं [जाङ्गुलिक] गारुडिक, विष-मन्त्र का जानकार ; (पउम १०५, ५७)।

जंगोल स्त्रीन [जाङ्गुल] विष-विघातक तन्त्र, विष-विद्या, आयुर्वेद का एक विभाग जिसमें विष को चिकित्सा का प्रतिपादन है; (विपा १, ७—पत्र ७५)। स्त्री—°ली ; (ठा ८)।

जंघा स्त्री [जङ्घा] जाँघ, जानु के नीचे का भाग ; (आचा ; कप्प)। °**चर** वि [°चर] पादचारी, पैर से चलने वाला ; (अणु)। °**चारण** पुं [°चारण] एक प्रकार के जैन मुनि, जो अपने तपोबल से आकाश में गमन कर सकते हैं ; (भग २०, ८ ; पव ६७)। °**संतारिम** वि [°संतार्य] जाँघ तक पानी वाला जलाशय ; (आचा २, ३, २)।

जंघाच्छेअ पुं [दे] चत्वर, चौक ; (दे ३, ४३)।

जंघामय } वि [दे] जंघाल, द्रुत-गामी, वेग से जाने
जंघालुअ } वाला ; (दे ३, ४१ ; षड्)।

जंत सक [यन्त्र्] १ वश करना, काबू में करना। २ जकड़ना, बाँधना ; (उप पृ १३१)।

जंत न [यन्त्र] १ कल, युक्ति-पूर्वक शिल्प आदि कर्म करने के लिए पदार्थ-विशेष, तिल-यन्त्र, जल-यन्त्र आदि; (जीव ३; गा ५५४; पडि; महा; कुमा)। २ वशीकरण, रक्षा वगैरः के लिए किया जाता लेख-प्रयोग; (पण्ह १, २)। ३ संयमन, नियन्त्रण ; (राय)। °**पत्थर** पुं [°प्रस्तर] गोफण का पत्थर ; (पण्ह १, २)। °**पिल्लणकम्म** न [°पीडनकर्मन्] यन्त्र द्वारा तिल, ईख आदि पीलने का धंधा ; (पडि)। °**पुरिस** पुं [°पुरुष] यन्त्र-निर्मित पुरुष, यन्त्र से पुरुष की चेष्टा करने वाला पुतला ; (आवम)। °**वाडचुल्ली** स्त्री [°पाटचुल्ली] इक्षु-रस पकाने का चुल्हा ; (ठा ८—पत्र ४१७)। °**हर** न [°गृह] धारा-गृह, पानी का फवारा वाला स्थान ; (कुमा)।

जंत देखो **जा = या**।

जंतण न [यन्त्रण] १ नियन्त्रण, संयमन, काबू। २ रोकने वाला, प्रतिरोधक , (से ४, ४६)।

जंतिअ पुं [यान्त्रिक] यन्त्र-कर्म करने वाला, कल चलाने वाला ; (गा ५५४)।

जंतिअ वि [यन्त्रित] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ ; (पउम ५३, १४५)।

जंतु पुं [जन्तु] जीव, प्राणी ; (उत्त ३ ; सण)।

जंतुग न [जन्तुक] जलाशय में होने वाला तृण-विशेष (पण्ह २, ३— पत्र १२३)।

जंप सक [जल्प्] बोलना, कहना। जंपइ ; (प्राप्र)। वकृ—**जंपंत, जंपमाण** ; (महा ; गा १६८ ; सुर ४, २)। संकृ—**जंपिऊण, जंपिऊणं, जंपिय** ; (प्राकृ ; महा)। हेकृ—**जंपिउं** ; (महा)। कृ—**जंपिअव्व** ; (गा २४२)।

जंपण न [जल्पन] उक्ति, कथन ; (श्रा १२ ; गउड)।

जंपण न [दे] १ अकीर्ति अपयश ; २ मुख, मुँह ; (दे ३, ५१ ; भवि)।

जंपय वि [जल्पक] बोलने वाला, भाषक ; (पण्ह १, ३)।

जंपाण न [जम्पान] १ वाहन-विशेष, सुखासन, शिबिका-विशेष ; (ठा ४, ३ ; औप ; सुपा ३६३ ; उप ६५६)। २ मृतक-यान, शव-यान ; (सुपा २१६)।

जंपिच्छय वि [दे] जिसको देखे उसी को चाहने वाला ; (दे ३, ४४ ; पाअ)।

जंपिय वि [जल्पित] कथित, उक्त ; (प्रासू १३०)।

जंपिय देखो **जंप**।

जंपिर वि [जल्पितृ] १ जल्पाक, वाचाट ; (दे २, ६७)। २ बोलने वाला, भाषक ; (हे २, १४५ ; श्रा २७ ; गा १६२ ; सुपा ४०२)।

जंपेक्खिरमग्गिर } वि [दे] जिसको देखे उसीकी याचना करने
जंपेच्छिरमग्गिर } वाला ; (षड् ; दे ३, ४४)।

जंबवई स्त्री [**जाम्बवती**] श्रीकृष्ण की एक पत्नी ; (अंत १४; आचू १) ।

जंवाल न [**दे**] १ जंबाल, सेवाल, जलमल, सिबार ; (दे ३, ४२ ; पाअ) ।

जंबाल पुंन [**जम्बाल**] १ कर्दम, कादा, पंक ; (पाअ ; ठा ३, ३) । २ जरायु, गर्भ-वेष्टन चर्म ; (सूअ १, ७)।

जंबीरिय (अप) न [**जम्बीर**] नींबु, फल-विशेष ; (सण)।।

जंबु पुं [**जम्बु**] १ जम्बुक, सियार ; " उद्धमुहुन्नइयजंबुगणं" (पउम १०५, ५७) । २ एक प्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी के शिष्य, अन्तिम केवली ; (कप्प ; वसु ; विपा १, १) । ३ न. जम्बू वृक्ष का फल ; (श्रा ३६)।

जंबु° देखो **जंबू** ; (कप्प ; कुमा ; इक ; पउम ५६, २२ ; से १३, ८६) ।

जंबुअ पुं [**दे**] १ वेतस वृक्ष; २ पश्चिम दिक्पाल; (दे ३, ५२)।

जंबुअ } पुं [**जम्बुक**] १ सियार, गीदड़ ; (प्रासू १७१;
जंबुग } उप ७६८ टी ; पउम १०५, ६४) । २ जम्बू-वृक्ष का फल, जामुन ; (सुपा २२६) ।

जंबुल पुं [**दे**] १ वानीर वृक्ष ; २ न. मद्य-भाजन, सुरा-पात्र ; (दे ३, ४१) ।

जंबुल्ल वि [**दे**] जल्पाक, वाचाट , बकवादी ; (पाअ)।

जंबुवई देखो **जंबवई** ; (अंत ; पडि) ।

जंबू स्त्री [**जम्बू**] १ वृक्ष-विशेष, जामुन का पेड़ ; (णाया १, १ ; औप) । २ जंबू वृक्ष के आकार का एक रत्न-मय शाश्वत पदार्थ, सुदर्शना, जिसके कारण यह द्वीप जंबूद्वीप कहलाता है ; (जं १) । ३ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी का मुख्य शिष्य ; (जं १) । **°दीव** पुं [**°द्वीप**] भूखण्ड विशेष, द्वीप-विशेष, सब द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप, जिसमें यह भारत आदि क्षेत्र वर्तमान हैं ; (जं १; इक) । **°दीवग** वि [**°द्वीपक**] जम्बू-द्वीप-संबन्धी, जम्बूद्वीप में उत्पन्न ; (ठा ४, २; ६) । **°दीवपण्णत्ति** स्त्री [**°द्वीपप्रज्ञप्ति**] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष, जिसमें जंबूद्वीप का वर्णन है; (जं १) । **°पीढ**, **°पेढ** न [**°पीठ**] सुदर्शना-जम्बू का अधिष्ठान-प्रदेश; (जं ४; इक) । **°पुर** न [**°पुर**] नगर-विशेष ; (इक)। **°मालि** पुं [**°मालिन्**] रावण का एक पुत्र , रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, २२ ; से १३ , ८६) । **°मेघपुर** न [**°मेघपुर**] विद्याधर-नगर विशेष ; (इक) । **°संड** पुं [**°षण्ड**] ग्राम-विशेष ; (आवम) । **°सामि** पुं [**°स्वामिन्**] सुप्रसिद्ध जैन मुनि-विशेष ; (आवम) ।

जंबूअ पुं [**जम्बूक**] सियार, गीदड़ ; (ओघ ८४ भा) ।

जंबूणय न [**जाम्बूनद**] १ सुवर्ण, सोना ; (सम ६५ ; पउम ५. १२६) । २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ; (पउम ४८, ६८) ।

जंबूलय पुंन [**जम्बूलक**] उदक-भाजन विशेष; (उवा)।

जंभ पुं [**दे**] तुष, धान्य वगैरः का छिलका ; (दे ३,४०)।

जंभंत देखो **जंभा**=जृम्भ् ।

जंभग वि [**जृम्भक**] १ जँभाई लेने वाला । २ पुं. व्यन्तर-देवों की एक जाति ; (कप्प ; सुपा ४०) ।

जंभणंभण }
जंभणभण } वि [**दे**] स्वच्छन्द-भाषी, जो मरजी में आवे वह बोलने वाला ; (षड् ; दे ३, ४४) ।
जंभणय }

जंभणी स्त्री [**जृम्भणी**] तन्त्र-प्रसिद्ध विद्या-विशेष ; (सूअ २, २ ; पउम ७, १४४) ।

जंभय देखो **जंभग**; (णाया १, १ ; अंत; भग १४, ८)।

जंभल पुं [**दे**] जड़, सुस्त, मन्द ; (दे ३, ४१) ।

जंभा स्त्री [**जृम्भा**] जँभाई, जृम्भण ; (विपा १, ८) ।

जंभा } अक [**जृम्भ्**] जँभाई लेना । जंभाइ, जंभाअइ;
जंभाअ } (हे ४, १५७ ; २४० ; प्राप्र ; षड्) । वकृ—**जंभंत, जंभाअंत**; (गा ५४६ ; से ७, ६५ ; कप्प) ।

जंभाइअ न [**जृम्भित**] जँभाई, जृम्भा ; (पडि) ।

जंभिअ न [**जृम्भित**] १ जँभाई, जृम्भा । २ पुं. ग्राम-विशेष, जहां भगवान् महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था ; यह गाँव पारसनाथ पहाड़ के पास की ऋजुवालिका नदी के किनारे पर था ; (कप्प) ।

जक्ख पुं [**यक्ष**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १, ४ ; औप) । २ धनेश, कुबेर, यक्षाधिपति ; (प्राप्र)। ३ एक विद्याधर-राजा, जो रावण का मौसेरा भाई था ; (पउम ८, १०२) । ४ द्वीप-विशेष ; ५ समुद्र-विशेष; (चंद २०) । ६ श्वान, कुत्ता ; " अह आयविराहणया जक्खुल्लिहणे पवयणम्मि " (ओघ १६३ भा) । **°कद्दम** पुं [**°कर्दम**] १ केसर, अगर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी का समभाग मिश्रण ; (भवि) । २ द्वीप-विशेष ; ३ समुद्र-विशेष; (चंद २०)। **°ग्गह** पुं [**°ग्रह**] यक्षावेश, यक्ष-कृत उपद्रव; (जीव ३; जं २) । **°णायग** पुं [**°नायक**]

यक्षों का अधिपति, कुबेर; (अणु)। °दित्त न [°दीप्त] देखो नीचे °लित्तय; (पव २६)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] महर्षि स्थूलभद्र की बहिन, एक जैन साध्वी; (पडि)। °भद्द पुं [°भद्र] यक्षद्वीप का अधिपति देव-विशेष; (चंद २०)। °मंडलपविभत्ति स्त्री [°मण्डलप्रविभक्ति] एक तरह का नाट्य; (राय)। °मह पुं [°मह] यक्ष के लिए किया जाता महोत्सव; (आचा २, १, २)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] यक्ष द्वीप का अधिपति देव; (चंद २०)। °महावर पुं [°महावर] यक्ष समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष; (चंद २०)। °राय पुं [°राज] १ यक्षों का राजा, कुबेर। २ प्रधान यक्ष; (सुपा ४६२)। ३ एक विद्याधर राजा; (पउम ८, १२४)। °वर पुं [°वर] यक्ष-समुद्र का अधिपति देव-विशेष; (चंद २०)। °इट्ठ वि [°आविष्ट] यक्ष का आवेश वाला, यक्षाधिष्ठित; (ठा ५, १; वव २)। °दित्तय, °लित्तय न [°दीप्तक] १ कभी २ किसी दिशा में बिजली के समान जो प्रकाश होता है वह, आकाश में व्यन्तर-कृत अग्नि-दीपन; (भग ३, ६; वव ७)। २ आकाश में दिखाता अग्नि-युक्त पिशाच; (जीव ३)। °वेस पुं [°वेश] यक्ष-कृत आवेश, यक्ष का मनुष्य-शरीर में प्रवेश; (ठा १, १)। °हिव पुं [°धिप] १ वैश्रमण, कुबेर, यक्ष-राज। २ एक विद्याधर राजा; (पउम ८, ११३)। °हिवइ पुं [°धिपति] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (पाअ; पउम ८, ११६)।

जक्खरत्ति स्त्री [दे. यक्षरात्रि] दीपालिका, दीवाली, कार्तिक वदि अमास का पर्व; (दे ३, ४३)।

जक्खा स्त्री [यक्षा] एक प्रसिद्ध जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी; (पडि)।

जक्खिंद पुं [यक्षेन्द्र] १ यक्षों का स्वामी, यक्षों का राजा; (ठा ४, १)। २ भगवान् अरनाथ का शासनाधिष्ठायक देव; (पव २६; संति ८)।

जक्खिणी स्त्री [यक्षिणी] १ यक्ष-योनिक स्त्री, देवीओं की एक जाति; (आवम)। २ भगवान् श्रीनेमिनाथ की प्रथम शिष्या; (सम १५२)।

जक्खी स्त्री [याक्षी] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।

जक्खुत्तम पुं [यक्षोत्तम] यक्ष-देवों की एक अवान्तर जाति; (पण्ण १)

जक्खेस पुं [यक्षेश] १ यक्षों का स्वामी। २ भगवान् अभिनन्दन का शासन-यक्ष; (संति ७)।

जग न [यकृत्] पेट की दक्षिण-ग्रन्थि; (पण्ह १, १)।

जग पुं [दे] जन्तु, जीव, प्राणी; "पुढो जगा परिसंखाय भिक्खू" (सूअ १, ७, २०)।

जग न [जगत्] जग, संसार, दुनियाँ; (स २४६; सुर २, १३१)। °गुरु पुं [°गुरु] १ जगत् में सर्व-श्रेष्ठ पुरुष; २ जगत् का पूज्य; ३ जिन-देव, तीर्थंकर; (सं २१; पंचा ४)। °जीवण वि [°जीवन] १ जगत् को जीलाने वाला; २ पुं. जिन-देव; (राज)। °णाह पुं [°नाथ] जगत् का पालक, परमेश्वर, जिन-देव; (गांदि)। °पियामह पुं [°पितामह] १ ब्रह्मा, विधाता। २ जिन-देव; (गांदि)। °प्पगास वि [°प्रकाश] जगत् का प्रकाश करने वाला, जगत्प्रकाशक; (पउम २२, ४७)। °प्पहाण न [°प्रधान] जगत् में श्रेष्ठ; (गउड)।

जगई स्त्री [जगती] १ प्राकार, किला, दुर्ग; (सम १३; चेइय ६१)। २ पृथिवी; (उत्त १)।

जगजग अक [चकास्] चमकना, दीपना। वकृ—**जगजगंत, जगजगेंत**; (पउम ७७, २३; १४, १३४)।

जगड सक [दे] १ झगड़ना, झगड़ा करना, कलह करना। २ कदर्थन करना, पीड़ना। ३ उठाना, जागृत करना। वकृ—**जगडंत**; (भवि)। कवकृ—**जगडिज्जंत**; (पउम ८२, ६; राज)।

जगडण न [दे] नीचे देखो; (उव)।

जगडणा स्त्री [दे] १ झगड़ा, कलह। २ कदर्थन, पीड़न; "सेणा च्चिय वम्महणायगस्स जगजगडणापसत्तस्स" (उप ५३० टी)।

जगडिअ वि [दे] विद्रावित, कदर्थित; (दे ३, ४४; सार्ध ६७; उव)।

जगर पुं [जगर] संनाह, कवच, वर्म; (दे ३, ४१)।

जगल न [दे] १ पङ्क वाली मदिरा, मदिरा का नीचला भाग; (दे ३, ४१)। २ ईख की मदिरा का नीचला भाग; (दे ३, ४१; पाअ)।

जगार पुं [दे] राब, यवागू; (पत्र ४)।

जगार पुं [जकार] 'ज' अक्षर, 'ज' वर्ण; (निचू १)।

जगार पुं [यत्कार] 'यत्' शब्द; "जगारुद्दिट्ठाणं तगारेण निद्देसो कीरइ" (निचू १)।

जगारी स्त्री [**जगारी**] अन्न-विशेष, एक प्रकार का क्षुद्र अन्न ; "मसणं ओयणसत्तुगमुग्गजगारीइ" (पंचा ५)।

जगुत्तम वि [**जगदुत्तम**] जगत्-श्रेष्ठ, जगत् में प्रधान ; (पण्ह २, ४)।

जग्ग अक [**जागृ**] १ जागना, नींद से उठना। २ सचेत होना, सावधान होना। जग्गइ, जग्गि ; (हे ४, ८० ; षड् ; प्रासू ६८)। वकृ—**जग्गंत** ; (सुपा १८५)। प्रयो—जग्गावइ ; (पि ५५६)।

जग्गण न [**जागरण**] जागना, निद्रा-त्याग; (ओघ १०६)।

जग्गविअ वि [**जागरित**] जगाया हुआ, नींद से उठाया हुआ ; (सुपा ३३१)।

जग्गह पुं [**यद्ग्रह**] जो प्राप्त हो उसे ग्रहण करने की राजाज्ञा ; "रण्णा जग्गहो घोसिओ" (आवम)।

जग्गाविअ देखो **जग्गविअ** ; (से १०, ५६)।

जग्गाह देखो **जग्गह** ; (आक)।

जग्गिअ वि [**जागृत**] जगा हुआ, त्यक्त-निद्र ; (गा ३८५; कुमा ; सुपा ५६३)।

जग्गिर वि [**जागरितृ**] १ जागने वाला ; २ सावचेत रहने वाला ; (सुपा २१८)।

जघण न [**जघन**] कमर के नीचे का भाग, ऊरु-स्थल ; (कप्प ; औप)।

जच्च पुं [**दे**] पुरुष, मरद, आदमी ; (दे ३, ४०)।

जच्च वि [**जात्य**] १ उत्तम जात वाला, कुलीन, श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दर ; (णाया १, १; श्रा १२ ; सुपा ७७; कप्प)। २ स्वाभाविक, अकृत्रिम ; (तंदु)। ३ सजातीय, विजाति-मिश्रण से रहित, शुद्ध ; (जीव ३)।

जच्चंजण न [**जात्याञ्जन**] १ श्रेष्ठ अञ्जन ; (णाया १, १)। २ मर्दित अञ्जन, तैल वगैरः से मर्दित अञ्जन ; (कप्प)।

जच्चंदण न [**दे**] १ अगरु, सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है ; २ कंकुम, केसर ; (दे ३, ४२)।

जच्चंध वि [**जात्यन्ध**] जन्म से अन्धा; (सुपा ३६५)।

जच्चण्णिय } वि [**जात्यन्वित**] सुकुल में उत्पन्न, श्रेष्ठ
जच्चन्निय } जाति का ; (सूअ १, १० ; बृह ३)।

जच्चास पुं [**जात्यश्व, जात्याश्व**] उत्तम जाति का घोड़ा; (पउम ५४, २६)।

जच्चिय (अप) वि [**जातीय**] समान जाति का ; (सण)।

जच्चिर न [**यच्चिर**]जहाँ तक, जितने समय तक ; (वव ७)।

जच्छ सक [**यम्**] १ उपरम करना, विराम करना। २ देना, दान करना। जच्छइ ; (हे ४, २१५ ; कुमा)।

जच्छंद वि [**दे**] स्वच्छन्द, स्वैर ; (दे ३, ४३ ; षड्)।

जज देखो **जय**=यज्। वकृ—**जजमाण**; (नाट—शकु ७२)।

जजु देखो **जउ**= यजुष् ; (णाया १, ५ ; भग)।

जज्ज वि [**जय्य**] जो जीता जा सके वह, जीतने को शक्य; (हे २, २४)।

जज्जर वि [**जर्जर**] जीर्ण, सच्छिद्र, खोखला, जाँजर ; (गा १०१ ; सुर ३, १३६)।

जज्जर सक [**जर्जरय्**] जीर्ण करना, खोखला करना। कवकृ—**जज्जरिज्जंत, जज्जरिज्जमाण** ; (नाट—चैत ३३ ; सुपा ६४)।

जज्जरिय वि [**जर्जरित**] जीर्ण किया गया, छिद्रित, खोखला किया हुआ ; (ठा ४, ४ ; सुर ३, १६५ ; कस)।

जट्ट पुं [**जर्त**] १ देश-विशेष ; (भवि)। २ उस देश का निवासी ; (हे २, ३०)।

जट्ठ वि [**इष्ट**] यजन किया हुआ, याग किया हुआ ; (स ५५)।

जट्ठि स्त्री [**यष्टि**] लकड़ी ; "जट्ठिमुट्ठिलउडपहारेहिं" (महा; प्राप्र)।

जड वि [**जड**] १ अचेतन, जीव-रहित पदार्थ ; २ मूर्ख, आलसी, विवेक-शून्य ; (पाअ ; प्रासू ७१)। ३ शिशिर, जाड़े से ठंढा होकर चलने को अशक्त; (पाअ)।

जड देखो **जढ** ; (षड्)।

जड° } स्त्री [**जटा**] सटे हुए बाल, मिले हुए बाल ; (हेका
जडा } २५७ ; सुपा २५१)। °**धर** वि [°**धर**] १ जटा को धारण करने वाला। २ पुं. जटा-धारी तापस, संन्यासी ; (पउम ३६, ७५)। °**धारि** पुं [°**धारिन्**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (पउम ३३, १)।

जडाउ } पुं [**जटायु**] स्वनाम-प्रसिद्ध गृध्र पक्षि-विशेष ;
जडाउण } (पउम ४४, ५५ ; ४०)।

जडागि पुं [**जटाकिन्**] ऊपर देखो ; (पउम ४१, ६५)।

जडाल वि [**जटावत्**] जटा-युक्त, जटा-धारी ; (हे २, १५६)।

जडासुर पुं [**जटासुर**] असुर-विशेष ; (वेणी १७७)।

जडि वि [**जटिन्**] १ जटा वाला, जटा-युक्त; २ पुं जटाधारी तापस ; (औप ; भत्त १००)।

जडिअ वि [दे. जटित] जड़ित, जड़ा हुआ, खचित, संलग्न; (दे ३, ४१ ; महा ; पाअ) ।

जडिम पुंस्त्री [**जडिमन्**] जड़ता, जड़पन, जाड्य; (सुपा ६) ।

जडियाइलग } पुं [दे. **जटिकादिलक**] ग्रह-विशेष, ग्रहा-
जडियाइलय } धिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३; चंद २०) ।

जडिल वि [**जटिल**] १ जटा-वाला, जटा-युक्त ; (उवा ; कुमा २, ३५) । २ व्याप्त, खचित; "उल्लसियबहलजालोलिजडिले जलणे पवेसो वा" (सुपा ४६५) । ३ पुं. सिंह, केसरी ; ४ जटाधारी तापस ; (हे १, १६४ ; भग १५ ; पव ६४) ।

जडिलय पुं [**दे**] राहु, ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २०) ।

जडिलिय } वि [**जटिलित**] जटिल किया हुआ, जटा-
जडिलिल्ल } युक्त किया हुआ ; (सुपा १२५ ; २६६) ।

जड्ड न [**जाड्य**] जड़ता, जड़पन ; (उप ३२० टी ; सार्ध १३०) ।

जड्ड देखो **जड** ; (पव १०७ ; पंचभा) ।

जड्ड पुं [**दे**] हाथी, हस्ती; (ओघ २३८ ; बृह १) ।

जड्डा स्त्री [**दे**] जाड़ा, शीत ; (सुर १३, २१५; पिंग) ।

जढ वि [**त्यक्त**] परित्यक्त, मुक्त, वर्जित ; (हे ४, २५८; ओघ ६०) "जइवि न सम्मत्तजढो" (सत्त ७१ टी) ।

जढर } न [**जठर**] पेट, उदर ; (हे १, २५४ ; प्राप्र ;
जढल } षड्) ।

जण सक [**जनय्**] उत्पन्न करना, पैदा करना । जणेइ, जणंति ; (प्रासू १५ ; १०८ ; महा) । जणयंति ; (आचा) । वकृ—**जणंत, जणेमाण** ; (सुर १३, २१ ; द्र ३६ ; उव) ।

जण पुं [**जन**] १ मनुष्य, मानव, आदमी, लोग, व्यक्ति ; (औप ; आचा ; कुमा ; प्रासू ६ ; ६५ ; स्वप्न १६) । २ देहाती मनुष्य ; (सूअ १, १, २) । ३ समुदाय, वर्ग, लोक ; (कुमा ; पंचव ४) । ४ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ; "जेण सुहज्झप्पजणं" (विसे ६६०) । °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] जन-समागम, जन-संगति ; "जणजत्तारहियाणं होइ जइत्तं जईण सया" (दंस ४) । °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] १ दण्डकारण्य, दक्षिण का एक जंगल ; २ नगर-विशेष, नासिक ; (तो २८) । °**वइ** पुं [°**पति**] लोगों का मुखिया ; (औप) । °**वय** पुं [°**व्रज**] मनुष्य-समूह ; (पउम ४, ५) । °**वाय** पुं [°**वाद**] १ जन-श्रुति, किंवदन्ती ; (सुपा ३००) । २ मनुष्यों की आपस में चर्चा; (औप) । ३ लोकापवाद, लोक में निन्दा ; "जणवायभएणं" (आव १) । °**स्सुइ** स्त्री [°**श्रुति**] किंवदन्ती । °**ावाय** पुं [°**ापवाद**] लोक में निन्दा ;(गा ४८४) ।

जणइ स्त्री [**जनिका**] उत्पादिका, उत्पन्न करने वाली ; (कुमा) ।

जणइउ } पुं [**जनयितृ**] १ जनक, पिता; (राज) ।
जणइत्तु } २ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ; (ठा ४, ४) ।

जणउत्त पुं [**दे**] ग्राम का प्रधान पुरुष, गाँव का मुखिया ; (दे ३, ५२ ; षड्) । २ विट, भाण्ड; (दे ३, ५२) ।

जणंगम पुं [**जनङ्गम**] चाण्डाल, "रायाणो हुंति रंका य बंभणा य जणंगमा" (उप १०३१ टी ; पाअ) ।

जणग देखो **जणय** ; (भग ; उप पृ २१६ ; सुर १, २३७) ।

जणण न [**जनन**] १ जन्म देना, उत्पन्न करना , पैदा करना ; (सुपा ५६७ ; सुर ३, ६ ; द्र ५७) । २ वि. उत्पादक , जनक ; (उर ६, ६ ; कुमा ; भवि), "जण-मणपसायजणणा" (वसु) ।

जणणि } स्त्री [**जननि**, °**नी**] १ माता, अम्बा ; (सुर
जणणी } ३, २५ ; महा ; पाअ) । २ उत्पन्न करने वाली स्त्री, उत्पादिका ; (कुमा) ।

जणद्दण पुं [**जनार्दन**] श्रीकृष्ण, विष्णु ; (उप ६४८ टी; पिंग) ।

जणमेजअ पुं [**जनमेजय**] स्वनाम-प्रसिद्ध नृप-विशेष ; चारु १२) ।

जणय वि [**जनक**] १ उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ; "दिट्ठिविसं पिसुणाणं सव्वं सव्वस्स भयजणयं" (प्रासू १६)। २ पुं. पिता, बाप; (पाअ ; सुर ३, २५ ; प्रासू ७७) । ३ देखो **जण**=जन ; (सूअ १, ६) । ४ मिथिला का एक राजा, राजा जनक, सीता का पिता; (पउम २१,३३)। ५ पुंन. ब. माता-पिता, मा-बाप; "जं किंपि कोई साहइ, तज्जणयाइं कुणंति तं सव्वं" (सुपा ३५६ ; ५६८) । °**तणआ** स्त्री [°**तनया**] राजा जनक की पुत्री, राजा रामचन्द्र की पत्नी, सीता, जानकी ; (से १, ३७) । °**दुहिया**, °**धूआ** (°**दुहितृ**) वही अर्थ ; (पउम २३, ११ ; ४८, ४) । °**नंदण** पुं [°**नन्दन**] राजा जनक

का पुत्र, भामण्डल ; (पउम ६५, २५)। °नंदणी स्त्री [°नन्दनी] सीता, राम-पत्नी, जानकी; (पउम ६४, ४६)। °णंदिणी स्त्री [°नन्दिनी] वही अर्थ; (पउम ४५, १८)। °निवतणया स्त्री [°नृपतनया] राजा जनक की पुत्री, सीता ; (पउम ४८, ६०)। °पुत्ती स्त्री [°पुत्री] वही अर्थ ; (रयण ७८)। °सुअ पुं [°सुत] जनक राजा का पुत्र, भामण्डल ; (पउम ६५, २८)। °सुआ स्त्री [°सुता] जानकी, सीता ; (पउम ३७, ६२ ; से २, ३८ ; १०, ३)।

जणयंगया स्त्री [**जनकाङ्गजा**] जानकी, सीता, राजा रामचन्द्र की पत्नी ; (पउम ४१, ७८)।

जणवय पुं [**जनपद**] १ देश, राष्ट्र, जन-स्थान, लोकालय ; (औप)। २ देश-निवासी जन-समूह ; (पण्ह १, ३ ; आचा)।

जणवय वि [**जानपद**] देश में उत्पन्न, देश का निवासी; (आचा)।

जणि (अप) अ [**इव**] तरह, माफिक, जैसा ; (हे ४, ४४४ ; षड्)।

जणिअ वि [**जनित**] उत्पादित, उत्पन्न किया हुआ ; (पात्र)।

जणी स्त्री [**जनी**] स्त्री, नारी, महिला ; (गाया २—पत्र २५३ ; पउम १५, ७३)।

जणु देखो **जणि** ; (हे ४, ४४४; कुमा ; षड्)।

जणुक्कलिआ स्त्री [**जनोत्कलिका**] मनुष्यों का छोटा समूह ; (भग)।

जणुम्मि स्त्री [**जनोर्मि**] तरंग की तरह मनुष्यों की भीड़ ; (भग)।

जणेमाण देखो **जण**=जनय्।

जणेर (अप) वि [**जनक**] १ उत्पादक, पैदा करने वाला ; २ पुं. पिता, बाप ; (भवि)।

जणेरि (अप) स्त्री [**जननी**] माता, माँ; (भवि)।

जण्ण पुं [**यज्ञ**] १ यज्ञ, याग, मख, क्रतु ; (प्राप्र ; गा २२७)। २ देव-पूजा ; ३ श्राद्ध ; (जीव ३)। °इ, °जाइ वि [°याजिन्] यज्ञ करने वाला ; (औप ; निचू १)। °इज्ज वि [°ीय] १ यज्ञ-संबन्धी, यज्ञ का ; २ न. 'उत्तराध्ययन सूत्र' का एक प्रकरण ; (उत्त २५)। °ट्ठाण न [°स्थान] १ यज्ञ का स्थान ; २ नगर-विशेष, नासिक; (ती १०)। °मुह न [°मुख] यज्ञ का उपाय ; (उत्त २५)। °वाड पुं [°वाट] यज्ञ-स्थान; (गा २२७)। °सेट्ठ पुं [°श्रेष्ठ] श्रेष्ठ यज्ञ, उत्तम याग ; (उत्त १२)।

जण्णय देखो **जणय** ; (प्राप्र)।

जण्णयत्ता स्त्री [**दे. यज्ञयात्रा**] बरात, विवाह की यात्रा, वर के साथिओं का गमन ; (उप ६५४)।

जण्णसेणी स्त्री [**याज्ञसेनी**] द्रौपदी, पाण्डव-पत्नी ; (वेणी ३७)।

जण्णहर पुं [**दे**] नर-राक्षस, दुष्ट मनुष्य ; (षड्)।

जण्णिय पुं [**याज्ञिक**] याजक, यज्ञ करने वाला; (आवम)।

जण्णोवईय } न [**यज्ञोपवीत**] यज्ञ-सूत्र, जनेऊ ; (उत्त
जण्णोवचीय } २ ; आवम)।

जण्णोहण पुं [**दे**] राक्षस, पिशाच ; (दे ३, ४३)।

जण्ह न [**दे**] १ छोटी स्थाली; २ वि. कृष्ण, काले रंग का; (दे ३, ५१)।

जण्हई स्त्री [**जाह्नवी**] गंगा नदी, भागीरथी ; (अच्चु ६)।

जण्हली स्त्री [**दे**] नीवी, नारा, इजारबन्द ; (दे ३, ४०)।

जण्हवी स्त्री [**जाह्नवी**] १ सगर चक्रवर्ती की एक पत्नी, भगीरथ की जननी ; (पउम ५, २०१)। २ गङ्गा नदी, भागीरथी ; (पउम ४१, ५१; कुमा)।

जण्हु पुं [**जह्नु**] भरत-वंशीय एक राजा ; (प्राप्र; हे २, ७५)। °सुआ स्त्री [°सुता] गङ्गा नदी, भागीरथी; (पाअ)।

जण्हुआ स्त्री [**दे**] जानु, घुटना ; (पाअ)।

जत्त देखो **जय**=यत्। भवि—जत्तिहामि ; (निर १, १)।

जत्त पुं [**यत्न**] उद्योग, उद्यम, चेष्टा ; (उप पृ ५८)।

जत्ता स्त्री [**यात्रा**] १ देशान्तर-गमन, देशाटन ; (ठा ४, १ ; औप)। २ गमन, गति ; "जत्तति होइ गमणं" (पंचभा ; औप)। ३ देव-पूजा के निमित्त किया जाता उत्सव-विशेष, अष्टाहिका, रथयात्रा आदि; "हुं नायं पारद्धा सिद्धाययणेसु जत्ताओ" (सुर ३, ३८)। ४ तीर्थ-गमन, तीर्थ-भ्रमण ; (धर्म २)। ५ शुभ प्रवृत्ति ; (भग १८, १०)।

जत्ति स्त्री [**दे**] १ चिन्ता ; २ सेवा, सुश्रूषा ; "अजायणाए तज्जत्ती न कया तम्मि केणवि" (श्रा २८)।

जत्तिय वि [**यावत्**] जितना ; (प्रासू १५६; आवम)

जत्तो देखो **जओ** (हे २, १६०)।

जत्थ अ [**यत्र**] जहां, जिसमें ; (हे २, १६१ ; प्रासु ७६)।

जदि देखो **जइ**=यदि; (निचू २)।

जदिच्छा देखो **जइच्छा** ; (बृह ३ ; मा १२)।

जदु देखो **जउ**=यदु ; (कुमा ; ठा ८)।

जधा देखो **जहा** ; (ठा २, ३ ; ३, १)।

जन्न देखो **जण्ण** ; (पणह १, २ ; ४ ; पउम ११, ४६)।

जन्नत्ता, **जन्ना** स्त्री [**दे**] बरात ; गुजराती में 'जान' ; (सुपा ३६६ ; उप ७६८ टी)।

जन्नु देखो **जाणु** ; (पउम ६८, १०)।

जन्नोवईय देखो **जण्णोवईय**; (णाया १, १६ —पत्र२१३)।

जन्हवी देखो **जण्हवी** ; (ठा ६, ६)।

जप देखो **जव**=जप् ; (षड्)।

जपिर वि [**जपितृ**] जाप करने वाला; (षड्)।

जप्प देखो **जंप**। जप्पइ; (षड्)। जप्पंति ; (पि २६६)।

जप्प पुं [**जल्प**] १ उक्ति, कथन। २ छल का उपालम्भ रूप भाषण ; (राज)।

जप्प वि [**याप्य**] गमन कराने योग्य। °**जाण** न [°**यान**] वाहन-विशेष, शिबिका ; (दे ६, १२२)।

जप्पभिइ, **जप्पभिइं** अ [**यत्प्रभृति**] जब से, जहां से लेकर ; (णाया १, १; कप्प)।

जप्पिअ वि [**जल्पित**] १ उक्त, कथित ; (प्राप)। २ न. उक्ति, वचन ; (अच्चु २)।

जम सक [**यमय्**] १ काबू में रखना, नियंत्रण करना। २ जमाना, स्थिर करना। जमेइ; (से १०, ७०)। संकृ—**जमइत्ता** ; (औप)।

जम पुं [**यम**] १ अहिंसादि पाँच महाव्रत, साधु का व्रत ; (णाया १, ५ ; ठा २, ३)। २ दक्षिण दिशा का एक लोकपाल, देव-विशेष, जम-देवता, जमराज; (पणह १,१; पाअ; हे १, २४५)। ३ भरणी नक्षत्र का अधिपति देव ; (सुज्ज १०)। ४ किष्किन्धा नगरी का एक राजा ; (पउम ७, ४६)। ५ तापस-विशेष ; (आवम)। ६ मृत्यु, मौत ; (आव ४ ; महा)। ७ संयमन, नियन्त्रण ; (आवम)। °**काइय** पुं [°**कायिक**] असुर-विशेष, परमाधार्मिक देव, जो नारकी के जीवों को दुःख देते हैं; (पणह १, १)। °**घोस** पुं [°**घोष**] ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव ; (पव ७)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] जम की नगरी, मौत का स्थान ; "को जमपुरीसमाणे समसाणे एवमुल्लवइ ?" (सुपा ४६२)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] यमदेव का उत्पात-पर्वत, पर्वत-विशेष; (ठा १०)। °**भड** पुं [°**भट**] यमराज का सुभट ; (महा)। °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] यमराज का घर, मृत्यु-स्थान ; (महा)। °**लय** न [°**लय**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (पउम ४५, १०)।

जमग पुं [**यमक**] १ पक्षि-विशेष ; २ देव-विशेष ; (जीव ३)। ३ पर्वत-विशेष; (जीव ३ ; सम ११४ ; इक)। ४ द्रह विशेष ; (जीव ३ ; इक)। देखो **जमय**।

जमगं, **जमगसमगं** अ [**दे**] एक साथ, एक ही समय में, युगपत् ; (धम्म ११ टी ; णाया १,४ ; औप ; विपा १, १)।

जमणिया स्त्री [**जमनिका**] जैन साधु का उपकरण-विशेष; (राज)।

जमदग्गि पुं [**यमदग्नि**] तापस-विशेष, इस नाम का एक संन्यासी, परसुराम का पिता ; (पि २३७)।

जमय देखो **जमग**। ५ न. अलंकार-शास्त्र में प्रसिद्ध अनुप्रास-विशेष ; ६ छन्द-विशेष; (पिंग)।

जमल न [**यमल**] १ जोड़ा, युग्म, युगल ; (णाया १, १ ; हे २, १७३ ; से ५, ५६)। २ समान श्रेणि में स्थित, तुल्य पंक्ति वाला ; (राय)। ३ सहवर्ती, सहचारी; (भग १५)। ४ समान, तुल्य ; (राय ; औप)। °**ज्जुणभंजग** पुं [°**र्जुनभञ्जक**] श्रीकृष्ण वासुदेव ; (पणह १, ४)। °**पद**, °**पय** न [°**पद**] १ प्रायश्चित-विशेष ; (निचू १)। २ आठ अंकों की संख्या ; (पण्ण १२)। °**पाणि** पुं [°**पाणि**] मुष्टि, मुट्ठी; (भग १६,३)।

जमलिय वि [**यमलित**] १ युग्म रूप से स्थित ; (राय)। २ सम-श्रेणि रूप से अवस्थित ; (णाया १, १ ; औप)।

जमलोइय वि [**यमलौकिक**] १ यमलोक-संबन्धी, यम-लोक से संबन्ध रखने वाला ; २ परमाधार्मिक देव, असुरों की एक जाति ; (सूअ १, १२)।

जमा स्त्री [**यामी**] दक्षिण दिशा ; (ठा १०—पत्र ४७८)।

जमालि पुं [**जमालि**] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार, जो भगवान् महावीर का जामाता था, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी और पीछे से अपना अलग पन्थ निकाला था ; (णाया १, ८ ; ठा ७)।

जमावण न [**यमन**] १ नियन्त्रण करना ; २ विषम वस्तु को सम करना ; (निचू १)।

जमिअ वि [**यमित**] नियन्त्रित, संयमित, काबू में किया हुआ ; (से ११, ४१ ; सुपा ३) ।
जमुणा देखो **जँउणा**; (पि १७६ ; २५१) ।
जमू स्त्री [**जमू**] ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी का नाम ; (इक) ।
जम्म अक [**जन्**] उत्पन्न होना । जम्मइ ; (हे ४, १३६ ; षड्) । वकृ—**जम्मंत** ; (कुमा), "जम्मंतीए सोगो, वड्ढंतीए य वड्ढए चिंता" (सूक्त ८८) ।
जम्म सक [**जम्**] खाना, भक्षण करना । जम्मइ ; (षड्) ।
जम्म पुंन [**जन्मन्**]जन्म, उत्पत्ति;(ठा ६ ; महा; प्रासू ६०) ।
जम्मण न [**जन्मन्**] जन्म, उत्पत्ति, उत्पाद ; (हे २, १७४; णाया १, १ ; सुर १, ६) ।
जम्मा स्त्री [**याम्या**] दक्षिण दिशा ; (उप पृ ३७५) ।
जय सक [**जि**] १ जीतना । २ अक. उत्कृष्टपन से बरतना । जयइ ; (महा) । जयंति ; (स ३६) । संकृ—**जइत्ता**; (ठा ६) ।
जय सक [**यज्**] १ पूजा करना । २ याग करना । जयइ ; (उत्त २५, ४) । वकृ—**जअमाण** ; (अभि १२५) ।
जय अक [**यत्**] १ यत्न करना, चेष्टा करना । २ ख्याल करना, उपयोग करना । जयइ ; (उव) । भवि—जइ-स्सामि; (महा) । वकृ—**जयंत**; **जयमाण** ; (स २६० ; श्रा २६ ; ओघ १२४ ; पुप्फ २४१) । कृ—**जइयव्व** ; (उव ; सुर १, ३४) ।
जय न [**जगत्**] जगत्, दुनियाँ, संसार ; (प्रासू १५५ ; से ६, १) । °**त्तय** न [°**त्रय**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (सुपा ७६ ; ६५) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] परमेश्वर, परमात्मा ; (पउम ८६, ६५) । °**पहु** पुं [°**प्रभु**] परमेश्वर ; (सुपा २८ ; ८६) । °**णंद** वि [°**नन्द**] जगत् को आनन्द देने वाला ; (पउम ११७, ६) ।
जय वि [**यत**] १ संयत, जितेन्द्रिय ; (भास ६५) । २ उपयोग रखने वाला, ख्याल रखने वाला ; (उत्त १ ; आव ४) । ३ न. छठवाँ गुण-स्थानक ; (कम्म ४, ४८) । ४ ख्याल, उपयोग, सावधानता ; (णाया १, १—पत्र ३३), "जयं चरे जयं चिट्ठे" (दस ४) ।
जय पुं [**जव**] वेग, शीघ्र-गमन, दौड़ ; (पाअ) ।
जय पुं [**जय**] १ जय, जीत, शत्रु का पराभव ; (औप ; कुमा) । २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक चक्रवर्ती राजा ; (सम १५२)। °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (स ६) । °**कम्मा** स्त्री [°**कर्मा**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३६) । °**घोस** पुं [°**घोष**] १ जय-ध्वनि ; २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि; (उत्त २५) । °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का एक कन्नौज का अन्तिम राजा। २ पन्नरहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य ; (रयण ६४) । °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**]शत्रु पर चढ़ाई ; (सुपा ५४१) । °**पडाया** स्त्री [°**पताका**] विजय का झंडा ; (श्रा १२) । °**पुर** देखो °**उर** ; (वसु) । °**मंगला** स्त्री [°**मङ्गला**] एक राज-कुमारी ; (दंस ३) । °**लच्छी** स्त्री [°**लक्ष्मी**] जय-लक्ष्मी, विजय-श्री ; (से ४, ३१ ; काप्र ७४३) । °**वंत** वि [°**वत्**] जय-प्राप्त, विजयी ; (पउम ६६,४६) । °**वल्लह** पुं [°**वल्लभ**] नृप-विशेष ; (दंस १) । °**संध** पुं [°**सन्ध**] पुण्डरीक-नामक राजा का एक मन्त्री ; (आचू ४) । °**संधि** पुं [°**सन्धि**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (आव ४) । °**सद्द** पुं [°**शब्द**] विजय-सूचक आवाज; (औप)। °**सिंह** पुं [°**सिंह**] १ सिंहल द्वीप का एक राजा ; (रयण ४४) । २ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा, जिसका दूसरा नाम 'सिद्धराज' था ; "जेण जयसिंहदेवो राया भणिऊण सयलदेसम्मि" (मुणि १०६००) । ३ स्वनाम-ख्यात जैनाचार्य विशेष ; (सुपा ६५८), "सिरिजयसिंहो सूरी सयंभरीमण्डलम्मि सुप्रसिद्धो" (मुणि १०८७२) । °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] विजय-श्री, जय-लक्ष्मी ; (आवम) । °**सेण** पुं [°**सेन**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ; (महा) । °**ावह** वि [°**ावह**] १ जय को वहन करने वाला, विजयी ; (पउम ७०, ७ ; सुपा २३४) । २ विद्याधर-नगर विशेष ; (इक) । °**ावहपुर** न [°**ावह-पुर**] एक विद्याधर-नगर ; (इक) । °**ावास** न [°**ावास**] विद्याधरों का एक स्वनाम-ख्यात नगर ; (इक) ।
जय पुंस्त्री [**जया**] तिथि-विशेष — तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि ; (जं १) ।
जय° देखो **जया**=यदा । °**प्पभिइ** अ [°**प्रभृति**] जब से, जिस समय से ; (स ३१६) ।
जयंत पुं [**जयन्त**] १ इन्द्र का पुत्र; (पाअ) । २ एक भावी बलदेव ; (सम १५४) । ३ एक जैन मुनि, जो वज्र-सेन मुनि के तृतीय शिष्य थे ; (कप्प) । ४ इस नाम के देव-विमान में रहने वाली एक उत्तम देव-जाति ; (सम ५६)। ५ जंबूद्वीप की जगती के पश्चिम द्वार का एक अधिष्ठाता देव ; (ठा ४, २) । ६ न. देव-विमान विशेष ; (सम ५६) ।

७ जम्बूद्वीप की जगती का पश्चिम द्वार ; (ठा ४, २) । ८ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ४) ।

जयंती स्त्री [**जयन्ती**] १ वल्ली-विशेष ; (पण्ण १) । २ सप्तम बलदेव की माता ; (सम १५२) । ३ विदेह वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३) । ४ अंगारक-नामक ग्रह की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४,१) । ५ जम्बूद्वीप के मेरु से पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८) । ६ भगवान् महावीर की एक उपासिका ; (भग १२, २) । ७ भगवान् महावीर के आठवें गणधर की माता ; (आवम) । ८ अञ्जनक पर्वत की एक वापी ; (ती २४) । ६ नवमी तिथि ; (जं ७) । १० जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प) ।

जयण न [**यजन**] १ याग, पूजा ; २ अभय-दान ; (पण्ह २, १) ।

जयण न [**यतन**] १ यत्न, प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम ; "जयण-घडण-जोग-चरितं" (अनु) । २ यतना, प्राणी की रक्षा ; (पण्ह २, १) ।

जयण वि [**जवन**] वेग वाला, वेग-युक्त ; (कप्प) ।

जयण न [**जयन**] १ जीत, विजय ; (सुद्रा २६८ ; कप्पू) । २ वि. जीतने वाला ; (कप्प) ।

जयण न [**दे**] घोड़े का बख्तर, हय-संनाह ; (दे ३,४०) ।

जयणा स्त्री [**यतना**] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश ; (निचू १)। २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग ; (दस ४) । ३ उपयोग, किसी जीव को दुःख न हो इस तरह प्रवृत्ति करने का ख्याल ; (निचू १ ; सं ६७ ; औप) ।

जयद्दह पुं [**जयद्रथ**] सिन्धु देश का स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था ; (णाया १, १६) ।

जया अ [**यदा**] जिस समय, जिस बख्त ; (कप्प ; काल) ।

जया स्त्री [**जया**] १ विद्या-विशेष ; (पउम ७, १४१) । २ चतुर्थ चक्रवर्त्ती राजा की अग्र-महिषी ; (सम १५२) । ३ भगवान् वासुपूज्य की स्वनाम-ख्यात माता ; (सम १५१) । ४ तिथि-विशेष—तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि ; (सुज्ज १०) । ५ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी ; (ती ६) । ६ ओषधि-विशेष ; (राज) ।

जयिण देखो **जइण**=जयिन् ; (पण्ह १, ४) ।

जर अक [**जॄ**] जीर्ण होना, पुराना होना, बूढ़ा होना । जरइ ; (हे ४, २३४) । कर्म—जीरइ, जरिज्जइ ; (हे ४, २५०) । वकृ—जरंत ; (अच्चु ७६) ।

जर पुं [**ज्वर**] रोग-विशेष, बुखार ; (कुमा) ।

जर पुं [**जर**] १ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६,३) । २ वि. जीर्ण, पुराना ; (दे ३, ५६) ।

जर वि [**जरत्**] जीर्ण, पुराना, वृद्ध, बूढ़ा; (कुमा; सुर २, ६६ ; १०४) । स्त्री—°**ई** ; (कुमा ; गा ४७२ अ) । °**ग्गव** पुं [°**गव**] बूढ़ा बैल; (बृह १; अनु ४) । °**ग्गवी** स्त्री [°**गवी**] बूढ़ी गौ; (गा ४६१) । °**ग्गु** पुं [°**गु**] १ बूढ़ा बैल; २ स्त्री. बूढ़ी गौ ; "जिण्णा य जरग्गवो पडिया" (पउम ३३, १६) ।

जर° देखो **जरा** ; (कुमा ; अंत १६ ; वव ७) ।

जरंड वि [**दे**] वृद्ध, बूढा ; (दे ३,४०) ।

जरग्ग वि [**जरत्क**] जीर्ण, पुराना ; (अनु ५) ।

जरठ वि [**जरठ**] १ कठिन, परुष ; २ जीर्ण, पुराना ; (णाया १, १—पत्र ५) । देखो—**जरढ** ।

जरड वि [**दे**] वृद्ध, बूढ़ा; (दे ३, ४०) ।

जरढ देखो **जरठ** ; (पि १६८ ; से १०, ३८) । ३ प्रौढ, मजबूत ; (से १, ४३) ।

जरय पुं [**जरक**] रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६ — पत्र ३६५) । °**मज्झ** पुं [°**मध्य**] नरकावास-विशेष ; (ठा ६) । °**वत्त** पुं [°**वर्त**] नरकावास-विशेष; (ठा ६) । °**वसिट्ठ** पुं [°**वशिष्ट**] नरकावास-विशेष ; (ठा ६) ।

जरलद्धिअ } वि [**दे**] ग्रामीण, ग्राम्य ; (दे ३, ४४) ।
जरलविअ }

जरा स्त्री [**जरा**] बुढ़ापा, वृद्धत्व ; (आचा ; कस ; प्रासू १३४) । °**कुमार** पुं [°**कुमार**] श्रीकृष्ण का एक भाई ; (अंत) । °**संध** पुं [°**सन्ध**] राजगृह नगर का एक राजा, नववाँ प्रतिवासुदेव, जिसको श्री कृष्ण वासुदेव ने मारा था ; (सम १५३) ।°**सिंध** पुं [°**सिन्ध**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (पण्ह १, ४—पत्र ७२) । °**सिंधु** पुं [°**सिन्धु**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (णाया १, १६—पत्र २०६ ; पउम ५, १५६) ।

जराहिरण (अप) देखो **जल-हरण** ; (पिंग) ।

जरि वि [**ज्वरिन्**] बुखार वाला, ज्वर से पीड़ित ; (सुपा २४३) ।

जरि वि [**जरिन्**] जरा-युक्त, वृद्ध, बूढा ; (दे ३, ५७ ; उर ३, १) ।

जरिअ वि [**ज्वरित**] ज्वर-युक्त, बुखार वाला; (गा २५६ ; सुपा २८६) ।

जल अक [**ज्वल्**] १ जलना, दग्ध होना। २ चमकना। जलइ; (महा)। वकृ—**जलंत**; (उवा; गा २६४)। हेकृ—**जलिउं**; (महा)। प्रयो, वकृ—**जलिंत**; (महानि ७)।

जल देखो **जड**; (श्रा १२; श्राव ४)।

जल न [**जाड्य**] जड़ता, मन्दता; "जलधोयजललेवा" (सार्ध ७३; से १, २४)।

जल पुं [**ज्वल**] देदीप्यमान, चमकीला; (सूअ १, ५, १)।

जल न [**जल**] १ पानी, उदक; (सुअ १, ५, २; जी २)। २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)। °**कंत** पुं [°**कान्त**] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति; (पराण १; कुम्मा १५)। २ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३)। ३ जलकान्त इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)। °**करप्फाल** पुं [°**करास्फाल**] हाथ से आहत पानी; (पाअ)। °**करि** पुंस्त्री [°**करिन्**] पानी का हाथी, जल-जन्तु विशेष; (महा)। °**कलंब** पुं [°**कदम्ब**] कदम्ब वृक्ष की एक जाति; (गउड)। °**कीडा**, °**कीला** स्त्री [°**क्रीडा**] पानी में की जाती क्रीड़ा, जल-केलि; (गाया १, २)। °**केलि** स्त्री [°**केलि**] जल-क्रीड़ा; (कुमा)। °**चर** देखो °**यर**; (कप्प; हे १,१७७)। °**चार** पुं [°**चार**] पानी में चलना, (आचा २,५, १)। °**चारण** पुं [°**चारण**] जिसके प्रभाव से पानी में भी भूमि की तरह चला जा सके ऐसी अलौकिक शक्ति रखने वाला मुनि; (गच्छ २)। °**चारि** पुं [°**चारिन्**] पानी में रहने वाला जंतु; (जी २०)। °**चारिया** स्त्री [°**चारिका**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति; (राज)। °**जंत** न [°**यन्त्र**] पानी का यन्त्र, पानी का फवारा; (कुमा)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] समुद्र, सागर; (उप ७२८ टी)। °**णिहि** पुं [°**निधि**] समुद्र, सागर; (गउड)। °**णीली** स्त्री [°**नीली**] शैवाल; (दे ३, ४२)। °**तुसार** पुं [°**तुषार**] पानी का बिन्दु; (पाअ)। °**थंभिणी** स्त्री [°**स्तम्भिनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३९)। °**द** पुं [°**द**] मेघ, अभ्र; (मुद्रा २६२; पव १८)। °**द्दा** स्त्री [°**आर्द्रा**] पानी से भींजाया हुआ पंखा; (सुपा ४१३)। °**निहि** देखो °**णिहि**; (प्रासू १२७)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] १ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३)। २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)। °**य** न [°**ज**] कमल, पद्म; (पउम १२, ३७; औप; पराण १)। °**य** देखो °**द**; (काल; गउड; से १, २४)। °**यर** पुंस्त्री [°**चर**] जल में रहने वाला ग्रहादि जन्तु; (जी २०); स्त्री—°**री**; (जीव २)। °**रंकु** पुं [°**रङ्कु**] पक्षि-विशेष, ढेंक-पक्षी; (गा ५७८; गउड)। °**रक्खस** पुं [°**राक्षस**] राक्षस की एक जाति; (पराण १)। °**रमण** न [°**रमण**] जल-क्रीड़ा, जल-केलि; (गाया १, १३)। °**रय** पुं [°**रय**] जलप्रभ-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)। °**रासि** पुं [°**राशि**] समुद्र, सागर; (सुपा १९५; उप २६४ टी)। °**रुह** पुंन [°**रुह**] पानी में पैदा होने वाली वनस्पति; (पराण १)। °**रूव** पुं [°**रूप**] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (भग ३, ८)। °**लिल्लिर** न [°**लिल्लिर**] पानी में उत्पन्न होने वाली वस्तु-विशेष; (दंस १)। °**वायस** पुंस्त्री [°**वायस**] जलकौआ, पक्षि-विशेष; (कुमा)। °**वासि** वि [°**वासिन्**] १ पानी में रहने वाला; २ पुं. तापसों की एक जाति, जो पानी में ही निमग्न रहते हैं; (औप)। °**वाह** पुं [°**वाह**] १ मेघ, अभ्र; (उप पृ ३२; सुपा ८९)। २ जन्तु-विशेष; (पउम ८८, ७)। °**विच्छुय** पुं [°**वृश्चिक**] पानी का बिच्छी, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पराण १)। °**वीरिय** पुं [°**वीर्य**] १ इक्ष्वाकु वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा; (ठा ८)। २ क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (जीव१)। °**सय** न [°**शय**] कमल; पद्म; (उप १०३१ टी)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] प्रपा, पानी पिलाने का स्थान; (श्रा१२)। °**सूग** न [°**शूक**] १ शैवाल। २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)। °**सेल** पुं [°**शैल**] समुद्र के भीतर का पर्वत; (उप ५९७ टी)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] जल-हस्ती, पानी का एक जन्तु; (पाअ)। °**हर** पुं [°**धर**] १ मेघ, अभ्र; (सुर २, १०४; से १, ५९)। २ एक विद्याधर सुभट; (पउम १२, ९५)। °**हर** पुं [°**भर**] जल-समूह; (गउड)। °**हर** न [°**गृह**] समुद्र, सागर; (से १, ५९)। °**हरण** न [°**हरण**] १ पानी की क्यारी; (पाअ)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**हि** पुं [°**धि**] १ समुद्र, सागर; (महा; सुपा २२३)। २ चार की संख्या; (विवे १४४) °**ासय** पुंन [°**ाशय**] सरोवर, तलाव; (सुर ३, १)।

जलइय पुं [**जलकित**] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोक-पाल ; (ठा ४, १—पत्र १६८)।

जलंजलि पुं [**जलाञ्जलि**] तर्पण, दोनों हाथों में लिया हुआ जल ; (सुर ३, ५१ ; कप्पू)।

जलग पुं [**ज्वलक**] अग्नि, आग ; (पिंड)।

जलजलिंत वि [**जाज्वल्यमान**] देदीप्यमान, चमकता : (कप्प)।

जलण पुं [**ज्वलन**] १ अग्नि, वह्नि ; (उप ६४८ टी)। २ देवों की एक जाति, अग्निकुमार-नामक देव-जाति ; (पण्ह १, ४)। ३ वि. जलता हुआ; ४ चमकता, देदीप्यमान ; "एईए जलणजलणोवमाए" (उव ६४८ टी)। ५ जलाने वाला ; (सुअ १, १, ४)। ६ न. अग्नि सुलगाना; (पण्ह १, ३)। ७ जलाना, भस्म करना ; (गच्छ २)। °**जडि** पुं [°**जटिन्**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४६)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] स्वनाम-ख्यात एक प्राचीन कवि ; (गउड)।

जलावण न [**ज्वालन**] जलाना, दग्ध करना; (पण्ह १, १)।

जलिअ वि [**ज्वलित**] १ जला हुआ, प्रदीप्त ; (सूअ १, ५, १)। २ उज्ज्वल, कान्ति-युक्त ; (पण्ह २, ५)।

जलूगा, **जलूया** स्त्री [**जलौकस्**] १ जन्तु-विशेष, जोंक, जलिका, जल का कीड़ा ; (पउम १, २४ ; पण्ह १, १)। २ पक्षि-विशेष ; (जीव १)।

जलूसग पुं [**दे**] रोग-विशेष ; (उप पृ ३३२)।

जलोयर न [**जलोदर**] रोग-विशेष, जलन्धर, जठराम ; (सण)।

जलोयरि वि [**जलोदरिन्**] जलन्धर रोग से पीड़ित; (राज)।

जलोया देखो **जलूया** ; (जी १५)।

जल्ल पुं [**दे. जल्ल**] १ शरीर का मैल, सूखा पसीना ; (सम १० ; ४० ; औप)। २ नट की एक जाति, रस्सी पर खेल करने वाला नट ; (पण्ह २, ४ ; औप ; गाया १, १)। ३ बन्दी, बिरुद-पाठक ; (गाया १, १)। ४ एक म्लेच्छ देश ; ५ उस देश में रहने वाली म्लेच्छ जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

जल्लार पुं [**जल्लार**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक अनार्य देश; २ जल्लार देश का निवासी; (इक)।

जल्लिय न [**दे. जल्लक**] शरीर का मैल ; (उत्त २४)।

जल्लोसहि स्त्री [**दे. जल्लौषधि**] एक तरह की आध्यात्मिक शक्ति, जिसके प्रभाव से शरीर के मैल से रोग का नाश होता है ; (पण्ह २, १ ; विसे ७७६)।

जव सक [**यापय्**] १ गमन करवाना, भेजना। २ व्यवस्था करना। जवइ ; (हे ४, ४०)। हेकृ—**जवित्तए**; (सूअ १, ३, २)। कृ—**जवणिज्ज, जवणीय**; (गाया १, ५ ; हे १, २४८)।

जव सक [**जप्**] जाप करना, बार बार मन ही मन देवता का नाम स्मरण करना, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण करना। जवइ ; (रंभा)। "तप्पंति तवमणेगे जवंति मंते तहा सुविज्जाओ" (सुपा २०२)। वकृ—**जवंत**; (नाट)। कवकृ—**जविज्जंत** ; (सुर १३, १८६)।

जव पुं [**जप**] जाप, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण, बार बार मन ही मन देवता का नाम-स्मरण ; (पण्ह २, २ ; सुपा १२०)।

जव पुं [**यव**] १ अन्न-विशेष ; (गाया १, १ ; पण्ह १, ४)। २ परिमाण-विशेष, आठ यूका का नाप ; (ठा ८)। °**णाली** स्त्री [°**नाली**] वह नाली जिसमें यव बोए जाते हों; (आचू १)। °**मज्झ** न [°**मध्य**] १ तप-विशेष ; (पउम २२, २४)। २ आठ यूका का एक नाप ; (पव २५)। °**मज्झा** स्त्री [°**मध्या**] व्रत विशेष, प्रतिमा-विशेष; (ठा ४, १)। °**राय** पुं [°**राज**] नृप-विशेष; (बृह १)। °**वंसा** स्त्री [°**वंशा**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)।

जव पुं [**जव**] वेग, दौड़, शीघ्र गति ; (कुमा)।

जवजव पुं [**यवयव**] अन्न-विशेष, एक तरह का यव-धान्य; (ठा ३, १)।

जवण न [**दे**] हल की शिखा, हल की चोटी ; (दे ३, ४१)।

जवण न [**जपन**] जाप, पुनः पुनः मन्त्र का उच्चारण ; "अहिणा दट्ठस्स जए को कालो मंत-जवणम्मि" (पउम ८६, ६० ; स ६)।

जवण वि [**जवन**] १ वेग से जाने वाला; (उप ७६८ टी)। २ पुं. वेग, शीघ्र गति ; (आवम)।

जवण पुं [**यवन**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; (पउम ६८, ६४)। २ उस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति ; (पण्ह १, १)। ३ यवन देश का राजा ; (कुमा)।

जवण न [**यापन**] निर्वाह, गुजारा ; (उत्त ८)।

जवणा स्त्री [**यापना**] ऊपर देखो ; (पव २)।

जवणाणिया स्त्री [**यवनानिका**] लिपि-विशेष ; (राज)।
जवणालिया स्त्री [**यवनालिका**] कन्या का कञ्चुक; (आवम)।
जवणिआ स्त्री [**यवनिका**] परदा ; (दे ४, १ ; सण; कप्पू)।
जवणिज्ज देखो **जव**=यापय्।
जवणी स्त्री [**यवनी**] १ परदा, आच्छादक पट; (दे २, २५)। २ संचारिका, दूती ; (अभि ५७)।
जवणी स्त्री [**यावनी**] १ यवन की स्त्री। २ यवन की लिपि ; (सम ३५ ; विसे ४६४ टी)।
जवणीअ देखो **जव**=यापय्।
जवपच्चमाण पुं [**दे**] जात्य अश्व का वायु-विशेष, प्राण-वायु ; (गउड)।
जवय } पुं [**दे**] यव का अङ्कुर; (दे ३,४२)।
जवरय }
जवली स्त्री [**दे**] जव, वेग ; " गच्छंति गरुयनेहेण पवरतुरयाहिरूढ़ा जवलीए " (सुपा २७६)।
जववारय [**दे**] देखो **जवरय** ; (पंचा ८)।
जवस न [**यवस**] १ तृण, घास ; " गिद्धिव्व जवसम्मि" (उप ७२८ टी ; उप पृ ८४)। २ गेहूँ वगैरः धान्य, (आचा २, ३, २)।
जवा स्त्री [**जपा**] १ वल्ली-विशेष, जवा-पुष्प का वृक्ष: २ गुड़हल का फूल ; (कुमा)।
जवास पुं [**यवास**] वृक्ष-विशेष, रक्त पुष्प वाला वृक्ष-विशेष ; " पाउसि जवासो " (श्रा २३ ; पण्ण १)। " जवासाकुसुमे इ वा " (पण्ण १७)।
जवि } वि [**जविन्**] १ वेग वाला, वेग युक्त; (सुपा
जविण } ११२)। २ अश्व, घोड़ा ; (राज)।
जविय वि [**यापित**] १ गमित, गुजारा हुआ ; २ नाशित; (कुमा)।
जस पुं [**यशस्**] १ कीर्ति, इज्जत, सुख्याति ; (औप ; कुमा)। २ संयम, त्याग, विरति ; (वव १ ; दस ५, २)। ३ विनय ; (उत्त ३)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम शिष्य ; (सम १५२)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ का आठवाँ प्रधान शिष्य ; (कप्प)। °**कित्ति** स्त्री [°**कीर्ति**] सुख्याति, सुप्रसिद्धि; (सूअ १, ६; आचू १)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य; (कप्प ; सार्ध १३)। °**म, मंत** वि [°**वत्**] १ यशस्वी, इज्जतदार, कीर्ति वाला ; (पगह १, ४)। २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक कुलकर पुरुष ; (सम १५०)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ द्वितीय चक्रवर्ती सगर-राज की माता ; (सम १५२)। २ तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी की रात्रि ; (चंद १०)। °**वम्म** पुं [°**वर्मन्**] स्वनाम-ख्यात नृप-विशेष; (गउड)। °**वाय** पुं [°**वाद**] साधु-वाद, यशोगान, प्रशंसा ; (उप ६८६ टी)। °**विजय** पुं [°**विजय**] विक्रम की अठारहवीं शताब्दी का एक जैन सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार, न्यायाचार्य श्रीमान् यशोविजय उपाध्याय; (राज)। °**हर** पुं [°**धर**] १ भारतवर्ष का भूत कालिक अठारहवाँ जिन-देव ; (पव ८)। २ भारत वर्ष के एक भावी जिन-देव ; (पव ४६)। ३ एक राज-कुमार ; (धम्म)। ४ पक्ष का पाँचवाँ दिन ; (जं ७)। ५ वि. यश को धारण करने वाला, यशस्वी ; (जीव ३)। देखो **जसो**°।
जसद पुं [**जसद**] धातु-विशेष, जस्ता; (राज)।
जसा स्त्री [**यशा**] कपिलमुनि की माता; (उत्त ८)।
जसो° देखो **जस**। °**आ** स्त्री [°**दा**] १ नन्द-नामक गोप की पत्नी ; (गा ११२; ६५७)। २ भगवान् महावीर की पत्नी; (कप्प)। °**कामि** वि [°**कामिन्**] यश चाहने वाला; (दस २)। °**कित्तिनाम** न [°**कीर्त्तिनामन्**] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से सुयश फैलता है ; (सम ६७)। °**धर** पुं [°**धर**] १ धरणेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १)। २ न. ग्रैवेयक देवलोक का प्रस्तट ; (इक)। °**हरा** स्त्री [°**धरा**] १ दक्षिण रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिशा कुमारी देवी; (ठा ८)। २ जम्बू-वृक्ष विशेष, सुदर्शना; (जीव ३)। ३ पक्ष की चौथी रात्रि; (जं ४)।
जह सक [**हा**] त्याग देना, छोड़ देना। जहइ ; (पि ६७)। वकृ—**जहंत**; (वव ३)। कृ—**जहणिज्ज**; (राज)। संकृ—**जहित्ता**; (पि ५८२)।
जह अ [**यत्र**] जहां, जिसमें ; (हे २, १६१)।
जह अ [**यथा**] जिस तरह से, जैसे ; (ठा ३, १ ; स्वप्न २०)। °**क्कम** न [°**क्रम**] क्रम के अनुसार, अनुक्रम ; (पंचा ६)। °**क्खाय** देखो **अह-क्खाय**; (आवम)। °**ट्ठिय** वि [°**स्थित**] वास्तविक, सत्य; (सुर १, १६२ ; सुपा ५७)। °**त्थ** वि [°**र्थ**] वास्तविक, सत्य ; (पंचा १५)। °**त्थनाम** वि [°**र्थनामन्**] नाम के अनुसार

गुण वाला, अन्वर्थ ; (श्रा १६)। °त्थवाइ वि [°र्थवादिन्] सत्य-वक्ता ; (सुर १४, १६)। °प्प न [याथात्म्य] वास्तविकता, सत्यता ; (राज)। °रिह न [°र्ह] उचितता के अनुसार ; (सुपा १६२)। °वट्टिय वि [°वृत्त] सत्य, यथार्थ; (सुपा ५२६)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] विधि के अनुसार ; "नहगामिणिपमुहाओ जहविहिणा साहियव्वाओ" (सुर ३, २८)। °संख न [°संख्य] संख्या के क्रम से, क्रमानुसार ; (नाट)। देखो **जहा**=यथा।

जहण न [जघन] कमर के नीचे का भाग ; (गा १६६ ; गाया १, ६)।

जहणरोह पुं [दे] ऊरु, जंघा, जाँघ ; (दे ३, ४४)।

जहणूसव / **जहणूसुअ** न [दे] अर्धोरुक, जवनांशुक, स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष ; (दे ३,४५; षड्)।

जहण्ण / **जहन्न** वि [जघन्य] निकृष्ट, हीन, अधम, नीच; (सम ८; भग ; ठा १, १ ; जी ३८ ; दे ६)।

जहा देखो **जह**=हा। जहाइ ; (पि ३५०)। संकृ—**जहाइत्ता, जहाय** ; (सूअ १, २, १; पि ५६१)।

जहा देखो **जह**=यथा ; (हे १, ६७ ; कुमा) **जुत्त** वि [°युक्त] यथोचित, योग्य; (सुर २, २०१)। °जेट्ठ न [°ज्येष्ठ] ज्येष्ठता के क्रम से; (अणु)। °णामय वि [°नामक] जिसका नाम न कहा गया हो, अनिर्दिष्ट-नामा, कोई; (जीव ३)। °तच्च न [°तथ्य] सत्य, वास्तविक; (आचा)। °तह न [°तथ] सत्य, वास्तविक ; (राज)। °तह न [याथातथ्य] १ वास्तविकता, सत्यता; "जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं" (सूअ १, ६)। २ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन ; (सूअ १, १३)। °पवत्तकरण न [°प्रवृत्तकरण] आत्मा का परिणाम-विशेष; (आचा)। °भूय वि [°भूत] सच्चा, वास्तविक; (णाया १, १)। °राइणिया स्त्री [°रात्निकता] ज्येष्ठता के क्रम से, बड़प्पन के अनुसार; (कस)। °रुह देखो **जह-रिह**; (स ४६३)। °वित्त न [°वृत्त] जैसा हुआ हो वैसा, यथार्थ ; (स २८)। °सत्ति स्त्रीन [°शक्ति] शक्ति के अनुसार; (पंचा ३)।

जहाजाय वि [दे. यथाजात] जड़, मूर्ख, बेवकूफ ; (दे ३, ४१ ; पराह १, ३)।

जहि / **जहिं** देखो **जह**=यत्र; (हे २, १६१ ; गा १३१ ; प्रासू ५६)।

जहिच्छ न [यथेच्छ] इच्छा के अनुसार ; (सुपा १६ ; पिंग)।

जहिच्छिय न [यथेप्सित] इच्छानुकूल, इच्छानुसार ; (पंचा १)।

जहिच्छिया स्त्री [यदृच्छा] मरजी, स्वेच्छा, स्वच्छन्दता ; (गा ४५३ ; विसे ३१६ ; स ३३२)।

जहिट्ठिल पुं [युधिष्ठिर] पाण्डु-राज का ज्येष्ठ पुत्र, जेष्ठ पाण्डव ; (हे १, १०७ ; प्राप्र)।

जहिमा स्त्री [दे] विदग्ध पुरुष की बनाई हुई गाथा ; (दे ३, ४२)।

जहुट्ठिल देखो **जहिट्ठिल** ; (हे १, ६६ ; १०७)।

जहुत्त न [यथोक्त] कथनानुसार ; (पडि)।

जहेअ अ [यथैव] जैसे ही ; (से ६, १६)।

जहेच्छ देखो **जहिच्छ**; (गा ८८२)।

जहोइय न [यथोदित] कथितानुसार ; (धर्म ३)।

जहोइय / **जहोच्चिय** न [यथोचित] योग्यता के अनुसार ; (से ८, ५ ; सुपा ४७१)।

जा अक [जन्] उत्पन्न होना। जाअइ; (हे ४, १३६)। वकृ—**जायंत** ; (कुमा)। संकृ—"एक्के च्चिय निव्विराणा पुणो पुणो **जाइउं** च मरिउं च" (स १३०)।

जा सक [या] १ जाना, गमन करना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। जाइ; (सुपा ३०१)। जंति ; (महा)। वकृ—**जंत**; (सुर ३, १४३; १०, ११७)। कवकृ—**जाइज्जमाण**; (पराह १, ४)।

जा देखो **जाव**=यावत् ; (हे १, २७१; कुमा ; सुर १५, १३८)।

जाअर देखो **जागर** ; (मुद्रा १८७)।

जाइ स्त्री [जाति] १ पुष्प-विशेष, मालती; (कुमा)। २ सामान्य नैयायिकों के मत से एक धर्म-विशेष, जो व्यापक हो, जैसे मनुष्य का मनुष्यत्व, गो का गोत्व; (विसे १६०१)। ३ जात, कुल, गोत्र, वंश, ज्ञाति; (ठा ४, २; सूअ ६, १३; कुमा)। ४ उत्पत्ति, जन्म ; (उत्त ३; पडि)। ५ क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति ; (उत्त ३)। ६ पुष्प-प्रधान वृक्ष, जाई का पेड़ ; (पराण १)। ७ मद्य-विशेष ; (विपा १, २)। °आजीव पुं [°आजीव] जाति की समानता बतला कर भिक्षा प्राप्त करने वाला साधु; (ठा ५, १)। °थेर पुं [°स्थविर] साठ वर्ष की उम्र का मुनि; (ठा ३,

२)। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष; (सम ६७)। °प्पसण्णा स्त्री [°प्रसन्ना] जाति के पुष्पों से वासित मदिरा ; (जीव ३)। °फल न [°फल] १ वृक्ष-विशेष; २ फल-विशेष, जायफल, एक गर्म मसाला; (सुर १३,३३; सण)। °मंत वि [°मत्] उच्च जाति का; (आचा २, ४, २)। °मय पुं [°मद] जाति का अभिमान; (ठा १०)। °वत्तिया स्त्री [°पत्रिका] १ सुगन्धि फल वाला वृक्ष-विशेष ; २ फल-विशेष, एक गर्म मसाला ; (सण)। °सर पुं [°स्मर] १ पूर्व जन्म की स्मृति ; २ वि. पूर्व जन्म का स्मरण करने वाला, पूर्व-जन्म का ज्ञान वाला; " जाइसराइं मन्ने इमाइं नयणाइं सयललोयस्स " (सुर ४, २०८)। °सरण न [°स्मरण] पूर्व जन्म की स्मृति; (उत्त १६)। °स्सर देखो °सर; (कप्प; विसे १६७१; उप २२० टी)।

जाइ देखो **जाया** ; (षड्)।

जाइ स्त्री [दे] १ मदिरा, सुरा, दारू; (दे ३, ४५)। २ मदिरा-विशेष; (विपा १, २)।

जाइ वि [**यायिन्**] जाने वाला; (ठा ४, ३)।

जाइअ वि [**याचित**] प्रार्थित, माँगा हुआ; (विसे २५०४; गा १६५)।

जाइच्छिय वि [**यादृच्छिक**] स्वेच्छा-निर्मित ; (विसे २५)।

जाइज्जंत देखो **जाय**=यातय्।

जाइज्जंत } देखो **जाय**=याच्।
जाइज्जमाण }

जाइणी स्त्री [**याकिनी**] एक जैन साध्वी, जिसको सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्री हरिभद्रसूरि अपनी धर्म-माता समझते थे ; (उप १०३६)।

जाउ अ [**जातु**] किसी तरह ; (उप ५४७)। °कण्ण पुं [°कर्ण] पूर्वभद्रपदा नक्षत्र का गोत्र ; (इक)।

जाउया स्त्री [**यातृका**] देवर-पत्नी, पति के छोटे भाई की स्त्री ; (णाया १, १६)।

जाउर पुं [दे] कपित्थ वृक्ष ; (दे ३, ४५)।

जाउल पुं [**जातुल**] वल्ली-विशेष; (पण्ण १ पत्र ३२)।

जाउहाण पुं [**यातुधान**] राक्षस ; (उप १०३१ टी ; पाअ)।

जाग पुं [**याग**] १ यज्ञ, अध्वर, होम, हवन ; (पउम १४, ४७ ; स १७१)। २ देव-पूजा ; (णाया १, १)।

जागर अक [**जागृ**] जागना, निद्रा-त्याग करना। जागरइ; (षड्)। वकृ—**जागरमाण** ; (विसे २७१६)। हेकृ—**जागरित्तए, जागरेत्तए** ; (कप्प ; कस)।

जागर वि [**जागर**] १ जागने वाला, जागता ; (आचा ; कप्प ; श्रा २५)। २ पुं जागरण, निद्रा-त्याग ; (मुद्रा १८७; भग १२, २ ; सुर १३, ६७)।

जागरइत्तु वि [**जागरितृ**] जागने वाला ; (श्रा २३)।

जागरिअ वि [**जागृत**] जागा हुआ, निद्रा-रहित, प्रबुद्ध ; (णाया १, १६ ; श्रा २५)।

जागरिअ वि [**जागरिक**] निद्रा-रहित ; (भग १२,२)।

जागरिया स्त्री [**जागरिका, जागर्या**] जागरण, निद्रा-त्याग; (णाया १, १ ; औप)।

जाडी स्त्री [दे] गुल्म; लता-प्रतान ; (दे ३, ४५)।

जाण सक [**ज्ञा**] जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना। जाणइ; (हे ४, ७)। वकृ- **जाणंत, जाणमाण**; (कप्प; विपा १, १)। संकृ—**जाणिऊण, जाणित्ता, जाणित्तु**; (पि ५८६; महा; भग)। हेकृ—**जाणिउं**; (पि ५७६)। कृ—**जाणियव्व** ; (भग ; अंत १२)।

जाण पुंन [**यान**] १ रथादि वाहन, सवारी ; (औप ; पण्ह २, ५ ; ठा ४, ३)। २ यान-पात्र, नौका, जहाज ; "नाणं संसारसमुद्दतारणे बंधुरं जाणं" (पुप्फ ३७)। ३ गमन, गति ; (राज)। °पत्त, °वत्त न [°पात्र] जहाज, नौका; (नमि ५ ; सुर १३, ३१)। °साला स्त्री [°शाला] १ तबेला; २ वाहन बनाने का कारखाना; (औप; आचा २,२,२)।

जाण न [**ज्ञान**] ज्ञान, बोध, समझ ; (भग; कुमा)।

जाण° वि [**जानत्**]जानता हुआ ; "जाणं काएण णाउट्टी" (सूअ १, ५, १)। "आसुपण्णेण जाणया" (आचा)।

जाणई स्त्री [**जानकी**] सीता, राम-पत्नी ; (पउम १०६, १८ ; से ६, ६)।

जाणग वि [**ज्ञायक**] जानकार, ज्ञानी, जानने वाला; (सूअ १, १, १ ; महा ; सुर १०, ६५)।

जाणगी देखो **जाणई** ; (पउम ११७, १८)।

जाणण न [दे] बरात, गुजराती में "जान" ; "जो तदवत्थाए समुचिओत्ति जाणणाइओ" (उप ५६७ टी)।

जाणण न [**ज्ञान**] जानना, जानकारी, समझ, बोध; (हे ४, ७; उप पृ २३; सुपा४१६; सुर १०, ७१; रयण१४; महा)।

जाणणया } स्त्री. ऊपर देखो; (उप ५१६ ; विसे २१४८;
जाणणा } अणु ; आवू ३)।

जाणय देखो **जाणग** ; (भग ; महा) ।
जाणय वि [**ज्ञापक**] जनाने वाला, समझाने-वाला; (ओप) ।
जाणया स्त्री [**ज्ञान**] ज्ञान, समझ , जानकारी ; "एएसिं पयाणं जाणयाए सवणयाए" (भग) ।
जाणवय वि [**जानपद**] १ देश में उत्पन्न, देश-संबन्धी; (भग ; णाया १, १—पत्र १) ।
जाणाव सक [**ज्ञापय्**] ज्ञान कराना, जनाना । जाणावइ, जाणावेइ ; (कुमा ; महा) । हेकृ— **जाणाविउं, जाणावेउं** ; (पि ५५१) । कृ—**जाणावेयव्व** ; (उप पृ २२) ।
जाणावण न [**ज्ञापन**] ज्ञापन, बोधन ; (पउम ११, ८८; सुपा ६०६) ।
जाणावणा } स्त्री [**ज्ञापनी**] क्रिया-विशेष ; (उप पृ
जाणावणी } ४२ ; महा) ।
जाणाविय वि [**ज्ञापित**] जनाया, विज्ञापित, मालूम कराया, निवेदित ; (सुपा ३५६ ; आवम) ।
जाणि वि [**ज्ञानिन्**] ज्ञाता, जानकार ; (कुमा) ।
जाणिअ वि [**ज्ञात**] जाना हुआ, विदित ; (सुर ४, २१४; ७, २६) ।
जाणु न [**जानु**] १ घोंटू, घुटना ; २ ऊरु और जंघा का मध्य भाग; (तंदु; निर १, ३ ; णाया १, २) ।
जाणु } वि [**ज्ञायक**] जानने वाला, ज्ञाता, जानकार ;
जाणुअ } (ठा ३, ४ ; णाया १, १३) ।
जाणे अ [**जाने**] उत्प्रेक्षा-सूचक अव्यय, मानो ; (अभि १५०) ।
जाम सक [**मृज्**] मार्जन करना, सफा करना । जामइ ; (नाट—प्राप्र ८० टी) ।
जाम पुं [**याम**] १ प्रहर, तीन घण्टा का समय ; (सम ४४; सुर ३, २४२) । २ यम, अहिंसा आदि पाँच व्रत ; ३ उम्र विशेष, आठ से बतीस, बतीस से साठ और ६०० से अधिक वर्ष की उम्र ; (आचा) । ४ वि. यम-संबन्धी, जमराज का ; (सुपा ४०५) । °**इल्ल** वि [°**वत्**] १ प्रहर वाला; (हे २, १५६) । २ पुं. प्राहरिक, पहरेदार, यामिक; (सुपा ५) । °**दिसा** स्त्री [°**दिश्**] दक्षिण दिशा ; (सुपा ४०५) । °**वई** स्त्री [°**वती**] रात्रि, रात ; (गउड) ।
जाम देखो **जाव**=यावत् ; (आरा ३३) ।
जामाउ } पुं [**जामातृ,°क**] जामाता, लड़की का पति ;
जामाउय } (पउम ८६, ४ ; हे १, १३१ ; गा ६८३) ।

जामि स्त्री [**जामि, यामि**] बहिन, भगिनी ; (राज) ।
जामिग पुं [**यामिक**] प्राहरिक, पहरेदार; (उप ८३३) ।
जामिणी स्त्री [**यामिनी**] रात्रि, रात ; (उप ७२८ टी) ।
जामिल्ल देखो **जामिग** ; (सुपा १४६ ; २६६) ।
जाय सक [**याच्**] प्रार्थना करना, माँगना । वकृ —**जायंत**; (पण्ह १, ३) । कवकृ— **जाइज्जंत**; (पउम ५, ६८)।
जाय सक [**यातय्**] पीड़ना, यन्त्रणा करना । जाएइ ; (उव) । कवकृ—**जाइज्जंत**; (पण्ह १, १) ।
जाय देखो **जाग** ; (णाया १, १) ।
जाय वि [**जात**] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो; (ठा ६) । २ न. समूह, संघात; (दंस ४) । ३ भेद, प्रकार ; (ठा १०; निचू १६) । ४ वि. प्रवृत्त; (ओप) । ५ पुं. लड़का, पुत्र; (भग ६, ३३ ; सुपा २७६) । ६ न. बच्चा, संतान ; " जायं तीए जइ कहवि जायए पुन्नजोगेण" (सुपा ५६८)। ७ जन्म, उत्पत्ति; (णाया १, १) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ प्रसूति-कर्म ; (णाया १, १) । २ संस्कार-विशेष ; (वसु) । °**तेय** पुं [°**तेजस्**] अग्नि, वह्नि; (सम ५०)। °**निद्दुया** स्त्री [°**निद्रुता**] मृत-वत्सा स्त्री ; (विपा १, २)। वि [°**मूक**] जन्म से मूक; (विपा १, १) । °**रूव** न [°**रूप**] १ सुवर्ण, सोना; (ओप) । २ रूप्य, चाँदी; (उत्त ३५) । ३ सुवर्ण-निर्मित ; (सम ६५) । °**वेय** पुं [°**वेदस्**] अग्नि, वह्नि ; (उत्त २२) ।
जाय वि [**यात**] गत, गया हुआ ; (सूअ १, ३, १) । २ प्राप्त ; (सूअ १, १०) । ३ न. गमन, गति; (आचा)।
जायग वि [**याचक**] १ माँगने वाला ; २ पुं. भिक्षुक ; (श्रा २३ ; सुपा ४१०) ।
जायग वि [**याजक**] यज्ञ करने वाला ; (उत्त २५, ६) ।
जायण न [**याचन**] याचना, प्रार्थना ; (श्रा १४ ; प्रति ६१) ।
जायण न [**यातन**] कदर्थन, पीड़न ; (पण्ह १, २) ।
जायणया } स्त्री [**याचना**] याचना, प्रार्थना, माँगना ;
जायणा } (उप पृ ३०२ ; सम ४० ; स २६१) ।
जायणा स्त्री [**यातना**] कदर्थना, पीड़ा; (पण्ह १, १)।
जायणी स्त्री [**याचनी**] प्रार्थना की भाषा ; (ठा ४,१)।
जायव पुंस्त्री [**यादव**] यदुवंश में उत्पन्न, यदुवंशीय ; (णाया १, १६ ; पउम २०, ५६) ।
जाया स्त्री [**जाया**] स्त्री, औरत; (गा ६; सुपा ३८६) ।
जाया देखो **जत्ता** ; (पण्हसू २, ४ ; अ १, ७) ।

जाया स्त्री [**जाता**] चमरेन्द्र आदि इन्द्रों की बाह्य परिषत् ; (भग ; ठा ३, २) ।

जायाइ पुं [**याग्याजिन्**] यज्ञ-कर्ता, याजक ; (उत्त २५, १) ।

जार पुं [**जार**] १ उपपति ; (हे १, १७७) । २ मणि का लक्षण-विशेष ; (जीव ३) ।

जारिच्छ वि [**यादृक्ष**] ऊपर देखो ; (प्रामा) ।

जारिस वि [**यादृश**] जैसा, जिस तरह का; (हे १,१४२)।

जारेकण्ह न [**जारेकृष्ण**] गोत्र-विशेष, जो वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७) ।

जाल सक [**ज्वालय्**] जलाना, दग्ध करना। "तो जलियजलणजालावलीसु जालेमि नियदेहं" (महा) । संकृ—**जालेवि** ; (महा) ।

जाल न [**जाल**] १ समूह, संघात ; (सुर ४, १३५ ; स ४४३) । २ माला का समूह, दाम-निकर ; (राय)। ३ कारीगरी वाले छिद्रों से युक्त गृहांश, गवाक्ष-विशेष; (औप; णाया १, १) । ४ मछली वगैरः पकड़ने की जाल, पाश-विशेष; (पगह १, १ ; ४) । ५ पैर का आभूषण-विशेष ; (औप) । °**कडग** पुं [°**कटक**] १ सच्छिद्र गवाक्षों का समूह ; २ सच्छिद्र गवाक्ष-समूह से अलंकृत प्रदेश ; (जीव ३) । °**घरग** न [°**गृहक**] सच्छिद्र गवाक्ष वाला मकान ; (राय ; णाया १, २) । °**पंजर** न [°**पञ्जर**] गवाक्ष ; (जीव ३) । °**हरग** देखो °**घरग** ; (औप) ।

जाल पुं [**ज्वाल**] ज्वाला, अग्नि-शिखा ; (सुर ३, १८८ ; जी ६) ।

जालंतर न [**जालान्तर**] सच्छिद्र गवाक्ष का मध्यभाग ; (सम १३७) ।

जालंधर पुं [**जालन्धर**] १ पंजाब का एक स्वनाम-ख्यात शहर ; (भवि) । २ न. गोत्र-विशेष ; (कप्प) ।

जालंधरायण न [**जालन्धरायण**] गोत्र-विशेष ; (आचा २, ३) ।

जालग देखो **जाल**=जाल ; (पगह १, १ ; ५ ; औप ; णाया १, १) ।

जालघडिआ स्त्री [**दे**] चन्द्रशाला, अट्टालिका; (दे ३,४६)।

जालय देखो **जाल**=जाल ; (गउड) ।

जाला स्त्री [**ज्वाला**] १ अग्नि की शिखा ; (आचा ; सुर २, २४६) । २ नवम चक्रवर्त्ती की माता ; (सम १५२) । ३ भगवान् चन्द्रप्रभ की शासन-देवी ; (संति ६) ।

जाला अ [**यदा**] जिस समय, जिस काल में ; "ताला जाअंति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घेप्पंति" (हे ३,६५) ।

जालाउ पुं [**जालायुष्**] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (राज) ।

जालाव सक [**ज्वालय्**] जलाना, दाह देना । वकृ **जालावंत** ; (महानि ७) ।

जालाविअ वि [**ज्वालित**] जलाया हुआ ; (सुपा १८६) ।

जालि पुं [**जालि**] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (अनु १) । २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र, जिसने दीक्षा ले कर शत्रुंजय पर्वत पर मुक्ति पाई थी ; (अंत १४) ।

जालिय पुं [**जालिक**] जाल-जीवि, वागुरिक ; (गउड) ।

जालिय वि [**ज्वालित**] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ ; (उव ; उप ५६७ टी) ।

जालिया स्त्री [**जालिका**] १ कञ्चुक ; (पगह १, ३— पत्र ४४ ; गउड) । २ वृन्त ; (राज) ।

जालुग्गाल पुं [**जालोद्गाल**] मछली पकड़ने का साधन-विशेष; (अभि १८३) ।

जाव सक [**यापय्**] १ गमन करना, गुजारना । २ बरतना। ३ शरीर का प्रतिपालन करना । जावइ ; (आचा) । जावेइ ; (हे ४, ४०) । जावए ; (सूअ १, १, ३) ।

जाव अ [**यावत्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ; — १ परिमाण ; २ मर्यादा ; ३ अवधारण, निश्चय ; "जावदयं परिमाणे मज्जायाएऽधारणे चेइ" (विसे ३५१६ ; णाया १, ७) । °**ज्जीव** स्त्री न [°**ज्जीव**] जीवन पर्यन्त ; (आचा) । स्त्री—°**वा** ; (विसे ३५१८ ; औप) । °**ज्जीविय** वि [°**ज्जीविक**] यावज्जीव-संबन्धी; (स ४४१)। देखो **जावं** ।

जाव पुं [**जाप**] मन ही मन वार वार देवता का स्मरण, मन्त्र का उच्चारण ; (सुर ६, १७४; सुपा १७१) ।

जावइ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष ; (पगण १—पत्र ३४) ।

जावइअ वि [**यावत्**] जितना ; "जावइया वयणपहा" (सम्म १४४ ; भत्त ६४) ।

जावं देखो **जाव**; (पउम ६८, ५०) । °**ताव** अ [°**तावत्**] १ गणित-विशेष ; २ गुणाकार ; (ठा १०) ।

जावंत देखो **जावइअ** : (भग १, १) ।

जावग देखो **जावय**=यापक ; (दसनि १) ।

जावण न [**यापन**] १ बीताना, गुजारना ; २ दूर करना, हटाना ; (उप ३२० टी) ।

जावणा स्त्री [**यापना**] ऊपर देखो ; (उप ७२८ टी) ।

जावणिज्ज वि [**यापनीय**] १ जो बीताया जाय, गुजारने योग्य । २ शक्ति-युक्त ; " जावणिज्जाए णिसीहिआए " (पडि) । °**तंत** न [°**तन्त्र**] ग्रन्थ-विशेष ; (धर्म २)।

जावय वि [**यापक**] १ बीताने वाला । २ पुं. तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध काल-क्षेपक हेतु ; (ठा ४, ३) ।

जावय वि [**जापक**] जीताने वाला; "जिणाणं जावयाणं" (पडि) ।

जावय पुं [**यावक**] अलक्तक, अलता, लाख का रंग ; (गउड ; सुपा ६६) ।

जावसिय वि [**यावसिक**] १ धान्य से गुजारा करने वाला; (बृह १) । २ घास-वाहक ; (ओघ २३८) ।

जाविय वि [**यापित**] बीताया हुआ ; (णाया १, १७)।

जास पुं [**जाष**] पिशाच-विशेष ; (राज) ।

जासुमण, **जासुमिण**, **जासुयण** पुं [**जपासुमनस्**] १ जपा का वृक्ष, पुष्प-प्रधान वृक्ष ; (पण्ण १ ; णाया १, १) । २ न. जपा का फूल ; (णाया १, १ ; कप्प) ।

जाहग पुं [**जाहक**] जन्तु-विशेष, जिसके शरीर में काँटे होते हैं, साही ; (पण्ह १, १ ; विसे १४५४) ।

जाहत्थ न [**याथार्थ्य**] सत्यपन, वास्तविकता ; (विसे १२७६) ।

जाहासंख देखो **जहा-संख**; " जाहासंखमिमीणं नियकज्जं साहुवाओ य " (उप १७६) ।

जाहे अ [**यदा**] जिस समय, जब; (हे ३, ६५ ; महा ; गा ६८) ।

जि (अप) देखो **एव**=एव ; (हे ४, ४२० ; कुमा ; वज्जा १४) ।

जिअ अक [**जीव्**] जीना, प्राण-धारण करना । जिअइ, जिअउ; (हे १, १०१)। वकृ—**जिअंत**; (गा ६१७) ।

जिअ पुं [**जीव**] आत्मा, प्राणी, चेतन ; (सुर २, ११३ ; जी ६ ; प्रासू ११४; १३०)। °**लोअ** पुं [°**लोक**] संसार, दुनियाँ ; (सुर १२, १४३) ।

जिअ वि [**जित**] १ जीता हुआ, पराभूत, अभिभूत ; (कुमा; सुर ३, ३२) । २ परिचित ; (विसे १४७२) । °**प्प** पुं [°**त्मन्**] जितेन्द्रिय, संयमी; (सुपा २७६) । °**भाणु** पुं [°**भानु**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति ; (पउम ५, २५६) । °**सत्तु** पुं [°**शत्रु**] १ भगवान् अजितनाथ का पिता ; (सम १५०) । २ नृप-विशेष ; (महा; विपा १, ५) । °**सेण** पुं [°**सेन**] १ जैन आचार्य-विशेष ; २ नृप-विशेष ; ३ एक चक्रवर्ती राजा; ४ स्वनाम-ख्यात एक कुलकर; (राज) । °**ारि** पुं [°**ारि**] भगवान् संभवनाथजी का पिता; (सम १५०) ।

जिअंती स्त्री [**जीवन्ती**] वल्ली-विशेष; (पण्ण १)।

जिअव वि [**जीतवत्**] जय-प्राप्त; (पण्ह १,१) ।

जिइंदिय, **जिएंदिय** वि [**जितेन्द्रिय**] इन्द्रियों को वश में रखने वाला, संयमी; (पउम १४, ३६ ; हे ४, २८७) ।

जिंघ सक [**घ्रा**] सूँघना, गन्ध लेना । कृ—**जिंघणिज्ज** ; (कप्प) ।

जिंघण न [**घ्राण**] सूँघना, गन्ध-ग्रहण ; (स ५७७)।

जिंघणा स्त्री [**घ्राण**] ऊपर देखो ; (ओघ ३७६) ।

जिंघिअ वि [**घ्रात**] सूँघा हुआ ; (पाअ) ।

जिंडह पुंन [**दे**] कन्दुक, गेंद; " जिंडहगेड्डिआइरमण—"; (पव ३८ ; धर्म २) ।

जिंभ, **जिंभाअ** देखो **जंभाय** । जिंभ; (अभि २४१) । वकृ—**जिंभाअंत**; (से ११, ३०) ।

जिंभिया स्त्री [**जृम्भा**] जम्भाई, जृम्भण, मुख-विकाश ; (सुपा ५८३) ।

जिग्घ देखो **जिंघ** । जिग्घइ; (निचू १) ।

जिग्घिअ वि [**दे**] घ्रात, सूँघा हुआ; (दे ३, ४६) ।

जिच्च, **जिच्चमाण** देखो **जिण**=जि ।

जिट्ठ वि [**ज्येष्ठ**] १ महान्, वृद्ध, बड़ा; (सुपा २३४ ; कम्म ४, ८६)। २ श्रेष्ठ, उत्तम । ३ पुं. बड़ा भाई ; " जिट्ठं व कणिट्ठं पि हु " (धर्म २) । °**भूइ** पुं [°**भूति**] जैन साधु-विशेष ; (ती १७) । °**मूली** स्त्री [°**मूली**] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा ; (इक) ।

जिट्ठ पुं [**ज्येष्ठ**] मास-विशेष ; (राज) ।

जिट्ठा स्त्री [**ज्येष्ठा**] १ भगवान् महावीर की पुत्री ; २ भगवान् महावीर की भगिनी ; (विसे २३०७) । ३ नक्षत्र-विशेष ; (जं १) । देखो **जेट्ठा** ।

जिट्टाणी स्त्री [**ज्येष्ठा**] बड़े भाई की पत्नी ; (सुपा ४८७)।
जिण सक [**जि**] जीतना, वश करना। जिणइ ; (हे ४, २४१ ; महा)। कर्म—जिणिज्जइ, जिव्वइ ; (हे ४, २४२)। वकृ—**जिणंत, जिणयंत**; (पि ४७३ ; पउम १११, १७)। कवकृ—**जिव्वमाण** ; (उत्त ७, २२)। संकृ—**जिणित्ता, जिणिऊण, जिणेऊण, जेऊण, जेउआण**; (पि ; हे ४, २४१ ; षड् ; कुमा)। हेकृ—**जिणिउं, जेउं**; (सुर १, १३० ; रंभा)। कृ—**जिव्व, जिणेयव्व, जेयव्व** ; (उत्त ७, २२ ; पउम १६, १६ ; सुर १४, ७६)।
जिण पुं [**जिन**] १ राग आदि अन्तरङ्ग शत्रुओं को जीतने वाला, अर्हन् देव, तीर्थंकर; (सम १; ठा ४, १ ; सम्म १)। २ बुद्ध देव, बुद्ध भगवान् ; (दे १, ५)। ३ केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ; (पगण १)। ४ चौदह पूर्व ग्रन्थों का जानकार; (उत्त ५)। ५ जैन साधु-विशेष, जिनकल्पी मुनि ; ६ अवधि-ज्ञान आदि अतीन्द्रिय ज्ञान वाला ; (पचा ४ ; ठा ३, ४)। ७ वि. जीतने वाला; (पंचा ३, २०)। °**इंद** पुं [°**इन्द्र**] अर्हन् देव ; (सुर ४, ८१)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] एक प्रकार के जैन मुनिओं का आचार, चारित्र-विशेष; (ठा ३, ४ ; बृह १)। °**कप्पिय** पुं [°**कल्पिक**] एक प्रकार का जैन मुनि; (ओघ ६६६)। °**किरिया** स्त्री [°**क्रिया**] जिन-देव का बतलाया हुआ धर्मानुष्ठान; (पंचव १)। °**घर** न [°**गृह**] जिन-मन्दिर ; (भग २, ८ ; गाया १, १६—पत्र २१०)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ जिन-देव, अर्हन् देव ; (कम्म ३, १; अजि २६)। २ स्व-नाम-ख्यात जैन आचार्य-विशेष ; (गु १२ ; सण)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] अर्हन् देव की पूजा के उपलक्ष में किया जाता उत्सव विशेष, रथ-यात्रा ; (पंचा ७)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म विशेष जिसके प्रभाव से जीव तीर्थंकर होता है ; (राज)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य-विशेष; (गण २६ ; सार्ध १५०)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन श्रेष्ठी; (पउम २०, ११६)। °**दव्व** न [°**द्रव्य**] जिन-मन्दिर-सम्बन्धी धनादि वस्तु ; "भक्खंतो जिणदव्वं तिरियगतं लहइ जोवो" (उव ४१८ ; दंस १)। °**दास** पुं [°**दास**] १ स्व-नाम-प्रसिद्ध एक जैन उपासक; (आवू ६)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि और ग्रन्थकार, निशीथ-सूत्र का चूर्णिकार; (निचू २०)। °**देव** पुं [°**देव**] १ अर्हन् देव; (गु ७)। २ स्वनाम प्रसिद्ध जैनाचार्य; (आक)। ३ एक जैन उपासक; (आचू ४)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] जिनदेव का उपदिष्ट धर्म ; जैन धर्म; (ठा ५, २ ; हे १, १८७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] जिन-देव, अर्हन् देव; (सुपा २३५)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] अर्हन् देव की मूर्ति; (गाया १, १६—पत्र २१०; गय; जीव ३)। "जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं" (दसचू २)। °**पवयण** न [°**प्रवचन**]जैन आगम, जिनदेव-प्रणीत शास्त्र ; (विसे १३५०)। °**पसत्थ** वि [°**प्रशस्त**] तीर्थंकर-भाषित, जिनदेव-कथित ; (पगह २, ५)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] जिन-देव, अर्हन् देव ; (उप ३२० टी)। °**पाडिहेर** न [°**प्रातिहार्य**] जिन-देव की अर्हत्ता-सूचक देव-कृत अशोक वृक्ष आदि आठ बाह्य विभूतियाँ, वे ये हैं;—१ अशोक वृक्ष, २ सुर-कृत पुष्प-वृष्टि, ३ दिव्य-ध्वनि, ४ चामर, ५ सिंहासन, ६ भामण्डल, ७ दुन्दुभि-नाद, ८ छत्र; (दंस १)। °**पालिय** पुं [°**पालित**] चम्पा नगरी का निवासी एक श्रेष्ठि-पुत्र; (गाया १, ६)। °**बिंब** न [°**बिम्ब**] जिन-मूर्ति, जिन-देव की प्रतिमा ; (पडि ; पंचा ७)। °**भड** पुं [°**भट**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य, जो सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्रीहरिभद्र सूरि के गुरु थे : (सार्ध ५८)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] स्वनाम-प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (आव ४)। °**भवण** न [°**भवन**] अर्हन् मन्दिर; (पंचव ४)। °**मय** न [°**मत**] जैन दर्शन ; (पंचा ४)। °**माया** स्त्री [°**मातृ**] जिन-देव की जननी ; (सम १५१)। °**मुद्दा** स्त्री [°**मुद्रा**] जिन-देव जिस तरह से कायोत्सर्ग में रहते हैं उस तरह शरीर का विन्यास, आसन-विशेष; (पंचा ३)। °**यंद** देखो °**चंद**; (सुर १, १० ; सुपा ७६)। °**रक्खिय** पुं [°**रक्षित**] स्वनाम-ख्यात एक सार्थवाह पुत्र; (गाया १, ६)। °**वइ** पुं [°**पति**] जिन-देव, अर्हन् देव; (सुपा ८६)। °**वई** स्त्री [°**वाच्**] जिन-देव की वाणी; (बृह १)। °**वयण** न [°**वचन**] जिन-देव की वाणी; (ठा ६)। °**वयण** न [°**वदन**] जिनदेव का मुख ; (औप)। °**वर** पुं [°**वर**] अर्हन् देव ; (पउम ११, ४ ; अजि १)। °**वरिंद** पुं [°**वरेन्द्र**] अर्हन् देव; (उव ७७६)। °**वल्लह** पुं [°**वल्लभ**] स्वनाम ख्यात एक जैन आचार्य और प्रसिद्ध स्तोत्र-कार ; (लहुअ १७)। °**वसह** पुं [°**वृषभ**] अर्हन् देव ; (राज)। °**सकहा** स्त्री [°**सक्थि**] जिन-देव की अस्थि; (भग १०, ५)। °**सासण** न [°**शासन**] जैन दर्शन ; (उत्त १८ ; सूअ १, ३, ४)। °**हंस** पुं [°**हंस**]

एक जैन आचार्य ; (दं ४७) । °हर देखो °घर; (पउम ११, ३ ; सुपा ३६१ ; महा) । °हरिस पुं [°हर्ष] एक जैन मुनि; (रयण ६४) । °ाययण न [°ायतन] जिन-देव का मन्दिर ; (पंचव ४) ।

जिणंद देखो **जिणिंद** "सव्वे जिणंदा सुरविंदवंदा" (पडि; जी ४८) ।

जिणण न [**जयन**] जय, जीत ; (सण) ।

जिणिंद पुं [**जिनेन्द्र**] जिन भगवान्, अर्हन् देव ; (प्रासू ५२) । °**गिह** न [°**गृह**] जिन-मन्दिर ; (सुर ३, ७२)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] जिन-देव ; (पउम ६५ , ३६) ।

जिणिय वि [**जित**] पराभूत, वशीकृत ; (सुपा ५२२ ; रयण २७) ।

जिणिस्सर देखो **जिणेसर**; (पंचा १६)।

जिणुत्तम पुं [**जिनोत्तम**] जिन-देव ; (अजि ४) ।

जिणेस पुं [**जिनेश**] जिन भगवान् , अर्हन् देव; (सुपा २६०) ।

जिणेसर पुं [**जिनेश्वर**] १ जिन देव, अर्हन् देव ; (पउम २, २३)। २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (सुर १६, २३६ ; सार्ध ७६ ; गु ११) ।

जिण्ण वि [**जीर्ण**] १ पुराना, जर्जर ; (हे १, १०२ ; चारु ४६ ; प्रासू ७६) । २ पचा हुआ, "जिण्णे भोअण-मत्ते" (हे १, १०२) । ३ वृद्ध, बूढ़ा; (बृह १) । °**सेट्ठि** पुं [°**श्रेष्ठिन्**] १ पुराना शेठ ; २ श्रेष्ठि पद से च्युत ; (आव ४) ।

जिण्ण (अप) देखो **जिअ**=जित ; (पिंग) ।

जिण्णासा स्त्री [**जिज्ञासा**] जानने की इच्छा; (पंचा ४)।

जिण्णिअ } **जिण्णीअ** } (अप) देखो **जिणिय** ; (पिंग) ।

जिण्णोब्भवा स्त्री [**दे**] दूर्वा, दूभ ; (दे ३, ४६) ।

जिण्हु वि [**जिष्णु**] १ जित्वर, जीतने वाला, विजयी ; (प्रामा)। २ पुं. अर्जुन, मध्यम पांडव; (गउड)। ३ विष्णु, श्रीकृष्ण ; ४ सूर्य, रवि; ५ इन्द्र, देव-नायक ; (हे२,७५)।

जित्त देखो **जिअ**=जित ; (महा ; सुपा ३६५; ६४३) ।

जित्तिअ } **जित्तिल** } वि [**यावत्**] जितना ; (हे २, १५६; षड्)।

जित्तुल (अप) ऊपर देखो; (कुमा) ।

जिध (अप) अ [**यथा**] जैसे, जिस तरह से ; (हे ४, ४०१) ।

जिन्न देखो **जिण्ण** ; (सुपा ६) ।

जिन्नासिय वि [**जिज्ञासित**] जानने के लिए इष्ट, जानने के लिए चाहा हुआ ; (भास ७५) ।

जिन्नुद्धार पुं [**जीर्णोद्धार**] पुराने और टूटे-फूटे मन्दिर आदि को सुधारना ; (सुपा ३०६) ।

जिब्भा स्त्री [**जिह्वा**] जीभ, रसना ; (पण्ह २, ५ ; उप ६८६ टी) ।

जिब्भिंदिय न [**जिह्वेन्द्रिय**] रसनेन्द्रिय, जीभ ; (ठा४,२)।

जिब्भिया स्त्री [**जिह्विका**] १ जीभ ; २ जीभ के आकार वाली चीज ; (जं ४) ।

जिम सक [**जिम्, भुज्**] जीमना, भोजन करना, खाना । जिमइ ; (हे ४, ११० ; षड्) ।

जिम (अप) देखो **जिध** ; (षड् ; भवि) ।

जिमण न [**जेमन, भोजन**] जीमन, भोजन ; (श्रा १६ ; चैत्य ५६) ।

जिमिअ वि [**जिमित, भुक्त**] १ जिसने भोजन किया हुआ हो वह ; (पउम २०, १२७ ; पुप्फ ३५ ; महा) । २ जो खाया गया हो वह, भक्षित ; (दे ३, ४६) ।

जिम्म देखो **जिम**=जिम् । जिम्मइ ; (हे ४, २३०) ।

जिम्ह पुं [**जिह्म**] १ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से प्रायः एक वर्ष तक जमीन में चिकनापन रहता है ; (ठा ४, ४—पत्र २७०) । २ वि. कुटिल, कपटी, मायावी ; (सम ७१) । ३ मन्द, अलस ; (जं २) । ४ न. माया, कपट ; (वव३) ।

जिम्ह न [**जैम्ह**] कुटिलता, वक्रता, माया, कपट ; (सम ७१) ।

जिवँ } **जिह** } (अप) देखो **जिध** ; (कुमा ; षड् ; हे ४,३३७) ।

जिहा देखो **जीहा** ; (षड्) ।

जीअ देखो **जीव**=जीव् । जीअइ ; (गा १२४ ; हे १, १०१) । वकृ—**जीअंत** ; (से ३, १२ ; गा ८१६) ।

जीअ देखो **जीव**=जीव ; (गउड) । ५ पानी, जल ; (से २, ७) ।

जीअ देखो **जीविअ** ; (हे १, २७१; प्राप्र; सुर २,२३०) ।

जीअ न [**जीत**] १ आचार, रीवाज, रूढ़ि ; (औप ; राय; सुपा ४३) । २ प्रायश्चित्त से सम्बन्ध रखने वाला एक तरह का रीवाज, जैन सूत्रों में उक्त रीति से भिन्न तरह के प्राय-

शिक्षितों का परम्परागत आचार ; (ठा ५, २) । ३ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (ठा ५, २ ; वव १) । ४ मर्यादा, स्थिति, व्यवस्था ; (णंदि) । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ परम्परा से आगत आचार ; २ परम्परागत आचार का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (पंचा ६ ; जीत) । °**कप्पिय** वि [°**कल्पिक**] जीत कल्प वाला ; (ठा १०) । °**धर** वि [°**धर**] १ आचार-विशेष का जानकार ; २ स्वनाम-ख्यात एक जैनाचार्य ; (णंदि) । °**ववहार** पुं [°**व्यवहार**] परम्परा के अनुसार व्यवहार ; (धर्म २ ; पंचा १६) ।

जीअण देखो **जीवण** ; (नाट—चैत २५८) ।

जीअव वि [**जीवितवत्**] जीवित वाला, श्रेष्ठ जीवन वाला ; (पगह १, १) ।

जीआ स्त्री [**ज्या**] १ धनुष की डोर ; (कुमा) । २ पृथिवी, भूमि ; ३ माता, जननी ; (हे २, ११५ ; षड्) ।

जीमूअ पुं [**जीमूत**] १ मेघ, वर्षा ; (पाअ ; गउड) । २ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से जमीन दश वर्ष तक चिकनी रहती है ; (ठा ४, ४) ।

जीर° देखो **जर** = जॄ ।

जीरय न [**जीरक**] जीरा, मसाला-विशेष ; (सुर १,२२) ।

जीव अक [**जीव्**] १ जीना, प्राण धारण करना । २ सक. आश्रय करना । जीवइ ; (कुमा) । वकृ—**जीवंत, जीवमाण** ; (विपा १, ५ ; उप ७२८ टी) । हेकृ—**जीविउं** ; (आचा) । संकृ—**जीविअ** ; (नाट) । कृ—**जीविअव्व, जीवणिज्ज** ; (सूअ १, ७) । प्रयो—जीवावेहि ; (पि ५५२) ।

जीव पुंन [**जीव**] १ आत्मा, चेतन, प्राणी ; (ठा १, १ ; जी १ ; सुपा २३५) । "जीवाइं" (पि ३६७) । २ जीवन, प्राण-धारण ; "जीवो त्ति जीवणं पाणधारणं जीवियंति पज्जाया" (विसे ३५०८ ; सम १) । ३ बृहस्पति, सुर-गुरु ; (सुपा १०८) । ४ बल, पराक्रम ; (भग २, १) । ५ देखो **जीअ** = जीव । °**काय** पुं [°**काय**] जीव-राशि, जीव-समूह ; (सूअ १, ११) । °**ग्गाह** न [°**ग्राह**] जिन्दे को पकड़ना ; (गाया १,२) । °**णिकाय** पुं [°**निकाय**] जीव-राशि ; (ठा ६) । °**त्थिकाय** पुं [°**अस्तिकाय**] जीव-समूह, जीव-राशि ; (भग १३, ४ ; अणु) । °**दय** वि [°**दय**] जीवित देने वाला ; (सम १) । °**दया** स्त्री [°**दया**] प्राणि-दया, दुःखी जीव का दुःख से रक्षण ; (महानि २) । °**देव** पुं [°**देव**] स्वनाम-ख्यात प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (सुपा १) । °**पएस** पुं [**प्रदेशजीव**] अन्तिम प्रदेश में ही जीव की स्थिति को मानने वाला एक जैनाभास दार्शनिक ; (राज) । °**पएसिय** पुं [°**प्रादेशिक**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ७) । °**लोग,** °**लोय** पुं [°**लोक**] १ जीव-जाति, प्राणि-लोक, जीव-समूह ; (महा) । °**विजय** न [°**विचय**] जीव के स्वरूप का चिन्तन ; (राज) । °**विभत्ति** स्त्री [°**विभक्ति**] जीव का भेद ; (उत्त ३६) । °**वुड्डिय** न [°**वृद्धिक**] अनुज्ञा, संमति, अनुमति ; (णंदि) ।

जीवंजीव पुं [**जीवजीव**] १ जीव-बल, आत्म-पराक्रम ; (भग २, १) । २ चकोर-पक्षी ; (राज) ।

जीवंत देखो **जीव** = जीव् । °**मुक्क** पुं [°**मुक्त**] जीवन्मुक्त, जीवन-दशा ही में संसार-बन्धन से मुक्त महात्मा ; (अच्चु ४७) ।

जीवग पुं [**जीवक**] १ पक्षि-विशेष ; (उप ५८०) । २ नृप-विशेष ; (तित्थ) ।

जीवजीवग पुं [**जीवजीवक**] चकोर पक्षी ; (पगह १, १—पत्र ८) ।

जीवण न [**जीवन**] १ जीना, जिन्दगी ; (विसे ३५२१ ; पउम ८, २५०) । २ जीविका, आजीविका ; (स २२७ ; ३१०) । ३ वि. जिलाने वाला ; (राज) । °**वित्ति** स्त्री [°**वृत्ति**] आजीविका ; (उप २६४ टी) ।

जीवमजीव पुं [**जीवाजीव**] चेतन और जड़ पदार्थ ; (आवम) ।

जीवम्मुत्त देखो **जीवंत-मुक्क** ; (उवर १६१) ।

जीवयमई स्त्री [**दे**] मृगों के आकर्षण के साधन-भूत व्याध-मृगी ; (दे ३, ४६) ।

जीवा स्त्री [**जीवा**] १ धनुष की डोरी ; (स ३८४) । २ जीवन, जीना ; (विसे ३५२१) । ३ क्षेत्र का विभाग-विशेष ; (सम १०४) ।

जीवाउ पुं [**जीवातु**] जिलाने वाला औषध, जीवनौषध ; (कुमा) ।

जीवाविय वि [**जीवित**] जिलाया हुआ ; (उप ७६८ टी) ।

जीवि वि [**जीविन्**] जीने वाला ; (गा ८४७) ।

जीविअ वि [**जीवित**] १ जो जिन्दा हो ; २ न. जीवित, जीवन, जिन्दगी ; (हे १, २७१ ; प्राप्र) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] प्राण-पति ; (सुपा ३१५) । °**रिसिका** स्त्री [°**रिसिका**] वनस्पति-विशेष ; (पगण १—पत्र ३६) ।

जीविआ स्त्री [**जीविका**] १ आजीविका, निर्वाह-साधक वृत्ति ; (ठा ४, २ ; स २१८ ; गाया १, १)।
जीविओसविय वि [**जीवितोत्सविक**] जीवन में उत्सव के तुल्य, जीवनोत्सव के समान ; (भग ६, ३३ ; राय)।
जीविओसासिय वि [**जीवितोच्छ्वासिक**] जीवन को बढ़ाने वाला ; (भग ६, ३३)।
जीविगा देखो **जीविआ** ; (स २१८)।
जीह अक [**लस्ज्**] लज्जा करना, शरमाना। जीहइ ; (हे ४, १०३ ; षड्)।
जीहा स्त्री [**जिह्वा**] जीभ, रसना ; (आचा ; स्वप्न ७८)। °**ल** वि [°**वत्**] लम्बी जीभ वाला ; (पउम ७, १२० ; नमि ८ ; सुर २, ६२)।
जीहाविअ वि [**लज्जित**] लज्जा-युक्त किया गया, लजाया गया ; (कुमा)।
जु देखो **जुंज** (कुमा)। कवकृ— **जुज्जंत** ; (सम्म १०७ ; से १२, ८७)।
जु° स्त्री [**युध्**] लड़ाई, युद्ध ; " जुवि वातिभए घेप्पइ " (विसे ३०१६)।
जुअ देखो **जुग** ; (से १२, ६० ; इक ; पण्ह १, १)। ६ युग्म, जोड़ा, उभय; (पिंग; सुर २,१०२; सुपा १६०)।
जुअ वि [**युत**] युक्त, संलग्न, सहित ; (दे १, ८१ ; सुर ४, ६४)।
जुअ देखो **जुव** ; (गा २२८ ; कुमा ; सुर २, १७७)।
जुअइ स्त्री [**युवति**] तरुणी, जवान स्त्री ; (गउड ; कुमा)।
जुअंजुअ (अप) अ [**युतयुत**] जुदा जुदा, अलग अलग, भिन्न भिन्न ; (हे ४, ४२२)।
जुअण [**दे**] देखो **जुअल**=(दे) ; (षड्)।
जुअय न [**युतक**] जुदा, पृथक् ; (दे ७, ७३)।
जुअरज्ज न [**यौवराज्य**] युवराजपन ; (स २६८)।
जुअल न [**युगल**] १ युग्म, जोड़ा, उभय ; (पाअ)। २ वे दो पद्य जिनका अर्थ एक दूसरे से सापेक्ष हो ; (श्रा १४)।
जुअल पुं [**दे**] युवा, तरुण, जवान ; (दे ३,४७)।
जुअलिअ वि [**दे**] द्विगुणित ; (दे ३, ४७)।
जुअलिय देखो **जुगलिय** ; (गाया १, १)।
जुआण देखो **जुवाण** ; (गा ५७ ; २४६)।
जुआरि स्त्री [**दे**] जुआरि, अन्न-विशेष ; (सुपा ५४६ ; सुर १, ७१)।

जुइ स्त्री [**द्युति**] कान्ति, तेज, प्रकाश, चमक ; (औप ; जीव ३)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] तेजस्वी, प्रकाश-शाली ; (स ६४१ ; पउम १०२, १५६)।
जुइ स्त्री [**युति**] संयोग, युक्तता ; (ठा ३, ३)।
जुइ पुं [**युगिन्**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (पउम ३१, ५७)।
जुउच्छ सक [**जुगुप्स्**] घृणा करना, निन्दा करना। जुउच्छइ ; (हे ४, ४ ; षड् ; से ५, ५)।
जुउच्छिय वि [**जुगुप्सित**] निन्दित ; (निचू ४)।
जुंगिय वि [**दे**] जाति, कर्म या शरीर से हीन, जिसको संन्यास देने का जैन शास्त्रों में निषेध है ; (पुप्फ १२५)।
जुंज सक [**युज्**] जोड़ना, युक्त करना। जुंजइ ; (हे ४, १०६)। वकृ— **जुंजंत** ; (ओघ ३२६)।
जुंजण न [**योजन**] जोड़ना, युक्त करना, किसी कार्य में लगाना ; (सम १०६)।
जुंजणया } स्त्री [**योजना**] १ ऊपर देखो; (औप ; ठा ७)।
जुंजणा } २ करण-विशेष—मन, वचन और शरीर का व्यापार ; " मणवयणकायकिरिया पन्नरसविहाउ जुंजणा-करणं " (विसे ३३६०)।
जुंजम [**दे**] देखो **जुंजुमय**; (उप ३१८)।
जुंजिअ वि [**दे**] बुभुक्षित, भूखा; (गाया १, १—पत्र ६६ ; ६८ टी)।
जुंजुमय न [**दे**] हरा तृण विशेष, एक प्रकार का हरा घास, जिसको पशु चाव से खाते हैं ; (स ४८७)।
जुंजुरूड वि [**दे**] परिग्रह-रहित ; (दे ३, ४७)।
जुग पुं [**युग**] १ काल-विशेष—सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि ये चार युग ; (कुमा)। २ पाँच वर्ष का काल ; (ठा २, ४—पत्र ८६; सम ७५)। ३ न. चार हाथ का यूप; (औप ; पण्ह १, ४)। ४ शकट का एक अंग, धुर, गाड़ी या हल खींचने के समय जो बैलों के कन्धे पर रक्खे जाते हैं; (उप पृ १३६ ; उत्त २)। ५ चार हाथ का परिमाण ; (अणु)। ६ देखो **जुअ**=युग। °**प्पवर** वि [°**प्रवर**] युग-श्रेष्ठ ; (भग)। °**प्पहाण** वि [°**प्रधान**] १ युग-श्रेष्ठ ; (रंभा)। २ पुं. युग-श्रेष्ठ जैन आचार्य, जैन आचार्य की एक उपाधि; (पत्र २६४; गुरु १)। °**बाहु** पुं [°**बाहु**] १ विदेह वर्ष में उत्पन्न स्वनाम-प्रसिद्ध एक जिन-देव; (विपा २, १)। २ विदेह वर्ष का एक त्रि-खण्डाधिपति राजा ; (आच ४)। ३ मिथिला का एक राजा ; (तित्थ)।

४ वि. यूप की तरह लम्बा हाथ वाला, दीर्घ-बाहु ; (ठा ६)। °मच्छ पुं [°मत्स्य] मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८—पत्र ८४ टी) । °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष ; (ठा ५, ३) ।

जुगंतर न [**युगान्तर**] यूप-परिमित भूमि-भाग, चार हाथ जमीन ; (पराह २, १) । °**पलोयणा** स्त्री [°**प्रलोकना**] चलते समय चार हाथ जमीन तक दृष्टि रखना ; (भग) ।

जुगंधर न [**युगन्धर**] १ गाड़ी का काष्ठ-विशेष, शकट का एक अवयव ; (जं १) । २ पुं. विदेह वर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव ; (आचू १) । ३ एक जैन मुनि ; (पउम २०, १८) । ४ एक जैन आचार्य ; (आवम) ।

जुगल न [**युगल**] युग्म, जोड़ा, उभय ; (अणु ; राय) ।

जुगलि वि [**युगलिन्**] स्त्री-पुरुष के युग्म रूप में उत्पन्न होने वाला ; (रयण २२) ।

जुगलिय वि [**युगलित**] १ युग्म-युक्त, द्वन्द्व-सहित ; (जीव ३) । २ युग्म रूप से स्थित ; (राज) ।

जुगव वि [**युगवत्**] समय के उपद्रव से वर्जित ; (अणु ; राय) ।

जुगव } अ [**युगपत्**] एक ही साथ, एक ही समय में ;
जुगवं } "कारणकज्जविभागो दीवपगासाण जुगवजम्मेवि" (विसे ५३६ टी ; औप) ।

जुगुच्छ देखो **जुउच्छ** । जुगुच्छइ ; (हे ४, ४) ।

जुगुच्छणया } स्त्री [**जुगुप्सा**] घृणा, तिरस्कार ; (स
जुगुच्छा } १६७ ; प्राप्र) ।

जुगुच्छिय वि [**जुगुप्सित**] घृणित, निन्दित ; (कुमा) ।

जुग्ग न [**युग्य**] १ वाहन, गाड़ी वगैरः यान ; (आचा) । २ शिबिका, पुरुष-यान ; (सूअ २, २ ; जं २) । ३ गोल्ल देश में प्रसिद्ध दो हाथ का लम्बा-चौड़ा यान-विशेष, शिबिका-विशेष ; (णाया १, १ ; औप) । ४ वि. यान-वाहक अश्व आदि ; ५ भार-वाहक ; (ठा ४, ३) । °**यरिया**, °**रिया** स्त्री [°**चर्या**] वाहन की गति; (ठा ४, ३—पत्र २३६) ।

जुग्ग वि [**योग्य**] लायक, उचित ; (विसे २९६२ ; सं ३१ ; प्रासू ५६ ; कुमा) ।

जुग्ग न [**युग्म**] युगल, द्वन्द्व, उभय; (कुमा ; प्राप्र; प्राप) ।

जुज्ज देखो **जुंज** । जुज्जइ ; (हे ४, १०६ ; षड्) ।

जुज्जंत देखो **जु** ।

जुज्झ अक [**युध्**] लड़ाई करना, लड़ना । जुज्झइ ; (हे ४, २१७ ; षड्) । वकृ—**जुज्झंत, जुज्झमाण** ; (सुर ६, २२२ ; २, ५१) । संकृ—**जुज्झित्ता** ; (ठा ३, २) । प्रयो—जुज्झावेइ ; (महा) । वकृ —**जुज्झावेंत** ; (महा) । कृ—**जुज्झावेयव्व** ; (उप पृ २२५) ।

जुज्झ न [**युद्ध**] लड़ाई, संग्राम, समर ; (णाया १, ८ ; कुमा ; कप्पू ; गा ६८४) । °**इजुद्ध** न [°**तियुद्ध**] महायुद्ध, पुरुषों की बहतर कलाओं में एक कला; (औप) ।

जुज्झण न [**योधन**] युद्ध, लड़ाई ; (सुपा ५२७) ।

जुज्झिअ वि [**युद्ध**] १ लड़ा हुआ, जिसने संग्राम किया हो वह ; (स १५, ३७) । २ न. युद्ध, लड़ाई, संग्राम ; (स १२६) ।

जुट्ठ वि [**जुष्ट**] सेवित ; (प्रामा) ।

जुडिअ वि [**दे**] आपस में जुटा हुआ, लड़ने के लिए एक दूसरे से भीड़ा हुआ ; "सुहडेहिं समं सुहडा जुडिया तह साइ-णोवि साईहिं" (उप ७२८ टी) ।

जुण्ण वि [**दे**] विदग्ध, निपुण, दक्ष ; (दे ३, ४७) ।

जुण्ण वि [**जीर्ण**] जूना, पुराना; (हे १,१०२; गा ५३४) ।

जुण्हा स्त्री [**ज्योत्स्ना**] चाँदनी, चन्द्रिका, चन्द्र का प्रकाश ; (सुपा १२१ ; सण) ।

जुत्त वि [**युक्त**] १ संगत, उचित, योग्य; (णाया १, १६; चंद २०)। २ संयुक्त, जोड़ा हुआ, मिला हुआ, संबद्ध; (सूअ १,१, १,आचू)। ३ उद्युक्त, किसी कार्य में लगा हुआ; (पव ६४)। ४ सहित, समन्वित ; (सूअ १, १,३ ; आचा) । °**संखिज्ज** न [°**संख्येय**] संख्या-विशेष ; (कम्म ४, ७८) ।

जुत्ति स्त्री [**युक्ति**] १ योग, योजन, जोड़, संयोग ; (औप; णाया १, १०) । २ न्याय, उपपत्ति; (उप ६५० ; प्रासू ६३) । ३ साधन, हेतु ; (सूअ १, ३, ३) । °**ण्ण** वि [°**ज्ञ**] युक्ति का जानकार ; (औप) । °**सार** वि [°**सार**] युक्ति-प्रधान, युक्त, न्याय-संगत, प्रमाण-युक्त ; (उप ७२८ टी) । °**सुवण्ण** न [°**सुवर्ण**] बनावटी सोना ; (दस १०, ३६) । °**सेण** पुं [°**षेण**] ऐरवत वर्ष के अष्टम जिन-देव ; (सम १५३) ।

जुत्तिय वि [**यौक्तिक**] गाड़ी वगैरः में जो जोता जाय ; "जुत्तियतुरंगमाणं" (सुपा ७७) ।

जुद्ध देखो **जुज्झ**=युद्ध ; (कुमा) ।

जुन्न देखो **जुण्ण** ; (सुर १, २४४) ।

जुन्हा देखो **जुण्हा** ; (सुपा १५७) ।

जुप्प देखो **जुंज** । जुप्पइ; (हे ४, १०६) । जुप्पसि; (कुमा)।

जुम्म न [**युग्म**] १ युगल, दोनों, उभय ; (हे २, ६२ ; कुमा) । २ पुं. सम राशि ; (ओघ ४०७ ; ठा ४, ३—पत्र

२३७) । °पएसिय वि [°प्रादेशिक] सम-संख्य प्रदेशों से निष्पन्न ; (भग २५, ४) ।

जुम्ह° स [**युष्मत्**] द्वितीय पुरुष का वाचक सर्वनाम ; "जुम्हदम्हपयरणं" (हे १, २४६) ।

जुरुमिल्ल वि [**दे**] गहन, निबिड़, सान्द्र ; "दुहजुरुमिल्ला-वत्थं" (दे ३, ४७) ।

जुव पुं [**युवन्**] जवान, तरुण ; (कुमा) । °**राअ** पुं [°**राज**] गद्दी का वारस राज-कुमार, भावी राजा; (सुर २, १७५ ; अभि ८२) ।

जुवइ स्त्री [**युवति**] तरुणी, जवान स्त्री ; (हे १, ४ ; औप ; गउड ; प्रासू ६३ ; कुमा) ।

जुवंगव पुं [**युवगव**] तरुण बैल ; (आचा २, ४, २) ।

जुवरज्ज न [**यौवराज्य**] १ युवराजपन ; (उप ३११ टी ; सुर १६, १२७) । २ राजा के मरने पर जबतक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तबतक का राज्य ; (आचा २, ३, १) । ३ राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जबतक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तबतक का राज्य ; (बृह १) ।

जुवल देखो **जुगल** ; (स ४७८ ; पउम ६५, २३) ।

जुवलिय देखो **जुगलिय** ; (भग ; औप) ।

जुवाण देखो **जुव** ; (पउम ३,१४६ ; णाया १,१; कुमा) ।

जुवाणी देखो **जुवई** ; (पउम ८, १८४) ।

जुव्वण } देखो **जोव्वण**; (प्रासू ४६ ; ११६) । "पढमं
जुव्वणत्त } चिय बालत्तं, तत्तो कुमरत्तजुव्वणत्ताइं" (सुपा २४३) ।

जुसिअ वि [**जुष्ट**] सेवित ; "पाएण देइ लोगो उवगारिसु परिचिए व जुसिए वा" (ठा ४, ४) ।

जुहिट्ठिर }
हट्ठिल } देखो **जहिट्ठिल** ; (पिंग ; उप ६४८ टी ; णाया १, १६—पत्र २०८; २२६) ।
जुहिट्ठिल }

जुहु सक [**हु**] १ देना, अर्पण करना । २ हवन करना, होम करना । जुहुणामि ; (ठा ७—पत्र ३८१ ; पि ५०१) ।

जूअ न [**द्यूत**] जूआ, द्यूत ; (पाअ) । °**कर** वि [°**कर**] जूआरी, जूए का खिलाड़ी ; (सुपा ५२२) । °**कार** वि [°**कार**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (णाया १, १८) । °**कारि** वि [°**कारिन्**] जूआरी ; (महा) । °**केलि** स्त्री [°**केलि**] द्यूत-क्रीड़ा ; (रयण ४८) । °**खलय** न [°**खलक**] जूआ खेलने का स्थान ; (राज) । °**यकेलि** देखो °**केलि** ; (रयण ४७) ।

जूअ पुं [**यूप**] १ जूआ, धुर, गाड़ी का अवयव-विशेष जो बैलों के कन्धे पर डाला जाता है ; (उप पृ १३६) । २ स्तम्भ-विशेष, "जूअसहस्सं मुसल-सहस्सं च उस्सवेह" (कप्प) । ३ यज्ञ-स्तम्भ ; (जं ३) । ४ एक महापाताल-कलश ; (पव २७२) ।

जूअअ पुं [**दे**] चातक पक्षी ; (दे ३, ४७) ।

जूअग पुं [**यूपक**] देखो **जूअ**=यूप ; (सम ७१) ।

जूअग पुं [**दे**] सन्ध्या को प्रभा और चन्द्र की प्रभा का मिश्रण ; (ठा १०) ।

जूआ स्त्री [**यूका**] १ जूँ, चीलड़, क्षुद्र कीट-विशेष ; (जी १६) । २ परिमाण-विशेष, आठ लिक्षा का एक नाप ; (ठा ६ ; इक) । °**सेज्जायर** वि [°**शय्यातर**] यूकाओं को स्थान देने वाला ; (भग १५) ।

जूआर वि [**द्यूतकार**] जूआरी, जूए का खेलाड़ी ; (रंभा; भवि ; सुपा ४००) ।

जूआरि } वि [**द्यूतकारिन्**] जूआ खेलने वाला, जूए का
जूआरिय } खेलाड़ी ; (द्र ४३ ; सुपा ४०० ; ४८८ ; स १५०) ।

जूड पुं [**जूट**] कुन्तल, केश-कलाप ; (दे ४, २४ ; भवि) ।

जूर अक [**क्रुध्**] क्रोध करना, गुस्सा करना । जूरइ ; (हे ४, १३५ ; षड्) ।

जूर अक [**खिद्**] खेद करना, अफसोस करना । जूरइ ; (हे ४, १३२ ; षड्) । जूर ; (कुमा) । भवि—जूरिहिइ ; (हे २, १६३) । वकृ—**जूरंत** ; (हे २, १६३) ।

जूर अक [**जूर्**] १ झुरना, सूखना ; २ सक. वध करना, हिंसा करना ; (राज) ।

जूरण न [**जूरण**] १ सूखना, झुरना ; २ निन्दा, गर्हण ; (राज) ।

जूरव सक [**वञ्च्**] ठगना, वंचना । जूरवइ ; (हे ४, ९३) ।

जूरवण वि [**वञ्चन**] ठगने वाला ; (कुमा) ।

जूरावण न [**जूरण**] झुराना, शोषण ; (भग ३, ३) ।

जूराविअ वि [**क्रोधित**] क्रुद्ध किया हुआ, कोपित ; (कुमा) ।

जूरिअ वि [**खिन्न**] खेद-प्राप्त ; (पाअ) ।

जूरुम्मिलय वि [**दे**] गहन, निबिड, सान्द्र ; (दे ३, ४७) ।

जूल देखो **जूर**=क्रुध् । जूल ; (गा ३५४) ।

जूव देखो **जूअ**=द्यूत ; (गाया १, २—पत्र ७६)।
जूव } देखो **जूअ**=यूप ; (इक ; ठा ४, २)।
जूवय }
जूस देखो **भूस** ; (ठा २, १ ; कप्प)।
जूस पुंन [**यूष**] जूस, मूँग वगैरः का क्वाथ, कढ़ी ; (ओघ १४७ ; ठा ३, १)।
जूसअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (षड्)।
जूसणा स्त्री [**जोषणा**] सेवा ; (कप्प)।
जूसिय वि [**जुष्ट**] १ सेवित ; (ठा २, १)। २ क्षपित, क्षीण ; (कप्प)।
जूह न [**यूथ**] समूह, जत्था ; (ठा १० ; गा ५४८)। °**वइ** पुं [°**पति**] समूह का अधिपति, यूथ का नायक ; (से ६, ६८ ; गाया १, १ ; सुपा १३७)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (गा ५४८)। °**ाहिवइ** पुं [°**ाधिपति**] यूथ-नायक ; (उत्त ११)।
जूहिय वि [**यूथिक**] यूथ में उत्पन्न ; (आचा २, २)।
जूहिया स्त्री [**यूथिका**] लता-विशेष, जूही का पेड़ ;(पगण १ ; पउम ५३, ७६)।
जूही स्त्री [**यूथी**] लता-विशेष, माधवी लता ; (कुमा)।
जे अ. १ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (हे २,२१७), २ अवधारण-सूचक अव्यय ; (उव)।
जेउ वि [**जेतृ**] जीतने वाला, विजेता ; (भग २०, २)।
जेउआण }
जेउं } देखो **जिण**=जि।
जेऊण }
जेक्कार पुं [**जयकार**] 'जय जय' आवाज, स्तुति ; "हुंति देवाण जेक्कारा" (गा ३३२)।
जेट्ठ देखो **जिट्ठ**=ज्येष्ठ ; (हे २, १७२ ; महा ; उवा)।
जेट्ठ देखो **जिट्ठ** =ज्यैष्ठ ; (महा)।
जेट्ठा देखो **जिट्ठा**; (सम ८ ; आचू ४)। °**मूल** पुं [°**मूल**] जेठ मास ; (औप ; गाया १, १३)। °**मूली** स्त्री [°**मूली**] जेठ मास की पूर्णिमा ; (सुज्ज १०)।
जेण अ [**येन**] लक्षण-सूचक अव्यय; "भमररुअं जेण कमलवणं" (हे २, १८३ ; कुमा)।
जेत्त देखो **जइत्त** ; (पि ६१)।
जेत्तिअ } वि [**यावत्**] जितना ; (हे २, १५७ ; गा ७१;
जेत्तिल } गउड)।
जेत्तुल } (अप) ऊपर देखो ; (हे ४, ४३५)।
जेत्तुल्ल }
जेद्दह देखो **जेत्तिअ**; (हे २, १५७ ; प्राप्र)।
जेम सक [**जिम्, भुज्**] भोजन करना। जेमइ; (हे ४, ११०; षड्)। वकृ—**जेमंत**; (पउम १०३, ८५)।
जेम (अप) अ [**यथा**] जैसे, जिस तरह से ; (सुपा ३८३ ; भवि)।
जेमण } न [**जेमन**] जीमन, भोजन ; (ओघ ८८
जेमणग } औप)।
जेमणय न [**दे**] दक्षिण अंग , गुजराती में 'जमणुं'; (दे; ३, ४८)।
जेमावण न [**जेमन**] भोजन कराना, खिलाना ; (भग ११, ११)।
जेमाविय वि [**जेमित**] भोजित, जिसको भोजन कराया गया हो वह ; (उप १३६ टी)।
जेमिय वि [**जेमित**] जीमा हुआ, जिसने भोजन किया हो वह ; (गाया १, १—पत्र ४१ टी)।
जेयव्व देखो **जिण**=जि।
जेव देखो **एव**=एव ; (रंभा ; कप्पू)।
जेवँ (अप) देखो **जिवँ** ; (हे ४, ३९७)।
जेवड (अप) देखो **जेत्तिअ** ; (हे ४, ४०७)।
जेव्व देखो **एव**=एव; (पि ; नाट)।
जेह (अप) वि [**यादृश्**] जैसा; (हे ४,४०२; षड्)।
जेहिल पुं [**जेहिल**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (कप्प)।
जो } सक [**दृश्**] देखना। जोइ; (सण)। "एसा हु
जोअ } वंकवंकं , जोयइ तुह संमुहं जेण" (सुर ३, १२६)। जोयंति ; (स ३६१)। कर्म— जोइज्जइ; (रयण ३२)। वकृ— **जोअंत** ; (धम्म ११ टी; महा ; सुर १०, २४४)। कवकृ—**जोइज्जंत**; (सुपा ५७)।
जोअ अक [**द्युत्**] प्रकाशित होना, चमकना। जोइ ; (कुमा)। भूका—जोइंसु ; (भग)। वकृ—**जोअंत**; (कुमा ; महा)।
जोअ सक [**द्योतय्**] प्रकाशित करना। जोअइ ; (सुअ १, ६, १, १३)। "तस्सवि य गिहं पुण बालपंडिया जोयए दुहिया" (सुपा ६११)। जोएज्जा ; (विसे ६१२)।
जोअ सक [**योजय्**] जोड़ना, युक्त करना। जोएइ ; (महा)। वकृ—**जोइयव्व, जोएअव्व, जोयणिय, जोयणिज्ज**; (उप ५६६ ; स ५६८ ; औप ; निचू १)।

जोअ पुं [**दे**] १ चन्द्र, चन्द्रमा ; (दे ३, ४८)। २ युगल, युग्म ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

जोअ देखो **जोग** ; (भवि २५ ; स ३६१ ; कुमा)। °**वडय** न [°**वटक**] चूर्ण-विशेष, पाचक चूर्ण, हाजमा ; (स २५२)।

जोअंगण [**दे**] देखो **जोइंगण** ; (भवि)।

जोअग वि [**द्योतक**] १ प्रकाशने वाला। २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध निपात वगैरः पद ; (विसे १००३)।

जोअड पुं [**दे**] खद्योत, कीट-विशेष ; (षड्)।

जोअण न [**दे**] लोचन, नेत्र, चक्षु ; (दे ३, ५०)।

जोअण न [**योजन**] १ परिमाण-विशेष, चार कोश ; (भग; इक)। २ संबन्ध, संयोग, जोड़ना ; (पण्ह १, १)।

जोअण न [**यौवन**] युवावस्था, तरुणता; (उप १४२ टी; गा १६७)।

जोअणा स्त्री [**योजना**] जोड़ना, संयोग करना ; (उप पृ २२१)।

जोआ स्त्री [**द्यो**] १ स्वर्ग ; २ आकाश ; (षड्)।

जोआवइत्तु वि [**योजयितृ**] जोड़ने वाला, संयुक्त करने वाला ; (ठा ४, ३)।

जोइ वि [**योगिन्**] १ युक्त, संयोग वाला। २ चित्त-निरोध करने वाला, समाधि लगाने वाला ; ३ पुं. मुनि, यति, साधु ; (सुपा २१६ ; २१७)। ४ रामचन्द्र का स्वनाम-ख्यात एक सुभट ; (पउम ६७, १०)।

जोइ पुं [**ज्योतिस्**] १ प्रकाश, तेज; (भग ; ठा ४, ३)। २ अग्नि, वह्नि ; "सप्पिं जहा पडियं जोइमज्झे" (सूअ १, १३)। ३ प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु ; "जहा हि अंधे सह जोइणावि" (सूअ १, १२)। ४ अग्नि का काम करने वाला कल्पवृक्ष ; (सम १७)। ५ ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाशक पदार्थ ; (चंद १)। ६ ज्ञान ; ७ ज्ञान युक्त ; ८ प्रसिद्धि-युक्त ; ९ सत्कर्म-कारक ; (ठा ४, ३)। १० स्वर्ग ; ११ ग्रह वगैरः का विमान ; (राज)। १२ ज्योतिष-शास्त्र ; (निर ३, ३)। °**अंग** पुं [°**अङ्ग**] अग्नि का काम करने वाला कल्प-वृक्ष विशेष ; (ठा १०)। °**रस** न [°**रस**] रत्न की एक जाति ; (णाया १, १)। देखो **जोइस**=ज्योतिस्।

जोइअ पुं [**दे**] कीट-विशेष, खद्योत ; (दे ३, ५०)।

जोइअ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ, विलोकित; (सुर ३, १७३ ; महा ; भवि)।

जोइअ वि [**योजित**] जोड़ा हुआ ; (स २६४)।

जोइअ देखो **जोगिय** ; (राज)।

जोइंगण पुं [**दे**] कीट-विशेष, इन्द्र-गोप ; (दे ३, ५०)।

जोइक्क पुंन [**ज्योतिष्क**] प्रदीप आदि प्रकाशक पदार्थ, "किं सुरस्स दंसणाहिगमे जोइक्कंतरं गवेसीयदि" (रंभा)।

जोइक्ख पुं [**दे. ज्योतिष्क**] १ प्रदीप, दीपक ; (दे ३, ४९ ; पव ४ ; वव ७)। २ प्रदीप आदि का प्रकाश ; (ओघ ६५३)।

जोइणी स्त्री [**योगिनी**] १ योगिनी, संन्यासिनी। २ एक प्रकार की देवी, ये चौंसठ हैं ; (संति ११)।

जोइर वि [**दे**] स्खलित ; (दे ३, ४९)।

जोइस न [**दे**] नक्षत्र ; (दे ३, ४९)।

जोइस देखो **जोइ**=ज्योतिस् ; (चंद १ ; कप्प ; विसे १८७० ; जो १ ; ठा ६)। °**राय** पुं [°**राज**] १ सूर्य ; २ चन्द्र ; (चंद १)। °**लय** पुं [°**लय**] सूर्य आदि देव ; (उत्त ३६)।

जोइस पुं [**ज्योतिष**] १ देवों की एक जाति, सूर्य, चन्द्र, ग्रह आदि ; (कप्प; औप ; दंड २७)। २ न. सूर्य आदि का विमान ; (ति १२ ; जो १)। ३ शास्त्र-विशेष, ज्योतिष-शास्त्र ; (उत्त २)। ४ सूर्य आदि का चक्र ; ५ सूर्य आदि का मार्ग, आकाश ; "जे गहा जोइसम्मि चारं चरंति" (पण्ण ३)।

जोइस पुं [**ज्यौतिष**] १ सूर्य, चन्द्र आदि देवों की एक जाति; (कप्प; पंचा २)। २ वि. ज्योतिष शास्त्र का जानकार, जोतिषी; (सुपा १५६)।

जोइसिअ वि [**ज्यौतिषिक**] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, दैवज्ञ, जोतिषी; (स २२ ; सुर ४, १०० ; सुपा २०३)। २ सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देव ; (औप ; जी २४ ; पण्ण २)। °**राय** पुं [°**राज**] १ सूर्य, रवि ; २ चन्द्रमा ; (पण्ण २)।

जोइसिंद पुं [**ज्योतिरिन्द्र**] १ सूर्य, रवि ; २ चन्द्र, चन्द्रमा ; (ठा ६)।

जोइसिण पुं [**ज्योत्स्न**] शुक्ल पक्ष ; (जो ४)।

जोइसिणा स्त्री [**ज्योत्स्ना**] चन्द्र की प्रभा, चन्द्रिका ; (ठा २, ४)। °**पक्ख** पुं [°**पक्ष**] शुक्ल पक्ष ; (चंद १५)। °**भा** स्त्री [°**भा**] चन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (भग १०, ५)।

जोइसिणी स्त्री [**ज्योतिषी**] देवी-विशेष ; (पण्ण १७— पत्र ४६६) ।
जोई स्त्री [**दे**] विद्युत्, बिजली ; (दे ३, ४६ ; षड्) ।
जोईरस देखो **जोइ-रस** ; (कप्प ; जीव ३) ।
जोईस पुं [**योगीश**] योगीन्द्र, योगि-राज ; (स १) ।
जोईसर पुं [**योगीश्वर**] ऊपर देखो ; (सुपा ८३ ; रयण६) ।
जोक्कार देखो **जेक्कार** ; (गा ३३२ अ) ।
जोक्ख वि [**दे**] मलिन, अ-पवित्र ; (दे ३, ४८) ।
जोग पुं [**योग**] १ व्यापार, मन, वचन और शरीर की चेष्टा ; (ठा ४, १ ; सम १० ; स ४७०) । २ चित्त-निरोध, मनः-प्रणिधान, समाधि ; (पउम ६८, २३ ; उत १) । ३ वश करने के लिए या पागल आदि बनाने के लिए फेंका जाता चूर्ण-विशेष ; "जोगो मइमोहकरो दीप खित्तो इमाण मुत्ताण" (सुर ८, २०१) । ४ संबन्ध, संयोग, मेलन ; (ठा १०) । ५ ईप्सित वस्तु का लाभ ; (णाया १, ५) । ६ शब्द का अवयवार्थ-संबन्ध ; (भास २४) । ७ बल, वीर्य, पराक्रम ; (कम्म ५) । °**क्खेम** न [**क्षेम**] ईप्सित वस्तु का लाभ और उसका संरक्षण ; (णाया १, ५) । °**त्थ** वि [°**स्थ**] योग-निष्ठ, ध्यान-लीन ; (पउम ६८, २३) । °**त्थ** पुं [°**र्थ**] शब्द के अवयवों का अर्थ, व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ ; (भास २४) । °**दिट्ठि** स्त्री [°**दृष्टि**] चित्त-निरोध से उत्पन्न होने वाला ज्ञान-विशेष; (राज) । °**धर** [°**धर**] समाधि में कुशल, योगी ; (पउम ११६, १७) । °**परिव्वाइया** स्त्री [°**परिव्राजिका**] समाधि-प्रधान व्रतिनी-विशेष ; (णाया १, ८) । °**पिंड** पुं [°**पिण्ड**] वशीकरण आदि के योग से प्राप्त की हुई भिक्षा ; (पंचा १३ ; निचू १३) । °**मुद्दा** स्त्री [°**मुद्रा**] हाथ का विन्यास-विशेष ; (पंचा ३) । °**व** वि [°**वत्**] १ शुभ प्रवृत्ति वाला ; (सूअ १, २, १) । २ योगी, समाधि करने वाला ; (उत ११) । °**वाहि** वि [°**वाहिन्**] १ शास्त्र-ज्ञान की आराधना के लिए शास्त्रोक्त तपश्चर्या को करने वाला ; २ समाधि में रहने वाला ; (ठा ३, १ —पत्र १२०)। °**विहि** पुंस्त्री [°**विधि**] शास्त्रों की आराधना के लिए शास्त्र-निर्दिष्ट अनुष्ठान, तपश्चर्या-विशेष ; "इय वुत्तो जोगविही", "एसा जोगविही" (अंग) । °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] चित्त-निरोध का प्रतिपादक शास्त्र ; (उवर १६०) ।
जोग देखो **जोग्ग** ; " इय सो न एत्थ जोगो, जोगो पुण होइ अक्कूरो" (धम्म १२; सुर २, २०५ ; महा ; सुपा २०८)।

जोगि देखो **जोइ**=योगिन् ; (कुमा) ।
जोगिंद पुं [**योगीन्द्र**] महान् योगी, योगीश्वर ; (रयण २६) ।
जोगिणी देखो **जोइणी** ; (सुर ३, १८६) ।
जोगिय वि [**यौगिक**] दो पदों के संबन्ध से बना हुआ शब्द, जैसे—उप-करोति, अभि-षेणयति ; (पण्ह २, २—पत्र ११४) । २ यन्त्र-प्रयोग से बना हुआ ; (उप पृ ६४) ।
जोगीसर देखो **जोईसर** ; (स २०१) ।
जोगेसरी स्त्री [**योगेश्वरी**] देवी-विशेष ; (सण) ।
जोगेसी स्त्री [**योगेशी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १४२) ।
जोग्ग वि [**योग्य**] योग्य, उचित, लायक ; (ठा ३,१ ; सुपा २८) । २ प्रभु, समर्थ, शक्तिमान् ; (निचू २०) ।
जोग्गा स्त्री [**दे**] चाटु, खुशामद ; (दे ३, ४८) ।
जोग्गा स्त्री [**योग्या**] १ शास्त्र का अभ्यास ; (भग ११, ११ ; जं ३) । २ गर्भ-धारण में समर्थ योनि ; (तंदु) ।
जोड सक [**योजय्**] जोड़ना, संयुक्त करना । वकृ—**जोडेंत** ; (सुर ४, १६) । संकृ —**जोडिऊण** ; (महा) ।
जोड पुंन [**दे**] १ नक्षत्र ; (दे ३, ४६ ; पि ६) । २ रोग-विशेष ; (सण) ।
जोडिअ पुं [**दे**] व्याध, बहेलिया ; (दे ३, ४६) ।
जोडिअ वि [**योजित**] जोड़ा हुआ, संयुक्त किया हुआ; (सुपा १४६ ; ३५१) ।
जोण पुं [**योन,यवन**] म्लेच्छ देश-विशेष ; (णाया १,१)।
जोणि स्त्री [**योनि**] १ उत्पत्ति-स्थान ; (भग ; सं ८२ ; प्रासू ११५) । २ कारण, हेतु, उपाय ; (ठा ३, ३ ; पंचा ४) । ३ जीव का उत्पत्ति-स्थान; (ठा ७) । ४ स्त्री-चिन्ह, भग ; (अणु) । °**विहाण** न [°**विधान**] । उत्पत्ति-शास्त्र ; (विसे १७७५) । °**सूल** न [°**शूल**] योनि का एक रोग ; (णाया १, १६) ।
जोणिय वि [**योनिक,यवनिक**] अनार्य देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री--°**या** ; (इक ; ओप ; णाया १,१ —पत्र ३७)।
जोण्णलिआ स्त्री [**दे**] अन्न-विशेष, जुआरि. जोन्हरी ; (दे ३, ५०) ।
जोण्ह वि [**ज्यौत्स्न**] १ शुक्ल, श्वेत ; "कालो वा जोण्हो वा केणणुभावेण चंदस्स " (सुज्ज १६) । २ पुं. शुक्ल पक्ष ; (जो ४) ।
जोण्हा स्त्री [**ज्योत्स्ना**] चन्द्र-प्रकाश ; (षड् ; काप्र १६७) ।

जोण्हाल वि [**ज्योत्स्नावत्**] ज्योत्स्ना वाला, चन्द्रिका-युक्त ; (हे २, १५६) ।
जोत्त } न [**योक्त्र,°क**] जोत, रस्सी या चमड़े का तस्मा,
जोत्तय } जिससे बैल या घोड़ा, गाड़ी या हल में जोता जाता है ; (पगह २, ५ ; गा ६६२) ।
जोव देखो **जोअ**=दृश् । जोवइ; (महा; भवि) ।
जोव पुं [**दे**] १ बिन्दु ; २ वि. स्तोक, थोड़ा ; (दे ३, ५२) ।
जोवण न [**दे**] १ यन्त्र, कल; 'आउज्जोवण'' (ओघ ६० भा) । २ धान्य का मर्दन, अन्न-मलन ; (ओघ ६० भा) ।
जोवारि स्त्री [**दे**] अन्न-विशेष, जुआरि ; (दे ३,५०) ।
जोविय वि [**दृष्ट**] विलोकित ; (स १४७) ।
जोव्वण न [**यौवन**] १ तारुण्य, जवानी ; (प्राप्र ; कप्प)। २ मध्य भाग ; (से २, १) ।
जोव्वणणीर } न [**दे**] वयः-परिणाम, वृद्धत्व, बूढ़ापा ;
जोव्वणवेअ } "जोव्वणणीरं तरुणत्तणे वि विजिएंदियाण पुरिसाण" (दे ३, ५१) ।
जोव्वणिया स्त्री [**यौवनिका**] यौवन, जवानी ; (राय) ।
जोव्वणोवय न [**दे**) बूढ़ापा, वृद्धत्व, जरा ; (दे ३, ५१)।
जोस देखो **जुस**=जुष् । वकृ—**जोसंत**; (राज) । प्रयो—संकृ—**जोसियाण** ; (वव ७) ।
जोसिअ वि [**जुष्ट**] सेवित ; (सूअ १, २, ३) ।
जोसिआ स्त्री [**योषित्**] स्त्री, महिला, नारी ; (षड् ; धर्म २) ।
जोसिणी देखो **जोण्हा** ; (अभि ३१) ।
जोह अक [**युध्**] लड़ना । जोहइ ; (भवि) ।
जोह पुं [**योध**] सुभट, योद्धा ; (औप ; कुमा) । **°ट्ठाण** न [**°स्थान**] सुभटों का युद्ध-कालीन शरीर-विन्यास, अंग-रचना-विशेष ; (ठा १ ; निचू २०) ।
जोहणा देखो **जोण्हा** ; (मै ७१) ।
जोहि वि [**योधिन्**] लड़ने वाला, लड़वैया ; (औप) ।
जोहिया स्त्री [**योधिका**] जन्तु-विशेष, हाथ से चलने वाली एक प्रकार की सर्प-जाति ; (जीव २) ।
°ज्जेव } देखो **एव**=एव ; (पि २३; ८५) ।
°ज्जेव्व }
ज्झड देखो **झड** । ज्झडइ ; (हे ४, १३० टि) ।
ज्झुराविअ वि [**दे**] निवासित, निवास-प्राप्त ; (षड्) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** जआराइसद्द-संकलणो सोलहमो तरंगो समत्तो ।

झ

झ पुं [**झ**] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा ; प्राप) । २ ध्यान ; (विसे ३१६८) ।
झंकार पुं [**झङ्कार**] नूपुर वगैरः का आवाज ; (सुर ३, १८ ; पडि ; सण) ।
झंकारिअ न [**दे**] अवचयन, फूल वगैरः का आदान ; (दे ३, ५६) ।
झंख अक [**सं+तप्**] संतप्त होना, संताप करना । झंखइ ; (हे ४, १४०) ।
झंख अक [**वि+लप्**] विलाप करना, बकवाद करना । झंखइ ; (हे ४, १४८) । वकृ—**झंखंत** ; (कुमा) ।
"धणनासाओ गहिलीभूआ झंखइ नरस ! एस धुवं ।
सोमावि भणइ झंखसि तुमंव बहुलाहगहगहिओ" (श्रा १४) ।
झंख सक [**उपा+लभ्**] उपालंभ देना, उलहना देना । झंखइ; (हे ४, १५६) ।
झंख अक [**निर्+श्वस्**] निःश्वास लेना । झंखइ ; (हे ४, २०१) ।
झंख वि [**दे**] तुष्ट, संतुष्ट, खुश ; (दे ३, ५३) ।
झंखण न [**उपालम्भ**] उपालम्भ, उलहना ; (कुमा) ।
झंखर पुं [**दे**] शुष्क तरु, सूखा पेड़ ; (दे ३, ५४) ।
झंखरिअ [**दे**] देखो **झंकारिअ** ; (दे ३, ५६) ।
झंखावण वि [**संतापक**] संताप करने वाला ; (कुमा) ।
झंखिर वि [**निःश्वसितृ**] निःश्वास लेने वाला ; (कुमा ७, ४४) ।
झंझ पुं [**झंझ**] कलह, झगड़ा ; (सम ५०) । **°कर** वि [**°कर**] कलहकारी, फूट कराने वाला ; (सम ३७) । **°पत्त** वि [**°प्राप्त**] क्लेश-प्राप्त ; (सूअ १, १३) ।
झंझण } अक [**झंझणाय्**] झन झन शब्द करना ।
झंझणक्क } झंझणइ ; (गा ५७५ अ) । झंझणक्कइ; (पिंग) ।

झंझणा स्त्री [**झञ्झना**] झन झन शब्द ; (गउड) ।

झंझा स्त्री [**झञ्झा**] १ प्रचण्ड वायु-विशेष ; (गा १७० ; मण) । २ कलह, क्लेश, झगड़ा ; (उव ; बृह ३) । ३ माया, कपट ; ४ क्रोध, गुस्सा ; (सूत्र १, १३) । ५ तृष्णा, लोभ ; (सूत्र २, २, २) । ६ व्याकुलता, व्यग्रता ; (आचा) ।

झंझिय वि [**झञ्झित**] बुभुक्षित, भूखा ; (णाया १,१) ।

झंट सक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना । झंटइ ; (हे ४, १६१)।

झंट अक [**गुञ्ज्**] गुञ्जारव करना । वकृ—**झंटंतभमिरभमरउलमालियं** मालियं गहिउं " (सुपा ५२६) ।

झंटण न [**भ्रमण**] पर्यटन, परिभ्रमण ; (कुमा) ।

झंटलिआ स्त्री [**दे**] चंक्रमण, कुटिल गमन ; (दे ३, ५५)।

झंटिअ वि [**दे**] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, प्रहृत ; (दे ३, ५५) ।

झंटी स्त्री [**दे**] छोटा किन्तु ऊँचा केश-कलाप; (दे ३, ५३) ।

झंडली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; (दे ३, ५४) ।

झंडुअ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड़ ; (दे ३, ५३) ।

झंडुली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; २ क्रीड़ा, खेल ; (दे ३, ६१) ।

झंदिय वि [**दे**] प्रद्रुत, पलायित ; (षड्) ।

झंप सक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना । झंपइ ; (हे ४,१६१) ।

झंप सक [**आ+च्छादय्**] झाँपना, आच्छादन करना, ढकना । झंपइ ; (पिंग) । संकृ—**झंपिऊण, झंपिवि** ; (कुमा ; भवि) ।

झंपण न [**भ्रमण**] परिभ्रमण, पर्यटन ; (कुमा) ।

झंपणी स्त्री [**दे**] पक्ष्म, आँख के बाल; (दे ३, ५४; पाअ) ।

झंपा स्त्री [**झम्पा**] एकदम कूदना, झम्पा-पात; (सुपा १६८) ।

झंपिअ वि [**दे**] १ त्रुटित, टूटा हुआ; २ घट्टित, आहत ; (दे ३, ६१) ।

झंपिअ वि [**आच्छादित**] ढका हुआ, बंद किया हुआ ; (पिंग) । "पईवओ झंपिओ झत्ति" (महा), "तओ एवं भणमाणस्स सहत्थेणं झंपिअं मुहकुहरं सुमइस्स णाइलेणं" (महानि ४)

झक्किअ न [**दे**] वचनीय, लोक-निन्दा; (दे ३, ५; भवि)।

झख देखो **झंख=वि+लप्** । वकृ—**झखंत** ; (जय २३) ।

झगड पुं [**दे**] झगड़ा, कलह ; (सुपा ५४६ ; ५४७) ।

झग्गुली स्त्री[**दे**] अभिसारिका ; (विक १०१) ।

झज्झर पुं [**झर्झर**] १ वाद्य-विशेष, झाँझ ; २ पटह, ढोल; ३ कलि-युग ; ४ नद-विशेष ; (पि २१४) ।

झज्झरिय वि [**झर्झरित**] वाद्य-विशेष के शब्द से युक्त ; (टा १०) ।

झज्झरी स्त्री [**दे**] दूसरे के स्पर्श को रोकने के लिए चांडाल-लोक जो लकड़ी अपने पास रखते हैं वह ; (दे ३, ५४) ।

झड अक [**शद्**] १ झड़ना, पके फल आदि का गिरना, टपकना । २ हीन होना । ३ सक. झपट मारना, गिराना । झडइ ; (हे ४, १३०) । वकृ—**झडंत** ; (कुमा) । कवकृ—"वासासु सीयवाएहिं झडिज्जंतो" (आव १)। संकृ—"**झडिऊण** पल्लविल्ला, पुणोवि जायंति तरुवरा तुरियं । धीराणवि धणरिद्धी, गयावि न हु दुल्लहा एवं" (उप ७२८ टी) ।

झडत्ति अ [**झटिति**] शीघ्र, जल्दी, तुरंत ; (उप ७२८ टी ; महा) ।

झडप्प अ [**दे**] शीघ्रता, जल्दी ; (उप पृ ११० ; रंभा) ।

झडप्प सक [**आ+छिद्**] झपटना, झपट मारना, छीनना । झडप्पमि ; (भवि) । संकृ—**झडप्पिवि** ; (भवि) ।

झडप्पड न [**दे**] झटपट, झटिति, शीघ्र ; (हे ४, ३८८)।

झडप्पिअ वि [**आच्छिन्न**] छीना हुआ ; (भवि) ।

झडि अ [**झटिति**] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ; "झडि आपल्लवइ पुणो" (गा ६१३) ।

झडिअ वि [**दे**] १ शिथिल, ढीला, सुस्त ; (गा २३०) । २ श्रान्त, खिन्न ; (षड्) । ३ झड़ा हुआ, गिरा हुआ, "करच्छडाझडियपक्खिउले" (पउम ६६, १५) ।

झडित्ति देखो **झडत्ति** ; (सुर २, ४) ।

झडिल देखो **जडिल** ; (हे १, १९४) ।

झडी स्त्री [**दे**] निरन्तर वृष्टि; गुजराती में 'झडी'; (दे ३,५३)।

झण सक [**जुगुप्स्**] घृणा करना । झणइ ; (षड्) ।

झणज्झण अक [**झणझणाय्**] 'झन झन' आवाज करना । वकृ—**झणज्झणंत** ; (प्राप) ।

झणज्झणिअ वि [**झणझणित**] झन झन आवाज वाला; (पिंग) ।

झणझण देखो **झणज्झण** । झणझणइ ; (वज्जा ६६) ।

झणझणारव पुं [**झणझणारव**] 'झन झन' आवाज ; (महा) ।

झणझणिय देखो **झणज्झणिअ** ; (सुपा ५०) ।

झणि देखो **झुणि** ; (रंभा) ।

झत्ति देखो **झडत्ति**; (हे १,४२ ; षड् ; महा ; सुर २, ६) ।

झत्थ वि [**दे**] गत, गया हुआ ; २ नष्ट ; (दे ३, ६१) ।

झपिअ वि [दे] पर्यस्त, उत्क्षिप्त ; (षड्) ।
झप्प देखो **झंप** । झप्पइ ; (षड्) ।
झमाल न [दे] इन्द्रजाल, माया-जाल; (दे ३, ५३) ।
झय पुंस्त्री [**ध्वज**] ध्वजा, पताका ; (हे २, २७ ; औप) । स्त्री—°**या** ; (औप) ।
झर अक [**क्षर्**] झरना, टपकना, चूना, गिरना । झरइ ; (हे ४, १७३) । वकृ—**झरंत** ; (कुमा ; सुर ३, १०) ।
झर सक [**स्मृ**] याद करना । झरइ ; (हे ४, ७४ ; षड्) । कृ—**झरेयव्व** ; (बृह ५) ।
झरंक ⟩ पुं [दे] तृण का बनाया हुआ पुरुष, चञ्चा ; (दे **झरंत** ⟩ ३, ५५) ।
झरग वि [**स्मारक**] चिन्तन करने वाला, ध्यान करने वाला; " भणगं करगं झरगं पभावगं णाणदंसणगुणाणं" (तंदु) ।
झरझर पुं [**झरझर**] निर्झर आदि का ' झर झर' आवाज; (सुर ३, १०) ।
झरण न [**क्षरण**] झरना, टपकना, पतन ; (वव १) ।
झरणा स्त्री [**क्षरणा**] ऊपर देखो ; (आवम) ।
झरय पुं [दे] सुवर्णकार; (दे ३, ५४) ।
झरिय वि [**क्षरित**] टपका हुआ, गिरा हुआ, पतित ; (उव ; ओघ ७६०) ।
झरुअ पुं [दे] मशक, मच्छड़ ; (दे ३, ५४) ।
झलक्किअ वि [**दग्ध**] जला हुआ, भस्मीभूत ; "जयगुरुगुरु विरहानलजालोलिझलक्कियं हिययं" (सुपा ६५७ ; हे ४, ३९५) ।
झलझल अक [**जाज्वल्**] झलकना, चमकना, दीपना। । वकृ—**झलझलंत** ; (भवि) ।
झलझलिआ स्त्री [दे] झोली, कोथली, थैली ; (दे ३,५६)।
झलहल देखो **झलझल** । झलहलइ ; (सुपा १८६) । वकृ —**झलहलंत** ; (श्रा २८) ।
झला स्त्री [दे] मृगतृष्णा, धूप में जल-ज्ञान, व्यर्थ तृष्णा ; (दे ३, ५३ ; पाअ) ।
झलुंकिअ ⟩ वि [दे] दग्ध, जला हुआ ; (दे ३,५६)।
झलुसिअ ⟩
झल्लर स्त्री [**झल्लरी**] वलयाकार वाद्य-विशेष, झालर ; (ठा १ औप ; सुर ३, ६६ ; सुपा ५० ; कप्प) ।
झल्लोड °**ल्लअ** वि [दे] संपूर्ण, परिपूर्ण, भरपूर ; (भवि)।
झवणा स्त्री [**क्षपणा**] १ नाश, विनाश ; (विसे ६६१)। २ अध्ययन, पठन ; (विसे ६५८) ।

झस पुं [**झष**] १ मत्स्य, मछली; (पण्ह १, १) । २ °**चिंधय** पुं [°**चिह्नक**] कामदेव, स्मर ; (कुमा) ।
झस पुं [दे] १ अयश, अपकीर्ति ; २ तट, किनारा ; ३ वि. तटस्थ, मध्यस्थ ; ४ दीर्घ-गंभीर, लम्बा और गभीर ; (दे ३, ६०) । ५ टंक से छिन्न ; (दे ३, ६० ; पाअ) ।
झसय पुं [**झषक**] छोटा मत्स्य ; (दे २, ५७) ।
झसर पुंन [दे] शस्त्र विशेष, आयुध-विशेष, "सरझसरसत्ति-सव्वल--" (पउम ८, ६५) ।
झसिअ वि [दे] १ पर्यस्त, उत्क्षिप्त ; २ आकृष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह ; (दे ३, ६२) ।
झसिंध पुं [**झषचिह्न**] काम, स्मर ; (कुमा) ।
झसुर न [दे] १ ताम्बूल, पान ; (दे ३, ६१ ; गउड) । २ अर्थ ; (दे ३, ६१) ।
झा सक [**ध्यै**] चिन्ता करना, ध्यान करना । झाइ, झाअइ ; (हे ४, ६) । वकृ —**झायंत, झायमाण** ; (प्रासू ; महा) । संकृ—**झाऊणं** ; (आरा ११२) । हेकृ—**झाइत्तए** ; (कस) । कृ—**झायव्व, झेय, झाइ-यव्व, झाएयव्व** ; (कुमा ; आरा ७८ ; आव ४ ; ति १० ; सुर १४, ८४) ।
झाइ वि [**ध्यायिन्**] चिन्तन करने वाला, ध्यान करने वाला ; (आचा) ।
झाउ वि [**ध्यातृ**] ध्यान करने वाला, चिन्तक ; (आव४) ।
झाड न [दे, **झाट**] १ लता-गहन, निकुञ्ज, झाडी ; (दे ३, ५७ ; ७, ८४ ; पाअ ; सुर ७, २४३) । २ वृत्त, पेड़ ; "आअल्लो झाडमेअम्मि" (दे १, ६१), "दिट्ठो य तए पोमाडज्झाडयस्स इमम्मि पएसे जिणिग्गओ पायओ" (स १४४) ।
झाडण न [**झाटन**] १ झोष, चय, क्षीणता, २ प्रस्फोटन, झाड़ना ; (राज) ।
झाडल न [दे] कर्पास-फल, कर्पास ; (दे ३, ५७) ।
झाडावण स्त्रीन [**झाटन**] झड़वाना, सफा कराना, मार्जन कराना । स्त्री—°**णी** ; (सुपा ३७३) ।
झाण पुंन [**ध्यान**] १ चिन्ता, विचार, उत्कण्ठा-पूर्वक स्मरण, सोच ; (आव ४ ; ठा ४, १, हे २, २६) । २ एक ही वस्तु में मन की स्थिरता लो लगाना ; (ठा ४, १) । ३ मन आदि की चेष्टा का निरोध ; ४ दृढ़ प्रयत्न से मन वगैरः का व्यापार ; (विसे ३०७१ ; ठा ४, १)

झाणंतरिया स्त्री [**ध्यानान्तरिका**] १ दो ध्यानों का मध्य भाग, वह समय जिसमें प्रथम ध्यान की समाप्ति हुई हो और दूसरे का आरम्भ जबतक न किया गया हो और अन्य अनेक ध्यान करने के बाकी हों ; (ठा ६, भग ५, ४)। २ एक ध्यान समाप्त होने पर शेष ध्यानों में किसी एक को प्रथम प्रारंभ करने का विमर्श ; (बृह १)।

झाणि वि [**ध्यानिन्**] ध्यान करने वाला ; (आरा ८६)।

झाम सक [**दह्**] जलाना, दाह देना, दग्ध करना। झामेइ ; (सूअ २, २, ४४)। वकृ—**झामंत** ; (सूअ २, २, ४४)। प्रयो—झामावेइ ; (सूअ २, २, ४४)।

झाम वि [**दे**] दग्ध, जला हुआ ; (आचा २, १, १)। °**थंडिल** न [°**स्थण्डिल**] दग्ध भूमि ; (आचा २,१,१)।

झाम वि [**ध्याम**] अनुज्ज्वल ; (पगह १,२—पत्र ४०)।

झामण न [**दे**] जलाना, आग लगाना प्रदीपनक; (वव २)।

झामर वि [**दे**] वृद्ध, बूढा ; (दे ३, ५७)।

झामल न [**दे**] १ आँख का एक प्रकार का रोग, गुजराती में "झामरो"। २ वि. झामर रोग वाला ; (उप ७६८ टी ; श्रा १२)।

झामिअ वि [**दे**] दग्ध, प्रज्वलित ; (दे ३, ५६ ; वव ७ ; आवम)। २ श्यामलित, काला किया हुआ; ३ कलङ्कित ; "घणदड्ढपयंगाएवि जीए जा झामिओ नेय" (मार्थ१६)।

झाय वि [**ध्मात**] भस्मीकृत, दग्ध ; (णंदि)।

झायव्व देखो **झा**।

झारुआ स्त्री [**दे**] चीरी, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (दे ३,५७)।

झावण न [**ध्मापन**] देखो **झामण**; (राज)।

झावणा न [**ध्मापना**] दाह, जलाना, अग्नि-संस्कार ; (आवम)।

झिंखण न [**दे**] गुस्सा करना ; (उप १४३ टी)।

झिंखिअ न [**दे**] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा ; (दे ३, ५५)।

झिंगिर } पुं [**दे**] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की
झिंगिरड } एक जाति ; (जीव १)।

झिंझिअ वि [**दे**] बुभुक्षित, भूखा; (बृह ६)।

झिंझिणी } स्त्री [**दे**] एक प्रकार का पेड़, लता-विशेष; (उप
झिंझिरी } १०३१ टी ; आचा २, १, ८ ; बृह १)।

झिज्जंत } वि [**क्षीयमाण**] जो क्षय को प्राप्त होता
झिज्जमाण } हो, कृश होता हुआ ; (से ५,५८; उप ७२८ टी ; कुमा)।

झिण्ण देखो **झीण** ; (से १, ३५ ; कुमा)।

झिमिय } न [**दे**] शरीर के अवयवों की जड़ता; (आचा)।
झिम्मिय }

झिया देखो **झा**। झियाइ, झियायइ ; (उवा ; भग; कस ; पि ४७६)। वकृ—**झियायमाण** ; (णाया १,१—पत्र २८ ; ६०)।

झिरिड न [**दे**] जीर्ण कूप, पुराना इनारा ; (दे ३, ५७)।

झिलिअ वि [**दे**] झीला हुआ, पकड़ी हुई वह वस्तु जो ऊपर से गिरती हो; (सुपा १७८)।

झिल्ल अक [**स्ना**] झीलना, स्नान करना। **झिल्लइ** ; (कुमा)।

झिल्लिआ स्त्री [**झिल्लिका**] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति ; (पाअ ; पगण १)।

झिल्लिरिआ स्त्री [**दे**] १ चीही-नामक तृण ; २ मशक, मच्छड़ ; (दे ३, ६२)।

झिल्लिरी स्त्री [**दे**] मछली पकड़ने की एक तरह की जाल ; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

झिल्ली स्त्री [**दे**] लहरी, तरंग ; (गउड)।

झिल्ली स्त्री [**झिल्ली**] १ वनस्पति-विशेष; (पगण १ ; उप १०३१ टी)। २ कीट-विशेष ; (गा ४६४)।

झीण वि [**क्षीण**] दुर्बल, कृश ; (हे २, ३ ; पाअ)।

झीण न [**दे**] १ अंग, शरीर ; २ कीट, कीड़ा ; (दे ३, ६२)।

झीरा स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम ; (दे ३, ५७)।

झुंख पुं [**दे**] तुणय-नामक वाद्य ; (दे ३, ५८)।

झुंझिय वि [**दे**] १ बुभुक्षित, भूखा ; (पगह १, ३—पत्र ४६)। २ झुरा हुआ, मुरझा हुआ ; (भग १६, ४)।

झुंझुमुसय न [**दे**] मन का दुःख ; (दे ३, ५८)।

झुंटण न [**दे**] १ प्रवाह, (दे ३,५८)। २ पशु-विशेष, जो मनुष्य के शरीर की गरमी से जीता है और जिसका रोम कपड़े के लिये बहु-मूल्य है ; (उप ५५१)।

झुंपडा स्त्री [**दे**] झोपड़ा, तृण-कुटीर, तृण-निर्मित घर; (हे ४, ४१६ ; ४१८)।

झुंबणग न [**दे**] प्रालम्ब ; (णाया १, १)।

झुज्झ देखो **जुज्झ** = युध्। झुज्झइ ; (पि २१४)। वकृ—**झुज्झंत** ; (हे ४, ३७६)।

झुट्ट वि [**दे**] झूठ, अलीक, असत्य ; (दे ३, ५८)।

झुण सक [**जुगुप्स्**] घृणा करना, निन्दा करना। झुणइ ; (हे ४, ४ ; सुपा ३१८)।

झुणि पुं [**ध्वनि**] शब्द, आवाज ; (हे १, ५२ ; षड् ; कुमा)।

झुणिअ वि [**जुगुप्सित**] निन्दित, घृणित ; (कुमा)।

झुत्ती स्त्री [**दे**] छेद, विच्छेद ; (दे ३, ५८)।

झुमुझुमुसय न [**दे**] मन का दुःख ; (दे ३, ५८)।

झुल्ल अक [**अन्दोल्**] झूलना, डोलना, लटकना। वकृ—**झुल्लंत** ; (सुपा ३१७)।

झुल्लण स्त्रीन [**दे**] छन्द-विशेष। स्त्री—°**णा** ; (पिंग)।

झुल्लुरी स्त्री [**दे**] गुल्म, लता, गाछ ; (दे ६, ५८)।

झुस देखो **झूस**। संकृ—**झुसित्ता** ; (पि २०६)।

झुसणा देखो **झूसणा** ; (राज)।

झुसिय देखो **झूसिय** ; (बृह २)।

झुसिर न [**शुषिर**] १ रन्ध्र, विवर, पोल, खाली जगह ; (णाया १, ८ ; सुपा ६२०)। २ वि. पोला, छूँछा ; (ठा २, ३ ; णाया १, २ ; पगह १, २)।

झूर सक [**स्मृ**] याद करना, चिन्तन करना। झूरइ ; (हे ४, ७४)। वकृ—**झूरंत** ; (कुमा)।

झूर सक [**जुगुप्स्**] निन्दा करना, घृणा करना। "निरुवमपोहग्गमइं, दिट्ठूणं तस्स रूवगुणरिद्धिं। इंदो वि देवराया, झूरइ नियमेण नियरूवं" (रयण ८)।

झूर अक [**क्षि**] झुरना, क्षीण होना, सूखना। वकृ—**झूरंत, झूरमाण** ; (सण ; उप पृ २७)।

झूर वि [**दे**] कुटिल, वक्र, टेढ़ा ; (दे ३, ५६)।

झूरिय वि [**स्मृत**] चिन्तित, याद किया हुआ ; (भवि)।

झूस सक [**जुष्**] १ सेवा करना। २ प्रीति करना। ३ क्षीण करना, खपाना। वकृ—**झूसमाण** ; (आचा)। संकृ—**झूसित्ता, झूसित्ताणं, झूसेत्ता** ; (औप ; पि ५८३ ; अंत २७)।

झूसणा स्त्री [**जोषणा**] सेवा, आराधना ; (उवा ; अंत ; औप ; णाया १, १)।

झूसरिअ वि [**दे**] १ अयथार्थ, असत्य ; २ स्वच्छ, निर्मल ; (दे ३, ६२)।

झूसिय वि [**जुष्ट**] १ सेवित, आराधित ; (णाया १, १ ; औप)। २ क्षपित, क्षिप्त, परित्यक्त ; (उवा ; ठा २, २)।

झेडुअ पुं [**दे**] कन्दुक, गेंद ; (दे ३, ५६)।

झेय देखो **झा**।

झेर पुं [**दे**] पुराना घण्टा ; (दे ३, ५६)।

झोंडलिआ स्त्री [**दे**] रासक के समान एक प्रकार की क्रीड़ा ; (दे ३, ६०)।

झोट्टी स्त्री [**दे**] अर्ध-महिषी, भैंस की एक जाति ; (दे ३, ५६)।

झोड सक [**शाटय्**] पेड़ आदि से पत्र वगैरः को गिराना। झोडइ ; (पि ३२६)।

झोड न [**दे**] १ पेड़ आदि से पत्र आदि का गिराना ; २ जीर्ण वृक्ष ; (णाया १, ११—पत्र १७१)।

झोडण न [**शाटन**] पातन, गिराना ; (पगह १, १—पत्र २३)।

झोडप्प पुं [**दे**] १ चना, अन्न-विशेष ; २ सूखे चने का शाक ; (दे ३, ५६)।

झोडिअ पुं [**दे**] व्याध, शिकारी, बहेलिया ; (दे ३, ६०)।

झोलिआ / **झोल्लिआ** स्त्री [**दे. झोलिका**] झोली, थैली, कोथली ; (दे ३, ५६ ; सुअ २, ४)।

झोस देखो **झूस**। झोसेइ ; (आचा)। वकृ—**झोसमाण, झोसेमाण** ; (सुपा २६ ; आचा)। संकृ—"संलेहणाए सम्मं **झोसित्ता** निययदेहं तु" (सुर ६, २४६)।

झोस सक (**गवेषय्**) खोजना, अन्वेषण करना। झोसेहि ; (बृह ३)।

झोस पुं [**दे**] झाड़ना, दूर करना ; (ठा ५, २)।

झोसण न [**दे**] गवेषण, मार्गण ; "आभोगणं ति वा मग्गणं ति वा झोसणं ति वा एगट्ठं" (वव २)।

झोसणा देखो **झूसणा** ; (सम ११६ ; भग)।

झोसिअ देखो **झूसिय** ; (आचा ; हे ४, २५८)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** झआराइसद्द-संकलणो सतरहमो तरंगो समत्तो।

ट

ट पुं [**ट**] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा; प्राप)।

टंक पुं [**टङ्क**] १ तलवार आदि का अग्र भाग ; (पगह १, १—पत्र १८)। २ एक प्रकार का सिक्का ; (श्रा १२ ; सुपा ५१३)। ३ एक दिशा में छिन्न पर्वत ; (णाया १,१—

पत्र ६३)। ४ पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी, छेनी ; (से ५, ३५ ; उपपृ ३१५)। ५ परिमाण-विशेष, चार मासे की तौल ; (पिंग)। ६ पक्षि-विशेष ; (जीव १)।

°क पुं [दे] १ तलवार, खड्ग ; २ खात, खुदा हुआ जलाशय ; ३ जङ्घा, जाँघ ; ४ भित्ति, भींत ; ५ तट, किनारा ; (दे ४, ४)। ६ खनित्र, कुदाल ; (दे ४, ४ ; से ५,३५)। ७ वि. छिन्न, छेदा हुआ, काटा हुआ ; (दे ४, ४)।

टंकण पुं [**टङ्कन**] म्लेच्छ की एक जाति ; (विसे १४४४)।

टंकवत्थुल पुं [**दे**] कन्द-विशेष, एक जाति की तरकारी ; (श्रा २०)।

टंका स्त्री [**दे**] १ जंघा, जाँघ ; (पाअ)। २ स्वनामख्यात एक तीर्थ ; (ती ४३)।

टंकार पुं [**टङ्कार**] धनुष का शब्द ; (भवि)।

टंकार पुं [**दे**] ओजस्, तेज ; (गउड)।

टंकिअ वि [**दे**] प्रसृत, फैला हुआ ; (दे ४, १)।

टंकिअ वि [**टङ्कित**] टाँकी से काटा हुआ ; (दे ४, ५०)।

टंबरय वि [**दे**] भार वाला, गुरु, भारी ; (दे ४, २)।

टक्क पुं [**टक्क**] देश-विशेष ; (हे १, १९५)।

टक्कर पुं [**दे**] ठोकर, अंग से अंग का आघात ; (सुर १२, ६७ ; वव १)।

टक्कारी स्त्री [**दे**] अरणि-वृक्ष का फल ; (दे ४, २)।

टगर पुं [**तगर**] १ वृक्ष-विशेष, तगर का वृक्ष ; २ सुगन्धित काष्ठ-विशेष ; (हे १, २०५ ; कुमा)।

टट्टइआ स्त्री [**दे**] जवनिका, पर्दा ; (दे ४, १)।

टप्पर वि [**दे**] विकराल कर्ण वाला, भयंकर कान वाला ; (दे ४, २ ; सुपा ५२० ; कप्पू)।

टमर पुं [**दे**] केश-चय, बाल-समूह ; (दे ४, १)।

टयर देखो **टगर** ; (कुमा)।

टलटल अक [**टलटलाय्**] 'टल टल' आवाज करना। वकृ—**टलटलंत** ; (प्रास् १६३)।

टलटलिय वि [**टलटलित**] 'टल टल' आवाज वाला; (उप ६४८ टी)।

टसर न [**दे**] विमोटन, मोड़ना ; (दे ४, १)।

टसर पुं [**त्रसर**] टसर, एक प्रकार का सूता ; (हे १, २०५ ; कुमा)।

टसरोट्ट न [**दे**] शेखर, अवतंस ; (दे ४, १)।

टार पुं [**दे**] अधम अश्व, हठी घोड़ा ; (दे ४, २)। "अइसिक्खिओवि न मुअइ, अणयं टारव्व टारत्तं" (श्रा २७)। २ टट्टू, छोटा घोड़ा ; (उप १५५)।

टाल न [**दे**] कोमल फल, गुठली उत्पन्न होने के पहले की अवस्था वाला फल ; (दस ७)।

टिंट° } [**दे**] देखो **टेंटा** ; (भवि)। °**साला** स्त्री
टिंटा } [°**शाला**] जूआखाना, जूआ खेलने का अड्डा ; (सुपा ४९५)।

टिंबरु } पुंन [**दे**] वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड़ ; (दे ४,
टिंबरुअ } ३ ; उप १०३१ टी ; पाअ)।

टिंबरुणी स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (पि २१८)।

टिक्क न [**दे**] १ टीका, तिलक ; २ सिर का स्तबक, मस्तक पर रक्खा जाता गुच्छा ; (दे ४, ३)।

टिक्किद (शौ) वि [**दे**] तिलक-विभूषित ; (कप्पू)।

टिग्घर वि [**दे**] स्थविर, वृद्ध, बूढ़ा ; (दे ४, ३)।

टिट्टिभ पुं [**टिट्टिभ**] १ पक्षि विशेष। २ जल-जन्तु विशेष ; (सुर १०, १८५)। स्त्री—°**भी** ; (विपा १,३)।

टिट्टियाव सक [**दे**] बोलने की प्रेरणा करना, 'टि टि' आवाज करने को सिखलाना। टिट्टियावेइ ; (णाया १, ३)। कवकृ—**टिट्टियावेज्जमाण** ; (णाया १, ३—पत्र ९४)।

टिप्पणय न [**टिप्पनक**] विवरण, छोटी टीका; (सुपा३२४)।

टिप्पी स्त्री [**दे**] तिलक, टीका ; (दे ४, ३)।

टिरिटिल्ल सक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना, चलना। टिरिटिल्लइ ; (हे ४, १६१)। वकृ—**टिरिटिल्लंत**; (कुमा)।

टिविडिक्क सक [**मण्डय्**] मण्डित करना, विभूषित करना। टिविडिक्कइ ; (हे ४, ११५ ; कुमा)। वकृ—**टिविडिक्कंत** ; (सुपा २८)।

टिविडिक्किअ वि [**मण्डित**] विभूषित, अलंकृत ; (पाअ)।

टुंट वि [**दे**] छिन्न-हस्त, जिसका हाथ कटा हुआ हो वह ; (दे ४, ३ ; प्रासू १४२ ; १४३)।

टुंटुण्ण अक [**टुण्टुणाय्**] 'टुन टुन' आवाज करना। वकृ—**टुंटुण्णंत** ; (गा ९८५ ; काप्र ९९५)।

टुंबय पुं [**दे**] आघात-विशेष; गुजराती में 'ठुंबो'; (सुर१२,६७)।

टुट्ट अक [**त्रुट्**] टूटना, कट जाना। टुट्टइ ; (पिंग)। वकृ—**टुट्टंत** ; (से ६, ६३)।

टूवर पुं [**तूवर**] १ जिसको दाढ़ी-मूँछ न उगी हो ऐसा चपरासी; २ जिसने दाढ़ी मूँछ कटवा दी हो ऐसा प्रतिहार ; (हे १, २०५ ; कुमा)।

टेंटा स्त्री [**दे**] जूआखाना, जूआ खेलने का अड्डा ; (दे४,३)।

टेक्कर न [दे] स्थल, प्रदेश ; (दे ४,३) ।
टोक्कण } न [दे] दारू नापने का बरतन ; (दे ४,४) ।
टोक्कणखंड }
टोपिआ स्त्री [दे] टोपी, सिर पर रखने का सिया हुआ एक प्रकार का वस्त्र ; (सुपा २६३) ।
टोप्प पुं [दे] श्रेष्ठि-विशेष ; (स ४५१) ।
टोप्पर पुंन [दे] शिरस्त्राण-विशेष, टोपा ; (पिंग) ।
टोल पुं [दे] १ शलभ, जन्तु-विशेष ; २ पिशाच ; (दे ४, ४ ; प्रासू १६२) । °**गइ** स्त्री [°**गति**] गुरु-वन्दन का एक दोष ; (पव २) । °**गइ** वि [°**ाकृति**] प्रशस्त आकार वाला ; (राज) ।
टोलंब पुं [दे] मधूक, वृक्ष-विशेष, महुआ का पेड़ ; (दे४,४)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि टयाराइसद्दसंकलणो अट्ठारहमो तरंगो समत्तो ।

ठ

ठ पुं [ठ] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा ; प्राप)।
ठइअ वि [दे] १ उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ ; २ पुं. अवकाश ; (दे ४, ५) ।
ठइअ वि [**स्थगित**] १ आच्छादित, ढका हुआ ; २ बन्द किया हुआ, रुका हुआ ; (स १७३) ।
ठइअ देखो **ठविअ** ; (पिंग) ।
ठंडिल्ल देखो **थंडिल्ल** ; (उव) ।
ठंभ देखो **थंभ**=स्तम्भ। कर्म—**ठंभिज्जइ** ; (हे २, ६) ।
ठंभ देखो **थंभ**=स्तम्भ् ; (हे २, ६ ; षड्) ।
ठकुर } पुं [**ठक्कुर**] १ ठाकुर, क्षत्रिय, राजपूत ; (स
ठक्कुर } ५४८ ; सुपा ४१२ ; सट्ठि ६८) । २ ग्राम वगैरः का स्वामी, नायक, मुखिया ; (आवम) ।
ठग पुं [**ठक**] ठग, धूर्त, वञ्चक ; (दे २, ५८ ; कुमा) ।
ठगिय वि [दे] वञ्चित, ठगा हुआ, विप्रतारित ; (सुपा१२४)।
ठगिय देखो **ठइय**=स्थगित ; (उप पृ ३८८) ।
ठट्ठार पुं [दे] ताम्र, पित्तल आदि धातु के बर्तन बनाकर जीविका चलाने वाला ; (धर्म २) ।
ठड्ढ वि [**स्तब्ध**] हक्काबक्का, कुण्ठित, जड़ ; (हे २, ३६ ; वज्जा ६२) ।
ठप्प वि [**स्थाप्य**] स्थापनीय, स्थापन करने योग्य ; (ओघ ६) ।
ठय सक [**स्थग्**] बन्द करना, रोकना । ठएंति ; (स १५६)।
ठयण [**स्थगन**] १ रुकाव, अटकाव । २ वि. रोकने वाला । स्त्री—°**णी** ; (उप ६६६) ।
ठरिअ वि [दे] १ गौरवित; २ ऊर्ध्व-स्थित ; (दे ४, ६) ।
ठलिय वि[दे] खाली, शून्य, रिक्त किया गया; (सुपा २३७)।
ठल्ल वि [दे] निर्धन, धन-रहित, दरिद्र ; (दे ४, ५) ।
ठव सक [**स्थापय्**] स्थापन करना । ठवइ, ठवेइ ; (पिंग ; कप्प ; महा) । ठवे ; (भग) । वकृ—**ठवंत** ; (ग्यण ६३) । संकृ—**ठविउं**, **ठविऊण**, **ठवित्ता**, **ठवित्तु**, **ठवेत्ता**; (पि ५७६; ५८६; ५८२ ; प्रासू २७; पि ५८२) ।
ठवण न [**स्थापन**] स्थापन, संस्थापन ; (सुर २, १७७)।
ठवणा स्त्री [**स्थापना**] १ प्रतिकृति, चित्र, मूर्ति, आकार ; (ठा २, ४ ; १० ; अणु) । २ स्थापन, न्यास ; (ठा ४, ३) । ३ सांकेतिक वस्तु, मुख्य वस्तु के अभाव या अनुपस्थिति में जिस किसी चीज में उसका संकेत किया जाय वह वस्तु ; (विसे २६२७) । ४ जैन साधुओं को भिक्षा का एक दोष, साधु को भिक्षा में देने के लिए रखी हुई वस्तु ; (ठा ३, ४—पत्र १५६) । ५ अनुज्ञा, संमति ; (णंदि) । ६ पर्युषणा, आठ दिनों का जैन पर्व-विशेष ; (निचू १०) । °**कुल** पुंन [°**कुल**] भिक्षा के लिए प्रतिषिद्ध कुल ; (निचू ४) । °**णय** पुं [°**नय**] स्थापना को ही प्रधान मानने वाला मत ; (राज) । °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] पुरुष की मूर्ति या चित्र ; (ठा ३, १ ; सूअ १, ४, १) । °**यरिय** पुं [°**चार्य**] जिस वस्तु में आचार्य का संकेत किया जाय वह वस्तु ; (धर्म २) । °**सच्च** न [°**सत्य**] स्थापना-विषयक सत्य, जैसे जिन भगवान् की मूर्ति को जिन कहना यह स्थापना-सत्य है ; (ठा १० ; पण्ण ११) ।
ठवणी स्त्री [**स्थापनी**] न्यास, न्यास रूप से रखा हुआ द्रव्य ; (श्रा १४) । °**मोस** पुं [°**मोष**] न्यास की चोरी, न्यास का अपलाप ; " दोहेसु मित्तदोहो, ठवणीमोसो असेसमोसेसु" (श्रा १४) ।
ठविअ वि [**स्थापित**] रखा हुआ, संस्थापित ; (षड् ; पि ५६४ ; ठा ५, २) ।

ठविआ स्त्री [दे] प्रतिमा, मूर्ति, प्रतिकृति ; (दे ४, ५) ।

ठविर देखो **थविर** ; (पि १६६) ।

ठा अक [स्था] बैठना, स्थिर होना, रहना, गति का रुकाव करना । ठाइ, ठाअइ ; (हे ४, १६ ; षड्) । वकृ—**ठायमाण** ; (उप १३० टी) । संकृ—**ठाइऊण, ठाऊण** ; (पि ३०६ ; पंचा १८) । हेकृ—**ठाइत्तए, ठाउं** ; (कस ; आव ५)। कृ—**ठाणिज्ज, ठायव्व, ठाएयव्व** ; (णाया १, १४ ; सुपा ३०२ ; सुर ६, ३३) ।

ठाइ वि [स्थायिन्] रहने वाला, स्थिर होने वाला ; (औप ; कप्प) ।

ठाएयव्व देखो **ठा** ।

ठाएयव्व देखो **ठाव** ।

ठाण पुं [दे] मान, गर्व, अभिमान ; (दे ४, ५) ।

ठाण पुंन [स्थान] १ स्थिति, अवस्थान, गति की निवृत्ति ; (सूअ १, ५, १ ; बृह १) । २ स्वरूप-प्राप्ति ; (सम्म १) । ३ निवास, रहना ; (सूअ १, ११ ; निचू १) । ४ कारण, निमित, हेतु ; (सूअ १, १, २ ; ठा २, ४) । ५ पर्यङ्क आदि आसन; (राज) । ६ प्रकार, भेद; (ठा १० ; आचू ४) । ७ पद, जगह ; (ठा १०) । ८ गुण, पर्याय, धर्म ; (ठा ५, ३ ; आव ४) । ६ आश्रय, आधार, वसति, मकान, घर ; (ठा ४, ३) । १० तृतीय जैन अङ्ग-ग्रन्थ, 'ठाणांग' सूत्र ; (ठा १) । ११ 'ठाणांग' सूत्र का अध्ययन, परिच्छेद ; (ठा १ ; २ ; ३ ; ४ ; ५) । १२ कायोत्सर्ग ; (औप) । °भट्ठ वि [°भ्रष्ट] १ अपनी जगह से च्युत; (णाया १,६) । २ चारित्र से पतित ; (तंदु)। °इय वि [°तिग] कायोत्सर्ग करने वाला ; (औप) । °यय न [°यत] ऊँचा स्थान ; (बृह ५) ।

ठाणि वि [स्थानिन्] स्थान वाला, स्थान-युक्त ; (सूअ १, २; उव) ।

ठाणिज्ज देखो **ठा** ।

ठाणिज्ज वि [दे] १ गौरवित, सम्मानित; (दे ४, ५) । २ न. गौरव ; (षड्) ।

ठाणुक्कडिय, **ठाणुक्कुडुय** वि [स्थानोत्कटुक] १ उत्कटुक आसन वाला; (पण्ह २, १; भग) । २ न. आसन-विशेष ; (इक) ।

ठाणु देखो **खाणु** । °**खंड** न [°खण्ड] १ स्थाणु का अवयव; २ वि. स्थाणु की तरह ऊँचा और स्थिर रहा हुआ, स्तम्भित शरीर वाला ; (णाया १, १—पत्र ६६) ।

ठाम, **ठाय** (अप) देखो **ठाण** ; (पिंग °; सण) ।

ठाव सक [स्थापय्] स्थापन करना, रखना । ठावइ, ठावेइ; (पि ५५३ ; कप्प; महा) । वकृ—**ठावंत, ठाविंत** ; (चउ २० ; सुपा ८८) । संकृ—**ठावइत्ता, ठावेत्ता** ; (कस ; महा) । कृ—**ठाएयव्व** ; (सुपा ५४५) ।

ठावण न [स्थापन] स्थापन, धारण; (पंचा १३) ।

ठावणया, **ठावणा** देखो **ठवणा** ; (उप ६८६ टी; ठा १ ; बृह ५)।

ठावय वि [स्थापक] स्थापन करने वाला; (णाया १, १८; सुपा २३४) ।

ठावर वि [स्थावर] रहने वाला, स्थायी ; (अच्चु १३) ।

ठाविअ वि [स्थापित] स्थापित, रखा हुआ ; (ठा ३, १ ; श्रा १२; महा) ।

ठावितु वि [स्थापयितृ] ऊपर देखो ; (ठा ३, १) ।

ठिअअ न [दे] ऊर्ध्व, ऊँचा ; (दे ४, ६) ।

ठिइ स्त्री [स्थिति] १ व्यवस्था, क्रम, मर्यादा, नियम ; "जयट्ठिई एसा" (ठा ४, १ ; उप ७२८ टी) । २ स्थान, अवस्थान ; (सम २) । ३ अवस्था, दशा ; (जी ४८) । ४ आयु, उम्र, काल-मर्यादा ; (भग १४, ५ ; नव ३१; पणण ४ ; औप) । °**क्खय** पुं [°क्षय] आयु का क्षय, मरण ; (विपा २, १) । °**पडिया** देखो °**वडिया**; (कप्प) । °**बंध** पुं [°बन्ध] कर्म-बन्ध की काल-मर्यादा ; (कम्म ४, ८२) । °**वडिया** स्त्री [°पतिता] पुत्र-जन्म-संबन्धी उत्सव-विशेष ; (णाया १, १) ।

ठिक्क न [दे] पुरुष-चिह्न ; (दे ४, ५) ।

ठिक्करिआ स्त्री [दे] ठिकरी, घड़ा का टुकड़ा ; (श्रा १४) ।

ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित; (ठा २, ४) । २ व्यवस्थित, नियमित ; (सूअ १, ६) । ३ खड़ा ; (भग ६,३३) । ४ निषण्ण, बैठा हुआ ; (निचू १ ; प्राप्र ; कुमा) ।

ठिर देखो **थिर** ; (अच्चु १ ; गा १३१ अ) ।

ठिविअ न [दे] १ ऊर्ध्व, ऊँचा; २ निकट, समीप ; ३ हिक्का, हिचकी ; (दे ४, ६) ।

ठिव्व सक [वि+घुट्] मोड़ना । संकृ—**ठिव्विऊण** ; (सुपा १६) ।

ठीण वि [स्त्यान] १ जमा हुआ (घृत आदि) ; (कुमा)। २ ध्वनि-कारक, आवाज करने वाला ; ३ न. जमाव ; ४ आलस्य ; ५ प्रतिध्वनि ; (हे १, ७४ ; २, ३३) ।

ठुंठ पुंन [दे] ठुँठा, स्थाणु ; (जं १) ।
ठेर पुंस्त्री [**स्थविर**] वृद्ध, बूढ़ा ; (गा ८८३ अ ; पि१६६), "पउरजुवाणो गामो, महुमासो जोव्वणं पई ठेरो। जुण्णसुरा साहीणा, असई मा होउ किं मरउ ?" (गा १९७)। स्त्री—°री ; (गा ६५४ अ) ।
ठोड पुं [दे] १ जोतिषी, दैवज्ञ ; २ पुरोहित; (सुपा ५५२)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ठयाराइसद्द-
संकलणो एगूणवीसइमो तरंगो समत्तो ।

ड

ड पुं [ड] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा ; प्राप) ।
डओयर न [**दकोदर**] पेट का रोग-विशेष, जलोदर; (निचू १)।
डंक पुं [**दे**] १ डंक, वृश्चिक आदि का काँटा ; (पण्ह १,१) । २ दंश-स्थान, जहाँ पर वृश्चिक आदि डसा हो ; "जह सव्व-सरीरगयंविसं निरुंभिंतु डंकमाणिंति" (सुपा ६०६)।
डंगा स्त्री [दे] डाँग, लाठी, यष्टि ; (सुपा २३८ ; ३८८; ५४६) ।
डंड देखो **दंड** ; (हे १, १२७ ; प्राप्र) ।
डंड न [दे] वस्त्र के सीए हुए टुकड़े ; (दे ४, ७) ।
डंडय पुं [दे] रथ्या, महल्ला ; (दे ४, ८) ।
डंडारण्ण न [**दण्डारण्य**] दक्षिण का एक प्रसिद्ध जंगल, दण्डकारण्य ; (पउम ६८, ४२) ।
डंडि, **डंडी** स्त्री [दे] सीए हुए वस्त्र-खण्ड ; (दे ४, ७ ; पण्ह १, ३) ।
डंबर पुं [**दे**] घर्म, गरमी, प्रस्वेद ; (दे ४, ८) ।
डंबर पुं [**डम्बर**] आडम्बर, आटोप ; (उप १४२ टी; पिंग)।
डंभ देखो **दंभ** ; (हे १, २१७) ।
डंभण न [**दम्भन**] दागने का शस्त्र-विशेष ; (विपा १, ६)।
डंभणया, **डंभणा** स्त्री [**दम्भना**] १ दागना । २ माया, कपट, दम्भ, वञ्चना ; (उप पृ ३१५ ; पण्ह २,१)।
डंभिअ पुं [दे] जूआरी, जूए का खेलाड़ी ; (दे ४,८) ।
डंभिअ वि [**दाम्भिक**] वञ्चक, मायावी, कपटी ; (कुमा ; षड्) ।
डंस सक [**दंश्**] डसना, काटना । डंसइ, डंसए; (षड्) ।
डंस पुं [**दंश**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, डाँस ; (जी १८) ।
डक्क वि [**दष्ट**] डसा हुआ, दाँत से काटा हुआ ; (हे २, २ ; गा ५३१) ।
डक्क वि [दे] दन्त-गृहीत, दाँत से उपात्त ; (दे ४,६) ।
डक्क स्त्रीन [**डक्क**] वाद्य-विशेष ; (सुपा १६५) ।
डगण न [दे] यान-विशेष ; (राज) ।
डगमग अक [दे] चलित होना, हिलना, काँपना । डगमगीति; (पिंग) ।
डगल न [दे] १ फल का टुकड़ा ; (निचू १५) । २ ईंट, पाषाण वगैरः का टुकड़ा ; (ओघ ३५६ ; ७८ भा) ।
डग्गल पुं [दे] घर के ऊपर का भूमि-तल ; (दे ४,८) ।
डज्झ, **डज्झंत**, **डज्झमाण** देखो **डह** ।
डट्ठ देखो **डक्क**=दष्ट ; (हे १, २१७) ।
डड्ढ वि [**दग्ध**] प्रज्वलित, जला हुआ ; (हे १, २१७ ; गा १४६) ।
डड्ढाडी स्त्री [दे] दव-मार्ग आग का रास्ता ; (दे ४,८)।
डप्फ न [दे] सेल्ल, कुन्त, आयुध-विशेष ; (दे ४, ७) ।
डब्भ पुं [**दर्भ**] डाभ, कुश, तृण-विशेष ; (हे १, २१७) ।
डमडम अक [**डमडमाय्**] 'डम डम' आवाज करना, डमरुक आदि का आवाज होना । वकृ—**डमडमंत**; (सुपा १६३) ।
डमडमिय वि [**डमडमायित**] जिसने 'डम डम' आवाज किया हो वह ; (सुपा १५१ ; ३३८) ।
डमर पुंन [**डमर**] १ राष्ट्र का भीतरी या बाह्य विप्लव, बाहरी या भीतरी उपद्रव ; (णाया १, १ ; जं २ ; पव ४ ; औप) । २ कलह, लड़ाई, विग्रह ; (पण्ह १,२ ; दे ८,३२)।
डमरुअ, **डमरुग** पुंन [**डमरुक**] वाद्य-विशेष, कापालिक योगिओं के बजाने का बाजा ; (दे २, ८६ ; पउम ५७, २३ ; सुपा ३०६ ; षड्) ।
डर अक [**त्रस्**] डरना, भय-भीत होना । डरइ; (हे ४,१९८)।
डर पुं [**दर**] डर, भय, भीति ; (हे १, २१७ ; सण) ।
डरिअ वि [**त्रस्त**] भय-भीत, डरा हुआ ; (कुमा ; सुपा ६५५ ; सण) ।
डल पुं [दे] लोष्ट, ढेला ; (दे ४, ७) ।
डल्ल सक [**पा**] पीना । डल्लइ ; (हे ४,१०) ।

डल्ल } न [**दे**] पिटिका, डाला, डालो, बाँस का बना हुआ
डल्लग } फल-फूल रखने का पात्र ; (दे ४, ७ ; आवम) ।
डल्लिर वि [**पातृ**] पीने वाला ; (कुमा) ।
डव सक [**आ+रभ्**] आरम्भ करना, शुरू करना । डवइ ; (षड्) ।
डव्व पुं [**दे**] वाम हस्त, बायाँ हाथ ; गुजराती में 'डाबो' ; (दे ४, ६) ।
डस देखो **डंस** । डसइ ; (हे १, २१८ ; पि २२२) । हेकृ—**डसिउं** ; (सुर २, २४३) ।
डसण न [**दशन**] १ दंश, दाँत से काटना ; (हे १, २१७) । २ दाँत ; (कुमा) ।
डसिअ वि [**दष्ट**] डसा हुआ, काटा हुआ ; (सुपा ४४६ ; सुर ६, १८५) ।
डह सक [**दह्**] जलाना, दग्ध करना । डहइ, डहए ; (हे १, २१८ ; षड् ; महा ; उव) । भवि—डहिहिइ ; (हे ४, २४६) । कवकृ—**डज्झंत, डज्झमाण** ; (सम १३७ ; उप पृ ३३ ; सुपा ८५) । हेकृ—**डहिउं** ; (पउम ३१, १७) । कृ—**डज्झ** ; (ठा ३, २ ; दस १०) ।
डहण न [**दहन**] १ जलाना, भस्म करना ; (बृह १) । २ पुं. अग्नि, वह्नि ; (कुमा) । ३ वि. जलाने वाला ; "तस्स सुहासुहडहणो अप्पा जलणो पयासेइ" (आरा ८४) ।
डहर पुं [**दे**] १ शिशु, बालक, बच्चा ; (दे ४,८ ; पात्र ; वव ३; दस ६, १; सूअ १, २, १; २, ३, २१; २२; २३) । २ वि. लघु, छोटा, क्षुद्र; (आघ १७८; २६० भा) । °**ग्गाम** पुं [°**ग्राम**] छोटा गाँव; (वव ७) ।
डहरिया स्त्री [**दे**] जन्म से अठारह वर्ष तक की लड़की ; (वव ४) ।
डहरी स्त्री [**दे**] अलिञ्जर, मिट्टी का घड़ा ; (दे ४, ७) ।
डाअल न [**दे**] लोचन, आँख, नेत्र ; (दे ४, ६) ।
डाइणी स्त्री [**डाकिनी**] १ डाकिन, डायन, चुड़ैल, प्रेतिनी; २ जंतर-मंतर जानने वाली स्त्री ; (पण्ह १,३ ; सुपा ५०५; स ३०७ ; महा) ।
डाउ पुं [**दे**] १ फलिहंसक वृक्ष, एक जाति का पेड़ ; २ गणपति की एक तरह की प्रतिमा ; (दे ४, १२) ।
डाग पुंन [**दे**] भाजी, पत्राकार तरकारी ; (भग ७, १० ; दसा १ ; पव २) ।
डागिणी देखो **डाइणी**; (सूअ १, ३, ४) ।

डामर वि [**डामर**] भयंकर ; "डमडमियडमरुयाडोवडामरो" (सुपा १५१) । २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (पउम २०, २१) ।
डामरिय वि [**डामरिक**] लड़ाई करने वाला, विग्रह-कारक; (पण्ह १, २) ।
डाय [**दे**] देखो **डाग** ; (राज) ।
डायाल न [**दे**] हर्म्य-तल, प्रासाद-भूमि ; (आचा २, २,१) ।
डाल स्त्रीन [**दे**] १ डाल, शाखा, टहनी ; (सुपा १४० ; पंचा १६ ; भवि ; हे ४, ४४५) । २ शाखा का एक देश; (आचा २, १, १०) । स्त्री—°**ला** ; (महा ; पाअ ; वज्जा २६), °**ली** ; (दे ४,६ ; पच्च १० ; सण; निचू १)।
डाव पुं [**दे**] वाम हस्त, बायाँ हाथ ; गुजराती में 'डाबो' (दे ४, ६) ।
डाह देखो **दाह** ; (हे १,२१७ ; गा २२६ ; ५३५ ; कुमा)।
डाहर पुं [**दे**] देश-विशेष ; (पिंग) ।
डाहाल पुं [**दे**] देश-विशेष ; (सुपा २६३) ।
डाहिण देखो **दाहिण**; (गा ७७७ ; पिंग) ।
डिअली स्त्री [**दे**] स्थूणा, खंभा, खूँटी ; (दे ४, ६) ।
डिंडव वि [**दे**] जल में पतित ; (षड्) ।
डिंडिम न [**डिण्डिम**] डुगडुगी, डुग्गी, वाद्य-विशेष ; (सुर ६,१८१) ।
डिंडिलिअ न [**दे**] १ खलि-खचित वस्त्र, तैल-किट्ट से व्याप्त कपड़ा ; २ स्खलित हस्त ; (दे ४, १०) ।
डिंडी स्त्री [**दे**] सीए हुए वस्त्र खंड ; (दे ४, ७) । °**बंध** पुं [°**बन्ध**] गर्भ-संभव ; (निचू ११) ।
डिंडीर पुंन [**डिण्डीर**] समुद्र का फेन, समुद्र-कफ ; (उप ७२८ टी ; सुपा २२२) ।
डिंफिअ वि [**दे**] जल-पतित, पानी में गिरा हुआ ; (दे ४, ६) ।
डिंब पुंन [**डिम्ब**] १ भय, डर ; (से २, १६) । २ विघ्न, अन्तराय ; (णाया १, १—पत्र ६ ; औप) । ३ विप्लव, डमर ; (जं २) ।
डिंभ अक [**स्रंस्**] १ नीचे गिरना । २ ध्वस्त होना, नष्ट होना । डिंभइ ; (हे ४, १६७ ; षड्) । वकृ—**डिंभंत** ; (कुमा ७, ४१) ।
डिंभ पुंन [**डिम्भ**] बालक, बच्चा, शिशु ; (पाअ ; हे १, २०२ ; महा ; सुपा १६) । "अह दुक्खियाइं तह भुक्खियाइं जह चिंतियाइं डिंभाइं" (विवे १११) ।

डिंभिया स्त्री [**डिम्भिका**] छोटी लड़की ; (णाया १,१८)।

डिक्क अक [**गर्ज्**] साँढ़ का गरजना। डिक्कइ ; (षड्)।

डिड्डुर पुं [**दे**] भेक, मण्डूक, मेंढ़क ; (दे ४, ६)।

डित्थ पुं [**डित्थ**] १ काष्ठ का बना हुआ हाथी ; २ पुरुष-विशेष, जो श्याम, विद्वान्, सुन्दर, युवा और देखने में प्रिय हो ऐसा पुरुष ; (भास ७७)।

डिप्प अक [**दीप्**] दीपना, चमकना। डिप्पइ, डिप्पए ; (षड्)।

डिप्प अक [**वि+गल्**] १ गल जाना, सड़ जाना। २ गिर पड़ना। डिप्पइ, डिप्पए ; (षड्)।

डिमिल न [**दे**] वाद्य-विशेष ; (विक ८७)।

डिल्ली स्त्री [**दे**] जल-जन्तु -विशेष ; (जीव १)।

डीण वि [**दे**] अवतीर्ण ; (दे ४, १०)।

डीणोवय न [**दे**] उपरि, ऊपर ; (दे ४, १०)।

डीर न [**दे**] कन्दल, नवीन अंकुर ; (दे ४, १०)।

डुंगर पुं [**दे**] शैल, पर्वत, गुजराती में 'डुंगर' ; (दे ४, ११ ; हे ४, ४४५ ; जं २)।

डुंघ पुं [**दे**] नारियर का बना हुआ पात्र-विशेष, जो पानी निकालने के काम में आता है ; (दे ४, ११)।

डुंडुअ पुं [**दे**] १ पुराना घण्टा ; (दे ४, ११)। २ बड़ा घण्टा ; (गा १७२)।

डुंडुक्का स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष ; (विक ८७)।

डुंडुल्ल अक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। डुंडुल्लइ ; (षड्)।

डुंब पुं [**दे**] डोम, चाण्डाल, श्व-पच ; (दे ४, ११ ; २, ७३ ; ७, ७६)। देखो **डोंब** ; (पव ६)।

डुज्जय न [**दे**] कपड़े का छोटा गट्ठा, वस्त्र-खण्ड ; "खिविउं वयणम्मि डुज्जयं अहयं, बद्धा रुक्खस्स थुडे" (सुपा ३६६)।

डुल अक [**दोलय्**] डोलना, काँपना, हिलना। डुलइ ; (पिंग)।

डुलि पुं [**दे**] कच्छप, कछुआ ; (उप पृ १३६)।

डुहुडुहुडुहु अक [**डुहडुहाय्**] 'डुह डुह' आवाज करना, नदी के वेग का खलखलाना। वकृ —**डुहुडुहुडुहुंत**नइसलिलं" (पउम ६४, ४३)।

डेकुण पुं [**दे**] मत्कुण, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष ; (षड्)।

डेड्डुर पुं [**दे**] दर्दुर, भेक, मण्डूक, मेंढ़क; (षड्)।

डेर वि [**दे**] केकराक्ष, नीची ऊँची आँख वाला ; (पिंग)।

डेव सक [**उत्+लंघ्**] उल्लंघन करना, कूद जाना, अतिक्रमण करना। वकृ—**डेवमाण** ; (राज)।

डेवण न [**उल्लङ्घन**] उल्लंघन, अतिक्रमण ; (ओघ ३६)।

डोअ पुं [**दे**] काष्ठ का हाथा, दाल, शाक आदि परोसने का काष्ठ-पात्र-विशेष ; गुजराती में 'डायो' ; (दे ४,११; महा)।

डोअण न [**दे**] लोचन, आँख ; (दे ४, ६)।

डोंगिली स्त्री [**दे**] १ ताम्बूल रखने का भाजन-विशेष ; २ ताम्बूलिनी, पान बेचने वाले की स्त्री ; (दे ४, १२)।

डोंगी स्त्री [**दे**] १ हस्तबिम्ब, स्थासक; २ पान रखने का भाजन-विशेष ; (दे ४, १३)।

डोंब पुं [**दे**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ एक म्लेच्छ-जाति; (पण्ह १, १ ; इक ; पव ६)। ३ देखो **डुंब** ; (पाअ)।

डोंबिलग, **डोंबिलय** पुं [**दे**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ एक अनार्य जाति ; (पण्ह १, १ ; इक)। ३ डोम, चाण्डाल; (स २८६)।

डोड्ड पुं [**दे**] एक जघन्य मनुष्य-जाति; "दिट्ठो तक्खणजिमिओ निग्गच्छंतो बहिं डोड्डो ; तो तस्सुदरं फालिअं" (उप १३६ टी)।

डोर पुं [**दे**] डोर, गुण, रस्सी ; (गा२११ ; वज्जा६६)।

डोल अक [**दोलय्**] १ डोलना, हिलना, झूलना। २ संशयित होना, सन्देह करना। वकृ—**डोलंत** ; (अच्चु ६०)।

डोल पुं [**दे**] १ लोचन, आँख, नयन ; गुजराती में-'डोलो'; (दे ४, ६)। २ जन्तु-विशेष ; (बृह १)। ३ फल विशेष ; (पंचव २)।

डोला स्त्री [**दोला**] हिंडोला, झूलना ; (हे १, २१७ ; पाअ)।

डोला स्त्री [**दे**] डाली, शिबिका, पालकी ; (दे ४, ११)।

डोलाअंत वि [**दोलायमान**] संशय करने वाला, डँवाडोल; (अच्चु ७)।

डोलाइअ वि [**दोलायित**] संशयित, डँवाडोल ; "भडस्स डोलाइअं हिअअं" (गा ६६६)।

डोलायमाण देखो **डोलाअंत** ; (निचू १०)।

डोलाविय वि [**दोलित**] कम्पित, हिलाया हुआ ; (पउम ३१, १२४)।

डोलिअ पुं [**दे**] कृष्णसार, काला हिरन ; (दे ४, १२)।

डोलिर वि [**दोलावत्**] डोलने वाला, काँपने वाला ; "दरडोलिरसीसं" (कुमा)।

डोल्लणग पुं [**दे**] पानी में होने वाला जन्तु-विशेष ; (सुअ २, ३)।

डोव [**दे**] देखो **डोअ** ; (णंदि ; उप पृ २१०)। स्त्री—°**वा** ; (पभा २७)।

डोसिणी स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश ; (षड्) ।
डोहल पुं [दोहद] १ गर्भिणी स्त्री का अभिलाष; २ मनोरथ, लालसा ; (हे १, २१७ ; कुमा) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि डआराइसद्द-
संकलणो वीसइमो तरंगो समत्तो ।

ढ

ढ पुं [ढ] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, यह मूर्धन्य है, क्योंकि इसका उच्चारण मूर्धा से होता है ; (प्रामा ; प्राप) ।
ढंक पुं [दे] काक, वायस, कौआ ; (दे ४, १३ ; जं २ ; प्राप ; सण ; भवि ; पाअ) । °**वत्थुल** न [°**वास्तुल**] शाक-विशेष, एक तरह की भाजी ; (धर्म २) ।
ढंक पुं [ढङ्क] कुम्भकार-जातीय एक जैन उपासक ; (विसे २३०७) ।
ढंक देखो **ढक्क** । भवि—ढंकिस्सं ; (पि २२१) ।
ढंकण न [दे.छादन] १ ढकना, पिधान ; (प्रासू ६० ; अणु) ।
ढंकण देखो **ढिंकुण** ; (राज) ।
ढंकणी स्त्री [दे.छादनी] ढकनी, पिधानिका, ढकने का पात्र-विशेष ; (दे ४, १४) ।
ढंकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल ; (दे ४, १४) ।
ढंख देखो **ढंक**=(दे) ; (पि २१३ ; २२३) ।
ढंखर पुंन [दे] फल-पत्र से रहित डाल ; " ढंखरसेसोवि हु महुअरेण मुक्को ण मालई-विडवो " (गा ७५५ ; वज्जा ५२) ।
ढंखरी स्त्री [दे] वीणा-विशेष, एक प्रकार की वीणा ; (दे ४, १४) ।
ढंढ पुं [दे] १ पंक, कीच, कर्दम ; (दे ४, १६) । २ वि. निरर्थक, निकम्मा ; (दे ४, १६ ; भवि) ।
ढंढण पुं [ढण्ढन] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (विवे ३२; पडि) ।
ढंढणी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच, वृक्ष-विशेष ; (दे ४, १३) ।
ढंढर पुं [दे] १ पिशाच ; २ ईर्ष्या ; (दे ४, १६) ।
ढंढरिअ पुं [दे] कर्दम, पंक, कादा ; (दे ४, १५) ।
ढंढल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, भ्रमण करना । ढंढल्लइ ;(हे ४, १६१)।
ढंढल्लिअ वि [भ्रान्त] भ्रान्त, घूमा हुआ ; (कुमा) ।
ढंढसिअ पुं [दे] १ ग्राम का यक्ष ; २ गाँव का वृक्ष ; (दे ४, १५) ।
ढंढुल्ल देखो **ढंढल्ल** । ढंढुल्लइ ; (सण) ।
ढंढोल सक [गवेषय्] खोजना, अन्वेषण करना । ढंढोलइ ; (हे ४, १८९) । संकृ—**ढंढोलिअ** ; (कुमा) ।
ढंढोल्ल देखो **ढंढुल्ल** । संकृ—**ढंढोल्लिवि** ; (सण) ।
ढंस अक [वि+वृत्] धसना, धसकर रहना, गिर पड़ना । ढंसइ ; (हे ४, ११८) । वकृ—**ढंसमाण** ; (कुमा)।
ढंसय न [दे] अयश, अपकीर्ति ; (दे ४, १४) ।
ढक्क सक[छादय्] १ ढकना, आच्छादन करना, बन्द करना । ढक्कइ ; (हे ४,२१) । भवि—ढक्किस्सं ; (गा३१४) । कर्म--"ढक्किज्जउ कुआई" (सुर १२, १०२) । संकृ—"तत्थ **ढक्किउं** दारं", **ढक्किऊण, ढक्केऊण** ; (सुपा ६४० ; महा ; पि २२१) । कृ—**ढक्केयव्व**; (दस २) ।
ढक्क पुं [ढक्क] १ देश-विशेष, २ देश-विशेष में रहने वाली एक जाति; (भवि)। ३ भाट की एक जाति ; (उप पृ११२)।
ढक्कय न [दे] तिलक ; (दे ४, १४) ।
ढक्करि वि [दे] अद्भुत, आश्चर्य-जनक ; (हे ४, ४२२)।
ढक्का स्त्री [ढक्का] वाद्य-विशेष ; (गा ५२६ ; कुमा ; सुपा २४२) ।
ढक्किअ वि [छादित] बन्द किया हुआ, आच्छादित ; (स ४६६ ; कुमा) ।
ढग्गढग्गा स्त्री [दे] 'ढग ढग' आवाज, पानी वगैरः पीने की आवाज ; "सोणियं ढग्गढग्गाए घोट्टयंतो" (स २५७) ।
ढज्जंत देखो **डज्झंत** ; (पि २१२ ; २१९) ।
ढड्ड पुं [दे] भेरी, वाद्य-विशेष ; (दे ४, १३) ।
ढड्डर पुं [दे] १ बडी आवाज, महान् ध्वनि; (ओघ १५६) । २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, बड़े स्वर से प्रणाम करना ; (गुभा २५) । ३ वि. वृद्ध, बूढ़ा ; "ढड्ढरसड्ढाण मग्गेण"; (सार्ध३८) ।
ढणिय वि [ध्वनित] शब्दित, ध्वनित ; (सुर १३, ८४)।
ढमर न [दे] १ पिठर , स्थाली ; (दे ४, १७ ;पाअ) । २ गरम पानी, उष्ण जल ; (दे ४, १७) ।

ढयर पुं [दे] पिशाच ; (दे ४, १६ ; पाअ)। २ ईर्ष्या, द्वेष ; (दे ४, १६)।

ढल अक [दे] १ टपकना, नीचे पड़ना, गिरना। २ झुकना। वकृ—**ढलंत** ; (कुमा), "**ढलंत**सेयचामरुप्पीलो" (उप ६८६ टी)।

ढलिय वि [दे] झुका हुआ ; (उप पृ ११८)।

ढाल सक [दे] १ ढालना, नीचे गिराना। २ झुकाना, चामर वगैरः का वीजना। ढालए ; (सुपा ४७)।

ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ ; "सीसाओ ढालिओ सूरो" (सुर ३, २२८)।

ढाव पुं [दे] आग्रह, निर्बन्ध ; (कुमा)।

ढिंक पुं [ढिङ्क] पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

ढिंकण } पुं [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, गौ आदि को लगने **ढिंकुण** } वाला कीट-विशेष ; (राज ; जी १८)।

ढिंग देखो **ढिंक** ; (राज)।

ढिंढय वि [दे] जल में पतित ; (दे ४, १५)।

ढिक्क अक [गर्ज्] साँढ का गरजना। ढिक्कइ ; (हे ४, ९९)। वकृ—**ढिक्कमाण** ; (कुमा)।

ढिक्कय न [दे] नित्य, हमेशा, सदा ; (दे ४, १५)।

ढिक्किय न [गर्जन] साँढ़ की गर्जना ; (महा)।

ढिड्डिस न [ढिड्डिस] देव-विमान विशेष ; (इक)।

ढिल्ल स्त्री [दे] ढीला, शिथिल ; (पि १५०)।

ढिल्ली स्त्री [ढिल्ली] भारतवर्ष की प्राचीन और अद्यतन राज-धानी, दिल्ली शहर ; (पिंग)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] दिल्ली का राजा ; (कुमा)।

ढुंढुल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना। ढुंढुल्लइ ; (हे ४, १६१)। ढुंढुल्लन्ति ; (कुमा)।

ढुंढुल्ल सक [गवेषय्] ढूँढ़ना, खोजना, अन्वेषण करना। ढुंढुल्लइ ; (हे ४, १८९)।

ढुंढुल्लण न [गवेषण] खोज, अन्वेषण ; (कुमा)।

ढुंढुल्लिअ वि [गवेषित] अन्वेषित, ढूँढा हुआ ; (पाअ)।

ढुक्क सक [ढौक्] १ भेंट करना, अर्पण करना। २ उपस्थित करना। ३ अक लगना, प्रवृत्ति करना। ४ मिलना। वकृ—**ढुक्कंत** ; (पिंग)। कवकृ—**ढुक्कंत** ; (उप ६८६ टी ; पिंग)।

ढुक्क वि [दे.ढौकित] १ उपस्थित ; (स २५१)। २ मिलित ; (पिंग)। ३ प्रवृत्त ; " चिंतिउं ढुक्को "(श्रा २७ ; सण ; भवि)।

ढुक्किअ वि [ढौकित] ऊपर देखो ; (पिंग)।

ढुम } सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। ढुमइ ; ढुसइ ; **ढुस** } (हे ४, १६१ ; कुमा)।

ढेंक पुं [ढेङ्क] पक्षि-विशेष ; (वज्जा १४)।

ढेंका स्त्री [दे] १ हर्ष, खुशी ; २ ढेंकुवा, ढेंकली, कूप-तुला ; (दे ४, १७)।

ढेंकिय देखो **ढिक्किय** ; (राज)।

ढेंकी स्त्री [दे] बलाका, बक-पङ्क्ति ; (दे ४,१५)।

ढेंकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल ; (दे ४, १४)।

ढेंढिअ वि [दे] धूपित, धूप दिया हुआ ; (दे ४, १६)।

ढेणियालग } पुंस्त्री [**ढेणिकालक**] पक्षि-विशेष ; (पण्ह **ढेणियालय** } १, १)। स्त्री—°**लिया** ; (अनु ४)।

ढेल्ल वि [दे] निर्धन, दरिद्र ; (दे ४, १६)।

ढोअ देखो **ढुक्क**=ढौक्। ढोएज्जह ; (महा)।

ढोइय वि [**ढौकित**] १ भेंट किया हुआ ; २ उपस्थित किया हुआ ; (महा ; सुपा १६८ ; भवि)।

ढोंघर वि [दे] भ्रमण-शील, घूमने वाला ; (दे ४, १५)।

ढढोल्ल पुं [दे] १ ढोल, पटह ; २ देश-विशेष, जिसकी राज धानी धौलपुर है ; (पिंग)।

ढोवण } न [**ढौकन**, °**क**] १ भेंट करना, अर्पण करना; **ढोवणय** } (कुमा)। २ उपहार, भेंट ; (सुपा २८०)।

ढोविय वि [**ढौकित**] उपस्थापित, उपस्थित किया हुआ ; (स ५०८)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि ढ**याराइसद्द-संकलणो एक्कवीसइमो तरंगो समत्तो।

ण तथा **न**

ण पुं [**ण, न**] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है, इससे यह मूर्धन्य कहाता है ; (प्राप ; प्रामा)।

ण अ [**न**] निषेधार्थक अव्यय, नहीं, मत ; (कुमा ; गा २ ; प्रासू १५९)। °**उण**, °**उणा**, °**उणाइ**, °**उणो** अ [°**पुनः**] न तु, नहीं कि ; (हे १, ६५ ; षड्)। °**संति-परलोगवाइ** वि [°**शान्तिपरलोकवादिन्**] मोक्ष और परलोक नहीं है ऐसा मानने वाला ; (ठा ८)।

ण स [**तत्**] वह ; (हे ३, ७० ; कुमा)।

ण स [**इदम्**] यह, इस ; (हे ३, ७७ ; उप ६६० ; गा १३१ ; १६६) ।

ण वि [**ज्ञ**] जानकार, पण्डित, विचक्षण ; (कुमा १,८८) ।

णअ देखो **णव**=नव ; (गा १००० ; नाट-चैत ४१) । °**दीअ** पुं [°**द्वीप**] बङ्गाल का एक विख्यात नगर, जो न्याय-शास्त्र का केन्द्र गिना जाता है, जिसको आजकल 'नदिया' कहते हैं ; (नाट—चैत १२६) ।

णइ अ १ निश्चय-सूचक अव्यय ; "गईए णइ" (हे २, १८४ ; षड्) । २ निषेधार्थक अव्यय ; "नइ माया मेय पिया" (सुर २, २०६) ।

णइ° देखो **णई** ; (गउड ; हे २,६७; गा १६७; सुर १३,३५) ।

णइअ वि [**नयिक**] नय-युक्त, अभिप्राय-विशेष वाला ; (सम ४०) ।

णइअ देखो **णी**=नी ।

णइमासय न [**दे**] पानी में होने वाला फल-विशेष ; (दे ४, २३) ।

णई स्त्री [**नदी**] नदी, पर्वत आदि से निकला वह स्रोत जो समुद्र या बड़ी नदी में जाकर मिले ; (हे १, २२६ ; पाअ) । °**कच्छ** पुं [°**कच्छ**] नदी के किनारे पर की झाड़ी ; (णाया १, १) । °**गाम** पुं [°**ग्राम**] नदी के किनारे पर स्थित गाँव ; (प्राप्र) । °**णाह** पुं [°**नाथ**] समुद्र, सागर ; (उप ७२८ टी) । °**वइ** पुं [°**पति**] समुद्र, सागर; (पराह १, ३) । °**संतार** पुं [°**संतार**] नदी उतरना, जहाज आदि से नदी पार जाना ; (राज) । °**सोत्त** पुं [°**स्रोतस्**] नदी का प्रवाह; (प्राप्र ; हे १, ४) ।

णउ (अप) देखो **इव** ; (कुमा) ।

णउअ न [**नयुत**] 'नयुतांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक) ।

णउअंग न [**नयुताङ्ग**] 'प्रयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक) ।

णउइ स्त्री [**नवति**] संख्या-विशेष, नव्वे, ६० ; (सम ६४) ।

णउइय वि [**नवत**] ६० वाँ ; (पउम ६०, ३१) ।

णउल पुं [**नकुल**] १ न्यौला, (पराह १, १ , जी २२) । २ पाँचवाँ पाण्डव ; (णाया १, १६) ।

णउली स्त्री [**नकुली**] विद्या-विशेष, सर्प-विद्या की प्रतिपक्ष विद्या ; (राज) ।

णं अ १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (हे ४, २८३ ; उवा ; पडि) । २ प्रश्न-सूचक अव्यय ; ३ स्वीकार-द्योतक अव्यय ; (राज) ।

णं (शौ) देखो **णणु** ; (हे ४, २८३) ।

णं (अप) देखो **इव** ; (हे ४, ४४४ ; भवि ; सण ; पडि) ।

णंगअ वि [**दे**] रुद्ध, रोका हुआ ; (षड्) ।

णंगर पुं [**दे**] लंगर, जहाज को जल-स्थान में थामने के लिए पानी में जो रस्सी आदि डाली जाती है वह; (उप ७२८ टी ; सुर १३, १६३ ; स २०२) ।

णंगर, **णंगल** न [**लाङ्गल**] हल, जिससे खेत जोता और बोया जाता है ; (पउम ७२, ७३ ; पराह १,४; पाअ)।

णंगल पुंन [**दे**] चञ्चु, चाँच ; "जडाउणो रुट्ठो । नहणंगलेसु पहरइ, दसणाणं विउलवच्छयले" (पउम ४४, ४०) ।

णंगलि पुं [**लाङ्गलिन्**] बलभद्र, हली ; (कुमा) ।

णंगलिय पुं [**लाङ्गलिक**] हल के आकार वाले शस्त्र-विशेष को धारण करने वाला सुभट ; (कप्प ; औप) ।

णंगूल न [**लाङ्गूल**] पुच्छ, पूँछ; (ठा ४,२; हे १,२५६)।

णंगूलि वि [**लाङ्गूलिन्**] १ लम्बा पूँछ वाला; २ पुं. वानर, बन्दर ; (कुमा) ।

णंगोल देखो **णंगूल** ; (णाया १, ३ ; पि १२७) ।

णंगोलि, **णंगोलिय** पुं [**लाङ्गूलिन्**, °**क**] १ अन्तर्द्वीप-विशेष; २ उसका निवासी मनुष्य ; (पि १२७ ; ठा ४,२)।

णंतग न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (कस ; आव ५) ।

णंद अक [**नन्द्**] १ खुश होना, आनन्दित होना । २ समृद्ध होना । णंदइ, णंदए ; (षड्) । कवकृ—**णंदिज्जमाण** ; (औप) । कृ—**णंदिअव्व**, **णंदेअव्व** ; (षड्) ।

णंद पुं [**नन्द**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पाटलिपुत्र नगर का एक राजा ; (मुद्रा १६८ ; णंदि) । २ भरत क्षेत्र के भावी प्रथम वासुदेव ; (सम १५४) । ३ भरत क्षेत्र में होने वाले नववें तीर्थंकर का पूर्व-भवीय नाम ; (सम १५४) । ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि ; (पउम २०, २०) । ५ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी ; (सुपा ६३८) । ६ न. देव-विमान विशेष ; (सम २६) । ७ लोहे का एक प्रकार का वृत्त आसन ; (णाया १, १—पत्र ४३ टी) । ८ वि. समृद्ध होने वाला; (औप) । °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान विशेष; (सम २६) । °**कूड** न [°**कूट**] एक देव-विमान ; (सम २६) । °**ज्झय** न [°**ध्वज**] एक देव-विमान; (सम २६) । °**प्पभ** न [°**प्रभ**] देव-विमान विशेष ; (सम २६) । °**मई** स्त्री [°**मती**] एक अन्त-

पाण्डवों का समान-कालीन एक राजा ; (णाया १, १६—पत्र २०८)। °राय पुं [°राग] समृद्धि में हर्ष; (भग २, ५)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष ; (पराण १)। °वड्ढणा देखो °वद्धणा; (इक)। °वद्धण पुं [°वर्धन] १ भगवान् महावीर का जेष्ठ भ्राता ; (कप्प)। २ पक्ष-विशेष ; (कप्प)। ३ एक राज-कुमार ; (विपा १, ६)। ४ न. नगर-विशेष ; (सुपा ६८)। °वद्धणा स्त्री [°वर्धना] १ एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)। २ एक पुष्करिणी ; (ठा ४, २)। °सेण पुं [°षेण] १ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चतुर्थ जिन-देव ; (सम १५३)। २ एक जैन कवि ; (अजि ३८)। ३ एक राज-कुमार ; (ठा १०)। ४ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (उव)। ५ देव-विशेष ; (राज)। °सेणा स्त्री [°षेणा] १ पुष्करिणी विशेष ; (जीव ३)। २ एक दिक्कुमारी देवी ; (दीव)। °सेणिया स्त्री [°षेणिका] राजा श्रेणिक की एक पत्नी ; (अंत)। °स्सर पुं [°स्वर] १ देखो णंदीसर ; (राज)। २ बारह प्रकार के वाद्यों का एक ही साथ आवाज ; (जीव ३)।

णंदिअ न [दे] सिंह की चिल्लाहट ; (दे ४, १६)।

णंदिअ वि [नन्दित] १ समृद्ध ; (औप)। २ जैन मुनि-विशेष ; (कप्प)।

णंदिक्ख पुं [दे] सिंह, मृगेन्द्र ; (दे ४, १६)।

णंदिज्ज न [नन्दीय] जैन मुनिओं का एक कुल ; (कप्प)।

णंदिणी स्त्री [नन्दिनी] पुत्री, लड़की ; (पउम ४६,२)। °पिउ पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक स्वनाम-ख्यात गृहस्थ उपासक ; (उवा)।

णंदिणी स्त्री [दे] गौ, गैया ; (दे ४, १८ ; पाअ)।

णंदी देखो णंदि ; (महा ; ओघ ३२१ भा ; पण्ह १, १ ; औप ; सम १५२ ; णंदि)।

णंदी स्त्री [दे] गौ, गैया; (दे ४, १८ ; पाअ)।

णंदीसर पुं [नन्दीश्वर] स्वनाम प्रसिद्ध एक द्वीप ; (णाया १, ८ ; महा)। °वर पुं [°वर] नन्दीश्वर द्वीप ; (ठा ४, ३)। °वरोद पुं [°वरोद] समुद्र-विशेष ; (जीव ३)।

णंदुत्तर पुं [नन्दोत्तर] देव-विशेष, नागकुमार के भूतानन्द-नामक इन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति देव ; (ठा ५, १ ; इक) °वडिंसग न [°ावतंसक] एक देव-विमान ; (सम २६)।

णंदुत्तरा स्त्री [नन्दोत्तरा] १ पश्चिम रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८ ; इक)। २ कृष्णा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (जीव ३)। ३ पुष्करिणी-विशेष ; (ठा ४, २)। ४ राजा श्रेणिक की एक पत्नी ; (अंत ७)।

णकार पुं [णकार, नकार] 'ण' या 'न' अक्षर ; (विसे २८६७)।

णक्क पुं [नक्र] १ जलजन्तु-विशेष, ग्राह, नाका ; (पण्ह १, १ ; कुमा)। २ रावण का एक स्वनाम-ख्यात सुभट ; (पउम ५६, २८)।

णक्क पुं [दे] १ नाक, नासिका ; (दे ४, ४६ ; विपा १, १ ; औप)। २ वि. मूक, वाचा-शक्ति से रहित ; (दे ४, ४६)। °सिरा स्त्री [°सिरा] नाक का छिद्र; (पाअ)।

णक्कंचर पुं [नक्तञ्चर] १ राक्षस; २ चोर ; ३ बिड़ाल; ४ वि. रात्रि में चलने फिरने वाला ; (हे १, १७७)।

णक्ख पुं [नख] नख, नाखून ; (हे २, ६६ ; प्राप्र)। °अ वि [°ज] नख से उत्पन्न ; (गा ६७१)। °आउह पुं [°आयुध] सिंह, मृगारि. (कुमा)।

णक्खत्त पुंन [नक्षत्र] कृत्तिका, अश्विनी, भरणी आदि ज्योतिष्क-विशेष ; (पाअ ; कप्प ; इक ; सुज्ज १०)। °दमण पुं [°दमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश; (पउम ५, २६६)। °मास पुं [°मास] ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध समय-मान विशेष ; (वव १)। °मुह न [°मुख] चन्द्र, चाँद ; (राज)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध वर्ष-विशेष ; ठा ६)।

णक्खत्त वि [नाक्षत्र] नक्षत्र-संबन्धी ; (जं ७)।

णक्खत्तणेमि पुं [दे. नक्षत्रनेमि] विष्णु, नारायण ; (दे ४, २२)।

णक्खक्षण न [दे] नख और कण्टक निकालने का शस्त्र-विशेष ; (बृह १)।

णक्खि वि [नखिन्] सुन्दर नख वाला; (बृह १)।

णग देखो णय=नग ; (पण्ह १, ४; उप ३५६ टी ; सुर ३, ३४)। °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत; (ठा ६)। [°वर] पुं [°वर] श्रेष्ठ पर्वत; (णाया १, १)। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] मेरु पर्वत; (पउम ३, ७६)।

णगर न [नकर, नगर] शहर, पुर ; (बृह १ ; कप्प ; सुर ३, २०)। °गुत्तिय, °गोत्तिय पुं [°गुप्तिक] नगर

रक्षक, कोटवाल, दरोगा ; (णाया १, १८ ; औप ; पण्ह १, २ ; णाया १, २)। °घाय पुं [°घात] शहर में लूट-पाट ; (णाया १, १८)। °णिद्धमण न [°निर्ध्मन] नगर का पानी जाने का रास्ता, मोरी, खाल ; (णाया १, २)। °रक्खिय पुं [°रक्षिक] देखो °गुत्तिय ; (निचू ४)। °ावास पुं [°ावास] राज-धानी, पाट-नगर ; (जं १—पत्र ७४)।

णगरी देखो **णयरी** ; (राज)।

णगाणिआ स्त्री [**नगाणिका**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

णगिंद पुं [**नगेन्द्र**] १ श्रेष्ठ पर्वत ; (पउम ६७, २७)। २ मेरु पर्वत ; (सूअ १, ६)।

णगिण वि [**नग्न**] नंगा, वस्त्र-रहित; (आचा; उप पृ ३६३)।

णग्ग वि [**नग्न**] नंगा, वस्त्र रहित, (प्राप्र ; दे ४, २८)। °इ पुं [°जित्] गन्धार देश का एक स्वनाम-ख्यात राजा; (औप ; महा)।

णग्गठ वि [**दे**] निर्गत, बाहर निकला हुआ; (षड्—पृष्ठ१८१)।

णग्गोह पुं [**न्यग्रोध**] वृक्ष-विशेष, वड़ का पेड़ ; (पाअ ; सुर १, २०५)। °परिमंडल न [°परिमण्डल] संस्थान-विशेष, शरीर का आकार-विशेष ; (ठा ६)।

णघुस पुं [**नघुष**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (पउम २२, ५५)।

णचिरा देखो **अइरा**=अचिरात् ; (पि ३६५)।

णच्च अक [**नृत्**] नाचना, नृत्य करना। णच्चइ ; (षड्)। वकृ—**णच्चंत, णच्चमाण**; (सुर २, ७५ ; ३, ७७)। हेकृ—**णच्चिउं**; (गा ३६१)। कृ—**णच्चियव्व**; (पउम ८०, ३२)। प्रयो, कवकृ—**णच्चाविज्जंत**; (स २६)।

णच्च न [**ज्ञत्व**] जानकारी, पंडिताई ; (कुमा)।

णच्च न [**नृत्य**] नाच, नृत्य ; (दे ५, ८)।

णच्चग वि [**नर्तक**] १ नाचने वाला। २ पुं. नट, नचवैया; (वव ६)।

णच्चण न [**नर्तन**] नाच, नृत्य ; (कप्पू)।

णच्चणी स्त्री [**नर्तनी**] नाचने वाली स्त्री ; (कुमा ; कप्पू ; सुपा १६६)।

णच्चा, **णच्चाण** } देखो **णा**=ज्ञा।

णच्चाविअ वि [**नर्तित**] नचाया हुआ ; (आघ २६५ ; ठा ६)।

णच्चासन्न न [**नात्यासन्न**] अति समीप में नहीं ; (णाया १, १)।

णच्चिर वि [**नर्तितृ**] नचवैया, नाचने वाला, नर्तन-शील ; (गा ४२० ; सुपा ५४ ; कुमा)।

णच्चिर वि [**दे**] रमण-शील ; (दे ४, १८)।

णच्चुण्ह वि [**नात्युष्ण**] जो अति गरम न हो; (ठा ५,३)।

णज्ज सक [**ज्ञा**] जानना। णज्जइ ; (प्राप्र)।

णज्जंत, **णज्जमाण** } देखो **णा**=ज्ञा।

णज्जर वि [**दे**] मलिन, मैला; (दे ४, १६)।

णज्झर वि [**दे**] विमल, निर्मल; (दे ४, १६)।

णट्ट अक [**नट्**] १ नाचना। २ सक. हिंसा करना। णट्टइ ; (हे ४, २३०)।

णट्ट पुं [**नट**] नर्तकों की एक जाति ; " णच्चंति णट्टा पभणंति विप्पा " (रंभा ; सण ; कप्प)।

णट्ट न [**नाट्य**] नृत्य, गीत और वाद्य; नट-कर्म ; (णाया १, ३; सम ८३)। °पाल पुं [°पाल] नाट्य-स्वामी, सूत्र-धार ; (आचू १)। °मालय पुं [°मालक] देव-विशेष, खण्डप्रपात गुहा का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३)। °ाअरिअ पुं [°ाचार्य] सूत्रधार ; (मा ४)।

णट्ट न [**नृत्य**] नाच, नृत्य ; (से १, ८ ; कप्पू)।

णट्टअ न [**नाट्यक**] देखो **णट्ट**=नाट्य ; (मा ४)।

णट्टअ, **णट्टग** } वि [**नर्तक**]नाचने वाला, नचवैया ; (प्राप्र ; णाया १, १ ; औप)। स्त्री—°ई ; (प्राप्र; हे २, ३० ; कुमा)।

णट्टार पुं [**नाट्यकार**] नाट्य करने वाला ; (सण)।

णट्टावअ वि [**नर्त्तक**] नचाने वाला ; (कप्पू)।

णट्टिया स्त्री [**नर्तिका**] नटी, नर्तकी, नाचने वाली स्त्री; (महा)।

णट्टुमत्त पुं [**नर्तुमत्त**] स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर; (महा)।

णट्ठ वि [**नष्ट**] १ नष्ट, अपगत, नाश-प्राप्त; (सूअ १, ३, ३ ; प्रासू ८६)। २ अहोरात्र का सतरहवाँ मुहूर्त ; (राज)। °सुइअ वि [°श्रुतिक] १ जो बधिर हुआ हो ; (णाया १, १—पत्र ६३)। २ शास्त्र के वास्तविक ज्ञान से रहित ; (राज)।

णट्ठव वि [**नष्टवत्**] १ नाश-प्राप्त। २ न. अहोरात्र का एक मुहूर्त ; (राज)।

णड अक [**गुप्**] १ व्याकुल होना। २ सक. खिन्न करना। णडइ, णडंति; (हे ४, १५०; कुमा)। कर्म—णडिज्जइ; (गा ७७)। कवकृ—**णडिज्जंत**; (सुपा ३३८)।

णड देखो **णल**=नड; (हे २, १०२)।

णड पुं [**नट**] १ नर्तकों की एक जाति, नट; (हे १, १९५; प्राप्र)। °**खाइया** स्त्री [°**खादिता**] दीक्षा-विशेष, नट की तरह कृत्रिम साधुपन; (ठा ४, ४)।

णडाल न [**ललाट**] भाल, कपाल; (हे १, ४७; २५७; गउड)।

णडालिआ स्त्री [**ललाटिका**] ललाट-शोभा, कपाल में चन्दन आदि का विलेपन; (कुमा)।

णडाविअ वि [**गोपित**] १ व्याकुल किया हुआ; २ खिन्न किया हुआ; (सुपा ३२५)।

णडिअ वि [**गुपित**] व्याकुल; (से १०, ७०; सण)।

णडिअ वि [**दे**] १ वञ्चित, विप्रतारित; (दे ४, १६)। २ खेदित, खिन्न किया हुआ; (दे ४,१६; पाअ; णाया १,६)।

णडी स्त्री [**नटी**] १ नट की स्त्री; (गा ६; ठा ६)। २ लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)। ३ नाचने वाली स्त्री; (बृह ३)।

णडुली स्त्री [**दे**] कच्छप, कछुआ; (दे ४, २०)।

णडुरी स्त्री [**दे**] भेक, मेंढक; (दे ४, २०)।

णडुल न [**दे**] १ रत, मैथुन; २ दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस; (दे ४, ४७)।

णड्डुली देखो **णडुली**; (दे ४, २०)।

णणंदा स्त्री [**ननान्दृ**] पति की बहिन; (षड्; हे ३,३५)।

णणु अ [**ननु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय; —१ अवधारण, निश्चय; (प्रासू १६१; निचू १)। २ आशंका; ३ वितर्क; ४ प्रश्न; (उव; सण; प्रति ५५)।

णण्ण पुं [**दे**] १ कूप, कुआँ; २ दुर्जन, खल; ३ बड़ा भाई; (दे ४, ४६)।

णत्त न [**नक्त**] रात्रि, रात; (चंद १०)।

णत्त देखो **णत्तु**; "अंकनिवेसियनियनियपुत्तपडिपुत्तनत्तपुत्तीयं" (सुपा ६)।

णत्तंचर देखो **णक्कंचर**; (कुमा; पि २७०)।

णत्तण न [**नर्तन**] नाच, नृत्य; (नाट—शकु ८०)।

णत्तिअ पुं [**नप्तृक**] १ पौत्र, पुत्र का पुत्र; २ दौहित्र, पुत्री का पुत्र; (हे १, १३७; कुमा)।

णत्तिआ, **णत्ती** स्त्री [**नप्त्री**] १ पुत्र की पुत्री; (कुमा)। २ पुत्री की पुत्री; (राज)।

णत्तु, **णत्तुअ** पुं [**नप्तृ, °क**] देखो **णत्तिअ**; (निर २, १; हे १, १३७; सुपा १६२; विपा १, ३)।

णत्तुआ देखो **णत्तिआ**; (बृह १; विपा १, ३)।

णत्तुइणी स्त्री [**नप्तृकिनी**] १ पौत्र की स्त्री; २ दौहित्र की स्त्री; (विपा १, ३)।

णत्तुई देखो **णत्ती**; (विपा १, ३; कप्प)।

णत्तुणिआ देखो **णत्तिआ**; (दस ७, १५)।

णत्थ वि [**न्यस्त**] स्थापित, निहित; (णाया १, १; ३; विसे ६१६)।

णत्थण न [**दे**] नाक में छिद्र करना; (सुर १४, ४१)।

णत्था स्त्री [**दे**] नासा-रज्जु; (दे ४, १७; उवा)।

णत्थि अ [**नास्ति**] अभाव-सूचक अव्यय; (कप्प; उवा; सम्म ३६)।

णत्थिअ वि [**नास्तिक**] १ परलोक आदि नहीं मानने वाला; (प्रारू)। २ पुं. नास्तिक-मत का प्रवर्तक, चार्वाक। °**वाय** पुं [°**वाद**] नास्तिक-दर्शन; (उप १३२ टी)।

णद सक [**नद्**] नाद करना, आवाज करना। वकृ—**णदंत**; (सम ५०; नाट—मृच्छ १५५)।

णद पुं [**नद**] नाद, आवाज, शब्द; "गद्दहेव्व गवां मज्झे विस्सरं नयई नदं" (सम ५०)।

णदी देखो **णई**; (से ६, ६५; पण्ण ११)।

णद्दिअ वि [**दे**] दुःखित; (दे ४, २०)।

णद्दिअ न [**नर्दित**] घोष, आवाज, शब्द; (राज)।

णद्ध वि [**नद्ध**] १ परिहित; (गा ५२०; पउम ७, ६२; सुपा ३५५)। २ नियन्त्रित; (सुपा ३५५)।

णद्ध वि [**दे**] आरूढ़; (दे ४, १८)।

णद्धुंबवय न [**दे**] १ अ-घृणा, घृणा का अभाव; २ निन्दा; (दे ४, ४७)।

णपहुत्त वि [**अप्रभूत**] अ-पर्याप्त; (गउड)।

णपहुप्पंत वि [**अप्रभवत्**] अपर्याप्त होता; (गउड)।

णपुंस, **णपुंसग**, **णपुंसय** पुंन [**नपुंसक**] नपुंसक, क्लीब, नामर्द; (ओघ ३१; श्रा १६; ठा ३, १; सम ३७; महा)। °**वेय** पुं [°**वेद**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों के स्पर्श की वाञ्छा होती है; (ठा६)

णप्प सक [**ज्ञा**] जानना। णप्पइ; (प्राप्र)।

णभ देखो **णह**=नभस्; (हे १, १८७; कुमा; बसु)।

णम सक [**नम्**] नमन करना, प्रणाम करना। णमामि; (भग)। वकृ—**णमंत, णममाण**; (पि ३६७; आचा)। कवकृ—**णमिज्जंत**; (से ६, ३५)। संकृ—**णमिऊण, णमिऊणं,, णमेऊण**; (जी १; पि ५८५; महा)। कृ—**णमणिज्ज, णमियव्व**; (रयण ४६; उप २११ टी; पउम ६६, २१)। संकृ—**णमिअ**; (कम्म ४.१)।

णमंस सक [**नमस्य्**] नमन करना, नमस्कार करना। णमंसइ; (भग)। वकृ—**णमंसमाण**; (णाया १, १; भग)। संकृ—**णमंसित्ता**; (ठा ३, १; भग)। हेकृ—**णमंसित्तए**; (उवा)। कृ—**णमंसणिज्ज, णमंसियव्व**; (औप; सुपा ६३८; पउम ३५, ४६)।

णमंसण न [**नमस्यन**] नमन, नमस्कार; (अजि ५; भग)।

णमंसणया, णमंसणा स्त्री [**नमस्यना**] प्रणाम, नमस्कार; (भग; सुपा ६०)।

णमंसिय वि [**नमस्यित**] जिसको नमन किया गया हो वह; (पण्ह २, ४)।

णमक्कार देखो **णमोक्कार**; (गउड; पि ३०६)।

णमण न [**नमन**] प्रणति, नमना; (दे ७, १६; रयण ४६)।

णमसिअ न [**दे**] उपयाचितक, मनौती; (दे ४, २२)।

णमि पुं [**नमि**] १ स्वनाम-ख्यात एक्कीसवाँ जिन-देव; (सम ४३)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध राजर्षि; (उत्त ३६)। भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र; (धण १४)।

णमिअ वि [**नत**] प्रणत, जिसने नमन किया हो वह; "पडिवक्खरायाणो तस्स राइणो नमिया" (महा)।

णमिअ वि [**नमित**] नमाया हुआ; (गा ६६०)।

णमिअ देखो **णम**।

णमिआ स्त्री [**नमिता**] १ स्वनाम-ख्यात एक स्त्री; २ 'ज्ञाताधर्मकथासूत्र' का एक अध्ययन; (णाया २)।

णमिर वि [**नम्र**] नमन करने वाला; (कुमा; सुपा २७; सण)।

णमुइ पुं [**नमुचि**] स्वनाम-ख्यात एक मन्त्री; (महा)।

णमुदय पुं [**नमुदय**] आजीविक मत का एक उपासक; (भग ७, १०)।

णमेरु पुं [**नमेरु**] वृक्ष-विशेष; (सुर ७, १६; स ६३३)।

णमो अ [**नमस्**] नमस्कार, नमन; (भग; कुमा)।

णमोक्कार पुं [**नमस्कार**] १ नमन प्रणाम; (हे १, ६२; २, ४)। २ जैन शास्त्र में प्रसिद्ध एक सूत्र—मन्त्र-विशेष; (विसे २८०५)। °**सहिय** न [°**सहित**] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष; (पडि)।

णम्म पुंन [**नर्मन्**] १ हाँसी, उपहास; २ क्रीड़ा, केलि; (हे १, ३२; श्रा १४; दे २, ६४; पाअ)।

णम्मया स्त्री [**नर्मदा**] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी; (सुपा ३८०)। २ स्वनाम-ख्यात एक राज-पत्नी; (स ५)।

णय देखो **णइ**=नद्। 'विस्सरं नयई नदं'' (सम ५०)।

णय पुं [**नग**] १ पहाड़, पर्वत; (उप पृ २५६; सुपा ३४८)। २ वृक्ष, पेड़; (हे १, १७७)। देखो **णग**।

णय अ [**नच**] नहीं; (उप ७६८ टी)।

णय वि [**नत**] १ नमा हुआ, प्रणत, नम्र; (णाया १, १)। २ जिसको नमस्कार किया गया हो वह; "नोनस-वियडपडिवक्खनयक्कमा विक्कमा राया" (सुपा ५६६)। ३ न. देव-विमान विशेष; (सम ३७)। °**सच्च** पुं [**सत्य**] श्रीकृष्ण, नारायण; (अच्चु ७)।

णय पुं [**नय**] १ न्याय, नीति; (विसे ३३६५; सुपा ३४८; स ५०१)। २ युक्ति; (उप ७६८)। ३ प्रकार, रीति; "जलणा वि घेप्पई पवणा भुयगो य केणइ नएण" (स ४५४)। ४ वस्तु के अनेक धर्मों में किसी एक को मुख्य रूप में स्वीकार कर अन्य धर्मों की उपेक्षा करने वाला मत, एकांश-ग्राहक बोध; (सम्म २१; विसे ६१४; ठा ३, ३)। ५ विधि; (विसे ३३६५)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार; (रंभा)। °**त्थि** वि [°**र्थिन्**] न्याय चाहने वाला; (श्रा १४)। °**व, °वंत** वि [°**वत्**] नीति वाला, न्याय-परायण; (सम ५०; सुपा ५४२)। °**विजय** पुं [°**विजय**] विक्रम को सत्तरहवीं शताब्दी के एक जैन मुनि, जो सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री यशोविजयजी के गुरू थे; (उवर २०२)।

णयण न [**नयन**] १ ले जाना, प्रापण; (उप १३४)। २ जानना, ज्ञान; ३ निश्चय; (विसे ६१४)। ४ वि. ले जाने वाला; "वयणाइं सुपहनयणाइं" (सुपा ३७७)। ५ पुंन. आँख, नेत्र, लोचन; (हे १, ३३; पाअ)। °**जल** न [°**जल**] अश्रु, आँसू; (पाअ)।

णयय पुं [**दे.नवत**] ऊन का बना हुआ आस्तरण-विशेष; (णाया १, १—पत्र १३)।

णयर देखो **णगर** ; (हे १, १७७ ; सुर ३, २० ; ओप ; भग) ।

णयरंगणा स्त्री [**नगराङ्गना**] वेश्या, गणिका ;(श्रा २७)।

णयरी स्त्री [**नगरी**] शहर, पुरी ; (उवा ; पउम ३६, १००) ।

णर पुं [**नर**] १ मनुष्य, मानुष, पुरुष; (हे १,२२६; सूअ १, १, ३) । २ अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (कुमा) । °**उसभ** पुं [°**वृषभ**] श्रेष्ठ मनुष्य, अङ्गीकृत कार्य का निर्वाहक पुरुष ; (ओप) । °**कंतप्पवाय** पुं [°**कान्तप्रपात**] ह्रद-विशेष ; (ठा २, ३) । °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम २७) । °**कंताकूड** न [°**कान्ताकूट**] रुक्मि पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८) । °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] १ मुनि-सुव्रत भगवान् की शासन-देवी; (राज) । २ विद्या-देवी विशेष ; (संति ५) । °**देव** पुं [°**देव**] चक्रवर्ती राजा ; (ठा ५, १) । °**नायग** पुं [°**नायक**] राजा, नरपति ; (उप २११ टी) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] राजा, भूपाल; (सुपा ६ ; सुर १,६१) । °**पहु** पुं [°**प्रभु**] राजा, नरेश; (उप ७२८ टी; सुर २, ८४)। °**पोहलि** पुं [°**पोहलिन्**] राज-विशेष ; (उप ७२८ टी)। °**लोअ** पुं [°**लोक**] मनुष्य लोक ; (जी २२ ; सुपा ४१३) । °**वइ** पुं [°**पति**] नरेश, राजा; (सुर १, १०४) । °**वर** पुं [°**वर**] १ राजा, नरेश ; (सुर १ १३१ ; १५, १४) । २ उत्तम पुरुष ; (उप ७२८ टी) । °**वरिंद** पुं [°**वरेन्द्र**] राजा, भूमि-पति; (सुपा ५६ ; सुर २, १७६) । °**वरीसर** पुं [°**वरेश्वर**] श्रेष्ठ राजा ; (उत १८) । °**वसभ, °वसह** पुं [°**वृषभ**] १ देखो °**उसभ**; (पण्ह १, ४ ; सम १५३) । २ राजा, नृपति ; (पउम ३, १४)। ३ पुं. हरिवंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा; (पउम २२, ६७) । °**वाल** पुं [°**पाल**] राजा, भूपाल; (सुपा २७३)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (आक १ ; सण) । °**वेय** पुं [°**वेद**] पुरुष वेद, पुरुष का स्त्री के स्पर्श की अभिलाषा; (कम्म ४) । °**सिंघ, °सिंह, °सीह** पुं [°**सिंह**] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य; (सम १५३; पउम १००, १६) । २ अर्ध भाग में पुरुष का और अर्ध भाग में सिंह का आकार वाला, श्रीकृष्ण, नारायण ; (णाया १, १६) । °**सुंदर** पुं [°**सुन्दर**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (धम्म) । °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] राजा, नरेश; (गा ३६४; सुपा २५) ।

णरग } **णरय** } पुं [**नरक**] नारक जीवों का स्थान; (विपा १, १; पउम १४, १६ ; श्रा ३ ; प्रासू २६; उव) । °**वाल, °वालय** पुं [°**पाल, °क**] परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवों का यातना करते हैं ; (पउम २६, ५१ ; ८, २३७) ।

णराअ } **णराच** } पुंन [**नाराच**] १ लोहमय बाण ; २ संहनन-विशेष, शरीर की रचना का एक प्रकार ; (हे १, ६७) । ३ छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

णरायण पुं [**नारायण**] श्रीकृष्ण, विष्णु ; (पिंग) ।

णरिंद पुं [**नरेन्द्र**] १ राजा, नरेश ; (सम १५३ ; प्रासू १०७; कप्प) । २ गारुडिक, सर्प के विष को उतारने वाला; (स २१६) । °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान विशेष ; (सम २२) । °**पह** पुं [°**पथ**] राज-मार्ग, महापथ ; (पउम ७६, ८) । °**वसह** पुं [°**वृषभ**] श्रेष्ठ राजा ; (उत्त ६) ।

णरिंदुत्तरवडिंसग न [**नरेन्द्रोत्तरावतंसक**] देव-विमान-विशेष ; (सम २२) ।

णरीस पुं [**नरेश**] राजा, नर-पति ; "सो भरहद्धनरीसो हा ही पुरिसा न संदेहो " (सुर १२, ८०) ।

णरीसर पुं [**नरेश्वर**] राजा, नर-पति ; (अजि ११) ।

णरुत्तम पुं [**नरोत्तम**] उत्तम पुरुष; (पउम ४८, ७५) ।

णरेंद देखो **णरिंद** ; (पि १५६ ; पिंग) ।

णरेसर देखो **णरीसर** ; (उप७२८ टी; सुपा५५ ; ५६१)।

णल न [**नड**] तृण-विशेष, भीतर से पोला शराकार तृण ; (हे २, २०२ ; ठा ८) ।

णल न [**नल**] १ ऊपर देखो ; (पण्ण १ ; उप १०३१ टी ; प्रासू ३३) । २ पुं. राजा रामचन्द्र का एक सुभट ; (से ८, १८) । ३ वैश्रमण का एक स्वनाम-ख्यात पुत्र ; (अंत ५) । °**कुब्बर, °कूबर** पुं [°**कूबर**] १ दुर्लंघपुर का एक स्वनाम-ख्यात राजा ; (पउम १२ ७२) । २ वैश्रमण का एक पुत्र ; (आवम) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] चण्डप्रद्योत राजा का एक स्वनाम-ख्यात हाथी; (महा)

णलय न [**दे**] उशीर, खस का तृण; (दे ४, १६; पाअ) ।

णलाड देखो **णडाल** ; (हे २, १२३ ; कुमा) ।

णलाडंतव वि [**ललाटन्तप**] ललाट को तपाने वाला ; (कुमा) ।

णलिअ न [**दे**] गृह, घर, मकान ; (दे ४, २० ; षड्) ।

णलिण न [**नलिन**] १ रक्त कमल ; (राय ; चंद १० ; पाअ)। २ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष; (ठा २, ३)। ३ 'नलिनाङ्ग' का चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक)। ४ देव-विमान विशेष ; (सम ३३ ; ३५)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (दीव)। °**कूड** पुं [°**कूट**] वक्षस्कार-पर्वत विशेष; (ठा २, ३)। °**गुम्म** न [°**गुल्म**] १ देव विमान-विशेष ; (सम ३५)। २ नृप-विशेष ; (ठा ८)। ३ अध्ययन-विशेष ; (आव ४)। ४ राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (राज)। °**ावई** स्त्री [°**ावती**] विदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश विशेष; (ठा २, ३)।

णलिणंग न [**नलिनाङ्ग**] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक)।

णलिणिं, **णलिणी** स्त्री [**नलिनी**] कमलिनी, पद्मिनी ; (पाअ; णाया १, १)। °**गुम्म** देखो **णलिण-गुम्म**; (निर २, १ ; विसे)। °**वण** न [°**वन**] उद्यान-विशेष ; (णाया २)।

णलिणोदग पुं [**नलिनोदक**] समुद्र-विशेष ; (दीव)।

णल्लय न [**दे**] १ वृति विवर, बाड़ का छिद्र ; २ प्रयोजन ; ३ निमित्त, कारण ; ४ वि. कर्दमित, कीच वाला ; (दे ४ ४६)।

णव देखो **णम**। णवइ ; (षड् ; हे ४, १५८ ; २२६)।

णव वि [**नव**] नया, नूतन, नवीन; (गउड; प्रासू ७१)। °**वहुया**, °**वहू** स्त्री [°**वधू**] नवोढ़ा, दुलहिन; (हेका ५१; सुर ३, ५२)

णव त्रि. ब. [**नवन्**] संख्या-विशेष, नव, ६ ; (ठा ६)। °**इ** स्त्री [°**ति**] संख्या-विशेष नब्बे, ६०; (सण)। °**ग** न [°**क**] नव का समुदाय ; (दं ३८)। °**जोयणिय** वि [°**योजनिक**] नव योजन का परिमाण वाला ; (ठा ६)। °**णउइ**, °**नउइ** स्त्री [°**नवति**] संख्या-विशेष, निन्यानवे, ६६ ; (सम ६६; १००)। °**नउय** वि [°**नवत**] ६६ वाँ ; (पउम ६६, ७५)। °**नवइ** देखो °**णउइ**; (कम्म २, ३०)। °**नवमिया** स्त्री [°**नवमिका**] जैन साधु का व्रत-विशेष; (सम ८८)। °**म** वि [°**म**] नववाँ ; (उत्त)। °**मी** स्त्री [°**मी**] तिथि-विशेष; पक्ष का नववाँ दिवस ; (सम २६)। °**मीपक्ख** पुं [°**मीपक्ष**] भादवाँ दिन, अष्टमी ; (जं ३)।

णवकार देखो **णमोक्कार**; (सट्ठि १; चेइय ३० ; सण)।

णवख (अप) वि [**नव**] अनोखा, नूतन, नया ; (हे ४, ४२२)। स्त्री—°**खी**; (हे ४, ४२०)।

णवणीअ पुंन [**नवनीत**] मक्खन, मसका ; (कप्प ; औप ; प्रासा)। "अणलहम्मोव्व नवणीओ" (पउम ११८, २३)।

णवणीइया स्त्री [**नवनीतिका**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण१)।

णवमालिया स्त्री [**नवमालिका**] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष, नेवार ; (कप्प)।

णवमिया स्त्री [**नवमिका**] १ रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)। २ सत्पुरुष-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १)। ३ शक्रेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ८)।

णवय देखो **णयय** ; (णाया १, १७)।

णवयार देखो **णवकार** ; (पंचा १; पि ३०६)।

णवर, **णवरं** अ. १ केवल, फक्त ; (हे २, १८७ ; कुमा ; षड् ; उवा ; सुपा ८ ; जो २७ ; गा १५)। २ अनन्तर, बाद में ; (हे २, १८८ ; प्राप्र)।

णवरंग, **णवरंगय** पुं [**नवरङ्ग**, °**क**] १ नूतन रङ्ग, नया वर्ण; (सुर ३, ५२)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ३ कौसुम्भ रङ्ग का वस्त्र ; (गउड; गा २४१; सुर ३, ५२ ; पाअ)।

णवरि, **णवरिअ** देखो **णवर** ; (हे २, १८८ ; से १, ३६ ; प्रासा ; सुर, २६ ; षड् ; गा १७२)।

णवरिअ न [**दे**] सहसा, जल्दी, तुरन्त ; (दे ४, २२ ; पाअ)।

णवलया स्त्री [**दे**] वह व्रत, जिसमें पति का नाम पूछने पर उसे नहीं बताने वाली स्त्री पलाश की लता से ताड़ित की जाती है ; (दे ४, २१)।

णवल्ल देखो **णव**=नव ; (हे २, १६५; कुमा ; उप ७२८ टी)।

णवसिअ न [**दे**] उपयाचितक, मनौती ; (दे ४, २२ ; पाअ ; वज्जा ८६)।

णवा स्त्री [**नवा**] १ नवोढ़ा, दुलहिन; २ युवति स्त्री; (सुअ १, ३, २)। ३ जिसको दीक्षा लिए तीन वर्ष हुए हों ऐसी साध्वी; (वव ४)। ४ अ. प्रश्नार्थक अव्यय, अथवा नहीं ? (रयण ६७)।

णवि अ. १ वैपरीत्य-सूचक अव्यय, "णवि हा वणे" (हे २, १७८; कुमा)। २ निषेधार्थक अव्यय ; (गउड)।
णविअ देखो **णमिअ**=नत ; (हे ३, १५६ ; भवि) ।
णविअ वि [**नव्य**] नूतन, नया ; (आचा २, २, ३) ।
णवुत्तरसय वि [**नवोत्तरशततम**] एकसौ नववाँ ; (पउम १०६, २७) ।
णवुल्लडय (अप) देखो **णव**=नव ; (कुमा) ।
णवोढा स्त्री [**नवोढा**] नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन ; (काप्र १६७) ।
णवोद्धरण न [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा ; (दे ४, २३) ।
णव्व पुं [**दे**] आयुक्त, गाँव का मुखिया ; (दे ४, १७) ।
णव्व वि [**नव्य**] नूतन, नया, नवीन ; (श्रा २७) ।
णव्व° देखो **णा**=ज्ञा ।
णव्वाउत्त पुं [**दे**] १ ईश्वर, धनाढ्य, भोगी; २ नियोगी का पुत्र, सूबा का लड़का ; (दे ४, २२) ।
णस सक [**नि+अस्**] स्थापन करना । नसेज्ज; (विसे ६४३)। कर्म—नस्सए; (विसे ६७०) । संकृ—**नसिऊण** (स ६०८) ।
णस अक [**नश्**] भागना, पलायन करना । णसइ; (पिंग)।
णसण न [**न्यसन**] न्यास, स्थापन; (जीव १) ।
णसा स्त्री [**दे**] नस, नाड़ी ; "असुईरसनिज्झरणे हड्डुक्कर-डम्मि चम्मनसनद्धे" (सुपा ३५५) ।
णसिअ वि [**नष्ट**] नाश-प्राप्त ; (कुमा) ।
णस्स देखो **नस**=नश् । णस्सइ, णस्सए; (षड् ; कुमा) । वकृ—**नस्संत, नस्समाण** ; (श्रा १६ ; सुपा २१५) ।
णस्सर वि [**नश्वर**] विनश्वर, भंगुर, नाश पाने वाला; "खण-नस्सराइं रूवाइं" (सुपा २४३) ।
णस्सा स्त्री [**नासा**]नासिका, घ्राणेन्द्रिय; (नाट-मृच्छ ६२) ।
णह देखो **णक्ख** ; (सम ६० ; कुमा) ।
णह न [**नभस्**] १ आकाश, गगन ; (प्राप्र; हे १, ३२)। २ पुं. श्रावण मास ; (दे ३, १६) । **°अर** वि [**°चर**] १ आकाश में विचरने वाला ; (से १४, ३८) । २ पुं. विद्याधर, आकाश-विहारी मनुष्य ; (सुर ६, १८६) । **°केउमंडिय** न [**°केतुमण्डित**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक) । **°गमा** स्त्री [**°गमा**] आकाश-गामिनी विद्या ; (सुर १३, १८६) । **°गामिणी** स्त्री [**°गामिनी**] आकाश-गामिनी विद्या ; (सुर ३, २८) । **°च्चर** देखो **°अर**; (उप ५६७ टी) । **°च्छेदणय** न [**°च्छेदनक**] नख उतारने का शस्त्र ; (आचा २, १, ७, १) । **°तिलय** न [**°तिलक**] १ नगर-विशेष; २ सुभट-विशेष ; (पउम ५५, १७) । **°वाहण** पुं [**°वाहन**] नृप-विशेष ; (सुर ६, २६)। **°सिर** न [**°शिरस्**] नख का अग्र भाग; (भग ५, ४) । **°सिहा** स्त्री [**°शिखा**] नख का अग्र भाग; (कप्प) । **°सेण** पुं [**°सेन**] राजा उग्रसेन का एक पुत्र; (राज) । **°हरणी** स्त्री [**°हरणी**] नख उतारने का शस्त्र ; (बृह ३) ।
णहमुह पुं [**दे**] घूक, उल्लू ; (दे ४, २०) ।
णहर पुं [**नखर**] नख, नाखून ; (सुपा ११ ; ६०६) ।
णहरण पुं [**दे**] नखी, नख वाला जन्तु, श्वापद; (वज्जा १२)।
णहरणी स्त्री [**दे**] नहरनी, नख उतारने का शस्त्र; (पंचव ३)।
णहराल पुं [**नखरिन्**] नख वाला श्वापद जन्तु; (उप ५३० टी) ।
णहरी स्त्री [**दे**] छुरिका, छुरी ; (दे ४, २०) ।
णहवल्ली स्त्री [**दे**] विद्युत्, बिजली; (दे ४, २२) ।
णहि पुं [**नखिन्**] नख-प्रधान जन्तु, श्वापद जन्तु; (अणु)।
णहि अ [**नहि**] निषेधार्थक अव्यय, नहीं; (स्वप्न ४१; पिंग; सण) ।
णहु अ [**नखलु**] ऊपर देखो; (नाट—मृच्छ २६१; गाया १, ६) ।
णा सक [**ज्ञा**] जानना, समझना । भवि—णाहिइ ; (विसे १०१३) । णाहिसि; (पि ५३४) । कर्म—णव्वइ, णज्जइ; हे ४, २५२) । कवकृ—**णज्जंत, णज्जमाण** ; (से १३, ११; उप १००१ टी) । संकृ—**णाउं, णाऊण, णाऊणं, णच्चा, णच्चाणं** ; (महा ; पि ५८६ ; औप; सुअ १, २, ३; पि ५८७) । कृ—**णायव्व, णेअ**; (भग; जी ६ ; सुर ४, ७० ; दं २ ; हे २, १६३ ; नव ३१) ।
णा अ [**न**] निषेध-सूचक अव्यय; (गउड) ।
णाअक्क (अप) देखो **णायग**; (पिंग) ।
णाइ पुं [**ज्ञाति**] इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न क्षत्रिय-विशेष । **°पुत्त** पुं [**°पुत्र**] भगवान् श्री महावीर ; (आचा) । **°सुय** पुं [**°सुत**] भगवान् श्री महावीर ; (आचा) ।
णाइ स्त्री [**ज्ञाति**] १ नात, समान जाति ; (पउम १००, ११ ; औप ; उवा) । २ माता-पिता आदि स्वजन, सगा ; (णाया १, १) । ३ ज्ञान, बोध ; (आचा ; ठा ५, ३) ।
णाइ (अप) देखो **इव**; (कुमा) ।
णाइ (अप) नीचे देखो ; (भवि) ।
णाइं देखो **ण**=न ; (हे २, १६० ; उवा) ।
णाइणी (अप) स्त्री [**नागी**] नागिन, सर्पिणी; (भवि)।

णाइत्त } पुं [**दे**] जहाज द्वारा व्यापार करने वाला सौदा-
णाइत्तग } गर; (उप पृ १०१; उप ५६२)।

णाइय वि [**नादित**] १ उक्त, कथित, पुकारा हुआ; (णाया १, १; औप)। २ न आवाज, शब्द; (णाया १, १)। ३ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि; (राय)।

णाइल पुं [**नागिल**] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (कप्प)। २ जैन मुनिओं का एक वंश; (पउम ११८, ११७)। ३ एक श्रेष्ठी; (महानि ४)।

णाइला } स्त्री [**नागिला**] जैन मुनिओं की एक शाखा;
णाइली } (कप्प)।

णाइव वि [**ज्ञातिमत्**] स्वजन-युक्त; (उत्त ४)।

णाउ वि [**ज्ञातृ**] जानकार, जानने वाला; (द्र ६)।

णाउड्ड पुं [**दे**] १ सद्भाव, सन्निष्ठा; २ अभिप्राय; ३ मनोरथ, वाञ्छा; (**दे ४, ४७**)।

णाउल्ल वि [**दे**] गोमान्, जिसके पास अनेक गैया हों; (दे ४, २३)।

णाउं
णाऊण } देखो **णा**=ज्ञा।
णाऊणं

णाग पुंन [**नाक**] स्वर्ग, देवलोक; (उप ७१२)।

णाग पुं [**नाग**] १ सर्प, साँप; (पउम ८, १७८)। २ भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, नाग-कुमार देव; (णंदि)। ३ हस्ती, हाथी; (**औ**)। ४ वृक्ष-विशेष; (कप्प)। ५ स्वनाम-ख्यात एक गृहस्थ; (अंत ४)। ६ एक प्रसिद्ध वंश; ७ नाग-वंश में उत्पन्न; (राज)। ८ एक जैन आचार्य; (कप्प)। ९ स्वनाम-ख्यात एक द्वीप; १० एक समुद्र; (सुज्ज १९)। ११ वक्षस्कार-पर्वत विशेष; (ठा २, ३)। १२ न ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण; (विसे ३३५०)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति; (सम ६६)। °**केसर** पुं [°**केसर**] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष; (राज)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] नाग देवता के आवेश से उत्पन्न ज्वर आदि; (जीव ३)। °**जण्ण,** °**जन्न** पुं [°**यज्ञ**] नाग पूजा, नाग देवता का उत्सव; (णाया १, ८)। °**ज्जुण** पुं [°**र्जुन**] एक स्वनाम-ख्यात जैन आचार्य; (णंदि)। °**दंत** पुं [°**दन्त**] खूँटी; (जीव ३)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक स्वनाम-ख्यात राज-पुत्र; (ठा ३, ४; सुपा ५३५)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र; (आक)। °**पइ** पुं [°**पति**] नाग कुमार देवों का राजा, नागेन्द्र; (औप)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम २०, १०)। °**बाण** पुं [°**बाण**] दिव्य अस्त्र-विशेष; (जीव ३)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] नाग-द्वीप का अधिष्ठाता देव; (सुज्ज १९)। °**भूय** न [°**भूत**] जैन मुनिओं का एक कुल; (कप्प)। °**महाभद्द** पुं [**महाभद्र**] नागद्वीप का एक अधिष्ठायक देव; (सुज्ज १९)। °**महावर** पुं [°**महावर**] नाग समुद्र का अधिपति देव; (सुज्ज १९; इक)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि जो आर्य महागिरि के शिष्य थे; (कप्प)। °**राय** पुं [°**राज**] नागकुमार देवों का स्वामी, इन्द्र-विशेष; (पउम ३, १४७)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] वृक्ष-विशेष; (ठा ८)। °**लया** स्त्री [°**लता**] वल्ली-विशेष, ताम्बूली लता; (पण्ण १)। °**वर** पुं [°**वर**] १ श्रेष्ठ सर्प; २ उत्तम हाथी; (औप)। ३ नाग समुद्र का अधिपति देव; (सुज्ज १९)। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] लता-विशेष; (सण)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] द्रौपदी के पूर्व जन्म का नाम; (उप ६४८ टी)। °**सुहुम** न [°**सूक्ष्म**] एक जैनेतर शास्त्र; (अणु)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक स्वनाम ख्यात गृहस्थ; (आवम)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] एक प्राचीन जैन ऋषि; (णंदि)।

णागणिय न [**नाग्न्य**] नग्नता, नंगापन; (सूत्र १, ७)।

णागर वि [**नागर**] १ नगर-संबन्धी; २ नगर का निवासी, नागरिक; (सुर ३, ६६; महा)।

णागरिअ पुं [**नागरिक**] नगर का रहने वाला; (रंभा)।

णागरिआ स्त्री [**नागरिका**] नगर में रहने वाली स्त्री; महा)।

णागरी स्त्री [**नागरी**] १ नगर में रहने वाली स्त्री। २ लिपि विशेष, हिन्दी लिपि; (विसे ४६४ टी)।

णागिंद पुं [**नागेन्द्र**] १ नाग देवों का इन्द्र; २ शेष नाग; (सुपा ७७; ६३६)।

णागिल देखो **णाइल**; (राज)।

णागी स्त्री [**नागी**] नागिन, सर्पिणी; (आव ४)।

णागेंद देखो **णागिंद**; (णाया १, ८)।

णाड देखो **णट्ट**=नाट्य; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

णाडइज्ज वि [**नाटकीय**] नाटक-संबन्धी, नाटक में भाग लेने वाला पात्र; (णाया १, १; कप्प)।

णाडइणी स्त्री [**नाटकिनी**] १ नर्तकी, नाचने वाली स्त्री; (बृह ३)।

णाडग } न [**नाटक**] १ नाटक, अभिनय, नाट्य-क्रिया;
णाडय } (बृह १; सुपा १; ३५६; सार्ध ६५)। २ रंग-शाला में खेलने में उपयुक्त काव्य; (हे ४, २७०)।

णाडाल देखो **णडाल**; (गउड)।

णाडि स्त्री [**नाडि**] १ रज्जु, वरत्रा; २ नाड़ी, नस, सिरा; (कुमा)।

णाडी स्त्री [**नाडी**] ऊपर देखो; (हे १, २०२)।

णाडीअ पुं [**नाडीक**] वनस्पति-विशेष; (भग १०, ७)।

णाण न [**ज्ञान**] ज्ञान, बोध, चैतन्य, बुद्धि; (भग ८,२; हे २. ४२; कुमा; प्रासू २८)। °**धर** वि [°**धर**] ज्ञानी, जानकार, विद्वान्; (सुपा ५०८)। °**प्पवाय** न [°**प्रवाद**] जैन ग्रन्थांश-विशेष, पाँचवाँ पूर्व; (सम २६)। °**मायार** देखो °**ायार**; (पडि)। °**व, वंत** वि [°**वत्**] ज्ञानी, विद्वान्; (पि ३४८; आचा; अच्चु ४६)। °**वि** वि [°**विद्**] ज्ञान-वेत्ता; (आचा)। °**ायार** पुं [°**चार**] ज्ञान-विषयक शास्त्रोक्त विधि; (राज)। °**ावरण** न [°**ावरण**] ज्ञान का आच्छादक कर्म; (धण ४४)। °**ावरणिज्ज** न [°**ावरणीय**] अनन्तर उक्त अर्थ; (सम ६६; औप)।

णाणक } न [**दे**] सिक्का, मुद्रा; (मृच्छ १७; राज)।
णाणग }

णाणत्त न [**नानात्व**] भेद, विशेष, अन्तर; (आव ६१८)।

णाणत्ता स्त्री [**नानाता**] ऊपर देखो; (विसे २१६१)।

णाणा अ [**नाना**] अनेक, जुदा जुदा; (उवा; भग; सुर १, ८६)। °**विह** वि [°**विध**] अनेक प्रकार का, विविध; (जीव ३; सुर ४, २४५; दं१३)।

णाणि वि [**ज्ञानिन्**] ज्ञानी, जानकार, विद्वान्; (आचा; उव)।

णादिय देखो **णाइय**; (कप्प)।

णाभि पुं [**नाभि**] १ स्वनाम-ख्यात एक कुलकर पुरुष, भगवान् ऋषभदेव का पिता; (सम १५०)। २ पेट का मध्य भाग; ३ गाड़ी का एक अवयव; (दस ७)। °**नंदण** पुं [°**नन्दन**] भगवान् ऋषभदेव; (पउम ४, ६८)।

णाम सक [**नमय्**] १ नमाना, नीचा करना। २ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना। णामेइ; (हेका ४६)। वकृ---**णामयंत**; (विसे २६६०)। संकृ---**णामित्ता**; (निचू १)।

णाम पुं [**नाम**] १ परिणाम, भाव; (भग २५, ५)। २ नमन; (विसे २१७६)।

णाम अ [**नाम**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;---१ संभावना; (से ५, ४)। २ आमन्त्रण, संबोधन; (बृह ३; जं १)। ३ प्रसिद्धि, ख्याति; (कप्प)। ४ अनुज्ञा, अनुमति; (विसे)। ५---६ वाक्यालंकार और पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है; (ठा ४, १; राज)।

णाम न [**नामन्**] नाम, आख्या, अभिधान; (विपा १, १; विसे २५)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] कर्म-विशेष, विचित्र परिणाम का कारण-भूत कर्म; (स ६७)। °**धिज्ज,**° **धेज्ज,** °**धेय** न [°**धेय**] नाम, आख्या; (कप्प; सम ७१; पउम ४, ८०)। °**पुर** न [°**पुर**] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**मुद्दा** स्त्री [°**मुद्रा**] नाम से अङ्कित मुद्रा; (पउम ५, ३२)। °**सच्च** वि [°**सत्य**] नाम-मात्र से सच्चा, नामधारी; (ठा १०)। °**हेअ** देखो °**धेय**; (पउम २०, १७६; स्वप्न ४३)।

णामण न [**नमन**] नमाना, नीचा करना; (विसे ३००८)।

णाममंतक्ख पुं [**दे**] अपराध, गुनाह; (गउड)।

णामिअ वि [**नमित**] नमाया हुआ; (सार्ध ८०)।

णामिय न [**नामिक**] वाचक शब्द, पद; (विसे १००३)।

णामुक्कसिअ } न [**दे**] कार्य, काम, काज; (हे २,
णामोक्कसिअ } १७४; दे ४, २५)।

णाय वि [**दे**] गर्विष्ठ, अभिमानी; (दे ४, २३)।

णाय देखो **णाग**; (काप्र ७७७; कप्पू; औप; गउड; वज्जा १४; सुपा ६३६; पउम २१, ४६)।

णाय पुं [**नाद**] शब्द, आवाज, ध्वनि; (औप; पउम २२, ३८; स २१३)।

णाय पुं [**न्याय**] १ न्याय, नीति; (औप; स १५६; आचा)। २ उपपत्ति, प्रमाण; (पंचा ४; विसे)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] न्याय-कर्ता; (आचू १)। °**गर** वि [°**कर**] १ न्याय-कर्ता। २ पुं. न्यायाधीश; (श्रा १४)। °**ण्ण** वि [°**ज्ञ**] न्याय का जानकार; (उप ३४६)।

णाय पुं [**नाक**] स्वर्ग, देव-लोक; (पाअ)।

णाय वि [**ज्ञात**] १ जाना हुआ, विदित; (उव; सुर ३, ३६)। २ ज्ञाति-संबन्धी, सगा, एक बिरादरी का; (कप्प; आउ ६)। ३ वंश-विशेष में उत्पन्न; (औप)। ४ पुं. वंश-विशेष; (ठा ६)। ५ क्षत्रिय-विशेष; (सुअ १, ६; कप्प)। ६ न. उदाहरण, दृष्टान्त; (उव; सुपा १२८)।

°कुमार पुं [°कुमार] ज्ञात-वंशीय राज-पुत्र ; (णाया १, ८) । °कुल न [°कुल] वंश-विशेष ; (पण्ह १, ३) । °कुलचंद पुं [°कुलचन्द्र] भगवान् श्रीमहावीर ; (आचा) । °कुलनंदण पुं [°कुलनन्दन] भगवान् श्रीमहावीर ; (पण्ह १, १) । °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्रीमहावीर ; (आचा) । °मुणि पुं [°मुनि] भगवान् श्रीमहावीर ; (पण्ह २, १) । °विहि पुंस्त्री [°विधि] माता या पिता के द्वारा संबन्ध, संबन्धि-जन ; (वव ६) । °संड न [°षण्ड] उद्यान-विशेष, जहां भगवान् श्रीमहावीर देव ने दीक्षा ली थी ; (आचा २, ३, १) । °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्रीमहावीर । °सुय न [°श्रुत] ज्ञाताधर्मकथा नामक जैन आगम-ग्रन्थ ; (णाया २, १) । °धम्मकहा स्त्री [°धर्मकथा] जैन आगम-ग्रन्थ विशेष ; (सम १)।

णायग पुं [**नायक**] नेता, मुखिया, अगुआ ; (उप ६४८ टी ; कप्प ; सम १ ; सुपा २२) ।

णायत्त पुं [**दे**] समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला वणिक् ; "पवहणवाणिज्जपरा सुहंकरा आसि नाम नायत्ता" (उप५६७ टी)

णायर देखो **णागर** ; (महा ; सुपा १८८) ।

णायरिय देखो **णागरिय** ; (सुर १४, १३३) । स्त्री—°या ; (भवि) ।

णायरी देखो **णागरी** ; (भवि) ।

णायव्व देखो **णा=ज्ञा** ।

णार पुं [**नार**] चतुर्थ नरक-पृथिवी का एक प्रस्तट; (इक)।

णारइअ वि [**नारकिक**] १ नरक-पृथिवी में उत्पन्न ; २ पुं. नरक का जीव ; (हे १, ७९) ।

णारंग पुं [**नारङ्ग**] १ वृक्ष-विशेष, शंतरे का वृक्ष ; २ न. फल-विशेष, कमला नीबू , शंतरा ; (पउम ४१, ९ ; सुपा २३० ; ५६३ ; गउड; कुमा) ।

णारग देखो **णारय**=नारक ; (विसे १६००) ।

णारद देखो **णारय** ; (प्रयौ ५१) ।

णारदीअ वि [**नारदीय**] नारद-संबन्धी ; (प्रयौ ५१) ।

णारय पुं [**नारद**] १ मुनि-विशेष, नारद ऋषि ; (सम १५४, उप ६४८ टी) । २ गन्धर्व सैन्य का अधिपति देव-विशेष ; (ठा ७) ।

णारय वि [**नारक**] १ नरक में उत्पन्न, नरक-संबन्धी; "जायए नारयं दुक्खं" (सुपा १६२) । २ पुं. नरक में उत्पन्न प्राणी, नरक का जीव ; (भग) ।

णारसिंह वि [**नारसिंह**] नरसिंह-संबन्धी ; (उप ६४८ टी) ।

णाराय देखो **णराअ** ; (हे १, ६७ ; उवा; सम १४९ ; अजि १४) । °वज्ज न [°वज्र] संहनन-विशेष ; (पउम ३, १०९) ।

णारायण पुं [**नारायण**] १ विष्णु, श्रीकृष्ण ; (कुमा ; स ६२२) । २ अर्ध-चक्रवर्ती राजा ; (पउम ५, १२२ ; ७३, २०) ।

णारायणी स्त्री [**नारायणी**] देवी-विशेष, गौरी, दुर्गा ; (गउड) ।

णारि° देखो **णारी**; (कप्प ; राज) । °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] नदी-विशेष ; (सम २७; ठा २, ३) ।

णारिएर } पुं [**नालिकेर**]१ नारियर का पेड़; २ न. नलि-
णारिएल } यर का फल ; (अभि १२७ ; वि १२८) । देखो **णालिअर** ।

णारिंग न [**नारिङ्ग**] नारंगी का फल, मोठा नीबू, कमला नीबू ; (कप्पू) ।

णारी स्त्री [**नारी**] १ स्त्री, औरत, जनाना, महिला ; (हेका २२८ ; प्रासू ६२ ; १५६) । २ नदी-विशेष ; (इक) । °**कंतप्पवाय** पुं [°**कान्ताप्रपात**] द्रह-विशेष ; (ठा २, ३) । देखो **णारि°** ।

णारुट्ट पुं [**दे**] कूपार, गर्ताकार स्थान ; (पाअ) ।

णारोट्ट पुं [**दे**] १ बिल, साँप आदि का रहने का स्थान, विवर ; २ कूपार, गर्ताकार स्थान ; (दे ४, २३) ।

णाल न [**नाल**] १ कमल-दण्ड ; (से १, २८) । २ गर्भ का आवरण ; (उप ६७४) ।

णालंदइज्ज वि [**नालन्दीय**] १ नालन्दा-संबन्धी । २ न. नालंदा के समीप में प्रतिपादित अध्ययन-विशेष, 'सूत्रकृतांग' सूत्र का सातवाँ अध्ययन ; (सुअ २, ७) ।

णालंदा स्त्री [**नालन्दा**] राजगृह नगर का एक महल्ला ; (कप्प ; सुअ २, ७) ।

णालंपिअ न [**दे**] आक्रन्दित, आक्रन्द-ध्वनि ; (दे ४,२४)।

णालंबि पुं [**दे**] कुन्तल, केश-कलाप ; (दे ४, २४) ।

णाला } स्त्री [**नाडि**] नाड़ी, नस, सिरा ; (से १, २८ ;
णालि } कुमा) ।

णालि वि [**दे**] स्रस्त, गिरा हुआ ; (षड्) ।

णालिअ वि [**दे**] मूढ़, मूर्ख, अज्ञान ; (हे ४, ४२२) ।

णालिअर देखो **णारिएर** ; (दे २, १० ; पउम १, २०) । °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष ; (कम्म १, १६) ।
णालिआ स्त्री [**नालिका**] १ वल्ली विशेष ; (दे २,३) । २ घटिका, घड़ी, काल नापने का एक तरह का यन्त्र ; (पाअ ; विसे ६२७) । ३ अपने शरीर से चार अंगुल लम्बी लाठी ; (ओघ ३६) । ४ द्यूत-विशेष, एक तरह का जूआ ; (औप ; भग ६, ७) । °**खेड्डा** स्त्री [°**क्रीडा**] एक तरह का द्यूत-क्रीड़ा ; (औप) ।
णालिएर देखो **णारिएर** ; (णाया १, ६) ।
णालिएरी स्त्री [**नालिकेरी**] नलियर का गाछ ; (गउड ; पि १२६) ।
णाली स्त्री [**नाली**] १ वनस्पति-विशेष, एक लता ; (पराण १) । २ घटिका, घड़ी ; (जीव ३) ।
णाली स्त्री [**नाडी**] नाड़ी, नस, सिरा ; (विपा १, १) ।
णालीय वि [**नालीय**] नाल-संबन्धी ; (आचा) ।
णावइ (अप) देखो **इव** ; (हे ४, ४४४ ; भवि) ।
णावण न [**दे**] दान, वितरण ; (पराह १,३—पत्र ५३) ।
णावा स्त्री [**नौ**] नौका, जहाज ; (भग ; उवा) । °**वाणिय** पुं [°**वाणिज**] समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला वणिक् ; (णाया १, ८) ।
णावापूरय पुं [**दे**] चुलुक, चुल्लू ; "जिहिं णावापूरएहिं आयामइ" (बृह १) ।
णाविअ पुं [**नापित**] नाई, हजाम ; (हे १, २३० ; कुमा ; षड्) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] नाइओं का अड्डा ; (श्रा १२) ।
णाविअ पुं [**नाविक**] जहाज चलाने वाला, नौका हाँकने वाला ; (णाया १, ६ ; सुर १३, ३१) ।
णास देखो **णस्स** । णासइ ; (षड् ; महा) । वकृ—**णासंत** ; (सुर १, २०२ ; २, २५) । कृ—**णासियव्व** ; (सुर ७, १२६) ।
णास सक [**नाशय्**] नाश करना । णासइ ; (हे ४, ३१) । णासेइ ; (महा ; उव) ।
णास पुं [**नाश**] नाश, ध्वंस ; (प्रासू १५३ ; पाअ) । °**यर** वि [°**कर**] नाश-कारक ; (सुर १२, १६४) ।
णास पुं [**न्यास**] १ स्थापन ; (गा ६६ ; उव ३०२) । २ धरोहर, रखने योग्य धन आदि ; (उप ७६८ टी ; धर्म २) ।
णासग वि [**नाशक**] नाश करने वाला ; (सुर२, ५८) ।
णासण न [**नाशन**] १ पलायन, अपक्रमण ; (धर्म२) । २ वि. नाश करने वाला ; (से ३, २७ ; गण २२) । स्त्री—°**णी** ; (से ३, २७) ।
णासण न [**न्यासन**] स्थापन, व्यवस्थापन ; (अणु) ।
णासणा स्त्री [**नाशना**] विनाश ; (विसे ६३६) ।
णासव सक [**नाशय्**] नाश करना । णासवइ ; (हे४, ३१) ।
णासविय वि [**नाशित**] नष्ट किया हुआ, भगाया हुआ ; (उप ३५७ टी ; कुमा) ।
णासा स्त्री [**नासा**] नाक, घ्राणेन्द्रिय ; (गा २२ ; आचा ; उवा) ।
णासि वि [**नाशिन्**] विनश्वर, नष्ट होने वाला ; (विसे १६८१) ।
णासिक्क न [**नासिक्य**] दक्षिण भारत का एक स्वनाम-प्रसिद्ध नगर जो आज कल भी 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है ; (उप पृ २१३ ; १४१ टी) ।
णासिगा स्त्री [**नासिका**] नाक, घ्राणेन्द्रिय ; (महा) ।
णासिय वि [**नाशित**] नष्ट किया हुआ ; (महा) ।
णासियव्व देखो **णास**=नश् ।
णासिर वि [**नशितृ**] नष्ट होने वाला, विनश्वर ; (कुमा) ।
णासीकय वि [**न्यासीकृत**] धरोहर रूप से रखा हुआ ; (श्रा १४) ।
णासेक्क देखो **णासिक्क** ; (उप १४१) ।
णाह पुं [**नाथ**] स्वामी, मालिक ; (कुमा ; प्रासू १२ ; ६६) ।
णाहल पुं [**लाहल**] म्लेच्छ की एक जाति ; (हे १, २५६ ; कुमा) ।
णाहि देखो **णाभि** ; (कुमा ; कप्पू) । °**रुह** पुं [°**रुह**] ब्रह्मा, चतुर्मुख ; (अच्चु ३६) ।
णाहिं (अप) अ [**नहि**] नहीं, नाहीं ; (हे ४, ४१६ ; कुमा ; भवि) ।
णाहिणाम न [**दे**] वितान के बीच की रस्सी ; (दे ४, २४) ।
णाहिय वि [**नास्तिक**] १ परलोक आदि को नहीं मानने वाला ; २ पुं. नास्तिक मत का प्रवर्तक । °**वाइ**, °**वादि** वि [°**वादिन्**] नास्तिक मत का अनुयायी ; (सुर ६, २० ; स १६४) । °**वाय** पुं [°**वाद**] नास्तिक दर्शन ; (गच्छ २) ।
णाहिविच्छेअ } पुं [**दे**] जघन, कटी के नीचे का भाग ;
णाहीए-विच्छेअ } (दे ४,२४) ।

णि अ [नि] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय ; (उत्त १)। २ नियतपन, नियम ; (ठा १०)। ३ आधिक्य, अतिशय ; (उत्त १ ; विपा १, ६)। ४ अधो-भाग, नीचे ; (सण)। ५ नित्यपन ; ६ संशय ; ७ आदर ; ८ उपरम, विराम ; ९ अन्तर्भाव, समावेश ; १० समीपता, निकटता ; ११ क्षेप, निन्दा ; १२ बन्धन ; १३ निषेध ; १४ दान ; १५ राशि, समूह ; १६ मुक्ति, मोक्ष ;(हे २, २१७ : २१८)। १७ अभिमुखता, संमुखता ; (सूत्र १,६)। १८ अल्पता, लघुता ; (पण्ह १, ४)।

णि अ [निर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय ; (उत्त ६)। २ आधिक्य, अतिशय ; (उत्त १)। ३ प्रति-षेध, निषेध ; (सम १३७ ; सुपा १६८)। ४ बहिर्भाव ; ५ निर्गमन, निष्क्रमण ; (ठा ३, १; सुपा १३)।

णिअ सक [दृश्] देखना। णिअइ ; (षड् ; हे ४,१८१)। वकृ—णिअंत ; (कुमा ; महा ; सुपा २६६)। संकृ—णिएउं ; (भवि)।

णिअ वि [निज] आत्मीय, स्वकीय ; (गा १५० ; कुमा ; सुपा ११)।

णिअ वि [नीत] ले जाया गया ; (से ५, ६ ; सण)।

णिअ वि [नीच] नीच, जघन्य, निकृष्ट ; (कम्म ३, ३)।

णिअइ स्त्री [निकृति] माया, कपट ; (पण्ह १, २)।

णिअइ स्त्री [नियति] १ नियतपन, भवितव्यता, नियमितता; (सूअ १, १, ३)। २ अवश्यं-भाविता ; (ठा ४, ४ ; सूअ १, १, २)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष ; (जीव ३)। °वाइ वि [°वादिन्] 'सब कुछ भवितव्यता के अनुसार ही हुआ करता है, प्रयत्न वगैरः अकिञ्चित्कर है' ऐसा मानने वाला; (राज)।

णिअंटिय वि [नियन्त्रित] १ बँधा हुआ, जकड़ा हुआ। २ न. आवश्य-कर्तव्य नियम-विशेष ; (ठा १०)।

णिअंठ वि [निर्ग्रन्थ] १ धन रहित। २ पुं. जैन मुनि, संयत, यति ; (भग ; ठा ३, १ ; ५, ३)। ३ जिन भग-वान् ; (सूअ १, ६)।

णिअंठि° देखो णिग्गंथी। °पुत्त पुं [°पुत्र] १ एक विद्याधर-पुत्र, जिसका दूसरा नाम सत्यकि था ; (ठा १०)। २ एक जैन मुनि, जो भगवान् महावीर का शिष्य था ; (भग ५, ८)।

णिअंठिय वि [नैर्ग्रन्थिक] १ निर्ग्रन्थ-संबन्धी ; २ जिन-देव-संबन्धी। स्त्री--°या; "एसा आणा णियंठिया" (सूअ १,६)।

णिअंठी देखो णिग्गंथी ; (ठा ६)।

णिअंतिय वि [नियन्त्रित] संयमित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ ; (महा ; सण)।

णिअंधण न [दे] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ४, २८)।

णिअंब पुं [नितम्ब] १ पर्वत का एक भाग, पर्वत का वस-ति-स्थान; (ओघ ४०)। २ स्त्री की कमर का पीछला भाग, कमर के नीचे का भाग ; (कुमा ; गउड)। ३ मूल भाग ; (से ८, १०१)। ४ कटी-प्रदेश, कमर ; (जं ४)।

णिअंबिणी स्त्री [नितम्बिनी] १ सुन्दर नितम्ब वाली स्त्री ; २ स्त्री, महिला ; (कप्पू ; पाअ ; सुपा ५३८)।

णिअंस सक [नि + वस्] पहनना। णियंसइ ; (महा)। संकृ—णियंसित्ता ; (जीव ३ ; पि ७४)। प्रयो—णियंसावेइ ; (पि ७४)।

णिअंसण न [दे. निवसन] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ४, ३८; गा ३५१ ; पाअ ; गउड ; पण्ह १, ३ ; सुपा १५१ ; हेका ३१)।

णिअक्क सक [दृश्] देखना। णिअक्कइ ; (प्राप्र)।

णिअक्कल वि [दे] वर्तुल, गोलाकार पदार्थ ; (दे ४, ३६ ; पाअ)।

णिअग वि [निजक] आत्मीय, स्वकीय ; (उवा)।

णिअच्छ सक [दृश्] देखना। णिअच्छइ ; (हे ४,१८१)। वकृ—णिअच्छंत, णिअच्छमाण ; (गा २३८ ; गउड ; गा ५००)। संकृ—णिअच्छिऊण, णिअच्छिअ ; (सुर १, १५७ ; कुमा)। कृ—णिअच्छियव्व ; (गउड)।

णिअच्छ सक [नि+यम्] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना। २ अवश्य प्राप्त करना। ३ जोड़ना। संकृ—णिअ-च्छइत्ता ; (सूत्र १, १, १ ; २)।

णिअच्छिअ वि [दृष्ट] देखा हुआ ; (पाअ)।

णिअट्ट अक [नि+वृत्] निवृत्त होना, पीछे हटना, रुकना। णिअट्टइ ; (सण)। वकृ –णिअट्टमाण ; (आचा)।

णिअट्ट सक [निर् + वृत्] बनाना, रचना, निर्माण करना ; (औप)।

णिअट्ट सक [नि + अर्द्] अनुसरण करना ; (औप)।

णिअट्ट पुं [निवर्त] व्यावर्तन, निवृत्ति ; "अणियट्टगामीण" (आचा)।

णिअट्ट वि [निवृत्त] व्यावृत्त, पीछे हटा हुआ ; (धर्म १

णिअट्टि स्त्री [**निवृत्ति**] १ निवर्तन, पीछे हटना ; (आचू १)। २ अध्यवसाय-विशेष ; (सम २६)। ३ मोह-रहित अवस्था ; (सूअ १, ११)। °**बायर** न [°**बादर**] १ गुण-स्थानक विशेष ; (सम २६)। २ पुं. गुण-स्थानक विशेष में वर्त्तमान जीव ; (आव ४)।

णिअट्टिय वि [**निवर्त्तित**] व्यावर्तित, पीछे हटाया हुआ ; (औप)।

णिअट्टिय वि [**निर्वर्तित**] रचित, निर्मित, बनाया हुआ; (औप)।

णिअट्टिय वि [**न्यर्दित**] अनुगत, अनुसृत ; (औप)।

णिअड न [**निकट**] १ निकट, समीप, पास ; (गा ४०२; पाअ ; सुपा ३५२)। २ वि. पास का, समीप का ; (पाअ)।

णिअडि स्त्री [**दे. निकृति**] माया, कपट ; (दे ४, २६ ; पण्ह १, २ ; सम ५१ ; भग १२, ५ ; सूअ २, २ ; णाया १, १८ ; आव ५)।

णिअडिअ वि [**निगडित**] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ ; (गा ५५६ ; उप पृ ५२ ; सुपा ६३)।

णिअडिअ वि [**निकटिक**] समीप-वर्ती, पार्श्व में स्थित ; (कप्पू)।

णिअडिल्ल वि [**निकृतिमत्**] कपटी, मायावी ; (ठा ४, ४ ; औप ; भग ८, ६)।

णिअत्त देखो **णिअट्ट**=नि+वृत्। णिअत्तइ; (महा ; पि २८६)। वकृ—**णिअत्तंत, णिअत्तमाण** ; (गा ७६ ; ५३७ ; से ५, ६७ ; नाट)। प्रयो—णिअत्तावेहि ; (पि २८६)।

णिअत्त देखो **णिअट्ट**=निवृत्त ; (पउम २२, ६२ ; गा ६५८ ; सुपा ३१७)।

णिअत्तण न [**निवर्तन**] १ भूमि का एक नाप ; (उवा)। २ निवृत्ति, व्यावर्तन ; (आव ४)।

णिअत्तणिअ वि [**निवर्तनिक**] निवर्तन परिमाण वाला ; (भग ३, १)।

णिअत्ति देखो **णिअट्टि** ; (उत्त ३१)।

णिअत्थ वि [**दे**] १ परिहित, पहना हुआ ; (दे ४, ३३ ; आवम ; भवि)। २ परिधापित, जिसको वस्त्र आदि पहनाया गया हो वह ; "णियत्था तो गणियाए" (विसे २६०७)।

णिअद सक [**नि+गद**] कहना, बोलना। णिअददि (शौ) ; (नाट—चैत ४५)। वकृ—**णिअदंत**; (नाट)।

णिअद्दिय देखो **णिअट्टिय**=न्यर्दित; (राज)।

णिअद्धण न [**दे**] परिधान, पहनने का वस्त्र ; (षड्)।

णिअम सक [**नि+यमय्**] नियन्त्रित करना, नियम में रखना। संकृ—**णिअमेऊण** ; (पि ५८६)।

णिअम पुं [**नियम**] १ निश्चय; (जो १४)। २ ली हुई प्रतिज्ञा, व्रत ; "परिवाविज्जइ णिअमा णिअमसमत्ती तुमे मज्झ" (उप ७२८ टी)। ३ प्रायोपवेशन, संकल्प-पूर्वक अनशन-मरण के लिए उद्यम ; (से ५, २)। °**सा** अ [°**सात्**] नियम से ; (औप)। °**सो** अ [°**शस्**] निश्चय से; (श्रा १४)।

णिअमण न [**नियमन**] नियन्त्रण, संयमन; (विसे १२५८)।

णिअमिय वि [**नियमित**] नियम में रखा हुआ, नियन्त्रित ; (से ४, ३७)।

णिअय न [**दे**] १रत, मैथुन; २ शयनीय, शय्या; ३घट, घडा, कलश ; (दे ४, ४८)। ४ वि. शाश्वत, नित्य ; (दे ४, ४८; पाअ ; सूअ १, ८ ; राय)।

णिअय वि [**निजक**] निजका, स्वकीय, आत्मीय; (पाअ)।

णिअय वि [**नियत**] नियम-बद्ध, नियमानुसारी ; (उवा)।

णिअया स्त्री [**नियता**] जम्बू-वृक्ष विशेष,जिससे यह जम्बू-द्वीप कहलाता है ; (इक)।

णिअर पुं [**निकर**] राशि, समूह, जत्था; (गा ५६६ ; पाअ; गउड)।

णिअरण न [**दे**] दण्ड, शिक्षा ; (स ४५६)।

णिअरिअ वि [**दे**] राशि रूप से स्थित ; (दे ४, ३८)।

णिअल न [**दे**] नूपुर, स्त्री का पादाभरण-विशेष ; (दे ४, २८)।

णिअल पुं [**निगड**] बेड़ी, साँकल ; (से ३, ८; विपा १, ६)। देखो **णिगल**।

णिअलइअ, **णिअलाविअ**, **णिअलिअ** } वि. [**निगडित**] साँकल से नियन्त्रित, जकड़ा हुआ; (गा ४५४ ; ५०० ; पाअ; गउड ; से ५, ४८)।

णिअल्ल पुं [**दे.नियल्ल**] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)।

णिअल्ल वि [**निज**] स्वकीय, आत्मीय ; (महा)।

णिअस देखो **णिअंस**। णियसइ ; (सुपा ६२)।

णिअसण देखो **णिअंसण**; (हेका ५६ ; काप्र २०१)।

णिअसिय वि [**निवसित**] परिहित, पहना हुआ ; (सुपा १५३)।

णिअह देखो **णिवह** ; (नाट—मालती १३८)।

णिआ° देखो **णिअय**=(दे)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] नित्य-वादी, पदार्थ को नित्य मानने वाला; (ठा ८)।

णिआइय देखो **णिकाइय**; (सूअ १, ६)।

णिआग पुं [**नियाग**] १ नियत योग; २ निश्चित पूजा; ३ मोक्ष, मुक्ति; (आचा; सूअ १, १, २)। ४ न. आमन्त्रण दे कर जो भिक्षा दो जाय वह; (दस ३)।

णिआग देखो **णाय**=न्याय; (आचा)।

णिआण न [**निदान**] १ कारण, हेतु; "अहो अप्पं नियाणं महंतो विवाओ" (स ३६० ; पाअ; णाया १, १३)। २ किसी अनानुष्ठान को फल-प्राप्ति का अभिलाष, संकल्प-विशेष; (श्रा ३३ ; ठा १०)। ३ मूल कारण; (आचा)। °**कड** वि [°**कृत्**] जिसने अपने शुभानुष्ठान के फल का अभिलाष किया हो वह; (सम १५३)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] वही अनन्तर उक्त अर्थ; (ठा ६)।

णिआण न [**निपान**] कूप या तलाव के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, आहाव, हौदी; "पइभवणं पइहट्टं पइमग्गं पइसहं पइनियाणं" (उप ७२८ टी)।

णिआणिआ स्त्री [**दे**] खराब तृणों का उन्मूलन; (दे ४, ३५)।

णिआम देखो **णिअम**=नियमय्। संकृ—उवसग्गा **णियामित्ता** आमोक्खाए परिव्वए" (सूअ १, ३, ३)।

णिआमग } वि [**नियामक**] नियम-कर्ता, नियन्ता; (सुपा **णिआमय** } ३१६)। २ निश्चायक, विनिगमक; (विसे ३४७० ; स १७०)।

णिआमिअ वि [**नियमित**] नियम में रखा हुआ, नियन्त्रित; (स २६३)।

णिआर सक [**काणेक्षित कृ**] कानी नजर से देखना। णिआरइ; (हे ४, ६६)।

णिआरिअ वि [**काणेक्षितीकृत**] १ कानी नजर से देखा हुआ, आधी नजर से देखा हुआ। २ न. आधी नजर से निरीक्षण; (कुमा)।

णिआह पुं [**निदाघ**] १ ग्रीष्म काल, ग्रीष्म ऋतु; २ उष्ण, घम, गरमी; (गउड)।

णिइअ } वि [**दे, नित्य, नैत्यिक**] नित्य, शाश्वत, अविनश्वर; **णिइय** } (पण्ह २, ४—पत्र १४१; सूअ १, १, ४; २, ४; णंदि; आचा; सम १३२)।

णिउअ वि [**निवृत**] परिवेष्टित, परिक्षित; (हे १,१३१)।

णिउअ वि [**नियुत**] सुसंगत, सुश्लिष्ट; (णाया १, १८)।

णिउंचिअ वि [**निकुञ्चित**] संकुचित, सकुचा हुआ, थोड़ा मुड़ा हुआ; (गा ५६३ ; से ६, १६ ; पाअ ; स ३३५)।

णिउंज सक [**नि+युज्**] जोड़ना, संयुक्त करना, किसी कार्य में लगाना। कर्म—णिउंजोअसि; (पि ५४६)। वकृ—**णिउंजमाण**; (सूअ १, १०)। संकृ—**णिउंजिऊण, णिउंजिय**; (स १०४ ; महा)। कृ—**णिउंजियव्व, णिउत्तव्व**; (उप पृ १० ; कुमा)।

णिउंज पुं [**निकुञ्ज**] १ गहन, लता आदि से निबिड़ स्थान; (कुमा ; गा २१७)। २ गह्वर; (दे ६, १२३)।

णिउंभ पुं [**निकुम्भ**] कुम्भकर्ण का एक पुत्र; (से १२,६२)।

णिउंभिला स्त्री [**निकुम्भिला**] यज्ञ-स्थान; (से १५,३६)।

णिउक्क वि [**दे**] तूष्णीक, मौन रहने वाला; (दे ४, २७ ; पाअ)।

णिउक्कण पुं [**दे**] १ वायस, काक, कौआ; २ वि. मूक, वाक्-शक्ति से हीन; (दे ४, ५१)।

णिउज्जम वि [**निरुद्यम**] उद्यम-रहित, आलसी; (सूअ २, २)।

णिउड्ड अक [**मस्ज्, नि+ब्रुड्**] मज्जन करना, डूबना। णिउड्डइ; (हे १,१०१)। वकृ—**णिउड्डमाण**; (कुमा)।

णिउड्ड वि [**मग्न, निब्रुडित**] डूबा हुआ, निमग्न; (से १०, १५ ; १५, ७४)।

णिउण वि [**निपुण**] १ दक्ष, चतुर, कुशल; (पाअ; स्वप्न ५३ ; प्रासु ११ ; जी ६)। २ सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके; (जो २ ; राय)। ३ क्रिवि. दक्षता से, चतुराई से, कुशलता से; (जीव ३)।

णिउण वि [**निगुण**] १ नियत गुण वाला; २ निश्चित गुण से युक्त; (राज)। ३ सुनिश्चित, विनिर्णीत; (पंचा४)।

णिउणिय वि [**नैपुणिक**] निपुण, दक्ष, चतुर; (ठा ६)।

णिउत्त वि [**नियुक्त**] १ व्यापारित, कार्य में लगाया हुआ; (पंचा ८)। २ निबद्ध; (विसे ३८८)।

णिउत्त वि [**निर्वृत्त**] निष्पन्न, सिद्ध; (उत्तर १०४)।

णिउत्तव्व देखो **णिउंज**=नि+युज्।

णिउद्ध न [**नियुद्ध**] बाहु-युद्ध, कुश्ती; (उप २६२)।

णिउर पुं [**निकुर**] वृक्ष-विशेष; (णाया १,६—पत्र १६०)।

णिउर न [**नूपुर**] स्त्री के पाँव का एक आभरण; (हे १, १२३; कुमा)।

णिउर वि [**दे**] १ छिन्न, काटा हुआ ; २ जीर्ण, पुराना; (षड्)।

णिउरंब न [**निकुरम्ब**] समूह, जत्था ; (पाअ ; सुर ३, ६१ ; गा ४६५ ; सुपा ४५४)।

णिउरुंब न [**निकुरम्ब**] समूह, जत्था ; (स ४३७ ; गा ४६५ अ ; पि १७७)।

णिउल पुं [**दे**] गाँठ, गठरी ; "एवं बहु भणिऊणं समप्पिओ दविणनिउलोत्ति" (महा)।

णिऊढ वि [**निगूढ**] गुप्त, प्रच्छन्न ; (अच्चु ४५)।

णिएल्ल देखो **णिअल्ल**=निज ; (आवम)।

णिओअ सक [**नि+योजय्**] किसी कार्य में लगाना। णिओएदि (शौ) ; (नाट—विक्र ५)।

णिओअ देखो **णिओग** ; (से ८, २६ ; अभि २७ ; सण; से ३४८)। १० आज्ञा, आदेश ; (स २१४)।

णिओइअ वि [**नियोजित**] नियुक्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ ; (स ४४२ ; अभि ६६)।

णिओग पुं [**नियोग**] १ नियम, आवश्यक कर्तव्य ; (विसे १८७६ ; पंचव ४)। २ सम्बन्ध, नियोजन ; (बृह १)। ३ अनुयोग, सूत्र की व्याख्या; (विसे)। ४ व्यापार, कार्य ; (वव २)। ५ अधिकार-प्रेरणा ; (महा)। ६ राजा, नृप, आज्ञा-विधाता ; (जीत)। ७ गाँव, ग्राम ; ८ क्षेत्र, भूमि ; (बृह १)। ९ संयम, त्याग ; (सूअ १,१६)। देखो **णिओअ**। °**पुर** न [°**पुर**] १ राजधानी ; २ देश, राष्ट्र ; ३ राज्य; (जीत)।

णिओगि वि [**नियोगिन्**] नियोग-विशिष्ट, नियुक्त, आज्ञा-प्राप्त, अधिकारी ; (सुपा ३७१)।

णिओजिय देखो **णिओइअ** ; (आवम)।

णिंत } देखो **णी**=गम्।
णिंतूण }

णिंद सक [**निन्द्**] निन्दा करना, जुगुप्सा करना। णिंदामि; (पडि)। वकृ —**णिंदंत** ; (श्रा ३९)। कवकृ— **णिंदिज्जंत** ; (सुपा ३६३)। संकृ—**णिंदित्ता**, **णिंदिअ**; (आचा २, ३, १ ; श्रा ४०)। हेकृ— **णिंदिउं**, **णिंदित्तए** ; (महा ; ठा २, १)। कृ— **णिंदियव्व**, **णिंदणिज्ज** ; (पण्ह २, १ ; उप १०३१ टी ; णाया १, ३)।

णिंद वि [**निन्द्य**] निन्दा-योग्य, निन्दनीय ; (आवू १)।

णिंद (अप) स्त्री [**नाद्र**] निंद, निद्रा ; (भवि)।

णिंदण न [**निन्दन**] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा; (उप ४४६; ७२८ टी)।

णिंदणा स्त्री [**निन्दना**] निन्दा, जुगुप्सा ; (औप ; ओघ ७६१ ; पण्ह २, १)।

णिंदय वि [**निन्दक**] निन्दा करने वाला ; (पउम ६०, २१)।

णिंदा स्त्री [**निन्दा**] घृणा, जुगुप्सा ; (आव ४)।

णिंदिअ वि [**निन्दित**] जिसकी निन्दा की गई हो वह ; (गा २६७ ; प्रासू १५८)।

णिंदिणी स्त्री [**दे**] कुत्सित तृणों का उन्मूलन ; (दे ४, ३५)।

णिंदु स्त्री [**निन्दु**] मृत-वत्सा स्त्री, जिसके बच्चे जीवित न रहते हों ऐसी स्त्री ; (अंत ७ ; श्रा १६)।

णिंब पुं [**निम्ब**] नीम का पेड़ ; (हे १, २३० ; प्रासू २६)।

णिंबोलिया स्त्री [**निम्बगुलिका**] नीम का फल ; (णाया १, १६)।

णिकर पुं [**निकर**] समूह, जत्था, राशि ; (कप्पू)।

णिकरण न [**निकरण**] १ निश्चय, निर्णय ; २ निकार, दुःख-उत्पादन ; (आचा)।

णिकरिय वि [**निकरित**] सारीकृत, सर्वथा संशोधित ; (औप)।

णिकाइय वि [**निकाचित**] १ व्यवस्थापित, नियमित ; (णंदि)। २ अत्यन्त निबिड़ रूप से बँधा हुआ (कर्म) ; (उव ; सुपा ५७६)। ३ न. कर्मों का निबिड़ रूप से बन्धन; (ठा ४, २)।

णिकाम न [**निकाम**] १ निश्चय, निर्णय ; २ अत्यन्त, अतिशय ; (सूअ १, १०)।

णिकाय सक [**नि+काचय्**] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना। २ निबिड़ रूप से बाँधना। ३ निमन्त्रण देना। णिकाइंति ; (भग)। भूका—णिकाइंसु ; (भग ; सूअ २,१)। भवि—णिकाइस्संति ; (भग)। संकृ—**णिकाय** ; (आचा)।

णिकाय पुं [**निकाय**] १ समूह, जत्था, यूथ, वर्ग, राशि ; (ओघ ४०७ ; विसे ९०० ; दं २८)। २ मोक्ष, मुक्ति ; (आचा)। ३ आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष ; (अणु)। °**काय** पुं [°**काय**] जीव-राशि, छओं प्रकार के जीवों का समूह ; (दस ४)।

णिकाय पुं [**निकाच**] निमन्त्रण, न्यौता ; (सम २१) ।
णिकायणा स्त्री [**निकाचना**] १ करण-विशेष, जिससे कर्मों का निबिड़ बन्ध होता है ; (विसे २५१५ टी ; भग)। २ निबिड़ बन्धन ; ३ दापन, दिलाना ; (राज) ।
णिकिंत सक [**नि+कृत्**] काटना, छेदना। णिकिंतइ ; (पुप्फ ३३७ ; उव), णिकिंतए ; (उव ; काल) ।
णिकिंतग वि [**निकर्तक**] काट डालने वाला; (काल) ।
णिकुट्ट सक [**नि+कुट्ट्**] १ कूटना । २ काटना । णिकुट्टेइ, णिकुट्टमि ; (उवा) ।
णिकूणिय वि [**निकूणित**] टेढ़ा किया हुआ, वक्र किया हुआ; (दे १, ८८) ।
णिकेय पुं [**निकेत**] गृह, आश्रय, निवास-स्थान ; (गाया १, १६ ; उत्त २ ; आचा) ।
णिकेयण न [**निकेतन**] ऊपर देखो ; (सुर १३, २१ ; महा) ।
णिकोय पुं [**निकोच**] संकोच, सिमट ; (दे ७, १५) ।
णिक्क वि [**दे**] सुनिर्मल, सर्वथा मल-रहित; (णाया १,१)।
णिक्कइअव वि [**निष्कैतव**] १ कपट-रहित, निर्माय ; (कुमा) । २ कपट का अभाव, निष्कपटपन ; (गा ८५)।
णिक्कंकड वि [**निष्कङ्कट**] १ आवरण-रहित ; (औप)। २ उपघात-रहित ; (सम १३७) ।
णिक्कंखिय न [**निष्काङ्क्षित**] १ आकाङ्क्षा का अभाव ; २ दर्शनान्तर की अनिच्छा ; (उत्त २ ; पडि) ।
णिक्कंखिय वि [**निष्काङ्क्षित,°क**] १ आकाङ्क्षा-रहित; २ दर्शनान्तर के पक्षपात से रहित ; (सुअ २, ७ ; औप ; राय) ।
णिक्कंचण वि [**निष्काञ्चन**] सुवर्ण-रहित, धन-रहित ; निःस्व ; (सुपा १६८) ।
णिक्कंटय वि [**निष्कण्टक**] कण्टक-रहित, शत्रु-रहित ; (सुपा २०८) ।
णिक्कंड वि [**निष्काण्ड**) १ काण्ड-रहित, स्कन्ध-वर्जित; २ अवसर-रहित ; (गा ४६८) ।
णिक्कंत वि [**निष्क्रान्त**] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ ; (से १, ५६) । २ जिसने दीक्षा ली हो वह, गृहस्थाश्रम से निर्गत ; (आचा) ।
णिक्कंतार वि [**निष्कान्तार**] अरण्य से निर्गत ; (ठा ३, १) ।
णिक्कंतु वि [**निष्क्रमितृ**] बाहर निकालने वला ; (ठा३,१)।
णिक्कंप वि [**निष्कम्प**] कम्प-रहित, स्थिर; (हे २, ४ ; अभि २०१) ।
णिक्कज्ज वि [**दे**] अनवस्थित, चंचल; (दे ४, ३३ ; पाअ)।
णिक्कट्ठ वि [**निष्कृष्ट**] कृश, दुर्बल, क्षीण ; (ठा ४, ४— पत्र २७१) ।
णिक्कड वि [**दे**] १ कठिन; (दे ४, २६) । २ पुं. निश्चय, निर्णय ; (षड्) ।
णिक्कड्डिय वि [**निष्कृष्ट, निष्कर्षित**] बाहर खींचा हुआ, बाहर निकाला हुआ ; (स ६०; २१५) ।
णिक्कण वि [**निष्कण**] धान्य-कण-रहित, अत्यन्त गरीब ; (विपा १, ३) ।
णिक्कम अक [**निर्+क्रम्**] १ बाहर निकलना । २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना । णिक्कमामि ; (पि ४८१) । वकृ— **णिक्कमंत** ; (हेका ३३२ ; मुद्रा ८२) ।
णिक्कम पुं [**निष्क्रम**] नीचे देखो ; (नाट—मुद्रा २२४)।
णिक्कमण न [**निष्क्रमण**] १ निर्गमन, बाहर निकलना ; (मुद्रा २२४) । २ दीक्षा, संन्यास ; (आचा) ।
णिक्कम्म वि [**निष्कर्मन्**] १ कार्य-रहित, निकम्मा ; (गा १६६) । २ मोक्ष, मुक्ति; ३ संवर, कर्मों का निरोध ; (आचा) ।
णिक्कय पुं [**निष्क्रय**] १ बदला, उऋणपन ; (सुपा ३४१ ; पउम ७ ; १२६) । २ भृति, वेतन, मजूरी ; (हे २, ४) ।
णिक्करुण वि [**निष्करुण**] करुणा-रहित, दया वर्जित ; (नाट—मालती ३२) ।
णिक्कल वि [**निष्कल**] कला-रहित ; (सुपा १) ।
णिक्कल वि [**दे**] पोलापन से रहित; (सुपा १ ; भग१५) ।
णिक्कलंक वि [**निष्कलङ्क**] कलङ्क-रहित, बेदाग ; (स ४१८ ; महा ; सुपा २५३) ।
णिक्कलुण देखो **णिक्करुण** ; (पगह १, १) ।
णिक्कलुस वि [**निष्कलुष**] १ निर्दोष, निर्मल ; २ निरुपद्रव, उपद्रव-रहित ; (से १२, ३४) ।
णिक्कवड वि [**निष्कपट**] कपट-रहित; (उप पृ १६०) ।
णिक्कवय वि [**निष्कवच**] कवच-रहित, वर्म-वर्जित ; (ठा ४, २) ।
णिक्कस सक [**निर्+कस्**] निकासना, बाहर निकालना । कवकृ—**णिक्कसिज्जंत** ; (उत्त १) ।
णिक्कसण न [**निष्कसन**] निर्गमन ; (सुअ १, १४) ।

णिक्कसाय वि [**निष्कषाय**] १ कषाय-रहित, क्रोधादि-वर्जित ; (श्राउ) । २ पुं. भरत-क्षेत्र के एक भावी तीर्थ-कर-देव ; (सम १५३) ।

णिक्का स्त्री [**नीका**] वाम नासिका ; (कुमा) ।

णिक्काम वि [**निष्काम**] अभिलाषा-रहित ; (बृह १) ।

णिक्कारण वि [**निष्कारण**] १ कारण-रहित, अ-हेतुक ; (सुर २, ३६) । २ क्रिवि. बिना कारण ; (आव ६) ।

णिक्कारणिय वि [**निष्कारणिक**] कारण-रहित, हेतु-शून्य ; (ओघ ५) ।

णिक्काल सक [**निर् + कालय्**] बाहर निकालना । संकृ—**निक्कालेउं** ; (सुपा १३) ।

णिक्कासिय वि [**निष्कासित**] बाहर निकाला हुआ; (राज)।

णिक्किंचण वि [**निष्किञ्चन**] निर्धन, धन-रहित, निःस्व ; (आवम) ।

णिक्किट्ठ वि [**निकृष्ट**] अधम, नीच, हीन, जघन्य; "अइनि-किट्ठपाविट्ठयावि अहं।" (श्रा १४ ; २७ ; सुपा ५७१ ; सड्ढि १५८) ।

णिक्किण सक [**निर् + क्री**] निष्क्रय करना, खरीदना । णिक्किणासि ; (मृच्छ ६१) ।

णिक्कित्तिम वि [**निष्कृत्रिम**] अ-कृत्रिम, असली, स्वाभा-विक ; (उप ६८६ टी) ।

णिक्किरिय वि [**निष्क्रिय**] क्रिया-रहित, अ-क्रिय ; (पण्ह १,२)।

णिक्किव वि [**निष्कृप**] कृपा-रहित, निर्दय ; (पाअ ; गा ३० ; सुपा ४०६) ।

णिक्कीलिय वि [**निष्क्रीडित**] गमन, गति ; (पव २७१) ।

णिक्कुड पुं [**निष्कुट**] तापन, तपाना ; (राज) ।

णिक्कूल स्त्री [**दे**] जाता हुआ, विनिर्जित ; (दे १, ४) ।

णिक्कोडण न [**निष्कोटन**] बन्धन-विशेष; (पण्ह १, ३—पत्र ५३) ।

णिक्कोर सक [**निर् + कोरय्**] १ दूर करना । २ पात्र वगैरः के मुँह का बन्द करना । ३ पात्र आदि का तक्षण करना । णिक्कोरेइ ; (बृह १) ।

णिक्कोरण न [**निष्कोरण**] १ पात्र आदि के मुँह का बन्द करना ; २ पात्र आदि का तक्षण ; (बृह १) ।

णिक्ख पुं [**दे**] १ चार; २ सुवर्ण, काञ्चन; (दे २, ४७) ।

णिक्ख पुंन [**निष्क**] दीनार, मोहर, मुद्रा, रुपया ; (हे२,४)।

णिक्खंत देखो **णिक्कंत** ; (सुअ१, ८ ; सम १५१; कस)।

णिक्खंध वि [**निःस्कन्ध**] स्कन्ध-रहित ; (गा४६८अ) ।

णिक्खत्त वि [**निःक्षत्र**] क्षत्र-रहित, क्षत्रिय-रहित ; (पि ३१६) ।

णिक्खम अक [**निर् + क्रम्**] १ बाहर निकलना । २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना । णिक्खमइ ; (भग) । णिक्खमंति ; (कप्प) । भूका—णिक्खमिंसु ; (कप्प) । भवि—णिक्खमिस्संति; (कप्प) । वकृ—**णिक्खममाण**; (णाया १, ५ ; पउम २२, १७) । संकृ—**णिक्खम्म**; (कप्प) । हेकृ—**णिक्खमित्तए** ; (कप्प ; कस) ।

णिक्खम पुंन [**निष्क्रम**] १ निर्गमन ; २ दीक्षा-ग्रहण ; (ठा १० ; दस १०) ।

णिक्खमण न [**निष्क्रमण**] ऊपर देखो ; (सुज्ज १३ ; णाया १, १६ ; पउम २३, ४) ।

णिक्खय वि [**दे. निक्षत**] निहत, मारा हुआ ; (दे ४, ३२ ; पाअ) ।

णिक्खविअ वि [**निक्षपित**] नष्ट किया हुआ, विनाशित ; (अच्चु ३१) ।

णिक्खसरिअ वि [**दे**] मुषित, जो लूट लिया गया हो, अपहृत-सार ; (दे ४, ४१) ।

णिक्खाविअ वि [**दे**] शान्त, उपशम-प्राप्त ; (षड्) ।

णिक्खित्त वि [**निक्षिप्त**] १ न्यस्त, स्थापित ; (पाअ ; पण्ह १, ३) । २ मुक्त, परित्यक्त ; (णाया १, १ ; वव २) । ३ पाक-भाजन में स्थित ; (पण्ह २, १) । °चर वि [°चर] पाक-भाजन में स्थित वस्तु का भिक्षा के लिए खोजने वाला ; (पण्ह २, १ ; औप) ।

णिक्खिप्पमाण नीचे देखो ।

णिक्खिव सक [**नि + क्षिप्**] १ स्थापन करना, स्व-स्थान में रखना । २ परित्याग करना । णिक्खिवइ ; (महा) । **णिक्खिवंत** ; (निचू १६) । कवकृ—**णिक्खिप्पमाण** ; (आचा) । संकृ—**णिक्खिवित्ता, णिक्खिविअ , णिक्खिविउं** ; (कस ; पि ३१६ ; नाट—विक्र १०३ ; वव १) । कृ—**णिक्खिविअव्व, णिक्खे-त्तव्व** ; (पण्ह १, १; विसे ६१७) ।

णिक्खिव पुं [**निक्षेप**] १ स्थापन । २ न्यास-स्थापन, धरो-हर, धन आदि जमा रखना ; (श्रा १४) ।

णिक्खिवण न [**निक्षेपण**] १ स्थापन ; २ डालना ; (सुपा ६२६ ; पडि) ।

णिक्खुड वि [**दे**] अकम्प, स्थिर ; (दे ४, २८) ।

णिक्खुड पुं [**निष्कुट**] पर्वत-विशेष ; (विसे १५३८) ।

णिक्खुत्त न [**दे**] निश्चित, नक्की, चोक्कस, अवश्य ; "पत्ते विणासकाले नासइ बुद्धी नराण निक्खुत्तं" (पउम ५३, १३८); 'वत्ता दाहामि निक्खुत्तं" (पउम १०,८५) ।

णिक्खुरिअ वि [**दे**] अ-दृढ़, अ-स्थिर ; (दे ४, ४०) ।

णिक्खेड पुं [**निष्खेट**] अधमता, नोचता, दुष्टता ; (सुपा २७६) ।

णिक्खेत्तव्व देखो **णिक्खिव**=नि+क्षिप् ।

णिक्खेव पुं [**निक्षेप**] १ न्यास, स्थापन ; (अणु) । २ परित्याग, मोचन ; (आचा २, १, १, १) । ३ धरोहर, धन आदि जमा रखना ; (पउम ६२, ६) ।

णिक्खेवण न [**निक्षेपण**] १ निक्षेप, स्थापन ; (पत्र ६)। २ व्यवस्थापन, नियमन ; (विसे ६१२) ।

णिक्खेवणया, **णिक्खेवणा** स्त्री [**निक्षेपणा**] स्थापना, विन्यास ; (उवा ; कप्प) ।

णिक्खेवय पुं [**निक्षेपक**] निगमन, उपसंहार ; (बृह १)।

णिक्खेविय वि [**निक्षिप्त**] १ न्यस्त, स्थापित ; २ मुक्त, परित्यक्त ; (सण) ।

णिक्खेविय वि [**निक्षेपित**] ऊपर देखो ; (भवि) ।

णिक्खोभ, **णिक्खोह** पुं [**निःक्षोभ**] क्षोभ-रहित, निष्कम्प ; (सम १०६ ; चउ ४७) ।

णिखव्व न [**निखर्व**] संख्या-विशेष, सौ खर्व ; (राज) ।

णिखिल वि [**निखिल**] सर्व, सकल, सब; (अणु; नाट—महावीर ६७) ।

णिगंठ देखो **णिअंठ**; (विसे १३३२) ।

णिगढ पुं [**दे**] घर्म, घाम, गरमी ; (दे ४, २७) ।

णिगद सक [**नि+गद्**] १ कहना । २ पढ़ना, अभ्यास करना । वकृ—**णिगदमाण** ; (विसे ८५०) ।

णिगम पुं [**निगम**] १ प्रकृष्ट बोध ; (विसे २१८७) । २ व्यापार-प्रधान स्थान, जहां व्यापारी, विशेष संख्या में रहते हों एसा शहर आदि ; (पण्ह १,३; औप ; आचा) । ३ व्यापारि-समूह ; (सम ५१) ।

णिगमण न [**निगमन**] अनुमान प्रमाण का एक अवयव, उपसंहार ; (दसनि १) ।

णिगमिअ वि [**दे**] निवासित ; (षड्) ।

णिगर पुं [**निकर**] समूह, राशि, जत्था ; (विपा १, ६ ; उवा) ।

णिगरण न [**निकरण**] कारण, हेतु ; (भग ७,७) ।

णिगरिय वि [**निकरित**] सर्वथा शोधित ; (पण्ह १,४)।

णिगल देखो **णिअल** । २ बेड़ी के आकार का सौवर्ण आभूषण-विशेष, ; (औप) ।

णिगलिय देखो **णिगरिय** ; (जं २) ।

णिगाम न [**निकाम**] अत्यन्त, अतिशय ; (ठा ५, २ ; आ १६) ।

णिगास पुं [**निकर्ष**] परस्पर संयोजन; मिलाना, जोड ; (भग २५, ७) ।

णिगिज्झिय देखो **णिगिण्ह** ।

णिगिट्ठ देखो **णिक्किट्ठ** ; (सुपा १८३) ।

णिगिण वि [**नग्न**] नग्न, नंगा ; (आचा २, २, ३ ; २, ७, १ ; पि १३३) ।

णिगिण्ह सक [**नि+ग्रह्**] १ निग्रह करना, दण्ड करना, शिक्षा करना । २ रोकना । ३ अक. बैठना, स्थिति करना । संकृ—**णिगिज्झिय**, **णिग्घेउं** ; (ठा ७ ; कप्प ; राज) । कृ—**णिगिण्हियव्व** ; (उप पृ २३) ।

णिगुंज अक [**नि+गुञ्ज्**] १ गूँजना, अव्यक्त शब्द करना । २ नीचे नमना । वकृ—**णिगुंजमाण** ; (गाया १, ६—पत्र १५७) ।

णिगुंज देखो **णिउञ्ज**=निकुञ्ज ; (आवम) ।

णिगुण वि [**निगुण**] गुण-रहित ; (पण्ह १, २) ।

णिगुरंब देखो **णिउरंब** ; (पण्ह १, ४) ।

णिगूढ वि [**निगूढ**] १ गुप्त, प्रच्छन्न ; (कप्प) । २ मौनी, मौन रहने वाला ; (राज) ।

णिगूह सक [**नि+गुह्**] छिपाना, गोपन करना । णिगूहइ; (उव ; महा) । णिगूहंति ; (सट्ठि ३२) । संकृ—**णिगूहिऊण** ; (स ३३५) ।

णिगूहण न [**निगूहन**] गोपन, छिपाना ; (पंचा १५) ।

णिगूहिअ वि [**निगूहित**] छिपाया हुआ, गोपित ; (सुपा ५१८) ।

णिगोअ पुं [**निगोद**] अनन्त जीवों का एक साधारण शरीर-विशेष ; (भग ; पण्ण १) । °**जीव** पुं [°**जीव**] निगोद का जीव ; (भग २५, ६ ; कम्म ४, ८५) ।

णिग्ग देखो **णिग्गम**=निर्+गम् । वकृ—**णिग्गंत** ; (भवि) ।

णिग्गंठिद (शौ) वि [**निग्रथित**] गुम्फित, ग्रथित ; (पि ५१२) ।

णिग्गंतुं, **णिग्गंतूण** देखो **णिग्गम**=निर्+गम् ।

णिग्गंथ देखो **णिअंठ** ; (औप ; ओघ ३२८ ; प्रासू १३६ ; ठा ५, ३)।

णिग्गंथ वि [**नैर्ग्रन्थ**] निर्ग्रन्थ-संबन्धी ; (णाया १, १३ ; उवा)।

णिग्गंथी स्त्री [**निर्ग्रन्थी**] जैन साध्वी ; (णाया १, १; १४ ; उवा ; कप्प ; औप)।

णिग्गच्छ, **णिग्गम** } अक [**निर्** + **गम्**] बाहर निकलना। णिग्गच्छइ ; (उवा ; कप्पू)। वकृ—**णिग्गच्छंत, णिग्गच्छमाण, णिग्गममाण** ; (सुपा ३३० ; णाया १, १ ; सुपा ३५६)। संकृ—**णिग्गच्छित्ता, णिग्गंतूण** ; (कप्प ; स १७)। हेकृ—**णिग्गंतुं** ; (उप ७२८ टी)।

णिग्गम पुं [**निर्गम**] १ उत्पत्ति, जन्म ; (विसे १५३६)। २ बाहर निकलना ; (से ६, ३६; उप पृ ३३२)। ३ द्वार, दरवाजा ; (से २, २)। ४ बाहर जाने का रास्ता; (से ८, ३३)। ५ प्रस्थान, प्रयाण ; (बृह १)।

णिग्गमण न [**निर्गमन**] १ निःसरण, बाहर निकलना ; (णाया १, २; सुपा ३३२; भग)। २ पलायन, भाग जाना; ३ अपक्रमण ; (वव १)।

णिग्गमिअ वि [**निर्गमित**] बाहर निकाला हुआ, निस्सारित ; (श्रा १६)।

णिग्गय वि [**निर्गत**] निःसृत, बाहर निकला हुआ ; (विसे १५४० ; उवा)। °**जस** वि [°**यशस्**] जिसका यश बाहर में फैला हो ; (णाया १, १८)। °**मोअ** वि [°**मोद**] जिसकी सुगन्ध खूब फैली हो ; (पाअ)।

णिग्गय वि [**निर्गज**] हाथी-रहित ; (भवि)।

णिग्गह देखो **णिगिण्ह**। कृ—**णिग्गहियव्व** ; (सुपा ५८०)।

णिग्गह पुं [**निग्रह**] १ दण्ड, शिक्षा ; (प्रासू १७० ; आव ६)। २ निरोध, अवरोध, रुकावट ; (भग ७, ६)। ३ वश करना, काबू में रखना, नियमन; (प्रासू ४८)। °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध प्रतिज्ञा-हानि आदि पराजय-स्थान ; (ठा १; सूअ १, १२)।

णिग्गहण न [**निग्रहण**] १ निग्रह, शिक्षा, दण्ड ; (सुर १६, ७)। २ दमन, नियमन, नियन्त्रण ; (प्रासू१३२)।

णिग्गहिय वि [**निगृहीत**] १ जिसका निग्रह किया गया हो वह ; (सं ११५)। २ पराजित, पराभूत ; (आवम)।

णिग्गा स्त्री [**दे**] हरिद्रा, हलदी ; (दे ४, २५)।

णिग्गालिय वि [**निर्गालित**] गलाया हुआ; (उप पृ ८४)।

णिग्गाहि वि [**निग्राहिन्**] निग्रह करने वाला ; (उत्त २५, २)।

णिग्गिण्ण वि [**दे. निर्गीर्ण**] १निर्गत, बाहर निकला हुआ ; (दे ४, ३६ ; पाअ)। २ वान्त, वमन किया हुआ ; (से ५, २६)।

णिग्गिण्ह देखो **णिगिण्ह**। णिग्गिण्हामि; (विसे २४८२)।

णिग्गिलिय वि [**निर्गलित**] वान्त, वमन किया हुआ; (स ३५८)।

णिग्गुंडी स्त्री [**निर्गुण्डी**] अोषधि-विशेष, वनस्पति संभालू ; (पण्ण १)।

णिग्गुण वि [**निर्गुण**] गुण-रहित, गुण-हीन ; (गा२०३ ; उव ; पण्ह १, २ ; उप ७२८ टी)।

णिग्गुण्ण, **णिग्गुन्न** } न [**नैर्गुण्य**] गुण-रहितपन, गुण-हीनता, निगुणत्व ; (वसु ; भत्त १४)।

णिग्गूढ वि [**निर्गूढ**] स्थिर रूप से स्थापित ; (सूअ२,७)।

णिग्गोह पुं [**न्यग्रोध**] वृक्ष-विशेष, बड़ का पेड़ ; (पउम २०, ३६ ; षड्)। °**परिमंडल** न [°**परिमण्डल**] शरीर-संस्थान विशेष, वटाकार शरीर का आकार ; (सम १४६ ; ठा ६)।

णिग्घंट, **णिग्घंटु** } देखो **णिघंटु** ; (कप्प)।

णिग्घट्ट वि [**दे**] कुशल, निपुण, चतुर ; (दे ४, ३४)।

णिग्घण देखो **णिग्घिण** ; (विक्र १०२)।

णिग्घत्तिअ वि [**दे**] क्षिप्त, फेंका हुआ ; (पाअ)।

णिग्घाइय वि [**निर्घातित**] १ आघात-प्राप्त, आहत ; २ व्यापादित, विनाशित ; (णाया १, १३)।

णिग्घाय पुं [**निर्घात**] १ आघात, "रंगिरतुंगतुरंगमखुरग्गनिग्घायविहुरियं धरणिं" (सुपा ३)। २ बिजली का गिरना ; (स ३७५ ; जीव १)। ३ व्यन्तर-कृत गर्जना ; (ठा १०)। ४ विनाश; (सूअ १, १५)।

णिग्घायण न [**निर्घातन**] नाश, विनाश, उच्छेदन ; (पडि ; सुपा ५०३)।

णिग्घिण वि [**निर्घृण**] निर्दय, करुणा-रहित; (गा ४५२; पण्ह १, १ ; सुर २, ६१)।

णिग्घेतुं देखो **णिगिण्ह**।

णिग्घोर वि [**दे**] निर्दय, दया-हीन ; (दे ४, ३७)।

णिग्घोस पुं [**निर्घोष**] महान् अव्यक्त शब्द ; (पण्ह १, १ ; सम १५३)।

णिघंटु पुं [**निघण्टु**] शब्द-कोश, नाम संग्रह; (औप; भग)।

णिघस पुं [**निकष**] १ कसौटी का पत्थर ; (अणु)। २ कसौटी पर की जाती सुवर्ण की रेखा ; (सुपा ३६१)।

णिचय पुं [**निचय**] १ समूह, राशि ; २ उपचय, पुष्टि ; (ओघ ४०७ ; स ३६६ ; आचा ; महा)।

णिचिअ वि [**निचित**] १ व्याप्त, भरपूर ; (अजि ५)। २ निबिड, पुष्ट ; (भग)।

णिचुल पुं [**निचुल**] वृक्ष-विशेष, वंजुल वृक्ष ; (स १११; कुमा)।

णिच्च वि [**नित्य**] १ अ-विनश्वर, शाश्वत ; (आचा ; औप)। २ न. निरन्तर, सर्वदा, हमेशा ; (महा ; प्रासू १४ ; १०१)। °**च्छणिय** वि [°**क्षणिक**] निरन्तर उत्सव वाला ; (गाया १, ४)। °**मंडिया** स्त्री [°**मण्डिता**] जम्बू वृक्ष विशेष ; (इक)। °**वाय** पुं [°**वाद**] पदार्थों को नित्य मानने वाला मत ; "सुहदुक्खसंपओगो न जुज्जइ निच्चवायपक्खम्मि" (सम १८)। °**सो** अ [°**शस्**] सदा, सर्वदा, निरन्तर ; (महा)। °**ालोअ**, °**ालोग**, °**ालोव** पुं [°**ालोक**] १ एक विद्याधर-राजा ; (पउम ६, ५२)। २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। ३ न. नगर-विशेष ; (पउम ६, ५२ ; इक)। ४ वि. सर्वदा प्रकाश वाला ; (कप्प)।

णिच्च देखो **णीय**=नीच; (सम ५५)।

णिच्चक्खु वि [**निश्चक्षुस्**] चक्षु-रहित, नेत्र-हीन, अन्धा ; (पउम ८२, ५१)।

णिच्चट्ट (अप) वि [**गाढ़**] गाढ़, निबिड ; (हे ४, ४२२)।

णिच्चय देखो **णिच्छय** ; (प्रयौ २१ ; पि ३०१)।

णिच्चर देखो **णिच्चर**। णिच्चरइ ; (हे ४, ३ टि)।

णिच्चल सक [**क्षर्**] झरना, टपकना, चूना। णिच्चलइ ; (हे ४, १७३)। प्रयो —णिच्चलाविइ ; (कुमा)।

णिच्चल सक [**मुच्**] दुःख को छोड़ना, दुःख का त्याग करना। णिच्चलइ ; (हे ४,९२ टि)। भूका —णिच्चलीअ; (कुमा)।

णिच्चल वि [**निश्चल**] स्थिर, दृढ़, अचल ; (हे २, २१; ७७)। °**पय** न [°**पद**] मुक्ति, मोक्ष ; (पंचव ; ४)।

णिच्चिंत वि [**निश्चिन्त**] चिन्ता-रहित, वेफीकर ; (विक ४३ ; प्रासू २७ ; सुपा २२५)।

णिच्चिट्ठ वि [**निश्चेष्ट**] चेष्टा-रहित ; (सुपा १४)।

णिच्चिद (शौ) देखो **णिच्छिय** ; (पि ३०१)।

णिच्चुज्जोअ / **णिच्चुज्जोव** वि [**नित्योद्द्योत**] १ सदा प्रकाश-युक्त। २ पुं. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष, ; (ठा २, ३)। ३ न. एक विद्याधर-नगर ; (इक)।

णिच्चुड्ड वि [**दे**] १ उद्वृत्त, बाहर निकला हुआ ; (षड्)। २ निर्दय, दया-हीन ; (पाअ)।

णिच्चुव्विग्ग वि [**नित्योद्विग्न**] सदा खिन्न ; (दस ५, २)।

णिच्चेट्ठ देखो **णिच्चिट्ठ** ; (गाया १, २ ; सुर ३,१७२)।

णिच्चेयण वि [**निश्चेतन**] चेतना-रहित; (महा)।

णिच्चोउया स्त्री [**नित्यर्तुका**] हमेशा रजस्वला रहने वाली स्त्री ; (ठा ५, २)।

णिच्चोरिक्क न [**निश्चौर्य**] १ चोरी का अभाव। २ वि. चोरी-रहित ; (उप १३६ टी)।

णिच्छइय वि [**नैश्चयिक**] १ निश्चय-संबन्धी। २ पुं. निश्चय नय, द्रव्यार्थिक नय, परिणाम-वाद ; (विसे)।

णिच्छउम वि [**निश्छद्मन्**] १ कपट-रहित, माया-वर्जित; (गण ८ ; सुपा ३५०)। २ क्रिवि. बिना कपट ; (सार्ध ५१)।

णिच्छक्क वि [**दे**] १ निर्लज्ज, बेशरम, धृष्ट ; (बृह १ ; वव ५)। २ अवसर को नहीं जानने वाला, अ-समञ्जस ; (राज)।

णिच्छम्म देखो **णिच्छउम** ; (उव ; सार्ध १४५)।

णिच्छय सक [**निर्+चि**] निश्चय करना, निर्णय करना। वकृ—**णिच्छयमाण** ; (उप ७२८ टी)।

णिच्छय पुं [**निश्चय**] १ निश्चय, निर्णय ; (भग ; प्रासू १७७)। २ नियम, अविनाभाव ; (राज)। ३ नय-विशेष, द्रव्यार्थिक नय, वास्तविक पदार्थ को ही मानने वाला मत, परिणाम-वाद ; (बृह ४ ; पंचा १३)। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] अपवाद ; (निचू ५)।

णिच्छल्ल सक [**छिद्**] छेदना, काटना। णिच्छल्लइ ; (हे ४, १२४)।

णिच्छल्लिअ वि [**छिन्न**] काटा हुआ; (कुमा ; स २५८; गउड)।

णिच्छाय वि [**निश्छाय**] कान्ति-रहित, शोभा-हीन ;(पण्ह १, २)।

णिच्छारय वि [**निस्सारक**] सार-रहित ; "निच्छारयछारयभूलीण" (श्रा २७)।

णिच्छिड्ड वि [**निश्छिद्र**] छिद्र-रहित ; (गाया १, ६ ; उप.२११ टी) ।

णिच्छिण्ण वि [**निच्छिन्न**] पृथक्-कृत, अलग किया हुआ, काटा हुआ ; (विसे २७३) ।

णिच्छिद्द देखो **णिच्छिड्ड** ; (स ३५०) ।

णिच्छिन्न देखो **णिच्छिण्ण** ; (पुप्फ ४६३ ; महा) ।

णिच्छिय वि [**निश्चित**] निश्चित, निर्णीत, अ-संदिग्ध ; (गाया १, १ ; महा) ।

णिच्छीर वि [**निःक्षीर**] क्षीर-रहित, दुग्ध-वर्जित; (पण्ण १)।

णिच्छुंड वि [**दे**] निर्दय, करुणा-रहित ; (दे ४, ३२) ।

णिच्छुट्ट वि [**निश्छुटित**] निर्मुक्त, छूटा हुआ ; (सुर ६, ७२) ।

णिच्छुभ सक [**नि + क्षिप्**] १ बाहर निकालना । २ फेंकना । णिच्छुभइ ; (भग) । कर्म—णिच्छुभइ ; (पि ६६) । कवकृ—**णिच्छुब्भमाण** ; (विपा १,२) । संकृ—**णिच्छुभित्ता, णिच्छुभिउं**; (भग ; निर १,१) । प्रयो—णिच्छुभावेइ ; (गाया १, ८) ।

णिच्छुभण न [**निक्षेपण**] निःसारण, निष्काशन ; (निचू १) ।

णिच्छुभाविय वि [**निक्षेपित**] निस्सारित, बाहर निकाला हुआ ; (गाया १, ८) ।

णिच्छुहणा स्त्री [**निक्षेपणा**] बाहर निकलने की आज्ञा, निर्भर्त्सना ; (गाया १, १६ टी—पत्र २००) ।

णिच्छूढ वि [**निक्षिप्त**] १ उद्वृत्त, निर्गत ; (हे ४, २५८) । २ फेंका हुआ, निक्षिप्त ; (प्रामा) । ३ निस्सारित, निष्कासित; (गाया १,८—पत्र १४६; १,१६—पत्र १६६)।

णिच्छूढ न [**निष्ठ्यूत**] थूक, खखार; (विसे ५०१) ।

णिच्छोड सक [**निर्+छोटय्**] १ बाहर निकलने के लिए धमकाना । २ निर्भर्त्सन करना । ३ छुड़वाना । णिच्छोडेइ ; णिच्छोडेंति ; (गाया १, १६ : १८) । णिच्छोडेज्जा ; (उत्रा) । संकृ—**णिच्छोडइत्ता** ; (भग १५) ।

णिच्छोडण न [**निश्छोटन**] निर्भर्त्सन, बाहर निकालने की धमकी ; (उव) ।

णिच्छोडणा स्त्री [**निश्छोटना**] ऊपर देखो ; (गाया १, १६—पत्र १६६) ।

णिच्छोल सक [**निर्+तक्ष्**] छीलना, छाल उतारना । णिच्छोलेइ ; (निचू १) । वकृ—**णिच्छोलंत** ; (निचू १) । संकृ—**णिच्छोलिऊण** ; (महा) ।

णिजंतिय वि [**नियन्त्रित**] नियमित, अंकुशित ; (सुर ३, ४) ।

णिजिण्ण देखो **णिज्जिण्ण** ; (ठा ४, १) ।

णिजुद्ध देखो **णिउद्ध** ; (निच १२) ।

णिजोजण न [**नियोजन**] नियुक्ति, कार्य में लगाना, भार-अर्पण ; (उप १७६ टी) ।

णिजोजिय देखो **णिओइय** ; (उप १७६ टी) ।

णिज्ज वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ ; (दे ४, २५ ; षड्) ।

णिज्जंत देखो **णी**=नी ।

णिज्जण वि [**निर्जन**] १ विजन, मनुष्य-रहित; २ न. एकान्त-स्थान; (गउड) ।

णिज्जप्प वि [**निर्याप्य**] १ निर्वाह-कारक, २ निर्बल, बल को नहीं बढ़ाने वाला ; "अरसविरससीयलुक्खणिज्जप्प-पाणभोयणाइ" (पण्ह २, ५) ।

णिज्जर सक [**निर् + जॄ**] १ क्षय करना, नाश करना । २ कर्म-पुद्गलों को आत्मा से अलग करना । णिज्जरेइ, णिज्जरए, णिज्जरेंति ; (भग ; ठा ४,१) । भूका—णिज्जरिंसु, णिज्ज-रेंसु ; (पि ५७६ ; भग) । भवि—णिज्जरिस्संति ; (ठा ४, १) । वकृ—**णिज्जरमाण** ; (भग १८, ३) । कवकृ—**णिज्जरिज्जमाण** ; (ठा १० ; भग) ।

णिज्जरण न [**निर्जरण**] नीचे देखो ; (औप) ।

णिज्जरणा स्त्री [**निर्जरणा**] १ नाश, क्षय; २ कर्म-क्षय, कर्म-नाश ; ३ जिससे कर्मों का विनाश हो ऐसा तप ; (नव १; सुर १४, ६५) ।

णिज्जरा स्त्री [**निर्जरा**] कर्म-क्षय, कर्म-विनाश; (आचा ; नव २४) ।

णिज्जरिय वि [**निर्जीर्ण**] क्षीण, विनाश-प्राप्त ; (तंदु) ।

णिज्जवग वि [**निर्यापक**] १ निर्वाह करने वाला । २ आरा-धक, आराधन करने वाला ; (ओघ २८ भा) । ३ पुं. जैन मुनि-विशेष, जो शिष्य के भारी प्रायश्चित का भी ऐसी तरह से विभाग कर दे कि जिससे वह उसे निर्वाह सके ; (ठा ८ ; भग २५, ७) ।

णिज्जवणा स्त्री [**निर्यापना**] १ निगमन, दर्शित अर्थ का प्रत्युच्चारण ; (विसे२६३२) । २ हिंसा ; (पण्ह१, १)।

णिज्जवय देखो **णिज्जवग** ; (ओघ २८ भा टी ; द्र ४६)।

णिज्जा अक [**निर् + या**] बाहर निकलना । णिज्जायंति ; (भग) । भवि—णिज्जाइस्सामि ; (औप) । वकृ—**णिज्जायमाण** ; (ठा ५, ३) ।

णिज्जाण न [**निर्याण**] १ बाहर निकलना, निर्गम ; (ठा ५, ३) । २ आवृत्ति-रहित गमन ; (औप) । ३ मोक्ष, मुक्ति ; (आव ४) ।

णिज्जाणिय वि [**नैर्याणिक**] निर्याण-संबन्धी, निर्गम-संबन्धी ; (भग १३, ६ ; निचू ८) ।

णिज्जामग } **णिज्जामय** } पुं [**निर्यामक**] कर्णधार, जहाज का नियन्ता ; (विसे २६५६ ; णाया १, १७ ; औप ; सुर १३, ४८) ।

णिज्जामिय वि [**निर्यामित**] पार पहुँचाया हुआ, तारित; (महा) ।

णिज्जाय पुं [**दे**] उपकार ; (दे ४, ३४) ।

णिज्जाय वि [**निर्यात**] निर्गत, निःसृत ; (वसु ; उप पृ २८६) ।

णिज्जायण न [**निर्यातन**] वैर-शुद्धि, बदला ; (महा) ।

णिज्जायणा स्त्री [**निर्यातना**] ऊपर देखो ; (उप ४३१टी) ।

णिज्जावय देखो **णिज्जामय** ; (भवि) ।

णिज्जास पुं [**निर्यास**] वृक्षों का रस, गोंद ; (सूअ२,१) ।

णिज्जिअ वि [**निर्जित**] जीता हुआ, पराभूत ; (ओघ १८ भा टी ; सुर ६, ३६ ; औप) ।

णिज्जिण सक [**निर्+जि**] जीतना, पराभव करना । णिज्जिणइ ; (भवि) । संकृ—**णिज्जिणिऊण** ; (महा) ।

णिज्जिणिय देखो **णिज्जिअ** ; (सुपा २६) ।

णिज्जिण्ण } **णिज्जिन्न** } वि [**निर्जीर्ण**] नाश-प्राप्त, क्षीण ; (भग ; ठा ४, १) ।

णिज्जीव वि [**निर्जीव**] जीव-रहित, चैतन्य-वर्जित ; (औप ; श्रा २० ; महा) ।

णिज्जुत्त वि [**निर्युक्त**] १ संबद्ध, संयुक्त ; (विसे १०८५ ; ओघ १ भा) । २ खचित, जड़ित ; (औप) । ३ प्ररूपित, प्रतिपादित ; (आवम) ।

णिज्जुत्ति स्त्री [**निर्युक्ति**] व्याख्या, विवरण, टीका ; (विसे ६६५ ; ओघ २ ; सम १०७) ।

णिज्जुद्ध देखो **णिउद्ध** ; (स ४७०) ।

णिज्जूढ वि [**निर्यूढ**] १ निस्सारित, निष्कासित ; (णाया १,१—पत्र ६४) २ अ-मनोज्ञ, अ-सुन्दर; (ओघ ५४८) । ३ उद्धृत, ग्रन्थान्तर से अवतारित ; (दसनि १) ।

णिज्जूह सक [**निर्+यूह्**] १ परित्याग करना । २ रचना, निर्माण करना । कर्म—णिज्जूहिज्जइ ; (पि २२१) । हेकृ—**णिज्जूहित्तए** ; (वव २) । कृ—**णिज्जूहियव्व** ; (कप्प) ।

णिज्जूह पुं [**दे. निर्यूह**] १ नीव्र, छदि, गृहाच्छादन, पाटन; (दे ४, २८ ; स १०६) । २ गवाक्ष, गोख ; "इय जाव चिंतए मंती निज्जूहट्ठिओ" (धम्म ६ टी ; वव १) । ३ द्वार के पास का काष्ठ-विशेष ; (णाया १, १—पत्र १२; पण्ह १, १) । ४ द्वार, दरवाजा ; (सुर २, ८३) ।

णिज्जूहणया } **णिज्जूहणा** } स्त्री [**निर्यूहणा**] १ निस्सारण, बाहर निकालना ; (वव १) । २ परित्याग ; (ठा ४, २) । ३ विरचना, निर्माण ; (विसे ५५१) ।

णिज्जोअ पुं [**दे**] १ प्रकर, राशि ; २ पुष्पों का अवकर ; (दे ४, ३३) ।

णिज्जोअ } **णिज्जोग** } पुं [**दे. निर्योग**] परिकर, सामग्री ; "पायणिज्जोगो" (ओघ ६६८ ; णाया १,१—पत्र ५४) ।

णिज्जोमि पुं [**दे**] रज्जु, रस्सी ; (दे ४, ३१) ।

णिज्झर अक [**क्षि**] क्षीण होना । णिज्झरइ ; (हे ४, २० ; षड्) । वकृ—**णिज्झरंत**; (कुमा ६, १३) ।

णिज्झर वि [**दे**] जीर्ण, पुराना ; (दे ४, २६) ।

णिज्झर पुं [**निर्झर**] झरना, पहाड़ से गिरता पानी का प्रवाह ; (हे १, ६८ ; २, ६०) ।

णिज्झरण न [**निर्झरण**] ऊपर देखो ; (पउम ६४, ५२; सुर ६, ६४ ; सुपा ३५५) ।

णिज्झरणी स्त्री [**निर्झरिणी**] नदी, तरंगिणी ; (कुमा) ।

णिज्झा सक [**नि+ध्यै**] देखना, निरीक्षण करना । णिज्झाइ, णिज्झाअइ ; (हे ४, ६) । वकृ—**णिज्झाअंत, णिज्झाएमाण** ; (मा ४ ; आचा २, ३,१) । संकृ—**णिज्झाइऊण, णिज्झाइत्ता** ; (महा ; आचा) ।

णिज्झा सक [**निर्+ध्यै**] विशेष चिन्तन करना । संकृ—**णिज्झाइत्ता** ; (आचा) ।

णिज्झाइ वि [**निध्यायिन्**] देखने वाला ; (आचा) ।

णिज्झाइत्तु वि [**निध्यातृ**] देखने वाला, निरीक्षक ; (उत्त १६ ; सम १५) ।

णिज्झाइत्तु वि [**निर्ध्यातृ**] अतिशय चिन्तन करने वाला; (ठा ६) ।

णिज्झाइय वि [**निध्यात**] १ दृष्ट, विलोकित ; (स ३५२; धण ४५) । २ न. दर्शन, निरीक्षण ; (महा—पृष्ठ ५८) ।

णिज्झाडिय वि [**निर्घाटित**] विनाशित ; (उप ६४८ टी) ।

णिज्झाय वि [**दे**] निर्दय, दया-रहित ; (दे ४, ३७) ।

णिज्झाय वि [**निध्यात**] दृष्ट, विलोकित ; (सुर ६, १८८ ; सुपा ४४८) ।

णिज्झूर वि [**दे**] जीर्ण, पुराना ; (दे ४, २६) ।

णिज्झोड सक [**छिद्**] छेदना, काटना । णिज्झोडइ ; (हे ४, १२४) ।

णिज्झोडण न [**छेदन**] छेदन, कर्तन ; (कुमा) ।

णिज्झोसइत्तु वि [**निर्झोषयितृ**] क्षय करने वाला, कर्मों का नाश करने वाला ; (आचा) ।

णिट्टंक वि [**दे**] १ टङ्क-च्छिन्न ; २ विषम, अ-समान ; (दे ४, ५०) ।

णिट्टंकिय वि [**निष्टङ्कित**] निश्चित, अवधारित ; (सुपा २६०) ।

णिट्टुअ अक [**क्षर्**] टपकना, चूना । णिट्टुअइ ; (हे ४, १७३) ।

णिट्टुइअ वि [**क्षरित**] टपका हुआ ; (पाअ) ।

णिट्टुह अक [**वि+गल्**] गल जाना, नष्ट होना । णिट्टुहइ ; (हे ४, १७५) ।

णिट्ठ देखो **णिट्ठा**=नि+स्था । निट्ठइ ; (भवि) ।

णिट्ठव } सक [**नि+स्थापय्**] १ समाप्त करना, पूर्ण करना ।
णिट्ठव } २ अन्त करना, खतम करना । ३ विशेष रूप से स्थापन करना, स्थिर करना । भूका—णिट्ठवंसु ; (भग २६, १) । संकृ—**णिट्ठविअ** ; (पिंग) । कृ—**णिट्ठवणिज्ज** ; (उप ५६७ टी) ।

णिट्ठवण न [**निष्ठापन**] १ अन्त करना, समाप्ति । २ वि. नाश-कारक, खतम करने वाला ; (सुपा १६१; गउड) । ३ समाप्त करने वाला ; (जी ५) ।

णिट्ठवय वि [**निष्ठापक**] समाप्त करने वाला ; (आव ६) ।

णिट्ठविअ वि [**निष्ठापित**] १ समाप्त किया हुआ ; (पंचव २) । २ विनाशित ; (स ६, १) ।

णिट्ठा अक [**नि+स्था**] खतम होना, समाप्त होना । णिट्ठाइ ; (विसे ६२७) ।

णिट्ठा स्त्री [**निष्ठा**] १ अन्त, अवसान, समाप्ति ; (विसे २८३३ ; सुपा १३) । २ सद्भाव ; (आचू १) । °**भासि** वि [°**भाषिन्**] निष्ठा-पूर्वक बोलने वाला, निश्चय-पूर्वक भाषण करने वाला ; (आचा) ।

णिट्ठाण न [**निष्ठान**] १ दही वगैरः व्यञ्जन ; (ठा ४, २; पण्ह २, ५) । २ समाप्ति ; (नि १) । °**कहा** स्त्री [°**कथा**] भक्त-कथा विशेष, दही वगैरः व्यञ्जन की बातचीत; (ठा ४, २) ।

णिट्ठावण देखो **णिट्ठवण** ; (सुपा ३५७) ।

णिट्ठिय वि [**निष्ठित**] १ समाप्त किया हुआ, पूर्ण किया हुआ; (उप १०३१ टी; कम्म ४, ७४) । २ नष्ट किया हुआ, विनाशित ; (सुपा ४४६) । ३ स्थिर ; (से ५, ७) । ४ निष्पन्न , सिद्ध ; (आचा २, १, ६) । ५ पुं. मोक्ष, मुक्ति ; (आचा) । °**ट्ठ** वि [°**ार्थ**] कृतकृत्य ; (पउम ३६) । °**ट्ठि** वि [°**ार्थिन्**] मुमुक्षु, मोक्ष का इच्छुक ; (आचा) ।

णिट्ठिय वि [**नैष्ठिक**] निष्ठा-युक्त, निष्ठा वाला ; (पण्ह २, ३) ।

णिट्ठीव पुं [**निष्ठीव**] थूक, मुँह का पानी; (रंभा) ।

णिट्ठुभय वि [**निष्ठीवक**] थूकने वाला ; (पण्ह २, १ ; आप) ।

णिट्ठुर } वि [**निष्ठुर**] निष्ठुर, परुष, कठिन ; (प्राप्र ; हे
णिट्ठुल } १, २५४ ; पाअ ; गउड) ।

णिट्ठुवण न [**निष्ठीवन**] १ थूक, खखार ; (वव १) । २ वि. थूकने वाला; (ठा ५, १) ।

णिट्ठुह अक [**नि+स्तम्भ्**] निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना ; स्तब्ध होना । णिट्ठुहइ; (हे ४, ६७ ; षड्) ।

णिट्ठुह वि [**दे**] स्तब्ध, निश्चेष्ट ; (दे ४, ३३) ।

णिट्ठुहण न [**दे. निष्ठीवन**] थूक, मुँह का पानी, खखार ; (महा) ।

णिट्ठुहावण वि [**निष्टम्भक**] निश्चेष्ट करने वाला, स्तम्भ करने वाला ; (कुमा) ।

णिट्ठुहिअ न [**दे**] थूक, निष्ठीवन, खखार; (दे ४, ४१) ।

णिड पुं [**दे**] पिशाच, राक्षस ; (दे ४, २५) ।

णिडल } न [**ललाट**] भाल, ललाट ; (पि २६०;
डाल } पउम १००, ५७ ; सुपा २८) ।

णिड्ड न [**नीड**] पक्षि-गृह ; (पाअ) ।

णिड्डहण न [**निर्दहन**] जला देना ; (उप ५६३ टी)

णिड्डुह देखो **णिट्टुअ** । णिड्डुहइ ; (कुमा ; षड्) ।

णिणाय पुं [**निनाद**] शब्द, आवाज, ध्वनि ; (गाया १, १ ; पउम २, १०३ ; से ६, ३०) ।

णिण्ण वि [**निम्न**] १ नीचा, अधस्तन ; (उत्त १२ ; उव १०३१ टी)। २ क्रिवि. नीचे, अधः; (हे २, ४२)।

णिण्णक्खु क्रि [**निस्सारयति**] बाहर निकालता है ; "ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु" (आचा २,२,१)।

णिण्णगा स्त्री [**निम्नगा**] नदी, स्रोतस्विनी ; (पण्ण १; पराह २, ४)।

णिण्णट्ठ वि [**निर्नष्ट**] नाश-प्राप्त ; (सुर ६, ६२)।

णिण्णय पुं [**निर्णय**] १ निश्चय, अवधारण ; (हे १, ६३)। २ फैसला ; (सुपा ६६)।

णिण्णया देखो **णिण्णगा** ; (पाअ)।

णिण्णार वि [**निर्नगर**] नगर से निर्गत ; (भग १५)।

णिण्णाला स्त्री [**दे**] चञ्चु, चोंच ; (दे ४, ३६)।

णिण्णास सक [**निर्+नाशय्**] विनाश करना। वकृ— **निन्नासिंत** ; (सुपा ६५४)।

णिण्णास पुं [**निर्णाश**] विनाश ; (भवि)।

णिण्णासिय वि [**निर्णाशित**] विनाशित ; (सुर ३, २३१ ; भवि)।

णिण्णिद्द वि [**निर्निद्र**] निद्रा-रहित ; (गा ६५६)।

णिण्णिमेस वि [**निर्निमेष**] १ निमेष-रहित ; २ चेष्टा-रहित ; ३ अनुपयोगी ; (ठा ५, २)।

णिण्णीअ वि [**निर्णीत**] निश्चित, नक्की किया हुआ ; (श्रा १२)।

णिण्णुण्णअ वि [**निम्नोन्नत**] ऊँचा-नीचा, विषम ; (अभि २०६)।

णिण्णेह वि [**निःस्नेह**] स्नेह-रहित ; (हे ४, ३६७ ; सुर ३, २२२ ; महा)।

णिण्हइया स्त्री [**निह्नविका**] लिपि-विशेष ; (सम ३५)।

णिण्हग, **णिण्हय**, **णिण्हव** पुं [**निह्नव**] १ सत्य का अपलाप करने वाला, मिथ्यावादी ; (ओघ ४० भा ; ठा ७ ; औप)। २ अपलाप ; (सार्ध ४१)।

णिण्हव सक [**नि+ह्नु**] अपलाप करना। णिण्हवइ ; (विसे २२६६ ; हे ४, २३६)। कर्म—णिण्हवीअदि (शौ); (नाट—रत्ना ३६)। वकृ—**णिण्हवंत**, **णिण्हवेमाण** ; (उत्त २११ टी ; सुर ३, २०१)।

णिण्हवग वि [**निह्नावक**] अपलाप करने वाला ; (ओघ ४८ भा)।

णिण्हवण न [**निह्नवन**] अपलाप; (विपा १, २ ; उव)।

णिण्हविद देखो **णिण्हुविद**; (नाट—शकु १२६)।

णिण्हुय वि [**निह्नुत**] अपलपित ; (सुपा २६८)।

णिण्हुव देखो **णिण्हव=नि+ह्नु**। कर्म—णिण्हुविज्जंति ; (पि ३३०)।

णिण्हुविद (शौ) वि [**नि+ह्नुत**] अपलपित; (पि ३३०)।

णितिय देखो **णिच्च**; (आचा ; ठा १०)।

णितुडिअ वि [**नितुडित**] टूटा हुआ, छिन्न ; (अच्चु५४)।

णित्त देखो **णेत्त** ; (पाअ ; सुपा २६१ ; लहुअ १४)।

णित्तम वि [**निस्तमस्**] १ अन्धकार-रहित ; २ अज्ञान-रहित ; (अजि ८)।

णित्तल वि [**दे**] अ-निवृत्त; (भग १५)।

णित्ति (अप) देखो **णीइ** ; (भवि)।

णित्तिंस वि [**निस्त्रिंश**] निर्दय, करुणा-हीन ; (सुपा ३१५)।

णत्तिरडि वि [**दे**] निरन्तर, अ-व्यवहित; (दे ४, ४०)।

णित्तिरडिअ वि [**दे**] त्रुटित, टूटा हुआ ; (दे ४, ४१)।

णित्तुप्प वि [**दे**] स्नेह-रहित, घृत आदि से वर्जित; (बृह १)।

णित्तुल वि [**निस्तुल**] १ निरुपम, असाधारण ; (उप पृ ५३)। २ क्रिवि. असाधारण रूप से ; "अण्णहा नित्तुलं मरसि" (सुपा ३४५)।

णित्तुस वि [**निस्तुष**] तुष-रहित, विशुद्ध ; (पराह २, ४ ; उप १७६ टी)।

णित्तेय वि [**निस्तेजस्**] तेज-रहित ; (णाया १,१)।

णित्थणण न [**निस्तनन**] विजय-सूचक ध्वनि ; (सुर २, २३३)।

णित्थर सक [**निर्+तॄ**] पार करना, पार उतरना। णित्थरेइ ; (सुपा ४४६)। "णित्थरंति खलु कायरावि पायनि-ज्जामयगुणेण महण्णवं" (स १६३)। कवकृ—**णित्थ-रिज्जंत** ; (राज)। कृ—**णित्थरियव्व** ; (णाया १, ३ ; सुपा १२६)।

णित्थरण न [**निस्तरण**] पार-गमन, पार-प्राप्ति ; (ठा ४, ४ ; उप १३४ टी)।

णित्थरिअ देखो **णित्थिण्ण**; (उप १३४ टी)।

णित्थाण वि [**निःस्थान**] स्थान-रहित, स्थान-भ्रष्ट ; (णाया १, १८)।

णित्थाम वि [**निःस्थामन्**] निर्बल, मन्द; (पाअ; गउड; सुपा ४८६)।

णित्थार सक [**निर्+तारय्**] १ पार उतारना, तारना। २ बचाना, छुटकारा देना। णित्थारसु ; (काल)।

णित्थार पुं [**निस्तार**] १ छुटकारा, मुक्ति; २ बचाव, रक्षा; ३ उद्धार; (गाया १, ६ टी—पत्र १६६ ; सुर २, ५१; ७, २०१ ; सुपा २६६)।

णित्थारग वि [**निस्तारक**] पार जाने वाला, पार उतरने वाला ; (स १८३)।

णित्थारणा स्त्री [**निस्तारणा**] पार-प्रापण, पार पहुँचाना; (जं ३)।

णित्थारिय वि [**निस्तारित**] बचाया हुआ, रक्षित, उद्धृत ; (भग ; सुपा ४४६)।

णित्थिण्ण } **णित्थिन्न** } व [**निस्तीर्ण**] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त ; "णित्थिण्णो समुद्दं" (स ३६७)। २ जिसको पार किया हो वह, "णित्थिन्ना आवया गरुई" (सुर ८, ८६)। "नित्थिण्णभवसमुद्दो" (स १३६)।

णिदंस सक [**नि+दर्शय्**] १ उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना। २ दिखाना। णिदंसेइ; (पिंग)। वकृ—**णिदंसंत** ; (सुपा ८६)।

णिदंसण न [**निदर्शन**] १ उदाहरण, दृष्टान्त; (अभि २०३)। २ दिखाना ; (ठा १०)।

णिदंसिअ वि [**निदर्शित**] प्रदर्शित, दिखाया हुआ ; "एवं विचिंतिऊणं निदंसिओ नियकरो मए तीए" (सुर ६, ८२ ; उप ६६७ ; सार्ध ४०)।

णिदरिसण देखो **णिदंसण** ; (उव ; उप ३८४)।

णिदा स्त्री [**दे**] १ वेदना-विशेष, ज्ञान-युक्त वेदना ; (भग १६, ५)। २ जानते हुए भी की जाती प्राणि-हिंसा ; (पिंड)।

णिदाण देखो **णिआण** ; (विपा १, १; अंत १५; नाट—वेणी ३३)।

णिदाया देखो **णिदा** ; (पण्ण ३५)।

णिदाह पुं [**निदाघ**] १ घर्म, घाम, उष्ण । २ ग्रीष्म-काल, गरमी की मौसिम । ३ जेष्ठ मास ; (आव ५)।

णिदाह पुं [**निदाह**] असाधारण दाह; (आव ५)।

णिदेसिअ वि [**निदेशित**] १ प्रदर्शित ; २ उक्त, कथित; (पउम ५, १४५)।

णिद्दंझाण न [**निद्राध्यान**] निद्रा में होता ध्यान, दुर्ध्यान-विशेष; (आउ)।

णिद्दंद वि [**निर्द्वन्द्व**] द्वन्द्व-रहित, क्लेश-वर्जित ; (सुपा ४५५)।

णिद्दंभ वि [**निर्दम्भ**] दम्भ-रहित, कपट-रहित ; (सुपा १४७)।

णिद्दडी (अप) देखो **णिद्दा** = निद्रा ; (पि५६६)।

णिद्दड्ढ वि [**निर्दग्ध**] १ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ ; (सुर १४, २६ ; अंत १५)। २ पुं. नृप-विशेष; (पउम ३२, २२)। ३ रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६)। °**मज्झ** पुं [°**मध्य**] नरकावास-विशेष, एक नरक-प्रदेश ; (ठा ६)। °**ावत्त** पुं [°**ावर्त**] नरकावास-विशेष ; (ठा ६)। °**ावसिट्ठ** पुं [°**ावशिष्ट**] नरक-प्रदेश विशेष ; (ठा ६)।

णिद्दय वि [**निर्दय**] दया-हीन, करुणा-रहित, निष्ठुर ; (पण्ह १, १ ; गउड)।

णिद्दलण न [**निर्दलन**] १ मर्दन, विदारण; (आचा)। २ वि. मर्दन करने वाला ; (वज्जा ४२)।

णिद्दलिअ वि [**निर्दलित**] मर्दित, विदारित ; (पाअ ; सुर ५, २२२ ; सार्ध ७६)।

णिद्दह सक [**निर् + दह्**] जला देना, भस्म करना । निद्दहइ ; (महा ; उव)। णिद्दहेज्जा ; (पि २२२)।

णिद्दा अक [**नि + द्रा**] निद्रा लेना, नींद करना । णिद्दाइ; (षड्)। वकृ—**णिद्दाअंत** ; (से १, ५६)।

णिद्दा स्त्री [**निद्रा**] १ निद्रा, नींद ; (स्वप्न ५६ ; कप्पू)। २ निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें एकाध आवाज देने पर ही आदमी जाग उठे; (कम्म १, ११)। °**अंत** वि [°**वत्**] निद्रा-युक्त, निद्रित ; (से १, ५६)। °**करी** स्त्री [°**करी**] लता-विशेष; (दे ७, ३४)। °**णिद्दा** स्त्री [°**निद्रा**] निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें बड़ी कठिनाई से आदमी उठाया जा सके ; (कम्म १, ११ ; सम १५)। °**ल**, °**लु** वि [°**वत्**] निद्रा वाला; (संक्षि २० ; पि ५६५; प्राप्र)। °**वअ** वि [°**प्रद**] निद्रा देने वाला ; (से ६, ४३)।

णिद्दाअ वि [**निद्रात**] जो नींद में हो ; (से १, ५६)।

णिद्दाअ वि [**निर्दाव**] अग्नि-रहित ; (से १, ५६)।

णिद्दाअ वि [**निर्दाय**] दाय-रहित, पैतृक धन से वर्जित ; (से १, ५६)।

णिद्दाइअ वि [**निद्रित**] निद्रा-युक्त ; (महा)।

णिद्दाणी स्त्री [**निद्राणी**] विद्यादेवी-विशेष; (पउम ७,१४४)।

णिद्दाया देखो **णिदा**; (पण्ण ३५)।

णिद्दारिअ वि [**निर्दारित**] खण्डित, विदारित ; (से ५, ८३ ; १३, ६५)।

णिद्दाव वि [**निर्दाव**] १ दावानल-रहित; २ जंगल-रहित; (से ६, ४३)।

णिद्दिट्ठ वि [**निर्दिष्ट**] १ कथित, उक्त; (भग)। २ प्रतिपादित, निरूपित; (पंचा ३; दंस)।

णिद्दिट्ठु वि [**निर्देष्टृ**] निर्देश करने वाला; (विसे १५०४; विक्र ६४)।

णिद्दिस सक [**निर्+दिश्**] १ उच्चारण करना, कथन करना। २ प्रतिपादन करना, निरूपण करना। निद्दिसइ; (विसे १५२६)। कर्म—णिद्दिसइ; (नाट—मालवि ५३)। हेकृ—निद्दट्ठुं; (पि ५७६)। कृ—णिद्दिस्स, णिद्देस; (विसे १५२३)।

णिद्दुक्ख वि [**निर्दुःख**] दुःख-रहित, सुखी; (सुपा ५३७)।

णिद्दुर पुं [**दे नेत्तर**] देश-विशेष; (इक)।

णिद्देस पुं [**निर्देश**] १ लिङ्ग या अर्थ-मात्र का कथन; (ठा ८—पत्र ४२७)। २ विशेष का अभिधान; "अवि-सेसियमुद्देसो विसेसिओ होइ निद्देसो" (विसे १५६७; १५०३)। ३ निश्चय-पूर्वक कथन; (विसे १५२६)। ४ प्रतिपादन, निरूपण; (उत्त १; यदि)। ५ आज्ञा, हुकुम; (पाअ; दस ६, २ १ ६ वि. जिसको देश-निकाले की आज्ञा हुई हो वह; (पउम ४, ८२)।

णिद्देसग } वि [**निर्देशक**] निर्देश करने वाला; (विसे **णिद्देसय** } १५०८; १५००)।

णिद्दोत्थ न [**निर्दौःस्थ्य**] १ दुःस्थता का अभाव; (वव ४)। २ वि. स्वस्थ, दुःस्थता-रहित; (वव ७)।

णिद्दोस वि [**निर्दोष**] दोष-रहित, दूषण-वर्जित, विशुद्ध; (गउड; सुर १, ७३)।

णिद्ध न [**स्निग्ध**] स्नेह, रस-विशेष; (ठा १; अणु)। २ स्नेह-युक्त, चिकना; (हे २, १०६; उव; बृह)। ३ कान्ति-युक्त, तेजस्वी; (बृह ३)।

णिद्धंत वि [**निर्ध्मात**] अग्नि-संयोग से विशोधित, मल-रहित; (पण्ह १, ४; औप)।

णिद्धंधस वि [**दे**] १ निर्दय, निष्ठुर; (दे ४, ३७; ओघ ४४५; पाअ; पुप्फ ४५४; सट्ठि २६; सुपा २४५; आ ३६)। २ निर्लज्ज, बेशरम; (विवे १२५)।

णिद्धण वि [**निर्धन**] धन-रहित, अकिंचन; (हे २, ६०; गाया १, १८; दे ४, ५; उप ७६ टी; महा)।

णिद्धण्ण वि [**निर्धान्य**] धान्य-रहित; (तंदु)।

णिद्धम वि [**दे**] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहने वाला; (दे ४, ३८)।

णिद्धमण न [ ] खाल, मोरी, पानी जाने का रास्ता; (दे ४, ३६; उप २, १०; ठा १; आवम; तंदु; उव; गाया १, २)।

णिद्धमण न [**निध्मान**] १ तिरस्कार, अवहेलना; (उप पृ ३४६)। २ पुं. यक्ष-विशेष; (आव ४)।

णिद्धमाय वि [**दे**] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहने वाला; (दे ४, ३८)।

णिद्धम्म वि [**दे**] एकमुख-यायी, एक ही तरफ जाने वाला; (दे ४, ३५)।

णिद्धम्म वि [**निर्धर्मन्**] धर्म-रहित, अधर्मी; (आ २७)।

णिद्धय वि [**दे**] देखो **णिद्धम**; (दे ४, ३८)।

णिद्धाइऊण देखो **णिद्धाव**।

णिद्धाडण न [**निर्धाटन**] निस्सारण, निष्कासन, बाहर निकालना; (पण्ह १, १)।

णिद्धाडाविय वि [**निर्धाटित**] अन्य द्वारा बाहर निकलवाया हुआ, अन्य द्वारा निस्सारित; (महा)।

णिद्धाडिय वि [**निर्धाटित**] निस्सारित, निष्कासित; (पाअ; भवि)।

णिद्धारण न [**निर्धारण**] १ गुण या जाति आदि समुदाय से एक भाग का पृथक्करण; २ निश्चय, अवधारण; (विसे ११६८)।

णिद्धाव सक [**निर्+धाव्**] दौड़ना। संकृ—**णिद्धाइऊण**; (महा)

णिद्धाविय वि [**निर्धावित**] दौड़ा हुआ, धावित; (महा)।

णिद्धुण सक [**निर्+धू**] १ विनाश करना। २ दूर करना। संकृ—**निद्धुणे**, **णिधूय**; (दस ७, ५७; सूअ १, ७)।

णिद्धुणिय } वि [**निर्धूत**] १ विनाशित, नष्ट किया हुआ **णिद्धुय** } २ अपनीत; (सुपा ५६६; औप)।

णिद्धूम वि [**निर्धूम**] १ धूम-रहित; (कप्प; पउम ५३, १०)। २ एक तरह का अपलक्षण; (वव २)।

णिद्धूय देखो **णिद्धुय**; (जीव ३)।

णिद्धोअ वि [**निर्धौत**] १ धोया हुआ; (गा ६३६; से १४, १६; स १६१)। २ निर्मल, स्वच्छ; "निद्धोयउदयकखिर—" (वज्जा १५८)।

णिद्धोभास वि [**स्निग्धावभास**] चमकीला, स्निग्धपन से चमकता; (गाया १, १—पत्र ४)।

णिधण न [**निधन**] विनाश, मौत; (नाट—मृच्छ २५४)

णिधत्त न [**निधत्त**] १ कर्मों का एक तरह का अवस्थान; बंधे हुए कर्मों का तप्त सूची-समूह की तरह अवस्थान ; २ वि. निबिड़ भाव को प्राप्त कर्म-पुद्गल; (ठा ४,२) ।
णिधत्ति स्त्री [**निधत्ति**] करण-विशेष,जिससे कर्म-पुद्गल निबिड़रूप से व्यवस्थापित होता है ; (पंच ५) ।
णिधम्म देखो **णिद्धम्म**=निर्धर्मन्; (ओघ३७ भा) ।
णिधाण देखो **णिहाण**; (नाट—महावीर १२०) ।
णिधूय देखो **णिद्धुण** ।
णिपडिय वि [**निपतित**] नीचे गिरा हुआ ; (सण) ।
णिपाइ वि [**निपातिन्**] १ नीचे गिरने वाला । २ सामने गिरने वाला; (सूअ १, ६) ।
णिप्पअंप देखो **णिप्पकंप** ; (से ६,७८) ।
णिप्पएस वि [**निष्प्रदेश**] १ प्रदेश-रहित । २ पुं. परमाणु; (विसे) ।
णिप्पंक वि [**निष्पङ्क**] कर्दम-रहित ; (सम १३७ ; भग) ।
णिप्पंकिय वि [**निष्पङ्किन्**] पङ्क-रहित; (भवि) ।
णिप्पंख सक [**निर्+पक्षय्**] पक्ष-रहित करना, पंख ताड़ना । णिप्पंखेंति ; (विपा १,८) ।
णिप्पंद वि [**निष्पन्द**] चलन-रहित, स्थिर ; (से २,४२) ।
णिप्पकंप वि [**निष्प्रकम्प**] कम्प-रहित, स्थिर ; (सम १०६ ; पण्ह २,४) ।
णिप्पक्ख वि [**निष्पक्ष**] पक्ष-रहित ; (गउड) ।
णिप्पगल वि [**निष्प्रगल**] टपकने वाला,झरने वाला, चूने वाला; (ओघ ३५; ओघ ३४ भा) ।
णिप्पच्चवाय वि [**निष्प्रत्यवाय**] १ प्रत्यवाय-रहित,निर्विघ्न; (ओघ २४ टी) । २ निर्दोष, विशुद्ध,पवित्र; "णिप्पच्चवायचरणा कज्जं साहंति" (सार्ध ११७) ।
णिप्पच्छिम वि [**निष्पश्चिम**] १ अन्तिम, अन्त का; (से १२,२१) ।२ परिशिष्ट, अवशिष्ट, बाकी का; "णिप्पच्छिमाइं असई दुक्खालोआइं महुअपुप्फाइं" (गा १०४) ।
णिप्पट्ठ वि [**दे**] अधिक ; (दे ४,३१)।
णिप्पट्ठ वि [**निःस्पष्ट**] अस्पष्ट,अव्यक्त ।°**पसिणवागरण** वि [°**प्रश्नव्याकरण**] निरुत्तर किया हुआ; (भग १५; णाया १,५ ; उवा) ।
णिप्पट्ठ वि [**निःस्पृष्ट**] नहीं छूआ हुआ ।°**पसिणवागरण** वि [°**प्रश्नव्याकरण**] निरुत्तर किया हुआ; (भग १५) ।
णिप्पडिकम्म वि [**निष्प्रतिकर्मन्**] संस्कार-रहित,परिष्कार-वर्जित, मलिन ; (सम ५७; सुपा ४८५) ।
णिप्पडियार वि [**निष्प्रतिकार**] निरुपाय,प्रतिकार-वर्जित; (पण्ह २,४) ।
णिप्पणिअ वि [**दे**] जल-धौत,पानी से धोया हुआ; (षड्) ।
णिप्पण्ण देखो **णिप्फण्ण**; (गा ६८६) ।
णिप्पण्ण वि [**निष्प्रज्ञ**] बुद्धि-रहित, प्रज्ञा-शून्य ; (उप १७६ टी) ।
णिप्पत्त वि [**निष्पत्र**] पत्र-रहित ; (गा ८८७ ; वव १) ।
णिप्पत्ति, **णिप्पद्दि** } देखो **णिप्फत्ति** ; (पंचा १८; संक्षि ६) ।
णिप्पभ वि [**निष्प्रभ**] निस्तेज,फीका; (महा) ।
णिप्परिग्गह वि [**निष्परिग्रह**] परिग्रह-रहित ; (उत्त १४) ।
णिप्पलिवयण वि [**निष्प्रतिवचन**] निरुत्तर, उत्तर देने में असमर्थ; (सम ६०) ।
णिप्पसर वि [**निष्प्रसर**] प्रसर-रहित,जिसका फैलाव न हो; (पि ३०५) ।
णिप्पह देखो **णिप्पभ** ; (से १०,१२; हे २,५३) ।
णिप्पाण वि [**निष्प्राण**] प्राण-रहित, निर्जीव; (णाया१,२)।
णिप्पाव देखो **णिप्फाव** ; (पि ३०५) ।
णिप्पिच्छ वि [**दे**] १ ऋजु, सरल ; २ दृढ़, मजबूत; (दे ४, ४६) ।
णिप्पिट्ठ वि [**निष्पिष्ट**] पीसा हुआ; (दे ८,२० ; सण) ।
णिप्पिवास वि [**निष्पिपास**] पिपासा-रहित,तृष्णा-वर्जित, निःस्पृह ; (पण्ह १,१; णाया १,१; सुर १,१३) ।
णिप्पिह वि [**निःस्पृह**] स्पृहा-रहित, निर्मम; (हे २,२३; उप ३२० टी) ।
णिप्पीडिअ वि [**निष्पीडित**] दबाया हुआ; (से ५, २५)।
णिप्पीलण न [**निष्पीडन**] दबाव, दबाना; (आचा) ।
णिप्पीलिय देखो **णिप्पीडिअ** । २ निचोड़ा हुआ; "निप्पीलियाइं पोत्ताइं" (स ३३२) ।
णिप्पुंसण न [**निष्पुंसन**] १ पोंछना, मार्जन ; २ अभिमर्दन ; (२, ५३) ।
णिप्पुन्नग वि [**निष्पुण्यक**] १ पुण्य-रहित । २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक कुलपुत्र ; (सुपा ५४५) ।
णिप्पुलाय पुं [**निष्पुलाक**] आगामी चौविसी में होने वाले एक स्वनाम-ख्यात जिन-देव ; (सम १५३) ।
णिप्फंद देखो **णिप्पंद** ; (हे २, २११ ; णाया १, २ ; सुर ३, १७२) ।
णिप्फंस वि [**दे**] निस्त्रिंश, निर्दय ; (षड्) ।

णिप्फज्ज अक [निर्+पद्] नीपजना, सिद्ध होना । णिप्फज्जइ ; (स ६१६)। वकृ—**णिप्फज्जमाण** ; (पण्ह १, ४)।

णिप्फडिअ वि [निस्फटित] १ विशीर्ण ; २ जिसका मिजाज ठिकाने पर न हो ; ३ अङ्कुश-रहित ; (उप १२८ टी)।

णिप्फण्ण वि [निष्पन्न] नीपजा हुआ, बना हुआ, सिद्ध ; (से १,१२ ; महा)।

णिप्फत्ति वि [निष्पत्ति] निष्पादन, सिद्धि ; (उव ; उप २८० टी ; सार्ध १०६)।

णिप्फन्न देखो **णिप्फण्ण** ; (कप्प ; णाया १, १६)।

णिप्फरिस वि [दे] निर्दय, दया-हीन; (दे ४, ३७)।

णिप्फल वि [निष्फल] फल-रहित, निरर्थक ; (से १४, २६ ; गा १३६)।

णिप्फाअ देखो **णिप्फाव** ; (प्राप्र)।

णिप्फाइऊण देखो **णिप्फाय**।

णिप्फाइय वि [निष्पादित] नीपजाया हुआ, बनाया हुआ, सिद्ध किया हुआ ; (विसे ७ टी; उप २११ टी ; महा)।

णिप्फाय सक [निर्+पादय्] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना । संकृ—**णिप्फाइऊण** ; (पंचा ७)।

णिप्फायग वि [निष्पादक] नीपजाने वाला, बनाने वाला, सिद्ध करने वाला ; (विसे ४८३ ; ठा ६ ; उप ८२८)।

णिप्फायण न [निष्पादन] नीपजाना, निर्माण, कृति ; (आव ४)।

णिप्फाव पुं [निष्पाव] धान्य-विशेष, वल्ल ; (हे २, ५३; पण्ण १ ; ठा ५, ३ ; श्रा १८)।

णिप्फिड अक [नि+स्फिट्] बाहर निकलना । वकृ—**णिप्फिडंत** ; (स ५७४)।

णिप्फिडिअ वि [निस्फिटित] निर्गत, बाहर निकला हुआ; (पउम ६, २२७ ; ८०, ६०)।

णिप्फुर पुं [निस्फुर] प्रभा, तेज ; (गउड)।

णिप्फेड पुं [निस्फेट] निर्गमन, बाहर निकलना; (उप पृ ३५२)।

णिप्फेडिय वि [निस्फेटित] १ निस्सारित, निष्कासित ; (सूअ २, २)। २ भगाया हुआ, नसाया हुआ ; (पुप्फ १२५)। ३ अपहृत, छीना हुआ ; (ठा ३, ४)।

णिप्फेस पुं [दे] शब्द-निर्गम, आवाज निकलना ; (दे ४, २६)।

णिप्फेस पुं [निष्पेष] १ पेषण, पीसना ; २ संघर्ष ; (हे २, ५३)।

णिबंध सक [नि+बन्ध्] १ बाँधना । २ करना । निबंधइ; (भग)।

णिबंध पुंन [निबन्ध] १ संबन्ध, संयोग ; (विसे ६६८)। २ आग्रह, हठ ; (महा)। "णिबन्धाणि" (पि ३५८)।

णिबंधण न [निबन्धन] कारण, प्रयोजन, निमित्त ; (पाअ; प्रासु ६६)।

णिबद्ध वि [निबद्ध] १ बँधा हुआ ; (महा)। २ संयुक्त, संबद्ध; (से ६, ४४)।

णिबिड वि [निबिड] सान्द्र, घना, गाढ़ ; (गउड ; कुमा)।

णिबिडिय वि [निबिडित] निबिड़ किया हुआ ; (गउड)।

णिबुक्क [दे] देखो **णिब्बुक्क** ; (पण्ह १,३—पत्र ४६)।

निबुड्ड अक [नि+मस्ज्] निमज्जन करना, डूबना । वकृ—**णिबुड्डिज्जंत, निबुड्डमाण**; (अच्चु ६३ ; उवा)।

णिबुड्ड वि [निमग्न] डूबा हुआ, निमग्न ; (गा ३७ ; सुर ३, ५१ ; ४, ८०)।

णिबुड्डण न [निमज्जन] डूबना, निमज्जन ; (पउम १०, ४३)।

णिबोल देखो **णिबुड्ड**=नि+मस्ज् । वकृ—**णिबोलिज्जमाण**; (राज)।

णिबोह पुं [निबोध] १ प्रकृष्ट बोध, उत्तम ज्ञान ; २ अनेक प्रकार का बोध ; (विसे २१८७)।

णिबोहण न [निबोधन] प्रबोध, समझाना ; (पउम १०२, ६२)।

णिब्बंध पुं [निर्बन्ध] आग्रह ; (गा ६७५ ; महा ; सुर ३, ८)।

णिब्बंधण न [निर्बन्धन] निबन्धन, हेतु, कारण ; "सारीरियवेयणनिब्बंधणं धणं" (काल)।

णिब्बल वि [निर्बल] बल-रहित, दुर्बल ; (आचा)।

णिब्बहिं अ [निर्बहिस्] अत्यन्त बाहर; (ठा ६—पत्र ३५२)।

णिब्बाहिर वि [निर्बाह्य] बाहर का, बाहर गया हुआ; "संजमनिब्बाहिरा जाया" (उव)।

णिब्बुक्क वि [दे] १ निर्मूल, मूल-रहित । २ क्रिवि. मूल से; "णिब्बुक्कछिण्णधय—" (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

णिब्बुड्ड देखो **णिबुड्ड**= निमग्न ; (स ३६० ; गउड)।

णिब्भंछण देखो **णिब्भच्छण** ; (उव ३०३)।

णिब्भंजण न [दे] पक्वान्न के पकाने पर जो शेष घृत रहता है वह ; (पभा ३३) ।
णिब्भंत वि [निर्भ्रान्त] निःसंदेह, संशय-रहित ; (ति१४)।
णिब्भग्ग न [दे] उद्यान, बगीचा ; (दे ४, ३४) ।
णिब्भग्ग वि [निर्भाग्य] भाग्य-रहित, कम-नसीब ; (उप ७२८ टी ; सुपा ३८५) ।
णिब्भच्छ सक [निर् + भर्त्स्] १ तिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना, आक्रोश-पूर्वक अपमान करना । णिब्भच्छेइ, णिब्भच्छेज्जा ; (णाया १, १८ ; उवा) । संकृ— **णिब्भच्छिअ** ; (नाट—मालती १७१) ।
णिब्भच्छण न [निर्भर्त्सन] तिरस्कार, अपमान, परुष वचन से अवहेलना ; (पण्ह १, ३ ; गउड) ।
णिब्भच्छणा स्त्री [निर्भर्त्सना] ऊपर देखो ; (भग १५ ; णाया १, १६) ।
णिब्भच्छिअ वि [निर्भर्त्सित] अपमानित, अवहेलित ; (गा ८६८ ; सुपा ४०७) ।
णिब्भय वि [निर्भय] भय-रहित, निडर ; (णाया १, ४ ; महा) ।
णिब्भर सक [निर् + भृ] भरना, पूर्ण करना । कवकृ— **णिब्भरेंत** ; (से १५, ७४) ।
णिब्भर वि [निर्भर] १ पूर्ण, भरपूर ; (से१०, १७) । २ व्यापक, फैलने वाला ; (कुमा) । ३ क्रिवि. पूर्ण रूप से ; "मेघो य णिब्भरं वरिसइ" (आवम) ।
णिब्भिंद सक [निर् + भिद्] तोड़ना, विदारण करना । कवकृ— **णिब्भिज्जंत, णिब्भिज्जमाण** ; (से १४, २६ ; भग १८, २ ; जीव ३) ।
णिब्भिच्च वि [नर्भीक] भय-रहित, निडर ; (सुपा १४३ ; २४६ ; २७५) ।
णिब्भिज्जंत, **णिब्भिज्जमाण** } देखो **णिब्भिंद** ।
णिब्भिट्ट वि [दे] आक्रान्त ; (भवि) ।
णिब्भिण्ण वि [निर्भिन्न] १ विदारित, तोड़ा हुआ ; (पाअ) । २ विद्ध; (से ५, ३४) ।
णिब्भीअ वि [निर्भीक] भय-रहित ; (से १३, ७०) ।
णिब्भुग्ग वि [दे] भग्न, खण्डित ; (दे ४, ३२) ।
णिब्भेय पुं [निर्भेद] भेदन, विदारण ; (सुपा ३२७) ।
णिब्भेयण न [निर्भेदन] ऊपर देखो ; (सुर २, ६६) ।
णिभ देखो **णिह**=निभ ; (उव ; जं ३) ।
णिभंग पुं [निभङ्ग] भञ्जन, खण्डन, त्रोटन ; (राज)।
णिभाल सक [नि+भालय्] देखना, निरीक्षण करना । णिभालेहि ; (आवम) । वकृ—**णिभालयंत**; (उप पृ ५३)। कवकृ—**णिभालिज्जंत** ; (उप ६८६ टी) ।
णिभालिय वि [निभालित] दृष्ट, निरीक्षित; (उप पृ ५८) ।
णिभिअ, **णिभुअ** } देखो **णिहुअ** ; (पण्ह २, ३ ; गा ८००) ।
णिभेल सक [निर् +भेलय्] बाहर करना । कवकृ—**णिभेल्लंत** ; (पण्ह १,३—पत्र ४५) ।
णिभेलण न [दे] गृह, घर, स्थान ; (कप्प) ।
णिम सक [नि + अस्] स्थापन करना । णिमइ ; (हे४, १९९ ; षड्) । णिमेइ ; (पि ११८) । वकृ—**णिमेंत** ; (से १, ४१) ।
णिमंत सक [नि + मन्त्रय्] निमन्त्रण देना, न्यौता देना । णिमंतेइ ; (महा) । वकृ—**णिमंतेमाण** ; (आचा २, २, ३) । संकृ—**णिमंतिऊण** ; (महा) ।
णिमंतण न [निमन्त्रण] निमन्त्रण, न्यौता ; (उप पृ११३)।
णिमंतणा स्त्री [निमन्त्रणा] ऊपर देखो ; (पंचा १२) ।
णिमंतिय वि [निमन्त्रित] जिसको न्यौता दिया गया हो वह ; (महा) ।
णिमग्ग वि [निमग्न] डूबा हुआ ; (पउम १०६, ४ ; औप)। °**जला** स्त्री [°जला] नदी-विशेष ; (जं ३) ।
णिमज्ज अक [नि + मस्ज्] डूबना, निमज्जन करना । णिमज्जइ ; (पि ११८) । वकृ —**णिमज्जंत** ; (गा ६०६ ; सुपा ६४) ।
णिमज्जग वि [निमज्जक] १ निमज्जन करने वाला । २ पुं. वानप्रस्थाश्रमी तापस-विशेष, जो स्नान के लिए थोड़े समय तक जलाशय में निमग्न रहते हैं ; (औप) ।
णिमज्जण न [निमज्जन] डूबना, जल-प्रवेश ; (सुपा ३५४) ।
णिमाणिअ देखो **णिम्माणिअ**=निर्मानित ; (भवि) ।
णिमिअ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित ; (कुमा ; से १,४२; स ६ ; ७६०; सण) ।
णिमिअ वि [दे] आघ्रात, सूँघा हुआ ; (षड्) ।
णिमिण देखो **णिम्माण** = निर्माण; (कम्म १, २५) ।
णिमित्त न [निमित्त] १ कारण, हेतु ; (प्रासू १०४) । २ कारण-विशेष, सहकारि-कारण ; (सूअ २, २) । ३ शास्त्र-विशेष, भविष्य आदि जानने का एक शास्त्र ; (ओघ १६ भा;

ठा ८)। ४ अतीन्द्रिय ज्ञान में कारण-भूत पदार्थ; (ठा ८)। ५ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष; (ठा ३, ४)। °पिंड पुं [°पिण्ड] भविष्य आदि बतला कर प्राप्त की हुई भिक्षा; (आचा २, १, ६)।

णिमित्तिअ देखो **णेमित्तिअ**; (सुपा ४०३)।

णिमिल्ल अक [नि+मील्] आँख मूँदना, आँख मींचना। णिमिल्लइ; (हे ४, २३२)।

णिमिल्ल वि [निमीलित] जिसने नेत्र बंद किया हो, मुद्रित-नेत्र; (से ६, ६१; ११, ५०)।

णिमिल्लण देखो **णिमीलण**; (राज)।

णिमिस पुं [निमिष] नेत्र-संकोच, अक्षि-मीलन; (गा ३८५; सुपा २१६; गउड)।

णिमीलण न [निमीलन] अक्षि-संकोच; (गा ३६७; सूअ १, ५, १, १२ टी)।

णिमीलिअ वि [निमीलित] मुद्रित-(नेत्र); (गा १३३; से ६, ८६; महा)।

णिमीस न [निमिश्र] एक विद्याधर-नगर; (इक)।

णिमे सक [नि+मा] स्थापन करना। णिमेसि; (गउड)।

णिमेण न [दे] स्थान, जगह; (दे ४, ३७)।

णिमेल स्त्रीन [दे] दन्त-मांस; (दे ४, ३०)। स्त्री—°ला; (दे ४, ३०)।

णिमेस पुं [निमेष] निमीलन, अक्षि-संकोच; (श्रा १६; उव)।

णिमेसि देखो **णिमे**।

णिमेसि वि [निमेषिन्] आख मूँदने वाला; (सुपा ४४)।

णिम्म सक [निर्+मा] बनाना, निर्माण करना। णिम्मइ; (षड्)। णिम्मेइ; (धम्म १२ टी)। कवकृ—**णिम्माअंत**; (नाट—मालती ५४)।

णिम्मइअ वि [निर्मित] रचित, कृत; (गा ५००; ६०० अ)।

णिम्मंथण न [निर्मथन] १ विनाश। २ वि. विनाशक; "तह य पयट्टसु सिग्घं अकज्जनिम्मंथणं तित्थं" (सुपा ७१)।

णिम्मंस वि [निर्मांस] मांस-रहित, शुष्क; (पाया १, १; भग)।

णिम्मंसा स्त्री [दे] देवी-विशेष, चामुण्डा; (दे ४,३५)।

णिम्मंसु वि [दे. निःश्मश्रु] तरुण, जवान, युवा; (दे ४, ३२)।

णिम्मक्खिअ देखो **णिम्मच्छिअ**=निर्मक्षिक; (नाट)।

णिम्मच्छ सक [नि+म्रक्ष्] विलेपन करना। णिम्मच्छइ; (भवि)।

णिम्मच्छण न [निम्रक्षण] विलेपन; (भवि)।

णिम्मच्छर वि [निर्मात्सर्य] मात्सर्य-रहित, ईर्ष्या-शून्य; (उप पृ ८४)।

णिम्मच्छिअ वि [निम्रक्षित] विलिप्त; (भवि)।

णिम्मच्छिअ न [निर्मक्षिक] १ मक्षिका का अभाव। २ विजन, निर्जनता; (अभि ६८)।

णिम्मज्जाय वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित; (दे १, १३३)।

णिम्मज्जिय वि [निर्मार्जित] उपलिप्त; (स ७५)।

णिम्मणुय वि [निर्मनुज] मनुष्य-रहित; (सण)।

णिम्मद्दग वि [निर्मर्दक] १ निरन्तर मर्दन करने वाला। २ पुं. चोरों की एक जाति; (पण्ह १, ३)।

णिम्मद्दिय वि [निर्मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो; (पण्ह १, ३)।

णिम्मम वि [निर्मम] १ ममता-रहित, निःस्पृह; (अच्चु ६६; सुपा १४०)। २ पुं. भारत-वर्ष के एक भावी जिन-देव; (सम १५४)।

णिम्मय वि [दे] गत, गया हुआ; (दे ४, ३४)।

णिम्मल वि [निर्मल] मल-रहित, विशुद्ध; (स्वप्न ७०; प्रासू १३१)। २ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट; (ठा६)।

णिम्मल्ल न [निर्माल्य] देव का उच्छिष्ट द्रव्य; (हे१, ३८; षड)।

णिम्मव सक [निर्+मा] बनाना, रचना, करना। णिम्मवइ; (हे ४, १६; षड्)। कर्म—निम्मविज्जंति; (वज्जा १२२)।

णिम्मव सक [निर्+मापय्] बनवाना, कराना; (ठा ४, ४; कुमा)।

णिम्मवइत्तु वि [निर्मापयितृ] बनवाने वाला; (ठा ४, ४)

णिम्मवण न [निर्माण] रचना, कृति; (उप ६४८ टी; सुपा २३, ६५; ३०५)।

णिम्मवण न [निर्मापण] बनवाना, कराना; (कप्पू)।

णिम्मविअ वि [निर्मित] बनाया हुआ, रचित; (कुमा; गा १०१; सुर १६, ११)।

णिम्मविअ वि [निर्मापित] बनवाया हुआ; (कुमा)।

णिम्मह सक [गम्] १ जाना, गमन करना। २ अक. फैलना। णिम्महइ; (हे ४, १६२)। वकृ—**णिम्महंत, णिम्म-हमाण**; (से ७, ६२; १५, ४३; स १२६)

णिम्मह पुं [**निर्मथ**] १ विनाश ; २ वि. विनाशक ; (भवि) ।
णिम्महण न [**निर्मथन**] १ विनाश ; २ वि विनाश-कारक; (सुपा ७५) १ स्त्री—°णी ; (सुर १६, १८४) ।
णिम्महिअ वि [**गत**] गया हुआ ; (कुमा) ।
णिम्महिअ वि [**निर्मथित**] विनाशित ; (हेका ५०) ।
णिम्माअंत देखो **णिम्म** ।
णिम्माइअ देखो **णिम्माय** ; (पि ५६१) ।
णिम्माण सक [**निर् + मा**] बनाना, करना, रचना । णिम्माणइ; हे ४, १६; षड् ; प्राप्र) ।
णिम्माण न [**निर्माण**] १ रचना, बनावट, कृति ; २ कर्म-विशेष, शरीर के अङ्गोपाङ्ग के निर्माण में नियामक कर्म-विशेष ; (सम ६७) ।
णिम्माण वि [**निर्मान**] मान-रहित ; (से ३, ४५) ।
णिम्माणअ वि [**निर्मायक**] निर्माण-कर्ता, बनाने वाला ; (से ३, ४५) ।
णिम्माणिअ वि [**निर्मित**] रचित, बनाया हुआ ; (कुमा) ।
णिम्माणिअ वि [**निर्मानित**] अपमानित, तिरस्कृत ; (भवि) ।
णिम्माणुस वि [**निर्मानुष**] मनुष्य-रहित; (सुपा ४४४) । स्त्री—°सी ; (महा) ।
णिम्माय वि [**निर्मात**] १) रचित, विहित, कृत ; (उव ; णाया ; वज्जा ३४) । २ निपुण, अभ्यस्त, कुशल ; (ओप; कप्प) । "नाहियसत्थेसु निम्माया परिवाइया" (सुर १२,४२)।
णिम्माव सक [**निर् + मापय्**] बनवाना, करवाना । णिम्मावइ; (सण) । कृ—**णिम्मावित्त**; (सूअ २,१,२२) ।
णिम्माविय वि [**निर्मापित**] बनवाया हुआ, कारित ; (सुपा २६७) ।
णिम्मिअ वि [**निर्मित**] रचित, बनाया हुआ ; (ठा ८ ; प्रासू १२७) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**] जगत् को ईश्वरादि-कृत मानने वाला ; (ठा ८) ।
णिम्मिस्स वि [**निर्मिश्र**] १ मिला हुआ, मिश्रित । °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] अत्यन्त नजदीक का स्वजन, जैसे माता, पिता, भाई, भगिनी, पुत्र और पुत्री ; (वव १०) ।
णिम्मीसुअ वि [**दे**] श्मश्रु-रहित, दाढ़ी-मूँछ वर्जित; (षड्) ।
णिम्मुक्क वि [**निर्मुक्त**] मुक्त किया गया ; (सुपा १७३) ।
णिम्मुक्ख पुं [**निर्मोक्ष**] मुक्ति, छुटकारा ; (विसे २४६८) ।
णिम्मूल वि [**निर्मूल**] मूल-रहित, जिसका मूल काटा गया हो वह ; (सुपा ५३५) ।
णिम्मेर वि [**निर्मर्याद**] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज ; (ठा ३, १ ; ओप ; सुपा ६) ।
णिम्मोअ पुं [**निर्मोक**] कञ्चुक, सर्प की त्वचा ; (हे २, १८२; भत्त ११०; से १, ६०) ।
णिम्मोअणी स्त्री [**निर्मोचनी**] कञ्चुक, निर्मोक ; (उत्त १४, ३४) ।
णिम्मोडण न [**निर्मोटन**] विनाश ; (से ६१) ।
णिम्मोल्ल वि [**निर्मूल्य**] मूल्य-रहित ; (कुमा)।
णिम्मोह वि [**निर्मोह**] मोह-रहित; (कुमा ; श्रा १२) ।
णिरइ स्त्री [**निर्ऋति**] मूला-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३) ।
णिरइयार वि [**निरतिचार**] अतिचार-रहित, दूषण-वर्जित ; (सुपा १००) ।
णिरइसय वि [**निरतिशय**] अत्यन्त, सर्वाधिक ; (काल) ।
णिरईआर देखो **णिरइयार** ; (सुपा १०० ; रयण १८) ।
णिरंकुस वि [**निरङ्कुश**] अंकुश-रहित, स्वच्छन्दी ; (कुमा; श्रा २८) ।
णिरंगण वि [**निरङ्गण**] निर्लेप, लेप-रहित ; (ओप ; उव ; णाया १, ११—पत्र १७१) ।
णिरंगी स्त्री [**दे**] सिर का अवगुण्ठन, घूँघट ; (दे ४, ३१ ; २, २०) ।
णिरंजण वि [**निरञ्जन**] निर्लेप, लेप-रहित ; (स ५८२; कप्प)।
णिरंतय वि [**निरन्तक**] अन्त-रहित ; (उप १०३१ टी)।
णिरंतर वि [**निरन्तर**] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित ; (गउड ; हे १, १४) ।
णिरंतराय वि [**निरन्तराय**] १ निर्विघ्न, निर्बाध ; २ व्यवधान-रहित, सतत ; "धम्मं करेह विमलं च निरन्तरायं" (पउम ४४, ६७) ।
णिरंतरिय वि [**निरन्तरित**] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित ; (जीव ३) ।
णिरंध वि [**नीरन्ध्र**] छिद्र-रहित ; (विक्र ६७) ।
णिरंबर वि [**निरम्बर**] वस्त्र-रहित, नग्न ; (आवम) ।
णिरंभा स्त्री [**निरम्भा**] एक इन्द्राणी, वैरोचन इन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ५, १ ; इक) ।
णिरंस वि [**निरंश**] अंश-रहित, अखण्ड, संपूर्ण ; (विसे) ।
णिरक्क पुं [**दे**] १ चोर, स्तेन ; २ पृष्ठ, पीठ ; ३ वि. स्थित ; (दे ४, ४६) ।
णिरक्किय वि [**निराकृत**] अपाकृत, निरस्त ; (उत्त ६, ५६)।
णिरक्ख सक [**निर् + ईक्ष्**] निरीक्षण करना, देखना ।

णिरक्खइ ; (हे ४, ४१८)। "तोवि ताव दिट्ठीए णिरक्खिज्जा" (महा)।

णिरक्खर वि [**निरक्षर**] मूर्ख, ज्ञान-रहित ; (कप्पू ; वज्जा १५८)।

णिरग्गल वि [**निरर्गल**] १ रुकावट से रहित ; (सुपा १६२ ; ४७१)। २ स्वच्छन्दी, स्वैरी, निरंकुश; (पाम)।

णिरच्चण वि [**निरर्चन**] अर्चन-रहित ; (उव)।

णिरट्ठ, **णिरट्ठग** वि [**निरर्थ, °क**] १ निरर्थक, निष्प्रयोजन, निकम्मा ; (उत्त २०)। २ न. प्रयोजन का अभाव; "णिरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो" (उत्त २,४२)।

णिरण वि [**निर्ऋण**] ऋण-रहित, करज से मुक्त ; (सुपा ५६३ ; ५६६)।

णिरणास देखो **णिरिणास** = नश्। णिरणासइ ; (हे ४,१७८)

णिरणुकंप वि [**निरनुकम्प**] अनुकम्पा-रहित, निर्दय ; (णाया १, २ ; बृह १)।

णिरणुक्कोस वि [**निरनुक्रोश**] निर्दय, दया शून्य ; (णाया १, २ ; प्रासू ६८)।

णिरणुताव वि [**निरनुताप**] पश्चात्ताप-रहित ; (णाया १,२)।

णिरणुतावि वि [**निरनुतापिन्**] पश्चात्ताप-वर्जित ; (पव २७४)।

णिरत्थ वि [**निरस्त**] अपास्त, निराकृत ; (वव ८)।

णिरत्थ, **णरत्थग**, **णिरत्थय** वि [**निरर्थ,°क**] अपार्थक, निकम्मा, निष्प्रयोजन ; (दे ४, १६ ; पउम ६५, ४ ; पण्ह १, २ ; उव ; सं ४१)।

णिरप्प अक [**स्था**] बैठना। णिरप्पइ ; (हे ४, १६)। भूका—णिरप्पीअ ; (कुमा)।

णिरप्प पुं [**दे**] १ पृष्ठ, पीठ; २ वि. उद्वेष्टित; (दे ४,४६)।

णिरभिग्गह वि [**निरभिग्रह**] अभिग्रह-रहित ;(आा ६)।

णिरभिराम वि [**निरभिराम**] असुन्दर, अचारु; (पण्ह १,३)।

णिरभिलप्प वि [**निरभिलाप्य**] अनिर्वचनीय, वाणी से बतलाने को अशक्य ; (विसे ४८८)।

णिरभिस्संग वि [**निरभिष्वङ्ग**] आसक्ति-रहित, निःस्पृह; (पंचा २, ६)।

णिरय पुं [**निरय**] १ नरक, पाप-भोग-स्थान ; (ठा ४, १; आचा ; सुपा १४०)। २ नरक-स्थित जीव, नारक; (ठा १०)। °**पाल** पुं [°**पाल**] देव-विशेष; (ठा ४,१)। °**वलिया** स्त्री [°**वलिका**] १ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष; (निर १, १)। २ नरक-विशेष; (पणण२)। ३ नरक जीवों को दुःख देने वाले देवों की एक जाति, परमाधार्मिक देव ; (पण्ह १, १)।

णिरय वि [**निरत**] आसक्त, तत्पर, तल्लीन; (उप ६७६; उव ; सुपा २६)।

णिरय वि [**नीरजस्**] रजो-रहित, निर्मल ; (भग ; गा ८७८)।

णिरव सक [**बुभुक्ष्**] खाने की इच्छा करना। णिरवइ; (षड्)।

णिरव सक [**आ + क्षिप्**] आक्षेप करना। णिरवइ; (षड्)।

णिरवइक्ख वि [**निरपेक्ष**] अपेक्षा-रहित, निरीह, निःस्पृह; (विसे ७ टी)।

णिरवकंख वि [**निरवकाङ्क्ष**] स्पृहा-रहित, निःस्पृह; (औप)।

णिरवकंखि वि [**निरवकाङ्क्षिन्**] निःस्पृह; (णाया १,६)।

णिरवगाह वि [**निरवगाह**] अवगाहन-रहित; (षड्)।

णिरवग्गह वि [**निरवग्रह**] निरंकुश, स्वच्छन्दी, स्वैरी ; (पाम)।

णिरवच्च वि [**निरपत्य**] अपत्य-रहित, निःसंतान; (भग; सम १५०)।

णिरवज्ज वि [**निरवद्य**] निर्दोष, विशुद्ध; (दस ५, १ ; सुर ८, १८३)।

णिरवणाम देखो **णिरोणाम**; (उव)।

णिरवयक्ख देखो **णिरवइक्ख** ; (णाया १, ६; पउम २, ६३)।

णिरवयव वि [**निरवयव**] अवयव-रहित, निरंश ; (विसे)।

णिरवयास वि [**निरवकाश**] अवकाश-रहित; (गउड)।

णिरवराह वि [**निरपराध**] अपराध-रहित, बेगुनाह ; (महा)।

णिरवराहि वि [**निरपराधिन्**] ऊपर देखो ; (आव ६)।

णिरवलंब वि [**निरवलम्ब**] सहारा रहित; (पण्ह १,३)।

णिरवलाव वि [**निरपलाप**] १ अपलाप-रहित ; २ गुप्त बात को प्रकट नहीं करने वाला, दूसरे को नहीं कहने वाला ; (सम ५७)।

णिरवसंक वि [**निरपशङ्क**] दुःशङ्का-वर्जित ; (भवि)।

णिरवसर वि [**निरवसर**] अवसर-रहित ; (गउड)।

णिरवसाण वि [**निरवसान**] अन्त-रहित ; (गउड)।

णिरवसेस वि [**निरवसेस**] सब, सकल ; (हे १, १४ ; षड् ; से १, ३७)।

णिरवाय वि [**निरपाय**] १ उपद्रव-रहित, विघ्न-वर्जित; २ निर्दोष, विशुद्ध ; (श्रा १६ ; सुपा २७५)।

णिरविक्ख } देखो **णिरवइक्ख**; (श्रा ६ ; उव ; पि
णिरवेक्ख } ३४१ ; से ६, ७५; सुअ १, ६ ; पंचा ४;
णिरवेच्छ } निचू २० ; नाट—चैत २५७) ।
णिरस सक [**निर्+अस्**] अपास्त करना । णिरसइ; (सण)।
णिरसण वि [**निरशन**] आहार-रहित, उपोषित ; (उव ; सुपा १८१) ।
णिरसि वि [**निरसि**] खड्ग-रहित ; (गउड) ।
णिरसिअ बि [**निरस्त**] परास्त, अपास्त ; (दे ५, ५६)।
णिरहंकार वि [**निरहंकार**] गर्व-रहित ; (उव) ।
णिरहारि वि [**निराहारिन्**] आहार-रहित, उपोषित; "हवउ व वक्कलधारी, निरहारी बंभचेरवयधारी " (सुपा २५२)।
णिरहिगरण वि [**निरधिकरण**] अधिकरण-रहित, हिंसा-रहित, निर्दोष ; (पंचा १६) ।
णिरहिगरणि वि [**निरधिकरणिन्**] ऊपर देखो ; (भग १६, १) ।
णिरहिलास वि [**निरभिलाष**] इच्छा-रहित, निरीह; (गउड)।
निराइअ वि [**निरायत**] लम्बा किया हुआ, विस्तारित; (से ४, ५२ ; ७, ३६) ।
णिराउह वि [**निरायुध**] आयुध-वर्जित, निःशस्त्र ; (महा)।
णिराकर } सक [**निरा+कृ**] १ निषेध करना । २ दूर करना,
णिरागर } हटाना । ३ विवाद का फैसला करना । निराकरिमों ; (कुप्र २१५) । संकृ—**णिराकिच्च**; (सुअ १,१, १; १, ३, ३; १, ११) ।
णिरागरण न [**निराकरण**] १ निषेध, प्रतिषेध । २ फैसला, निपटारा ; (स ४०६) ।
णिरागरिय वि [**निराकृत**] हटाया हुआ, दूर किया हुआ; (पउम ४६, ५१ ; ६१, ५६) ।
णिरागस वि [**निराकर्ष**] निर्धन, रङ्क ; (निचू २) ।
णिरागार वि [**निराकार**] १ आकृति-रहित । २ अपवाद-रहित ; (धर्म २) ।
णिराणंद वि [**निरानन्द**] आनन्द-रहित, शोकातुर; (महा) ।
णिराणिउ (अप) अ. निश्चित, नक्की ; (कुमा) ।
णिराणुकंप देखो **णिरणुकंप** ; "णिक्किवणिराणुकंपा आसुरियं भावणं कुणइ" (ठा ४, ४) , "अह सो णिराणुकंपो" (संथा ८४ ; पउम २६, २५) ।
णिराणुवत्ति वि [**निरनुवर्तिन्**] १ अनुसरण नहीं करने वाला ; २ सेवा नहीं करने वाला ; (उव) ।
णिराद वि [**दे**] नष्ट, विनाश-प्राप्त ; (दे ४, ३०) ।

णिराबाध } वि [**निराबाध**] आबाधा-रहित, हरकत-
णिराबाह } रहित ; (अभि १११ ; सुपा२५३ ; ठा १० आव ४) ।
णिरामगंध वि [**निरामगन्ध**] दूषण-रहित, निर्दोष चारित्र वाला ; (आचा ; सुअ १, ६) ।
णिरामय वि [**निरामय**] रोग-रहित, नीरोग ; (सुपा५७५)।
णिरामिस वि [**निरामिष**] आसक्ति हीन, निरीह, निरभिष्वङ्ग; "आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो णिरामिसा" (उत्त १४, ४६) ।
णिराय वि [**दे**] १ ऋजु, सरल ; (दे ४, ५० ; पाअ) । २ प्रकट, खुला ; ३ पुं. रिपु, शत्रु ; (दे ४, ५०) । ४ वि. लम्बा किया हुआ ; (से २, ४०) ।
णिरायंक वि [**निरातङ्क**] आतङ्क-रहित, नीरोग ; (औप) ।
णिरायरिय देखो **णिरागरिय** ; (पउम ६१, ४६) ।
णिरायव वि [**निरातप**] आतप-रहित ; (गउड) ।
णिरायार देखो **णिरागार** ; (पउम ६, ११८) ।
णिरायास वि [**निरायास**] परिश्रम-रहित ; (पण्ह २, ४) ।
णिरारंभ वि [**निरारम्भ**] आरम्भ-वर्जित; (सुपा १४०; गउड)।
णिरालंब वि [**निरालम्ब**] आलम्बन-रहित ; (गा ६५ ; आरा ८) ।
णिरालंबण वि [**निरालम्बन**] आलम्बन-रहित ; (औप; णाया १, ६) ।
णिरालय वि [**निरालय**] स्थान-रहित, एकत्र स्थिति नहीं करने वाला ; (औप) ।
णिरालोय वि [**निरालोक**] प्रकाश-रहित ; (निर१, १) ।
णिरावकंखि वि [**निरवकाङ्क्षिन्**] आकाङ्क्षा-रहित, निःस्पृह; (सुअ १, १०) ।
णिरावयक्ख वि [**निरपेक्ष**] अपेक्षा-रहित, निरीह ; (णाया १, १ ; ६ ; भत्त १४८) ।
णिरावरण वि [**निरावरण**] १ प्रतिबन्धक-रहित ; (औप)। २ नग्न ; (सुर १४, १७८) ।
णिरावराह वि [**निरपराध**] अपराध-रहित ;(सुपा४२३) ।
णिराविक्ख } देखो **णिरावयक्ख** ; "विसएसु णिराविक्खा
णिरावेक्ख } तरंति संसार-कंतारं" (भत्त ४६ ; पउम ६, ८ ; १००, ११) ।
णिरास वि [**निराश**] १ आशा-रहित, हताश ; (पउम ४४, ५६ ; दे ४, ४८ ; संक्षि १६) । २ न. आशा का अभाव; (पण्ह १, ३) ।

णिरास वि [दे] नृशंस, क्रूर ; (षड्) ।
णिरासंस वि [**निराशंस**] आकाङ्क्षा-रहित, निरीह ; (सुपा ६२१) ।
णिरासय वि [**निराश्रय**] निराधार; (वज्जा १५२) ।
णिरासव वि [**निराश्रव**] आश्रव-रहित, कर्म-बन्धन के कारणों से रहित ; (पण्ह २, ३) ।
णिराह वि [दे] निर्दय, निष्करुण ; (दे ४, ३७) ।
णिरिंअ वि [दे] अवशेषित, बाकी रखा हुआ ; (दे ४, २८)।
णिरिंक वि [दे] नत, नमा हुआ ; (दे ४, ३०) ।
णिरिंगी [दे] देखो **णीरंगी** ; (गउड) ।
णिरिंधण वि [**निरिन्धन**] इन्धन-रहित ; (भग ७, १) ।
णिरिक्ख सक [**निर्+ईक्ष्**] देखना, अवलोकन करना । णिरिक्खइ, णिरिक्खए ; (सण ; महा) । वकृ—**णिरिक्खंत, णिरिक्खमाण** ; (सण ; उप २११ टी) । संकृ—**णिरिक्खिऊण** ; (सण) । कृ—**णिरिक्खणिज्ज** ; (कप्पू) ।
णिरिक्खण न [**निरीक्षण**] अवलोकन ; (गा १५०) ।
णिरिक्खणा स्त्री [**निरीक्षणा**] अवलोकन, प्रतिलेखना ; (ओघ ३) ।
णिरिक्खिअ वि [**निरीक्षित**] आलोकित, दृष्ट ; (कप्पू ; पउम ४८, ४८) ।
णिरिग्घ सक [**नि+ली**] १ आश्लेष करना । २ अक. छिपना । णिरिग्घइ ; (हे ४, ५५) ।
णिरिग्घिअ वि [**निलीन**] आश्लिष्ट, आलिङ्गित; (कुमा) ।
णिरिण वि [**निर्ऋण**] ऋण-मुक्त, उऋण ; (ठा ३, १ टी—पत्र १२०) ।
णिरिणास सक [**गम्**] गमन करना । णिरिणासइ ; (हे ४, १६२) ।
णिरिणास सक [**पिष्**] पीसना । णिरिणासइ; (हे४, १८५)।
णिरिणास अक [**नश्**] पलायन करना, भागना । णिरिणासइ; (हे ४, १७८ ; कुमा) ।
णिरिणासिअ वि [**गत**] गया हुआ, यात ; (कुमा) ।
णिरिणासिअ वि [**पिष्ट**] पीसा हुआ ; (कुमा) ।
णिरिणिज्ज सक [**पिष्**] पीसना । णिरिणिज्जइ ; (हे ४, १८५) ।
णिरिणिज्जिअ वि [**पिष्ट**] पीसा हुआ ; (कुमा) ।
णिरिति स्त्री [**निरिति**] एक रात्रि का नाम ; (कप्प) ।
णिरीह वि [**निरीह**] निष्काम, निःस्पृह ; (कुमा ; सुपा ४२१) ।
णिरु (अप) अ. निश्चित, नक्की ; (हे ४, ३४४ ; सुपा ८६; सण ; भवि) ।
णिरुअ देखो **णिरुज** ; (विसे १५८५ ; सुपा ४४६) ।
णिरुईकय वि [**निरुजीकृत**] नीरोग किया गया ; (उप ५९७ टी) ।
णिरुंभ सक [**नि+रुध्**] निरोध करना, रोकना । णिरुंभइ; (औप) । कवकृ—**णिरुंभमाण, णिरुब्भंत**; (स ५३१ ; महा) संकृ—**णिरुंभइत्ता** ; (सूअ १, ४, २) । कृ—**णिरुंभियव्व, णिरुद्धव्व**; (सुपा ४०४; विसे ३०८१) ।
णिरुंभण न [**निरोधन**] अटकाव, रुकावट ; (सूअ १, ५ ; भवि) ।
णिरुक्कंठ वि [**निरुत्कण्ठ**] उत्कण्ठा-रहित, निरुत्साह ; (नाट) ।
णिरुग्घ देखो **णिरिग्घ** । णिरुग्घइ ; (षड्) ।
णिरुच्चार वि [**निरुच्चार**] १ उच्चार—पुरीषोत्सर्ग के लिए लोगों के निर्गमन से वर्जित; (णाया१,८—पत्र १४६) । २ पाखाना जाने से जो रोका गया हो ; (पण्ह १, ३) ।
णिरुच्छव वि [**निरुत्सव**] उत्सव-रहित ; (अभि१८६) ।
णिरुच्छाह वि [**निरुत्साह**] उत्साह-हीन ; (से१४, ३५) ।
णिरुज वि [**निरुज**] १ रोग-रहित । २ न. रोग का अभाव । °**सिख** न [°**शिख**] एक प्रकार की तपश्चर्या ; (पव२७१)।
णिरुज्जम वि [**निरुद्यम**] उद्यम-रहित, आलसी ; (उव ; स ३१० ; सुपा ३८४) ।
णिरुट्ठाइ वि [**निरुत्थायिन्**] नहीं उठने वाला ; (उत्त १ ; ३) ।
निरुत्त वि [**निरुक्त**] १ उक्त, कथित ; (सत ७१) । २ न. निश्चित उक्ति ; (अणु) । ३ व्युत्पत्ति ; (विसे २ ; ६६३) । ४ वेदाङ्ग शास्त्र-विशेष ; (औप) ।
णिरुत्त क्रिवि [दे] १ निश्चित, नक्की, चोक्कस ; (दे ४, ३० ; पउम ३५, ३२ ; कुमा ; सण; भवि), "तहवि हु मरइ निरुत्तं पुरिसो संपत्थिए काले" (पउम११, ६१) । २ वि. निश्चिन्त, चिन्ता-रहित; (कुमा) ।
णिरुत्तत्त वि [**निरुत्तप्त**] विशेष ताप-युक्त, संतप्त ; (उव) ।
णिरुत्तम वि [**निरुत्तम**] अत्यन्त श्रेष्ठ; (काल) ।
णिरुत्तर वि [**निरुत्तर**] उत्तर-रहित किया हुआ, परास्त ; (सुर १२, ६६) ।
णिरुत्ति स्त्री [**निरुक्ति**] व्युत्पत्ति ; (विसे ६६२) ।

णिरुत्तिअ वि [**नैरुक्तिक**] व्युत्पत्ति के अनुसार जिसका अर्थ किया जाय वह शब्द ; (अणु) ।

णिरुद्दर वि [**निरुदर**] छोटा पेट वाला, अनुदर । स्त्री—°रा; (पण्ह १, ४) ।

णिरुद्ध वि [**निरुद्ध**] १ रोका हुआ ; (णाया१, १) । २ आवृत, आच्छादित ; (सुअ १, २, ३) । ३ पुं. मत्स्य की एक जाति ; (कप्प) ।

णिरुद्धव } देखो **णिरुंभ** ।
णिरुब्भंत }

णिरुलि पुंस्त्री [**दे**] कुम्भीर की आकृति वाला एक जन्तु ; (दे ४, २७) ।

णिरुवकिट्ठ देखो **णिरुवक्किट्ठ** ; (भग) ।

णिरुवक्कम वि [**निरुपक्रम**] १ जो कम न किया जा सके वह (आयुष्य); (सुर २, १३२; सुपा २०४) । २ विघ्न-रहित, अ-बाध ; " नियनिरुवक्कमविक्कमअक्कंतसमग्ग-रिउचक्को " (सुपा ३६) ।

णिरुवक्कय वि [**दे**] अ-कृत, नहीं किया हुआ; (दे ४, ४१)।

णिरुवक्किट्ठ वि [**निरुपक्लिष्ट**] क्लेश-वर्जित, दुःख-रहित; (भग २५, ७) ।

णिरुवक्केस वि [**निरुपक्लेश**] शोक आदि क्लेशों से रहित; (ठा ७) ।

णिरुवगारि वि [**निरुपकारिन्**] उपकार को नहीं मानने वाला, प्रत्युपकार नहीं करने वाला; (आवम) ।

णिरुवग्गह वि [**निरुपग्रह**] उपकार नही करने वाला; (ठा ४, ३) ।

णिरुवट्ठाणि वि [**निरुपस्थानिन्**] निरुद्यमी, आलसी; (आचा)।

णिरुवद्दव वि [**निरुपद्रव**] उपद्रव-रहित, आबाधा-वर्जित ; (औप) ।

णिरुवम वि [**निरुपम**] अ-समान, अ-साधारण ; (औप ; महा) ।

णिरुवयरिय वि [**निरुपचरित**] वास्तविक, तथ्य; (णाया १, ५) ।

णिरुवयार वि [**निरुपकार**] उपकार-रहित; (उव) ।

णिरुवलेव वि [**निरुपलेप**] लेप-वर्जित, अ-लिप्त; (कप्प)। "रयणमिव णिरुवलेवा" (पउम १४, ६४) ।

णिरुवसग्ग वि [**निरुपसर्ग**] १ उपसर्ग-रहित, उपद्रव-वर्जित; (सुपा २८७) । २ पुं. मोक्ष, मुक्ति; (पंड ; धर्म २) । ३ न. उपसर्ग का अभाव ; (वव ३) ।

णिरुवहय वि [**निरुपहत**] १ उपघात-रहित, अक्षत ; (भग ७, १) । २ रुकावट से शून्य, अ-प्रतिहत; (सुपा २६८)।

णिरुवहि वि [**निरुपधि**] माया-रहित, निष्कपट; (दसनि १)।

णिरुवार सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना । णिरुवारइ ; (हे ४, २०६) ।

णिरुवारिअ वि [**गृहीत**] उपात्त, गृहीत; (कुमा) ।

णिरुवालंभ वि [**निरुपालम्भ**] उपालम्भ-शून्य ; (गउड) ।

णिरुव्विग्ग वि [**निरुद्विग्न**] उद्वेग-रहित ; (णाया १, १—पत्र ६) ।

णिरुस्साह वि [**निरुत्साह**] उत्साह-हीन; (सुअ १,४,१)।

णिरूव सक [**नि+रूपय्**] १ विचार कर कहना । २ विवेचन करना । ३ देखना । ४ दिखलाना । ५ तलाश करना । निरूवेइ; (महा) । वकृ—**णिरूविंत, निरूवमाण**; (सुर १५, २०५ ; कुप्र ३७५) । संकृ—**णिरूविऊण**; (पंचा ८) । कृ—**णिरूवियव्व**; (पंचा ११) । हेकृ—**निरूविउं** ; (कुप्र २०८) ।

णिरूवण न [**निरूपण**] १ विलोकन, निरीक्षण ; (उप ३३७) । २ वि. दिखलाने वाला । स्त्री—°णी ; (पउम ११, २२) ।

णिरूवणया स्त्री [**निरूपणा**] निरूपण ; (उप ६३०) ।

णिरूवाविअ वि [**निरूपित**] गवेषित, जिस की खोज कराई गई हो वह ; (स ५३६; ७४२) ।

णिरूविअ वि [**निरूपित**] १ देखा हुआ ; (से १३, १३; सुपा ५२३) । २ आलोचना कर कहा हुआ ; ३ विवेचित, प्रतिपादित; (हे २, ४०) । ४ दिखलाया हुआ; ५ गवेषित; (प्रारू) ।

णिरूसुअ वि [**निरुत्सुक**] उत्कण्ठा-रहित ; (गउड) ।

णिरूह पुं [**निरूह**] अनुवासना-विशेष, एक तरह का विरेचन; (णाया १, १३) ।

णिरेय वि [**निरेजस्**] निष्कम्प, स्थिर; (भग २५, ४) ।

णिरेयण वि [**निरेजन**] निश्चल, स्थिर ; (कप्प ; औप)।

णिरोणाम पुं [**निरवनाम**] नम्रता-रहित, गर्वित, उद्धत;(उव)।

णिरोय वि [**नीरोग**] रोग-रहित ; (औप; णाया १, १) ।

णिरोव पुं [**दे**] आदेश, आज्ञा, हुक्म ; (सुपा २२४) ।

णिरोवयार वि [**निरुपकार**] उपकार को नहीं मानने वाला; (ओघ ११३ भा) ।

णिरोवयारि वि [**निरुपकारिन्**] ऊपर देखो ; (उव) ।

णिरोविअ देखो **णिरूविअ** ; (सुपा ४५६ ; महा) ।

णिरोह पुं [**निरोध**] रुकावट, रोकना; (ठा ४, १; औप; पात्र)।
णिरोहग वि [**निरोधक**] रोकने वाला ; (रंभा)।
णिरोहण न [**निरोधन**] रुकावट ; (पण्ह १, १)।
णिलंक पुं [**दे**] पतद्ग्रह, पिकदान, ष्ठीवन-पात्र; (दे ४,३१)।
णिलय पुं [**निलय**] घर, स्थान, आश्रय ; (से २, २ ; गा ४२१ ; पात्र)।
णिलयण न [**निलयन**] वसति, स्थान ; (विसे)।
णिलाड न [**ललाट**] भाल, कपाल ; (कुमा)।
णिलिअ देखो **णिलीअ**। णिलिअइ ; (षड्)।
णिलिंत नीचे देखो।
णिलिज्ज } सक [**नि+ली**] १ आश्लेष करना, भेटना।
णिलीअ } २ दूर करना। ३ अक. छिप जाना। णिलिज्जइ, णिलीअइ ; (हे ४, ५५)। णिलिज्जिज्जा ; (कप्प)। वकृ—**णिलिंत, णिलिज्जमाण; णिलीअंत, णिलीअमाण** (कप्प ; सुअ २, २ ; कुमा ; पि ४७४)।
णिलीइर वि [**निलेतृ**] आश्लेष करने वाला, भेटने वाला ; (कुमा)।
णिलुक्क देखो **णिलीअ**। णिलुक्कइ; (हे ४, ५५ , षड्)। वकृ—**णिलुक्कंत** ; (कुमा)।
णिलुक्क सक [**तुड्**] तोड़ना। णिलुक्कइ; (हे ४, ११६)।
णिलुक्क वि [**दे. निलीन**] १ निलीन, खूब छिपा हुआ, प्रच्छन्न, गुप्त, तिरोहित ; (णाया १, ८ ; से १५, २ ; गा ६४ ; सुर ६, ५ ; उव ; सुपा ६४०)। २ लीन, आसक्त ; (विवे ६०)।
णिलुक्कण न [**निलयन**] छिपना; (कुप्र २५२)।
णिल्लंक [**दे**] देखो **णिलंक** ; (दे ४, ३१)।
णिल्लंछण न [**निर्लाञ्छन**] शरीर के किसी अवयव का छेदन; (उवा ; पडि)।
णिल्लच्छ देखो **णेल्लच्छ** ; (पि ६६)।
णिल्लच्छण वि [**निर्लक्षण**] १ मूर्ख, बेवकूफ; (उप ७६७ टी)। २ अपलक्षण वाला, खराब ; (श्रा १२)।
णिल्लज्ज वि [**निर्लज्ज**] लज्जा-रहित ; (हे २,१९७; २००)
णिल्लज्जिम पुंस्त्री [**निर्लज्जिमन्**] निर्लज्जपन, बेशरमी ; (हे १, ३५)। स्त्री—°**मा** ; (हे १, ३५)।
णिल्लस अक [**उत्+लस्**] उल्लसना, विकसना। णिल्लसइ ; (हे ४, २०२)।
णिल्लसिअ वि [**उल्लसित**] उल्लास-युक्त, विकसित ; (कुमा)।
णिल्लसिअ वि [**दे**] निर्गत, निःसृत, निर्यात; (दे ४,३६)।
णिल्लालिअ वि [**निर्लोलित**] निःसारित, बाहर निकाला हुआ ; (णाया १, १ ; ८—पत्र १३३ ; सुर १२, २३५ ; महा)।
णिल्लुंछ सक [**मुच्**] छोड़ना, त्याग करना। णिल्लुंछइ; (हे ४, ६१)।
णिल्लुंछिअ वि [**मुक्त**] त्यक्त, छोड़ा हुआ ; (कुमा)।
णिल्लुत्त वि [**निर्लुप्त**] विनाशित ; (विक्र २५)।
णिल्लूर सक [**छिद्**] छेदन करना, काटना। णिल्लूरइ : (हे ४, १२४)। णिल्लूरह; (आरा ६८)।
णिल्लूरण न [**छेदन**] छेद, विच्छेद ; (कुमा)।
णिल्लूरिय वि [**छिन्न**] काटा हुआ, विच्छिन्न; "आवत्त-विद्दुमाहयणिल्लूरियदवियसंखउलं" (पउम ८, २५८)।
णिल्लेव वि [**निर्लेप**] लेप-रहित ; (विसे ३०८३)।
णिल्लेवग पुं [**निर्लेपक**] रजक, धोबी ; (आचू ४)।
णिल्लेवण न [**निर्लेपन**] १ मल को दूर करना ; (वव १)। २ वि. निर्लेप, लेप-रहित; (ओघ १९ भा)। °**काल** पुं [°**काल**] वह काल, जिस समय नरक में एक भी नारक जीव न हो ; (भग)।
णिल्लेविअ वि [**निर्लेपित**] १ लेप-रहित किया हुआ ; २ बिलकुल खूट गया हुआ ; (भग)।
णिल्लेहण न [**निर्लेखन**] उद्वर्तन, पोंछना ; (आचा २, ३, २)।
णिल्लोभ } वि [**निर्लोभ**] लोभ-रहित, अ-लुब्ध ; (सुपा
णिल्लोह } ३६१ ; श्रा १२ ; भवि)।
णिव पुं [**नृप**] राजा, नरेश ; (कुमा ; रयण ४७)। °**तणय** वि [°**संबन्धिन्**] राज-संबन्धी, राजकीय ; (सुपा ५३९)।
णिवइ पुं [**नृपति**] ऊपर देखो ; (ठा ३, १ ; पउम ३०, ६)। °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] राज-मार्ग, जाहिर रास्ता ; (पउम ७६, १६)।
णिवइअ वि [**निपतित**] १ नीचे गिरा हुआ ; (णाया १, ७)। २ एक प्रकार का विष ; (ठा ४, ४)।
णिवइत्तु वि [**निपतितृ**] नीचे गिरने वाला ; (ठा ४,४)।
णिवच्छण न [**दे**] अवतारण, उतारना ; (दे ४, ४०)।
णिवज्ज अक [**निर्+पद्**] निष्पन्न होना, नीपजना, बनना। णिवज्जइ ; (षड्)।

णिवज्ज अक [**नि+सद्**] बैठना । णिवज्जसु ; (स ५०६)। वकृ—**णिवज्जमाण**; (स ५०३) । प्रयो—णिवज्जावेइ ; (निर १, १) ।

णिवट्ट अक [**नि+वृत्**] १ निवृत्त होना, लौटना, हटना । २ रुकना । वकृ—**णिवट्टंत** ; (सुपा १६२) ।

णिवट्ट वि [**निवृत्त**] १ निवृत्त, हटा हुआ, प्रवृत्ति-विमुख । २ न. निवृत्ति ; (हे ४, ३३२) ।

णिवट्टण न [**निवर्तन**] १ निवृत्ति, प्रवृत्ति-निरोध । २ जहां रास्ता बन्द होता हो वह स्थान ; (णाया १, २—पत्त ७९) ।

णिवड अक [**नि+पत्**] नीचे पड़ना, नीचे गिरना । णिवडइ ; (उव ; षड् ; महा) । वकृ—**णिवडंत, णिवडमाण** ; (गा ३४ ; सुर ३, १२७) । संकृ—**णिवडिऊण, णिवडिअ** ; (दंस ३ ; महा) ।

णिवडण न [**निपतन**] अधः-पतन ; (राज) ।

णिवडिअ वि [**निपतित**] नीचे गिरा हुआ ; (से १४, ३४ ; गा २३४ ; उप पृ २६) ।

णिवडिर वि [**निपतितृ**] नीचे गिरने वाला ; (सुपा ४९ ; सण) ।

णिवण्ण वि [**निषण्ण**] १ बैठा हुआ ; (महा ; संथा ६५ ; ७३) । २ पुं. कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म आदि किसी प्रकार का ध्यान न किया जाता हो वह कायोत्सर्ग ; (आव ५) । °**णिवण्ण** पुं [°**निषण्ण**] जिसमें आर्त और रौद्र ध्यान किया जाय वह कायोत्सर्ग ; (आव ५) ।

णिवण्णुस्सिय पुं [**निषण्णोत्सृत**] कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान किया जाता हो वह कायोत्सर्ग ; (आव ५) ।

णिवत्त देखो **णिवट्ट**=नि+वृत् । वकृ—**णिवत्तमाण** ; (वव १) । कृ—**णिवत्तणीअ**; (नाट—शकु १०८) । प्रयो—णिवत्तावेमि ; (पि ५५२) ।

णिवत्त देखो **णिवट्ट**=निवृत्त ; (षड् ; कप्प) ।

णिवत्तण देखो **णिवट्टण** ; (महा ; हे २, ३० ; कुमा) ।

णिवत्तय वि [**निवर्तक**] १ वापिस आने वाला, लौटने वाला । २ लौटाने वाला, वापिस करने वाला ; (हे २, ३० ; प्राप्र) ।

णिवत्ति स्त्री [**निवृत्ति**] निवर्तन ; (उव) ।

णिवत्तिअ वि [**निवर्तित**] रोका हुआ, प्रतिषिद्ध ; (स ३६४) ।

णिवत्तिअ वि [**निर्वर्तित**] निष्पादित ; "निवत्तिया सव-पूया" (स ७६३) ।

णिवद्दि देखो **णिवत्ति** ; (संक्षि ६) ।

णिवन्न देखो **णिवण्ण** ; (स ७६०) ।

णिवय देखो **णिवड** । णिवइज्जा, णिवएज्जा ; (कप्प ; ठा ३, ४) । वकृ—**णिवयंत, णिवयमाण**; (उप १४२ टी; सुर ४, ६५ ; कप्प) ।

णिवय पुं [**निपात**] नीचे गिरना, अधः-पतन; (सुर १३, १९७) ।

णिवरुण पुं [**निवरुण**] वृक्ष-विशेष; (उप १०३१ टी) ।

णिवस अक [**नि+वस्**] निवास करना, रहना । णिवसइ ; (महा) । वकृ—**णिवसंत**; (सुपा २२५) । हेकृ—**णिवसिउं** ; (सुपा ४९३) ।

णिवसण न [**निवसन**] वस्त्र, कपड़ा ; (अभि १३९ ; महा ; सुपा २००) ।

णिवसिय वि [**निवसित**] जिसने निवास किया हो वह ; (महा) ।

णिवसिर वि [**निवसितृ**] निवास करने वाला ; (गउड)।

णिवह सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णिवहइ ; (हे ४, १६२) ।

णिवह अक [**नश**] भागना , पलायन करना । णिवहइ ; (हे ४, १७८) ।

णिवह सक [**पिष्**] पीसना । णिवहइ ; (हे ४, १८५ ; षड्) ।

णिवह पुंन [**निवह**] समूह, राशि, जत्था ; (से २, ४२ ; सुर ३, ३५; प्रासू १४४), "अच्छउ ता फलनिवहं" (वज्जा १५२) ।

णिवह पुं [**दे**] समृद्धि, वैभव; (दे ४, २६) ।

णिवहिअ वि [**नष्ट**] नाश-प्राप्त ; (कुमा) ।

णिवहिअ वि [**पिष्ट**] पीसा हुआ; (कुमा) ।

णिवाइ वि [**निपातिन्**] गिरने वाला ; (आचा) ।

णिवाड सक [**नि+पातय्**] नीचे गिराना । निवाडेइ ; (स ६९०) । वकृ— **निवाडयंत**, (स ६८९) । संकृ—**णिवाडेत्ता** ; (जीव ३) ।

णिवाडिय वि [**निपातित**] नीचे गिराया हुआ; (महा)।

णिवाडिर वि [**निपातयितृ**] नीचे गिराने वाला; (सण)।

णिवाण न [**निपान**] कूप या तालाव के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड ; (स ३११)।

णिवेदइत्तअ वि [**निवेदयितृ**] निवेदन करने वाला ; (अभि १३६)।

णिवेस सक [**नि+वेशय्**] स्थापन करना, बैठाना । णिवेसइ, णिवेसेइ ; (सण ; कप्प) । संकृ—**णिवेसइत्ता, णिवेसिउं, णिवेसिऊण, णिवेसित्ता, णिवेसिय** ; (उत्त ३२ ; महा ; सण ; कप्प; महा) । कृ—**णिवेसियव्व**; (सुपा ३६४)

णिवेस पुं [**निवेश**] १ स्थापन, आधान; (ठा ६; उप पृ २३०) २ प्रवेश; (निचू ४) । ३ आवास-स्थान, डेरा; (बृह १)।

णिवेस पुं [**नृपेश**] १ महान् राजा, चक्रवर्ती राजा ; (सुपा ४६३) ।

णिवेसण न [**निवेशन**] १ स्थान, बैठना ; (आचा) । २ एक ही दरवाजे वाले अनेक गृह ; (आव ४) ।

णिवेसाविय वि [**निवेशित**] बैठाया हुआ ; (महा) ।

णिव्व न [**नीव्र**] छदि, पटल-प्रान्त ; (दे ४, ४८ ;पाअ)।

णिव्व न [**दे**] १ ककुद, चिह्न; २ व्याज, बहाना; (दे ४, ४८)।

णिव्वक्कर वि [**दे**] परिहास-रहित, सत्य; (कुप्र १६७)।

णिव्वक्कल वि [**निर्वल्कल**] वल्कल-रहित; (पि ६२)।

णिव्वट्ट देखो **णिव्वत्त**=निर्+वर्तय् । संकृ—**णिव्वट्टित्ता** ; (ठा २,४) ।

णिव्वट्ट (अप) देखो **णिच्चट्ट** ; (हे ४, ४२२ टि) ।

णिव्वट्टग वि [**निर्वर्तक**] बनाने वाला, कर्ता ; (आव४) ।

णिव्वट्टिय वि [**निर्वर्तित**] निष्पादित, बनाया हुआ ; (आचा २, ४, २) ।

णिव्वड सक [**मुच्**] दुःख को छोड़ना । णिव्वडइ ; (षड्) ।

णिव्वड अक [**भू**] १ पृथक् होना, जुदा होना । २ स्पष्ट होना । णिव्वडइ ; (हे ४, ६२) ।

णिव्वड देखो **णिव्वल**=निर्+पद् ; (सुपा १२२) ।

णिव्वडिअ वि [**भूत**] १ पृथग्-भूत, जो जुदा हुआ हो ; (से ६, ८८) । २ स्पष्टीभूत, जो व्यक्त हुआ हो ; (सुर ७, १०४) ।

णिव्वडिअ वि [**निष्पन्न**] सिद्ध, कृत, निर्वृत ; (पाअ); "सुकुलुप्पत्ती य गुणन्नुया य सम्मं इमीए णिव्वडिया" (सुपा १२२) ।

णिव्वढ वि [**दे**] नग्न, नंगा ; (दे ४, २८) ।

णिव्वण वि [**निर्व्रण**] व्रण-रहित, क्षत-वर्जित ; (णाया १, ३ ; औप) ।

णिव्वण्ण सक [**निर्+वर्णय्**] १ श्लाघा करना, प्रशंसा करना । २ देखना । वकृ—**णिव्वण्णंत** ; (से ३, ४४ ; उप १०३१ टी ; महा) ।

णिव्वत्त सक [**निर्+वर्तय्**] बनाना, करना, सिद्ध करना । णिव्वत्तेइ ; (महा) । संकृ—**णिव्वत्तिऊण, णिव्वत्तेऊण**; (महा) ।

णिव्वत्त सक [**निर्+वृत्तय्**] गोल बनाना, वर्तुल करना । कवकृ—**णिव्वत्तिज्जमाण** ; (भग) ।

णिव्वत्त वि [**निर्वृत्त**] निष्पन्न, रचित, निर्मित ; (महा ; औप)।

णिव्वत्तण न [**निर्वर्तन**] निष्पत्ति, रचना, बनावट ; (उप पृ १८६) । °**धिकरणिया**, °**हिगरणिया** स्त्री [°**धिकरणिकी**] शस्त्र बनाने की क्रिया ; (ठा२, १ ; भग३,३)।

णिव्वत्तणया, **णिव्वत्तणा** स्त्री [**निर्वर्तना**] ऊपर देखो ; (पण्ण ३४ ; उत्त ३) ।

णिव्वत्तय वि [**निर्वर्तक**] निष्पन्न करने वाला, बनाने वाला; (विसे ११४२ ; स ५६३ ; हे २, ३०) ।

णिव्वत्ति स्त्री [**निर्वृत्ति**] निष्पत्ति, विनिर्माण ; (विसे ३००२) । देखो **णिव्वित्ति** ।

णिव्वत्तिय वि [**निर्वर्तित**] निष्पादित, बनाया हुआ ; (स ३३६ ; सुर १५, २२१; संक्षि १०) ।

णिव्वत्तिय वि [**निर्वृत्तित**] गोलाकार किया हुआ; (भग)।

णिव्वमिअ वि [**दे**] परिभुक्त ; (दे ४, ३६) ।

णिव्वय अक [**निर्+वृ**] शान्त होना, उपशान्त होना । कृ—**णिव्वयणिज्ज** ; (स ३०१) ।

णिव्वय वि [**निर्वृत**] १ उपशान्त, शम-प्राप्त ; (सूअ १, ४, २) । २ परिणत, परिणाम-प्राप्त ; (दसनि १) ।

णिव्वय वि [**निर्व्रत**] व्रत-रहित, नियम-रहित ; (पउम २, ८८ ; उप २६४ टी) ।

णिव्वयण न [**निर्वचन**] १ निरुक्ति, शब्दार्थ-कथन ; (आवम) । २ उत्तर, जवाब ; (ठा १०) । ३ वि. निरुक्ति करने वाला, निर्वाचक; "जाव दविओवओगो, अपच्छिमविअप्पनिव्वयणो" (सम्म ८) ।

णिव्वयणिज्ज देखो **णिव्वय**=निर्+वृ ।

णिव्वर सक [**कथय्**] दुःख कहना । णिव्वरइ ; (हे ४, ३) । भूका—णिव्वरही ; (कुमा) । कर्म—

"कह तम्मि निव्वरिज्जइ, दुक्खं कंडुज्जुएण हिअएण ।
अद्दाए पडिबिंबं व, जम्मि दुक्खं न संकमइ ; (स ३०६) ।

णिव्वर सक [**छिद्**] छेदन करना, काटना। णिव्वरइ; (हे ४, १२४)।

णिव्वरण न [**कथन**] दुःख-निवेदन; (गा २५५)।

णिव्वरिअ वि [**छिन्न**] काटा हुआ, खण्डित; (कुमा)।

णिव्वल सक [**मुच्**] दुःख को छोड़ना। णिव्वलेइ; (हे ४, ९२)।

णिव्वल अक [**निर्+पद्**] निष्पन्न होना, सिद्ध होना, बनना। णिव्वलइ; (हे ४, १२८)।

णिव्वल देखो **णिच्चल=क्षर्**। णिव्वलइ; (हे ४,१७३टि)।

णिव्वल देखो **णिव्वड=भू**। वकृ—**णिव्वलंत, णिव्वलमाण**; (से १, ३६; ७, ४३)।

णिव्वलिअ वि [**दे**] १ जल-धौत, पानी से धोया हुआ; २ प्रविगणित; ३ विघटित, वियुक्त; (दे ४, ५१)।

णिव्वव सक [**निर्+वापय्**] ठंढा करना, बुझाना। णिव्ववेहि; (स ४५५)। णिव्ववसु; (काल)। वकृ—**णिव्ववंत**; (सुपा २२५)। कृ—**णिव्ववियव्व**; (सुपा २६०)।

णिव्ववण न [**निर्वापण**] १ बुझाना, शान्त करना; २ वि. शान्त करने वाला, ताप को बुझाने वाला; (सुर ३,२३७)।

णिव्वविअ वि [**निर्वापित**] बुझाया हुआ, ठंढा किया हुआ; (गा ३१७; सुर २, ७४)।

णिव्वह अक [**निर्+वह्**] १ निभना, निर्वाह करना, पार पड़ना। २ आजीविका चलाना। णिव्वहइ; (स १०५; वज्जा ६)। कर्म—णिव्वुब्भइ; (पि ५४१)। वकृ—**णिव्वहंत**; (श्रा १२; कुप्र ३३)। कृ—**निव्वहियव्व**; (कुप्र ३७५)।

णिव्वह सक [**उद्+वह्**] १ धारण करना। २ ऊपर उठाना। णिव्वहइ; (षड्)।

णिव्वहण न [**निर्वहण**] निर्वाह; (सुपा १७५; कुप्र ३७५)।

णिव्वहण न [**दे**] विवाह, सादी; (दे ४, ३६)।

णिव्वा अक [**वि+श्रम्**] विश्राम करना। णिव्वाइ; (हे ४, १५९))। वकृ—**णिव्वाअंत**; (से ८, ८)।

णिव्वाघाइम वि [**निर्व्याघातिम**] व्याघात-रहित, स्खलना-रहित; (औप)।

णिव्वाघाय वि [**निर्व्याघात**] १ व्याघात-वर्जित; (णाया १, १; भग; कप्प)। २ न. व्याघात का अभाव; (पण्ण २)।

णिव्वाघाया स्त्री [**निर्व्याघाता**] एक विद्या-देवी; (पउम ७, १४५)।

णिव्वाण न [**निर्वाण**] १ मुक्ति, मोक्ष, निर्वृति; (विसे १९७५)। २ सुख, चैन, शान्ति, दुःख-निवृत्ति; "निउणमणो निव्वाणं सुंदरि निस्संसयं कुणइ" (उप ७२८ टी; पउम ४६, १६)। ३ बुझाना, विध्यापन; (आव ४)। ४ वि. बुझा हुआ; "जह दीवो णिव्वाणो" (विसे १९९१; कुप्र ५१)। ५ पुं. ऐरवत वर्ष में होने वाले एक जिन-देव का नाम; (सम १५४)।

णिव्वाण न [**दे**] दुःख-कथन; (दे ४, ३३)।

णिव्वाणि पुं [**निर्वाणिन्**] भरतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में संजात एक जिन-देव; (पव ७)।

णिव्वाणी स्त्री [**निर्वाणी**] भगवान् श्री शान्तिनाथ की शासन-देवी; (संति १; १०)।

णिव्वाय वि [**निर्वाण**] वीता हुआ, व्यतीत; (से १४, १४)।

णिव्वाय वि [**विश्रान्त**] १ जिसने विश्राम किया हो वह; (कुमा)। २ सुखित, निर्वृत; (से १३, २३)।

णिव्वाय वि [**निर्वात**] वायु-रहित; (णाया १, १; औप)।

णिव्वालिय वि [**भावित**] पृथक् किया हुआ; (से १४, ५४)।

णिव्वाव देखो **णिव्वव**। णिव्वावेमि; (स ३५२)। संकृ—**णिव्वाविऊण**; (निचू १)।

णिव्वाव पुं [**निर्वाप**] घी, शाक आदि का परिमाण; (निचू १)। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] एक तरह की भोजन-कथा; (ठा ४, २)।

णिव्वावइत्तअ (शौ) वि [**निर्वापयितृक**] ठंढा करने वाला; (पि ६००)।

णिव्वावण न [**निर्वापण**] बुझाना, विध्यापन; (दस४)।

णिव्वावणा स्त्री [**निर्वापणा**] बुझाना, ठंढा करना, उपशान्ति; ; (गउड)।

णिव्वाविय वि [**निर्वापित**] ठंढा किया हुआ; (णाया १, १; दस ५, १)।

णिव्वासण न [**निर्वासन**] देश निकाला; (स ५३४; कुप्र ३४३)।

णिव्वासणा स्त्री [**निर्वासना**] ऊपर देखो; (पउम ९६, ४१)।

णिव्वाह पुं [**निर्वाह**] १ निभाना, पार-प्राप्ति। २ आजीविका, जोवन-सामग्री ; "निव्वाहं किंपि दाउं च" (सुपा ४८८)।

णिव्वाहग वि [**निर्वाहक**] निर्वाह करने वाला ; (रंभा)।

णिव्वाहण न [**निर्वाहण**] १ निर्वाह, निभाना ; (सुपा ३६४)। २ निस्तार करना; (राज)।

णिव्वाहिअ वि [**निर्वाहित**] अतिवाहित, बिताया हुआ, गुजारा हुआ ; (से ६, ४२)।

णिव्वाहिअ वि [**निर्व्याधिक**] व्याधि-रहित, नीरोग ; (से ६, ४२)।

णिव्विअप्प देखो **णिव्विगप्प** ; (सम्म ३३)।

णिव्विआर वि [**निर्विकार**] विकार-रहित ; (गा ५०६)।

णिव्विइअ वि [**निर्विकृतिक**] १ घृत आदि विकृति-जनक पदार्थों से रहित ; (औप)। २ प्रत्याख्यान-विशेष, जिसमें घृत आदि विकृतिओं का त्याग किया जाता है; (पव ४ ; पंचा ५)।

णिव्विइगिच्छ वि [**निर्विचिकित्स**] फल-प्राप्ति में शङ्का-रहित ; (कप्प ; धर्म २)।

णिव्विइगिच्छ न [**निर्विचिकित्स्य**] फल-प्राप्ति में संदेह का अभाव ; (उत्त २८)।

णिव्विइगिच्छा स्त्री [**निर्विचिकित्सा**] फल-प्राप्ति में शङ्का का अभाव ; (औप ; पडि)।

णिव्विकप्प } वि [**निर्विकल्प**] १ संदेह-रहित, निःसंशय;
णिव्विगप्प } (कुमा ; गच्छ २)। २ भेद-रहित ; (सम्म ३३)।

णिव्विगिअ देखो **णिव्विइअ** ; (पव २)।

णिव्विग्घ वि [**निर्विघ्न**] विघ्न-रहित, बाधा-वर्जित ; (सुपा १८७ ; सण)।

णिव्विचिंत वि [**निर्विचिन्त**] चिन्ता-रहित, निश्चिन्त ; (सुर ७, १२३)।

णिव्विज्ज अक [**निर्+विद्**] निर्वेद पाना, विरक्त होना। णिव्विज्जेज्जा ; (उव)।

णिव्विट्ठ वि [**दे**] उचित, योग्य; (दे ४, ३४)।

णिव्विट्ठ वि [**निर्विष्ट**] उपभुक्त, आसेवित, परिपालित ; (पाअ ; अणु)। °**काइय** न [°**कायिक**] जैन शास्त्र में प्रतिपादित एक तरह का चारित्र ; (अणु ; इक)।

णिव्विण्ण वि [**निर्विण्ण**] निर्वेद-प्राप्त, खिन्न ; (महा)।

णिव्वित्त वि [**दे**] सो कर उठा हुआ ; (दे ४, ३२)।

णिव्वित्ति देखो **णिव्वत्ति**। २ इन्द्रिय का आकार, द्रव्येन्द्रिय-विशेष ; (विसे २९९४)।

णिव्विदुगुंछ वि [**निर्विजुगुप्स**] घृणा-रहित; (धर्म १)।

णिव्विन्न देखो **णिव्विण्ण** ; (उव)।

णिव्विभाग वि [**निर्विभाग**] विभाग-रहित ; (दंस ५)।

णिव्वियण वि [**निर्विजन**] १ मनुष्य-रहित; २ न. एकान्त स्थल ; (सुर ६, ४२)।

णिव्विर वि [**दे**] विपिट, बैठा हुआ ; "अइणिव्विरनासाए" (गा ७२८ टि)।

णिव्विराम वि [**निर्विराम**] विराम-रहित; (उप पृ १८३)।

णिव्विलंबक्खि वि [**निर्विलम्ब**] विलम्ब-रहित, शीघ्र; (सुपा २५५ ; कुप्र ५२)।

णिव्विवेअ वि [**निर्विवेक**] विवेक-शून्य ; (सुपा ३२३ ; ५०० ; गउड ; सुर ८, १८१)।

णिव्विस सक [**निर्+विश्**] त्याग करना। निव्विसेज्जा ; (कप्प)। वकृ —**णिव्विसंत** ; (राज)।

णिव्विस वि [**निर्विष**] विष-रहित ; (औप)।

णिव्विसंक वि [**निर्विशङ्क**] शङ्का-रहित, निर्भय ; (सुर १२, १६)।

णिव्विसमाण न [**निर्विशमान**] १ चारित्र-विशेष ; (ठा ३, ४)। २ वि. उस चारित्र का पालने वाला ; (ठा६)। °**कप्पट्ठिइ** स्त्री [°**कल्पस्थिति**] चारित्र-विशेष की मर्यादा ; (कस)।

णिव्विसय वि [**निर्विषय**] १ विषयों की अभिलाषा से रहित ; (उत्त १४)। २ अनर्थक, निरर्थक ; (पंचा१२ ; उप ६२५)। ३ देश से बाहर किया हुआ, जिसको देश-निकाले की सजा हुई हो वह; (सुर ६, ३६ ; सुपा५६६)।

णिव्विसिट्ठ वि [**निर्विशिष्ट**] विशेष-रहित, समान, तुल्य ; (उप ५३० टी)।

णिव्विसी स्त्री [**निर्विषी**] एक महौषधि; (ती ५) ।

णिव्विसेस वि [**निर्विशेष**] १ विशेष-रहित, समान, साधारण ; (स २३ ; सम्म ६६ ; प्रासू ६८)। २ अभिन्न, जो जुदा न हो ; (से १५, ६५)।

णिव्वुअ वि [**निवृत**] निर्वृति-प्राप्त ; (स ५६३; कप्प)।

णिव्वुइ स्त्री [**निर्वृति**] १ निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति ; (कुमा ; प्रासू १६४)। २ मन की स्वस्थता, निश्चिन्तता ; (सुर ४, ८६)। ३ सुख, दुःख-निवृत्ति ; (आव ४)। ४ जैन साधुओं की एक शाखा ; (कप्प)। ५ एक राज-कन्या ; (उप ६३६)। °**कर** वि [°**कर**] निर्वृति-जनक ; (पण्ण १)। °**जणय** वि [°**जनक**] निर्वृति का उत्पादक ; (गा ४२१)।

णिव्वुड देखो **णिव्वुअ** ; (कुमा ; आचा)।

णिव्वुड्ड देखो **णिवुड्ड**= नि+मस्ज्। वकृ—**णिव्वुड्डमाण** ; (राज)।

णिव्वुड्ढ वि [**निर्व्यूढ**] निर्वाहित, निभाया हुआ; (गा३२)।

णिव्वुत्त देखो **णिवुत्त** ; (गा १५५)।

णिव्वुत्त देखो **णिव्वत्त**=निर्वृत ; (पिंग)।

णिव्वुत्ति देखो **णिव्वत्ति** ; (गा ८२८)।

णिव्वुद देखो **णिव्वुअ** ; (संक्षि ६)।

णिव्वुब्भ° देखो **णिव्वह**=निर्+वह्।

णिव्वूढ वि [**निर्व्यूढ**] १ जिसका निर्वाह किया गया हो वह; २ कृत, विहित, निर्मित ; (गा २५५; से १, ४६)। ३ जिसने निर्वाह किया हो वह, पार-प्राप्त ; (विवे ४४)। ४ त्यक्त, परिमुक्त; (से ५, ६२)। ५ बाहर निकाला हुआ, निस्सारित; "निव्वूढा य पएसा ततो गाढप्पओसमावन्ना" (उप १३१ टी)।

णिव्वूढ वि [**दे**] १ स्तब्ध; (दे ४, ३३)। २ न. घर का पश्चिम आँगन ; (दे ४, २६)।

णिव्वेअ पुं [**निर्वेद**] १ खेद, विरक्ति ; (कुमा; द्र ६२)। २ संसार की निर्गुणता का अवधारण ; (उप ६८६)।

णिव्वेअण न [**निर्वेदन**] १ खेद, वैराग्य। २ वि. वैराग्य-जनक। स्त्री—°**णी** ; (ठा ४, २)।

णिव्वेढ सक [**निर्+वेष्टय्**] १ नाश करना, क्षय करना। २ घेरना। ३ बाँधना। वकृ—**णिव्वेढंत** ; (विसे २७४५ ; आचा २, ३, २)।

णिव्वेढ सक [**निर्+वेष्टय्**] मजबूताई से वेष्टन करना। णिव्वेढिज्ज, णिव्वेढेज्ज ; (आचा२, ३,२, २ ; पि३०४)।

णिव्वेढ वि [**दे**] नग्न, नंगा ; (दे ४, २८)।

णिव्वेर वि [**निर्वैर**] वैर-रहित ; (अच्चु ५६)।

णिव्वेरिस वि [**दे**] १ निर्दय, निष्करुण ; २ अत्यन्त, अधिक ; (दे ४, ३७)।

णिव्वेल्ल अक [**निर्+वेल्ल्**] फुरना। णिव्वेल्लइ; (पि १०७)।

णिव्वेल्लिअ वि [**निर्वेल्लित**] प्रस्फुरित, स्फूर्ति-युक्त ; (से ११, १६)।

णिव्वेस वि [**निर्द्वेष**] द्वेष-रहित ; (से १५, ६५)।

णिव्वेस पुं [**निर्वेश**] १ लाभ, प्राप्ति ; (ठा ५, २)। २ व्यवस्था ; "कम्माण कप्पिआणं काहो कप्पंतरेसु को णिव्वेसं" (अच्चु १८)।

णिव्वोढव्व वि [**निर्वोढव्य**] निर्वाह-योग्य; (आव ४)।

णिव्वोल सक [**कृ**] क्रोध से होठ को मलिन करना। णिव्वोलइ ; (हे ४, ६६)।

णिव्वोलण न [**करण**] क्रोध से होठ को मलिन करना ; (कुमा)।

णिस° देखो **णिसा** ; (कुमा ; पउम १२, ६५)।

णिस सक [**नि+अस्**] स्थापन करना। णिसेइ ; (औप)।

णिसंत वि [**निशान्त**] १ श्रुत, सुना हुआ ; (णाया १, १; ४; उत्त)। २ अत्यन्त ठंढा; (आवम)। ३ रात्रि का अवसान, प्रभात; "जहा णिसंते तवणच्चिमालो, पभासई केवल-भारहं तु" (दस ६, १, १४)।

णिसंस वि [**नृशंस**] क्रूर, निर्दय ; (सुपा ४०६)।

णिसग्ग पुं [**निसर्ग**] १ स्वभाव, प्रकृति ; (ठा २, १ ; कुप्र १४८)। २ निसर्जन, त्याग; (विसे)।

णिसग्ग वि [**नैसर्ग**] स्वभाव से होने वाला, स्वाभाविक ; (सुपा ६४८)।

णिसग्गिय वि [**नैसर्गिक**] स्वाभाविक ; (सण)।

णिसज्जा स्त्री [**निषद्या**] १ आसन ; (दस ६)। २ उपवेशन, बैठना ; (वव ४)। देखो **णिसिज्जा**।

णिसट्ठ वि [**निसृष्ट**] १ निकाला हुआ, त्यक्त ; (सूअ १, १६)। २ दत्त, दिया हुआ ; (णाया १, १—पत्र ७१)।

णिसट्ठ वि [**दे**] प्रचुर, बहुत ; (आघ ८७)।

णिसट्ठ (अप) वि [**निषण्ण**] बैठा हुआ ; (सण)।

णिसढ पुं [**निषध**] १ हरिवर्ष क्षेत्र से उत्तर में स्थित एक पर्वत ; (ठा २, ३)। २ स्वनाम-ख्यात एक वानर, राम-सैनिक ; (से ४, १०)। ३ बैल, साँढ ; (सुज्ज ४)। ४ बलदेव का एक पुत्र; (निर १, ५; कुप्र ३७२)। ५ देश-विशेष ; ६ निषध देश का राजा ; (कुमा)। ७ स्वर-विशेष ; (हे १, २२६ ; प्राप्र)। °**कूड** न [°**कूट**]

निषध पर्वत का एक शिखर ; (ठा २, ३) । °दह पुं [°द्रह] द्रह-विशेष ; (जं ४) ।

णिसण्ण वि [**निषण्ण**] १ उपविष्ट, स्थित; (गा १०८ ; ११६ ; उत २०) । २ कायोत्सर्ग का एक भेद; (आव ५) ।

णिसण्ण वि [**निःसंज्ञ**] संज्ञा-रहित ; (से ६, ३८) ।

णिसत्त वि [**दे**] संतुष्ट, संतोष-युक्त ; (दे ४, ३०) ।

णिसन्न देखो **णिसण्ण** ; (उत ; णाया १, १) ।

णिसम सक [**नि+शमय्**] सुनना । वकृ—**णिसमेंत**; (आवम) । कवकृ—**णिसम्मंत** ; (गउड) । संकृ—**णिसमिअ, णिसम्म** ; (नाट—वेणी ६८; उवा ; आचा)।

णिसमण न [**निशमन**] श्रवण, आकर्णन ; (हे १, २६९; गउड) ।

णिसर देखो **णिसिर** । कवकृ—**निसरिज्जमाण**; (भग)।

णिसल्ल देखो **णिस्सल्ल** ; (श्रा ४०) ।

णिसढ देखो **णिसढ** ; (इक) ।

णिसह देखो **णिस्सह** ; (षड्) ।

णिसा स्त्री [**निशा**] १ रात्रि, रात ; (कुमा ; प्रासू ५५) २ पीसने का पत्थर,शिलोट; (उवा) । °अर पुं [°**कर**] चन्द्र, चाँद ; (हे १, ८ ; षड्) । °अर पुं [°**चर**] राक्षस; (कप्पू ; से १२, ६९) । °अरेंद पुं [°**चरेन्द्र**] राक्षसों का नायक, राक्षस-पति ; (से ७, ५६) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] चन्द्रमा ; (सुपा ४१६) । °**लोढ** न [°**लोष्ट**] शिला-पुत्रक, पीसने का पत्थर, लोढ़ा ; (उवा) । °**वइ** पुं [°**पति**] चन्द्र, चाँद ; (गउड) । देखो **णिसि°** ।

णिसाण सक [**नि+शाणय्**] शान पर चढ़ाना, पैनाना, तीक्ष्ण करना । संकृ—**निसाणिऊण** ; (स १४३) ।

णिसाण न [**निशाण**] शान, एक प्रकार का पत्थर, जिस पर हथियार तेज किया जाता है ; (गउड ; सुपा २८) ।

णिसाणिय वि [**निशाणित**] शान दिया हुआ, पैनाया हुआ, तीक्ष्ण किया हुआ ; (सुपा ५६) ।

णिसाम देखो **णिसम** । णिसामेइ ; (महा) । वकृ—**णिसामेंत** ; (सुर ३, ७८) । संकृ—**णिसामिऊण, णिसामित्ता** ; (महा ; उत २) ।

णिसाम वि [**निःश्याम**] मालिन्य-रहित, निर्मल ; (से ६, ४७) ।

णिसामण देखो **णिसमण** ; (सुपा २३) ।

णिसामिअ वि [**दे. निशमित**] १ श्रुत, आकर्णित ; (दे ४, २७ ; पाअ ; गा २६) । २ उपशमित, दबाया हुआ; ३ सिमटाया हुआ, संकोचित ; "निसामिओ फणाभोओ" (स ३५८) ।

णिसामिर वि [**निशमयितृ**] सुनने वाला; (सण) ।

णिसाय वि [**दे**] प्रसुप्त ; (दे ४, ३५) ।

णिसाय वि [**निशात**] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण; (पाअ)।

णिसाय पुं [**निषाद**] १ चाण्डाल ; (दे ४, ३५) । २ स्वर-विशेष ; (ठा ७) ।

णिसायंत वि [**निशातान्त**] तीक्ष्ण धार वाला ; (पाअ)।

णिसास सक [**निर्+श्वासय्**] निःश्वास डालना । वकृ—**णिस्सासयंत**; (पउम ६१, ७३) ।

णिसास देखो **णीसास** ; (पिंग) ।

णिसि° देखो **णिसा** ; (हे १, ८ ; ७२ ; षड् ; महा ; सुर १, २७) । °**पालअ** पुं [°**पालक**] छन्द-विशेष ; (पिंग) । °**भत** न [°**भक्त**] रात्रि-भोजन ; (ओघ ७८७) । °**भुत** न [°**भुक्त**] रात्रि-भोजन ; (सुपा ४६१) ।

णिसिअ देखो **णिसीअ** । णिसिअइ ; (सण ; कप्प) । संकृ—णिसिइता ; (कप्प) ।

णिसिअ वि [**निशित**] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण ; (से ५, ४६ ; महा ; हे ४, ३३०) ।

णिसिक्क सक [**नि+क्षिप्**] प्रक्षेप करना, डालना । संकृ—**णिसिक्किय** ; (आचा) ।

णिसिज्जा देखो **णिसज्जा**; (कप्प ; सम ३५ ; ठा ५,१) । ३ उपाश्रय, साधुओं का स्थान; (पंच ४) ।

णिसिज्झमाण देखो **णिसेह**=नि+षिध् ।

णिसिट्ठ वि [**निसृष्ट**] १ बाहर निकाला हुआ; (भास १०) । २ दत्त, प्रदत्त ; (आचा) । ३ अनुज्ञात ; (बृह २) । ४ बनाया हुआ । क्रिवि. "आमग्गहराइं ..पउमा निहा निसिट्ठं उवणमेइ" (उप ६८६ टी) ।

णिसिद्ध वि [**निषिद्ध**] प्रतिषिद्ध, निवारित ; (पंचा १२)।

णिसिर सक [**नि+सृज्**] १ बाहर निकालना । २ देना, त्याग करना । ३ करना । णिसिरइ ; (भास ५ ; भग) । "णिरवराहाण । निसिरंति जे न दंडं, तेवि हु पाविंति निव्वाणं" (सुर १५, २३४) । कर्म—निसिरिज्जइ, निसिरिज्जए ; (विसे ३५७) । वकृ—**निसिरंत** ; (पि २३५) । कवकृ—**निसिरिज्जमाण** ; (पि २३५) । संकृ—**णिसिरित्ता** ; (पि २३५) । प्रया—निसिरावेंति; (पि २३५) ।

णिसिरण न [**निसर्जन**] १ निस्सारण ; (भास २)। २ त्याग ; (णाया १, १६)।

णिसिरणया } स्त्री [**निसर्जना**] १ त्याग, दान ; (आचा **णिसिरणा** } २, १, १०)। २ निस्सारण, निष्कासन ; (भग)।

णिसीअ अक [नि + षद्] बैठना। णिसीअइ ; (भग)। वकृ—**णिसीअंत, णिसीअमाण** ; (भग १३, ६ ; सूअ १, १, २)। संकृ—**णिसीइत्ता** ; (कप्प)। हेकृ—**णिसीइत्तए**; (कस)। कृ—**णिसीइयव्व** ; (णाया १, १ ; भग)।

णिसीअण न [**निषदन**] उपवेशन, बैठना ; (उप २६४ टी; स १८०)।

णिसीआवण न [**निषादन**] बैठाना; (कस ४, २६ टी)।

णिसीढ देखो **णिसीह**=निशीथ ; (हे १, २१६ ; कुमा)।

णिसीदण देखो **णिसीअण** ; (औप)।

णिसीह पुंन [**निशीथ**] १ मध्य रात्रि ; (हे १, २१६ ; कुमा)। २ प्रकाश का अभाव ; (निचू ३)। ३ न. जैन आगम-ग्रन्थ विशेष; (णंदि)।

णिसीह पुं [**नृसिंह**] उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य ; (कुमा)।

णिसीहिआ स्त्री [**निशीथिका**] १ स्वाध्याय-भूमि, अध्ययन-स्थान; (आचा २, २, २)। २ थोड़े समय के लिए उपात्त स्थान ; (भग १४, १०)। ३ आचाराङ्ग सूत्र का एक अध्ययन ; (आचा २, २, २)।

णिसीहिआ स्त्री [**नैषेधिकी**] १ स्वाध्याय-भूमि ; (सम ४०)। २ पाप-क्रिया का त्याग; (पडि ; कुमा)। ३ व्यापारान्तर के निषेध रूप आचार; (ठा १०)। देखो **णिसेहिया**।

णिसीहिणी स्त्री [**निशीथिनी**] रात्रि, रात; (उप पृ १२७)। °**नाह** पुं [**नाथ**] चन्द्रमा ; (कुमा)।

णिसुअ वि [दे. **निश्रुत**] श्रुत, आकर्णित; (दे ४, २७; सुर १, १६६ ; २, २२६; महा ; पाअ)।

णिसुंद पुं [**निसुन्द**] रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २६)।

णिसुंभ सक [नि + **शुम्भ्**] मार डालना, व्यापादान करना। कवकृ—**णिसुंभंत, णिसुब्भंत** ; (से ५, ६६; १४, ३ ; पि ५३५)।

णिसुंभ पुं [**निशुम्भ**] १ स्वनाम-ख्यात एक राजा, एक प्रतिवासुदेव; (पउम ५, १५६ ; पव २११)। २ दैत्य-विशेष; (पिंग)।

णिसुंभण न [**निशुम्भन**] १ मर्दन, व्यापादन, विनाश: २ वि. मार डालने वाला ; (सूअ १, ५, १)।

णिसुंभा स्त्री [**निशुम्भा**] स्वनाम-ख्यात एक इन्द्राणी ; (णाया २ ; इक)।

णिसुंभिअ वि [**निशुम्भित**] निपातित, व्यापादित; (सुपा ४६०)।

णिसुट्ट } वि [**दे**] ऊपर देखो; (हे ४, २५८; से १०,३६)। **णिसुट्टिअ** }

णिसुड देखो **णिसुढ**=नम्। णिसुडइ ; (षड्)।

णिसुड्ड देखो **णिसुट्ट** ; (हे ४, २५८ टि)।

णिसुढ अक [**नम्**] भार से आक्रान्त होकर नीचे नमना। णिसुढइ ; (हे ४, १५८)।

णिसुढ सक [**नि + शुम्भ्**] मारना, मार कर गिराना। कवकृ—**णिसुढिज्जंत**; (से ३, ५७)।

णिसुढिअ वि [**नत**] भार से नमा हुआ; (पाअ)।

णिसुढिअ वि [**निशुम्भित**) निपातित ; (से १२, ६१)।

णिसुढिर वि [**नम्र**] भार से नमा हुआ ; (कुमा)।

णिसुण सक [**नि + श्रु**] सुनना, श्रवण करना। निसुणइ, णिसुणेइ, णिसुणेमि ; (सण ; महा ; सट्ठि १२८)। वकृ—**निसुणंत, निसुणमाण**; (सुपा १०६ ; सुर १२, १७४)। कवकृ—**निसुणिज्जंत**; (सुपा ४५; रयण ६४)। संकृ—**निसुणिउं, निसुणिऊण**; **निसुणिऊणं** ; (सुपा १४ ; महा; पि ५८५)।

णिसुद्ध वि [**दे**] १ पातित, गिराया हुआ ; (दे ४, ३६ ; पाअ ; से ५, ६८)।

णिसुब्भंत देखो **णिसुंभ**=नि + शुम्भ्।

णिसूग देखो **णिस्सूग** ; (सुपा ३७०)।

णिसूड देखो **णिसुढ**=नि+शुभ्। हेकृ—**निसूडिउं** ; (सुपा ३६६)।

णिसेज्जा देखो **णिसज्जा** ; (उव ; पव ६७)।

णिसेणि देखो **णिस्सेणि** ; (सुर १३, १६०)।

णिसेय पुं [**निषेक**] १ कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष; (ठा ६)। २ सेचन, सींचना ; "ता संपइ जिणवरबिंबदंसणामयनिसेएण पीणिज्जउ नियदिट्ठि" (सुपा २६६)। "कुणंति काआवि सिरिखंडरसनिसेयं" (सुपा २०)।

णिसेव सक [**नि+सेव्**] १ सेवा करना, आदर करना। २ आश्रय करना। निसेवइ, निसेवए; (महा; उव)। वकृ—**णिसेव-**

माण ; (महा)। कवकृ—**णिसेविज्जंत**; (ओघ ५६)। कृ—**निसेवणिज्ज** ; (सुपा ३७)।

णिसेवय वि [**निषेवक**] १ सेवा करने वाला ; २ आश्रय करने वाला ; (पुप्फ २५१)।

णिसेवि वि [**निषेविन्**] ऊपर देखो; (स १०)।

णिसेविय वि [**निषेवित**] १ सेवित, आदृत ; (आवम)। २ आश्रित ; (उत्त २०)।

णिसेह सक [**नि+षिध्**] निषेध करना, निवारण करना। निसेहइ ; (हे ४, १३४)। कवकृ—**निसिज्झमाण** ; (सुपा ५७२)। हेकृ—**निसेहिउं** ; (स १६८)। कृ—"**निसेहियव्वा** सययंपि माया" (सत ३५)।

णिसेह पुं [**निषेध**] १ प्रतिषेध, निवारण ; (उव ; प्रासू १८१)। २ अपवाद ; (आव ५५)।

णिसेहण न [**निषेधन**] निवारण ; (आवम)।

णिसेहणा स्त्री [**निषेधना**] निवारण ; (आव १)।

णिसेहिया देखो **णिसीहिआ**=नैषेधिकी। १ मुक्ति, मोक्ष; २ श्मशान-भूमि ; ३ बैठने का स्थान ; ४ नितम्ब, द्वार के समीप का भाग ; (राज)।

णिस्स वि [**निःस्व**] निर्धन, धन-रहित ; (पाअ)। °**यर** वि [°**कर**] १ निर्धन-कारक। २ कर्म को दूर करने वाला; (आचा २, ४, १)।

णिस्संक पुं [**दे**] निर्भर ; (दे ४, ३२)।

णिस्संक वि [**निःशङ्क**] १ शङ्का-रहित; (सुअ २, ७ ; महा)। २ न. शङ्का का अभाव ; (पंचा ६)।

णिस्संकिअ वि [**निःशङ्कित**] १ शङ्का-रहित ; (ओघ ५६ भा ; णाया १,३)। २ न. शङ्का का अभाव ; (उत्त २८)।

णिस्संग वि [**निःसङ्ग**] सङ्ग-रहित ; (सुपा १४०)।

णिस्संचार वि [**निःसंचार**] संचार-रहित, गमनागमन-वर्जित ; (णाया १, ८)।

णिस्संजम वि [**निस्संयम**] संयम-रहित ; (पउम २७,५)।

णिस्संत वि [**निःशान्त**] प्रशान्त, अतिशय शान्त ; (राय)।

णिस्संद देखो **णीसंद** ; (पण्ह १, १; नाट—मालती ५१)।

णिस्संदेह वि [**निस्संदेह**] संदेह-रहित, निःसंशय ;(काल)।

णिस्संधि वि [**निस्सन्धि**] सन्धि-रहित, साँधा से रहित ; (पण्ह १, १)।

णिस्संस वि [**नृशंस**] क्रूर, निर्दय ; (महा)।

णिस्संस वि [**निःशंस**] श्लाघा-रहित ; (पण्ह १, १)।

णिस्संसय वि [**निःसंशय**] १ संशय-रहित। २ क्रिवि. निःसंदेह, निश्चय ; (अभि १८४ ; आवम)।

णिस्सण पुं [**निःस्वन**] शब्द, आवाज ; (कुप्र २७)।

णिस्सण्ण वि [**निःसंज्ञ**] संज्ञा-रहित ; (सुअ १,५,१)।

णिस्सत्त वि [**निःसत्त्व**] धैर्य-रहित, सत्त्व-हीन; (सुपा ३५६)।

णिस्सन्न देखो **णिसण्ण** ; (रयण ५)।

णिस्सम्म अक [**निर्+श्रम्**] बैठना। वकृ—**णिस्सम्मंत**; (से ६, ३८)।

णिस्सर अक [**निर्+सृ**] बाहर निकलना। णिस्सरइ ; (कप्प)। वकृ—**णिस्सरंत** ; (नाट—चैत ३८)।

णिस्सरण न [**निःसरण**] निर्गमन, बाहर निकलना ; (ठा ४, २)।

णिस्सरण वि [**निःशरण**] शरण-रहित, त्राण-वर्जित ; (पउम ७३, ३२)।

णिस्सरिअ वि [**दे**] स्रस्त, खिसका हुआ ; (दे ४, ४०)।

णिस्सल्ल वि [**निःशल्य**] शल्य-रहित ; (उप ३२० टी ; द ५७)।

णिस्सस अक [**निर्+श्वस्**] निःश्वास लेना। निस्ससइ, णिस्ससंति ; (भग)। वकृ—**णिस्ससिज्जमाण**; (ठा १०)।

णिस्सह वि [**निःसह**] मन्द, अशक्त ; (हे १, १३ ; ९३ ; कुमा)।

णिस्सा स्त्री [**निश्रा**] १ आलम्बन, आश्रय, सहारा ; (ठा ५, ३)। २ अधीनता ; (उप १३० टी)। ३ पक्षपात ; (वव ३)।

णिस्साण न [**निश्राण**] निश्रा, अवलम्बन ; (पण्ह १,३)। °**पय** न [°**पद**] अपवाद ; (बृह १)।

णिस्सार सक [**निर्+सारय्**] बाहर निकालना। निस्सारइ ; (कुप्र १५४)।

णिस्सार } वि [**निःसार**] १ सार-हीन, निरर्थक ; (अणु ;
णिस्सारग } सुअ १,७; आचा)। २ जीर्ण, पुराना; (आचा)।

णिस्सारय वि [**निःसारक**] निकालने वाला ; (उप २८०टी)।

णिस्सारिय वि [**निःसारित**] १ निकाला हुआ ; २ च्यावित, भ्रष्ट किया हुआ ; (सुअ १, १४)।

णिस्सास पुं [**निःश्वास**] निःश्वास, नीचा श्वास ; (भग)। **२ काल**-मान विशेष ; (इक)। ३ प्राण-वायु, प्रश्वास ;(प्राप्र)।

णिस्साहार वि [**निःस्वाधार**] निराधार, आलम्बन-रहित; (सण)।

णिस्संग वि [निःशङ्क] शङ्का-रहित ; (सुपा ३१३) ।
णिस्संघिय न [निःसिङ्घित] अव्यक्त शब्द-विशेष ; (विसे ५०१) ।
णिस्संच सक [निर्+सिच्] प्रक्षेप करना, डालना, फेंकना । वकृ—**णिस्संचमाण**; (राज) । संकृ—**णिस्संचिय** ; (दस ५, १) ।
णिस्सणेह वि [निःस्नेह] स्नेह-रहित ; (पि १४०) ।
णिस्सिय वि [निश्रित] १ आश्रित, अवलम्बित ; (ठा १०; भास ३८) । २ आसक्त, अनुरक्त, तल्लीन ; (सुअ १, १, १ ; ठा ५, २) । ३ न. राग, आसक्ति ; (ठा ५, २) ।
णिस्सिय वि [निःसृत] निर्गत, निर्यात ; (भास ३८) ।
णिस्सील वि [निःशील] सदाचार-रहित, दुःशील ; (पउम २, ८८ ; ठा ३, २) ।
णिस्सूग वि [निःशूक] निर्दय, निष्करुण ; (श्रा १२) ।
णिस्सेणि स्त्री [निःश्रेणि] सीढ़ी ; (पणह १, १; पाअ) ।
णिस्सेयस न [निःश्रेयस] १ कल्याण, मंगल, क्षेम ; (ठा ४, ४ ; णाया १, ८) । २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण ; (औप ; णंदि) । ३ अभ्युदय, उन्नति ; (उत्त ८) ।
णिस्सेयसिय वि [नैःश्रेयसिक] मुमुक्षु, मोक्षार्थी ; (भग १५) ।
णिस्सेस वि [निःशेष] सर्व, सब, सकल ; (उप २००) ।
णिह वि [निभ] १ समान, तुल्य, सदृश ; (से १, ५८ ; गा ११४ ; दे १, ५१) । २ न. बहाना व्याज, छल ; (पाअ) ।
णिह वि [निह] १ मायावी, कपटी ; (सुअ १, ६) । २ पीड़ित ; (सूअ १, २, १) । ३ न. आघात-स्थान ; (सूअ १, ५ , २) ।
णिह वि [स्निह] रागी, राग-युक्त ; (आचा) ।
णिहंतव्व देखो **णिहण**=नि + हन् ।
णिहंस पुं [निघर्ष] घर्षण ; (गउड) ।
णिहंसण न [निघर्षण] घर्षण ; (से ५, ४६ ; गउड) ।
णिहट्टु अ. १ जुदा कर, पृथक् करके ; (आचा) । २ स्थापन कर ; (णाया १, १६) ।
णिहट्ठ वि [निघृष्ट] घिसा हुआ ; (हे २, १७४) ।
णिहण सक [नि+हन्] १ निहत करना, मारना । २ फेंकना । णिहणामि ; (कुप्र २६२)। णिहणाहि ; (कप्प) । भूका—णिहणिंसु; (आचा) ।वकृ—**णिहणंत**; (सण) । संकृ—**णिहणित्ता**; (पि ५८२)। कृ—**णिहंतव्व**; (पउम ६,१७) ।
णिहण सक [नि+खन्] गाड़ना । "निहणंति धणं धरणीयलम्मि" (वज्जा ११८)। हेकृ—"चोरो दव्वं **निहणिउम्** आरद्धो" (महा) ।
णिहण न [दे] कूल, तीर, किनारा ; (दे ४, २७) ।
णिहण न [निधन] १ मरण, विनाश ; (पाअ ; जी ४६)। २ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३२) ।
णिहणण न [निहनन] निहति, मारना; (महा ; स १६३)।
णिहणिअ वि [निहत] मारा हुआ; (सुपा १५८ ; सण)।
णिहत्त सक [निधत्तय्] कर्म को निबिड़ रूप से बाँधना । भूका—णिहत्तिंसु ; (भग) । भवि—णिहत्तेस्संति ; (भग)।
णिहत्त देखो **णिधत्त**; (भग) ।
णिहत्तण न [निधत्तन] कर्म का निबिड़ बन्धन ; (भग)।
णिहत्ति देखो **णिधत्ति**; (राज) ।
णिहम्म सक [नि+हम्म्] जाना, गमन करना । णिहम्मइ ; (हे ४, १६२)
णिहय वि [निहत] मारा हुआ; (गा ११८ ; सुर ३,४६)।
णिहय वि [निखात] गाड़ा हुआ ; (स ७५६) ।
णिहर अक [नि + हृ] पाखाना जाना; (प्रामा)
णिहर अक [आ + क्रन्द्] चिल्लाना । णिहरइ ; (षड्) ।
णिहर अक [निर्+सृ] बाहर निकलना । णिहरइ ; (षड्) ।
णिहरण देखो **णीहरण** ; (णाया १, २—पत्र ८६) ।
णिहव देखो **णिहुव** । णिहवइ ; (नाट; पि ४१३) ।
णिहव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ ; (षड्) ।
णिहव्व पुं [निवह] समूह ; (षड्) ।
णिहस सक [नि+घृष्] घिसना । संकृ—**णिहसिऊण**; (उव) ।
णिहस पुं [निकष] १ कषपट्टक, कसौटी का पत्थर ; (पाअ) । २ कसौटी पर की जाती रेखा ; (हे १, १८६ ; २६० ; प्राप्र) ।
णिहस पुं [निघर्ष] घर्षण, रगड़; (से ६, ३३) ।
णिहस पुं [दे] वल्मीक, सर्प आदि का बिल ; (दे ४,२५)।
णिहसण न [निघर्षण] घर्षण , रगड़; (से ६, १० ; गा १२१; गउड ; वज्जा ११८) ।
णिहसिय वि [निघर्षित] घिसा हुआ ; (वज्जा १५०) ।
णिहा स्त्री [निहा] माया, कपट ; (सुअ १, ८) ।

णिहा सक [नि+धा] स्थापन करना। निहेउ; (स ७३८)। कवकृ—**णिहिप्पंत** ; (से ८, ६७)। संकृ—**णिहाय** ; (सूअ १,७)।

णिहा सक [नि+हा] त्याग करना। संकृ—**णिहाय** ; (सूअ १, १३)।

णिहा } सक [दृश्] देखना। णिहाइ, णिहाआइ ; **णिहाआ** } (षड्)।

णिहाण न [निधान] वह स्थान जहां पर धन आदि गाड़ा गया हो, खजाना, भण्डार ; (उवा ; गा ३१८ ; गउड)।

णिहाय पुं [दे] १ स्वेद, पसीना ; (दे ४, ४६)। २ समूह, जत्था ; (दे ४, ४६; से ४, ३८; स ४४६ ; भवि; पाअ; गउड ; सुर ३, २३१)।

णिहाय पुं [निघात] आघात, आस्फालन ; (से १५,७०; महा)।

णिहाय देखो **णिहा**=नि+धा, नि+हा।

णिहार पुं [निहार] निर्गम ; (पण्ह १, ५ ; ठा ८)।

णिहारिम न [निर्हारिम] जिसके मृतक शरीर को बाहर निकाल कर संस्कार किया जाय उसका मरण ; (भग)। २ वि. दूर जाने वाला, तक फैलने वाला ; (पण्ह २,५)।

णिहाल देखो **णिभाल**। णिहालेहि ; (स १००)। वकृ—**णिहालंत, णिहालयंत** ; (उप ६४८ टी ; ६८६ टी)। संकृ—**णिहालेउं** ; (गच्छ १)। कृ—**णिहालेयव्व** ; (उप १००७)।

णिहालण न [निभालन] निरीक्षण, अवलोकन ; (उप पृ ७२ ; सुर ११, १२ ; सुपा २३)।

णिहालिअ वि [निभालित] निरीक्षित; (पाअ; स १००)।

णिहि त्रि [निधि] १ खजाना, भंडार; (णाया १, १३)। २ धन आदि से भरा हुआ पात्र ; (हे १, ३५ ; ३, १६ ; ठा ५, ३)। "अच्छेरंव णिहिं विअ सग्गे रज्जं व अमअ-पाणं व" (गा १२५)। ३ चक्रवर्ती राजा की संपत्ति-विशेष, नैसर्प आदि नव निधि ; (ठा ६)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] कुबेर, धनेश ; (पाअ)।

णिहिअ वि [निहित] स्थापित ; (हे २, ६६ ; प्राप्र)।

णिहिण्ण वि [निर्भिन्न] विदारित ; (अच्चु १६)।

णिहित्त देखो **णिहिअ** ; (गा ५६५ ; काप्र ६०६; प्राप्र)।

णिहिप्पंत देखो **णिहा**=नि+धा।

णिहिल वि [निखिल] सब, सकल; (अच्चु ६; आरा ५५)।

णिही स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ; (राज)।

णिहीण वि [निहीन] तुच्छ, खराब, हलका, क्षुद्र ; "अत्थि निहीणे देहे किं रागनिबंधणं तुज्झ ?" (उप ७२८ टी)।

णिहु स्त्री [स्निहु] औषधि-विशेष ; (जीव १)।

णिहुअ वि [निभृत] १ गुप्त, प्रच्छन्न ; (से १३, १५ ; महा)। २ विनीत, अनुद्धत ; (से ४, ५६)। ३ मन्द, धीमा ; (पाअ ; महा)। ४ निश्चल, स्थिर ; (उत्त १६)। ५ अ-संभ्रान्त, संभ्रम-रहित ; (दस ६)। ६ धृत, धारण किया हुआ ; ७ निर्जन, एकान्त ; ८ अस्त होने के लिए उपस्थित ; (हे १, १३१)। ६ उपशान्त ; (पण्ह २, ५)।

णिहुअ वि [दे] १ व्यापार-रहित, अनुयुक्त, निश्चेष्ट ; (दे ४, ५० ; से ४, १ ; सूअ १, ८ ; बृह ३)। २ तूष्णीक, मौन ; (दे ४, ५० ; सुर ११, ८४)। ३ न. सुरत, मैथुन ; (दे ४, ५० ; षड्)।

णिहुअण देखो **णिहुवण** ; (गा ४८३)।

णिहुआ स्त्री [दे] कामिता, संभोग के लिए प्रार्थित स्त्री ; (दे ४, २६)।

णिहुण न [दे] व्यापार, धन्धा ; (दे ४, २६)।

णिहुत्त वि [दे] निमग्न, डूबा हुआ ; (पउम १०२,१६७)।

णिहुत्थिभगा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३५)।

णिहुव सक [कामय्] संभोग का अभिलाष करना। णिहुवइ ; (हे ४, ४४)।

णिहुवण न [निधुवन] सुरत, संभोग ; (कप्पू ; काप्र १६४), "णिहुवणचुंबिअणाहिकूविआ" (मै ४२)।

णिहूअ न [दे] १ सुरत, मैथुन, (दे ४, २६)। २ अकिञ्चित्कर ; (विसे २६१७)। देखो **णीहूय**।

णिहेलण न [दे] १ गृह, घर, मकान ; (दे ४, ५१ ; हे २, १७४; कुमा; उप ७२८ टी; स १८०; पाअ; भवि)। २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग; (दे ४, ५१)।

णिहोड सक [नि+वारय्] निवारण करना, निषेध करना। णिहोडइ ; (हे ४, २२)। कवकृ—**णिहोडंत** ; (कुमा)।

णिहोड सक [पातय्] १ गिराना; २ नाश करना। णिहोडइ ; (हे ४, २२)।

णिहोडिय वि [पातित] १ गिराया हुआ ; (दंस ३)। २ विनाशित ; (उप ५६७ टी)।

णी सक [गम्] जाना, गमन करना। णीइ; (हे ४, १६२; गा ४६ अ)। भवि—णीहिसि; (गा ७४६)। वकृ—**णिंत**,

णेंत ; (से ३, २ ; गउड ; गा ३३४ ; उप २६४ टी ; गा ४२०) । संकृ—**णिंतूण, नीउं**; (गउड; विसे २२२) ।
णी सक [**नी**] १ ले जाना । २ जानना । ३ ज्ञान कराना, बतलाना । णेइ,णयइ; (हे ४, ३३७; विसे ६१४)। वकृ—**णेंत**; (गा ५० ; कुमा) । कवकृ--**णिज्जंत, णीअमाण** ; (गा ६८२ अ ; से ६, ८१ ; सुपा ४७६) । संकृ—**णाइअ, णेउं, णेउआण, णेऊण**; (नाट—मृच्छ २६४; कुमा; षड्; गा १७२) । हेकृ—**णेउं**; (गा ४६७;कुमा) । कृ—**णेअ, णेअव्व**; (पउम ११६, १७; गा ३३६) । प्रयो—णेयावइ; (सण) ।
णीअ वि [**दे**] समीचीन, सुन्दर ; (पिंग) ।
णीआरण न [**दे**] बलि-घटी, बली रखने का छोटा कलश; (दे ४, ४३) ।
णीइ स्त्री [**नीति**] १ न्याय, उचित व्यवहार, न्याय्य व्यवहार; (उप १८६; महा) । २ नय, वस्तु के एक धर्म को मुख्य-तया मानने वाला मत ; (ठा ७) । °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] नीति-प्रतिपादक शास्त्र ; (सुर ६, ६५ ; सुपा ३४० ; महा)।
णीका स्त्री [**नीका**] कुल्या, सारणि; (कुमा) ।
णीचअ न [**नीचस्**] १ नीचे, अधः ; (हे १, १५४)। २ वि. नीचा, अधः-स्थित ; (कुमा) ।
णीछूढ देखो **णिच्छूढ**; ; (णंदि) ।
णीजूह देखो **णिज्जूह**=दे. निर्यूह; (राज) ।
णीड देखो **णिड्ड** ; (गा १०२ ; हे १, १०६) ।
णीण सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णीणइ ; (हे ४, १६२) । णीणंति ; (कुमा) ।
णीण सक [**नी**] १ ले जाना। २ बाहर ले जाना, बाहर निकालना । "सारभंडाणि णीणेइ, असारं अवउज्झइ" (उत्त १६, २२) । भवि—नीणेहिइ; (महा) । वकृ—**णीणेमाण**; कवकृ — **नीणिज्जंत, णीणिज्जमाण** ; (पि ६२; आचा) । संकृ— **णीणेऊण, णीणेत्ता**; (महा ; उवा) ।
णीणाविय वि [**नायित**] दूसरे द्वारा ले जाया गया, अन्य द्वारा आनीत ; (उप १३६ टी) ।
णीणिअ वि [**गत**] गया हुआ ; (पाअ) ।
णीणिअ वि [**नीत**] १ ले जाया गया ; (उप ५६७ टी ; सुपा २६१) । २ बाहर निकाला हुआ ; (णाया १, ४) । " उयरप्पविट्ठछुरिआए नीणिओ अंतपब्भारो "(सुपा ३८१)।
णीणिआ स्त्री [**नीनिका**] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (जीव १) ।
णीम पुं [**नीप**] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़; (पण्ण १ ; औप ; हे १, २३४) ।
णीमी देखो **णीवी** ; (कुमा ; षड्) ।
णीय वि [**नीच**] १ नीच, अधम, जघन्य ; (उवा ; सुपा १०७) । २ वि. अधस्तन ; (सुपा ६००) । °**गोय** न [°**गोत्र**] १ क्षुद्र गोत्र ; २ कर्म-विशेष, जो क्षुद्र जाति में जन्म होने का कारण है; (ठा २, ४; आचा) । ३ वि. नीच गोत्र में उत्पन्न ; (सूअ २, १) ।
णीय वि [**नीत**] ले जाया गया ; (आचा; उत्त; सुपा ६)।
णीय देखो **णिच्च**=नित्य ; (उव) ।
णीयंगम वि [**नीचंगम**] नीचे जाने वाला; (पुप्फ ४४३)।
णीयंगमा स्त्री [**नीचंगमा**] नदी, तरंगिणी ;(भत्त ११६)।
णीर न [**नीर**] जल, पानी; (कुमा ; प्रासू ६७) । °**निहि** पुं [°**निधि**] समुद्र, सागर ; (सुपा २०१) । °**रुह** न [°**रुह**] कमल; (तो ३) । °**वाह** पुं [°**वाह**] मेघ, अभ्र ; (उप पृ ६२) । °**हर** पुं [°**गृह**] समुद्र, सागर; (उप पृ ११६) । °**हि** पुं [°**धि**] समुद्र ; (उप ६८६ टी) । °**ाकर** पुं [°**ाकर**] समुद्र ; (उप ५३० टी) ।
णीरंगी स्त्री [**दे**] सिर का अवगुण्ठन, शिरोवस्त्र, घूँघट; (दे ४, ३१ ; पाअ) ।
णीरंज सक [**भञ्ज्**] तोड़ना, भाँगना । णीरंजइ ; (हे ४, १०६) ।
णीरंजिअ वि [**भग्न**] तोड़ा हुआ, छिन्न; (कुमा) ।
णीरंध वि [**नीरन्ध्र**] निश्छिद्र ; (कप्पू) ।
णीरण न [**दे**] घास-चारा ; " बिमलो पंजलमग्गं नीरिंध-णनीरणाइसंजुत्तं " (सुपा ५०१) ।
णीरय वि [**नीरजस्**] १ रजो-रहित, निर्मल, शुद्ध ;" सिद्धिं गच्छइ णीरओ " (गुरु १६ ; पण्ण ३६ ; सम १३७ ; पउम १०३, १३४ ; सार्ध ११२) । २ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट ; (ठा ६) ।
णीरव सक [**आ+क्षिप्**] आक्षेप करना । णीरवइ ; (हे ४, १४५) ।
णीरव सक [**बुभुक्ष्**] खाने को चाहना । णीरवइ ; (हे ४, ५) । भूका—णीरवीअ; (कुमा) ।
णीरव वि [**आक्षेपक**] आक्षेप करने वाला ; (कुमा) ।
णीरस वि [**नीरस**] रस-रहित, शुष्क ; (गउड ; महा) ।
णीराग } वि [**नीराग**] राग-रहित, वीतराग ; (गउड ;
णीराय } कुप्र १२५; कुमा) ।

णीरेणु वि [**नीरेणु**] रजो-रहित ; (गउड) ।

णीरोग वि [**नीरोग**] रोग-रहित, तंदुरुस्त ; (जीव ३) ।

णील अक [**निर् + सृ**] बाहर निकलना । णीलइ; (हे४,७९)।

णील पुं [**नील**] १ हरा वर्ण, नीला रङ्ग ; (ठा १) । २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३) । ३ रामचन्द्र का एक सुभट, वानर-विशेष ; (से ४, ५) । ४ छन्द-विशेष ; (पिंग) । ५ पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३) । ६ न. रत्न की एक जाति, नीलम; (णाया१,१) । ७ वि. हरा वर्ण वाला ; (पण्ण १ ; राय) । °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] १ शक्रेन्द्र का एक सेनापति, शक्रेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति देव-विशेष ; (ठा ५, १ ; इक) । २ मयूर, मार ; (पाअ ; कुप्र २४७)। ३ महादेव, शिव ; (कुप्र २४७) । °**कणवीर** पुं [°**करवीर**] हरे रङ्ग के फूलों वाला कनेर का पेड़ ; (राय) । °**गुफा** स्त्री [°**गुफा**] उद्यान-विशेष ; (आवम) । °**मणि** पुंस्त्री [°**मणि**] रत्न-विशेष, नीलम,मरकत ; (कुमा) । °**लेस** वि [°**लेश्य**] नील लेश्या वाला ; (पण्ण १७) । °**लेसा** स्त्री [°**लेश्या**] अशुभ अध्यवसाय-विशेष ; (सम११ ; ठा १) । °**लेस्स** देखो °**लेस** ; (पण्ण १७) । °**लेस्सा** देखो °**लेसा** ; (राज) । °**वंत** पुं [°**वत्**] १ पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम १२) । २ द्रह-विशेष ; (ठा५, २) । ३ न. शिखर-विशेष ; (ठा २, ३) ।

णीलकंठी स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष, बाण-वृक्ष; (दे४, ४२) ।

णीला स्त्री [**नीला**] १ लेश्या-विशेष, एक तरह का आत्मा का अशुभ परिणाम ; (कम्म४, १३ ; भग) । २ नील वर्ण वाली स्त्री ; (षड्) ।

णीलिअ वि [**निःसृत**] निर्गत, निर्यात ; (कुमा) ।

णीलिअ वि [**नीलित**] नील वर्ण का ; (उप पृ ३२) ।

णीलिआ देखो **णीला** ; (भग) ।

णीलिम पुंस्त्री [**नीलिमन्**] नीलत्व, नीलापन, हरापन ; (सुपा १३७) ।

णीली स्त्री [**नीली**] १ वनस्पति-विशेष, नील ; (पण्ण१ ; उर ६, ५) । २ नील वर्ण वाली स्त्री; (षड्) । ३ आँख का रोग ; (कुप्र २१३) ।

णीलुंछ सक [**कृ**] १ निष्पतन करना । २ आच्छोटन करना । णीलुंछइ ; (हे ४,७१ ; षड्) । वकृ—**णीलुंछंत**; (कुमा)।

णीलुक्क सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णीलुक्कइ ; (हे ४, १६२) ।

णीलुप्पल न [**नीलोत्पल**] नील रङ्ग का कमल ; (हे १, ८४ ; कुमा) ।

णीलोभास पुं [**नीलावभास**] १ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३) । २ वि. नील-च्छाय, जो नीला मालूम देता हो ; (णाया १, १) ।

णीव पुं [**नीप**] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़ ; (हे१, २३४ ; कप्प ; णाया १, ६) ।

णीवार पुं [**नीवार**] वृक्ष-विशेष, तिली का पेड़ ; (गउड) ।

णीवी स्त्री [**नीवी**] मूल-धन, पूँजी ; २ नारा, इजारबन्द ; (षड् ; कुमा) ।

णीसंक देखो **णिस्संक**=निःशङ्क ; (गा३४५ ; कुमा) ।

णीसंक पुं [**दे**] वृष, बैल ; (षड्) ।

णीसंकिअ देखो **णिस्संकिअ** ; (विसे५६२ ; सुर ७,१५५) ।

णीसंख वि [**निःसंख्य**] संख्या-रहित, असंख्य ; (सुपा ३५५) ।

णीसंचार देखो **णिस्संचार** ; (पउम ३२, १) ।

णीसंद पुं [**निःष्यन्द**] रस-स्रुति, रस का झरन ; (गउड) ।

णीसंदिअ वि [**निःष्यन्दित**] झरा हुआ, टपका हुआ ; (पाअ) ।

णीसंदिर वि [**निःष्यन्दितृ**] झरने वाला, टपकने वाला; (सुपा ५६) ।

णीसंधाय वि [**दे**] जहां जनपद परिश्रान्त हुआ हो वह ; (दे ४, ४२) ।

णीसट्ठ वि [**निःसृष्ट**] १ विमुक्त; (पण्ह१, १—पत्र१८) । २ प्रदत्त ; (बृह २) । ३ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त; "णीसट्ठमचेयणो ण वा झरइ" (उव) ।

णीसण पुं [**निःस्वन**] आवाज, शब्द, ध्वनि ; (सुर १३, १८२ ; कुप्र ५६) ।

णीसणिआ } **णीसणी** } स्त्री [**दे**] निःश्रेणि, सीढ़ी; (दे ४, ४३) ।

णीसत्त वि [**निःसत्त्व**] सत्त्व-हीन, बल-रहित; (पउम २१, ७५ ; कुमा) ।

णीसद्द वि [**निःशब्द**] शब्द-रहित ; (दे७, २८ ; भवि) ।

णीसर अक [**रम्**] क्रीड़ा करना, रमण करना । णीसरइ ; (हे ४, १६८) । कृ—**णीसरणिज्ज** ; (कुमा) ।

णीसर अक [**निर् + सृ**] बाहर निकलना । णीसरइ ; (हे ४, ७९) । वकृ—**णीसरंत** ; (ओघ ४५८ टी) ।

णीसरण न [**निःसरण**] निर्गमन ; (से ६, १८)।
णीसरिअ वि [**निःसृत**] निर्गत, निर्यात ; (सुपा २४७)।
णीसल वि [**निःशल**] १ निश्चल, स्थिर ; २ वक्रता-रहित, उत्तान, सपाट ; "नीसलतइ्डियचंदायएहिं मंडियचउक्कियादेसं" (सुर ३, ७२)।
णीसल्ल वि [**निःशल्य**] शल्य-रहित ; (भवि)।
णीसव सक [**नि+श्रावय्**] निर्जरा करना, क्षय करना। वकृ—**नीसवमाण**; (विसे २७४६)।
णीसवग देखो **णीसवय** ; (आवम)।
णीसवत्त वि [**निःसपत्न**] शत्रु-रहित, विपक्ष-रहित ; (मृच्छ ८; पि २७६)।
णीसवय वि [**निश्रावक**] निर्जरा करने वाला; (विसे २७४६)।
णीसस अक [**निर्+श्वस्**] नीसास लेना, श्वास को नीचा करना। णीससइ ; (षड्)। वकृ—**णीससंत, णीससमाण**; (गा ३३ ; कुप्र ४३ ; आचा २,२,३)। संकृ—**णीससिअ, णीससिऊण** ; (नाट ; महा)।
णीससण न [**निःश्वसन**] निःश्वास; (कुमा)।
णीससिअ न [**निःश्वसित**] निःश्वास ; (से १, ३८)।
णीसह वि [**निःसह**] मन्द, अशक्त ; (हे १,१३; कुमा)।
णीसह वि [**निःशाख**] शाखा-रहित ; (गा २३०)।
णीसा स्त्री [**दे**] पीसने का पत्थर : (दस ५, १)।
णीसा देखो **णिस्सा** ; (कप्प)।
णीसामण्ण / **णीसामन्न** वि [**निःसामान्य**] १ असाधारण ; (गउड; सुपा ६१ ; हे २, २१२)। २ गुरु, ; (पाअ)।
णीसार सक [**निर्+सारय्**] बाहर निकालना। णीसारइ ; (भवि)। कर्म—नीसारिज्जइ ; (कुप्र १४०)।
णीसार पुं [**दे**] मण्डप ; (दे ४, ४१)।
णीसार वि [**निःसार**] सार-रहित, फल्गु ; (से ३,४८)।
णीसारण न [**निःसारण**] निष्कासन, बाहर निकालना ; (सुर १५ , २०३)।
णीसारय वि [**निःसारक**] बाहर निकालने वाला ; (से ३, ४८)।
णीसारिय वि [**निःसारित**] निष्कासित ; (सुर ५,१८८)।
णीसास देखो **णिस्सास** ; (हे १, ९३ ; कुमा ; प्राप्र)।
णीसास / **णीसासय** वि [**निःश्वास,°क**] निःश्वास लेने वाला ; (विसे २७१५ ; २७१४)।
णीसाहार देखो **णिस्साहार** ; "नीसाहारा य पडइ भूमीए" (सुर ७, २३)।
णिसित्त वि [**निष्षिक्त**] अत्यन्त सिक्त ; (षड्)।
णीसीमिअ वि [**दे**] निर्वासित, देश-बाहर किया हुआ ; (दे ४, ४२)।
णीसेयस देखो **णिस्सेयस** ; (जीव ३)।
णीसेणि स्त्री [**निःश्रेणि**] सीढ़ी ; (सुर १३, १५७)।
णीसेस देखो **णिस्सेस** ; (गउड ; उव)।
णीहट्टु अ° निकाल कर; (आचा २, ६, २)।
णीहड वि [**निर्हृत**] १ निर्गत, निर्यात ; (आचा २, १, १)। २ बाहर निकाला हुआ ; (बृह १; कस)।
णीहडिया स्त्री [**निर्हृतिका**] अन्य स्थान में ले जाया जाता द्रव्य; (बृह २)।
णीहम्म अक [**निर्+हम्म्**] निकलना। णीहम्मइ ; (हे ४, १६२)।
णीहम्मिअ वि [**निर्हम्मित**] निर्गत, निःसृत ; (दे ४, ४३)।
णीहर अक [**निर्+सृ**] १ बाहर निकलना। णीहरइ ; (हे ४, ७९)। वकृ—**नीहरंत** ; (सुपा ४८२)। संकृ—**णीहरिअ** ; (निचू ६)। कृ—**णीहरियव्व** ; (सुपा ५९०)।
णीहर अक [**आ+क्रन्द्**] आक्रन्द करना, चिल्लाना। णीहरइ ; (हे ४, १३१)।
णीहर अक [**निर्+ह्रद्**] प्रतिध्वनि करना। वकृ—**णीहरंत, णीहरिअंत** ; (से ५, ११ ; २, ३१)।
णीहर सक [**निर्+सारय्**] बाहर निकालना। हेकृ—**णीहरित्तए** ; (भग ५, ४)। कृ—**णीहरियव्व** ; (सुपा ४८२)।
णीहर अक [**निर्+हृ**] पाखाना जाना, पुरीषोत्सर्ग करना। नीहरइ ; (हे ४, २५६)।
णीहरण न [**निस्सरण, निर्हरण**] १ निर्गमन, निर्गम, बाहर निकालना ; (विपा १,३ ; णाया १, १४)। २ परित्याग; (निचू १)। ३ अपनयन ; (सूअ २, २)।
णीहरिअ देखो **णीहर**=निर्+सृ।
णीहरिअ वि (निःसृत) निर्गत, निर्यात ; (सुर १, १५५; ३, ७५ ; पाअ)।
णीहरिअ वि [**निर्ह्रदित**] प्रतिध्वनित ; (से ११, १२२)।

णीहरिअ न [**दे**] शब्द, आवाज, ध्वनि ; (दे ४, ४२) ।
णीहरिअंत देखो **णीहर=**निर् +हृ ।
णीहार पुं [**नीहार**] १ हिम, तुषार ; (अच्चु ७२ ; स्वप्न ५२ ; कुमा) । २ विष्ठा या मुत्र का उत्सर्ग ; (सम ६०) ।
णीहारण न [**निस्सारण**] निष्कासन ; (ठा २, ४) ।
णीहारि वि [**निर्हारिन्**] १ निकलने वाला ; २ फैलने वाला ; "जोयणणीहारिणा सरेण" (आरम ; सम ६०) ।
णीहारि वि [**निर्ह्रादिन्**] घोष करने वाला, गुंजने वाला ; (ठा १० ; पि ४०५) ।
णीहारिम देखो **णिहारिम** ; (ठा २,४ ; औप; णाया १,१)।
णीहूय वि [**दे**] अकिञ्चित्कर, कुछ भी नहीं कर सकने वाला ; "पवयणणीहूयाणं" (आवनि ७८७) । देखो— **णिहुअ** ।
णु अ [**नु**] इन अर्थों का सुचक अव्यय ;—१ व्यंग्य ध्वनि ; २ वक्रोक्ति ; (स ३४६) । ३ वितर्क ; (सण) । ४ प्रश्न ; ५ विकल्प ; ६ अनुनय ; ७ हेतु, प्रयोजन ; ८ अपमान; ६ अनुताप, अनुराग ; १० अपदेश, बहाना; (गउड; हे २, २१७ ; २१८) ।
°**णुअ** वि [**ज्ञक**] जानकार ; (गा ४०५) ।
णुक्कार पुं [**नुक्कार**] 'नुक्' ऐसा आवाज ; (राय) ।
णुज्जिय वि [**दे**] बन्द किया हुआ, मुद्रित ; "कड्डिया णेण छुरिया, णुज्जियं से वयणं, छिन्ना य हत्था" (स ५८६) ।
णुत्त वि [**नुत्त**] १ प्रेरित ; २ क्षिप्त, फेंका हुआ ; (से ३, १५) ।
णुम सक [**नि+अस्**] स्थापन करना । णुमइ ; (हे ४, १६६) ।
णुम सक [**छादय्**] ढकना, आच्छादन करना । णुमइ ; (हे ४, २१) ।
णुमज्ज अक [**नि+सद्**] बैठना । णुमज्जइ ; (षड्) ।
णुमज्ज अक [**नि+मस्ज्**] डूबना । णुमज्जइ ; (हे १,६४)।
णुमज्जण न [**निमज्जन**] डूबना ; (राज) ।
णुमण्ण वि [**निषण्ण**] बैठा हुआ, उपविष्ट ; (षड् ; हे १, १७४) ।
णुमण्ण, **णुमन्न** त्रि [**निमग्न**] डूबा हुआ, लीन ; (हे १, ६४ ; १७४) ।
णुमिअ वि [**न्यस्त**] स्थापित ; (कुमा) ।
णुमिअ वि [**छादित**] ढका हुआ ; (कुमा) ।
णुल्ल देखो **णोल्ल** । णुल्लइ ; (पि २४४) ।
णुवण्ण वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ ; (दे ४, २५)।
णुवण्ण वि [**निषण्ण**] बैठा हुआ, उपविष्ट ; (गउड ; णाया १,५; स २४२)। "पासम्मि नुवण्णा" (उप ६४८ टी)।
णुव्व सक [**प्र+काशय्**] प्रकाशित करना । णुव्वइ ; (हे ४, ४५) । वकृ—**णुव्वंत** ; (कुमा) ।
णुसा स्त्री [**स्नुषा**] पुत्र-वधू, पुत्र की भार्या ; (प्रयौ १०५)।
णूउर देखो **णिउर=**नूपुर ; (षड् ; हे १, १२३) ।
णूण वि [**न्यून**] कम, ऊन ; (उप पृ ११६) ।
णूण, **णूणं** अ [**नूनम्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय, अवधारण; २ तर्क, विचार; ३ हेतु ; प्रयोजन; ४ उपमान ; ५ प्रश्न ; (हे १, २६ ; प्राप्र ; कुमा ; भग ; प्रासू १२ ; बृह १ ; श्रा १२) ।
णूपुर देखो **णूउर** ; (चारु ११) ।
णूम सक [**छादय्**] १ ढकना, छिपाना । णूमइ ; (हे ४, २१) । णूमंति ; (णाया १, १६) । वकृ—**णूमंत** ; (गा ८५६) ।
णूम न [**छादन**] १ प्रच्छादन, छिपाना ; २ असत्य, झूठ ; (पण्ह १, २) । ३ माया, कपट ; (सम ७१) । ४ प्रच्छन्न स्थान, गुफा वगैरः ; (सुअ १, ३,३ ; भग १२, ५) । ५ अन्धकार, गाढ अन्धकार ; (राज) ।
णूमिअ वि [**छादित**] ढका हुआ, छिपाया हुआ ; (से १, ३२ ; पाअ ; कुमा) ।
णूमिअ वि [**दे**] पोला किया हुआ; (उप पृ ३६३) ।
णूला स्त्री [**दे**] शाखा, डाल ; (दे ४, ४३) ।
णे अ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त होता अव्यय ; (राज) ।
णेअ देखो **णा=**ज्ञा ।
णेअ देखो **णी**=नी ।
णेअ वि [**नैक**] अनेक, बहुत ; (पउम ६४, ५१) । °**विह** वि [°**विध**] अनेक प्रकार का ; (पउम ११३, ५२) ।
णेअ अ [**नैव**] नहीं ही, कदापि नहीं ; (से ४, ३० ; गा १३६ ; गउड ; सुर २, १८६ ; सण) ।
णेअव्व देखो **णी**=नी ।
णेआइअ, **णेआउअ** वि [**नैयायिक, न्याय्य**] न्याय से अ-बाधित, न्यायानुगत, न्यायोचित ; " णेआइअस्स मग्गस्स दुट्ठे अवयरई बहु " (सम ५१ ; औप ; पण्ह २, १) ।

णेआवण न [**नायन**] अन्य-द्वारा नयन, पहुँचाना ; (उप ७४६) ।

णेआविअ वि [**नायित**] अन्य द्वारा ले जाया गया, पहुँचाया हुआ ; (स ४२; कुप्र २०७) ।

णेउ वि [**नेतृ**] नेता, नायक ; (पउम १४, ६१ ; सुअ १, ३, १) ।

णेउआण, **णेउं** } देखो **णी**=नी ।

णेउड्ड पुं [**दे**] सद्भाव, शिष्टता ; (दे ४, ४४) ।

णेउण न [**नैपुण**] निपुणता, चतुराई ; (अभि १३२) ।

णेउणिअ वि [**नैपुणिक**] १ निपुण, चतुर ; (ठा ६)। २ न. अनुप्रवाद-नामक पूर्व-ग्रन्थ की एक वस्तु ; (विसे २३६०) ।

णेउण्ण, **णेउन्न** } न [**नैपुण्य**] निपुणता, चतुराई ; (दस ६, २ ; सुपा २६३) ।

णेउर न [**नूपुर**] स्त्री के पाँव का एक आभूषण ; (हे १, १२३ ; गा १८८) ।

णेउरिल्ल वि [**नूपुरवत्**] नूपुर वाला ; (पि १२६ ; गउड) ।

णेऊण, **णेंत** } देखो **णी**=नी ।

णेंत देखो **णी**=गम् ।

णेक्कंत देखो **णिक्कंत** ; (गा ११) ।

णेग देखो **णेअ**=नैक ; (कुमा ; पण्ह १, ३) ।

णेगम पुं [**नैगम**] १ वस्तु के एक अंश को स्वीकारने वाला पक्ष-विशेष, नय-विशेष ; (ठा ७) । २ वणिक्, व्यापारी; "जिणधम्मभाविएणं, न केवलं धम्मओ धणाओवि । नेगमअडहियसहसो, जेण कओ अप्पणो सरिसो" (श्रा २७) । ३ न. व्यापार का स्थान ; (आचा २, १, २) ।

णेगुण्ण न [**नैर्गुण्य**] निर्गुणता, निःसारता ; (भत १६३)।

णेचइय पुं [**नैचयिक**] धान्य का व्यापारी ; (वव ४) ।

णेच्छइअ वि [**नैश्चयिक**] निश्चयनय-सम्मत, निरुपचरित, शुद्ध; (विसे २८२) ।

णेच्छंत वि [**नेच्छत्**] नहीं चाहता हुआ ; (हेका ३०६) ।

णेच्छिय वि [**नेच्छित**] इच्छा का अविषय, अनभिलषित ; (जीव ३) ।

णेट्ठिअ वि [**नैष्ठिक**] पर्यन्त-वर्ती ; (पण्ह २, ३) ।

णेड देखो **णिड्ड** ; (कुमा ; हे १, १०६) ।

णेडाली स्त्री [**दे**] सिर का भूषण-विशेष ; (दे ४,४३) ।

णेड्ड देखो **णिड्ड** ; (हे २,६६ ; प्राप्र ; षड्) ।

णेड्डुरिआ स्त्री [**दे**] भाद्रपद मास की शुक्ल दशमी का एक उत्सव ; (दे ४, ४५) ।

णेत्त पुंन [**नेत्र**] नयन, आँख, चक्षु ; (हे १,३३ ; आचा)।

णेद्दा देखो **णिद्दा** ; (पि १६२ ; नाट) ।

णेपाल देखो **णेवाल** ; (उप पृ ३६७) ।

णेम स [**नेम**] १ अर्ध, आधा ; (प्रामा) । २ न. मूल, जड़ ; (पण्ह १, ३ ; भग) ।

णेम न [**दे**] कार्य, काज ; (राज) ।

णेम देखो **णेम्म**=दे ; (पण्ह २, ४ टी—पत्र १३३) ।

णेमाल पुं.ब. [**नेपाल**] एक भारतीय देश, नेपाल; (पउम ६८, ६४) ।

णेमि पुं [**नेमि**] १ स्वनाम-ख्यात एक जिन-देव, बाइसवें तीर्थंकर ; (सम ४३ ; कप्प) । २ चक्र की धारा ; (ठा ३, ३ ; सम ४३) । ३ चक्र परिधि, चक्के का घेरा ; (जीव ३) । ४ आचार्य हेमचन्द्र के मातुल का नाम ; (कुप्र २०) । °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक जैनाचार्य ; (सार्ध ६२) ।

णेमित्त देखो **णिमित्त** ; (आवम) ।

णेमित्ति वि [**निमित्तिन्**] निमित्त-शास्त्र का जानकार ; (सुर १, १४४ ; सुपा १५४) ।

णेमित्तिअ, **णेमित्तिग** } वि [**नैमित्तिक**] १ निमित्त-शास्त्र से संबन्ध रखने वाला ; (सुर ६, १७७) । २ कारणिक, निमित्त से होने वाला, कारण से किया जाता, कादाचित्क ; "उववासो णेमित्तिगमो जओ भणिओ" (उप ६८३ ; उत्तर १०७) । ३ निमित्त शास्त्र का जानकार; (सुर १, २३८) । ४ न. निमित्त शास्त्र ; (ठा ६) ।

णेमी स्त्री [**नेमी**] चक्र-धारा ; (दे १, १०६) ।

णेम्म वि [**दे.निभ**] तुल्य, सदृश, समान ; (पण्ह २,४—पत्र १३०) ।

णेम्म देखो **णेम**=नेम ; (पण्ह १, ५—पत्र ६४) ।

णेरइअ वि [**नैरयिक**] १ नरक-संबन्धी, नरक में उत्पन्न ; (हे १, ७६) । २ पुं. नरक का जीव, नरक में उत्पन्न प्राणी ; (सम २ ; विपा १, १०) ।

णेरई स्त्री [**नैऋती**] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा ; (सुपा ६८ ; ठा १०) ।

णेरुत्त न [**नैरुक्त**] १ व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ का वाचक शब्द; (अणु) । २ वि. निरुक्त शास्त्र का जानकार ; (विसे २४) ।

णेरुत्तिय वि [**नैरुक्तिक**] व्युत्पत्ति-निष्पन्न; (विसे ३०३७)।
णेरुत्ती स्त्री [**नैरुक्तिी**] व्युत्पत्ति; (विसे २१८२)।
णेल वि [**नैल**] नील का विकार; (भग; औप)।
णेलंछण देखो **णिल्लंछण**; (स ६६६)।
णेलच्छ पुं [**दे**] नपुंसक, षण्ढ; (दे ४, ४४; पात्र; हे २, १७४)। २ वृषभ, बैल; (दे ४, ४४)।
णेलिच्छी स्त्री [**दे**] कूपतुला, ढेंकवा; (दे ४, ४४)।
णेल्लच्छ देखो **णेलच्छ**; (पि ६६)।
णेव देखो **णेअ**=नैव; (उव; पि १७०)।
णेवच्छ देखो **णेवत्थ**; (से १२, ६७; प्रति ६; औप; कुमा; पि २८०)।
णेवच्छण न [**दे**] अवतारण, नीचे उतारना; (दे ४, ४०)।
णेवच्छिय देखो **णेवत्थिय**; (पि २८०)।
णेवत्थ न [**नेपथ्य**] १ वस्त्र आदि की रचना, वेष की सजावट; (णाया १, १)। २ वेष; (विसे २५८७; सुर ३, ६२; सण; सुपा १५३)।
णेवत्थण न [**दे**] निरुंछन, उत्तरीय वस्त्र का अञ्चल; (कुमा)।
णेवत्थिय वि [**नेपथ्यित**] जिसने वेष-भूषा की हो वह; "पुरिसनेवत्थिया" (विपा १, ३)।
णेवाइय वि [**नैपातिक**] निपात-निष्पन्न नाम, अव्यय आदि; (विसे २८४० ; भग)।
णेवाल पुं [**नेपाल**] १ एक भारतीय देश, नेपाल; (उप पृ ३९३; कुप्र ४५८)। २ वि. नेपाल-देशीय; (पउम ६६, ५५)।
णेविज्ज / **णेवेज्ज** न [**नैवेद्य**] देवता के आगे धरा हुआ अन्न आदि; (सं १२२; श्रा १६)।
णेव्वाण देखो **णिव्वाण**=निर्वाण; (आचा; सुर ६, २०; स ७४४)।
णेव्वुअ देखो **णिव्वुअ**; (उप ७३० टी)।
णेव्वुइ देखो **णिव्वुइ**; (उप ७६८ टी)।
णेसग्गिय देखो **णिसग्गिय**; (सुपा ९)।
णेसज्ज वि [**नैषद्य**] आसन-विशेष से उपविष्ट; (पव ६७; पंचा १८)।
णेसज्जिअ वि [**नषद्यिक**] ऊपर देखो; (ठा ५, १; औप; पण्ह २, १; कस)।
णेसत्थि पुं [**दे**] वणिग् मन्त्री, वणिक् प्रधान; (दे ४,४४)।
णेसत्थिया / **णेसत्थी** स्त्री [**नैसृष्टिकी, नैशस्त्रिकी**] १ निसर्जन, निक्षेपण; २ निसर्जन से होने वाला कर्म-बन्ध; (ठा २, १; नव १८)।
णेसप्प पुं [**नैसर्प**] निधि विशेष, चक्रवर्ती राजा का एक देवाधिष्ठित निधान; (ठा ९; उप ९८६ टी)।
णेसर पुं [**दे**] रवि, सूर्य; (दे ४, ४४)।
णेसाय देखो **णिसाय**=निषाद; (राज)।
णेसु पुंन [**दे**] १ ओष्ठ, होठ; २ पाँव; 'तह निक्खित्तं तमंता कुवम्मि निहित्तणेसुजुगं" (उप ३२० टी)।
णेह पुं [**स्नेह**] १ राग, अनुराग, प्रेम; (पात्र)। २ तैल आदि चिकना रस-पदार्थ; ३ चिकनाई, चिकनाहट; (हे २, ७७; ४, ४०६; प्राप्र)।
णेहर देखो **णेहुर**; (पण्ह १, १)।
णेहल पुं [**स्नेहल**] छन्द-विशेष; (पिंग)।
णेहालु वि [**स्नेहवत्**] स्नेह-युक्त, स्निग्ध; (हे २,१५९)।
णेहुर पुं [**नेहुर**] १ देश-विशेष, एक अनार्य देश; २ उसमें बसने वाली अनार्य जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४)।
णो अ [**नो**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ निषेध, प्रतिषेध, अभाव; (ठा ६; कस; गउड)। २ मिश्रण, मिश्रता; "नोसद्दो मिस्सभावम्मि" (विसे ५०)। ३ देश, भाग, अंश, हिस्सा; (विस ८८८)। ४ अवधारण, निश्चय; (राज)। °**आगम** पुं [°**आगम**] १ आगम का अभाव; २ आगम के साथ मिश्रण; ३ आगम का एक अंश; (आवम; विसे ४९; ५०; ५१)। ४ पदार्थ का अ-परिज्ञान; (णंदि)। °**इंदिय** न [°**इन्द्रिय**] मन, अन्तःकरण, चित्त; (ठा ६; सम ११; उप ५९७ टी)। °**कसाय** पुं [°**कषाय**] कषाय के उद्दीपक हास्य वगैरः नव पदार्थ, वे ये हैं;—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद; (कम्म १, १७; ठा ९)। °**केवलनाण** न [°**केवलज्ञान**] अवधि और मनःपर्यव ज्ञान; (ठा २, १)। °**गार** पुं [°**कार**] 'नो' शब्द; (राज)। °**गुण** वि [°**गुण**]अ-यथार्थ, अ-वास्तविक; (अणु)। °**जीव** पुं [°**जीव**] १ जीव और अजीव से भिन्न पदार्थ, अ-वस्तु; २ अजीव, निर्जीव; ३ जीव का प्रदेश; (विसे)। °**तह** वि [°**तथ**] जो वैसा हो न हो; (ठा ४, २)।
णोक्ख वि [**दे**] अनोखा, अपूर्व; (पिंग)।
णोदिअ देखो **णोल्लिअ**; (राज)।

णोमल्लिआ स्त्री [**नवमल्लिका**] सुगन्धि फूल वाला वृक्ष-विशेष, नेवारी, वासंती ; (नाट ; पि १५४) ।
णोमालिआ स्त्री [**नवमालिका**] ऊपर देखो ; (हे १, १७० ; गा २८१ ; षड् ; कुमा; अभि २६) ।
णोमि पुं [**दे**] रस्सी, रज्जु ; (दे ४, ३१) ।
णोलइआ } **णोलच्छा** } स्त्री [**दे**] चञ्चु, चाँच ; (दे ४, ३६) ।
णोल्ल सक [**क्षिप्, नुद्**] १ फेंकना । २ प्रेरणा करना । णोल्लइ; (हे ४, १४३ ; षड्) । णोल्लेइ; (गा ८७५) । कवक़—**णोल्लिज्जंत** ; (सुर १३, १६६) ।
णोल्लिअ वि [**नोदित**] प्रेरित; (से६, ३२ ; णाया१, ६ ; पराह १, ३ ; स ३४०) ।
णोव्व पुं [**दे**] आयुक्त, सूबा, राज-प्रतिनिधि ; (दे४,१७) ।
णोहल पुं [**लोहल**] अव्यक्त शब्द-विशेष ; (षड् ; पि २६०; संक्षि ११) ।
णोहलिआ स्त्री [**नवफलिका**] १ ताजी फली, नवोत्पन्न फली ; (हे १, १७०) । २ नूतन फल वाली ; (कुमा) । ३ नूतन फल का उद्गम ; "णोहलिअमप्पणो किं ण मग्गसे, मग्गसे कुरवअस्स" (गा ६) ।
णोहा स्त्री [**स्नुषा**] पुत्र की भार्या ; (पि १४८ ; संक्षि १५) ।
°**ण्णअ** वि [**ज्ञक**] जानकार ; (गा २०३) ।
°**ण्णास** देखो **णास**= न्यास ; (स्वप्न १३४) ।
°**ण्णुअ** देखो °**ण्णअ** ; (गा ४०५) ।
ण्हं अ. १-२ वाक्यालंकार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (कप्प ; कस) ।
ण्हव सक [**स्नपय्**] नहलाना, स्नान कराना । ण्हवेइ ; (कुप्र ११७) । कवक़—**ण्हविज्जंत** ; (सुपा ३३) । संकृ—**ण्हविऊण**; (पि ३१३) ।

ण्हवण न [**स्नपन**] स्नान कराना, नहलाना ; (कुमा) ।
ण्हविअ वि [**स्नपित**] जिसको स्नान कराया गया हो वह ; (सुर २, ५८ ; भवि) ।
ण्हा } **ण्हाण** } अक [**स्ना**] स्नान करना, नहाना । ण्हाइ ; (हे४, १४) । ण्हाएइ, ण्हायंति ; (पि ३१३) । भवि—ण्हाइस्सं ; (पि ३१३) । वकृ—**ण्हायमाण** ; (णाया १, १३) । संकृ—**ण्हाइत्ता, ण्हाणित्ता** ; (पि ३१३) ।
ण्हाण न [**स्नान**] नहाना, नहान ; (कप्प ; प्राप्र) । °**पीढ** पुंन [°**पीठ**] स्नान करने का पट्टा ; (णाया १, १) ।
ण्हाणिआ स्त्री [**स्नानिका**] स्नान-क्रिया; (पराह २, ४—पत्र १३१) ।
ण्हाय वि [**स्नात**] जिसने स्नान किया हो वह, नहाया हुआ ; (कप्प ; औप) ।
ण्हायमाण देखो **ण्हा** ।
ण्हारु न [**स्नायु**] अस्थि-बन्धनी सिरा, नस, धमनी ; (सम १४६ ; पराह १, १ ; ठा २, १ ; आचा) ।
ण्हाव देखो **ण्हव** । ण्हावइ, ण्हावेइ ; (भवि ; पि ३१३) । वकृ—**ण्हावअंत** ; (पि३१३) । संकृ—**ण्हाविऊण** ; (महा) ।
ण्हाविअ वि [**स्नपित**] नहलाया हुआ, जिसको स्नान कराया गया हो वह ; (महा ; भवि) ।
ण्हाविअ पुं [**नापित**] हजाम, नाई ; (हे १, २३० ; कुमा) , "घेत्तूण ण्हावियं आगएण मुंडाविओ कुमरो" (उप ६ टी) । °**पसेवय** पुं [°**प्रसेवक**] नाई की अपने उपकरण रखने की थैली ; (उत्त २) ।
ण्हुसा स्त्री [**स्नुषा**] पुत्र-वधू ; पुत्र की भार्या ; (आवम ; पि ३१३) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवे** णआराइसद्दसंकलणो, अइएसेण नआराइसद्दसंकलणो अ बाईसइमो तरंगो समत्तो ।

त

त पुं [त] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप; प्रामा)।

त स [तत्] वह; (ठा ३, १; हे १, ७; कप्प; कुमा)।

त° स [त्वत्°] तू। °**क्कअ** वि [°कृत] तेरा किया हुआ; (स ६८०)।

तइ (अप) अ [तत्र] वहाँ, उसमें; (षड्)।

तइ अ [तदा] उस समय; (प्राप्र)।

तइअ वि [तृतीय] तीसरा; (हे १, १०१; कुमा)।

तइअ (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा; (भवि)।

तइअ अ [तदा] उस समय;

"भणिओ रन्ना मंती, मइसागर तइय पव्वयंतेण।
ताएण अहं भणिओ, भगिणी ठाणम्मि दायव्वा"
(सुर १,१२३)।

तइअहा (अप) अ [तदा] उस समय; (भवि; सण)।

तइआ अ [तदा] उस समय; (हे ३, ६५; गा ६२)।

तइआ स्त्री [तृतीया] तिथि-विशेष, तीज; (सम २६)।

तइल देखो **तेल्ल**; (उप ६२६)।

तइलोई स्त्री [त्रिलोकी] तीन लोक—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल; (सुपा ६८)।

तइलोक्क, **तइलोय** } न [त्रैलोक्य] ऊपर देखो; (पउम ३, १०५; ८, २०२; स ५७१; सुर ३, २०; सुपा २८२; ३५; ४४८)।

तइस (अप) वि [तादृश] वैसा, उस तरह का; (हे ४, ४०३; षड्)।

तई स्त्री [त्रयी] तीन का समुदाय; (सुपा ५८)।

तईअ देखो **तइअ**=तृतीय; (गा ४११; भग)।

तउ, **तउअ** } न [त्रपु] धातु-विशेष, सीसा, राँगा; (सम १२५; औप; उप ६८६ टी; महा)। °**वट्टिआ** स्त्री [°पट्टिका] कान का आभूषण-विशेष; (दे ५,२३)।

तउस न [त्रपुष] देखो **तउसी**; (राज)। °**मिंजिया** स्त्री [°मिञ्जिका] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (जीव १)।

तउसी स्त्री [त्रपुषी] कर्कटी-वृक्ष, खीरा का गाछ; (गा ५३४)।

तए अ [ततस्] उससे उस कारण से; २ बाद में; (उत्त १; विपा १, १)।

तएयारिस वि [त्वादृश] तुम जैसा, तुम्हारी तरह का; (स ५२)।

तओ देखो **तए**; (ठा ३, १; प्रासू ७८)।

तं अ [तत्] इन अर्थों को बतलाने वाला अव्यय; — १ कारण, हेतु; (भग १५)। २ वाक्य-उपन्यास; "तं तिअसबंदिमोक्खं" (हे २, १७६; षड्)। "तं मरणमणारंभे वि होइ, लच्छी उण न होइ" (गा ४२)। °**जहा** अ [°यथा] उदाहरण-प्रदर्शक अव्यय; (आचा; अणु)।

तंआ देखो **तया**=तदा; (गउड)।

तंट न [दे] पृष्ठ, पीठ; (दे ५, १)।

तंड न [दे] लगाम में लगी हुई लार; २ वि. मस्तक-रहित; ३ स्वर से अधिक; (दे ५, १६)।

तंडव (अप) देखो **तडुव**। तंडवहु; (भवि)।

तंडव अक [ताण्डवय्] नृत्य करना। तंडवेंति; (आवम)।

तंडव न [ताण्डव] १ नृत्य, उद्धत नाच; (पाअ; जीव ३; सुपा ८६)। २ उद्धताई; "पासंडितुंडमइचंडतंडवाडंबरेहिं किं मुद्ध" (धम्म ८ टी)।

तंडविय वि [ताण्डवित] नचाया हुआ, नर्तित; (गउड)।

तंडविय (अप) देखो **तडुविअ**; (भवि)।

तंडुल पुं [तण्डुल] चावल; (गा ६६१)। देखो **तंदुल**।

तंत न [तन्त्र] १ देश, राष्ट्र; (सुर १६, ४८)। २ शास्त्र, सिद्धान्त; (उवर ५)। ३ दर्शन, मत; (उप ६२२)। ४ स्वदेश-चिन्ता; ५ विष का औषध विशेष; (मुद्रा १०८)। ६ सूत्र, ग्रन्थांश-विशेष; "सुत्तं भणियं तंतं भण्णिज्जए तम्मि व जमत्थो" (विसे)। ७ विद्या-विशेष; (सुपा ४६६)। °**न्नु** वि [°ज्ञ] तन्त्र का जानकार; (सुपा ५७६)। °**वाइ** पुं [°वादिन्] विद्या-विशेष से रोग आदि को मिटाने वाला; (सुपा ४६६)।

तंत वि [तान्त] खिन्न, क्लान्त; (णाया १,४; विपा१,१)।

तंतडी स्त्री [दे] करम्ब, दही और चावल का बना भोजन-विशेष; (दे ५, ४)।

तंतिय पुं [तान्त्रिक] वीणा बजाने वाला; (अणु)।

तंती स्त्री [तन्त्री] १ वीणा, वाद्य-विशेष; (कप्प; औप; सुर १६, ४८)। २ वीणा-विशेष; (पण्ह २, ५)। ३ ताँत, चमड़े की रस्सी; (विपा १, ६; सुर ३, १३७)।

तंती स्त्री [दे] चिन्ता; "कामस्स तत्ततंतिं कुणंति" (गा २)।

तंतु पुं [तन्तु] सूत, तागा, धागा; (पउम १, १३)। °**अ**, °**ग** पुं [°क] जलजन्तु-विशेष; (पउम १४,१७; कुप्र २०६)। °**ज**, °**य** न [°ज] सूती कपड़ा; (उत्त २,३५)। °**वाय** पुं [°वाय] कपड़ा बुनने वाला, जुलहा;

(श्रा २३)। °साला स्त्री [°शाला] कपड़ा बुनने का घर, ताँत-घर ; (भग १५) ।

तंतुक्खोडी स्त्री [दे] तन्तुवाय का एक उपकरण ; (दे५,७)।

तंदुल देखो **तंडुल** ; (पउम १२, १३८) । २ मत्स्य-विशेष ; (जीव १) । °वेयालिय न [°वैचारिक] जैन ग्रन्थ-विशेष ; (णंदि) ।

तंदुलेज्जग पुं [तन्दुलीयक] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)।

तंदूसय देखो **तिंदूसय** ; (सुर १३, १६७) ।

तंब पुं [स्तम्ब] तृणादि का गुच्छा ; (हे २, ४५ ; कुमा)।

तंब न [ताम्र] १ धातु-विशेष, ताँबा ; (विपा १, ६ ; हे २, ४५) । २ पुं. वर्ण-विशेष ; ३ वि. अरुण वर्ण वाला; (पण्ण १७ ; औप) । °चूल पुं [°चूड] कुक्कुट, मुर्गा; (सुर ३, ६१) । °वण्णी स्त्री [°पर्णी] एक नदी का नाम ; (कप्पू) । °सिह पुं [°शिख] कुक्कुट, मुर्गा; (पाअ) ।

तंबकरोड पुंन [दे] ताम्र वर्ण वाला द्रव्य-विशेष; (पण्ण १७)।

तंबकिमि पुं [दे] कीट-विशेष, इन्द्रगोप; (दे ५, ६; षड्)।

तंबकुसुम पुंन [दे] वृक्ष-विशेष, कुरुबक, कटसरैया ; (दे ५, ६ ; षड्) । २ कुरण्टक वृक्ष ; (षड्) ।

तंबक्क न [दे] वाद्य-विशेष ; अणाहयतंबक्केसु वज्जंतेसु (ती १५)।

तंबच्छिवाडिया स्त्री [दे] ताम्र वर्ण का द्रव्य-विशेष ; (पण्ण १७) ।

तंबटक्कारी स्त्री [दे] शेफालिका, पुष्प-प्रधान लता-विशेष ; (दे ५, ४) ।

तंबरत्ती स्त्री [दे] गेहूँ में कुंकुम की छाया ; (दे ५, ५) ।

तंबा स्त्री [दे] गौ, धेनु, गैया ; (दे ५, १ ; गा ४६० ; पाअ ; वज्जा ३४) ।

तंबाय पुं [तामाक] भारतीय ग्राम-विशेष ; (राज) ।

तंबिम पुंस्त्री [ताम्रत्व] अरुणता, ईषद् रक्तता ; (गउड) ।

तंबिय न [ताम्रिक] परिव्राजक का पहनने का एक उपकरण ; (औप) ।

तंबिर वि [दे] ताम्र वर्ण वाला ; (हे २,५६; गउड; भवि)।

तंबिरा [दे] देखो **तंबरत्ती** ; (दे ५, ५) ।

तंबुक्क न [दे] वाद्य-विशेष; "बुक्कतंबुक्कसद्दुक्कडं" (सुपा ५०)।

तंबेरम पुं [स्तम्बेरम] हस्ती, हाथी ; (उप पृ ११७) ।

तंबेही स्त्री [दे] पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष, शेफालिका ; (दे ५, ४) ।

तंबोल न [ताम्बूल] पान; (हे १, १२४ ; कुमा) ।

तंबोलिअ पुं [ताम्बूलिक] तमोली, पान बेचने वाला ; (श्रा १२) ।

तंबोली स्त्री [ताम्बूली] पान का गाछ ; (षड् ; जीव ३) ।

तंभ देखो **थंभ** ; (षड्) ।

तंस वि [त्र्यस्र] त्रि-कोण, तीन कोन वाला ; (हे १, २६ ; गउड ; ठा १ ; गा १० ; प्राप्र ; आचा) ।

तक्क सक [तर्क्] तर्क करना, अनुमान करना, अटकल करना । तक्केमि; (मै १३) । संकृ —**तक्किऊणं**; (आचा)।

तक्क न [तक्र] मठा, छाँछ ; (ओघ ८७ ; सुपा ५८३ ; उप पृ ११६) ।

तक्क पुं [तर्क] १ विमर्श, विचार, अटकल-ज्ञान ; (श्रा १२ ; ठा ६) । २ न्याय-शास्त्र ; (सुपा २८७) ।

तक्कणा स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाष ; (दे ५, ४) ।

तक्कय वि [तर्कक] तर्क करने वाला ; (पण्ह १, ३) ।

तक्कर पुं [तस्कर] चोर ; (हे २, ४ ; औप) ।

तक्कलि } स्त्री [दे] वलयाकार वृक्ष-विशेष; (पण्ण १)।
तक्कली }

तक्का स्त्री [तर्क] देखो **तक्क**=तर्क; (ठा १ ; सूअ १, १३; आचा) ।

तक्काल क्रिवि [तत्काल] उसी समय ; (कुमा) ।

तक्किअ वि [तार्किक] तर्क-शास्त्र का जानकार ; (अच्चु १०१) ।

तक्कियाणं देखो **तक्क**=तर्क् ।

तक्कु पुं [तर्कु] सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, तकला ; (दे ३, १) ।

तक्कुय पुं [दे] स्वजन-वर्ग ; "सम्माणिया सामंता, अहिणंदिया नायरया, परिआसिआ तक्कुयजणा त्ति" (स५२०) ।

तक्ख सक [तक्ष्] छिलना, काटना । तक्खइ ; (षड् ; हे ४, १६४) । कर्म —तक्खिज्जइ ; (कुप्र १७) । वकृ —**तक्खमाण** ; (अणु) ।

तक्ख पुं [तार्क्ष्य] गरुड़ पक्षी; (पाअ) ।

तक्खग पुं [तक्षन्] १ लकड़ी काटने वाला, बढ़ई; २ विश्वकर्मा , शिल्पी विशेष, (हे ३, ५६ ; षड्) । °सिला स्त्री [°शिला] प्राचीन ऐतिहासिक नगर, जो पहले बाहुबलि की राजधानी थी, यह नगर पंजाब में है ; (पउम ४, ३८; कुप्र ५३) ।

तक्खग पुं [तक्षक] १-२ ऊपर देखो । ३ स्वनाम-प्रसिद्ध सर्प-राज ; (उप ६२५) ।

तक्खण न [**तत्क्षण**] १ तत्काल, उसी समय ; (ठा ४, ४)। २ क्रिवि. शीघ्र, तुरन्त ; (पाअ)।
तक्खय देखो **तक्खग** ; (स २०६ ; कुप्र १३६)।
तक्खाण देखो **तक्ख**=तक्षन् ; (हे ३, ५६; षड्)।
तगर देखो **टगर** ; (पण्ह २, ५)।
तगरा स्त्री [**तगरा**] संनिवेश-विशेष; (स ४६८)।
तग्ग न [**दे**] सूत्र-कङ्कण, धागे का कंकण ; (दे ५, १; गउड)।
तग्गंधिय वि [**तद्गन्धिक**] उसके समान गंध वाला ; (प्रासू ३४)।
तच्च वि [**तृतीय**] तीसरा; (सम ८ ; उवा)।
तच्च न [**तत्त्व**] सार, परमार्थ ; (आचा ; आरा ११५)। °**वाय** पुं [°**वाद**] १ तत्त्व-वाद, परमार्थ-चर्चा । २ दृष्टि-वाद, जैन अङ्ग-ग्रन्थ विशेष; (ठा १०)।
तच्च न [**तथ्य**] १ सत्य, सचाई ; (हे २, २१ ; उत्त २८)। २ वि. वास्तविक, सत्य ; (उत्त ३)। °**त्थ** पुं [°**र्थ**] सत्य हकीकत ; (पउम ३, १३)। °**वाय** पुं [°**वाद**] देखा ऊपर °**वाय** ; (ठा १०)।
तच्चं अ [**त्रिः**] तीन वार ; (भग ; सुर २, २६)।
तच्चित्त वि [**तच्चित्त**] उसी में जिसका मन लगा हो वह, तल्लीन ; (विपा १, २)।
तच्छ सक [**तक्ष्**] छिलना, काटना। तच्छइ ; (हे ४, १६४; षड्)। संकृ—**तच्छिय**; (सूअ १, ४,१)। कवकृ—**तच्छिज्जंत** ; (सुर १, २८)।
तच्छण स्त्रीन [**तक्षण**] छिलना, कर्तन ; (पण्ह १, १)। स्त्री—**णा** ; (गाया १, १३)।
तच्छिंड वि [**दे**] कराल, भयंकर ; (दे ५, ३)।
तच्छिज्जंत देखो **तच्छ**।
तच्छिल वि [**दे**] तत्पर ; (षड्)।
तजा देखा **तया**=त्वच् ; (दे १, १११)।
तज्ज सक [**तर्जय्**] तर्जन करना, भर्त्सन करना। तज्जइ ; (भवि)। तज्जेइ ; (गाया १, १८)। वकृ—**तज्जंत**, **तज्जिंत तज्जयंत, तज्जमाण, तज्जेमाण**; (भवि; सुर १२, २३३; गाया १, ८; राज; विपा १, १—पत्र ११)। कवकृ—**तज्जिज्जंत** ; (उप पृ १३४ ; उप १४६ टी)।
तज्जण न [**तर्जन**] भर्त्सन, तिरस्कार ; (औप; उव ; पउम ६५, ५३)।

तज्जणा स्त्री [**तर्जना**] ऊपर देखो; (पण्ह २,१ ; सुपा १)।
तज्जणी स्त्री [**तर्जनी**] प्रथम अंगुली ; (सुपा १ ; कुमा)।
तज्जाय वि [**तज्जात**] समान जाति वाला, तुल्य-जातीय ; (आव ४)।
तज्जाविअ, **तज्जिअ** } वि [**तर्जित**] तर्जित, भर्त्सित ;(स १२२; सुपा २६३ ; भवि)।
तज्जिंत, **तज्जिज्जंत**, **तज्जेमाण** } देखो **तज्ज**।
तट्टवट्ट न [**दे**] आभरण, आभूषण ;
"सणियं सणियं बालत्तणाओ तणुयाइं तट्टवट्टाइं।
अवहरिवि नियघराओ हारेइ रहम्मि खिल्लंता"
(सुपा ३६६)।
तट्टी स्त्री [**दे**] वृति, बाड़ ; (दे ५, १)।
तट्ठ वि [**त्रस्त**] १ डरा हुआ, भीत ; (हे २, १३६ ; कुमा)। २ न. मुहूर्त-विशेष, ; (सम ५१)।
तट्ठ वि [**तष्ट**] छिला हुआ ;(सूअ १, ७)।
तट्ठव न [**त्रस्तप**] मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१)।
तट्ठि, **तट्ठु** } पुं [**त्वष्टृ**] १ तक्षक, विश्वकर्मा ; (गउड)। २ नक्षत्र-विशेष का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)।
तड सक [**तन्**] १ विस्तार करना। २ करना। तडइ ; (हे ४, १३७)।
तड पुंन [**तट**] किनारा, तीर ; (पाअ ; कुमा)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ मध्यस्थ, पक्षपात-हीन ; २ समीप स्थित; (कुमा; दे ३, ६०)।
तडउडा [**दे**] देखो **तडवडा** ; (जीव ३; जं १)।
तडकडिअ वि [**दे**] अनवस्थित ; (षड्)।
तडक्कार पुं [**तटत्कार**] चमकारा; "तडितडक्कारो "(सुपा १३३)।
तडतड अक [**तडतडाय्**] तड तड आवाज करना। वकृ—**तडतडंत, तडतडेंत, तडयडंत**; (राज ; गाया १, ६ ; सुपा १७६)।
तडतडा स्त्री [**तडतडा**] तड़ तड़ आवाज; (स २५७)।
तडप्फड, **तडफड** } अक [**दे**] तड़फना, तड़फड़ाना, व्याकुल होना। तडप्फडइ ; (कुमा ; हे ४, ३६६ ; विवे १०२)। तडफडसि ; (सुर ३, १४८)। वकृ—**तडप्फडंत, तडफडंत** ; (उप ७६८ टी ; सुर १२, १६४ ; सुपा १७६ ; कुप्र २६)।

तडफडिअ वि [दे] १ सब तरफ से चलित, तडफड़ाया हुआ, व्याकुल ; (दे ५, ६ ; स ५८६)।

तडमड वि [दे] चुभित, चोभ-प्राप्त; (दे ५, ७)।

तडयड वि [दे] क्रिया-शील, सदाचार-युक्त ; (सद्दि१०७)।

तडयडंत देखो **तडतडा**।

तडवडा स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, आउली का पेड़; (दे ५,५)।

तडाअ, **तडाग** न [तडाग] तालाव, सरोवर ; (गा ११० ; पि २३१ ; २४०)।

तडि स्त्री [तडित्] बीजली; (पाअ)। °**डंड** पुं [°दण्ड] विद्युद्दंड ; (म्हा)। °**केस** पुं [°केश] राक्षस-वंशीय एक राजा, एक लंका-पति ; (पउम ६, ६६)। °**वेअ** पुं [°वेग] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, १८)।

तडिअ वि [तत] विस्तृत, फैला हुआ ; (पाअ ; णाया १, ८—पत्र १३३)।

तडिआ स्त्री [तडित्] बीजली ; (प्रामा)।

तडिण वि [दे] विरल, अल्पल्प ; (से १३, ५०)।

तडिणी स्त्री [तटिनी] नदी, तरङ्गिणी ; (सण)।

तडिम न [तडिम] १ भित्ति, भींत ; २ कुट्टिम, पाषाण आदि से बँधा हुआ भूमि-तल ; (से २, २)। ३ द्वार के ऊपर का भाग ; (से १२, ६०)।

तडी स्त्री [तटी] तट, किनारा ; (विपा १, १; अनु ६)।

तड्ड, **तड्डव** सक [तन्] १ विस्तार करना। २ करना। तड्डइ, तड्डवइ ; (हे ४, १३७)। भूका—तड्डवीअ ; (कुमा)।

तड्डविअ, **तड्डिअ** वि [तत] विस्तीर्ण, फैला हुआ ; (पाअ ; महा ; कुमा ; सुर ३, ७२)।

तण सक [तन्] १ विस्तार करना। २ करना। तणइ, तणए ; (षड्)। कर्म—तणिज्जए ; (विसे१३८३)।

तण न [दे] उत्पल, कमल; (दे ५, १)।

तण न [तृण] तृण, घास ; (प्राप्र ; उव)। °**इल्ल** वि [°वत्] तृण वाला; (गउड)। °**जीवि** वि [°जीविन्] घास खाकर जीने वाला ; (सुपा ३७०)। °**राय** पुं [°राज] तालवृक्ष, ताड़ का पेड़ ; (गउड)। °**विंटय**, °**वेंटय** पुं [°वृन्तक] एक क्षुद्र जंतु-जाति, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (राज)।

तणय पुं [तनय] पुत्र, लड़का ; (सुपा २४७ ; ४२४)।

तणय वि [दे] संबन्धी ; "मह तणए" (सुर ३, ८७ ; हे ४, ३६१)।

तणयमुद्दिआ स्त्री [दे] अंगुलीयक, अंगुठी; (दे ५, ६)।

तणया स्त्री [तनया] लड़की, पुत्री ; (कुमा)।

तणरासि, **तणरासिअ** वि [दे] प्रसारित, फैलाया हुआ ; (दे ५, ६)।

तणवरंडी स्त्री [दे] उड्डप, डोंगी, छोटी नौका ; (दे ५, ७)।

तणसोल्लि, **तणसोल्लिया** स्त्री [दे] १ मल्लिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष; (दे ५, ६ ; णाया १, १६)। २ वि. तृण-शून्य ; (षड्)।

तणिअ वि [तत] विस्तीर्ण ; (कुमा)।

तणु वि [तनु] १ पतला ; (जी ७)। २ कृश, दुर्बल ; (पंचा १६)। ३ अल्प, थोड़ा ; (दे३, ५१)। ४ लघु, छोटा ; (जीव ३)। ५ सूक्ष्म; (कप्प)। ६ स्त्री. शरीर, काय; (दे२, ५६ ; जी ८)। °**तणुई**, **तणू** स्त्री [°तन्वी] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथ्वी; (ठा ८ ; इक)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°पर्याप्ति] उत्पन्न होते समय जीव ने ग्रहण किए हुए पुद्गलों को शरीर रूप से परिणत करने की शक्ति ; (कम्म ३, १२)। °**ब्भव** वि [°उद्भव] १ शरीर से उत्पन्न; २ पुं. लड़का ; (भवि)। °**ब्भवा** स्त्री [°उद्भवा] लड़की ; (भवि)। °**भू** पुंस्त्री [°भू] १ लड़का ; २ लड़की ; (आक)। °**य** वि [°ज] देखो °**ब्भव** ; (उत्त १४)। °**रुह** पुंन [°रुह] १ केश, बाल ; (रभा)। २ पुं. पुत्र, लड़का; (भवि)। °**वाय** पुं [°वात] सूक्ष्म वायु-विशेष ; (ठा ३, ४)।

तणुअ वि [तनुक] ऊपर देखो ; (पउम १६, ७ ; आव ५ ; भग १५ ; पाअ)।

तणुअ सक [तनय्] १ पतला करना। २ कृश करना, दुर्बल करना। तणुएइ ; (गा ६१ ; काप्र १७४)।

तणुआ, **तणुआअ** अक [तनुकाय्] दुर्बल होना, कृश होना। तणुआइ, तणुआअइ, तणुआअए ; (गा ३० ; २६२ ; ५६)। वकृ—**तणुआअंत** ; (गा २६८)।

तणुआअरअ वि [तनुत्वकारक] कृशता उपजाने वाला, दौर्बल्य-जनक ; (गा ३४८)।

तणुइअ वि [तनूकृत] दुर्बल किया हुआ, कृश किया हुआ; (गा १२२; पउम १६, ४)।

तणुई स्त्री [तन्वी] १ पृथ्वी-विशेष सिद्ध-शिला; (सम२२)। २ पतला शरीर वाली स्त्री ; (षड्)।

तणुईकय वि [**तनूकृत**] पतला किया हुआ ; (पाअ)।
तणुग देखो **तणुअ** ; (जं २ ; ३)।
तणुवी / **तणुवीआ** } देखो **तणुई** ; (हे २, ११३ ; कुमा)।
तणू स्त्री [**तनू**] शरीर, काया; (गा ७४८; पाअ ; दं ५)। २ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी; (ठा ८)। °**अ** वि [°**ज**] १ शरीर से उत्पन्न ; २ पुं. लड़का, पुत्र; (उप ६८६)। °**अतरा** स्त्री [°**कतरा**] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, जिस पर मुक्त जीव रहते हैं, सिद्ध-शिला ; (सम २२)। °**रुह** पुंन [°**रुह**] केश, रोम ; (उप ५९७ टी)।
तणूइय देखो **तणुइअ** ; (गउड)।
तणेण (अप) अ. लिए, वास्ते ; (हे ४,४२५; कुमा)।
तणेसि पुं [**दे**] तृण-राशि ; (दे ५, ३ ; षड्)।
तण्णय पुं [**तर्णक**] वत्स, बछड़ा ; (पाअ ; गा १९ ; गउड)।
तण्णाय वि [**दे**] आर्द्र, गिला ; (दे ५, २; पाअ ; गउड; से १, ३१ ; ११, १२६)।
तण्हा स्त्री [**तृष्णा**] १ प्यास, पिपासा ; (पाअ)। २ स्पृहा, वाञ्छा; (ठा २, ३; औप)। °**लु**, °**लुअ** वि [°**वत्**] तृष्णा वाला, प्यासा; "समरतण्हालू"(पउम ८,८७; ८, ४७)।
तत देखो **तय**=तत ; (ठा ४, ४)।
तत्त न [**तत्त्व**] सत्य स्वरूप, तथ्य, परमार्थ ; (उप ७२८ टी ; पुप्फ ३२०)। °**ओ** अ [°**तस्**] वस्तुतः ; (उप ६८६)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] तत्व का जानकार ; (पंचा १)।
तत्त वि [**तप्त**] गरम किया हुआ ; (सम १२५ ; विपा १, ६ ; दे १, १०५)। °**जला** स्त्री [°**जला**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३)।
तत्त अ [**तत्र**] वहां। °**भव**, °**होंत** वि [°**भवत्**] पूज्य ऐसे आप ; (पि २९३ ; अभि ५६)।
तत्ति स्त्री [**तृप्ति**] तृप्ति, संतोष; (कुमा ; करु २६)। °**ल्ल** वि [°**मत्**] तृप्ति-युक्त ; (राज)।
तत्ति स्त्री [**दे**] १ आदेश, हुकुम ; (दे ५,२० ; सण)। २ तत्परता ; (दे ५, २०)। ३ चिन्ता, विचार ; (गा २; ५१ ; २७३ अ ; सुपा २३७ ; २८०)। ४ वार्ता, बात; (गा २ ; वज्जा २)। ५ कार्य, प्रयोजन ; (पण्ह १, २ ; वव १)।
तत्तिय वि [**तावत्**] उतना; (प्रासू १५६)।
तत्तिल / **तत्तिल्ल** } वि [**दे**] तत्पर; (षड्; दे ५, ३; गा ५५७; प्रासू ५९)।
तत्तु (अप) देखो **तत्थ**=तत्र; (हे ४, ४०४; कुमा)।
तत्तुडिल्ल न [**दे**] सुरत, संभोग ; (दे ५, ६)।
तत्तुरिअ वि [**दे**] रञ्जित ; (षड्)।
तत्तो देखो **तओ** ; (कुमा ; जी २९)। °**मुह** वि [°**मुख**] जिसका मुँह उस तरफ हो वह ; (सुर २, २३४)।
तत्तोहुत्त न [**दे**] तदभिमुख, उसके सामने ; (गउड)।
तत्थ अ [**तत्र**] वहाँ, उसमें ; (हे २, १६१)। °**भव** वि [°**भवत्**] पूज्य ऐसे आप ; (पि २९३)। °**य** वि [°**त्य**] वहाँ का रहने वाला ; (उप ५९७ टी)।
तत्थ वि [**त्रस्त**] भीत ; (हे २, १६१ ; कुमा)।
तत्थरि पुं [**त्रस्तरि**] नय-विशेष ; "तत्थरिनिएण ठविआ सोहउ मज्झ थुई" (अच्चु ४)।
तदा देखो **तया**=तदा ; (गा ९९६)।
तदीय वि [**त्वदीय**] तुम्हारा ; (महा)।
तदो देखो **तओ** ; (हे २, १६०)।
तद्दिअच्चय न [**दे**] नृत्य, नाच ; (दे ५, ८)।
तद्दिअस / **तद्दिअसिअ** / **तद्दिअह** } न [**दे**] प्रतिदिन, अनुदिन, हररोज; (दे ५, ८ ; गउड; पाअ)।
तद्धिय पुं [**तद्धित**] १ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष ; (पगह २, २ ; विसे १००३)। २ तद्धित प्रत्यय की प्राप्ति का कारण-भूत अर्थ ; (अणु)।
तधा देखो **तहा** ; (ठा ३, १ ; ७)।
तन्नय देखो **तण्णय** ; (सुर १४, १७४)।
तन्हा देखो **तण्हा**; (सुर १, २०३ ; कुमा)।
तप्प सक [**तप्**] १ तप करना। २ अक. गरम होना। तप्पइ. तप्पंति ; (पिंग ; प्रासू ५३)।
तप्प सक [**तर्पय्**] तृप्त करना। वकृ -**तप्पमाण** ; (सुर १६, १९)। हेकृ—"न इमो जीवो सक्को तप्पेउं कामभोगेहिं" (आउ ५०)। कृ—**तप्पेयव्व** ; (सुपा २३२)।
तप्प न [**तल्प**] शय्या, बिछौना ; (पाअ)। °**अ** वि [°**ग**] शय्या पर जाने वाला, सोने वाला ; (पगह १, २)।
तप्प पुंन [**तप्र**] डोंगी, छोटी नौका ; (पगह १, १ ; विसे ७०६)।
तप्पक्खिअ वि [**तत्पाक्षिक**] उस पक्ष का ; (श्रा १२)।
तप्पज्ज न [**तात्पर्य**] तात्पर्य ; (राज)।

तप्पण न [**तर्पण**] १ सक्तु, सतुआ ; (पराह २, ५)। २ स्त्रीन. तृप्ति-करण, प्रीणन ; (सुपा ११३)। ३ स्निग्ध वस्तु से शरीर की मालिश ; (णाया १, १३)।
तप्पभिइं अ [**तत्प्रभृति**] तबसे, तबसे लेकर ; (कप्प ; णाया १, १)।
तप्पमाण देखो **तप्प**=तर्पय्।
तप्पर वि [**तत्पर**] आसक्त ; (दे ५, २०)।
तप्पुरिस पुं [**तत्पुरुष**] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष; (अणु)।
तप्पेयव्व देखो **तप्प**=तर्पय्।
तब्भत्तिय वि [**तद्भक्तिक**] उस का सेवक ; (भग ५,७)।
तब्भव पुं [**तद्भव**] वही जन्म, इस जन्म के समान पर-जन्म। °**मरण** न [°**मरण**] वह मरण जिससे इस जन्म के समान हो परलोक में भी जन्म हो, यहां मनुष्य होनेसे आगामी जन्म में भी जिससे मनुष्य हो ऐसा मरण; (भग २१, १)।
तब्भारिय पुं [**तद्भार्य**] दास, नौकर, कर्मचारी, कर्मकर ; (भग ३, ७)।
तब्भारिय पुं [**तद्भारिक**] ऊपर देखो ; (भग ३,७)।
तब्भूम वि [**तद्भौम**] उसी भूमि में उत्पन्न ; (बृह १)।
तम पुं [**दे**] शोक, अफसोस ; (दे ५, १)।
तम पुंन [**तमस्**] १ अन्धकार ; २ अज्ञान ; (हे १,३२ ; वि ४०६ ; औप ; धर्म २)। °**तम** पुं [°**तम**] सातवीं नरक-पृथिवी का जीव ; (कम्म ५; पंच ५)। °**तमप्पभा** स्त्री [°**तमप्रभा**] सातवीं नरक-पृथिवी ; (अणु)। °**तमा** स्त्री [°**तमा**] सातवीं नरक-पृथिवी ; (सम ६६ ; ठा ७)। °**तिमिर** न [°**तिमिर**] १ अन्धकार ; (बृह ४)। २ अज्ञान ; (पडि)। ३ अन्धकार-समूह ; (बृह ४) । °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] छठवीं नरक-पृथिवी ; (पण्ण १)।
तमंग पुं [**तमङ्ग**] मत्तवारण, घर का बरण्डा ; (सुर १३, १५६)।
तमंधयार पुं [**तमोन्धकार**] प्रबल अन्धकार; (पउम १७, १०)।
तमण न [**दे**] चुल्हा, जिसमें आग रख कर रसोई की जाती है वह ; (दे ५, २)।
तमणि पुंस्त्री [**दे**] १ भुज, हाथ ; २ भूर्ज, वृक्ष-विशेष की छाल ; (दे २, २०)।
तमस न [**तमस्**] अन्धकार ; "तमसाउ मे दिसा य" (पउम ३६ ८)।
तमस्सई स्त्री [**तमस्वती**] घोर अन्धकार वाली रात; (बृह १)।
तमा स्त्री [**तमा**] १ छठवीं नरक-पृथिवी; (सम ६६ ; ठा ७)। २ अधोदिशा ; (ठा १०)।
तमाड सक [**भ्रमय्**] घुमाना, फिराना। तमाडइ ; (हे ४, ३०)। वकृ—**तमाडंत**; (कुमा)।
तमाल पुं [**तमाल**] १ वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी ; भत ४२)। २ न. तमाल वृक्ष का फूल ; (से १,६३)।
तमिस न [**तमिस्र**] १ अन्धकार ; (सुअ १, ५, १)। °**गुहा** स्त्री [°**गुहा**] गुफा-विशेष; (इक)।
तमिसंधयार पुं [**तमिस्रान्धकार**] प्रबल अन्धकार ; (सुअ १, ५, १)।
तमिस्स देखो **तमिस** ; (दे २, २६)।
तमी स्त्री [**तमी**] रात्रि, रात ; (गउड)।
तमुक्काय पुं [**तमस्काय**] अंधकार-प्रचय ; (ठा ४,२)।
तमुय वि [**तमस्**] १ जन्मान्ध, जात्यन्ध ; २ अयन्त अज्ञानी ; (सुअ २, २)।
तमोकसिय त्रि [**तमःकाषिक**] प्रच्छन्न क्रिया करने वाला; (सुअ २, २)।
तम्म अक [**तम्**] खेद करना। तम्मइ ; (गा ४८३)।
तम्मण त्रि [**तन्मनस्**] तल्लीन, तच्चित ; (विपा १, २)।
तम्मय वि [**तन्मय**] १ तल्लीन, तत्पर। २ उसका विकार; (पराह १, १)।
तम्मि न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (गउड)।
तम्मिर वि [**तमित्र**] खेद करने वाला ; (गा ५८६)।
तय वि [**तत**] विस्तार-युक्त ; (दे १, ४६ ; से २, ३१ ; महा)। २ न. वाद्य-विशेष ; (ठा २, २)।
तय न [**त्रय**] तीन का समूह, त्रिक ; "कालत्तए वि न मयं" (चउ ४५ ; श्रा २८)।
तय° देखो **तया**=तदा। °**प्पभिइ** अ [°**प्रभृति**] तब से ; (स ३१६)।
तय° देखो **तया**=त्वच्। °**क्खाय** वि [°**खाद**] त्वचा को खाने वाला; (ठा ४, १)।
तया अ [**तदा**] उस समय ; (कुमा)।
तया स्त्री [**त्वच्**] १ त्वचा, छाल, चमड़ी ; (सम ३६)। २ दालचीनी ; (भत ४१)। °**मंत** वि [°**मत्**] त्वचा

वाला ; (णाया १, १)। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति ; (जीव १)।

तयाणंतर न [**तदनन्तर**] उसके बाद ; (औप)।

तयाणि, **तयाणिं** } अ [**तदानीम्**] उस समय ; (पि ३५८ ; हे १, १०१)।

तयाणुग वि [**तदनुग**] उसका अनुसरण करने वाला ; (सूअ १, १, ४)।

तर अक [**त्वर्**] त्वरा करना। तर ; (विसे २६०१)।

तर अक [**शक्**] समर्थ होना, सकना। तरइ ; (हे ४, ८६)। वकृ— **तरंत**; (ओघ ३२४)।

तर सक [**तॄ**] तैरना। तरइ ; (हे ४,८६)। कर्म—तरिज्जइ, तीरइ; (हे ४, २५० ; गा ७१)। वकृ—**तरंत, तरमाण**; (पाअ; सुपा १८२)। हेकृ—**तरिउं, तरीउं**; (णाया १,१४; हे २,१६८)। कृ—**तरिअव्व** ; (श्रा १२; सुपा २७६)।

तर न [**तरस्**] १ वेग ; २ बल, पराक्रम। °**मल्लि** वि [°**मल्लि**] १ वेग वाला। २ बल वाला। °**मल्लिहायण** वि [°**मल्लिहायन**] तरुण, युवा ; (औप)।

तरंग पुं [**तरङ्ग**] १ कल्लोल, वीचि ; (पण्ह १, ३ ; औप)। °**णंदण** न [°**नन्दन**] नृप-विशेष ; (दंस ३)। °**मालि** पुं [°**मालिन्**] समुद्र, सागर ; (पाअ)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ एक नायिका ; २ कथा-ग्रन्थ विशेष ; (दंस ३)।

तरंगि वि [**तरङ्गिन्**] तरंग-युक्त ; (गउड ; कप्पू)।

तरंगिअ वि [**तरङ्गित**] तरंग-युक्त ; (गउड ; से ८,११; सुपा १५७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] समुद्र, सागर ; (वज्जा १५६)।

तरंगिणी स्त्री [**तरङ्गिणी**] नदी, सरिता ; (प्रासू ६६ ; गउड ; सुपा ५३८)।

तरंड, **तरंडय** } पुंन [**तरण्ड, °क**] डोंगी, नौका; (सुपा २७२; ५०० ; सुर ८, १०६ ; पुप्फ १०५)।

तरग वि [**तर, °क**] तैरने वाला ; (ठा ४, ४)।

तरच्छ पुंस्त्री [**तरक्ष**] श्वापद जन्तु-विशेष, व्याघ्र की एक जाति ; (पण्ह १, १ ; णाया १,१ ; स २५७)। स्त्री—°**च्छी** ; (पि १२३)। °**भल्ल** पुंस्त्री [°**भल्ल**] श्वापद जन्तु-विशेष ; (पउम ४२, १२)।

तरट्टा, **तरट्टी** } स्त्री [**दे**] प्रगल्भ स्त्री ; "झाणेण ट्टद्दि चिरं तरुणी तरट्टी" (कप्पू ; काप्र ५६६)। "अट्टेव आगयाओ तरुणतरट्टाओ एयाओ" (सुपा ४२)।

तरण न [**तरण**] १ तैरना ; (श्रा १४ ; स ३५६ ; सुपा २६२)। २ जहाज, नौका ; (विसे १०२७)।

तरणि पुं [**तरणि**] १ सूर्य, रवि ; (कुमा)। २ जहाज, नौका ; ३ घृतकुमारी का पेड़ ; ४ अर्क वृक्ष, अकवन वृक्ष ; (हे १, ३१)।

तरतम वि [**तरतम**] न्यूनाधिक, "तरतमजोगजुत्तेहिं" (कप्प)।

तरमाण देखो **तर**=**तॄ**।

तरल वि [**तरल**] चंचल, चपल ; (गउड ; पाअ ; कप्पू ; प्रासू ६६ ; सुपा २०४ ; सुर २, ८६)।

तरल सक [**तरलय्**] चंचल करना, चलित करना। तरलेइ; (गउड)। वकृ—**तरलेंत** ; (सुपा ४७०)।

तरलण न [**तरलन**] तरल करना, हिलाना ; "कणणाडीणं कुणंता कुरलतरलणं" (कप्पू)।

तरलाविअ वि [**तरलित**] चंचल किया हुआ, चलायमान किया हुआ ; (गउड ; भवि)।

तरलि वि [**तरलिन्**] हिलाने वाला ; (कप्पू)।

तरलिअ वि [**तरलित**] चंचल किया हुआ ; (गा ७८ ; उप पृ ३३ ; सार्ध ११५)।

तरवट्ट पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, चकवड, पमाड, पवार ; (दे ५, ५ ; पाअ)।

तरस न [**दे**] मांस ; (दे ५, ४)।

तरसा अ [**तरसा**] शीघ्र, जल्दी ; (सुपा ५८२)।

तरा स्त्री [**त्वरा**] जल्दी, शीघ्रता ; (पाअ)।

तरिअव्व देखो **तर**=**तॄ**।

तरिअव्व न [**दे**] उडुप, एक तरह की छोटी नौका; (दे ५,७)।

तरिउ वि [**तरीतृ**] तैरने वाला ; (विसे १०२७)।

तरिउं देखो **तर**=**तॄ**।

तरिया स्त्री [**दे**] दूध आदि का सार, मलाई ; (प्रभा ३३)।

तरिहि अ [**तर्हि**] तो, तब ; (सुर १,१३२ ; ११,७१)।

तरी स्त्री [**तरी**] नौका, डोंगी ; (सुपा १११ ; दे ६, ११० ; प्रासू १४६)।

तरु पुं [**तरु**] वृक्ष, पेड़, गाछ ; (जी १४ ; प्रासू २६)।

तरुण वि [**तरुण**] जवान, मध्य वय वाला ; (पउम ५,१६८)।

तरुणग, **तरुणय** } वि [**तरुणक**] बालक, किशोर ; (सूअ १, ३, ४)। २ नवीन, नया ; (भग १५)। स्त्री— °**णिगा**, °**णिया** ; (आचा २, १)।

तरुणरहस पुंन [**दे**] रोग, बिमारी ; (ओघ [illegible]

तरुणिम पुंस्त्री [**तरुणिमन्**] यौवन, जवानी ; (क[illegible]

तरुणी स्त्री [तरुणी] युवति स्त्री; (गउड; स्वप्न ८२; महा)।

तल सक [तल्] तलना, भूजना, तेल आदि में भूनना। तलेज्जा; (पि ४६०)। वकृ—**तलेंत**; (विपा १, ३)। हेकृ—**तलिज्जिउं**; (स २५८)।

तल न [दे] १ शय्या, बिछौना; (दे ५, १६; षड्)। २ पुं. ग्रामेश, गाँव का मुखिया; (दे ५, १६)।

तल पुं [तल] १ वृक्ष-विशेष, ताड़ का पेड़; (गाया १, १ टी—पत्र ४३; पउम ५३, ७६)। २ न. स्वरूप; "धरणितलंसि" (कप्प), "कासवितलम्मि" (कुमा)। ३ हथेली; (जं १)। ४ तला, भूमिका; "सत्ततले पासाए" (सुर २, ८१)। ५ अधोभाग, नीचे; (गाया १, १)। ६ हाथ, हस्त; (कप्प; पगह २,५)। ७ मध्य खगड; (ठा ८)। ८ तलवा, पानी के नीचे का भाग; (पगह १, ३)। °**ताल** पुंन [°ताल] १ हस्त-ताल, ताली; २ वाद्य-विशेष; (कप्प)। °**प्पहार** पुं [°प्रहार] तमाचा, चपेटा; (दे)। °**भंगय** न [°भङ्गक] हाथ का आभूषण-विशेष; (औप)। °**वट्ट** न [°पट्ट] बिछौने की चद्दर; (वज्जा १०४)। °**वट्ट** न [°पत्र] ताड़ वृक्ष की पत्ती; (वज्जा १०४)।

तलअंट सक [भ्रम्] भ्रमण करना, फिरना। तलअंटइ; (हे ४, १६१)।

तलआगत्ति पुं [दे] कूप, इनारा; (दे ५, ८)।

तलओडा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष; (पगण १)।

तलण न [तलन] तलना, भर्जन; (पगह १, १)।

तलप्प अक [तप्] तपना, गरम होना। तलप्पइ; (पिंग)।

तलप्फल पुं [दे] शालि, व्रीहि; (दे ५, ७)।

तलवत्त पुं [दे] १ कान का आभूषण-विशेष; (दे ५, २१; पाअ)। २ वरांग, उत्तमांग; (दे ५, २१)।

तलवर पुं [दे.तलवर] नगर-रक्षक, कोटवाल; (गाया १, १; सुपा ३; ७३; औप; महा; ठा ६; कप्प; राय; अणु; उवा)।

तलविंट
तलवेंट
तालवोंट } न [तालवृन्त] व्यजन, पंखा; (हे १, ६७; प्राप्र)।

तलारिअ वि [दे] १ गालित; २ मुग्ध, मूर्ख; (दे ५, ६)।

तलहट्ट सक [सिच्] सींचना। तलहट्टइ, तलहट्टए; (सुपा ३६३)। वकृ—**तलहट्टंत**; (सुपा ३६३)।

तलाई स्त्री [तडागिका] छोटा तालाव; (कुमा)।

तलाग
तलाय } न [तडाग] तालाव, सरोवर; (औप; हे १, २०३; प्राप्र; गाया १, ८; उव)।

तलार पुं [दे] नगर-रक्षक, कोटवाल; (दे ५, ३; सुपा २३३; ३६१; षड्; कुप्र १५५)।

तलारक्ख पुं [दे.तलारक्ष] ऊपर देखो; (श्रा १२)।

तलाव देखो **तलाग**; (उवा; पि २३१)।

तलिअ वि [तलित] भूना हुआ, तला हुआ; (विपा १,२)।

तलिमा
तलिगा } न [दे] उपानह, जूता; (ओघ ३६; ६८; बृह १)।

तलिण वि [तलिन] १ प्रतल, सूक्ष्म, बारीक; (पगह १, ४; औप; दे ५, ६)। २ तुच्छ, क्षुद्र; (से १०,७)। ३ दुर्बल; (पाअ)।

तलिम पुंन [दे] १ शय्या, बिछौना; (दे ५, २०; पाअ; गाया १,१६—पत्र २०१; २०२; गउड)। २ कुट्टिम, फरस-बन्द जमीन; (दे ५, २०; पाअ)। ३ घर के ऊपर की भूमि; ४ वास-भवन, शय्या-गृह; ५ भ्राष्ट्र, भूनने का भाजन; (दे ५, २०)।

तलिमा स्त्री [तलिमा] वाद्य-विशेष; (विसे ७८ टी; गांदि)।

तलुण देखो **तरुण**; (गाया १, १६; राय; वा १५)।

तलेर [दे] देखो **तलार**; (भवि)।

तल्ल न [दे] १ पल्वल, छोटा तालाव; (दे ५, १६)। २ तृण-विशेष, बरू; (दे ५, १६; पगह २, ३)। ३ शय्या, बिछौना; (दे ५, १६; षड्)।

तल्लक पुं [तल्लक] सुरा-विशेष; (राज)।

तल्लड न [दे] शय्या, बिछौना; (दे ५, २)।

तल्लिच्छ वि [दे] तत्पर, तल्लीन; (दे ५, ३; सुर १, १३; पाअ)।

तल्लेस
तल्लेस्स } वि [तल्लेश्य] उसी में जिसका अध्यवसाय हो, तल्लीन, तदासक्त; (विपा १, २; राज)।

तल्लोविल्लि स्त्री [दे] तडफडना, तडफना, व्याकुल होना; "थोडइ जलि जिम मच्छलिया तल्लोविल्लि करंत" (कुप्र ८६)।

तव अक [तप्] १ तपना, गरम होना। २ सक. तपश्चर्या करना। तवइ; (हे १, २३१; गा २२४)। भूका—तविंसु; (भग)। वकृ—**तवमाण**; (श्रा २७)।

तव सक [तपय्] गरम करना। तवेइ; (भग)।

तव पुंन [**तपस्**] तपस्या, तपश्चर्या ; (सम ११ ; नव २६ ; प्रासू २८) । °**गच्छ** पुं [°**गच्छ**] जैन मुनिओं की एक शाखा, गण-विशेष ; (संति १४) । °**गण** पुं [°**गण**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (द्र ७०) । °**चरण**, °**च्चरण** न [°**चरण**] १ तपश्चर्या, तपः-करण ; (सुअ १, ५, १ ; उप पृ ३६० ; अभि १४७) । २ तप का फल, स्वर्ग का भोग ; (गाया १, ६) । °**चरणि** वि [°**चरणिन्**] तपस्या करने वाला ; (ठा ५, ३) । देखो **तवो**° ।

तव देखो **थव** ; (हे २, ४६ ; षड्) ।

तवग्ग पुं [**तवर्ग**] 'त' से लेकर 'न' तक के पाँच अक्षर । °**पविभत्ति** न [°**प्रविभक्ति**] नाट्य-विशेष; (राय) ।

तवण पुं [**तपन**] १ सूर्य, सूरज ; (उप १०३१ टी; कुप्र २१५) । २ रावण का एक प्रधान सुभट ; (से १३, ८५) । ३ न. शिखर-विशेष ; (दीव) ।

तवणा स्त्री [**तपना**] आतापना ; (सुपा ४१३) ।

तवणिज्ज न [**तपनीय**] सुवर्ण, सोना ; (पगह १, ४ ; सुपा ३६) ।

तवणी स्त्री [**दे**] १ भक्ष्य , भक्षण-योग्य कण आदि ; (दे ५, १ ; सुपा ५४८ ; वज्जा ६२) । २ धान्य को क्षेत्र से काट कर भक्षण योग्य बनाने की क्रिया ; (सुपा ५४६) । ३ तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र ; (दे २, ५६) ।

तवणीय देखो **तवणिज्ज** ; (सुपा ४८) ।

तवमाण देखो **तव**=तप् ।

तवय वि [**दे**] व्यापृत, किसी कार्य में लगा हुआ ; (दे ५, २) ।

तवय पुं [**तपक**] तवा, भूनने का भाजन ; (विपा १, ३ ; सुपा ११८ ; पाअ) ।

तवस्सि वि [**तपस्विन्**] १ तपस्या करने वाला ; (सम ५१; उप ८३३ टी) । २ पुं. साधु, मुनि, ऋषि ; (स्वप्न१८)।

तविअ वि [**तप्त**] तपा हुआ, गरम ; (हे २, १०५; पाअ)।

तविअ वि [**तापित**] १ गरम किया हुआ ; २ संतापित ; "एयाए को न तविओ, जयम्मि लच्छीए सच्छंदं" (सुपा २०४ ; महा ; पिंग) ।

तविआ स्त्री [**तापिका**] तवा का हाथा; (दे १, १६३) ।

तवु देखो **तउ**; (पउम ११८, ८) ।

तवो देखो **तओ** ; (रंभा) ।

तवो° देखो **तव**=तपस् । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] तपः-करण; (सम ११) । °**धण** पुं [°**धन**] ऋषि, मुनि; (प्रारू) । °**धर** पुं [°**धर**] तपस्वी, मुनि ; (पउम२०, १६५ ; १०३, १०८) । °**वण** न [°**वन**] ऋषि का आश्रम ; (उप ७४५ ; स्वप्न १६) ।

तव्वणिय वि [**दे**] सौगत, बौद्ध, बुद्ध-दर्शन का अनुयायी ; "तव्वणियाण बियं विसयसुहकुसत्थभावणाधणियं" (विसे १०४१) ।

तव्वन्निग वि [**दे. तृतीयवर्णिक**] तृतीय आश्रम में स्थित; (उप पृ २६८) ।

तव्विह वि [**तद्विध**] उसी प्रकार का ; (भग) ।

तस अक [**त्रस्**] डरना, त्रास पाना । तसइ ; (हे४, १९८)। कृ—**तसियव्व** ; (उप ३३६ टी) ।

तस पुं [**त्रस**] १ स्पर्श-इन्द्रिय से अधिक इन्द्रिय वाला जीव, द्वीन्द्रिय आदि प्राणी ; (जीव १ ; जो २) । २ एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने आने की शक्ति वाला प्राणी ; (निचू १२) । °**काइय** पुं [°**कायिक**] जंगम प्राणी, द्वीन्द्रि-यादि जीव ;(पगह१, १) । °**काय** पुं [°**काय**] १ त्रस-समूह ; (ठा२, १) । २ जंगम प्राणी ; (आचा) । °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव त्रस-काय में उत्पन्न होता है ; (कम्म १ ; सम ६७) । °**रेणु** पुं [°**रेणु**] परिमाण-विशेष, बतीस हजार सात सौ अठसठ पर-माणुओं का एक परिमाण ; (अणु ; पव२५४) । °**वाइया** स्त्री [°**पादिका**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जीव १) ।

तसण न [**त्रसन**] १ स्पन्दन, चलन, हिलन ; (राज) । २ पलायन ; (सूअ १, ७) ।

तसर देखो **टसर** ; (कप्पू) ।

तसिअ वि [**दे**] शुष्क, सूखा ; (दे ५, २) ।

तसिअ वि [**तृषित**] तृषातुर, पिपासित ; (रयण ८४) ।

तसिअ वि [**त्रस्त**] भीत, डरा हुआ ; (जीव ३ ; महा) ।

तसियव्व देखो **तस**=त्रस् ।

तसेयर वि [**त्रसेतर**] एकेन्द्रिय जीव, स्थावर प्राणी; (सुपा १६८) ।

तह अ [**तथा**] १ उसी तरह ; (कुमा ; प्रासू१६ ; स्वप्न१०)। २ और, तथा ; (हे १, ६७) । ३ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (निचू १) । °**क्कार** पुं [°**कार**] 'तथा' शब्द का उच्चारण ; (उत्त २६) । °**णाण** वि

[°ज्ञान] प्रश्न के उत्तर को जानने वाला ; (ठा ६) । २ न. सत्य ज्ञान ; (ठा १०) । °त्ति अ [इति] स्वीकार-द्योतक अव्यय, वैसा ही (जैसा आप फरमाते हैं) ; (णाया १, १) । °य अ [°च] १ उक्त अर्थ की दृढ़ता-सूचक अव्यय ; २ समुच्चय-सूचक अव्यय ; (पंचा २) । °वि अ [°पि] तो भी ; (गउड) । °विह वि [°विध] उस प्रकार का ; (सुपा ४५६) । देखो **तहा** ।

तह वि [**तथ्य**] तथ्य, सत्य, सच्चा; (सूअ १, १३) ।

तह पुं [**तथ**] आज्ञा-कारक, दास, नौकर ; (ठा४, २—पत्र २१३) ।

तहं देखो **तह**=तथा ; (औप) ।

तहरी स्त्री [**दे**] पङ्क वाली सुरा ; (दे ५, २) ।

तहल्लिआ स्त्री [**दे**] गो-वाट, गौओं का बाडा ; (दे५, ८) ।

तहा देखो **तह**=तथा ; (कुमा ; गउड ; आचा ; सुर ३, २७) । °गय पुं [°गत] १ मुक्त आत्मा ; २ सर्वज्ञ ; (आचा) । °भूय वि [°भूत] उस प्रकार का ; (पउम २२, ६५) । °रूव वि [°रूप] उस प्रकार का; (भग १५) । °वि वि [°वित्] १ निपुण, चतुर; २ पुं. सर्वज्ञ ; (सूअ१, ४,१) । °हि अ [°हि] वह इस प्रकार ; (उप ६८६ टी) ।

तहि देखो **तह**=तथा ;(गा ८७८ ; उत ६) ।

तहिं } अ [**तत्र**] वहां, उसमें , (गा २०६ ; प्राप्र ; गा
तहिँ } २३४ , ऊरु १०५) ।

तहिय वि [**तथ्य**] सत्य, सच्चा, वास्तविक ; (णाया१, १२) ।

तहियं अ [**तत्र**] वहां, उसमें ; (विसे २७८) ।

तहेय } अ [**तथैव**] उसी तरह, उसी प्रकार ; (कुमा ;
तहेव } षड्) ।

ता अ [**तद्**] उससे, उस कारण से ; (हे ४, २७८ ; गा ४६ ; ६७ ; उव) ।

ता देखो **ताव**=तावत् ; (हे १, २७१ ; गा१४१ ; २०१) ।

ता अ [**तदा**] तब, उस समय ; (रंभा ; कुमा ; सण) ।

ता अ [**तर्हि**] तो, तब; (रंभा; कुमा) ।

ता स्त्री [**ता**] लक्ष्मी ; (सुर १६, ४८) ।

ता° स [**तद्**] वह । °गंध पुं [°गन्ध] १ उसका गन्ध ; २ उसके गन्ध के समान गन्ध; (पण्ण१७) । °फास पुं [°स्पर्श] १ उसका स्पर्श ; २ वैसा स्पर्श ; (पण्ण १७) । °रस पुं [°रस] १ वह स्पर्श; २ वैसा स्पर्श; (पण्ण१७) । °रूव न [°रूप] १ वह रूप; २ वैसा रूप ; (पण्ण १७—पत्र ५२२) ।

ताअ देखो **ताव**=ताप ; (गा ७६७ ; ८१४ ; हेका५०) ।

ताअ पुं [**तात**] १ तात, पिता, बाप ; (सुर १, १२३ ; उत्त १४) । २ पुत्र, वत्स ; (सूअ १, ३, २) ।

ताअ सक [**त्रै**] रक्षण करना । कृ—**तायव्व** ;(श्रा१२) ।

ताइ वि [**त्यागिन्**] त्याग करने वाला ; (गा २३०) ।

ताइ वि [**तायिन्**] रक्षक, परिपालक ; (उत ८) ।

ताइ वि [**तापिन्**] ताप-युक्त ; (सूअ १, १५) ।

ताइ वि [**त्रायिन्**] रक्षक, रक्षण करने वाला ; (उ २१, २२) ।

ताइअ वि [**त्रात**] रक्षित ; (उव) ।

ताउं (अप) देखो **ताव**=तावत् ; (कुमा) ।

ताठा (चूपै) देखो **दाढा** ; (हे ४, ३२५) ।

ताड सक [**ताडय्**] १ ताड़न करना, पीटना । २ प्रेरणा करना, आघात करना । ३ गुणाकार करना । ताडइ ; (हे ४, २७) । भवि—ताडइस्सं; (पि २४०) । वकृ—**ताडिंत**; (काल) । कवकृ—**ताडिज्जमाण**, **ताडीअंत**, **ताडीअमाण** ; (सुपा २६ ; पि २४० ; अभि १५१) । हेकृ—**ताडिउं** ; (कप्पू) । कृ—**ताडिअ** ; (उत्त१६) ।

ताड पुं [**ताल**] ताड़ क ड़ (स २५६) ।

ताडंक पुं [**ताडङ्क**] कान का आभूषण-विशेष, कुण्डल ; (दे ६, ६३ ; कप्पू ; कुमा) ।

ताडण न [**ताडन**] १ ताड़न, पीटना ; (उप ६८६ टी ; गा ५४६) । २ प्रेरणा, आघात ; (से १२, ८३) ।

ताडाविय वि [**ताडित**] पीटवाया गया ; (सुपा २८८) ।

ताडिअ देखो **ताड**=ताडय् ।

ताडिअ वि [**ताडित**] १ जिसका ताडन किया गया हो वह, पीटा हुआ ; (पाअ) । २ जिसका गुणाकार किया गया हो वह; "इक्कासीई सा करणकारणाणुमइताडिआ होइ" (श्रा६) ।

ताडिअय न [**दे**] रोदन, रोना ; (दे ५,१०) ।

ताडिज्जमाण देखो **ताड** = ताडय् ।

ताडी स्त्री [**ताडी**] वृक्ष-विशेष ; (गउड) ।

ताडीअंत } देखो **ताड**=ताडय् ।
ताडीअमाण }

ताण न [**त्राण**] १ शरण, रक्षण कर्ता ; (सुपा ५७४) । २ रक्षण ; (सम ५१) ।

ताण पुं [**तान**] संगीत-प्रसिद्ध स्वर-विशेष; "ताणा एगूणपण्णासं" (अणु) ।

ताणिअ वि [**तानित**] ताना हुआ ; (ती १५)।
तादिस देखो **तारिस** ; (गा ७३८ ; प्रासू ३४)।
ताम देखो **तम्म**=तम्। तामइ ; (गा ८५३)।
ताम (अप) देखो **ताव**=तावत् ; (हे४, ४०६ ; भवि)।
तामर वि [**दे**] रम्य, सुन्दर ; (दे ५, १० ; पाअ)।
तामरस न [**तामरस**] कमल, पद्म; (दे ५, १०; पाअ)।
तामरस न [**दे**] पानी में उत्पन्न होने वाला पुष्प; (दे५,१०)।
तामलि पुं [**तामलि**] स्वनाम-ख्यात एक तापस ; (भग ३, १ ; श्रा ६)।
तामलित्ति स्त्री [**ताम्रलिप्ति**] एक प्राचीन नगरी, वंग देश की प्राचीन राजधानी ; (उप ६८८ ; भग ३, १ ; पण्ण१)।
तामलित्तिया स्त्री [**ताम्रलिप्तिका**] जैन मुनि-वंश की एक शाखा ; (कप्प)।
तामस वि [**तामस**] तमोगुण वाला ; (पउम ८, ५० ; कुप्र ४२८)। °**त्थ** न [°**ास्त्र**] कृष्ण वर्ण का अस्त्र-विशेष; (पउम ८,५०)।
तामहि } (अप) देखो **ताव**=तावत् ; (षड् ; भवि ; पि
तामहिं } २६१ ; हे ४, ४०६)।
तायत्तीसग पुं [**त्रायस्त्रिंशक**] गुरु-स्थानीय देव-जाति ; (ठा ३, १ ; कप्प)।
तायत्तीसा स्त्री [**त्रयस्त्रिंशत्**] १ संख्या-विशेष, तेत्तीस ; २ तेत्तीस संख्या वाला, तेत्तीस; "तायत्तीसा लोगपाला" (ठा; पि ४४७ ; कप्प)।
तायव्व देखो **ताअ**=त्रै।
तार वि [**तार**] १ निर्मल, स्वच्छ ; (से ६, ४२) । २ चमकता, देदीप्यमान ; (पाअ)। ३ अति ऊँचा ; (से ६, ४)। ४ अति ऊँचा स्वर ; (राय ; गा ४६४)। ५ न. चाँदी ; (ती २)। ६ पुं. वानर-विशेष ; (से १, ३४)। °**वई** स्त्री [°**वती**] राज-कन्या ; (आचू ४)।
तारंग न [**तारङ्ग**] तरंग-समूह ; (से ६, ४२)।
तारग वि [**तारक**] तारने वाला, पार उतारने वाला ; (उप पृ ३२)। २ पुं. नृप-विशेष, द्वितीय प्रतिवासुदेव; (पउम ५, १५६)।३ सूर्य आदि नव ग्रह ; (ठा६)। देखो **तारय**।
तारगा स्त्री [**तारका**] १ नक्षत्र; (सूअ २, ६)। २ एक इन्द्राणी, पूर्णभद्र-नामक इन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ४, १)। देखो **तारया**।
तारण न [**तारण**] १ पार उतारना ; (सुपा २५७)। २ वि. तारने वाला ; (सुपा ४१७)।
तारत्तर पुं [**दे**] मुहूर्त ; (दे ५, १०)।
तारय देखो **तारग** ; (सम १; प्रासू १०१)। ४ न. छन्द-विशेष ; (पिंग)।
तारया देखो **तारगा**। ३ आँख की तारा ; (गउड ; गा १४८ ; २५४)।
तारा स्त्री [**तारा**] १ आँख की पुतली ; (गा ४११ ; ४३५)। २ नक्षत्र ; (ठा ५, १ ; से १,३४)। ३ सुग्रीव की स्त्री ; (से१, ३४)। ४ सुभूम चक्रवर्ती की माता ; (सम १५२)। ५ नदी-विशेष ; (ठा १०)। ६ बौद्धों की शासन-देवी ; (कुप्र ४४२)। °**उर** न [°**पुर**] तारंगा-स्थान; (कुप्र ४४२)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक राज-कुमार ; (धम्म ७२ टी)। °**तणय** पुं [°**तनय**] वानर-विशेष, अङ्गद ; (से१३, ६७)। °**पह** पुं [°**पथ**] आकाश, गगन ; (अणु)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] चन्द्रमा ; (उप ३२० टी)। °**मेत्ती** स्त्री [°**मैत्री**] निःस्वार्थ मित्रता ; (कप्पू)। °**यण** न [°**यन**] कनीनिका का चलना, आँख की पुतली का हिलन, "भग्गं तारायणं नियइ" (सुपा १८७)। °**वइ** पुं [°**पति**] चन्द्रमा; (गउड)।
तारिम वि [**तारिम**] तरणीय, तैरने योग्य ; (भास ६३)।
तारिय वि [**तारित**] पार उतारा हुआ ; (भवि)।
तारिया स्त्री [**तारिका**] तारा के आकार की एक प्रकार की विभूषा, टिकली, टिकिया ; "विचित्तलंबंततारियाइन्नं" (सुर ३, ७१)।
तारिस वि [**तादृश**] वैसा, उस तरह का ; (कप्प ; प्राप्र ; कुमा)। स्त्री—°**सी** ; (प्रासू १२५)।
तारुण्ण } न [**तारुण्य**] तरुणता, यौवन ; (गउड ; कप्पू;
तारुन्न } कुमा ; सुपा ३१६)।
ताल देखो **ताड**=ताडय्। तालेइ ; (पि २४०)। वकृ—**तालेमाण** ; (विपा १, १)। कवकृ—**तालिज्जंत, तालिज्जमाण** ; (पउम ११८, १० ; पि २४०)।
ताल सक [**तालय्**] ताला लगाना, बन्द करना। संकृ—**तालेवि** ; (सुपा ४२८)।
ताल पुं [**ताल**] १ वृक्ष-विशेष ; (पण्ह १, ४)। २ वाद्य-विशेष, कंसिका ; (पण्ह २, ५)। ३ ताली ; (दस २)। ४ चपेटा, तमाचा ; (से ६, ५६)। ५ वाद्य-समूह ; (राज)। ६ आजीवक मत का एक उपासक ; (भग ८, ५)। ७ न. ताला, द्वार बन्द करने की कल ; (उप ३३३)। ८ ताल वृक्ष का फल ; (दे ६, १०२)।

°उड न [°पुट] तत्काल प्राण-नाशक विष-विशेष; (णाया १, १४; सुपा १३७; ३१६)। °जंघ पुं [°जङ्घ] १ नृप-विशेष; (धर्म १)। २ वि. ताल की तरह लम्बी जाँघ वाला; (णाया १, ८)। °ज्झय पुं [°ध्वज] १ बलदेव; (आवम)। २ नृप-विशेष; (दंस १)। ३ शत्रुञ्जय पहाड़; (ती १)। °पलंब पुं [°प्रलम्ब] गोशालक का एक उपासक; (भग ८, ५)। °पिसाय पुं [°पिशाच] दीर्घ-काय राक्षस; (पण्ण १)। °पुड देखो °उड; (श्रा १२)। °यर पुं [°चर] एक मनुष्य-जाति, चारण; (ओघ ७६६)। °विंट, °विंत, °वेंट, °वोंट न [°वृन्त] व्यजन, पंखा; (पि ५३; नाट—वेणी १०४; हे १, ६७; प्राप्र)। °संवुड पुं [°संपुट] ताल के पत्रों का संपुट, ताल-पत्र-संचय; (सूअ १, ५, १)। °सम वि [°सम] ताल के अनुसार स्वर, स्वर-विशेष; (ठा ७)।

तालंक पुं [ताडङ्क] १ कुण्डल, कान का आभूषण-विशेष। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

तालंकि पुंस्त्री [तालङ्किन्] छन्द-विशेष। स्त्री—°णी; (पिंग)।

तालग न [तालक] ताला, द्वार बन्द करने का यन्त्र; (उप ३३६ टी)।

तालण देखो **ताडण**; (औप)।

तालणा स्त्री [ताडना] चपेटा आदि का प्रहार; (पण्ह २, १; औप)।

तालप्फली स्त्री [दे] दासी, नौकरानी; (दे ५, ११)।

तालय देखो **तालग**; (सुपा ४१४; कुप्र २५२)।

तालहल पुं [दे] शालि, व्रीहि; (दे ५, ७)।

ताला अ [तदा] उस समय, "ताला जाअंति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घिप्पंति" (हे ३, ६५; काप्र ५२१)।

ताला स्त्री [दे] लाजा, खोई, धान का लावा; (दे ५,१०)।

तालाचर पुं [तालचर] ताल (वाद्य) बजाने वाला; (निचू १५)।

तालाचर } पुं [तालाचर] १ प्रेक्षक-विशेष, ताल देने
तालायर } वाला प्रेक्षक; (णाया १, १)। २ नट, नर्तक आदि मनुष्य-जाति; (बृह ३)।

तालिअ वि [ताडित] आहत, पीटा हुआ; (णाया १,५)।

तालिअंट सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। तालिअंटइ; (हे ४, ३०)।

तालिअंट न [तालवृन्त] व्यजन, पंखा; (स ३०८)।

तालिअंटिर वि [भ्रमयितृ] घुमाने वाला; (कुमा)।

तालिज्जंत देखो **ताल**=ताडय्।

ताली स्त्री [ताली] १ वृक्ष-विशेष; (चारु ६३)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °पत्त न [°पत्र] ताल-वृक्ष की पत्ती का बना हुआ पंखा; (चारु ६३)।

तालु } न [तालु,°क] तालू, मुँह के ऊपर का भाग,
तालुअ } तलुआ; (सत्त ४६; णाया १, १६)।

तालुग्घाडणी स्त्री [तालोद्घाटनी] विद्या-विशेष, ताला खोलने की विद्या; (वसु)।

तालुर पुं [दे] १ फेन, फीण; २ कपित्थ वृक्ष; (दे ५, २१)। ३ पानी का आवर्त; (दे ५, २१; गा ३७; पाअ)। ४ पुं. पुष्प का सत्व; (विक्र ३२)।

तालेवि देखो **ताल**=तालय्।

ताव सक [तापय्] १ तपाना, गरम करना। २ संताप करना, दुःख उपजाना। तावेंति; (गा ८५०)। कर्म—ताविज्जंति; (गा ७)। कृ—**तावणिज्ज**; (भग१५)।

ताव पुं [ताप] १ गरमी, ताप; (सुपा ३८६; कप्पू)। २ संताप, दुःख; (आव ४)। ३ सूर्य, रवि। °दिसा स्त्री [°दिश्] सूर्य-तापित दिशा; (राज)।

ताव अ [तावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ तब-तक; (पउम ६८, ५०)। २ प्रस्तुत अर्थ; (आवम)। ३ अवधारण; ४ अवधि, हद; ५ पक्षान्तर; ६ प्रशंसा; ७ वाक्य-भूषा; ८ मान; ६ साकल्य, संपूर्णता; १० तब, उस समय; (हे १, ११)।

तावअ वि [तावक] त्वदीय, तुम्हारा; (अच्चु ५३)।

तावइअ वि [तावत्] उतना; (सम १४४; भग)।

तावं देखो **ताव**=तावत्; (भग १५)।

तावँ } (अप) देखो **ताव**=तावत्; (कुमा)।
तवँहिं }

तावण न [तापन] १ गरम करना, तपाना; (निचू १)। २ पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ५)।

तावणिज्ज देखो **ताव**=तापय्।

तावत्तीस }
तावत्तीसग } देखो **तायत्तीसय**; (औप; पि ४४५; ४३८; काल)।
तावत्तीसय }

तावत्तीसा देखो **तायत्तीसा**; (पि ४३८)।

तावस पुं [तापस] १ तपस्वी, योगी, संन्यासि-विशेष; (औप)। २ एक जैन मुनि; (कप्प)। °गेह न [°गेह]

तापसों का मठ ; (पाअ) ।
तावसा स्त्री [**तापसा**] जैन मुनिओं की एक शाखा; (कप्प)।
तावसी स्त्री [**तापसी**] तपस्विनी, योगिनी ; (गउड) ।
ताविअ वि [**तापित**] तपाया हुआ, गरम किया हुआ; (गा ५३ ; विपा १, ३ ; सुर ३, २२०) ।
ताविआ स्त्री [**तापिका**] तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र; (दे २, ५६) । २ कड़ाही, छोटा कड़ाह ; (आवम) ।
ताविच्छ पुंन [**तापिच्छ**] वृक्ष-विशेष, तमाल का पेड़ ; (कुमा ; दे १, ३७ ; सुपा ५८) ।
तावी स्त्री [**तापी**] नदी-विशेष; (पउम ३५, १; गा २३६)।
तास पुं [**त्रास**] १ भय, डर ; (उप पृ ३५) । २ उद्वेग, संताप ; (पण्ह १, १) ।
तासण वि [**त्रासन**] त्रास उपजाने वाला ; (पण्ह १,१)।
तासि वि [**त्रासिन्**] १ त्रास-युक्त, त्रस्त ; २ त्रास-जनक ; (ठा ४, २ ; कप्पू) ।
तासिअ वि [**त्रासित**] जिसको त्रास उपजाया गया हो वह ; (भवि) ।
ताहे अ [**तदा**] उस समय, तब ; (हे ३, ६५) ।
ति अ [**त्रिः**] तीन वार ; (आचा ५४२) ।
ति देखो **तइअ**=तृतीय ; (कम्म २,१६) । °**भाग**, °**भाय**, °**हाअ** पुं [°**भाग**] तृतीय भाग, तीसरा हिस्सा ; (कम्म २; णाया १, १६—पत्र २१८ ; कप्पू) ।
ति देखो **थी** ; "उलुजु गायंति भुणिं सभत्तिपुत्ता तिओ चच्च-रियाउ दिंति " (रंभा) ।
ति त्रि.ब. [**त्रि**] तीन, दो और एक ; (नव ४ ; महा) । °**अणुअ** न [°**अणुक**] तीन, परमाणुओं से बना हुआ द्रव्य, "अणुअतएहिं आरद्धदव्वे तिअणुअं ति निद्देसा" (सम्म १३६) । °**उण** वि [°**गुण**] १ तीनगुना । २ सत्व, रजस् और तमस् गुण वाला ; (अच्चु ३०) । °**उणिय** वि [°**गुणित**] तीनगुना ; (भवि) । °**उत्तरसय** वि [°**उत्तरशततम**] एक सौ तीसरा, १०३ वाँ ; (पउम १०३, १७६) । °**उल** वि [°**तुल**] १ तीन को जीतने वाला ; २ तीन को तौलने वाला ; (णाया १, १—पत्र ६४) । °**ओय** न [°**ओजस्**] विषम राशि-विशेष ; (ठा ४, ३) । °**कंड**, °**कंडग** वि [°**काण्ड**,°**क**] तीन काण्ड वाला, तीन भाग वाला ; (कप्पू; सूअ १, ६) । °**कडुअ** न [°**कटुक**] सूँठ, मरीच और पीपल ;(अणु) । °**करण** देखो °**गरण** ; (राज) । °**काल** न [°**काल**] भूत, भविष्य और वर्तमान काल; (भग; सुपा ८८) । °**क्काल** देखो °**काल** ; (सुपा १६६)। °**खंड** वि [°**खण्ड**] तीन खण्ड वाला ; (उप ६८६ टी)। °**खंडाहिवइ** पुं [°**खण्डाधिपति**] अर्ध चक्रवर्ती राजा, वासुदेव ; (पउम ६१,२६) । °**गडु**, °**गडुअ** देखो °**कडुअ** ; (स २५८ ; २६३) । °**गरण** न [°**करण**] मन, वचन और काया ; (द्र २०) । °**गुण** देखो °**उण** ; (अणु) । °**गुत्त** वि [°**गुप्त**] मनोगुप्ति आदि तीन गुप्ति वाला, संयमी ; (सं ८) । °**गोण** वि [°**कोण**] तीन कोने वाला ; (राज) । °**चत्ता** स्त्री [°**चत्वारिंशत्**] तेतालीस ; (कम्म ४, ५५) । °**जय** न [°**जगत्**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (ति १) । °**णयण** पुं [°**नयन**] महादेव, शिव ; (मै १५, ५८ ; सुपा १३८ ; ५६६ ; गउड) । °**तुल** देखो °**उल** ; (णाया १, १ टी—पत्र ६७)। °**त्तिस** (अप) देखो °**त्तीस**। °**त्तीस** स्त्रीन [**त्रय-स्त्रिंशत्**] १ संख्या-विशेष, ३३ ; २ तेतीस संख्या वाला, तेतीस ; (कप्प ; जी ३६ ; सुर १२,१३६ ; दं २७) । °**दंड** न [°**दण्ड**]१ हथियार रखने का एक उपकरण ;(महा)। २ तीन दण्ड ; (औप) । °**दंडि** पुं [°**दण्डिन्**] संन्यासी, सांख्य मत का अनुयायी साधु; (उप १३६ टी; सुपा ४३६ ; महा) । °**नवइ** स्त्री [°**नवति**] १ संख्या-विशेष, तिराणवे; २ तिराणवे संख्या वाला ; (कम्म १,३१) । °**पंच** त्रि.ब. [°**पञ्चन्**] पंद्रह; (ओघ१४)। °**पंचासइम** वि [°**पञ्चाश**] त्रेपनवाँ ; (पउम ५३, १५०) । °**पह** न [°**पथ**] जहां तीन रास्ते एकत्रित होते हों वह स्थान ; (राज) । °**पायण** न [°**पातन**] १ शरीर, इन्द्रिय और प्राण इन तीनों का नाश; २ मन, वचन और काया का विनाश ; (पिंड) । °**पुंड** न [°**पुण्ड्र**] तिलक-विशेष, ; (स ६) । °**पुर** पुं [°**पुर**] १ दानव-विशेष, ; २ न. तीन नगर ; (राज) । °**पुरा** स्त्री [°**पुरा**] विद्या-विशेष; (सुपा ३६७) । °**भंगी** स्त्री [°**भङ्गी**] छन्द-विशेष, ; (पिंग) । °**महुर** न [°**मधुर**] घी, सक्कर और मधु;(अणु)। °**मासिआ** स्त्री [**त्रैमासिकी**] जिसकी अवधि तीन मास की है ऐसी एक प्रतिमा, व्रत-विशेष ; (सम २१) । °**मुह** वि [°**मुख**] १ तीन मुख वाला ; (राज) । २ पुं. भगवान् संभवनाथजी का शासन-देव ; (संति ७) । °**रत्त** न [°**रात्र**] तीन रात; (स ३४२), "धम्मपरस्स मुहुत्तोवि दुल्लहो किंपुण तिरत्तं" (कुप्र ११८)। °**रासि** न [°**राशि**]जीव, अजीव और नोजीव रूप तीन राशियाँ; (राज) । °**लोअ** न [°**लोकी**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक;

(कुमा ; प्रासू ८६ ; सं १)। °लोअण पुं [°लोचन] महादेव, शिव ; (श्रा २८ ; पउम ५, १२२ ; पिंग)। °लोअपुज्ज पुं [°लोकपूज्य] धातकीषण्ड के विदेह में उत्पन्न एक जिनदेव ; (पउम ७५, ३१)। °लोई स्त्री [°लोकी] देखो °लोअ ; (गउड ; भत्त १५२)। °लोग देखो °लोअ; (उप पृ ३)। °वई स्त्री [°पदी] १ तीन पदों का समूह। २ भूमि में तीन वार पाँव का न्यास ; (औप)। ३ गति-विशेष ; (अंत १६)। °वग्ग पुं [°वर्ग] १ धर्म, अर्थ और काम ये तीन पुरुषार्थ ; (ठा ४, ४—पत्र २८३ ; स ७०३ ; उप पृ २०७)। २ लोक, वेद और समय इन तीन का वर्ग ; ३ सूत्र, अर्थ और उन दोनों का समूह ; (आचू १ ; आवम)। °वण्ण पुं [°पर्ण] पलाश वृक्ष ; (कुमा)। °वरिस वि [°वर्ष] तीन वर्ष की अवस्था वाला ; (नव ३)। °वलि स्त्री [°वलि] चमड़ी की तीन रेखाएं ; (कप्पू)। °वलिय वि [°वलिक] तीन रेखा वाला ; (राय)। °वली देखो °वलि ; (गा २७८ ; औप)। °वट्ठ पुं [°पृष्ठ] भरतक्षेत्र के भावी नवम वासुदेव ; (सम १५४)। °वय न [°पद] तीन पाँव वाला ; (दे ८, १)। °वहआ स्त्री [°पथगा] गंगा नदी ; (से ६, ८ ; अच्चु ३)। °वायणा स्त्री [°पातना] देखो °पायण ; (पण्ह १, १)। °विट्ठ, °विट्ठु पुं [°पृष्ठ, °विष्टु] भरतक्षेत्र में उत्पन्न प्रथम अर्ध-चक्रवर्ती राजा का नाम ; (सम ८८ ; पउम ५, १५५)। °विह वि [°विध] तीन प्रकार का ; (उवा ; जी २० ; नव ३)। °विहार पुं [°विहार] राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ पाटण का एक जैन मन्दिर ; (कुप्र १४४)। °संकु पुं [°शङ्कु] सूर्यवंशीय एक राजा ; (अभि ८२)। °संझ न [°सन्ध्य] प्रभात, मध्याह्न और सायंकाल का समय ; (सुर ११, १०६)। °सट्ठ वि [°षष्ट] तेसठवाँ, ६३ वाँ ; (पउम ६३, ७३)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] तेसठ, ६३ ; (भवि)। °सत्त त्रि. ब. [°सप्तन्] एक्कीस ; (श्रा ६)। °सत्तखुत्तो अ [°सप्तकृत्वस्] एक्कीस बार ; (णाया १, ६ ; सुपा ४४६)। °समइय वि [°सामयिक] तीन समय में उत्पन्न होने वाला, तीन समय की अवधि वाला ; (ठा ३, ४)। °सरय न [°सरक] तीन सरा वाला हार ; (णाया १, १ ; औप ; महा)। २ वाद्य-विशेष ; (पउम ६६, ४४)। °सरा स्त्री [°सरा] मच्छी पकड़ने की जाल-विशेष ; (विपा १, ८)। °सरिय न [°सरिक] १ तीन सरा वाला हार ; (कप्प)। २ वाद्य-विशेष ; (पउम ११३, ११)। ३ वि. वाद्य-विशेष-संबन्धी, (पउम १०२, १२३)। °सीस पुं [°शीर्ष] देव-विशेष ; (दीव)। °सूल न [°शूल] शस्त्र-विशेष ; (पउम १२, ३४ ; स ६६६)। °सूलपाणि पुं [°शूलपाणि] १ महादेव, शिव। २ त्रिशूल का हाथ में रखने वाला सुभट ; (पउम ५६, ३५)। °सूलिया स्त्री [°शूलिका] छोटा त्रिशूल ; (सूअ १, ५, १)। °हत्तर वि [°सप्तत] तिहत्तरवाँ, ७३ वाँ; (पउम ७३, ३६)। °हा अ [°धा] तीन प्रकार से ; (पि ४५१ ; अणु)। °हुअण, °हुण, °हुवण न [°भुवन] १ तीन जगत, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (कुमा ; सुर १, ८ ; प्रासू ४६ ; अच्चु १६)। २ राजा कुमारपाल के पिता का नाम ; (कुप्र १४४)। °हुअणपाल पुं [°भुवनपाल] राजा कुमारपाल का पिता ; (कुप्र १४४)। °हुअणालंकार पुं [°भुवनालंकार] रावण के पट्टहस्ती का नाम ; (पउम ८२, १२२)। °हुणविहार पुं [°भुवनविहार] गुजरात पाटण में राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ एक जैन मन्दिर ; (कुप्र १४४)। देखो ते°।

°ति देखो इअ = इति ; (कुमा ; कम्म २, १२ ; २३)।

तिअ न [त्रिक] १ तीन का समुदाय ; (श्रा १ ; उप ७२८ टी)। २ वह जगह जहाँ तीन रास्ते मिलते हों ; (सुर १, ६३)। °संजअ पुं [°संयत] एक राजर्षि ; (पउम ५, ५१)। देखो तिग।

तिअ वि [त्रिज] तीन से उत्पन्न होने वाला ; (राज)।

तिअंकर पुं [त्रिकंकर] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (राज)।

तिअग न [त्रिकक] तीन का समुदाय ; (विसे २६४३)।

तिअडा स्त्री [त्रिजटा] स्वनाम-ख्यात एक राक्षसी ; (से ११, ८७)।

तिअभंगी स्त्री [त्रिभङ्गी] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

तिअय न [त्रितय] तीन का समूह ; (विसे १४३२)।

तिअलुक्क, तिअलोय न [त्रैलोक्य] तीन जगत्—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (धर्मा ६० ; लहुअ ६)।

तिअस पुं [त्रिदश] देव, देवता ; (कुमा ; सुर १, ६)। °गअ पुं [°गज]। ऐरावण हाथी, इन्द्र का हाथी; (से ६, ६१)। °नाह पुं [°नाथ] इन्द्र ; (उप ६८६ टी; सुपा ४४)। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र, देव-नायक ; (सुपा

४७;१७६)। °रिसि पुं [°ऋषि] नारद मुनि;(कुप्र ३७३)। °लोग पुं [°लोक] स्वर्ग; (उप १०१६)। °विलया स्त्री [°वनिता] देवी, स्त्री देवता; (सुपा २६७)। °सरि स्त्री [°सरित्] गंगा नदी; (कुप्र ५)। °सेल पुं [°शैल] मेरु पर्वत; (सुपा ४८)। °लय पुंन [°लय] स्वर्ग; (कुप्र १६; उप ७२८ टी; सुर १, १७२)। °हिव पुं [°धिप] इन्द्र; (सुपा ३४)। °हिवइ पुं [°धिपति] इन्द्र; (सुपा ७६)।

तिअसिंद पुं [त्रिदशेन्द्र] इन्द्र, देव-पति; (वज्जा १५४)।

तिअसीस पुं [त्रिदशेश] इन्द्र, देव-नायक; (हे १, १०)।

तिआमा स्त्री [त्रियामा] रात्रि, रात; (अच्चु ४६)।

तिइक्ख सक [तितिक्ष्] सहन करना। तिइक्खए; (आचा)। वकृ—**तिइक्खमाण**; (आचा)।

तिइक्खा स्त्री [तितिक्षा] क्षमा, सहिष्णुता; (आचा)।

तिइज्ज, **तिइय** } वि [तृतीय] तीसरा; (पि ४४६; संक्षि २०)।

तिउट्ट अक [त्रुट्] १ टूटना। २ मुक्त होना। "सव्व-दुक्खा तिउट्टइ" (सूअ १, १५, ५)।

तिउट्ट वि [त्रुट्ट, त्रुटित] १ टूटा हुआ; २ अपसृत;(आचा)।

तिउड पुं [दे] कलाप, मोर-पिच्छ; (पाअ)।

तिउडय न [दे] मालव देश में प्रसिद्ध धान्य-विशेष; (श्रा ११)।

तिउर न [त्रिपुर] एक विद्याधर-नगर; (इक)।

तिउरी स्त्री [त्रिपुरी] नगरी-विशेष, चेदि देश की राजधानी; (कुमा)।

तिउल वि [दे] मन, वचन और काया को पीड़ा पहुँचाने वाला, दुःख-हेतु; (उत्त २)।

तिऊड देखो **तिकूड**; (से ८, ८३; ११, ६८)।

तिंगिआ स्त्री [दे] कमल-रज; (दे ५, १२)।

तिंगिच्छ देखो **तिगिच्छ**; (इक)।

तिंगिच्छायण न [चिकित्सायन] नक्षत्र-गोत्र विशेष; (इक)।

तिंगिच्छि स्त्री [दे] कमल-रज, पद्म की रज; (दे ५, १२; गउड; हे २, १७४; जं ४)।

तिंत वि [तीमित] भींजा हुआ; (स ३३२; हे ४,४३१)।

तिंतिण, **तिंतिणिय** } वि [दे] बड़बड़ करने वाला, बड़बड़ाने वाला; वाञ्छित लाभ न होने पर खेद से मन में आवे सो बोलने वाला; (वव १; ठा ६—पत्र ३७१; कस)।

तिंतिणी स्त्री [तिन्तिणी] १ चिंचा, इम्ली का पेड़; (अभि ७१)।

तिंतिणी स्त्री [दे] बड़बड़ाना; (वव ३)।

तिंदुइणी स्त्री [तिन्दुकिनी] वृक्ष विशेष; (कुप्र १०२)।

तिंदुग, **तिंदुय** } पुं [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड़; (पाअ; पउम २०, ३७; सम १५२; पण्ण १७)। २ न. फल-विशेष; (पण्ण १७)। ३ श्रावस्ती नगरी का एक उद्यान; (विसे २३०७)।

तिंदूस, **तिंदूसग**, **तिंदूसय** } पुंन [तिन्दूस, °क] १ वृक्ष-विशेष; (पण्ण १)। २ कन्दुक, गेंद; (गाया १, १८; सुपा ५३)। ३ क्रीड़ा-विशेष; (आवम)।

तिकल्ल न [त्रैकाल्य] तीनों काल का विषय; (पण्ह २,२)।

तिकूड पुं [त्रिकूट] १ लंका के समीप का एक पहाड़, सुवेल पर्वत; (पउम ५, १२७)। २ शीता महानदी के दक्षिण किनारे पर स्थित पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)। °सामिय पुं [°स्वामिन्] सुवेल पर्वत का स्वामी, रावण; (पउम ६५, २१)।

तिक्ख वि [तीक्ष्ण] १ तेज, तीखा, पैना; (महा; गा ५०४)। २ सूक्ष्म; ३ चोखा, शुद्ध; (कुमा)। ४ परुष, निष्ठुर; (भग १६, ३)। ५ वेग-युक्त, क्षिप्र-कारी; (जं २)। ६ क्रोधी, गरम प्रकृति वाला; ७ तीता, कड़ुआ; ८ उत्साही; ९ आलस्य-रहित; १० चतुर, दक्ष; ११ न. विष, जहर; १२ लोहा; १३ युद्ध, संग्राम; १४ शस्त्र, हथियार; १५ समुद्र का नोन; १६ यवक्षार; १७ श्वेत कुष्ठ; १८ ज्योतिष-प्रसिद्ध तीक्ष्ण गण, यथा अश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र; (हे २, ७५; ८२)।

तिक्ख सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना। तिक्खेइ; (हे ४, ३४४)।

तिक्खण न [तीक्ष्णन] तेज-करण, उत्तेजन; (कुमा)।

तिक्खाल सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना। कर्म—तिक्खालिज्जंति; (सुर १२, १०६)।

तिक्खालिअ वि [दे] तीक्ष्ण किया हुआ; (दे ५, १३; पाअ)।

तिक्खुत्तो अ [दे] तीन वार; (विपा १, १; कप्प; औप; राय)।

तिग देखो **तिअ**=त्रिक; (जी ३२; सुपा ३१; गाया १, १)। °वस्सि वि [°वशिन्] मन, वचन और शरीर को काबू में रखने वाला; "नरस्स तिगवस्सिस्स विसं तालउडं जहा" (सुपा १६७)।

तिगिंछ पुं [तिगिञ्छ] द्रह-विशेष; (इक)।

तिगिंछि पुं [तिगिञ्छि] १ पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र

७० ; इक ; सम ३३)। २ द्रह-विशेष, निषध पर्वत पर स्थित एक ह्रद ; (ठा २,३—पत्र ७२)।

तिगिच्छ सक [**चिकित्स्**] प्रतिकार करना, ईलाज करना । तिगिच्छइ ; (उत्त १६, ७६ ; पि २१५ ; ५५५)।

तिगिच्छ पुं [**चिकित्स**] वैद्य, हकीम ; (वव ५)।

तिगिच्छ पुं [**तिगिच्छ**] १ द्रह विशेष; निषध पर्वत पर स्थित एक द्रह ; (इक) ।२ न. देव-विमान विशेष; (सम ३८) ।

तिगिच्छग } वि [**चिकित्सक**] प्रतीकार करने वाला ;
तिगिच्छय } २ पुं. वैद्य, हकीम; (ठा ४, ४; पि २१५;३२७)।

तिगिच्छय न [**चैकित्स्य**] चिकित्सा-कर्म; (ठा ६—पत्र४५१)

तिगिच्छा स्त्री [**चिकित्सा**] प्रतीकार, ईलाज ; (ठा ३,४)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] आयुर्वेद, वैद्यक शास्त्र ;(राज) ।

तिगिच्छि देखो **तिगिंछि** ; (ठा २,३—पत्र ८० ; सम ८४; १०४ ; पि ३५४) ।

तिगिच्छिय पुं [**चैकित्सिक**] वैद्य, चिकित्सक ; (पउम ८, १२४)।

तिग्ग वि [**तिग्म**] तीक्ष्ण, तेज ; (हे २, ६२) ।

तिग्घ वि [**त्रिघ्न**] तिगुना, तीन-गुना ; (राज) ।

तिचूड पुं [**त्रिचूड**] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४५)।

तिजड पुं [**त्रिजट**] १ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम १०, २०) । २ राक्षस वंश का एक राजा ; (पउम ५, २६२) ।

तिजामा } स्त्री [**त्रियामा**] रात्रि, रात; (कुप्र २४७; रंभा) ।
तिजामी }

तिज्ज वि [**तार्य**] तैरने योग्य ; (भास ६३) ।

तिड्ड पुंस्त्री [**दे**] अन्न-नाश करने वाला कीट, टिड्डी ; (जी १८) । स्त्री—°**ड्डी**; (सुपा ५४६) ।

तिण न [**तृण**] तृण, घास ; (सुपा २३३ , अभि १७५ ; स १७६)। °**सूय** न [°**शूक**] तृण का अग्र भाग ; (भग १५)। °**हत्थय** पुं [°**हस्तक**] घास का पूला ; (भग ३, ३) ।

तिणिस पुं [**तिनिश**] वृक्ष-विशेष, बेंत ; (ठा ४, २; कम्म १, १६ ; औप) ।

तिणिस न [**दे**] मधु-पाल, मधपुड़ा; (दे ५, ११; ३, १२)।

तिणीकय वि [**तृणीकृत**] तृण-तुल्य माना हुआ; (कुप्र ५)।

तिण्ण वि [**तीर्ण**] १ पार पहुँचा हुआ ; (औप) । २ शक्त, समर्थ ; (से ११, २१) ।

तिण्ण न [**स्तैन्य**] चोरी; " तिलतिण्णतप्परो " (उप ५६७ टी)।

तिण्ण° देखो **ति**=त्रि । °**भंग** वि [°**भङ्ग**] त्रि-खण्ड, तीन खण्ड वाला; (अभि २२४) । °**विह** वि [°**विध**] तीन प्रकार का ; (नाट—चैत ४३) ।

तिण्णिअ पुं [**तिन्निक**] देखो **तित्तिअ**=तित्तिक ; (इक) ।

तिण्ह देखो **तिक्ख**; (हे २, ७५ ; ८२ ; पि ३१२) ।

तिण्हा देखो **तण्हा**; (राज ; वज्जा ६०) ।

तितउ पुं [**तितउ**] चालनी, आखा, छानने का पात्र; (प्रामा)।

तितिक्ख देखो **तिइक्ख** । तितिक्खइ, तितिक्खए ; (कप्प ; पि ४५७) । वकृ—**तितिक्खमाण**; (राज) ।

तितिक्खण न [**तितिक्षण**] सहन करना ; (ठा ६) ।

तितिक्खा देखो **तिइक्खा**; (सम ५७) ।

तित्त वि [**तृप्त**] तृप्त, संतुष्ट ; (विसे २४०६; औप ; दे १, १६ ; सुपा १६३) ।

तित्त वि [**तिक्त**] १ तीता, कड़ुआ ; (णाया १, १६) । २ पुं. तीता रस ; (ठा १) ।

तित्ति स्त्री [**तृप्ति**] तृप्ति, संतोष ; (उप ५६७ टी; दे १, ११७; सुपा ३७५; प्रासू १४०) ।

तित्ति [**दे**] तात्पर्य, सार; (दे ५,११ ; षड्) ।

तित्तिअ वि [**तावत्**] उतना ; (हे २, १५६) ।

तित्तिअ पुं [**तित्तिक**] १ म्लेच्छ देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली म्लेच्छ जाति; (पण्ह १,१) । देखो **तिण्णिअ** ।

तित्तिर } पुं [**तित्तिरि**] पक्षि-विशेष, तीतर ; (हे
तित्तिरि } १,६०; कुप्र ४२७) ।

तित्तिरिअ वि [**दे**] स्नान से आर्द्र ; (दे ५, १२) ।

तित्तिल वि [**तावत्**] उतना; (षड्) ।

तित्तिल्ल पुं [**दे**] द्वारपाल, प्रतीहार; (गा ५५६) ।

तित्तुअ वि [**दे**] गुरु, भारी ; (दे ५, १२) ।

तित्तुल (अप) देखो **तित्तिल** ; (हे ४, ४३५) ।

तित्थ पुं [**त्रिस्थ**] साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय, जैन संघ ; (विसे १०३५) ।

तित्थ पुं [**त्र्यर्थ**] ऊपर देखो ; (विसे १०३६) ।

तित्थ न [**तीर्थ**] १ ऊपर देखो ; (विसे१०३३ ; ठा१) । २ दर्शन, मत ; (सम्म ८ ; विसे१०४०) । ३ यात्रा-स्थान, पवित्र जगह ; (धर्म २ ; राय ; अभि १२७) । ४ प्रवचन,

शासन, जिन-देव प्रणीत द्वादशाङ्गी ; (धर्म ३)। ५ पुंन. अवतार, घाट, नदी वगैरः में उतरने का रास्ता ; (विसे १०२६ ; विक्र ३२ ; प्रति ८२ ; प्रासू ६०)। °**कर**, °**गर** देखो °**यर** ; (सम ६७; कप्प ; पउम २०, ८; हे१, १७७)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] तीर्थ-गमन ; (धर्म २)। °**णाह**, °**नाह** पुं [°**नाथ**] जिन-देव; (स ७६१ ; उप पृ ३५०; सुपा६५६; सार्ध ४३; संउ५)। °**यर** वि [°**कर**] १ तीर्थ का प्रवर्तक, २ पुं. जिन-देव, जिन भगवान्; (णाया १, ८; हे १, १७७; सं १०१) ; स्त्री—°**री**; (पांदि)। °**यर-णाम** न [°**करनामन्**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव तीर्थ-कर होता है; (ठा ६)। °**राय** पुं [°**राज**] जिन-देव ; (उप पृ ४००)। °**सिद्ध** पुं [°**सिद्ध**] तीर्थ-प्रवृत्ति होने पर जो मुक्ति प्राप्त करे वह जीव; (ठा१,१)। °**ाहिनायग** पुं [°**ाधिनायक**] जिन-देव ; (उप ६८६ टी)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] संघ-नायक, जिन-देव ; (उप१४२टी)। °**ाहिवइ** पुं [°**ाधिपति**] जिन-देव, जिन भगवान् ; (पाअ)।

तित्थि वि [**तीर्थिन्**] १ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का विद्वान्; २ किसी दर्शन का अनुयायी ; (गु ३)।

तित्थिअ वि [**तीर्थिक**] ऊपर देखो ; (प्रबो ७४)।

तित्थीय वि [**तीर्थीय**] ऊपर देखो ; (विसे ३१६६)।

तित्थेसर पुं [**तीर्थेश्वर**] जिन-देव, जिन भगवान् ; (सुपा ५१ ; ८६ ; २६०)।

तिदस देखो **तिअस** ; (नाट—विक्र २८)।

तिदिव न [**त्रिदिव**] स्वर्ग, देव-लोक; (सुपा १४२; कुप्र ३२०)।

तिध (अप) देखो **तहा** ; (हे ४, ४०१ ; कुमा)।

तिन्न देखो **तिण्ण** ; (सम १)।

तिन्न वि [**दे**] स्तीमित, आर्द्र, गीला ; (णाया १, ६)।

तिप्प सक [**तर्पय्**] तृप्त करना। हेकृ—"न इमो जीवो सक्को **तिप्पेउं** कामभोगेहिं" (पच्च५५)। कृ—**तिप्पियव्व** ; (पउम ११, ७३)।

तिप्प अक [**तिप्**] १ झरना, चूना। २ अफसोस करना। ३ रोना। ४ सक. सुख-च्युत करना। तिप्पामि, तिप्पंति ; (सुअ २, १ ; २, २, ५५)। वकृ—**तिप्पमाण**; (णाया१,१—पत्र ४७)। प्रयो. वकृ—**तिप्पयंत**; (सम५१)।

तिप्प वि [**तृप्त**] संतुष्ट ; (हे १, १२८)।

तिप्पणया स्त्री [**तेपनता**] अश्रु-विमोचन, रोदन ; (ठा ४, १ ; औप)।

तिम (अप) देखो **तहा** ; (हे४, ४०१ ; भवि ; कम्म१)।

तिमि पुं [**तिमि**] मत्स्य की एक जाति ; (पण्ह १, १)।

तिमिंगिल पुं [**दे**] मत्स्य, मछली ; (दे ५, १३)।

तिमिंगिल पुं [**तिमिङ्गिल**] मत्स्य की एक जाति ; (दे ५, १३ ; से ७, ८ ; पण्ह १, १)। °**गिल** पुं [°**गिल**] एक प्रकार का महान् मत्स्य ; (सूअ २, ६)।

तिमिंगिलि पुं [**तिमिङ्गिलि**] मत्स्य की एक जाति ; (पउम २२, ८३)।

तिमिगिल देखो **तिमिंगिल**=तिमिङ्गिल; (उप ५१७)।

तिमिच्छय / **तिमिच्छाह** पुं [**दे**] पथिक, मुसाफिर ; (दे ५, १३)।

तिमिण न [**दे**] गीला काष्ठ ; (दे ५, ११)।

तिमिर न [**तिमिर**] १ अन्धकार, अँधेरा ; (पडि ; कप्प)। २ निकाचित कर्म ; (धर्म२)। ३ अल्प ज्ञान ; ४ अज्ञान ; (आचू ५)। ५ पुं. वृक्ष-विशेष ; (स २०६)।

तिमिरिच्छ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, करंज का पेड़; (दे ५,१३)।

तिमिरिस पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष ; पण्ण१—पत्र ३३)।

तिमिल स्त्रीन [**तिमिल**] वाद्य-विशेष; (पउम ५७, २२)। स्त्री—°**ला** ; (राज)।

तिमिस पुं [**तिमिष**] एक प्रकार का पौधा, पेठा, कुम्हड़ा;(कप्पू)।

तिमिसा / **तिमिस्सा** स्त्री [**तिमिस्रा**] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा ; (ठा २, ३ ; पण्ह १, १—पत्र १४)।

तिम्म अक [**स्तीम्**] भींजना, आर्द्र होना। वकृ—**तिम्म-माण** ; (पउम ३५, २०)।

तिम्म देखो **तिग्ग** ; (हे २, ६२)।

तिम्मिअ वि [**स्तीमित**] आर्द्र, गीला ; (दे १, ३७)।

तिरक्कर सक [**तिरस्+कृ**] तिरस्कार करना, अवधीरणा करना। कृ—**तिरक्करणीअ** ; (नाट)।

तिरक्कार पुं [**तिरस्कार**] तिरस्कार, अपमान, अवहेलना ; (प्रबो ४१ ; सुपा १४४)।

तिरक्करिणी / **तिरक्खरिणी** स्त्री [**तिरस्करिणी**] यवनिका, परदा ; (पि ३०६ ; अभि १८६)।

तिरिअ / **तिरिअंच** / **तिरिक्ख** / **तिरिच्छ** वि [**तिर्यञ्च्**] १ वक्र, कुटिल, बाँका; (चंद२ ; उप पृ ३६६ ; सुर १३, १६३)। २ पुं. पशु, पक्षी आदि प्राणी ; देव, नारक और मनुष्य से भिन्न योनि में उत्पन्न जन्तु ; (धण ४४ ; हे २, १४३ ; सुअ १, ३, १; उप पृ १८६ ; प्रासू १७६; महा ; आरा ४६ ; पउम २, ५६ ; जी २०)। ३ मर्त्य-लोक, मध्य लोक ; (ठा ३, २)। ४ न. मध्य, बीच ;

(अणु ; भग १४, ५), "तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे" (कप्प)। °गइ स्त्री [°गति] १ तिर्यग्-योनि; (ठा ५, ३)। २ वक्र गति, टेढ़ी चाल, कुटिल गमन ; (चंद २)। °जंभग पुं [°जृम्भक] देवों की एक जाति ; (कप्प)। °जोणि स्त्री [°योनि] पशु, पक्षी आदि का उत्पत्ति-स्थान ; (महा)। °जोणिअ वि [°योनिक] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न ; (सम २ ; भग ; जीव १ ; ठा ३, १)। °जोणिणी स्त्री [°योनिका) तिर्यग्-योनि में उत्पन्न स्त्री जन्तु, तिर्यक् स्त्री ; (पराण १७—पत्र ५०३)। °दिसा °दिसि स्त्री [°दिश्] पूर्व आदि दिशा; (आवम; उवा)। °पव्वय पुं [°पर्वत] बीच में पड़ता पहाड़, मार्गावरोधक पर्वत ; (भग १४, ५)। °भित्ति स्त्री [°भित्ति] बीच की भींत ; (आचा)। °लोग पुं [°लोक] मर्त्य लोक, मध्य लोक ; (ठा ५, ३)। °वसइ स्त्री [°वसति] तिर्यग्-योनि ; (पराह १, १)।

तिरिच्छ वि [**तिरश्चीन**] १ तिर्यग् गत ; (राज)। २ तिर्यक्-संबन्धी ; (उत्त २१, १६)।

तिरिच्छि देखो **तिरिअ** ; (हे २, १४३ ; षड्)।

तिरिच्छी स्त्री [**तिरश्ची**] तिर्यक्-स्त्री ; (कुमा)।

तिरिड पुं [**दे**] एक जाति का पेड़, तिमिर वृक्ष; (दे ५, ११)।

तिरिडिअ वि [**दे**] १ तिमिर-युक्त; २ विचित; (दे ५, २१)।

तिरिडि पुं [**दे**] उष्ण वात, गरम पवन ; (दे ५, १२)।

तिरिच्छि (मा) देखो **तिरिच्छि** ; (हे ४, २९५)।

तिरीड पुंन [**किरीट**] मुकुट, सिर का आभूषण ; (पराह १, ४ ; सम १५३)।

तिरीड पुं [**तिरीट**] वृक्ष-विशेष ; (बृह २)। °पट्टय न [°पट्टक] वृक्ष-विशेष की छाल का बना हुआ कपड़ा ; (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

तिरीडि वि [**किरीटिन्**] मुकुट-युक्त, मुकुट-विभूषित ; (उत्त ९, ६०)।

तिरोभाव पुं [**तिरोभाव**] लय, अन्तर्धान ; (विसे २९६६)।

तिरोवाइ वि [**दे**] वृति से अन्तर्हित, वाड से व्यवहित ; (दे ५, १३)।

तिरोहिअ वि [**तिरोहित**] अन्तर्हित, आच्छादित ; (राज)।

तिल पुं [**तिल**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध अन्न-विशेष ; (गा ६६५ ; आचा १, १ ; प्रासू ३४; १०८)। २ ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °कुट्टी स्त्री [°कुट्टी] तिल की बनी हुई एक भोज्य वस्तु ; (धर्म २)। °पप्पडिया स्त्री [°पर्पटिका] तिल की बनी हुई एक खाद्य चीज ; (पराण १)। °पुप्फवएण पुं [°पुष्पवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष ; ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °मल्ली स्त्री [°मल्ली] एक खाद्य वस्तु ; (धर्म २)। °संगलिया स्त्री [°संगलिका] तिल की फली ; (भग १५)। °सक्कुलिया स्त्री [°शष्कुलिका] तिल की बनी हुई खाद्य वस्तु-विशेष ; (राज)।

तिलइअ वि [**तिलकित**] तिलक की तरह आचरित, विभूषित ; "जयजयसद्दतिलइओ मंगलज्भुणी" (धर्मा ६)।

तिलंग पुं [**तिलङ्ग**] देश-विशेष, एक भारतीय दक्षिण देश; (कुमा ; इक)।

तिलग } पुं [**तिलक**] १ वृक्ष-विशेष ; (सम १५२ ;
तिलय } औप ; कप्प ; णाया १, ९ ; उप ९८६ टी ; गा १६)। २ एक प्रतिवासुदेव राजा, भरतक्षेत्र में उत्पन्न पहला प्रतिवासुदेव ; (सम १५४)। ३ द्वीप-विशेष ; ४ समुद्र-विशेष ; (राज)। ५ न. पुष्प-विशेष; (कुमा)। ६ टीका, ललाट में किया जाता चन्दन आदि का चिह्न; (कुमा धर्मा ६)। ७ एक विद्याधर-नगर; (इक)।

तिलितिलय पुं [**दे**] जल-जन्तु विशेष; (कप्प)।

तिलिम क्लीन [**दे**] वाद्य-विशेष; (सुपा २४२ ; सण)। स्त्री —°मा; (सुर ३, ६८)।

तिलुक्क न [**त्रैलोक्य**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक; (दं २३)।

तिलेल्ल न [**तिलतैल**] तिल का तेल ; (कुमा)।

तिलोक्क देखो **तिलुक्क** ; (सुर १, ६२)।

तिलोत्तमा स्त्री [**तिलोत्तमा**] एक स्वर्गीय अप्सरा ; (उप ७६८ टी ; महा)।

तिलोदग } न [**तिलोदक**] तिल का धोन ; (आचा;
तिलोदय } कप्प)।

तिल्ल न [**तैल**] तेल, तेल ; (सुक्त ३५; कुप्र २४०)।

तिल्ल न [**तिल्ल**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

तिल्लग वि [**तैलक**] तेल बेचने वाला ; (बृह १)।

तिल्लोदा स्त्री [**तैलोदा**] नदी-विशेष ; (निचू १)।

तिवँ (अप) देखो **तहा** ; (हे ४, ३९७)।

तिवएणी स्त्री [**त्रिवर्णी**] एक महौषधि; (ती ५)।

तिविडा स्त्री [**दे**] सूची, सूई ; (दे ५, १२)।

तिविडी स्त्री [**दे**] पुटिका, छोटा पुड़वा ; (दे ५, १२)।

तिव्व वि [**तीव्र**] १ प्रबल, प्रचण्ड, उत्कट ; (भग १५ ; आचा) । २ रौद्र, भयानक ; (सूअ १, ५, १) । ३ गाढ़, निबिड़ ; (पण्ह १, १) । ४ तिक्त, कडुआ ; (भग ६, ३४) । ५ प्रकृष्ट, प्रकर्ष-युक्त ; (णाया १,१—पत्र ४) ।

तिव्व वि [**दे. तीव्र**] १ दुःसह, जो कठिनता से सहन हो सके ; (दे ५,११; सूअ १,३,३ ; १, ५, १; २,६; आचा)। २ अत्यन्त अधिक, अत्यर्थ ; (दे ५, ११; धर्म २ ; औप ; पण्ह १, ३, पंचा १५ ; आव ६ ; उवा) ।

तिसला स्त्री [**त्रिशला**] भगवान् महावीर की माता का नाम; (सम १५१) । °**सुअ** पुं [°**सुत**] भगवान् महावीर ; (पउम १, ३३) ।

तिसा स्त्री [**तृषा**] प्यास, पिपासा ; (सुर ६, २०६ ; पाअ) ।

तिसाइय } वि [**तृषित**] तृषातुर, प्यासा ; (महा ; उव ;
तिसिय } पण्ह १, ४ ; सुर १, १६६) ।

तिसिर पुं. ब. [**त्रिशिरस्**] १ देश-विशेष ; (पउम ६८, ६५) । २ पुं. नृप-विशेष ; (पउम ६६,४६) । ३ रावण का एक पुत्र ; (से १२, ५६) ।

तिस्सगुत्त देखो **तीसगुत्त** ; (राज) ।

तिह (अप) देखो **तहा** ; (कुमा) ।

तिहि पुंस्त्री [**तिथि**] पंचदश चन्द्र-कला से युक्त काल, दिन, तारीख ; (चंद १० ; पि १८०) ।

तीअ वि [**तृतीय**] तीसरा ; (सम १५०; संक्षि २०) ।

तीअ वि [**अतीत**] १ गुजरा हुआ, बीता हुआ; (सुपा ४४६; भग) । २ पुं. भूत काल ; (ठा ३, ४) ।

तीइल पुं [**तैतिल**] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-विशेष ; (विसे ३३४८) ।

तीमण न [**तीमन**] कढ़ी, खाद्य-विशेष ; (दे२, ३५ ;सण)।

तीमिअ वि [**तीमित**] आर्द्र, गीला ; (कुप्र ३७३) ।

तीर अक [**शक्**] समर्थ होना । तीरइ ; (हे४, ८६) ।

तीर सक [**तीरय्**] समाप्त करना, परिपूर्ण करना । तीरइ, तीरेइ ; (हे४, ८६ ; भग) । संकृ—**तीरित्ता** ; (कप्प) ।

तीर पुंन [**तीर**] किनारा, तट, पार ; (स्वप्न ११६ ; प्रासू ३० ; ठा ४, १ ; कप्प) ।

तीरंगम वि [**तीरंगम**] पार-गामी ; (आचा) ।

तीरिय वि [**तीरित**] समापित, परिपूर्ण किया हुआ ; (पव ५) ।

तीरिया स्त्री [**दे**] शर रखने का थैला, बाणधि (?) ; "गहियमणेण पासत्थं धणुवरं, संधिओ तीरियासरो" (स२६७)।

तीस न [**त्रिंशत्**] १ संख्या विशेष, तीस ; २ तीस-संख्या वाला ; (महा ; भवि) ।

तीसआ } स्त्री [**त्रिंशत्**] ऊपर देखो ; (संक्षि २१) ।
तीसइ } °**वरिस** वि [°**वर्ष**] तीस वर्ष की उम्र का ; (पउम २, २८) ।

तीसइम वि [**त्रिंश**] १ तीसवाँ ; (पउम ३०, ६८) । २ लगातार चौदह दिनों का उपवास ; (णाया १, १) ।

तीसगुत्त पुं [**तिष्यगुप्त**] एक प्राचीन आचार्य-विशेष, जिसने अन्तिम प्रदेश में जीव की सत्ता का पन्थ चलाया था; (ठा७)।

तीसभद्द पुं [**तिष्यभद्र**] एक जैन मुनि ; (कप्प) ।

तीसम वि [**त्रिंश**] तीसवाँ ; (भवि) ।

तीसा स्त्री. देखो **तीस** ; (हे १, ९२) ।

तीसिया स्त्री [**त्रिंशिका**] तीस वर्ष के उम्र की स्त्री; (वव७)।

तु अ [**तु**] इन अर्थों का सूचक अव्ययः—१ भिन्नता, भेद, विशेषण ; (श्रा २७ ; विसे ३०३५) । २ अवधारण, निश्चय ; (सूअ १, २, २) । ३ समुच्चय ; (सूअ १, १, १) । ४ कारण, हेतु ; (निचू १) । ५ पाद-पूरक अव्यय ; (विसे ३०३५ ; पंचा ४) ।

तुअ सक [**तुद्**] व्यथा करना, पीड़ा करना । तुअइ ; (षड्) । प्रयो. संकृ—**तुयावइत्ता** ; (ठा ३, २) ।

तुअर पुं [**तुवर**] धान्य-विशेष, रहर ; (जं १) ।

तुअर अक [**त्वर्**] त्वरा करना । तुअर ; (गा ६०६) ।

तुंग वि [**तुङ्ग**] १ ऊँचा, उच्च ; (गा २५६ ; औप) । २ पुं. छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

तुंगार पुं [**तुङ्गार**] अग्नि कोण का पवन ; (आवम) ।

तुंगिम पुंस्त्री [**तुङ्गिमन्**] ऊँचाई, उच्चत्व ; (सुपा १२४; वज्जा १५० ; कप्पू ; सण) ।

तुंगिय पुं [**तुङ्गिक**] १ ग्राम-विशेष ; (आवम) । २ पर्वत-विशेष, "तुंगे तुंगियहिहरे गंतुं तिव्वं तवं तवइ" (कुप्र १०२) । ३ पुंस्त्री. गोत्र-विशेष में उत्पन्न ; "जसभद्दं तुंगियं चेव" (णंदि) ।

तुंगिया स्त्री [**तुङ्गिका**] नगरी-विशेष ; (भग) ।

तुंगियायण न [**तुङ्गिकायन**] एक गोत्र का नाम ; (कप्प)।

तुंगी स्त्री [**दे**] १ रात्रि, रात ; (दे ५, १४) । २ आयुध-विशेष ; "असिपरसुकुंततुंगीसंघट्ट—" (काल) ।

तुंगीय पुं [**तुङ्गीय**] पर्वत-विशेष ; (सुर १, २००) ।

तुंड स्त्रीन [**तुण्ड**] १ मुख, मुँह ; (गा ४०२) । २ अग्र-भाग ; (निचू १) । स्त्री—°**डी** ; "किं कोवि जीवियत्थी कंडुयइ अहिस्स तुंडीए" (सुपा ३२२) ।

तुंडीर न [**दे**] मधुर बिम्बी-फल ; (दे ५, १४) ।

तुंडुअ पुं [**दे**] जीर्ण घट, पुराना घड़ा ; (दे ५, १५) ।

तुंतुक्खुडिअ वि [**दे**] त्वरा-युक्त ; (दे ५, १६) ।

तुंद न [**तुन्द**] उदर, पेट ; (दे ५, १४ ; उप ७२८टी) ।

तुंदिल } वि [**तुन्दिल**] बड़ा पेट वाला ; (कप्पू ; पि **तुंदिल्ल** } ५९५ ; उत्त ७) ।

तुंब न [**तुम्ब**] तुम्बी, अलाबु ; (पउम २६, ३४ ; ओघ ३८; कुप्र १३६)। २ गाड़ी की नाभि; "न हि तुंबम्मि विणट्ठे अरया साहारया हुंति" (आवम)। ३ 'ज्ञाताधर्मकथा ' सूत्र का एक अध्ययन ; (सम) । °**वण** न [°**वन**] संनिवेश-विशेष, एक गाँव का नाम ; (सार्ध २५) । °**वीण** वि [°**वीण**] वीणा-विशेष को बजाने वाला ; (जीव ३) । °**वीणिय** वि [°**वीणिक**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (औप ; पण्ह २, ४ ; णाया १, १) ।

तुंबरु देखो **तुंबुरु** ; (इक) ।

तुंबा स्त्री [**तुम्बा**] लोकपाल देवों की एक अभ्यन्तर परिषद्; (ठा ३, २) ।

तुंबिणी स्त्री [**तुम्बिनी**] वल्ली-विशेष ; (हे ४, ४२७ ; राज) ।

तुंबिल्ली स्त्री [**दे**] १ मधु-पटल, मधपुड़ा ; २ उदूखल, ऊखल; (दे ५, २३) ।

तुंबी स्त्री [**तुम्बी**] १ तुम्बी, अलाबू ; (दे ५, १४) । २ जैन साधुओं का एक पात्र, तरपनी ; (सुपा ६४१) ।

तुंबुरु पुं [**तुम्बुरु**] १ वृक्ष-विशेष, टिंबरू का पेड़ ; (दे ४, ३) । २ गन्धर्व देवों की एक जाति ; (पण्ण १ ; सुपा २६४) । ३ भगवान् सुमतिनाथ का शासनाधिष्ठायक देव ; (संति ७) । ४ शक्रेन्द्र के गन्धर्व-सैन्य का अधिपति देव-विशेष ; (ठा ७) ।

तुक्खार पुं [**दे**] एक उत्तम जाति का अश्व ; "अन्नं च तत्थ पत्ता तुक्खारतुरंगमा बहुविहीया" (सुर ११, ४६ ; भवि) । देखो **तोक्खार** ।

तुच्छ वि [**दे**] अवशुष्क, सूख गया हुआ ; (दे ५, १४)।

तुच्छ वि [**तुच्छ**] १ हलका, जघन्य, निकृष्ट, हीन ; (णाया १, ५ ; प्रासू ६६) । २ अल्प, थोड़ा ; (भग ६, ३३) । ३ शून्य, रिक्त ; (आचा) । ४ असार, निःसार ; (भग १८, ३) । ५ अपूर्ण ; (ठा ४, ४) ।

तुच्छइअ } वि [**दे**] रञ्जित, अनुराग-प्राप्त ; (दे ५, १५)। **तुच्छय** }

तुच्छिम पुंस्त्री [**तुच्छत्व**] तुच्छता ; (वज्जा १५६) ।

तुज्ज न [**तूर्य**] वाद्य, बाजा ; (सुज्ज १०) ।

तुट्ट अक [**त्रुट्, तुड्**] १ टूटना, छिन्न होना, खण्डित होना । २ खूटना, तुट्टइ ; (महा ; सण ; हे ४, ११६) । "अण्णवरयं देंतस्सवि तुट्टंति न सायरे रयणाइं" (वज्जा १५६) । वकृ—**तुट्टंत**; (सण) ।

तुट्ट वि [**त्रुटित**] टूटा हुआ, छिन्न, खण्डित ; (स ७१८; सूक्त १७ ; दे १, ६२) ।

तुट्टण न [**त्रोटन**] विच्छेद, पृथक्करण ; (सूअ १, १, १; वज्जा ११६) ।

तुट्टिअ वि [**त्रुटित, तुडित**] छिन्न, खण्डित ; (कुमा) ।

तुट्टिर वि [**त्रुटितृ**] टूटने वाला ; (कुमा ; सण) ।

तुट्ठ वि [**तुष्ट**] तोष-प्राप्त, संतुष्ट ; (सुर ३, ४१ ; उवा) ।

तुट्ठि स्त्री [**तुष्टि**]१ खुशी, आनन्द, संतोष; (स २००; सुर ३, २५; सुपा २४६; निर १,१)। २ कृपा, महरबानी; (कुप्र १)।

तुड अक [**तुड्**] टूटना, अलग होना । तुडइ; (हे ४,११६)।

तुडि स्त्री [**त्रुटि**] १ न्यूनता, कमी ; २ दोष, दूषण ; (हे ४, ३६०) । ३ संशय, संदेह ; (सुर ३, १६१) ।

तुडिअ वि [**त्रुटित**] टूटा हुआ, विच्छिन्न ; (अच्चु ३३ ; दे १,१५६; सुपा ८५) ।

तुडिअ न [**दे.त्रुटित**] १ वाद्य, वादित्र, बाजा ; (औप ; राय ; जं ३; पण्ह २, ५) ।२ बाहु-रक्षक, हाथ का आभरण-विशेष ; (औप ; ठा ८ ; पउम ८२,१०४; राय)। ३ संख्या-विशेष, 'तुडिअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २,४) । ४ साँधा, फटे हुए वस्त्र आदि में लगायी जाती पट्टी ; (निचू २) ।

तुडिअंग न [**दे.त्रुटिताङ्ग**] १ संख्या-विशेष, 'पूर्व' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २, ४) । २ पुं. वाद्य देने वाला कल्प वृक्ष ; (ठा१० ; सम १७ ; पउम १०२, १२३) ।

तुडिआ स्त्री [**तुडिता**] लोकपाल देवों के अग्र-महिषिओं की मध्यम परिषत् ; (ठा ३, २) ।

तुडिआ स्त्री [**दे.तुटिका**] बाहु-रक्षिका, हाथ का आभरण-विशेष ; (पण्ह १, ४ ; णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

तुणय पुं [**दे**] वाद्य-विशेष ; (दे ५, १६) ।
तुण्णग देखो **तुण्णाग** ; (राज) ।
तुण्णण न [**तुन्नन**] फटे हुए वस्त्र का सन्धान ; (उप पृ ४१३) ।
तुण्णाग, **तुण्णाय** पुं [**तुन्नवाय**] वस्त्र को साँधने वाला, रफू करने वाला ; (णंदि ; उप पृ२१० ; महा) ।
तुण्णिय वि [**तुन्नित**] रफू किया हुआ, साँधा हुआ; (बृह१)।
तुण्हि अ [**तूष्णीम्**] मौन, चुपकी ; (भवि) ।
तुण्हि पुं [**दे**] सूकर, सूअर ; (दे ५, १४) ।
तुण्हिअ, **तुण्हिक्क** वि [**तूष्णीक**] मौन रहा हुआ ; (प्राप्र ; गा ३५४ ; सुर ४, १४८) ।
तुण्हिक्क वि [**दे**] मृदु-निश्चल ; (दे ५, १५) ।
तुण्हीअ देखो **तुण्हिअ** ; (स्वप्न ४२) ।
तुत्त देखो **तोत्त** ; (सुपा २३७) ।
तुद देखो **तुअ** । तुदए ; (षड्) । वकृ—**तुदं** ; (विसे १४७०) ।
तुप्प पुं [**दे**] १ कौतुक ; २ विवाह, शादी ; ३ सर्षप, सरसों, धान्य-विशेष; ४ कुतुप, घी आदि भरने का चर्म-पात्र ; (दे५, २२) । ५ वि. म्रक्षित, चुपड़ा हुआ, घी आदि से लिप्त; (दे५, २२ ; कप्प ; गा २२ ; २८६ ; हे १, २००) । ६ स्निग्ध, स्नेह-युक्त ; (दे ५, २२ ; ओघ ३०७ भा) । ७ न. घृत, घी ; (से १५, ३८ ; सुपा६३४ ; कुमा) ।
तुप्पइअ, **तुप्पलिअ**, **तुप्पविअ** वि [**दे**] घी से लिप्त ; (गा ५२० अ) ।
तुमंतुम पुं [**दे**] क्रोध-कृत मनो-विकार विशेष ; (ठा ८—पत्र ४४१) ।
तुमुल पुं [**तुमुल**] १ लोम-हर्षण युद्ध, भयानक संग्राम ; (गउड) । २ न. शोरगुल ; (पाअ) ।
तुम्ह स [**युष्मत्**] तुम, आप ; (हे१, २४६) ।
तुम्हकेर वि [**त्वदीय**] तुम्हारा ; (कुमा) ।
तुम्हकेर वि [**युष्मदीय**] आपका, तुम्हारा ; (हे १,२४६ ; २, १४७) ।
तुम्हार (अप) ऊपर देखो ; (भवि) ।
तुम्हारिस वि [**युष्मादृश**] आप के जैसा, तुम्हारे जैसा ; (हे १, १४२ ; गउड ; महा) ।
तुम्हेच्चय वि [**यौष्माक**] आपका, तुम्हारा; (हे २,१४६; कुमा ; षड्) ।
तुयट्ट अक [**त्वग्+वृत्**] पार्श्व को घुमाना, करवट फिराना । तुयट्टइ ; (कप्प ; भग) । तुयट्टेज्ज, तुयट्टेज्जा ; (भग ; औप) । हेकृ—**तुयट्टित्तए** ; (आचा) । कृ—**तुयट्टियव्व** ; (णाया १,१ ; भग; औप) ।
तुयट्टण न [**त्वग्वर्तन**] पार्श्व-परिवर्तन, करवट फिराना; (ओघ १५२ भा ; औप) ।
तुयट्टावण न [**त्वग्वर्तन**] करवट बदलवाना । (आचा)।
तुयावइत्ता देखो **तुअ** ।
तुर अक [**त्वर्**] त्वरा करना, शीघ्रता करना । वकृ—**तुरंत**, **तुरंत**, **तुरमाण**, **तुरेमाण**; (हे ४,१७२; प्रासू ५८; षड्)।
तुरंग पुं [**तुरङ्ग**] अश्व, घोड़ा ; (कुमा ; प्रासू ११७) । २ रामचन्द्र का एक सुभट ; (पउम ५६, ३८) ।
तुरंगम पुं [**तुरङ्गम**] अश्व, घोड़ा ; (पाअ ; पिंग) ।
तुरंगिआ स्त्री [**तुरङ्गिका**] घोड़ी ; (पाअ) ।
तुरंत देखो **तुर** ।
तुरक्क पुं [**दे. तुरुष्क**] १ देश-विशेष, तुर्किस्तान ; २ अनार्य जाति-विशेष, तुर्क ; (ती १४) ।
तुरग देखो **तुरय** ; (भग११,११ ; राय) । °**मुह** पुं [°**मुख**] अनार्य देश-विशेष ; (सूअ २,१) । °**मेढ़ग** पुं [°**मेढ्क**] अनार्य देश-विशेष ; (सूअ १, ५, १) ।
तुरमाण देखो **तुर** ।
तुरय पुं [**तुरग**] १ अश्व, घोड़ा ; (पगह १, ४) । २ छन्द-विशेष ; (पिंग) । °**देहपिंजरण** न [°**देहपञ्जरण**] अश्व को सिंगारना ; (पाअ) । देखो **तुरग** ।
तुर, **तुरा** स्त्री [**त्वरा**] शीघ्रता, जल्दी ; (दे ५, १६) । °**वंत** वि [°**वत्**] त्वरा-युक्त ; त्वरा वाला ; (से ४, ३०)।
तुरिअ वि [**त्वरित**] १ त्वरा-युक्त, उतावला ; (पाअ ; हे ४,१७२ ; औप ; प्राप्र) । २ क्रिवि. शीघ्र, जल्दी ; (सुपा ४६४ ; भवि) । °**गइ** वि [°**गति**] १ शीघ्र गति वाला । २ पुं. अमितगति-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)।
तुरिअ वि [**तुर्य**] चौथा, चतुर्थ ; (सुर ४, २५० ; कम्म ४, ६६ ; सुपा ४६४) । °**निद्दा** स्त्री [°**निद्रा**] मरण-दशा ; (उप पृ १४३) ।
तुरिअ न [**तूर्य**] वाद्य, वादित्र ; "तुरियाणं संनिनाएण, दिव्वेणं गगणं फुसे " (उत्त २२, १२) ।
तुरिमिणी देखो **तुरुमणी** ; (राज) ।
तुरी स्त्री [**दे**] १ पीन, पुष्ट; २ शय्या का उपकरण; (दे५,२२)।

तूरंत } देखो **तूर**=तुरव।
तूरमाण }
तूरविअ वि [**त्वरित**] जिसको शीघ्रता कराई गई हो वह ; (से १२, ८३)।
तूरिय पुं [**तौर्यिक**] वाद्य बजाने वाला ; (स ७०५)।
तूरी स्त्री [**दे**] एक प्रकार की मिट्टी ; (जी ४)।
तूरंत } देखो **तूर**=तुरव।
तूरेमाण }
तूल न [**तूल**] रुई, रूआ, बीज-रहित कपास ; (ओप ; पाअ ; भवि)।
तूलिअ न. नीचे देखो। "नणु विणासिज्जइ महग्घियं तूलियं गंडुयमाइयं" (महा)।
तूलिआ स्त्री [**तूलिका**] १ रुई से भरा मोटा बिछौना, गद्दा ; (दे ५, २२)। २ तसवीर बनाने की कलम ; (णाया १, ८)।
तूलिणी स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष, शाल्मली का पेड़ ; (दे ५, १७)।
तूलिल्ल वि [**तूलिकावत्**] तसवीर बनाने की कलम वाला, कूर्चिका-युक्त ; (गउड)।
तूली स्त्री [**तूली**] देखो **तूलिआ** ; (सुर २, ८२ ; पउम ३५, २४ ; सुपा २६२)।
तूवर देखो **तुवर**; (विपा १, १—पत्र १६)।
तूस अक [**तुष्**] खुश होना। तूसइ, तूसए ; (हे ४, २३६ ; संक्षि ३६; षड्) । कृ—**तूसियव्व** ; (पण्ह २,५)।
तूह देखो **तित्थ** ; (हे १,१०४; २,७२; कुमा ; दे ५,१६)।
तूहण पुं [**दे**] पुरुष, आदमी ; (दे ५, १७)।
ते° देखो **ति**=त्रि। °**आलीस** स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] १ संख्या-विशेष, चालीस और तीन की संख्या ; २ तेआलीस की संख्या वाला ; (सम ६८)। °**आलीसइम** वि [°**चत्वारिंश**] तेआलीसवाँ ; (पउम ४३, ४६)। °**आसी** स्त्री [°**अशीति**] १ संख्या-विशेष, अस्सी और तीन ; २ तिरासी की संख्या वाला ; (पि ४४६)। °**आसीइम** वि [°**अशीतितम**] तिरासीवाँ ; (सम ८६ ; पउम ८३, १४)। °**इंदिय** पुं [°**इन्द्रिय**] स्पर्श, जीभ और नाक इन तीन इन्द्रिय वाला प्राणी ; (ठा २, ४ ; जी १७)। °**ओय** पुं [°**ओजस्**] विषम राशि-विशेष ; (ठा ४, ३)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] तिरानवे, नव्वे और तीन, ६३ ; (सम ६७)। °**णउय** वि [°**नवत**] तिरानवाँ, ६३ वाँ; (कप्प ; पउम ६३, ४०)। °**णवइ** देखो °**णउइ** ; (सुपा ६५४)। °**तीस**, °**त्तीस** स्त्रीन [**त्रयस्त्रिंशत्**] तेतीस, तीस और तीन; (भग ; सम ५८)। स्त्री—°**सा** ; (हे १, १६५ ; पि ४४७)। °**त्तीसइम** वि [**त्रयस्त्रिंश**] तेतीसवाँ ; (पउम ३३, १४८)। °**वट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] तिरसठ, साठ और तीन ; (पि २६५)। °**वण्ण**, °**वन्न** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] त्रेपन, पचास और तीन ; (हे २, १७४ ; षड् ; सम ७२)। °**वत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] तिहत्तर ; (पि २६५)। °**वीस** स्त्रीन [**त्रयोविंशति**] तेईस, वीस और तीन; (सम ४२ ; हे १, १६५)। °**वीस**, °**वीसइम** वि [**त्रयोविंश**] तेईसवाँ ; (पउम २०, ८२ ; २३, २६ ; ठा ६)। °**संझ** न [°**सन्ध्य**] प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल का समय ; (पउम ६६, ११)। °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] देखो °**वट्ठि** ; (सम ७७)। °**सीइ** स्त्री [°**अशीति**] तिरासी, अस्सी और तीन ; (सम ८६ ; कप्प)। °**सीइम** वि [°**अशीत**] तिरासीवाँ ; (कप्प)।
तेअ सक [**तेजय्**] तेज करना, पैनाना, तीक्ष्ण करना। तेअइ ; (षड्)।
तेअ देखो **तइअ**=तृतीय ; (रंभा)।
तेअ पुं [**तेजस्**] १ कान्ति, दीप्ति, प्रकाश, प्रभा ; (उवा ; भग ; कुमा ; ठा ८)। २ ताप, अभिताप ; (कुमा ; सूअ १, ५,१)। ३ प्रताप ; ४ माहात्म्य, प्रभाव; ५ बल, पराक्रम; (कुमा)। °**मंत** वि [°**विन्**] तेज वाला, प्रभा-युक्त; (पण्ह २, ४)। °**वीरिय** पुं [°**वीर्य**] भरत चक्रवर्ती के प्रपौत्र का पौत्र, जिसको आदर्श-भवन में केवलज्ञान हुआ था; (ठा ८)।
तेअ न [**स्तेय**] चोरी ; (भग ९ ७)।
तेअ देखो **तेअय** ; (भग)।
तेअंसि वि [**तेजस्विन्**] तेज-वाला, तेज-युक्त ; (ओप ; रयण ४ ; भग ; महा ; सम १५२ ; पउम १०२, १४१)।
तेअग देखो **तेअय** ; (जीव १)।
तेअण न [**तेजन**] १ तेज करना, पैनाना ; २ उत्तेजन ; (हे ४, १०४)। ३ वि. उत्तेजित करने वाला ; (कुमा)।
तेअय न [**तैजस**] शरीर-सहचारी सूक्ष्म शरीर-विशेष ; (ठा २, १ ; ५, १ ; भग)।
तेअलि पुं [**तेतलिन्**] १ मनुष्य जाति-विशेष ; (जं १ ; इक)। २ एक मन्त्री के पिता का नाम ; (णाया १, १४)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] राजा कनकरथ का एक मन्त्री ; (णाया

१, १४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष ; (णाया १, १४)। °सुय पुं [°सुत] देखो °पुत्त ; (राज)। देखो तेतलि।

तेअव अक [प्र+दीप्] १ दीपना, चमकना। २ जलना। तेअवइ ; (हे ४, १५२ ; षड्)।

तेअविअ वि [प्रदीप्त] जला हुआ ; (कुमा)। २ चमका हुआ, उद्दीप्त ; (पाअ)।

तेअविअ वि [तेजित] तेज किया हुआ ; (दे ८,१३)।

तेअस्सि पुं [तेजस्विन्] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ५)।

तेआ स्त्री [तेजस्] त्रयोदशी तिथि ; (जो ४ ; जं ७)।

तेआ स्त्री [त्रेता] युग-विशेष, दूसरा युग ; "तेआजुगे य दासरही रामो सीयालक्खणसंजुओवि" (ती २६)।

तेआ° देखो **तेअय** ; (सम १४२ ; पि ६४)।

तेआलि पुं [दे] वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १, १—पत्र ३४)।

तेइच्छ न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार ; (दस ३)।

तेइच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज ; (आचा ; णाया १, १३)।

तेइच्छिय देखो **तेगिच्छिय** ; (विपा १, १)।

तेइच्छी स्त्री [चिकित्सा, चैकित्सी] प्रतीकार, इलाज ; (कप्प)।

तेइल्ल देखो **तेअंस्सि** ; (सुर ७, २१७ ; सुपा ३३)।

तेउ पुं [तेजस्] १ आग, अग्नि ; (भग ; दं १३)। २ लेश्या-विशेष, तेजो-लेश्या ; (भग ; कम्म ४, ५०)। ३ अग्निशिख-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)। ४ ताप, अभिताप ; (सूअ १, १, १)। ५ प्रकाश, उद्द्योत ; (सूअ २, १)। °आय देखो °काय; (भग)। °कंत पुं [°कान्त] लोकपाल देव-विशेष ; (ठा ४, १)। °काइय पुं [°कायिक] अग्नि का जीव ; (ठा ३, १)। °काय पुं [°काय] अग्नि का जीव ; (पि ३५५)। °क्काइय देखो °काइय ; (पण्ण १ ; जीव १)। °प्पभ पुं [°प्रभ] अग्निशिख-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। °प्फास पुं [°स्पर्श] उष्ण स्पर्श ; (आचा)। °लेस वि [°लेश्य] तेजो-लेश्या वाला; (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] तप-विशेष के प्रभाव से होने वाली शक्ति-विशेष से उत्पन्न होती तेज की ज्वाला ; (ठा ३, १ ; सम ११)। °लेस्स देखो °लेस; (पण्ण १७)। °लेस्सा देखो °लेसा; (ठा ३,३)। °सिह पुं [°शिख] एक लोकपाल; (ठा ४, १)। °सोय न [°शौच] भस्म आदि से किया जाता शौच ; (ठा ५, ३)।

तेउ देखो **तेअय** ; (पव २३१)।

तेंडुअ न [दे] वृक्ष विशेष, टींबरू का पेड़ ; (दे ५, १७)।

तेंदु, **तेंदुअ**, **तेंदुग** पुं [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदु का पेड़ ; (पण्ण १ ; ठा ८; पउम ४२, ७)। २ गेंद, कन्दुक ; (पउम १५, १३)।

तेंदुसय पुं [दे] कन्दुक, गेंद ; (णाया १, ८)।

तेंबरु पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (जीव १)।

तेगिच्छ देखो **तेइच्छ** ; (सुर १२, २११)।

तेगिच्छग वि [चिकित्सक] १ चिकित्सा करने वाला ; २ पुं. वैद्य, हकीम ; (उप ५६४)।

तेगिच्छा देखो **तेइच्छा** ; (सुर १२, २११)।

तेगिच्छायण देखो **तिगिच्छायण** ; (राज)।

तेगिच्छि देखो **तिगिंछि** ; (राज)।

तेगिच्छिय वि [चैकित्सिक] १ चिकित्सा करने वाला ; २ पुं, वैद्य, हकीम ; ३ न. चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार-करण। °साला स्त्री [°शाला] दवाखाना, चिकित्सालय ; (णाया १, १३ — पत्र १७६)।

तेजंसि देखो **तेअंसि** ; (पि ७४)।

तेजपाल पुं [तेजपाल] गुजरात के राजा वीरधवल का एक यशस्वी मंत्री; (ती २)।

तेजलपुर न [तेजलपुर] गिरनार पर्वत के पास, मंत्री तेजपाल का बसाया हुआ एक नगर; (ती २)।

तेजस्सि देखो **तेअंसि** ; (वव १)।

तेज्ज (अप) देखो **चय**=त्यज्। तेज्जइ ; (पिंग)। संकृ— **तेज्जिअ** ; (पिंग)।

तेज्जिअ (अप) वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ ; (पिंग)।

तेड्ड पुं [दे] १ शलभ, अन्न-नाशक कीट, टिड्डु ; २ पिशाच, राक्षस ; (दे ५, २३)।

तेण अ [तेन] १ लक्षण-सूचक अव्यय, "भमररुअं तेण कमलवणं" (हे २, १८३ ; कुमा)। २ उस तरफ ;(भग)।

तेण, **तेणग**, **णयते** पुं [स्तेन] चोर, तस्कर ; (ओघ ११; कस ; गच्छ ३ ; ओघ ४०२)। °प्पओग पुं [°प्रयोग] १ चोर को चोरी करने के लिए प्रेरणा करना ; २ चोरी के साधनों का दान या विक्रय ; (धर्म २)।

तेणिअ, **तेणिक्क** न [स्तैन्य] चोरी, अदत्त वस्तु का ग्रहण ; (श्रा १४ ; ओघ ५६६ ; पण्ह १, ३)।

तेणिस वि [तैनिश] तिनिशवृक्ष-संबन्धी, बेंत का; (भग७,६)।
तेण्ण न [स्तैन्य] चोरी, पर-द्रव्य का अपहरण ; (निचू १)।
तेण्हाइअ वि [तृष्णित] तृष्णा-युक्त, प्यासा ; (से १३, ३६)।
तेतलि पुं [तेतलिन्] १ धरणेन्द्र के गन्धर्व-सेना का नायक; (इक)। २ देखो **तेअलि** ; (णाया १, १४—पत्र १६०)।
तेतिल देखो **तीइअ** ; (जं ७)।
तेत्तिअ वि [तावत्] उतना ; (प्राप्र ; गउड ; गा ७१ ; कुमा)।
तेत्तिर देखो **तित्तिर** ; (जीव १)।
तेत्तिल वि [तावत्] उतना ; (हे २, १५७ ; कुमा)।
तेत्तुल }(अप) ऊपर देखो ; (हे ४, ४०७ ; कुमा ; हे
तेत्तुल्ल } ४, ४३५ टि)।
तेत्थु (अप) देखा **तत्थ**=तत्र ; (हे ४, ४०४ ; कुमा)।
तेद्दह देखो **तेत्तिल** ; (हे २, १५७ ; प्राप्र ; षड् ; कुमा)।
तेन्न देखो **तेण्ण** ; (कस)।
तेम (अप) देखो **तह**=तथा ; (पिंग)।
तेमासिअ वि [त्रैमासिक] १ तीन मास में होने वाला ; (भग)। २ तीन मास-संबन्धी ; (सुर ६, २११ ; १४, २२८)।
तेम्व देखो **तेम** ; (हे ४, ४१८)।
तेर } त्रि.ब. [त्रयोदशन्] तेरह, दस और तीन ; (श्रा
तेरस } ४४ ; दं २१ ; कम्म २, २६ ; ३३)।
तेरसम वि [त्रयोदश] तेरहवाँ ; (सम २५ ; णाया १, १—पत्र ७२)।
तेरस्सिया स्त्री [दे] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।
तेरसी स्त्री [त्रयोदशी] १ तेरहवीं। २ तिथि-विशेष, तेरस ; (सम २६ ; सुर ३, १०५)।
तेरसुत्तरसय वि [त्रयोदशोत्तरशततम] एक सौ तेरहवाँ, ११३ वाँ ; (पउम ११३, ७२)।
तेरह देखो **तेरस** ; (हे १, १६५ ; प्राप्र)।
तेरासिअ वि [त्रैराशिक] १ मत-विशेष का अनुयायी, त्रैराशिक मत—जीव, अजीव और नोजीव इन तीन राशिओं को मानने वाला; (औप; ठा ७)। २ न. मत-विशेष; (सम ४०; विसे २४५१ ; ठा ७)।
तेरिच्छ देखो **तिरिच्छ**=तिरश्चीन। "दिव्वं व माणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहिअएणं" (आप २१)।
तेरिच्छ न [तिर्यक्त्व] तिर्यंचपन, पशु-पक्षिपन ; (उप १०३१ टी)।
तेरिच्छिअ वि [तैरश्चिक] तिर्यक्-संबन्धी ; (ओघ २६६ ; भग)।
तेल न [तैल] १ गोत्र विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७)। २ तिल का विकार, तेल ; (संक्षि १७)।
तेलंग पुं ब. [तैलङ्ग] १ देश-विशेष; २ पुंस्त्री. देश-विशेष का निवासी मनुष्य ; (पिंग)।
तेलाडी स्त्री [तैलाटी] कीट-विशेष, गंधोली ; (दे ७, ८४)।
तेलुक्क } न [त्रैलोक्य] तीन जगत—स्वर्ग, मर्त्य और
तेलोअ } पाताल लोक ; (प्रासु ६७ ; प्राप्र ; णाया १,
तेलोक्क } ४ ; पउम ८, ७६ ; हे १, १४८ ; २, ६७ ; षड् ; संक्षि १७)। °**दंसि** वि [°दर्शिन्] सर्वज्ञ, सर्वदर्शी ; (ओघ ५६६)। °**णाह** पुं [°नाथ] तीनों जगत् का स्वामी, परमेश्वर ; (षड्)। °**मंडण** न [°मण्डन] १ तीनों जगत् का भूषण। २ पुं. रावण का पट्ट-हस्ती ; (पउम ८०, ६०)।
तेल्ल न [तैल] तेल, तिल का विकार, स्निग्ध द्रव्य-विशेष ; (हे २, ६८ ; अणु ; पव ४)। °**केला** स्त्री [°केला] मिट्टी का भाजन-विशेष; (राज)। °**पल्ल** न [°पल्य] तैल रखने का मिट्टी का भाजन-विशेष ; (दसा १०)। °**पाइया** स्त्री [°पायिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (आवम)।
तेल्लग न [तैलक] सुरा-विशेष ; (जीव ३)।
तेल्लिअ पुं [तैलिक] तेल बेचने वाला ; (वव ६)।
तेल्लोअ } देखो **तेलुक्क** ; (पि १६६ ; प्राप्र)।
तेल्लोक्क }
तेवँ }(अप) देखो **तह**=तथा ; (हे४, ३६७ ; कुमा)।
तेवँइ }
तेवट्ठ वि [त्रैषष्ट] तिरसठ की संख्या वाला, जिसमें तिरसठ अधिक हो ऐसी संख्या ; "तिन्नि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं" (पि २६५)।
तेवड (अप) वि [तावत्] उतना ; (हे४, ४०७; कुमा)।
तेह (अप) वि [तादृश] उसके जैसा, वैसा ; (हे ४,४०२; षड्)।
तेहिं (अप) अ. वास्ते, लिए; (हे ४, ४२५; कुमा)।
तो देखो **तओ** ; (आचा ; कुमा)।
तो अ [तदा] तब, उस समय ; (कुमा)।

तोअय पुं [**दे**] चातक पक्षी ; (दे ५, १८)।
तोंड देखो **तुंड** ; (हे १, ११६ ; प्राप्र)।
तोंतडि स्त्री [**दे**] करम्ब, दही-भात को बनी हुई एक खाद्य वस्तु ; (दे ५, ४)।
तोक्कय वि [**दे**] बिना ही कारण तत्पर होने वाला ; (दे ५, १८)।
तोक्खार देखो **तुक्खार** ; "खरखुरखयखोणीयलअसंखतोक्खा-रलक्खजुओ" (सुर १२, ६१)।
तोटअ न [**त्रोटक**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
तोड सक [**तुड्**] १ तोड़ना, भेदन करना। २ अक टूटना। तोडइ ; (हे४, ११६)। वकृ—**तोडंत** ; (भवि)। संकृ—**तोडिउं** ; (भवि), **तोडित्ता** ; (ती ७)।
तोड पुं [**त्रोट**] त्रुटि ; (उप पृ १८)।
तोडण वि [**दे**] असहन, असहिष्णु ; (दे५, १८)।
तोडण न [**तोदन**] व्यथा, पीड़ा-करण ; (राज)।
तोडहिआ स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष ; (आचा २, ११)।
तोडिअ वि [**त्रोटित**] तोड़ा हुआ ; (महा ; सण)।
तोड्ड पुं [**दे**] क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति ; (राज)
तोण पुंन [**तूण**] शरधि, भाथा; (पाअ ; औप ; हे१, १२५; विपा १, ३)।
तोणीर पुंन [**तूणीर**] शरधि, भाथा ; (पाअ ; हे१, १२४; भवि)।
तोत्त न [**तोत्र**] प्रतोद, बैल को मारने का बाँस का आयुध-विशेष ; (पाअ ; दे३, १६ ; सुपा २३७ ; सुर१४,५१)।
तोत्तडि [**दे**] देखो **तोंतडि** ; (पाअ)।
तोदग वि [**तोदक**] व्यथा उपजाने वाला, पोड़ा-कारक ; (उत्त २०)।
तोमर पुं [**तोमर**] १ बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण ; (पण्ह १, १ ; सुर २, २८ ; औप)। २ न. छन्द-विशेष ; (पिंग)।
तोमरिअ पुं [**दे**] १ शस्त्र का प्रमार्जन करने वाला ; (दे ५, १८)। २ शस्त्र-मार्जन ; (षड्)।
तोमरिगुंडी स्त्री [**दे**] वल्ली विशेष ; (पाअ)।
तोमरी स्त्री [**दे**] वल्लो, लता ; (दे५, १७)।
तोम्हार (अप) देखो **तुम्हार** ; (पि ४३४)।
तोय न [**तोय**] पानो, जल ; (पण्ह १, ३ ; वज्जा १४ ; दे २, ४७)। °**धरा**, °**धारा** स्त्री [°**धारा**] एक दिक्कुमारी देवी ; (इक ; ठा ८)। °**पट्ठ**, °**पिट्ठ** न [°**पृष्ठ**] पानी का उपरि-भाग ; (पण्ह १, ३ ; औप)।
तोय पुं [**तोद**] व्यथा, पोड़ा ; (ठा ४, ४)।
तोरण न [**तोरण**] १ द्वार का अवयव-विशेष, बहिर्द्वार ; (गा २६२)। २ बन्दन-वार, फूल या पत्तों की माला जो उत्सव में लटकाई जाती है ; (औप)। °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (महा)।
तोरविअ वि [**दे**] उत्तेजित ; (पाअ ; कुप्र १६२)।
तोरामदा स्त्री [**दे**] नेत्र का रोग-विशेष ; (महानि ३)।
तोल देखो **तुल**=तोलय्। तोलइ, तोलेइ ; (पिंग ; महा)। वकृ—**तोलंत** ; (वज्जा१५८)। कवकृ—**तोलिज्जमाण**; (सुर १५, ६४)। कृ—**तोलियव्व**; (स १६२)।
तोल पुंन [**दे**] मगध-देश प्रसिद्ध पल, परिमाण-विशेष ; (तंदु)।
तोलण पुं [**दे**] पुरुष, आदमी ; (दे ५, १७)।
तोलण न [**तोलन**] तौल करना, तौलना, नाप करना;(राज)।
तोलिय वि [**तोलित**] तौला हुआ ; (महा)।
तोल्ल न [**तोल्य**, **तौल**] तौल, वजन; (कुप्र १४६)।
तोवट्ट पुं [**दे**] १ कान का आभूषण-विशेष ; २ कमल की कर्णिका ; (दे ५, २३)।
तोस अक [**तोषय्**] खुशी करना, सन्तुष्ट करना। तोसइ ; (उव)। कर्म—तोसिज्जइ ; (गा ५०८)।
तोस पुं [**तोष**] खुशी, आनन्द, संतोष ; (पाअ ; सुपा २७५)। °**यर** वि [°**कर**] संतोष-कारक ; (काल)।
तोस न [**दे**] धन, दौलत ; (दे ५, १७)।
तोसलि पुं [**तोसलिन**] १ ग्राम-विशेष ; २ देश-विशेष ; ३ एक जैन आचार्य ; (राज)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य ; (आवम)।
तोसलिय पुं [**तोसलिक**] तोसलि-ग्राम का अधोश क्षत्रिय; (आवम)।
तोसविअ } **तोसिअ** } वि [**तोषित**] खुश किया हुआ, संतोषित ; (हे ३, १५० ; पउम ७७, ८८)
तोहार (अप) देखो **तुहार** ; (पिंग ; पि ४३४)।
°**त्त** वि [°**त्र**] त्राण-कर्ता, रक्षक ; " सकलत्तं संतुट्ठो सकलत्तो सो नरो होइ " (सुपा ३६६)।
°**त्तण** देखो **तण** ; (से १, ६१)।
°**त्ति** देखो **इअ**=इति ; (कप्प ; स्वप्न १० ; सण)।
°**त्थ** देखो **पत्थ** ; (गा १३२)।
°**त्थ** वि [°**स्थ**] स्थित, रहा हुआ ; (आचा)।

°त्थ देखो **अत्थ** ; (वाअ १५) ।
त्थअ देखो **थय**=स्तृत ; (से १, १) ।
°त्थउड देखो **थउड** ; (गउड) ।
°त्थंब देखो **थंब** ; (चारु २०) ।
°त्थंभ देखो **थंभ** ; (कुमा) ।
°त्थंभण देखो **थंभण** ; (वा १०) ।
°त्थरु देखो **थरु** ; (पि ३२७) ।
°त्थल देखो **थल** ; (काप्र ८७) ।
°त्थली देखो **थली** ; (पि ३८७) ।
°त्थव देखो **थव**=स्तु । वकृ—**°त्थवंत** ; (नाट) ।
°त्थवअ देखो **थवय** ; (से १, ४० ; नाट) ।
°त्थाण देखो **थाण** ; (नाट) ।
°त्थाल देखो **थाल** ; (कुमा) ।
°त्थिअ देखो **थिअ** ; (गा ४२१) ।
°त्थिर देखो **थिर** ; (कुमा) ।
°त्थोअ देखो **थोअ** ; (नाट—वेणी २४) ।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** तयाराइसद्दसंकलणो
तेवीसइमो तरंगो समत्तो ।

———०———

थ

थ पुं [**थ**] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन-विशेष ; (प्राप ; प्रामा) ।
थ अ. १-२ वाक्यालंकार और पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; "किं थ तयं पम्हुट्ठं जं थ तया भो जयंत पवरम्मि" (णाया १, १—पत्र १४८ ; पंचा ११) ।
°थ देखो **पत्थ** ; (गा १३१ ; १३२ ; कस) ।
थइअ वि [**स्थगित**] आच्छादित, ढका हुआ ; (से ५, ४३ ; गा ५७०) ।
थइअ°, **थइआ** स्त्री [**स्थगिका**] पानदानी, पान रखने का पात्र ; (महा) । **°इत्त** पुं [**°वत्**] ताम्बूल-पात्र-वाहक नौकर; (कुप्र ७१)। **°धर** पुं [**°धर**] ताम्बूल-पात्र का वाहक नौकर ; (सुपा १०७) । **°वाहग** पुं [**°वाहक**] पानदानी का वाहक नौकर ; (सुपा १०७) । देखो **थगिय°** ।
थइआ स्त्री [**दे**] थेली, कोथली ; "संबलथइआसणाहो" "दंसिया संवलत्थई (? इ) या" (कुप्र १२ ; ८०) ।
थइउं देखो **थय**=स्थगय् ।

थउड न [**स्थपुट**] १ विषम और उन्नत प्रदेश ; (दे २, ७८) । २ वि. नीचा-ऊँचा ; (गउड) ।
थउडिअ वि [**स्थपुटित**] १ विषम और उन्नत प्रदेश वाला । २ नीचा-ऊँचा प्रदेश वाला ; (गउड) ।
थउड्ड न [**दे**] भल्लातक, वृक्ष-विशेष, भिलावा; (दे ५,२६)।
थंडिल न [**स्थण्डिल**] १ शुद्ध भूमि, जन्तु-रहित प्रदेश ; (कस ; निचू ४) । २ क्रोध, गुस्सा ; (सूअ १, ६) ।
थंडिल्ल न [**स्थण्डिल**] शुद्ध भूमि ; (सुपा ५५८ ; आचा)।
थंडिल्ल न [**दे**] मण्डल, वृत्त प्रदेश ; (दे ५, २५) ।
थंत देखो **था**।
थंब वि [**दे**] विषम, अ-सम ; (दे ५, २४) ।
थंब पुं [**स्तम्ब**]तृण आदि का गुच्छ ; (दे ८, ४६ ; ओघ ७७१ ; कुप्र २२३) ।
थंभ अक [**स्तम्भ्**] १ रुकना, स्तब्ध होना, स्थिर होना, निश्चल होना । २ सक. क्रिया-निरोध करना, अटकाना ; रोकना, निश्चल करना । थंभइ ; (भवि) । कर्म—थंभिज्जइ; (हे २, ६) । संकृ—**थंभिउं** ; (कुप्र ३८५) ।
थंभ पुं [**स्तम्भ**] १ स्तम्भ, थम्भा ; (हे २, ६ ; कुमा ; प्रासू ३३) । २ अभिमान, गर्व, अहंकार ; (सूअ १, १३; उत्त ११) । **°विज्जा** स्त्री [**°विद्या**] स्तब्ध करने की विद्या ; (सुपा ४६३) ।
थंभण न [**स्तम्भन**] १ स्तब्ध-करण, थभाँना ; (विसे ३००७ ; सुपा ५६६) । २ स्तब्ध करने का मन्त्र ; (सुपा ५६६) । ३ गुजरात का एक नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम मे प्रसिद्ध है ; (ती ५१) । **°पुर** न [**°पुर**] नगर-विशेष, खंभात ; (सिग्घ १) ।
थंभणया स्त्री [**स्तम्भना**] स्तब्ध-करण; (ठा ४, ४) ।
थंभणी स्त्री [**स्तम्भनी**] स्तम्भन करने वाली विद्या-विशेष ; (णाया १, १६) ।
थंभय देखो **थंभ**=स्तम्भ ; (कुमा) ।
थंभिय वि [**स्तम्भित**] १ स्तब्ध किया हुआ, थमाया हुआ; (कुप्र १४१; कुमा; कप्प ; औप) । २ जो स्तब्ध हुआ हो, अवष्टब्ध; (स ४६४) ।
थक्क अक [**स्था**] रहना, बैठना, स्थिर होना । थक्कइ ; (हे ४, १६ ; पिंग) । भवि—**थक्किस्सइ** ; (पि ३०६)।
थक्क अक [**फक्क्**] नीचे जाना । थक्कइ; (हे ४,८७) ।
थक्क अक [**श्रम्**] थकना, श्रान्त होना । थक्कंति; (पिंग)।

थक्क वि [**स्थित**] रहा हुआ ; (कुमा ; वज्जा ३८ ; सुपा २३७ ; आरा ७७ ; सट्टि ६) ।

थक्क पुं [**दे**] १ अवसर, प्रस्ताव, समय ; (दे ५, २४ ; वव ६ ; महा ; विसे २०६३) । २ थका हुआ, श्रान्त ; "थक्कं सव्वसरीरं हियए सूलं मुहूसहं एइ" (सुर ७, १८५ ; ४, १६५) ।

थक्किअ वि [**श्रान्त**] थका हुआ, (पिंग) ।

थग देखो **थय**=स्थगय् । भवि—थगइस्सं ; (पि २२१) ।

थगण न [**स्थगन**] पिधान, संवरण, आच्छादन ; (दे २, ८३ ; ठा ४, ४) ।

थगथग अक [**थगथगाय्**] धड़कना, काँपना । वकृ—**थगथगिंत** ; (महा) ।

थगिय वि [**स्थगित**] पिहित, आच्छादित, आवृत ; (दस ५, १ ; आवम) ।

थगिय° देखो **थइअ°** । **°ग्गाहि** पुं [**°ग्राहिन्**] ताम्बूल-वाहक नौकर ; (सुपा ३३६) ।

थग्गया स्त्री [**दे**] चंचु, चोंच ; (दे ५, २६) ।

थग्घ पुं [**दे**] थाह, तला, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त ; (दे ५, २४) ।

थग्घा स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (पाअ) ।

थट्ट पुंन [**दे**] १ ठठ, समूह, यूथ, जत्था ; "दुद्धरतुरंगथट्टा" (सुपा २८८), "विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठदोघट्टथट्ट" (लहुअ ४) । २ ठाठ, सजधज, आडम्बर ; (भवि) ।

थट्टि स्त्री [**दे**] पशु, जानवर ; (दे ५, २४) ।

थड पुंन [**दे**] ठठ, यूथ, समूह ; (भवि) ।

थड्ड वि [**स्तब्ध**] १ निश्चल ; २ अभिमानी, गर्विष्ठ ; (सुपा ४३७ ; ५८२) ।

थड्डिअ वि [**स्तम्भित**] १ स्तब्ध किया हुआ । २ स्तब्ध, निश्चल । ३ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, अकड़ रह कर गुरु को किया जाता प्रणाम ; (गुभा २३) ।

थण अक [**स्तन्**] १ गरजना । २ आक्रन्द करना, चिल्लाना । ३ आक्रोश करना । ४ जोर से नीसास लेना । वकृ—**थणंत**; (गा २६०) ।

थण पुं [**स्तन**] थन, कुच, पयोधर ; (आचा ; कुमा ; काप्र १६१) । **°जीवि** वि [**°जीविन्**] स्तन-पान पर निभने वाला बालक ; (श्रा १४) । **°वई** स्त्री [**°वती**] बड़े स्तन वाली ; (गउड) । **°विसारि** वि [**°विसारिन्**] स्तन पर फैलने वाला ; (गउड) । **°सुत्त** न [**°सूत्र**] उरः-सूत्र ; (दे) । **°हर** पुं [**°भर**] स्तन का बोझ ; (हे १, १८६) ।

थणंधय पुं [**स्तनन्धय**] स्तन-पान करने वाला बालक ; छोटा बच्चा ; "नियय थणं धयंतं थणंधयं हंदि पिच्छंति" (सुर १०, ३७ ; अच्चु ६३) ।

थणण न [**स्तनन**] १ गर्जन, गरजना ; (सुअ १, ५, २)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट; (सुअ १, ५, १) । ३ आक्रोश, अभिशाप; (राज) । ४ आवाज वाला नीसास ; (सुअ १, २, ३) ।

थणिय न [**स्तनित**] १ मेघ का गर्जन ; (वज्जा १२; दे ५, २७) । २ आक्रन्द, चिल्लाहट ; (सम १५३) । ३ पुं. भवनपति देवों की एक जाति; (औप ; पण्ह १, ४) । **°कुमार** पुं [**°कुमार**] भवनपति देवों की एक जाति ; (ठा १, १) ।

थणिल्ल वि [**स्तनवत्**] स्तन वाला ; (कप्पू) ।

थणुल्लअ पुं [**स्तनक**] छोटा स्तन ; (गउड) ।

थण्णु देखो **थाणु** ; (गा ४२२) ।

थत्तिअ न [**दे**] विश्राम ; (दे ५, २६) ।

थद्ध देखो **थड्ड** ; (सम ५१ ; गा ३०४ ; वज्जा १०) ।

थन्न न [**स्तन्य**] स्तन का दूध । **°जीवि** वि [**°जीविन्**] छोटा बच्चा ; (सुपा ६१६) ।

थप्पण न [**स्थापन**] न्यास, न्यसन ; (कुप्र ११७) ।

थप्पिअ वि [**स्थापित**] रक्खा हुआ, न्यस्त ; (पिंग) ।

थब्भर पुं [**दे**] अयोध्या नगरी के समीप का एक द्रह ; (ती ११) ।

थमिअ वि [**दे**] विस्मृत ; (दे ५, २५) ।

थय सक [**स्थगय्**] आच्छादन करना, आवृत करना, ढकना । थएइ, थएसु ; (पि ३०६ ; गा ६०५) । भवि—थइस्सं ; (गा ३१४) । हेकृ—**थइउं**; (गा ३६४) ।

थय वि [**स्तृत**] व्याप्त , भरपूर ; (सं १, १) ।

थय पुं [**स्तव**] स्तुति, स्तवन, गुण-कीर्तन ; (अजि ३६ ; सं ४४) ।

थयण न [**स्तवन**] ऊपर देखो ; "थुइथयणवंदणनमंसणाणि एगट्ठिआणि एयाइं" (आव २) ।

थर पुं [**दे**] दही की तर, दही ऊपर की मलाई; (दे ५,२४)।

थरत्थर, **थरथर**, **थरहर** अक [**दे**] थरथरना, काँपना । थरत्थरइ, थरथरेइ, थरहरइ ; (सट्टि ६६; पि २०७ ; सुर ७, ६; गा १६५) । वकृ—**थरथरंत, थरथ-**

राअंत, थरथराअमाण, थरथरेंत ; (ओघ ४७० ; पि ५५८ ; नाट—मालती ५५ ; पउम ३१, ४४) ।
थरहरिअ वि [दे] कम्पित ; (दे ५, २७ ; भवि ; सुर १, ७; सुपा २१ ; जय १०) ।
थरु पुं [दे. त्सरु] खड्ग-मुष्टि ; (दे ५, २४) ।
थरुगिण पुं [थरुकिन] १ देश-विशेष; २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी । स्त्री —°**गिणिआ**; (इक) ।
थल न [स्थल] १ भूमि, जगह, सूखी जमीन ; (कुमा ; उप ६८६ टी) । २ ग्रास लेते समय खुले हुए मुँह की फाँक, खुले हुए मुँह की खाली जगह; (वव ७) । °**इल्ल** वि [°वत्] स्थल-युक्त ; (गउड) । °**कुक्कुडियंड** न [°कुक्कुटाण्ड] कवल-प्रक्षेप के लिए खुला हुआ मुख; (वव ७) । °**चार** पुं [°चार] जमीन में चलना; (आचा) । °**नलिणी** स्त्री [°नलिनी] जमीन में होने वाला कमल का गाछ ; (कुमा) । °**य** वि [°ज] जमीन में उत्पन्न होने वाला ; (पण्ण १; पउम १२, ३७) । °**यर** वि [°चर] १ जमीन पर चलने वाला ; २ जमीन पर चलने वाला पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्राणी; (जीव ३; जी २०; ओप) । स्त्री—°**री**; (जीव ३) ।
थलय पुं [दे] मंडप, तृणादि-निर्मित गृह; (दे ५, २५) ।
थलहिगा } स्त्री [दे] मृतक-स्मारक, शव को गाड़ कर उस
थलहिया } पर किया जाता एक प्रकार का चबूतरा ; (स ७५६ ; ७५७) ।
थली स्त्री [स्थली] जल-शून्य भू-भाग; (कुमा ; पाअ) । °**घोडय** पुं [°घोटक] पशु-विशेष; (वव ७) ।
थल्लिया स्त्री [दे. स्थालिका] थलिया, छोटा थाल, भोजन करने का बरतन ; (पउम २०, १६६) ।
थव सक [स्तु] स्तुति करना । वकृ—**थवंत**; (नाट) ।
थव देखो **थय**=स्तव; (हे २, ४६ ; सुपा ४४६) ।
थव पुं [दे] पशु, जानवर ; (दे ५, २४) ।
थवइ पुं [स्थपति] वर्धकि, बढ़ई ; (दे २, २२) ।
थवइय वि [स्तबकित] स्तबक वाला, गुच्छ-युक्त; (णाया १, १; ओप) ।
थवइल्ल वि [दे] जाँघ फैला कर बैठा हुआ ; (दे ५,२६)।
थवक्क पुं [दे] थोक, समूह, जत्था; " लब्भइ कुलवहुसुरए थवक्कआ सयलसोक्खाणं" (वज्जा ६६) ।
थवण देखो **थयण** ; (आव २) ।
थवणिया स्त्री [स्थापनिका] न्यास, जमा रखी हुई वस्तु; "कन्नगोभूमालियथवणियअवहारकूडसक्खिज्जं" (सुपा २७५) ।
थवय पुं [स्तबक] फूल आदि का गुच्छ ; (दे२, १०३ ; पाअ) ।
थविआ स्त्री [दे] प्रसेविका, वीणा के अन्त में लगाया जाता छोटा काष्ठ-विशेष ; (दे २, २५) ।
थविय वि [स्थापित] न्यस्त, निहित ; (भवि) ।
थविय वि [स्तुत] जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित ; (सुपा ३४३) ।
थवी [दे] देखो **थविआ** ; (दे २, २५) ।
थस } वि [दे] विस्तीर्ण ; (दे ५, २५) ।
थसल }
थह पुं [दे] निलय, आश्रय, स्थान; (दे ५, २५) ।
था देखो **ठा** । थाइ; (भवि) । भवि—थाहिइ; (पि५२४) । वकृ—**थंत** ; (पउम१४, १३४ ; भवि) । संकृ—**थाऊण** ; (हे४, १६) ।
थाइ वि [स्थायिन्] रहने वाला । °**णी** स्त्री [°नी] वर्ष वर्ष पर प्रसव करने वाली घोड़ी ; (राज) ।
थाण देखो **ठाण** ; (हे४, १६ ; विसे१८५६ ; उप पृ३३२)।
थाणय न [स्थानक] आलवाल, कियारी ; (दे५,२७) ।
थाणय न [दे] १ चौकी, पहरा ; "भयाणया अडवि त्ति निविट्ठाइं थाणयाइं", "तओ बहुवोलियाए रयणीए थाणयनिविट्ठा तुरियतुरियमागया सवरपुरिसा" (स ५३७ ; ५४६) । २ पुं. चोकीदार, चोकी करने वाला आदमी; "पहायसमए य विसंसरिएसुं थाणएसुं" (स ५३७) ।
थाणिज्ज वि [दे] गौरवित, सम्मानित ; (दे ४ ५) ।
थाणीय वि [स्थानीय] स्थानापन्न; (स ६६७) ।
थाणु पुं [स्थाणु] १ महादेव, शिव ; (हे २, ७ ;कुमा ; पाअ) । २ ठूठा वृक्ष ; (गा २३२; पाअ), "दवदड्ढथाणुसरिसं" (कुप्र १०२) । ३ खीला ; ४ स्तम्भ ; (राज) ।
थाणेसर न [स्थानेश्वर] समुद्र के किनारे पर का एक शहर; (उप ७२८ टी ; स १४८) ।
थाम वि [दे] विस्तीर्ण ; (दे ५, २५) ।
थाम न [स्थामन्] १ बल, वीर्य, पराक्रम ; (हे४, २६७; ठा ३, १) । २ वि. बल-युक्त ; (निचू ११) । °**व** वि [°वत्] बलवान् ; (उत्त २) ।
थाम न [दे. ठाण] स्थान, जगह ; (संक्षि ४७ ; स ४६ ; ७४३) । "सेवालियभूमितले फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि" (सुर २, १०५) ।

थार पुं [**दे**] घन, मेघ ; (दे ५, २७)।
थारुणय वि [**थारुकिन**] देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री—°**णिया** ; (औप) । देखो **थरुगिण** ।
थाल पुंन [**स्थाल**] बड़ी थलिया, भोजन करने का पात्र ; (दे ६, १२ ; अंत ५ ; उप पृ २५७) ।
थालइ वि [**स्थालकिन्**] १ थाल वाला । २ पुं. वानप्रस्थ का एक भेद ; (औप) ।
थाला स्त्री [**दे**] धारा ; (षड्) ।
थाली स्त्री [**स्थाली**] पाक-पात्र, हाँड़ी, बटलोही ; (ठा ३, १ ; सुपा ४८७) । °**पाग** वि [°**पाक**] हाँडी में पकाया हुआ ; (ठा ३, १) ।
थावच्चा स्त्री [**स्थापत्या**] द्वारका-निवासी एक गृहस्थ स्त्री ; (णाया १, ५) । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] स्थापत्या का पुत्र, एक जैन मुनि ; (णाया १, ५ ; अंत) ।
थावण न [**स्थापन**] न्यास, आधान ; (स २१३) ।
थावय पुं [**स्थापक**] समर्थ हेतु, स्वपक्ष-साधक हेतु ; (ठा ४, ३—पत्र २५४) ।
थावर वि [**स्थावर**] १ स्थिर रहने वाला । २ पुं. एकेन्द्रिय प्राणी, केवल स्पर्शेन्द्रिय वाला पृथिवी, पानी और वनस्पति आदि का जीव ; (ठा३, २ ; जी २) । ३ एक विशेष-नाम, एक नौकर का नाम ; (उप ५९७ टी) । °**काय** पुं [°**काय**] एकेन्द्रिय जीव; (ठा २, १) । °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, स्थावरत्व-प्राप्ति का कारण-भूत कर्म; (पंच ३; सम ६७) ।
थासग, **थासय** पुं [**स्थासक**] १ दर्पण, आदर्श, शीशा; (विपा १,२—पत्र २४) । २ दर्पण के आकार का पात्र-विशेष ; (औप ; अनु ; णाया १, १ टी) । ३ अश्व का आभरण-विशेष ; (राज) ।
थाह पुं [**दे**] १ स्थान, जगह ; २ वि. अस्ताघ, गंभीर जल-वाला ; ३ विस्तीर्ण; ४ दीर्घ, लम्बा ; (दे५, ३०) ।
थाह पुं [**स्थाघ**] थाह, तला, गहराई का अन्त ; (पाअ ; विसे १३३२ ; णाया १, ६ ; १४ ; से ८, ४०) ।
थाहिअ पुं [**दे**] आलाप, स्वर-विशेष; (सुपा१६) ।
थिअ वि [**स्थित**] रहा हुआ; (स२७०; विसे १०३५; भवि)।
थिइ देखो **ठिइ** ; (से २, १८ ; गउड) ।
थिंप अक [**तृप्**] तृप्त होना, संतुष्ट होना । थिंपइ ; (प्राप्र) । भवि—थिंपिहिंति; (प्राप्र ८, २३ टी) । संकृ—**थिंपिअ** ; (प्राप्र ८, २२ टी) ।
थिग्गल न [**दे**] १ भित्ति-द्वार, भींत में किया हुआ दरवाजा; (दस ५, १, १५) । २ फटे-फुटे वस्त्र में किया जाता संधान, वस्त्र आदि के खंडित भाग में लगाई जाती जोड़ ; (पण्ण १७ ; विसे १४३६ टी) ।
थिण्ण वि [**स्त्यान**] कठिन, जमा हुआ ; (हे १, ७४ ; २ ९९ ; से २, ३०) । देखो **थीण** ।
थिण्ण वि [**दे**] १ स्नेह-रहित दया वाला ; २ अभिमानी, गर्व-युक्त ; (दे ५, ३०) ।
थिन्न वि [**दे**] गर्वित, अभिमानी ; (पाअ) ।
थिप्प देखो **थिंप** । थिप्पइ; (हे ४, १३८) ।
थिप्प अक [**वि+गल्**] गल जाना । थिप्पइ ; (हे ४, १७५) ।
थिम सक [**स्तिम्**] आर्द्र करना, गीला करना । हेकृ—**थिमिउं** ; (राज) ।
थिमिअ वि [**दे. स्तिमित**] स्थिर, निश्चल; (दे ५, २७; से २, ४३ ; ८, ६१; णाया १, १ ; विपा १, १; पण्ह १, ४; २, ५; औप ; सुज्ज १; सुअ १, ३, ४) । २ मन्थर, धीमा ; (पाअ) ।
थिमिअ पुं [**स्तिमित**] राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम ; (अंत ३) ।
थिर वि [**स्थिर**] १ निश्चल, निष्कम्प ; (विपा १, १ ; सम ११९ ; णाया १, ८) । २ निष्पन्न, संपन्न, (दस ७, ३५) । °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दन्त, हड्डी आदि अवयवों की स्थिरता होती है; (कम्म १, ४९; सम ६७) । °**वलिया** स्त्री [°**वलिका**] जन्तु-विशेष, सर्प की एक जाति ; (जीव २) ।
थिरणाम वि [**दे**]चल-चित्त, चंचल-मनस्क ; (दे ५, २७)।
थिरण्णेस वि [**दे**] अस्थिर, चंचल ; (षड्) ।
थिरसीस वि [**दे**] १ निर्भीक, निडर ; २ निर्भर; ३ जिसने सिर पर कवच बाँधा हो वह ; (दे ५, ३१) ।
थिरिम पुंस्त्री [**स्थैर्य**] स्थिरता ; (सण) ।
थिरीकरण न [**स्थिरीकरण**] स्थिर करना, दृढ़ करना, जमाना ; (श्रा ६ ; रयण ६६) ।
थिल्लि स्त्री [**दे**] यान-विशेष; —१ दो घोड़े की बग्घी; २ दो खच्चर आदि से वाह्य यान ; (सूअ १, २, ६३; णाया १, १ टी—पत्र ४३ ; औप) ।
थिविथिव अक [**थिवथिवाय्**] थिव थिव आवाज करना । वकृ—**थिविथिवंत** ; (विपा १, ७) ।

थिवुग } पुं [**स्तिबुक**] जल-बिन्दु ; (विसे ७०४ ;
थिवुय } ७०५ ; सम १४६) । °**संकम** पुं [°**संक्रम**]
कर्म-प्रकृतिओं का आपस में संक्रमण-विशेष; (पंचा ५) ।

थिहु पुं [**स्तिभु**] वनस्पति-विशेष ; (राज) ।

थी स्त्री [**स्त्री**] स्त्री, महिला, नारी ; (हे २, १३० ; कुमा ; प्रासू ६५) ।

थीण देखो **थिण्ण**; हे१,७४ ; दे१, ८१ ; कुमा ; पाअ)। °**गिद्धि** स्त्री [°**गृद्धि**] निकृष्ट निद्रा-विशेष ; (ठा ६ ; विसे २३४; उत्त ३३, ५) । °**द्धि** स्त्री [°**र्द्धि**] अधम निद्रा-विशेष ; (सम१५) । °**द्धिय** वि [°**र्द्धिक**] स्त्यानर्द्धि निद्रा वाला ; (विसे २३५) ।

थु अ. तिरस्कार-सूचक अव्यय ; (प्रति ८१) ।

थुअ वि [**स्तुत**] जिसकी स्तुति की गई हो वह, प्रशंसित ; (दे ८, २७ ; धण ५० ; अजि १८) ।

थुइ स्त्री [**स्तुति**] स्तव, गुण-कीर्तन ; (कुमा ; चैत्य १ ; सुर १०, १०३) ।

थुक्क अक [**थूत्+कृ**] १ थूकना । २ सक. तिरस्कार करना, थुतकारना, अनादर के साथ निकालना । थुक्केइ; (वज्जा ४६) । संकृ—**थुक्किऊण** ; (सुपा ३४६) ।

थुक्क न [**थूत्कृत**] थूक, कफ, खखार ; (दे ४, ४१) ।

थुक्कार पुं [**थूत्कार**] तिरस्कार ; (राय) ।

थुक्कार सक [**थूत्कारय्**] तिरस्कार करना । कवकृ—**थुक्कारिज्जमाण** ; (पि ५६३) ।

थुक्किअ वि [**दे**] उन्नत, ऊँचा ; (दे ५, २८) ।

थुक्किअ वि [**थूत्कृत**] थूका हुआ ; (दे ५, २८ ; सुपा ३४६) ।

थुड न [**दे. स्थुड**] वृक्ष का स्कन्ध; "चोरीउ करेऊण बद्धा ताण थुडेसु" (सुपा ५८४ ; ३६६) ।

थुडंकिअय न [**दे**] रोष-युक्त वचन ; (पाअ) ।

थुडुंकिअ न [**दे**] १ अल्प-कुपित मुँह का संकोच, थोड़ा गुस्सा होने से होता मुँह का संकोच ; २ मौन, चुपकी; (दे ५, ३१) ।

थुडुहीर न [**दे**] चामर ; (दे ५, २८) ।

थुण सक [**स्तु**] स्तुति करना, गुण-वर्णन करना । थुणइ ; (हे ४, २४१) । कर्म—थुव्वइ, थुणिज्जइ; (हे ४, २४२)। वकृ—**थुणंत** ; (भवि) । कवकृ—**थुव्वंत, थुव्वमाण** ; (सुपा ८८ ; सुर४, ६६ ; स ७०१) । संकृ —**थोऊण** , (काल) । हेकृ—**थोत्तुं** ; (मुणि१०८७५) । कृ—**थुव्व, थोअव्व** ; (भवि ; चैत्य ३५ ; स ७१०) ।

थुणण न [**स्तवन**] गुण-कीर्तन, स्तुति; (सुपा ३७) ।

थुणिर वि [**स्तोतृ**] स्तुति करने वाला ; (काल) ।

थुण्ण वि [**दे**] दृप्त, अभिमानी ; (दे ५, २७) ।

थुत्त न [**स्तोत्र**] स्तुति, स्तुति-पाठ; (भवि) ।

थुत्थुक्कारिय वि [**थुथुत्कारित**] थुतकारा हुआ, तिरस्कृत, अपमानित ; (भवि) ।

थुथूकार पुं [**थुथूत्कार**] तिरस्कार ; (प्रयौ ८१) ।

थुरुगुल्लणय न [**दे**] शय्या, बिछौना ; (दे ५, २८) ।

थुलम पुं [**दे**] पट-कुटी, तंबू, वस्त्र-गृह, कपड-कोट ; (दे ५, २८) ।

थुल्ल वि [**दे**] परिवर्तित, बदला हुआ ; (दे ५, २७) ।

थुल्ल वि [**स्थूल**] मोटा ; (हे २, ६६ ; प्रामा) ।

थुवअ वि [**स्तावक**] स्तुति करने वाला; (हे १, ७५) ।

थुवण न [**स्तवन**] स्तुति, स्तव ; (कुप्र ३५१) ।

थुव्व } देखो **थुण** ।
थुव्वंत }

थू अ. निन्दा-सूचक अव्यय ; "थू निल्लज्जो लोओ" (हे २, २०० ; कुमा) ।

थूण पुं [**दे**] अश्व, घोड़ा ; (दे ५, २६) ।

थूण देखो **तेण**=स्तेन ; (हे २, १४७) ।

थूणा स्त्री [**स्थूणा**] खम्भा, खूँटी; (षड् ; पण्ण१५) ।

थूणाग पुं [**स्थूणाक**] सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष ; (आवम) ।

थूभ पुं [**स्तूप**] थूहा, टीला, ढूह, स्मृति-स्तम्भ ; (विसे६६८; सुपा २०६; कुप्र १६५; आचा २, १, २) ।

थूभिया } स्त्री [**स्तूपिका**] १ छोटा स्तूप ; (ओघ४३६ ;
थूभियागा } औप) । २ छोटा शिखर ; (सम१३७) ।

थूरी स्त्री [**दे**] तन्तुवाय का एक उपकरण ; (दे५, २८) ।

थूल देखो **थुल्ल** ; (पाअ ; पउम १४, ११३ ; उवा) । °**भद्द** पुं [°**भद्र**] एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि ; (हे१, २५५ ; पडि) ।

थूलघोण पुं [**दे**] सूकर, वराह ; (दे ५, २९) ।

थूव } देखो **थूभ** ; (दे ७, ४० ; सुर १, ५८) ।
थूह }

थूह पुं [**दे**] १ प्रासाद का शिखर ; (दे ५, ३२ ; पाअ) । २ चातक पक्षी ; ३ वल्मीक ; (दे ५, ३२) ।

थेअ वि [**स्थेय**] १ रहने योग्य ; २ जो रह सकता हो ; ३ पुं. फैसला करने वाला, न्यायाधीश ; (हे ४, २६७)।

थेग पुं [**दे**] कन्द-विशेष ; (श्रा २० ; जी ६)।

थेज्ज न [**स्थैर्य**] स्थिरता ; (विसे १४)।

थेज्ज देखो **थेअ** ; (वव ३)।

थेण पुं [**स्तेन**] चोर, तस्कर ; (हे १, १४७)।

थेणिल्लिअ वि [**दे**] १ हृत, छीना हुआ ; २ भीत, डरा हुआ ; (दे ५, ३२)।

थेप्प देखो **थिप्प**। थेप्पइ ; (पि २०७ ; संक्षि ३४)।

थेर वि [**स्थविर**] १ वृद्ध, बूढ़ा; (हे १, १६६; २, ८९; भग ६, ३३)। २ पुं. जैन साधु; (ओघ १७ ; कप्प)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ जैन मुनिओं का आचार-विशेष, गच्छ में रहने वाले जैन मुनिओं का अनुष्ठान ; २ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (ठा ३, ४ ; ओघ ६७०)। °**कप्पिय** पुं[°**कल्पिक**] आचार विशेष का आश्रय करने वाला, गच्छ में रहने वाला जैन मुनि; (पव ७०)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] स्थविर का पद ; (ठा ३, २)। °**ावलि** पुं [°**ावलि**] १ जैन मुनिओं का समूह ; २ क्रम से जैन मुनि-गण के चरित्र का प्रतिपादक ग्रन्थ-विशेष ; (णंदि ; कप्प)।

थेर पुं [**दे. स्थविर**] ब्रह्मा, विधाता ;(दे ५, २९; पाअ)।

थेरासण न [**दे**] पद्म, कमल; (दे ५, २९)।

थेरिअ न [**स्थैर्य**] स्थिरता ; (कुमा)।

थेरिया } स्त्री [**स्थविरा**] १ वृद्धा, बूढ़िया ; (पाअ ;
थेरी } ओघ २१ टी)। २ जैन साध्वी ; (कप्प)।

थेरोसण न [**दे**] अम्बुज, कमल, पद्म; (षड्)।

थेव पुं [**दे**] बिन्दु ; (दे ५, २९ ; पाअ; षड्)।

थेव देखो **थोव**; (हे २, १२५ ; पाअ; सुर १, १८१)। °**कालिय** वि [°**कालिक**] अल्प काल तक रहने वाला ; (सुपा ३७५)।

थेवरिअ न [**दे**] जन्म-समय में बजाया जाता वाद्य ; (दे ५, २९)।

थोअ देखो **थोव**; (हे २, १२५; गा ४९; गउड; संक्षि १)।

थोअ पुं [**दे**] १ रजक, धाबी; २ मूलक, मूला, कन्द-विशेष ; (दे ५, ३२)।

थोअव्व } देखो **थुण**।
थोऊण }

थोक्क } देखो **थोव** ; (हे २, १२५ ; जो १)।
थोग }

थोडेरुय देखो **धाडेरुय** ; (उप ७२८ टी)।

थोणा देखो **थूणा** ; (हे १, १२५)।

थोत्त न [**स्तोत्र**] स्तुति, स्तव ; (हे२, ४५ ; सुपा १६६)।

थोत्तुं देखो **थुण**।

थोभ } पुं [**स्तोभ**,°**क**] 'च', 'वै' आदि निरर्थक अव्यय का
थोभय } प्रयोग ; "उय-वइकारा हत्ति य अकारणा थोभया हुंति" (बृह १ ; विसे ९९९ टी)।

थोर देखो **थुल्ल** ; (हे१, २५५ ; २, ९९ ; पउम २, १६; से १०, ४२)।

थोर वि [**दे**] क्रम से विस्तीर्ण अथ च गोल; (दे ५, ३०; वज्जा ३६)।

थोल पुं [**दे**] वस्त्र का एक देश ; (दे ५, ३०)।

थोव } वि [**स्तोक**] १ अल्प, थोड़ा ; (हे २, १२५ ;
थोवाग } उव ; श्रा २७ ; ओघ २५९ ; विसे ३०३०)। २ पुं. समय का एक परिमाण ; (ठा २, ३ ; भग)।

थोह न [**दे**] बल, पराक्रम ; (दे ५, ३०)।

थोहर पुंस्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष, थूहर का पेड़, सेहुंड ; (सुपा २०३)। स्त्री—°**री** ; (उप१०३१ टी ; जी १० ; धर्म३)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि थयाराइसद्दसंकलणो** चउव्वीसइमो तरंगो समत्तो।

—०—

द

द पुं [**दे**] दन्त स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष ; (प्राप ; प्रामा)।

दअच्छर पुं [**दे**] ग्राम स्वामी, गाँव का अधिपति ; (दे ५, ३६)।

दअरी स्त्री [**दे**] सुरा, मदिरा, दारू ; (दे५, ३४)।

दइ स्त्री [**दृति**] मसक, चर्म-निर्मित जल-पात्र ; (ओघ३८)।

दइअ वि [**दे**] रक्षित ; (दे ५, ३५)।

दइअ वि [**दयित**] १ प्रिय, प्रेम-पात्र; "जाओ वरकामिणी-दइओ" (सुर १, १८३)। २ अभीष्ट, वाञ्छित; "अम्हाण मणोदइयं दंसणमवि दुल्लहं मन्ने" (सुर ३, २३८)। ३ पुं. पति, स्वामी, भर्ता ; (पाअ; कुमा)। °**यम** वि [°**तम**]

१ अत्यन्त प्रिय ; २ पुं. पति, भर्ता ; (पउम ७७, ६२) ।
दइआ स्त्री [**दयिता**] स्त्री, प्रिया, पत्नी ; (कुमा ; महा ; सुर ४, १२६) ।
दइच्च पुं [**दैत्य**] दानव, असुर ; (हे १, १५१ ; कुमा ; पात्र) । °**गुरु** पुं [°**गुरु**] शुक्र ; (पात्र) ।
दइन्न न [**दैन्य**] दीनता, गरीबपन ; (हे १, १५१) ।
दइव पुंन [**दैव**] दैव भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, पूर्व-कृत कर्म ; (हे १, १५३ ; कुमा ; महा ; पउम २८, ६०) । "अहवा कुविओ दइवो पुरिसं किं हणइ लउडेण" (सुर ८, ३४) । °**ज्ज**, °**ण्णु** पुं [°**ज्ञ**] ज्योतिषी, ज्योतिःशास्त्र का विद्वान ; (हे २, ८३ ; षड्) । देखो **देव**=दैव ।
दइवय न [**दैवत**] देव, देवता; (पण्ह २,१ ; हे १, १५१ ; कुमा) ।
दइविग वि [**दैविक**] देव-संबन्धी, दिव्य ; (स५०६) ।
दइव्व देखो **दइव** ; (हे १, १५३ ; २, ६६ ; कुमा ; पउम ६३, ४) ।
दउदर, **दओदर** न [**दकोदर**] रोग-विशेष, जलोदर, पानी से पेट का फूलना ; (णाया१, १३ ; विपा १, १) ।
दओभास पुं [**दकावभास**] लवण-समुद्र में स्थित वेलंधर-नागराज का एक आवास-पर्वत ; (इक) ।
दंठा देखो **दाढा** ; (नाट—मालती ५६) ।
दंठि वि [**दंष्ट्रिन्**] बड़े दाँत वाला, हिंसक जन्तु; (नाट—वेणी २४) ।
दंड सक [**दण्डय्**] सजा करना, निग्रह करना । कवकृ — **दंडिज्जंत**; (प्रासू ६६) ।
दंड पुं [**दण्ड**] १ जीव-हिंसा, प्राण-नाश ; (सम१ ; णाया १, १; ठा१) । २ अपराधी को अपराध के अनुसार शारीरिक या आर्थिक दण्ड, सजा, निग्रह, दमन; (ठा ३,३; प्रासू ६३; हे १, १२७) । ३ लाठी, यष्टि ; (उप ५३० टी ; प्रासू ७४) । ४ दुःख-जनक, परिताप-जनक ; (आचा) । ५ मन, वचन और शरीर का अशुभ व्यापार ; (उत्त १६ ; दं ४६)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। ७ एक जैन उपासक का नाम; (संथा ६१) । ८ परिमाण-विशेष, १६२ अंगुल का एक नाप; (इक) । ९ आज्ञा ; (ठा ५, ३) । १० पुंन. सैन्य, लश्कर ; (पण्ह १, ४ ; ठा ५, ३) । °**अल** पुं [°**कल**] छन्द-विशेष ; (पिंग) । °**जुज्झ** न [°**युद्ध**] यष्टि-युद्ध; (आचा) । °**णायग** पुं [°**नायक**] १ दण्ड-दाता, अपराध-विचार-कर्ता । २ सेनापति, सेनानी, प्रतिनियत सैन्य का नायक; (पण्ह १, ४ ; औप ; कप्प ; णाया १, १) । °**णीइ** स्त्री [°**नीति**] नीति-विशेष, अनुशासन ; (ठा ६) । °**पह** पुं [°**पथ**] मार्ग-विशेष, सीधा मार्ग ; (सुअ १, १३) । °**पासि** पुं [°**पार्श्विन्**, °**पाशिन्**] १ दण्ड दाता; २ कोतवाल ; (राज ; श्रा २७) । °**पुंछणय** न [**प्रोञ्छनक**] दण्डाकार झाडू ; (जं ५) । °**भी** वि [°**भी**] दण्ड से डरने वाला, दण्ड-भीरु ; (आचा) । °**लत्तिय** वि [°**लात**] दण्ड लेने वाला ; (वव १) । °**वइ** पुं [°**पति**] सेनानी, सेना-पति; (सुपा ३२३) । °**वासिग**, °**वासिय** पुं [**दण्डपाशिक**] कोतवाल; (कुप्र १५५; स २६५; उप १०३१ टी) । °**वीरिय** पुं [°**वीर्य**] राजा भरत के वंश का एक राजा, जिसको आदर्श-गृह में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था; (ठा ८) । °**रास** पुं [°**रास**] एक प्रकार का नाच; (कप्पू) । °**ाइय** वि [°**ायत**] दण्ड की तरह लम्बा; (कस; औप)। °**ायइय** त्रि [°**ायतिक**] पैर को दण्ड की तरह लम्बा फैलाने वाला; (औप; कस; ठा ५, १)। °**ारक्खिग** पुं [°**ारक्षिक**] दण्ड-धारी प्रतीहार ; (निचू ६) । °**ारण्ण** न [°**ारण्य**] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल ; (पउम ४१, १ ; ७६, ५) । °**ासणिय** वि [°**ासनिक**] दण्ड की तरह पैर फैला कर बैठने वाला ; (कस) । देखो **दंडग**, **दंडय** ।
दंडग, **दंडय** पुं [**दण्डक**] १ कर्ण-कुण्डल नगर का एक राजा; (पउम १, १६) । २ दण्डाकार वाक्य-पद्धति, ग्रन्थांश-विशेष; (राज) । ३ भवनपति आदि चौवीस दण्डक, पद-विशेष : (दं १) । ४ न. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल ; (पउम ३१, २५) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष (पउम ४२, १४) । देखो **दंड** ; (उप ८६१ ; बृह १ ; सुअ २, २ ; पउम ४०, १३) ।
दंडावण न [**दण्डन**] सजा कराना, निग्रह कराना ; (श्रा १४) ।
दंडाविअ वि [**दण्डित**] जिसको दण्ड दिलाया गया हो वह ; (ओघ ५६७ टी) ।
दंडि वि [**दण्डिन्**] १ दण्ड-युक्त । २ पुं. दण्डधारी प्रतीहार; (कुमा; जं ३) ।
°**दंडि** देखो **दंडी**; (कुप्र ४४) ।
दंडिअ वि [**दण्डित**] जिसको सजा दी गई हो वह ; (सुपा ४६२) ।
दंडिअ वि [**दण्डिक**] १ दण्ड वाला । २ पुं. राजा, नृप ;

(वव ४)। ३ दण्ड-दाता, अपराध-विचार-कर्त्ता; (वव १)।
°डिआ स्त्री [दे] लेख पर लगाई जाती राज-मुद्रा; (बृह १)।
दंडिक्किअ वि [दे] अपमानित; "दंडिक्किओ समाणो तमवद्दारेण नीणेइ" (उप ६४८ टी)।
दंडिम वि [दण्डिम] १ दण्ड से निर्वृत्त; २ न. सजा करके वसूल किया हुआ द्रव्य; (णाया १, १—पत्र ३७)।
दंडी स्त्री [दे] १ सूत्र-कनक; २ साँधा हुआ वस्त्र-युग्म; (दे ५, ३३)। ३ साँधा हुआ जीर्ण वस्त्र, (णाया १, १६—पत्र १९९; पण्ह १, ३—पत्र ५३)।
दंत पुं [दे] पर्वत का एक देश; (दे ५, ३३)।
दंत वि [दान्त] १ जिसका दमन किया गया हो वह, वश में किया हुआ; "दंतेण चित्तेण चरंति धीरा" (प्रासू १६५)। २ जितेन्द्रिय; (णाया १, १४; दस १०)।
दंत पुं [दन्त] दाँत, दशन; (कुमा; कप्पू)। °**कुडी** स्त्री [°कुटी] दंष्ट्रा, दाढ; (तंदु)। °**च्छअ** पुं [°च्छद] ओष्ठ, होठ; (पाअ)। °**धावण** न [°धावन] १ दाँत साफ करना; २ दाँत साफ करने का काष्ठ, दतवन; (पण्ह २, ४; निचू ३)। °**पक्खालण** न [°प्रक्षालन] वही पूर्वोक्त अर्थ; (सुअ १, ४, २)। °**पाय** न [°पात्र] दाँत का बना हुआ पात्र; (आचा २, ६, १)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष; (वव १)। °**प्पहावण** न [°प्रधावन] देखो °**धावण**; (दस ३)। °**माल** पुं [°माल] वृक्ष-विशेष; (जं २)। °**वक्क** पुं [°वक्र] दन्तपुर नगर का एक राजा; (वव १)। °**वलहिया** स्त्री [°वलभिका] उद्यान-विशेष; (स७०)। °**वाणिज्ज** न [°वाणिज्य] हाथी-दाँत वगैरह दाँत का व्यापार; (धर्म २)। °**ार** पुं [°कार] दाँत का काम करने वाला शिल्पी; (पण्ण १)।
दंतवण न [दे] १ दन्त-शुद्धि; २ दतवन, दाँत साफ करने का काष्ठ; (दे २, १२; ठा ९—पत्र ४६०; उवा; पव४)।
दंताल पुंस्त्री [दे] शस्त्र-विशेष, घास काटने का हथियार; (सुपा ५२६)। स्त्री—°**ली**; (कम्म १, ३६)।
दंति पुं [दन्तिन्] १ हस्ती, हाथी; (पाअ)। २ पर्वत-विशेष; (पउम १५, ९)।
दंतिअ पुं [दे] शशक, खरगोश, खरहा; (दे५, ३४)।
दंतिंदिअ वि [दान्तेन्द्रिय] जितेन्द्रिय, इन्द्रिय-निग्रही; (ओघ ४९ भा)
दंतिक्क न [दे] चावल का आटा; (बृह १)।
दंतिया स्त्री [दन्तिका] वृक्ष-विशेष, बडी सतावर; (पण्ण १—पत्र ३२)।
दंती स्त्री [दन्ती] स्वनाम-ख्यात वृक्ष; (पण्ण१—पत्र३६)।
दंतुक्खलिय पुं [दन्तोलूखलिक] तापस-विशेष, जो दाँत से ही व्रीहि वगैरः को निस्तुष कर खाते है; (निर १, ३)।
दंतुर वि [दन्तुर] उन्नत दाँत वाला, जिसके दाँत उभड़ खाभड़ हो; २ ऊँचा-नीचा स्थान; विषम स्थान; (दे २, ७७) ३ आगे आया हुआ, आगे निकल आया हुआ; (कप्पू)
दंतुरिय वि [दन्तुरित] ऊपर देखो; "विचित्तपासायपंति दंतुरियं" (उप १०३१ टी; सुपा २००)।
दंद पुं [द्वन्द्व] १ व्याकरण-प्रसिद्ध उभय-पद-प्रधान समास (अणु)। २ न. परस्पर-विरुद्ध शीत-उष्ण, सुख-दुःख आदि युग्म; ३ कलह, क्लेश; ४ युद्ध, संग्राम; (सुपा १४७; कुमा)।
दंभ पुं [दम्भ] १ माया, कपट; (हे १, १२७)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ ठगाई, वञ्चना; (पव २)
दंभोलि पुं [दम्भोलि] वज्र; (कुप्र २७०)।
दंस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दंसइ; (हे ४, ३२; महा)। वकृ—**दंसंत, दंसिंत, दंसअंत** (भग; सुपा ९२; अभि १८४)। कवकृ—**दंसिज्जंत** (सुर २, १९९)। संकृ—**दंसिअ**; (नाट)। कृ—**दंसियव्व**; (सुपा ४५४)।
दंस सक [दंश्] काटना, दाँत से काटना। दंसइ; (नाट—साहित्य ७३)। दंसंतु; (आचा)। वकृ—**दंसमाण**; (आचा)।
दंस पुं [दंश] १ डाँस, बड़ा मच्छड़; (भग; आचा)। २ दन्त-क्षत, सर्प या अन्य किसी विषैले कीड़े का काटा हुआ घाव; (हे १, २६० टि)।
दंस पुं [दर्श] सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा; (आत्म)।
दंसग वि [दर्शक] दिखलाने वाला; (स४८१)।
दंसण पुंन [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण; (पुप्फ १२४; स्वप्न २६)। २ चक्षु, नेत्र, आँख; (से १, १७)। ३ सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा; (ठा १; ५, ३)। ४ सामान्य ज्ञान; "जं सामन्नग्गहणं दंसणमेअं" (सम्म ५५)। ५ मत, धर्म; ६ शास्त्र-विशेष; (ठा ७; ८; पंचा १२)। °**मोह** न [°मोह] तत्त्व-श्रद्धा का प्रतिबन्धक कर्म-विशेष; (कम्म१, १४)। °**मोहणिज्ज** न [°मोहनीय] कर्म-विशेष; (ठा २, ४; भग)। °**ावरण** न [°ावरण]

कर्म-विशेष, सामान्य-ज्ञान का आवारक कर्म ; (ठा ६)। °वरणिज्ज न [°वरणीय] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (सम १५)। देखो—**दरिसण**।

दंसण न [**दंशन**] दाँत से काटना ; (से १, १७)।

दंसणि वि [**दर्शनिन्**] १ किसी धर्म का अनुयायी ; (सुपा ४६६)। २ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का जानकार ; (कुप्र २६ ; कुम्मा २१)। ३ तत्त्व-श्रद्धालु ; (अणु)।

दंसणिआ स्त्री [**दर्शनिका**] दर्शन, अवलोकन ; "चंदसूर-दंसणिया" (औप ; णाया १, १)।

दंसणिज्ज } वि [**दर्शनीय**] देखने योग्य, दर्शन-योग्य ;
दंसणीअ } (सूअ २, ७ ; अभि ६८ ; महा)।

दंसावण न [**दर्शन**] दिखाना ; (उप २११ टी)।

दंसाविअ वि [**दर्शित**] दिखलाया हुआ ; (सुपा ३८६)।

दंसि वि [**दर्शिन्**] देखने वाला ; (आचा ; कुप्र ४१ ; दं २३)।

दंसिअ वि [**दर्शित**] दिखलाया हुआ ; (पाअ)।

दंसिअ
दंसिंत
दंसिज्जंत
दंसियव्व } देखो **दंस**=दर्शय्।

दक्क वि [**दष्ट**] जो दाँत से काटा गया हो वह ; (षड्)।

दक्ख सक [**दृश्**] देखना, अवलोकन करना। दक्खामि, दक्खिमो ; (अभि ११६ ; विक्र २७)। प्रयो—दक्खावइ ; (पि ५५४)। कर्म—दीसइ ; (उव)। कवकृ—**दिस्समाण**, **दीसंत**, **दीसमाण** ; (आव ५ ; गा ७३ ; नाट—चैत ७१)। संकृ—**दक्खु**, **दट्टु**, **दट्ठुआण**, **दट्ठुं**, **दट्ठूण**, **दट्ठूणं**, **दिस्स**, **दिस्सं**, **दिस्सा** ; (कप्प ; षड् ; कुमा ; महा ; पि ५८५ ; सूअ १, ३, २, १ ; पि ३३४)। हेकृ—**दट्ठुं** ; (कुमा)। कृ—**दट्ठव्व**, **दिट्ठव्व** ; (महा ; उत्तर १०७)।

दक्ख सक [**दर्शय्**] दिखलाना, "सोवि हु दक्खइ बहुकोउयमंततंताइं" (सुपा २३२)।

दक्ख वि [**दक्ष**] १ निपुण, चतुर ; (कप्प ; सुपा २८६ ; श्रा २८)। २ पुं. भूतानन्द-नामक इन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव ; (ठा ५, १ ; इक)। ३ भगवान् मुनिसुव्रतस्वामी का एक पौत्र ; (पउम २१, २७)।

दक्ख° देखो **दक्खा** ; (पउम ५३, ७६ ; कुमा)।

दक्खउज पुं [**दे**] गृध्र, गीध, पक्षि-विशेष ; (दे ५, ३४)।

दक्खण न [**दर्शन**] १ अवलोकन, निरीक्षण। २ वि. देखने वाला, निरीक्षक ; (कुमा)।

दक्खव सक [**दर्शय्**] दिखलाना, बतलाना। दक्खवइ ; (हे ४, ३२)।

दक्खविअ वि [**दर्शित**] दिखलाया हुआ ; (पाअ ; कुमा)।

दक्खा स्त्री [**द्राक्षा**] १ वल्ली-विशेष, दाख का पेड ; २ फल-विशेष, दाख, अंगूर ; (कप्पू ; सुपा २६७ ; ५३६)।

दक्खायणी स्त्री [**दाक्षायणी**] गौरी, शिव-पत्नी ; (पाअ)।

दक्खिण वि [**दक्षिण**] १ दक्षिण दिशा में स्थित ; (सुर ३, १८ ; गउड)। २ निपुण, चतुर ; (प्रामा)। ३ हितकर, अनुकूल ; ४ अपसव्य, वामेतर, दाहिना ; (कुमा ; औप)। °**पच्छिमा** स्त्री [°**पश्चिमा**] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा, नैर्ऋत कोण ; (आवम)। °**पुव्वा** स्त्री [°**पूर्वा**] अग्नि-कोण ; (चंद १)। देखो **दाहिण**।

दक्खिणत्त वि [**दाक्षिणात्य**] दक्षिण दिशा में उत्पन्न ; (राज)।

दक्खिणा स्त्री [**दक्षिणा**] १ दक्षिण दिशा ; (जो १)। २ दक्षिण देश ; (कप्पू)। ३ धर्म-कर्म का पारितोषिक, दान, भेंट ; (कप्पू ; सूअ २, ५)। °**कंखि** वि [°**काङ्क्षिन्**] दक्षिणा का अभिलाषी ; (पउम ३०, ६३)। °**यण** न [°**यन**] १ सूर्य का दक्षिण दिशा में गमन ; २ कर्क की संक्रान्ति से धन की संक्रान्ति तक के छः मास का काल ; (जो १)। °**वअ**, °**वह** पुं [°**पथ**] दक्षिण देश ; (कप्पू ; उप १४२ टी)।

दक्खिणिल्ल वि [**दाक्षिणात्य**] दक्षिण दिशा में उत्पन्न या स्थित ; (सम १०० ; पउम ६, १५६)।

दक्खिणेय वि [**दाक्षिणेय**] जिसको दक्षिणा दी जाती हो वह ; (विसे ३२७१)।

दक्खिण्ण } न [**दाक्षिण्य**] १ मुलायजा, "दक्खिण्णेण
दक्खिन्न } वि एंतो सुहअ सुहावेसि अम्ह हिअआइं" (गा ८५ ; स्वप्न ६८)। २ उदारता, औदार्य ; ३ सरलता, मार्दव ; (सुर १, ६५ ; २, ६२ ; प्रासू ८)। ४ अनुकूलता ; (दंस २)।

दक्खिय वि [**दर्शित**] दिखलाया हुआ ; (भवि)।

दक्खु देखो **दक्ख**=दृश्।

दक्खु देखो **दक्ख**=दक्ष ; (सूअ १, २, ३)।

दक्खु वि [**पश्य**, **द्रष्टृ**] १ देखने वाला ; २ पुं. सर्वज्ञ, जिन-देव ; (सूअ १, २, ३)।

दक्खु वि [**दृष्ट**] १ विलोकित ; २ पुं. सर्वज्ञ, जिन-देव ; (सूअ १, २, ३)।

दग न [**दक**] १ पानी, जल ; (सं ५१ ; दं ३४ ; कप्प)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। ३ लवण-समुद्र में स्थित एक आवास-पर्वत ; (सम ६८)। °**गब्भ** पुं [°**गर्भ**] अभ्र, बादल; (ठा ४, ४)। °**तुंड** पुं [°**तुण्ड**] पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)। °**पंचवन्न** पुं [°**पञ्चवर्ण**] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक ग्रह का नाम; (ठा २, ३)। °**पासाय** पुं [°**प्रासाद**] स्फटिक रत्न का बना हुआ महल; (जं १)। °**पिप्पली** स्त्री [°**पिप्पली**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)। °**भास** पुं [°**भास**] वेलन्धर नागराज का एक आवास -पर्वत; (सम ७३)। °**मंचग** पुं [°**मञ्चक**] स्फटिक रत्न का मञ्च ; (जं १)। °**मंडव** पुं [°**मण्डप**]। १ मण्डप-विशेष, जिसमें पानी टपकता हो ; (पण्ह २, ५)। २ स्फटिक रत्न का बनाया हुआ मण्डप; (जं १)। °**मट्टिया**, °**मट्टी** स्त्री [°**मृत्तिका**] १ पानी वाली मिट्टी ; (बृह ४ ; पडि)। २ कला-विशेष ; (जं २)। °**रक्खस** पुं [°**राक्षस**] जल-मानुष के के आकार का जंतु-विशेष ; (सूम १, ७)। °**रय** पुंन [°**रजस्**] उदक-बिन्दु, जल-कणिका; (कप्प)। °**वण्ण** पुं [°**वर्ण**] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २०)। °**वारग**, °**वारय** पुं [°**वारक**] पानी का छोटा घड़ा ; (राय ; णाया १, २)। °**सीम** पुं [°**सीमन्**] वेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत ; (राज)।

दच्चा देखो **दा**।

दच्छ देखो **दक्ख**=दृश्। भवि—दच्छं, दच्छसि, दच्छिहिसि; (प्राप्र; उत्त २२, ४४; गा ८१६)।

दच्छ देखो **दक्ख**=दक्ष ; "रोगसमदच्छं ओसहं" (उप ७२८ टी ; पण्ह २, ३—पत्र ४५ ; हे २, १७) ;

दच्छ वि [**दे**] तीक्ष्ण, तेज ; (दे ५, ३३)।

दज्झंत, **दज्झमाण** } देखो **दह**=दह्।

दट्ठ वि [**दष्ट**] जिसको दाँत से काटा गया हो वह ; (षड् ; महा)।

दट्ठ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ, विलोकित ; (राज)।

दट्ठंतिय वि [**दार्ष्टान्तिक**] जिस पर दृष्टान्त दिया गया हो वह अर्थ ; (उप पृ १४३)।

दट्ठव्व, **दट्ठु** } देखो **दक्ख**=दृश्।

दट्ठु वि [**द्रष्टृ**] देखने वाला, प्रेक्षक; (विसे १८६५)।

दट्ठुआण, **दट्ठुं**, **दट्ठूण**, **दट्ठूणं** } देखो **दक्ख**=दृश्।

दडवड पुं [**दे**]१ धाटी, अवस्कन्द ; (दे ५, ३५ ; हे ४, ४२२ ; भवि)। २ शीघ्र, जल्दी ; (चंड)।

दडि स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष ; (भवि)।

दड्ढ वि [**दग्ध**] जला हुआ ; (हे १, २१७ ; भग)।

दड्ढालि स्त्री [**दे**] दव-मार्ग ; (षड्)।

दढ वि [**दृढ**] १ मजबूत, बलवान्, पोढ़ा ; (औप ; से ८, ६०)। २ निश्चल, स्थिर, निष्कम्प ; (सुम १, ४, १ ; श्रा २८)। ३ समर्थ, क्षम ; (सूम १, ३, १)। ४ अति-निबिड, प्रगाढ; (राय)। ५ कठोर, कठिन ; (पंचा ४)। ६ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त ; (पंचा १ ; ७)। °**केउ** पुं [°**केतु**] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव का नाम ; (पव ७)। °**णेमि** देखो °**नेमि** ; (राज)। °**धणु** पुं [°**धनुष्**] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम ; (सम १५३)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम ; (राज)। °**धम्म** वि [°**धर्मन्**] १ जो धर्म में निश्चल हो ; (बृह १)। २ देव-विशेष का नाम; (आवम)। °**धिइय** वि (°**धृतिक**]। अतिशय धैर्य वाला ; (पउम २६, २२)। °**नेमि** पुं [°**नेमि**] राजा समुद्रविजय का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ली थी और सिद्धाचल पर्वत पर मुक्ति पाई थी; (अंत १४)। °**पइण्ण** वि [°**प्रतिज्ञ**] १ स्थिर-प्रतिज्ञ, सत्य-प्रतिज्ञ; २ पुं. सूर्याभ देव का आगामी जन्म में होने वाला नाम ; (राय)। °**प्पहारि** वि [°**प्रहारिन्**] १ मजबूत प्रहार करने वाला ; २ पुं. जैन मुनि-विशेष, जो पहले चोरों का नायक था और पीछे से दीक्षा लेकर मुक्त हुआ था; (णाया १, १८ ; महा)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] एक गाँव का नाम ; (आवम)। °**मूढ** वि [°**मूढ**] नितान्त मूर्ख ; (वे १, ४)। °**रह** पुं [°**रथ**] १ एक कुलकर पुरुष का नाम ; (सम १५०)। २ भगवान् श्री शीतलनाथजी के पिता का नाम; (सम १५१)। °**रहा** स्त्री [°**रथा**] लोकपाल आदि देवों के अग्र-महिषिओं की बाह्य परिषद् ; (ठा ३, १—पत्त १२७)। °**ाउ** पुं [°**ायुष्**] भगवान् महावीर के समय में तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जन करने

वाला एक मनुष्य ; (ठा ६—पत्र ४५५) । २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष का नाम ; (सम १५४) ।

दढिअ वि [**दृढित**] दृढ़ किया हुआ ; (कुमा) ।

दणु, **दणुअ** } पुं [**दनुज**] दैत्य, दानव; (हे १, २६७ ; कुमा ; षड्) । °**इंद**, °**एंद** पुं [°**इन्द्र**] १ दानवों का अधिपति; (गउड ; से १, २) । २ रावण, लङ्का-पति ; (पउम ६६, १०) । °**वइ** पुं [°**पति**] देखो °**इंद**; (पउम १, १ ; ७२, ६० ; सुपा ४५) ।

दत्त वि [**दत्त**] १ दिया हुआ, दान किया हुआ, वितीर्ण ; (हे १,४६) । २ न्यस्त, स्थापित ; (जं १) । ३ पुं. स्व-नाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-पुत्र ; (उप ५६२ ; ७६८ टी) । ४ भरत-वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष; (सम १५३) । ५ चतुर्थ बलदेव के पुर्व-जन्म का नाम ; (सम १५३) । ६ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न एक अर्ध-चक्रवर्ती राजा, एक वासुदेव ; (सम ६३) । ७ भरत-क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न एक जिन-देव ; (पव ७) । ८ एक जैन मुनि ; (आक) । ९ नृप-विशेष; (विपा १, ७) । १० एक जैन आचार्य ; (कुप्र ६) । ११ न. दान, उत्सर्ग ; (उत्त १) ।

दत्त न [**दात्र**] दाँती; घास काटने का हँसिया ; (दे १, १४) ।

दत्ति स्त्री [**दत्ति**] एक वार में जितना दान दिया जाय वह, अ-विच्छिन्न रूप से जितनी भिक्षा दी जाय वह; (ठा ५, १; पंचा १८) ।

दत्तिय पुंस्त्री [**दत्तिका**] ऊपर देखो ; " संखा दत्तियस्स " (वव ९) ।

दत्तिय पुं [**दत्रिक**] वायु-पूर्ण चर्म ; (राज) ।

दत्तिया स्त्री [**दात्रिका**] १ छोटी दाँती, घास काटने का शस्त्र-विशेष ; (राज) । २ देने वाली स्त्री, दान करने वाली स्त्री; (चारु २) ।

दत्थर पुं [**दे**] हस्त-शाटक, कर-शाटक; (दे ५, ३४) ।

ददंत देखो **दा** ।

दद्दर वि [**दे.दर्दर**] १ घना, प्रचुर, अत्यन्त; "गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितला " (सम १३७) । २ पुं. चपेटा, हस्त-तल का आघात ; (सम १३७ ; औप ; णाया १, ८) । ३ आघात, प्रहार; " पायदद्दरएणं कंपयंतेव मेइणितलं " (णाया १, १) । ४ वचनाटोप ; (पण्ह १, ३—पत्र ४४) । ५ सोपान-वीथी, सीढ़ी ; (सम १३७) । ६ वाद्य-विशेष ; (जं २) ।

दद्दरिया स्त्री [**दे.दर्दरिका**] १ प्रहार, आघात ; (णाया १, १६) । २ वाद्य-विशेष ; (राय) ।

दद्दु पुं [**दद्रु**] दाद, क्षुद्र कुष्ठ-रोग ; (भग ७, ६) ।

दद्दुर पुं [**दर्दुर**] १ भेक, मेढ़क ; (सुर १०, १८७ ; प्रासू ४५) । २ चमड़े से अवनद्ध मुँह वाला कलश; (पण्ह २, ५) । ३ देव-विशेष ; (णाया १, १३) । ४ राहु, ग्रह-विशेष ; (सुज्ज १९) । ५ पर्वत-विशेष; (णाया १, १६)। ६ वाद्य-विशेष; (दे ७, ६१; गउड) । ७ न. दर्दुर देव का सिंहासन ; (णाया १,१३) । °**वडिंसय** न [°**ावतंसक**] देव-विमान विशेष, सौधर्म देवलोक का एक विमान ; (णाया १, १३) ।

दद्दुरी स्त्री [**दर्दुरी**] स्त्री-मेढक, भेकी ; (णाया १, १३)।

दधि देखो **दहि** ; (सम ७७ ; पि ३७९) ।

दद्ध देखो **दड्ढ**; (सुर २, ११२; पि २२२) ।

दप्प पुं [**दर्प**] १ अहंकार, अभिमान, गर्व ; (प्रासू १३२)। २ बल, पराक्रम, जोर ; (से ४, ३) । ३ धृष्टता, धिठाई ; (भग १२, ५) । ४ अरुचि से काम का आसेवन; (निचू १) ।

दप्पण पुं [**दर्पण**] १ काच, शीशा, आदर्श; (णाया १,१; प्रासू १६१) । २ वि. दर्प-जनक; (पण्ह २, ४) ।

दप्पणिज्ज वि [**दर्पणीय**] बल-जनक, पुष्टि-कारक ; (णाया १, १ ; पण्ण १७ ; औप ; कप्प)।

दप्पि वि [**दर्पिन्**] अभिमानी, गर्विष्ठ ; (कप्पू) ।

दप्पिअ वि [**दर्पिक**] दर्प-जनित ; (उवर १३१) ।

दप्पिअ वि [**दर्पित**] अभिमानी, गर्वित ; (सुर ७,२०० ; पण्ह १, ४) ।

दप्पिट्ठ वि [**दर्पिष्ठ**] अत्यन्त अहंकारी ; (सुपा २२) ।

दप्पुल्ल वि [**दर्पवत्**] अहंकार वाला; (हे २,१५९; षड्) ।

दब्भ पुं [**दर्भ**] तृण-विशेष, डाभ, काश, कुशा ; (हे १, २१७)। °**पुप्फ** पुं [°**पुष्प**] साँप की एक जाति ; (पण्ह १, १—पत्र ८) ।

दब्भायण, **दब्भियायण** } न [**दार्भायन, दार्भ्यायन**] चित्रा-नक्षत्र का गोत्र ; (इक ; सुज्ज १०) ।

दम सक [**दमय्**] निग्रह करना । दमेइ ; (स २८९) । कर्म—**दम्मइ** ; (उव) । कवकृ—**दम्मंत** ; (उव) ।

संकृ—**दमिऊण** ; (कुप्र ३६३) । कृ—**दमियव्व, दम्म, दमेयव्व** ; (काल ; आचा२, ४, २ ; उव) ।

दम पुं [**दम**] १ दमन, निग्रह; २ इन्द्रिय-निग्रह, बाह्य वृत्ति का निरोध ; (पण्ह २, ४ ; णंदि) । °**घोस** पुं [°**घोष**] चेदि देश के एक राजा का नाम; (णाया १, १६)। °**दंत** पुं [°**दन्त**] १ हस्तिशीर्षक नगर के एक राजा का नाम ; (उप ६४८ टी) । २ एक जैन मुनि ; (विसे २७६६) । °**धर** पुं [°**धर**] एक जैन मुनि का नाम ; (पउम २०, १६३) ।

दमग देखो **दमय**; (णाया १, १६ ; सुपा ३८५ ; वव ३ ; निचू १५ ; बृह १ ; उव) ।

दमग वि [**दमक**] दमन करने वाला ; (निचू ६) ।

दमण न [**दमन**] १ निग्रह, दान्ति; २ वश में करना, काबू में करना ; "पंचिंदियदमणपरा" (आप४०) । ३ उपताप, पीड़ा ; (पण्ह १, ३) । ४ पशुओं को दी जाती शिक्षा ; (पउम १०३, ७१) ।

दमणक } **दमणग** } **दमणय** } पुंन [**दमनक**] १ दौना, सुगन्धित पत्र वाली वनस्पति-विशेष ; (पण्ह २, ५ ; पण्ण १ ; गउड) । २ छन्द-विशेष , (पिंग) । ३ गन्ध-द्रव्य-विशेष ; (राज) ।

दमदमा अक [**दमदमाय्**] आडम्बर करना । दमदमाइ, दमदमाअइ ; (हे ३, १३८) ।

दमय वि [**दे.द्रमक**] दरिद्र, रङ्क, गरीब ; (दे५, ३४ ; विसे २८४५) ।

दमयंती स्त्री [**दमयन्ती**] राजा नल की पत्नी का नाम; (पडि; कुप्र ५४; ५६) ।

दमि वि [**दमिन्**] जितेन्द्रिय ; (उत्त१२) ।

दमिअ वि [**दमित**] निगृहीत; (गा ८२३; कुप्र ४८) ।

दमिल पुं [**द्रविड**] १ एक भारतीय देश ; २ पुंस्त्री. उसके निवासी मनुष्य; (कुप्र १७२; इक; औप) । स्त्री—°**ली** ; (णाया १, १ ; इक ; औप) ।

दमेयव्व } **दम्म** } देखो **दम**=दमय् ।

दम्म पुं [**द्रम्म**] साने का सिक्का, सोना-मोहर; (उप पृ ३८७; हे ४, ४२२) ।

दम्मंत देखो **दम**=दमय् ।

दय सक [**दय्**] १ रक्षण करना । २ कृपा करना । ३ चाहना । ४ देना । दयइ ; (आचा) । वकृ—**दअंत,दअमाण** ; (से १२, ६४ ; ३, १२ ; अभि १२) ।

दय न [**दे.दक**] जल, पानी ; (दे ५, ३३ ; बृह १) । °**सीम** पुं [°**सीमन्**] लवण-समुद्र में स्थित एक आवास-पर्वत ; सम ६८) ।

दय न [**दे**] शोक, अफसोस, दिलगीरी ; (दे ५, ३३) ।

दय देखो **दव**=दव ; (से १, ५१ ; १२, ६५) ।

°**दय** वि [°**दय**] देने वाला; (कप्प ; पडि) ।

दया स्त्री [**दया**] करुणा, अनुकम्पा, कृपा; (दस ६, १) । °**वर** वि [°**पर**] दयालु ; (पउम२६, ४० ; उप पृ१६१) ।

दयाइअ वि [**दे**] रक्षित ; (दे ५, ३५) ।

दयालु वि [**दयालु**] दया वाला, करुण ; (हे १, १७७ ; १८० ; पउम १६, ३१ ; सुपा ३४० ; श्रा १६) ।

दयावण } **दयावन्न** } वि [**दे**] दीन, गरीब, रंक ; (दे ५, ३५ ; भवि ; पउम ३३, ८६) ।

दर सक [**दृ**] आदर करना । दरइ ; (षड्) ।

दर पुंन [**दर**] भय, डर; (कुमा) । २ अ. ईषत् , थोड़ा, अल्प ; (हे २, २१५) ।

दर न [**दे**] अर्द्ध, आधा ; (दे५, ३३; भवि ; हे २, २१५; बृह ३) ।

दरंदर पुं [**दे**] उल्लास ; (दे५, ३७) ।

दरमत्ता स्त्री [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे ५, ३७) ।

दरमल सक [**मर्दय्**] १ चूर्ण करना, विदारना । २ आघात करना । दरमलइ ; (भवि) । वकृ—**दरमलंत** ; (भवि) ।

दरमलिय वि [**मर्दित**] आहत, चूर्णित ; (भवि) ।

दरवलिअ वि [**दे**] उपभुक्त ; (कुमा) ।

दरवल्ल पुं [**दे**] ग्राम-स्वामी, गाँव का मुखिया ; (दे५, ३६) । °**णिहेल्लण** न [**दे**] शून्य गृह,खाली घर; (दे५, ३७)। °**वल्लह** पुं [**दे**] १ दयित, प्रिय; (दे ५, ३७) । २ कातर, डरपोक; (षड्) । °**विंदर** वि [**दे**] १ दीर्घ, लम्बा ; २ विरल ; (दे ५, ५२) ।

दरि° देखो **दरी** । °**अर** पुं [°**चर**] किंनर; (से ६, ४४)।

दरिअ वि [**दृप्त**] गर्विष्ठ, अभिमानी ; (हे १, १४४ ; पाअ)।

दरिअ वि [**दीर्ण**] १ डरा हुआ, भीत ; (कुमा ; सुपा ६४५) । २ फाड़ा हुआ, विदारित ; (अंत ७) ।

दरिअ (अप) पुं [**दरित**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

दरिआ स्त्री [**दरिका**] कन्दरा, गुफा; (नाट—विक्र ८४)।

दरिद्द वि [**दरिद्र**] १ निर्धन, निःस्व, धन-रहित ; २ दीन, गरीब ; (पाअ ; प्रासु २३ ; कप्पू) ।

दरिद्दि } वि [**दरिद्रिन्, °क**] ऊपर देखो ; "अम्हे
दरिद्दिअ } दरिद्दिणो, कहं विवाहमंगलं रन्नो य पूयं करेमो" (महा ; सण ; पि २५७)।

दरिद्दिय वि [**दरिद्रित**] दुःस्थित, जो धन-रहित हुआ हो ; (महा ; पि २५७)।

दरिद्दीहूय वि [**दरिद्रीभूत**] जो निर्धन हुआ हो ; (ठा ३, १)।

दरिस सक [**दर्शय्**] दिखलाना, बतलाना। दरिसइ, दरिसेइ; (हे ४, ३२ ; कुमा ; महा)। वकृ—**दरिसंत** ; (सुपा २४)। कृ—**दरिसणिज्ज, दरिसणीय** ; (औप ; पि १३५; सुर १०, ६)।

दरिसण देखो **दंसण**=दर्शन ; (हे २, १०५)। °**पुर** न [**°पुर**] नगर-विशेष; (इक)। °**आवरणी** स्त्री [**°ावरणी**] विद्या-विशेष ; (पउम ५६, ४०)।

दरिसणिज्ज } देखो **दरिस**। २ न. भेट, उपहार; "गहिऊण
दरिसणीय } दरिसणीयं संपत्तो राइणो मूलं" (सुर १०,६)।

दरिसाव देखो **दरिस**। वकृ—**दरिसावंत**; (उप पृ १८८)।

दरिसाव पुं [**दर्शन**] दर्शन, साक्षात्कार; "एसो य महप्पा कइवयघरेसु दरिसावं दाऊण पडिनियत्तइ" (महा), "पईव इव दाउं खणमेगं दरिसावं पुणोवि अद्दंसणीहोइ" (सुपा ११५)।

दरिसावण न [**दर्शन**] १ दर्शन, साक्षात्कार; (आव १)। २ वि. दर्शक, दिखलाने वाला ; (भवि)।

दरिसि वि [**दर्शिन्**] देखने वाला; (उवा; पि १३५; स ७२७)।

दरिसिअ वि [**दर्शित**] दिखलाया हुआ ; (कुमा ; उव)।

दरी स्त्री [**दरी**] गुफा, कन्दरा ; (णाया १, १ ; से ६, ४४ ; उप पृ २६८ ; स ४१३)।

दरुम्मिल्ल वि [**दे**] घन, निबिड ; (दे ५, ३७)।

दल सक [**दा**] देना, दान करना, अर्पण करना। दलइ; (कप्प; कस)। "जं तस्स मोल्लं तमहं दलामि" (उप २११ टी)। वकृ—**दलमाण, दलेमाण**; (कप्प; णाया १, १६;—पत्र २०४ ; ठा ४, २—पत्र २१६)। संकृ—**दलित्ता** ; (कप्प)।

दल अक [**दल्**] १ विकसना। २ फटना, खण्डित होना, द्विधा होना। "अहिमअरकिरणणिउरंबचुंबिअं दलइ कमलवणं" (गा ४६५), "कुड्डयं दलइ" (कुमा)। वकृ—**दलंत** ; (से १, ५८)।

दल सक [**दलय्**] चूर्ण करना, टुकड़े २ करना, विदारना। वकृ—"निम्मूलं **दलमाणो** सयलंतरसत्तुसिन्नबलं" (सुपा ८५)। कवकृ—**दलिज्जंत** ; (से ६, ६२)। संकृ—**दलिऊण** ; (कुमा)।

दल न [**दल**] १ सैन्य, लश्कर; (कुमा)। २ पत्र, पत्ती; "तुहवल्लहस्स गोसम्मि आसि अहरो मिलाणकमलदलो" (हेका ५१ ; गा ५ ; १८० ; २५७ ; ३६६ ; ५६२ ; ५६१ ; सुपा ६३८)। ३ धन, सम्पति ; ४ समूह, समुदाय ; (सुपा ६३८)। ५ खण्ड, भाग, अंश ; (से ६, ६२)

दलण न [**दलन**] १ पीसना, चूर्णन ; (सुपा१४ ; ६१६)। २ वि. चूर्ण करने वाला; (सुपा२३४; ४६७; कुप्र १३२;३८३)।

दलमाण देखो **दल**=दा

दलमाण देखो **दल**=दलय्।

दलमल देखो **दरमल**। वकृ—**दलमलंत** ; (भवि)।

दलय देखो **दल**=दा। दलयइ; (औप)। भवि—दलइस्संति ; (औप)। वकृ—**दलयमाण** ; (णाया१, १—पत्र ३७ ; ठा ३, १—पत्र ११७)। संकृ—**दलइत्ता** , (औप)।

दलय सक [**दापय्**] दिलाना। दलयइ ; (कप्प)।

दलवट्ट देखो **दरमल**। दलवट्टइ ; (भवि)।

दलवट्टिय देखो **दलमलिय** ; (भवि)।

दलाव सक [**दापय्**] दिलाना। दलावेइ ; (पि ५५२)। वकृ—**दलावेमाण** ; (ठा ४, २)।

दलिअ वि [**दलित**] १ विकसित; (से १२, १)। २ पीसा हुआ ; (पाअ)। "दलिअमसालितंडुलधवलमिअंकासु राईसु" (गा ६६१)। ३ विदारित, खण्डित ; (दे१,१५६ ; सुर ४, १५२)।

दलिअ न [**दलिक**] चीज, वस्तु, द्रव्य ; (ओघ ५५), "जइ जोग्गम्मिवि दलिए सव्वम्मि न कीरए पडिमा" (विसे १६३४)।

दलिअ वि [**दे**] १ निकूणिताक्ष, जिसने टेढ़ी नजर की हो वह ; २ न. उंगली; (दे ५, ५२)। ३ काष्ठ, लकड़ी ; (दे ५, ५२;पाअ)

दलिज्जंत देखो **दल**=दलय्।

दलिद्द देखो **दरिद्द** ; (हे १, २५४ ; गा२३०)।

दलिद्दा अक [**दरिद्रा**] दुर्गत होना, दरिद्र होना। दलिद्दाइ ; (हे १, २५४)। भूका—दलिद्दाईअ ; (संक्षि ३२)।

दलिल्ल वि [**दलवत्**] दल-युक्त, दल वाला ; (सण)।

दलेमाण देखो **दल**=दा।

दव सक [द्रु] १ गति करना । २ छोड़ना । दवए ; (विसे २८) ।

दव पुं [दव] १ जंगल का अग्नि, वन का वह्नि ; (दे ५, ३३)। २ वन, जंगल । °**ग्गि** पुं [°ाग्नि] जंगल का अग्नि; (हे १, १७७ ; प्राप्र) ।

दव पुं [द्रव] १ परिहास ; (दे ५, ३३) । २ पानी, जल ; (पंचव २) । ३ पनीली वस्तु, रसीली चीज ; (विसे १७०७) । ४ वेग ; "दवदववारी" (सम ३७) । ५ संयम, विरति ; (आचा) । °**कर** वि [°**कर**] परिहास-कारक ; (भग ६, ३३) । °**कारी**, °**गारी** स्त्री [°**कारी**] एक प्रकार की दासी, जिसका काम परिहास-जनक बातें कर जी बहलाना होता है ; (भग ११, ११ ; णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

दवण न [**दवन**] यान, वाहन ; (सुअ १, १) ।

दवणय देखो **दमणय** ; (भवि) ।

दवदवा स्त्री [**द्रवद्रवा**] वेग वाली गति ; "नाऊण गयं खुहियं नयरजणो धाविओ दवदवाए" (पउम ८, १७३) ।

दवर पुं [**दे**] १ तन्तु, डोरा, धागा ; (दे ५, ३५ ; आवम)। २ रज्जु, रस्सी ; (णाया १, ८) ।

दवरिया स्त्री [**दे**] छोटी रस्सी ; (विसे) ।

दवहुत्त न [**दे**] ग्रीष्म-मुख, ग्रीष्म काल का प्रारम्भ ; (दे ५, ३६) ।

दवाव सक [**दापय्**] दिलाना । दवावेइ ; (महा) । वकृ—**दवावेमाण** ; (णाया १, १४) । संकृ—**दवावेऊण**; (महा) । हेकृ—**दवावेत्तए** ; (कस) ।

दवावण न [**दापन**] दिलाना ; (निचू २) ।

दवाविअ वि [**दापित**] दिलाया हुआ ; (सुपा १३० ; स १६३ ; महा ; उप पृ ३८५ ; ७२८ टी) ।

दविअ पुंन [**द्रव्य**] १ अन्वयी वस्तु, जीव आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु ; (सम्म ६ ; विसे २०३१) । २ वस्तु, गुणाधार पदार्थ; (ओघ ५, आचा ; कप्प) । ३ वि. भव्य, मुक्ति के योग्य ; (सूअ १, २, १) । ४ भव्य, सुन्दर, शुद्ध ; (सूअ १, १६) । ५ राग-द्वेष से विरहित, वीतराग; (सूअ १, ८) । °**णुओग** पुं [°**ानुयोग**] पदार्थ-विचार, वस्तु की मीमांसा ; (ठा १०) । देखो **दव्व** ।

दविअ वि [**द्रविक**] संयम वाला, संयम-युक्त ; (आचा) ।

दविअ वि [**द्रवित**] द्रव-युक्त, पनीली वस्तु; (ओघ) ।

दविड देखो **दविल** ; (सुपा ५८०) ।

दविडी स्त्री [**द्राविडी**] लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी)।

दविण न [**द्रविण**] धन, पैसा, संपत्ति ; (पाअ ; कप्प)।

दविल पुं [**द्रविड**] १ देश-विशेष, दक्षिण देश-विशेष ; २ पुंस्त्री. द्रविड़ देश का निवासी मनुष्य ; (पण्ह १, १—पत्र १४) ।

दव्व देखो **दविअ**=द्रव्य ; (सम्म १२ ; भग ; विसे २८ ; अणु ; उत्त २८) । ६ धन, पैसा, संपत्ति ; (पाअ ; प्रासु १३१) । ७ भूत या भविष्य पदार्थ का कारण ; (विसे २८; पंचा ६) । ८ गौण, अ-प्रधान ; ९ बाह्य, अ-तथ्य; (पंचा ४ ; ६) । °**ट्ठिय** पुं [°**ार्थिक**, °**स्थित**, °**ास्तिक**] द्रव्य को ही प्रधान मानने वाला पक्ष, नय-विशेष; "दव्वट्ठियस्स सव्वं सया अणुप्पन्नमविणट्ठं" (सम्म ११ ; विसे ४५७)। °**लिंग** न [°**लिङ्ग**] बाह्य वेष; (पंचा ४) । °**लिंगि** वि [°**लिङ्गिन्**] भेष-धारी साधु ; (गु १०) । °**लेस्सा** स्त्री [°**लेश्या**] शरीर आदि पौद्गलिक वस्तु का रंग, रूप; (भग) । °**वेय** पुं [°**वेद**] पुरुष आदि का बाह्य आकार ; (राज) । °**ायरिय** पुं [°**ाचार्य**] अ-प्रधान आचार्य, आचार्य के गुणों से रहित आचार्य; (पंचा ६) ।

दव्वहलिया स्त्री [**द्रव्यहलिका**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३५) ।

दव्वि° देखो **दव्वी** ; (षड्) ।

दव्विंदिअ न [**द्रव्येन्द्रिय**] स्थूल इन्द्रिय ; (भग) ।

दव्वी स्त्री [**दर्वी**] १ कर्छी, चमची, डोई ; (पाअ) । २ साँप की फन ; (दे ५, ३७) । °**अर**, °**कर** पुं [°**कर**] साँप, सर्प ; (दे ५, ३७ ; पण्ण १) ।

दव्वी स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।

दस त्रि.ब. [**दशन्**] दस, नव और एक ; (हे १, १६२ ; ठा ३, १—पत्र ११६ ; सुपा २६७) । °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (विसे २३०३) । °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] रावण, एक लंका-पति; (से १५, ६१) । °**कंधर** पुं [°**कन्धर**] राजा रावण ; (गउड)। °**कालिय** न [°**कालिक**] एक जैन आगम-ग्रन्थ ; (दसनि १) । °**ग** न [°**क**] दश का समूह ; (दं ३८ ; नव १२) । °**गुण** वि [°**गुण**] दस-गुना ; (ठा १०) । °**गुणिअ** वि [°**गुणित**] दस-गुना ; (भग ; श्रा १०) । °**ग्गीव** पुं [°**ग्रीव**] रावण ; (पउम ७३, ८) । °**दसमिया** स्त्री [°**दशमिका**] जैन साधु का

एक धार्मिक अनुष्ठान, प्रतिमा-विशेष ; (सम १००)। °दिवसिय वि [°दिवसिक] दस दिन का ; (णाया १, १—पत्र ३७)। °द्ध पुंन [°ार्ध] पाँच, ५; (सम ६०; णाया १, १)। °धणु पुं [°धनुष्] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष ; (सम १५३)। °पएसिय वि [°प्रदेशिक] दस अवयव वाला ; (ठा १०)। °पुर देखो °उर ; (महा)। °पुव्वि वि [°पूर्विन्] दस पूर्व-ग्रन्थों का अभ्यासी ; (ओघ १)। °बल पुं [°बल] भगवान् बुद्ध ; (पाअ ; हे १, २६२)। °म वि [°म] १ दसवाँ; (राज)। २ चार दिनों का लगातार उपवास ; (आचा ; णाया १, १ ; सुर ४, ५५)। °मभत्तिय वि [°मभक्तिक] चार दिनों का लगातार उपवास करने वाला ; (पण्ह २, ३)। °मासिअ वि [°माषिक] दस मासे का तौल वाला, दस मासे का परिमाण वाला ; (कप्पू)। °मी स्त्री [°मी] १ दसवीं ; २ तिथि-विशेष; (सम २६)। °मुद्दियाणंतग न [°मुद्रिकानन्तक] हाथ के उंगलिओं की दस अंगूठियाँ ; (औप)। °मुह पुं [°मुख] रावण, राक्षस-पति ; (हे १, २६२ ; प्राप्र ; हेका ३३४)। °मुहसुअ पुं [°मुखसुत] रावण का पुत्र, मेघनाद आदि ; (से १३, ६०)। °य देखो °ग ; (ठा १०)। °रत्त न [°रात्र] दस रात ; (विपा १, ३)। °रह पुं [°रथ] १ रामचन्द्रजी के पिता का नाम ; (सम १५२ ; पउम २०, १८३)। २ अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष ; (ठा ६—पत्र ४४७)। °रहसुय पुं [°रथसुत] राजा दशरथ का पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ; (पउम ५६, ८७)। °वअण पुं [°वदन] राजा रावण; (से १०, ५)। °वल देखो °बल ; (प्राप्र)। °विह वि [°विध] दस प्रकार का; (कुमा)। °वेआलिय न [°वैकालिक] जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, ;(दसनि १ ; णंदि)। °हा अ [°धा] दस प्रकार से ; (जी २४)। °ाणण पुं [°ानन] राक्षसेश्वर रावण ; (से ३, ६३)। °ाहिया स्त्री [°ाहिका] पुत्र-जन्म के उपलक्ष्य में किया जाता दस दिनों का एक उत्सव ; (कप्प)।

दसण पुं [दशन] १ दाँत, दन्त ; (भग ; कुमा)। २ न. दंश, काटना; (पव ३८)। °च्छय पुं [°च्छद] होठ, अधर ; (सुर १२, २३४)।

दसण्ण पुं [दशार्ण] देश-विशेष; (उप २११ टी; कुमा)। °कूड न [°कूट] शिखर-विशेष; (आवम)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष ; (ठा १०)। °भद्द पुं [°भद्र] दशार्णपुर का एक विख्यात राजा, जो अद्वितीय आडम्बर से भगवान् महावीर को वन्दन करने गया था और जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (पडि)। °वइ पुं [°पति] दशार्ण देश का राजा ; (कुमा)।

दसतीण न [दे] धान्य-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।

दसन्न देखो दसण्ण ; (सत्त ६७ टी)

दसा स्त्री [दशा] १ स्थिति, अवस्था ; (गा२२७ ; २८४; प्रासू११०)। २ सौ वर्ष के प्राणी की दस २ वर्ष की अवस्था ; (दसनि१)। ३ सूता या ऊन का छोटा और पतला धागा; (ओघ७२५)। ४ ब. जैन आगम-ग्रन्थ विशेष ; (अणु)।

दसार पुं [दशार्ह] १ समुद्रविजय आदि दश यादव ; (सम १२६ ; हे २, ८५ ; अंत २ ; णाया १, ४—पत्र ६६)। २ वासुदेव, श्रीकृष्ण ; (णाया १, १६)। ३ बलदेव ; (आवम)। ४ वासुदेव की संतति ; (राज)। °णेउ पुं [°नेतृ] श्रीकृष्ण ; (उव)। °नाह पुं [°नाथ] श्रीकृष्ण ; (पाअ)। °वइ पुं [°पति] श्रीकृष्ण ; (कुमा)।

दसिया देखो दसा; (सुपा ६४१)।

दसु पुं [दे] शोक, दिलगीरी ; (दे ५, ३४)।

दसुत्तरसय न [दशोत्तरशत] १ एक सौ दश। २ वि. एक सौ दसवाँ, ११० वाँ ; (पउम ११०, ४५)।

दसेर पुं [दे] सूत-कनक ; (दे ५, ३३)।

दस्स देखो दंस=दर्शय् । कृ—दस्सणीअ ; (स्वप्न६५)।

दस्सण देखो दंसण ; (मै २१)।

दस्सु पुं [दस्यु] चोर, तस्कर ; (श्रा २७)।

दह सक [दह्] जलना, भस्म करना। दहइ ; (महा)। कर्म—दहिज्जइ ; (हे४, २४६), दज्झइ ; (आचा)। वकृ—दहंत; (श्रा२८)। कवकृ—दज्झंत, दज्झमाण; (नाट—मालती ३०; पि २२२)।

दह पुं [द्रह] ह्रद, बड़ा जलाशय, झील, सरोवर ; (भग ; उवा ; णाया १, ४—पत्र ६६ ; सुपा १३७)। °फुल्लिया स्त्री [°फुल्लिका] वल्ली-विशेष; (पण्ण १)। °वई, °ावई स्त्री [°वती] नदी-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८० ; जं ४)।

दह देखो दस ; (हे १, २६२ ; दं १२ ; पि २६२ ; पउम ७८, २५ ; से १३, ६४ ; प्राप्र ; से १४, १६ ; ३, ११ ; १०, ४ ; पउम ८, ४४ ; प्राप्र)।

दहण न [**दहन**] १ दाह, भस्मीकरण ; २ पुं. अग्नि, वह्नि ; (पण्ह १, १ ; उप पृ २२ ; सुपा ४७४ ; श्रा २८)।

दहणी स्त्री [**दहनी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७ १३८)।

दहबोल्ली स्त्री [**दे**] स्थाली, थलिया ; (दे ५, ३६)।

दहावण वि [**दाहक**] जलाने वाला ; (सण)।

दहि न [**दधि**] दही, दूध का विकार ; (ठा ३, १ ; णाया १, १ ; प्राप्र)। °**घण** पुं [°**घन**] दधि-पिण्ड, अतिशय जमा हुआ दही; (पण्ण १७—पत्र ५२६)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ द्वीप-विशेष; (पउम ५१, १)। २ एक नगर ; (पउम ५१, २)। ३ पर्वत-विशेष ; (राज)। °**वण्ण,** °**वन्न** पुं [°**पर्ण**] १ एक राजा, नृप-विशेष ; (कुप्र ६६)। २ वृक्ष-विशेष ; (औप ; सम १५२ ; पण्ण १—पत्र ३१)। °**वासुया** स्त्री [°**वासुका**] वनस्पति-विशेष ; (जीव ३)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] नृप-विशेष ; (महा)। °**सर** पुं [°**सर**] खाद्य-द्रव्य-विशेष ; (दे ३, २६ ; ५, ३६)।

दहिउप्फ न [**दे**] नवनीत, मक्खन ; (दे ५, ३५)।

दहिट्ठ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, कपित्थ ; (दे ५, ३५)।

दहिण देखो **दाहिण** ; (नाट—वेणी ६७)।

दहित्थर }
दहित्थार } पुं [**दे**] दधिसर, खाद्य-विशेष; (दे ५, ३६)।

दहिमुह पुं [**दे**] कपि, वानर ; (दे ५, ४४)।

दहिय पुं [**दे**] पक्षि-विशेष; "जं लावयतितिरिदहियमोरं मारंति अहोस वि के वि घोर" (कुप्र ४२७)।

दा सक [**दा**] देना, उत्सर्ग करना। दाइ, देइ ; (भवि ; हे २, २०६ ; आचा; महा ; कस)। भवि—दाहं, दाहामि, दाहिमि; (हे ३, १७०; आचा) । कर्म—दिज्जइ ; (हे ४, ४३८)। वकृ—**दिंत, देंत, ददंत, देयमाण**; (सुर १, २१२ ; गा २३ ; ४६४ ; हे ४, ३७६ ; बृह १ ; णाया १, १४ —पत्र १८६)। कवकृ—**दिज्जंत, दिज्जमाण, दीअमाण** ; (गा १०१ ; सुर ३, ७६ ; १०,५; सम ३६; सुपा ५०२ ; मा ३३)। संकृ—**दच्चा, दाउं, दाऊण** ; (विपा १, १ ; पि ५८७ ; कुमा ; उव)। हेकृ—**दाउं** ; (उवा)। कृ—**दायव्व, देय** ; (सुर १, ११०; सुपा २३३; ४४४ ; ५३२)। हेकृ—**देवं** (अप); (हे ४, ४४१)।

दा देखो **ता**=तावत् ; (से ३, १०)।

दाअ देखो **दाव**=दर्शय् । दाएइ; (विसे ८४४)। कर्म—दाइज्जइ ; (विसे ४६०)। कवकृ—**दाइज्जमाण**; (कप्प)।

दाअ पुं [**दे**] प्रतिभू, जामीनदार; (दे ५, ३८)।

दाअ पुं [**दाय**]दान, उत्सर्ग ; (णाया १, १—पत्र ३७)।

दाइ वि [**दायिन्**] दाता, देने वाला ; (उप पृ १६२)।

दाइअ वि [**दर्शित**] दिखलाया हुआ; (विसे १०१२)।

दाइअ पुं [**दायिक**] १ पैतृक संपत्ति का हिस्सेदार; (उप पृ ४७; महा)। २ गोत्रिक, समान-गोत्रीय; (कप्प)।

दाइज्जमाण देखो **दाअ**=दर्शय् ।

दाउ वि [**दातृ**] दाता, देने वाला; (महा; सं १; सुपा १६१)।

दाउं देखो **दा**=दा ।

दाओयरिय वि [**दाकोदरिक**] जलोदर रोग वाला ; (विपा १, ७)।

दाघ देखो **दाह** ; (हे १, २६४)।

दाडिम न [**दाडिम**) फल-विशेष; अनार ; (महा)।

दाडिमी स्त्री [**दाडिमी**] अनार का पेड़ ; (पि २४०)।

दाढा स्त्री [**दंष्ट्रा**] बड़ा दाँत, दन्त-विशेष ; (हे २, १३० ; गउड)।

दाढि वि [**दंष्ट्रिन्**] १ दाढ़ा वाला ; २ पुं. हिंसक पशु ; (वेणी ४६)। ३ सूअर, वराह ; "किं दाढीभयभीओ नियमं गुहं केसरी रियइ" (पउम ७, १८)।

दाढिआ स्त्री [**दे**] दाढ़ी, मुख के नीचे का भाग, श्मश्रु, ठुड्डी के नीचे के बाल ; (दे २, १०१)।

दाढआलि }
दाढिगालि } स्त्री [**दंष्ट्रिकावलि**] १ दाढ़ी की पंक्ति। २ वस्त्र-विशेष ; (बृह ३ ; जीत)।

दाण पुंन [**दान**] १ दान, उत्सर्ग, त्याग ; "एए हवंति दाणा" (पउम १४, ५४; कप्प ; प्रासू ४८ ; ६७ ; १७२)। २ हाथी का मद ; (पाअ ; षड् ; गउड)। ३ जो दिया जाय वह ; (गउड)। °**विरय** पुं [°**विरत**] एक राजा; (सुपा १००)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] सत्रागार ; (ती८)।

दाणंतराय न [**दानान्तराय**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दान देने की इच्छा नहीं होती है ; (राय)।

दाणव पुं [**दानव**] दैत्य, असुर, दनुज ; (दे १, १७७ ; अच्चु ४१ ; प्रासू ८६)।

दाणविंद पुं [**दानवेन्द्र**] असुरों का स्वामी ; (णाया १, ८ ; पउम ६२, ३६ ; प्रासू १०७)।

दाणि स्त्री [**दे**] शुल्क, चुंगी ; (सुपा ३६० ; ५४८)।

दाणि }
दाणिं }
दाणीं } अ [**इदानीम्**] इस समय, अभी ; (प्रति ३६ ; स्वप्न १० ; हे १, २६ ; ४, २७७ ; अभि ३७ ; स्वप्न ३३)।

दाथ वि [**द्वाःस्थ**] १ द्वार पर स्थित । २ पुं. प्रतीहार, चपरासी ; (दे ६,७२) ।

दादलिआ स्त्री [**दे**] अंगुली, उंगली ; (दे ५, ३८) ।

दापण न [**दापन**] दिलाना ; "अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदापणं" (सत्त २६ टी) ।

दाम न [**दामन्**] १ माला, स्रज् ; (पण्ह १, ४ ; कुमा) । २ रज्जु, रस्सी ; (गा १७२ ; हे १, ३२) । ३ पुं. वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत; (राज) । °**वंत** वि [°**वत्**] माला वाला ; (कुमा) ।

दामट्ठि पुं [**दामस्थि**] सौधर्म देवलाक के इन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति देव ; (इक) ।

दामड्ढि पुं [**दामर्द्धि**] ऊपर देखो; (ठा ५,१—पत्न ३०३) ।

दामण न [**दे**] बन्धन, पशुओं का रस्सी से नियन्त्रण ; (पत्र ३८) ।

दामणी स्त्री [**दामनी**] १ पशुओं को बाँधने की रस्सी; (भग १६, ६)। २ भगवान् कुन्थुनाथ की मुख्य शिष्या; (तित्थ)। ३ स्त्री और पुरुष का रज्जु के आकार वाला एक शुभ लक्षण ; (पण्ह २,४ टी—पत्न ८४; पण्ह २, ४—पत्र ६८; ७६; जं २) ।

दामणा स्त्री [**दे**] १ प्रसव, प्रसुति ; २ नयन, आँख ; (दे ५, ५२) ।

दामिय वि [**दामित**] संयमित, नियन्त्रित; (सण) ।

दामिली स्त्री [**द्राविडी**] द्रविड़ देश की लिपि में निबद्ध एक मन्त्र-विद्या ; (सुअ २, २) ।

दामी स्त्री [**दामी**] लिपि-विशेष ; (सम ३५) ।

दामोअर पुं [**दामोदर**] १ श्रीकृष्ण वासुदेव; (ती ४) । २ अतीत उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में उत्पन्न नववाँ जिनदेव ; (पत्र ७) ।

दायग वि [**दायक**] दाता, देने वाला ; (उप ७२८ टी ; महा ; सुर २, ४४ ; सुपा ३७८) ।

दायण न [**दान**] देना; "दायणे अ निकाए अ अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे" (सम २१) । "तवोविहाणं तह दायणदाप (? य) णं" (सत्त २६) ।

दायणा स्त्री [**दापना**] पृष्ट अर्थ की व्याख्या ; (विसे २६३२) ।

दायय देखा **दायग** ; "अजिअसंतिपायया हुंतु मे सिवसुहाण दायया" (अजि ३४) ।

दायव्व देखो **दा**=दा ।

दायाद पुं [**दायाद**] पैतृक संपत्ति का भागीदार ; (आचा) ।

दायार वि [**दायार**] याचक, प्रार्थी ; (कप्प) ।

दार सक [**दारय्**] विदारना, तोड़ना, चूर्ण करना । वकृ— **दारंत** ; (कुमा) ।

दार पुं [**दे**] कटी-सुत्र, काँची ; (दे ५, ३८) ।

दार पुंन [**दार**] कलत्र, स्त्री, महिला; (सम ५० ; स १३७ ; सुर ७, २०१; प्रासू ६५), "दव्वेण अप्पकालं गहिया वेसावि होइ परदारं" (सुपा २८०) ।

दार न [**द्वार**] दरवाजा, निकलने का मार्ग ; (औप ; सुपा ३६७) । °**ग्गला** स्त्री [°**र्गला**] दरवाजे का आगल ; (गा ३२२) । °**ट्ठ**, °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ द्वार में स्थित । २ पुं. दरवान, प्रतीहार; (बृह १; दे २, ५२) । °**पाल**, °**वाल** पुं [°**पाल**] दरवान, द्वार-रक्षक ; (उप ५३० टी; सुर १०, १३६; महा) । °**वालय**, °**वालिय** पुं [°**पालक**, °**पालिक**] दरवान, प्रतीहार ; (पउम १७, १६; सुपा ४६६) ।

दार, **दारग** } पुं [**दारक**] शिशु, बालक, बच्चा; (उप पृ ३०८; सुर १५, १२६ ; कप्प) । देखो **दारय** ।

दारद्धंता स्त्री [**दे**] पेटा, संदूक ; (दे ५, ३८) ।

दारय वि [**दारक**] १ विदारण करने वाला, विध्वंसक ; (कुप्र १३०) । २ देखो **दारग** ; (कप्प) ।

दारिअ वि [**दारित**] विदारित, फाड़ा हुआ; (पाअ) ।

दारिआ स्त्री [**दारिका**] लड़की ; (स्वप्न १५ ; णाया १, १६ ; महा) ।

दारिआ स्त्री [**दे**] वेश्या, वारांगना; (दे ५, ३८) ।

दारिद्द न [**दारिद्र्य**] १ निर्धनता ; २ दीनता ; (गा६७१ ; महा ; प्रासू १७३) । ३ आलस्य ; (प्रामा) ।

दारिद्दिय वि [**दारिद्रित**] दरिद्रता-प्राप्त, दरिद्र ; (पउम ५५, २५) ।

दारु न [**दारु**] काष्ठ, लकड़ी; (सम ३६; कुप्र १०४; स्वप्न ७०)। °**गाम** पुं [°**ग्राम**] ग्राम-विशेष; (पउम ३०, ६०)। °**दंडय** पुंन [°**दण्डक**] काष्ठ-दण्ड, साधुओं का एक उपकरण; (कस) । °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] पर्वत-विशेष ; (जीव३) । °**पाय** न [°**पात्र**] काष्ठ का बना हुआ भाजन ; (ठा३, ३) । °**पुत्तय** पुं [°**पुत्रक**] कठपुतला ; (अच्चु ८२) । °**मड** पुं [°**मड**] भरत-क्षेत्र के एक भावी जिन-देव के पूर्व जन्म

का नाम ; (सम१५४)। °संकम पुं [°संक्रम] काष्ठ का बना हुआ पूल, सेतु ; (आचा)।

दारुअ पुं [**दारुक**] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर उत्तम गति प्राप्त की थी ; (अंत ३)। २ श्रीकृष्ण का एक सारथि ; (णाया १, १६)। ३ न. काष्ठ, लकड़ी ; (पउम २६, ६)।

दारुण वि [**दारुण**] १ विषम, भयंकर, भीषण ; (णाया १, २ ; पाअ ; गउड)। २ क्रोध-युक्त, रौद्र ; (वव१)। ३ न. कष्ट, दुःख ; (स ३२२)। ४ दुर्भिक्ष, अकाल ; (उप १३६ टी)।

दारुणी स्त्री [**दारुणी**] विद्या-देवी विशेष; (पउम ७, १४०)।

दालण न [**दारण**] विदारण, खण्डन ; (पण्ह १, १)।

दालि स्त्री [**दे.दालि**] १ दाल, दला हुआ चना, अरहर, मूँग आदि अन्न ; (सुपा ११ ; सण)। २ राजि, रेखा ; (ओघ ३२३)।

दालिअ न [**दे**] नेत्र, आँख ; (दे ५, ३८)।

दालिद्द देखो **दारिद्द** ; (हे १, २५४ ; प्रासू ७०)।

दालिद्दिय देखो **दारिद्दिय** ; (सुर१३, ११६ ; वज्जा१३८)।

दालिम देखो **दाडिम** ; (प्राप्र)।

°**दालियंब** न [**दालिकाम्ल**] दाल का बना हुआ खाद्य-विशेष; (पण्ह २, ५)।

दालिया स्त्री [**दालिका**] देखो **दालि** ; (उवा)।

दाली देखो **दालि** ; (ओघ ३२३)।

दाव सक [**दर्शय्**] दिखलाना, बतलाना। दावइ, दावेइ ; (हे४, ३२ ; गा३१५)। वकृ—**दावंत**; (गा ६२०)।

दाव सक [**दापय्**] दिलाना, दान करवाना । दावेइ ; (कस)। वकृ—**दावेंत** ; (पउम११७, २६; सुपा ६१८)। हेकृ—**दावेत्तए** ; (कप्प)।

दाव देखो **ताव**=तावत् ; (से३, २६ ; स्वप्न१२ ; अभि३६)।

दाव पुं [**दाव**] १ वन, जंगल ; २ देव, देवता ; (से ६, ४३)। ३ जंगल का अग्नि ; (पाअ)। °**ग्गि** पुं [°**ग्नि**] जंगल की आग ; (हे१, ६७)। °**णल**, °**नल** पुं [°**नल**] जंगल की आग ; (सण ; सुपा१६७ ; पडि)।

दावण न [**दे**] छान, पशुओं को पैर में बाँधने की रस्सी; (कुप्र ४३६)।

दावण न [**दापन**] दिलाना ; (सुपा ४६६)।

दावणया स्त्री [**दापना**] दिलाना ; (स ५१ ; पडि)।

दावद्दव पुं [**दावद्रव**] वृक्ष-विशेष ; (णाया १, ११—पत्र १७१)।

दावर पुं [**द्वापर**] १ युग-विशेष, तीसरा युग। २ न. द्विक, दो; "नो तियं नो चेव दावरं" (सुअ१, २, २, २३)। °**जुम्म** पुं [°**युग्म**] राशि-विशेष ; (ठा ४, ३—पत्र २३७)।

दावाव सक [**दापय्**] दिलाना। संकृ—**दावावेउं** ; (महा)।

दाविअ वि [**दर्शित**] दिखलाया हुआ, प्रदर्शित ; (पाअ ; से १, ५३ ; ५, ८०)।

दाविअ वि [**दापित**] दिलाया हुआ ; (सुपा २४१)।

दाविअ वि [**द्रावित**] १ झराया हुआ, टपकाया हुआ ; २ नरम किया हुआ ; (अच्चु ८८)।

दावेंत देखो **दाव**=दापय्।

दास पुं [**दर्श**] दर्शन, अवलोकन ; (षड्)।

दास पुं [**दास**] १ नौकर, कर्मकर; (हे २, २०६ ; सुपा १२२ ; प्रासू १७५ ; सं१८; कप्पू)। २ धीवर, "केवट्टो धीवरो दासो" (पाअ)। °**चेड**, °**चेडग** पुं [°**चेट**] १ छोटी उम्र का नौकर ; २ नौकर का लड़का ; (महा ; णाया १, २)। °**सच्च** पुं [°**सत्य**] श्रीकृष्ण ; (अच्चु १७)।

दासरहि पुं [**दाशरथि**] राजा दशरथ का पुत्र, रामचन्द्र ; (से १, १४)।

दासी स्त्री [**दासी**] नौकरानी ; (औप ; महा)।

दासीखब्बडिया स्त्री [**दासीकर्वटिका**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।

दाह पुं [**दाह**] १ ताप, जलन, गरमी ; २ दहन, भस्मीकरण; (हे १, २६४ ; प्रासू१८)। ३ रोग-विशेष ; (विपा१,१)। °**ज्जर** पुं [°**ज्वर**] ज्वर-विशेष; (सुपा३११)। °**वक्कंतिय** वि [°**व्युत्क्रान्तिक**] जिसको दाह उत्पन्न हुआ हो वह ; (णाया १, १—पत्र ६४)।

दाहं देखो **दा**=दा।

दाहग वि [**दाहक**] जलाने वाला ; (उवर ८१)।

दाहण न [**दाहन**] जलाना, भस्म कराना ; (पउम १०३, १६१)।

दाहिण देखो **दक्खिण**; (भग; कस ; हे १, ४५; २, ७२; गा ४३३ ; ८१६)। °**दारिय** वि [°**द्वारिक**] दक्षिण दिशा में जिसका द्वार हो वह। २ न. अश्विनी-प्रमुख सात नक्षत्र ; (ठा ७)। °**पच्चत्थिम** वि [°**पश्चिमीय**] दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच का भाग, नैर्ऋत कोण ; (भग)। °**पह** पुं [°**पथ**] १ दक्षिण देश की ओर का

रास्ता ; २ दक्षिण देश ; " गच्छामि दाहिणपहं " (पउम ३२, १३)। °पुरत्थिम वि [°पूर्वीय] दक्षिण और पूर्व दिशा के बीच का भाग, अग्नि-कोण ; (भग)। °ावत्त वि [°ावर्त] दक्षिण में आवर्त वाला (शंख आदि) ; (ठा ४, २—पत्र २१६)।

दाहिणा देखो **दक्खिणा** ; (ठा ६ ; सुज्ज १०)।

दाहिणिल्ल देखो **दक्खिणिल्ल** ; (पउम ७, १७ ; विपा १, ७)।

दाहिणी स्त्री [**दक्षिणा**] दक्षिण दिशा ; (कुमा)।

दि वि.ब. (**द्वि**) दो, दो की संख्या वाला; (हे १, ६४; से ६, ५३)।

दि° देखो **दिसा** ; (गा ८६६)। °**क्करि** पुं [°**करिन्**] दिग्-हस्ती; (कुमा)। °**ग्गइंद** पुं [°**गजेन्द्र**] दिग्-हस्ती; (गउड)। °**ग्गय** पुं [°**गज**] दिग्-हस्ती ; (स ११३)। °**चक्कसार** न [°**चक्रसार**] विद्याधरों का एक नगर; (इक)। °**म्मोह** पुं [°**मोह**] दिशा-भ्रम ; (गा ८८६)। देखो **दिसा**।

दिअ पुं न [**दे**] दिवस, दिन; (दे ५, ३९), " राइंदिआइं " (कप्प)।

दिअ पुं [**द्विज**] १ ब्राह्मण, विप्र; (कुमा; पाअ; उप ७६८ टी)। २ दन्त, दाँत ; ३ ब्राह्मण आदि तीन वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य; ४ अण्डज, अण्डे से उत्पन्न होने वाला प्राणी ; ५ पक्षी ; ६ वृक्ष-विशेष, टिंबरू का पेड़ ; (हे १, ६४)। °**राय** पुं [°**राज**] १ उत्तम द्विज ; २ चन्द्रमा; (सुपा ४१२; कुप्र १९)।

दिअ पुं [**द्विक**] काक, कौआ ; (उप ७६८ टी)।

दिअ पुं [**द्विप**] हस्ती, हाथी; (हे २, ७९)।

दिअ न [**दिव**] स्वर्ग, देवलोक, (पिंग)। °**लोअ**, °**लोग** पुं [°**लोक**] स्वर्ग, देवलोक ; (पउम २२, ४५; सुर ७, १)।

दिअ वि [**द्रुत**] हत, मार डाला हुआ ; "चंदेण व दियराएण जेण आणंदियं भुवणं" (कुप्र १९)।

दिअंत पुं [**दिगन्त**] दिशा का प्रान्त भाग; (महा)।

दिअंबर वि [**दिगम्बर**] १ नग्न, वस्त्र-रहित ; २ पुं. एक जैन संप्रदाय; (भवि ; उवर १२२; कुप्र ४४३)।

दिअज्झ पुं [**दे**] सुवर्णकार, सोनार ; (दे ५, ३९)।

दिअधुत्त पुं [**दे**] काक, कौआ ; (दे ५, ४१)।

दिअर पुं [**देवर**] पति का छोटा भाई ; (गा ३५ ; प्राप्र ; पाअ ; हे १, १४६ ; सुपा ४८७)।

दिअलिअ वि [**दे**] मूर्ख, अज्ञानी ; (दे ५, ३९)।

दिअली स्त्री [**दे**] स्थूणा, खंभा, खूँटी ; (पाअ)।

दिअस पुंन [**दिवस**] दिन, दिवस ; (गउड ; पि २६४)। °**कर** पुं [°**कर**] सूर्य, रवि ; (से १, ५३)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] सूर्य, सूरज ; (पउम १४, ८३)। °**यर** देखो °**कर**; (पाअ)। देखो **दिवस**।

दिअसिअ न [**दे**] १ सदा-भोजन ; (दे ५, ४०)। २ अनुदिन, प्रतिदिन ; (दे ५, ४० ; पाअ)।

दिअह देखो **दिअस** ; (प्राप्र; पाअ)।

दिअहुत्त न [**दे**] पूर्वाह्ण का भोजन, दुपहर का भोजन; (दे ५, ४०)।

दिआ अ [**दिवा**] दिन, दिवस ; (पाअ ; गा ६६ ; सम १९ ; पउम २६, २६)। °**णिस** न [°**निश**] दिन-रात, सदा; (पिंग)। °**राअ** न [°**रात्र**] दिन-रात, सर्वदा; (सुपा ३१८)। देखो **दिवा**।

दिआहम पुं [**दे**] भास पक्षी ; (दे ५, ३९)।

दिआइ देखो **दुआइ** ; (पाअ)।

दिइ स्त्री [**दृति**] मसक, चमड़े का जल-पात्र ; (अनु ५; कुप्र १४९)।

दिउण वि [**द्विगुण**] दूना, दुगुना; (पि २९८)।

°**त** देखो **दा=दा**।

दिक्काण पुं [**द्रेष्काण**] मेष आदि लग्नों का दशवाँ हिस्सा; (राज)।

दिक्ख सक [**दीक्ष्**] दीक्षा देना, प्रव्रज्या देना, संन्यास देना, शिष्य करना। दिक्खे ; (उत्त)। वकृ—**दिक्खंत** ; (सुपा ५२६)।

दिक्ख देखो **देक्ख**। दिक्खइ ; (पि ६६)।

दिक्खा स्त्री [**दीक्षा**] १ प्रव्रज्या देना, दीक्षण; (ओघ ७ भा)। २ प्रव्रज्या, संन्यास; (धर्म २)।

दिक्खिअ वि [**दीक्षित**] जिसको प्रव्रज्या दी गई हो वह, जो साधु बनाया गया हो वह ; (उव)।

दिगंछा देखो **दिगिंछा**; (पि ७४)।

दिगंबर देखो **दिअंबर**; (इक ; आवम)।

दिगिंछा स्त्री [**जिघत्सा**] बुभुक्षा, भूख ; (सम ४० ; विसे २५९४ ; उत्त २ ; आचू)।

दिगिच्छ सक [**जिघत्स्**] खाने को चाहना। वकृ— **दिगिच्छंत** ; (आचा ; पि ५५५)।
दिगु पुं [**द्विगु**] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास ; (अणु ; पि २६८)।
दिग्घ देखो **दीह** ; (हे २, ६१ ; प्राप्र ; संक्षि १७; स्वप्न ६८; विसे ३४६७)। °**णंगूल**, °**लंगूल** वि [°**लाङ्गूल**] १ लम्बी पूँछ वाला; २ पुं. वानर ; (षड्)।
दिग्घिआ स्त्री [**दीर्घिका**] वापी, सीढ़ी वाला कूप-विशेष ; (स्वप्न ५६ ; विक्र १३६)।
दिच्छा स्त्री [**दित्सा**] देने की इच्छा ; (कुप्र २६६)।
दिज देखो **दिअ**=द्विज ; (कुमा)।
दिज्ज वि [**देय**] १ देने योग्य ; २ जो दिया जा सके ; ३ पुंन. कर-विशेष; (विपा १, १)।
दिज्जंत } देखो **दा**=दा।
दिज्जमाण }
दिट्ठ वि [**दिष्ट**] कथित, प्रतिपादित; (उप ७६८ टी)।
दिट्ठ वि [**दृष्ट**] १ देखा हुआ, विलोकित ; (ठा ४, ४ ; स्वप्न २८ ; प्रासू १११)। २ अभिमत ; (अणु)। ३ ज्ञात, प्रमाण से जाना हुआ ; (उप ८८२ ; बृह १)। ४ न. दर्शन, विलोकन; (ठा २, १)। °**पाढि** वि [°**पाठिन्**] चरक-सुश्रुतादि का जानकार ; (ओघ ७४)। °**लाभिय** पुं [°**लाभिक**] दृष्ट वस्तु को ही ग्रहण करने वाला जैन साधु ; (पण्ह २, १)।
दिट्ठंत पुं [**दृष्टान्त**] उदाहरण, निदर्शन ; (ठा ४, ४ ; महा)।
दिट्ठंतिअ वि [**दार्ष्टान्तिक**] १ जिस पर उदाहरण दिया गया हो वह ; (विसे १००५ टी)। २ न. अभिनय-विशेष ; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।
दिट्ठव्व देखो **दक्ख**=दृश्।
दिट्ठि स्त्री [**दृष्टि**] १ नेत्र, आँख, नजर; (ठा ३, १; प्रासू १६; कुमा)। २ दर्शन, मत; (पण्ण १६; ठा ४, १)। ३ दर्शन, अवलोकन, निरीक्षण; (अणु)। ४ बुद्धि, मति; (सम २५ ; उत्त २)। ५ विवेक, विचार ; (सूअ २, २)। °**कीव** पुं [°**क्लीब**]नपुंसक-विशेष;(निचू४)। °**जुद्ध** न [°**युद्ध**] युद्ध-विशेष, आँख की स्थिरता की लड़ाई; (पउम४,४४)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] नजर बाँधना; (उप ७२८ टी)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] प्रशस्त दृष्टि वाला, सम्यग्-दर्शी; (सूअ १, ४, १ ; आचा)। °**राय** पुं [°**राग**] १ दर्शन-राग, अपने धर्म पर अनुराग ; (धर्म २)। २ चाक्षुष स्नेह ; (अभि ७४)। °**ल्ल** वि [°**मत्**] प्रशस्त दृष्टि वाला ; (पउम २८, २२)। °**वाय** पुं [°**पात**] १ नजर डालना ; (से १०, ५)। २ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ ; (ठा १०—पत्र ४६१)। °**वाय** पुं [°**वाद**] बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ ; (ठा १० ;सम१)। °**विपरिआसिआ** स्त्री [°**विपर्यासिका**, °**सिता**] मति-भ्रम ; (सम २५)। °**विस** पुं [°**विष**] जिसकी दृष्टि में विष हो ऐसा सर्प ; (से ४, ५०)। °**सूल** न [°**शूल**] नेत्र का रोग-विशेष ; (णाया १, १३—पत्र १८१)।
दिट्ठिआ अ [**दिष्ट्या**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ मंगल ; २ हर्ष, आनन्द, खुशी ; ३ भाग्य से ; (हे २, १०४ ; स्वप्न १६ ; अभि ६५ ; कुप्र ६५)।
दिट्ठिआ स्त्री [**दृष्टिका**, °**जा**] १ क्रिया-विशेष—दर्शन के लिए गमन ; २ दर्शन से कर्म का उदय होना ; (ठा २, १—पत्र ४०)।
दिट्ठीआ स्त्री [**दृष्टीया**] ऊपर देखो ; (नव १८)।
दिट्ठीवाओवएसिआ स्त्री [**दृष्टिवादोपदेशिकी**] संज्ञा-विशेष ; (दं ३३)।
दिट्ठेल्लय वि [**दृष्ट**] देखा हुआ, निरीक्षित; (आवम)।
दिड्ढ } देखो **दढ** ; (नाट—मालती १७ ; से १, १४ ;
दिढ } स्वप्न २०५ ; प्रासू ६२)।
दिण पुंन [**दिन**] दिवस ; (सुपा ५६ ; दं २७ ; जी ३५; प्रासू ६५)। °**इंद** पुं [°**इन्द्र**] सूर्य, रवि ; (सण)। °**कय** पुं [°**कृत्**] सूर्य, रवि; (राज)। °**कर** पुं [°**कर**] सूर्य, सूरज ; (सुपा ३१२)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] सूर्य, रवि ; (महा)। °**बंधु** पुं [°**बन्धु**] सूर्य, रवि ; (पुप्फ ३७)। °**मणि** पुं [°**मणि**] सूर्य, दिवाकर ; (पाअ ; से १, १८ ; सुपा २३)। °**मुह** न [°**मुख**] प्रभात, प्रातः-काल ; (पाअ)। °**यर** देखो °**कर** ; (गउड ; भवि)। °**रयणिकरी** स्त्री [°**रजनिकरी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३८)। °**वइ** पुं [°**पति**] सूर्य, रवि ; (पि ३७६)।
दिणिंद पुं [**दिनेन्द्र**] सूर्य, रवि ; (सुपा २४०)।
दिणेस पुं [**दिनेश**] १ सूर्य, सूरज ; (कप्पू)। २ बारह की संख्या ; (विवे १४४)।
दिण्ण वि [**दत्त**] १ दिया हुआ, वितीर्ण ; (हे १, ४६ ; प्राप्र; स्वप्न ; प्रासू १६४)। २ निवेशित, स्थापित ; (पण्ह १, १)। ३ पुं. भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम गण-

धर ; (सम १५२)। ४ भगवान् श्रेयांसनाथ का पूर्व-जन्मीय नाम ; (सम १५१)। ५ भगवान् चन्द्रप्रभ का प्रथम गणधर ; (सम १५२)। ६ भगवान् नमिनाथ को प्रथम भिक्षा देने वाला एक गृहस्थ ; (सम १५१)। देखो **दिन्न।**

दिण्ण देखो **दइन्न** ; (राज)।

दिण्णेल्लय वि [**दत्त**] दिया हुआ; (ओघ २२ भा टी)।

दित्त वि [**दीप्त**] १ ज्वलित, प्रकाशित ; (सम १५३ ; अजि १४; लहुअ ११)। २ कान्ति-युक्त, भास्वर, तेजस्वी; (पउम ६४, ३५ ; सम १२२)। ३ तीक्ष्णीभूत, निशित; (सम १५३ ; लहुअ ११)। ४ उज्ज्वल, चमकीला ; (णांदि)। ५ पुष्ट, परिवृद्ध ; (उत्त ३४)। ६ प्रसिद्ध ; (भग २६, ३)। ७ मारने वाला ; (ओघ ३०२)। °**चित्त** वि [°**चित्त**] हर्ष के अतिरेक से जिसको चित्त-भ्रम हो गया हो वह; (बृह ३)।

दित्त वि [**दृप्त**] १ गर्वित, गर्व-युक्त ; (ओप)। २ मारने वाला; ३ हानि-कारक ; (ओघ ३०२)। °**इत्त** वि [°**चित्त**] १ जिसके मन में गर्व हो वह ; २ हर्ष के अतिरेक से जो पागल हो गया हो वह ; (ठा ५, ३—पत्र ३२७)।

दित्ति स्त्री [**दीप्ति**] कान्ति, तेज, प्रकाश ; (पाअ ; सुर ३, ३२ ; १०, ४६ ; सुपा ३७८)। °**म** वि [°**मत्**] कान्ति-युक्त ; (गच्छ १)।

दिदिक्खा } स्त्री [**दिदृक्षा**] देखने की इच्छा ; (राज;
दिदिच्छा } सुपा २६४)।

दिद्ध वि [**दिग्ध**] लिप्त ; (निचू १)।

दिन्न देखो **दिण्ण** ; (महा ; प्रासू ५७)। ७ श्री गौतम-स्वामी के पास पाँच सौ तापसों के साथ जैन दीक्षा लेने वाला एक तापस ; (उप १४२ टी; कुप्र २६३)। ८ एक जैन आचार्य; (कप्प)।

दिन्नय पुं [**दत्तक**] गोद लिया हुआ पुत्र ; (ठा १०—पत्र ५१६)।

दिप्प अक [**दीप्**] १ चमकना। २ तेज होना। ३ जलना। दिप्पइ ; (हे १, २२३)। वकृ—**दिप्पंत, दिप्पमाण** ; (से ४, ८ ; सुर १४, ५६ ; महा ; पण्ह १, ४; सुपा २४०), "दिप्पमाणे तवतेएणं" (स ६७५)।

दिप्प अक [**तृप्**] तृप्त होना, सन्तुष्ट होना। दिप्पइ; (षड्)।

दिप्प वि [**दीप्र**] चमकने वाला, तेजस्वी ; (से १, ६१)।

दिप्प (अप) पुं [**दीप**] १ दीपक। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

दिप्पंत पुं [**दे**] अनर्थ ; (दे ५, ३६)।

दिप्पंत } देखो **दिप्प**=दीप्।
दिप्पमाण }

दिप्पिर देखो **दिप्प**=दीप्र ; (कुमा)।

दिरय पुं [**द्विरद**] हस्ती, हाथी ; (हे १, ६४)।

दिलंदिलिअ [**दे**] देखो **दिल्लिंदिलिअ** ; (गा ७४१)।

दिलिदिल अक [**दिलदिलाय्**] 'दिल् दल्' आवाज करना। वकृ—**दिलिदिलंत** ; (पउम १०२, २१)।

दिलिवेढय पुं [**दिलिवेष्टक**] एक प्रकार का ग्राह, जल-जन्तु की एक जाति ; (पण्ह १, १)।

दिल्लिंदिलिअ पुं [**दे**] बालक, शिशु, लड़का ; (दे ५, ४०)। स्त्री—°**आ** ; बाला, लड़की ; (गा ७४१)।

दिव उभ [**दिव्**] १ क्रीड़ा करना। २ जीतने की इच्छा करना। ३ लेन-देन करना। ४ चाहना, वांछना। ५ आज्ञा करना। दिवइ, दिवए ; (षड्)।

दिव न [**दिव्**] स्वर्ग, देव-लोक ; (कुप्र ४३६; भवि)।

दिवड्ढ वि [**द्व्यपार्ध**] डेढ़, एक और आधा ; (विसे ६६३ ; स ५५ ; सुर १०, २०८ ; सुपा ५८० ; भवि ; सम ६६ ; सुज्ज १ ; १० ; ठा ६)।

दिवस } देखो **दिअस** ; (हे १, २६३ ; उव ; प्रासू १२ ;
दिवह } सुपा ३०७ ; वेणी ४७)। °**पुहुत्त** न [°**पृथक्त्व**] दो से लेकर नव दिन तक का समय ; (भग)।

दिवा देखो **दिआ** ; (णाया १, ४ ; प्रासू ६०)। °**इत्ति** पुं [°**कीर्त्ति**] चाण्डाल, भंगी ; (दे ५, ४१)। °**कर** पुं [°**कर**] सूर्य, सूरज; (उत्त ११)। °**कित्ति** पुं [°**कीर्ति**]नापित, हजाम; (कुप्र २८८)। °**गर** देखो °**कर**; (णाया १, १; कुप्र ४१५)। °**मुह** न [°**मुख**] प्रभात; (गउड)। °**यर** देखो °**कर**; (सुपा ३६; ३१४)। °**यरत्थ** न [°**करास्त्र**] प्रकाश-कारक अस्त्र-विशेष ; (पउम ६१, ४४)।

दिवि देखो **देव**। "दिविणावि काणपुरिसेणव्व एसा दासी अहं च विप्पवरो एगया दिट्ठीए दिस्सामो" (रंभा)।

दिविअ पुं [**द्विविद**] वानर-विशेष ; (से ४, ८; १३, ८२)।

दिविज वि [**दिविज**] १ स्वर्ग में उत्पन्न ; २ पुं. देव, देवता ; (अजि ७)।

दिविट्ठ देखो **दुविट्ठ** ; (राज)।

दिवे (अप) देखो **दिवा** ; (हे ४, ४१६ ; कुमा)।

दिव्व वि [**दिव्य**] १ स्वर्ग-संबन्धी, स्वर्गीय ; (स २ ; ठा ३, ३)। २ उत्तम, सुन्दर, मनोहर ; (पउम ८, २६१ ; सुर २, २४१ ; प्रासू १२८)। ३ प्रधान, मुख्य ; (औप)। ४ देव-सम्बन्धी ; (ठा ४, ४ ; सूत्र १, २, २)। ५ न. शपथ-विशेष, आरोप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि ; (उप ८०४)। ६ प्राचीन काल में, अपुत्रक राजा की मृत्यु हो जाने पर जिस चमत्कार-जनक घटना से राज-गद्दी के लिए किसी मनुष्य का निर्वाचन होता था वह हस्ति-गर्जन, अश्व-हेषा आदि अलौकिक प्रमाण ; (उप १०३१ टी)। °**माणुस** न [°**मानुष**] देव और मनुष्य संबन्धी हकीकतों का जिसमें वर्णन हो ऐसी कथा-वस्तु ; (स २)।

दिव्व देखो **दइव** ; (सुपा १६१)।

दिव्व देखो **देव** ; "अमोहं दिव्वदंसणंति" (कुप्र ११२)।

दिव्वाग पुं [**दिव्याक**] सर्प की एक जाति ; (पण्ण १)।

दिव्वासा स्त्री [**दे**] चामुण्डा, देवी-विशेष ; (दे ५, ३६)।

दिस सक [**दिश्**] १ कहना। २ प्रतिपादन करना। दिसइ ; (भवि)। कर्म—**दिस्समाण** ; (राज)।

दिस्स वि [**दिश्य**] दिशा में उत्पन्न ; (से ६, ५०)।

दिसआ स्त्री [**दृषद्**] पत्थर, पाषाण ; (षड्)।

दिसा, **दिसि**, **दिसी°** स्त्री [**दिश्**] १ दिशा, पूर्व आदि दश दिशाएँ ; (गउड ; प्रासू ११३ ; महा ; सुपा २६७ ; पण्ह १, ४ ; दं ३१ ; भग)। २ प्रौढ़ा स्त्री ; (से १, १६)। °**अक्क** न [°**चक्र**] दिशाओं का समूह ; (गा ५३०)। °**कुमरी** स्त्री [°**कुमारी**] देवी-विशेष ; (सुपा ४०)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] भवनपति देवों की एक जाति ; (पण्ण २ ; औप)। °**कुमारी** देखो °**कुमरी** ; (महा ; सुपा ४१)। °**गअ** पुं [°**गज**] दिग्-हस्ती ; (से २, ३ ; १०, ४६)। °**गइंद** पुं [°**गजेन्द्र**] दिग्-हस्ती ; (पि १३६)। °**चक्क** देखो °**अक्क** ; (सुपा ५३३ ; महा)। °**चक्कवाल** न [°**चक्रवाल**] १ दिशाओं का समूह ; २ तप-विशेष ; (निर १, ३)। °**चर** पुं [°**चर**] देशाटन करने वाला भक्त ; (भग १५)। °**जत्ता** देखो °**यत्ता** ; (उप ७६८ टी)। °**जत्तिय** देखो °**यत्तिय** ; (उवा)। °**डाह** पुं [°**दाह**] दिशाओं में होने वाला एक तरह का प्रकाश, जिसमें नीचे अन्धकार और ऊपर प्रकाश दीखता है ; यह भावी उपद्रवों का सूचक है ; (भग ३, ७)। °**णुवाय** पुं [°**अनुपात**] दिशा का अनुसरण ; (पण्ण ३)। °**दंति** पुं [°**दन्तिन्**] दिग्-हस्ती ; (सुपा ४८)। °**दाह** देखो °**डाह** ; (भग ३, ७)। °**दि** पुं [°**आदि**] मेरु पर्वत ; (सुज्ज ५)। °**देवया** स्त्री [°**देवता**] दिशा की अधिष्ठात्री देवी ; (रंभा)। °**पोक्खि** पुं [°**प्रोक्षिन्**] एक प्रकार का वानप्रस्थ ; (औप)। °**भाअ** पुं [°**भाग**] दिग्-भाग ; (भग ; औप ; कप्पू ; विपा १, १)। °**मत्त** न [°**मात्र**] अत्यल्प, संक्षिप्त ; (उप ४७६)। °**मोह** पुं [°**मोह**] दिशा का भ्रम ; (निचू १६)। °**यत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] देशाटन, मुसाफिरी ; (स १६५)। °**यत्तिय** वि [°**यात्रिक**] दिशाओं में फिरने वाला ; (उवा)। °**लोय** पुं [°**आलोक**] दिशा का प्रकाश ; (विपा १, ६)। °**वह** पुं [°**पथ**] दिशा-रूप मार्ग ; (पउम २, १००)। °**वाल** पुं [°**पाल**] दिक्पाल, दिशा का अधिपति ; (स ३६६)। °**वेरमण** न [°**विरमण**] जैन गृहस्थ को पालने का एक नियम—दिशा में जाने आने का परिमाण करना ; (धर्म्म २)। °**व्वय** न [°**व्रत**] देखो °**वेरमण** ; (औप)। °**सोत्थिय** पुं [°**स्वस्तिक**] स्वस्तिक-विशेष ; (औप)। °**सोवत्थिय** पुं [°**सौवस्तिक**] १ स्वस्तिक-विशेष दक्षिणावर्त स्वस्तिक ; (पण्ह १, ४)। २ न. एक देव-विमान ; (सम ३८)। ३ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] दिग्गज, दिशाओं में स्थित ऐरवत आदि आठ हस्ती। °**हत्थिकूड** पुं न [°**हस्तिकूट**] दिशा में स्थित हस्ती के आकार वाला शिखर-विशेष, वे आठ हैं—पद्मोत्तर, नीलवन्त, सुहस्ती, अञ्जनगिरि, कुमुद, पलाश, अवतंस और रोचनगिरि ; (जं ४)।

दिसेभ पुं [**दिगिभ**] दिग्गज, दिग्-हस्ती ; (गउड)।

दिस्स, **दिस्सं**, **दिस्समाण** देखो **दक्ख**=दृश्।

दिस्समाण देखो **दिस**।

दिस्सा देखो **दक्ख**=दृश्।

दिहा अ [**द्विधा**] दो प्रकार ; (हे १, ६७)।

दिहि स्त्री [**धृति**] धैर्य, धीरज ; (हे २, १३१ ; कुमा)। °**म** वि [°**मत्**] धैर्य-शाली, धीर ; (कुमा)।

दीअ देखो **दीव**=दीप ; (गा १३५ ; ५४७)।

दीअअ देखो **दीवय** ; (गा १३५)।

दीअमाण देखो **दा**=दा।

दीण वि [**दीन**] १ रंक, गरीब ; (प्रासू २३)। २ दुःखित, दुःस्थ ; (णाया १, १)। ३ हीन, न्यून ;

(ठा ४, २)। ४ शोक-ग्रस्त, शोकातुर; (विपा १, २; भग)।

दीणार पुं [**दीनार**] सोने का एक सिक्का ; (कप्प ; उप पृ ६४ ; ५६७ टी)।

दीपक } (अप) पुंन [**दीपक**] छन्द-विशेष ;
दीपक्क } (पिंग)।

दीव देखो **दिव**=दिव्। वकृ—"अक्खेहिं कुसुलेहिं **दीवयं** ; (सुअ १, २, २,२३)।

दीव सक [**दीपय्**] १ दीपाना, शोभाना। २ जलाना। ३ तेज करना। ४ प्रकट करना। ५ निवेदन करना। दीवइ ; (ओघ ४३४)। दीवेइ ; (महा)। वकृ—**दीवयंत** ; (कप्प)। संकृ—**दीवेत्ता** ; (ओघ ४३४ ; कस)। कृ—**दीवणिज्ज** ; (कप्प)।

दीव पुं [**दीप**] १ प्रदीप, दिया, आलोक ; (चारु १६ ; णाया १, १)। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, प्रदीप का कार्य करने वाला कल्पवृक्ष ; (सम१७)। °**चंपय** न [°**चम्पक**] दिया का ढ़कना, दीप-पिधान; (भग ८, ६)। °**ाली** स्त्री [°**ाली**] १ दीप-पङ्क्ति ; २ दीवाली, पर्व-विशेष, कार्तिक वदि अमास ; (दे ३, ४३)। °**ावली** स्त्री [°**ावली**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (ती १६)।

दीव पुं [**द्वीप**] १ जिसके चारों ओर जल भरा हो ऐसा भूमि-भाग ; (सम ५१ ; ठा१०)। २ भवनपति देवों की एक जाति, द्वीपकुमार देव ; (पण्ह १, ४ ; औप)। ३ व्याघ्र ; (जीव१)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक देव-जाति ; (भग १६, १३)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] द्वीप के मार्ग का जानकार ; (उप ५६५)। °**सागरपण्णत्ति** स्त्री [°**सागरप्रज्ञप्ति**] जैन-ग्रन्थ-विशेष, जिसमें द्वीपों और समुद्रों का वर्णन है ; (ठा ३, २—पत्र १२६)।

दीवअ पुं [**दे**] कृकलास, गिरगिट ; (दे ५, ४१)।

दीवअ पुं [**दीपक**] १ प्रदीप, दिया, आलोक ; (गा२२२ ; महा)। २ वि. दीपक, प्रकाशक, शोभा-कारक ; (कुमा)। ३ न. छन्द-विशेष ; (अजि २६)।

दीवंग पुं [**दीपाङ्ग**] प्रदीप का काम देने वाले कल्पवृक्ष की एक जाति ; (ठा १०)।

दीवग देखो **दीवअ**=दीपक ; (श्रा ६ ; आवम)।

दीवड पुं [**दे**] जल-जन्तु विशेष; "फुरंतसिप्पिसंपुडं भमंत-भीमदीवडं" (सुर १०, १८८)।

दीवण न [**दीपन**] प्रकाशन ; (ओघ ७४)।

दीवणा स्त्री [**दीपना**] प्रकाश ; "थुओ संतगुणदीवणाहिं" (स ६७५)।

दीवणिज्ज वि [**दीपनीय**] १ जठराग्नि को बढ़ाने वाला ; (णाया १, १—पत्र१६)। २ शोभायमान, देदीप्यमान ; (पण्ण १७)।

दीवयं देखो **दीव**=दिव्।

दीवयंत देखो **दीव**=दीपय्

दीवायण पुं [**द्वीपायन, द्वैपायन**] एक प्राचीन ऋषि, जिसने द्वारका नगरी जलाने का निदान किया था, और जो आगामी उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में एक तीर्थंकर होगा; (अंत १५ ; सम १५४; कुप्र ६३)।

दीवि } पुं [**द्वीपिन्**] व्याघ्र की एक जाति, चित्ता ; (गा
दीविअ } ७६१ ; णाया १, १—पत्र६५ ; पण्ह १, १)।

दीविअ वि [**दीपित**] १ जलाया हुआ; (पउम २२, १७)। २ प्रकाशित ; (ओघ)।

दीविअंग पुं [**दीपिकाङ्ग**] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो अन्ध-कार को दूर करता है ; (पउम १०२, १२५)।

दीविआ स्त्री [**दे**] १ उपदेहिका, क्षुद्र कीट-विशेष ; २ व्याध की हरिणी, जो दूसर हरिणों के आकर्षण करने के लिए रखी जाती है ; (दे ५, ५३)। ३ व्याध-सम्बन्धी पिंजड़े में रखा हुआ तितिर पक्षी ; (णाया १, १७—पत्र २३२)।

दीविआ स्त्री [**दीपिका**] छोटा दिया, लघु प्रदीप; (जीव३

दीविच्चग वि [**द्वैप्य**] द्वीप में उत्पन्न ; (णाया १, ११—पत्र १७१)।

दीवी (अप) देखो **देवी** ; (रंभा)।

दीवी स्त्री [**दीपिका**] लघु प्रदीप ; "दीविं व्व तीइ बुद्धी" (श्रा १६)।

दीवूसव पुं [**दीपोत्सव**] कार्तिक वदि अमावस, दीवाली ; (ती १६)।

दीसंत } देखो **दक्ख**=दृश्।
दीसमाण }

दीह वि [**दीर्घ**] १ आयत, लम्बा ; (ठा ४, २ ; प्राप्र ; कुमा)। २ पुं. दो मात्रा वाला स्वर-वर्ण ; (पिंग)। ३ कोशल देश का एक राजा; (उप पृ ५८)। °**कालिगी** स्त्री [°**कालिकी**] संज्ञा-विशेष, बुद्धि-विशेष, जिससे सुदीर्घ भूतकाल की बातों का स्मरण और सुदीर्घ भविष्य का विचार किया जा सकता है ; (दं ३२; विसे ५०८)। °**कालिय** वि [°**कालिक**] १ दीर्घ काल से उत्पन्न, चिरंतन ; "दीहका-

लिएणं रोगातंकेणं" (ठा ३, १)। २ दीर्घकाल-संबन्धी; (आवम)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] १ लंबी सफर; २ मरण, मौत; (स ७२६)। °डक्क वि [°दष्ट] जिसको साँप ने काटा हो वह; (निचू १)। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] मरण, मौत; (राज)। °दंत पुं [°दन्त] १ भारतवर्ष के एक भावी चक्रवर्ती राजा; (सम १५४)। २ एक जैन मुनि; (अंत)। °दंसि वि [°दर्शिन्] दूरदर्शी, दूरन्देशी; (सुर ३, ३; सं ३२)। °दसा स्त्री.ब. [°दशा] जैन ग्रन्थ-विशेष; (ठा १०)। °दिट्ठि वि [°दृष्टि] १ दूरदर्शी, दूरन्देशी। २ स्त्री. दीर्घ-दर्शिता; (धर्म १)। °पट्ठ पुं [°पृष्ठ] १ सर्प, साँप; (उप पृ २२)। २ यवराज का एक मन्त्री; (बृह १)। °पास पुं [°पार्श्व] ऐरवत क्षेत्र के सोलहवें भावी जिन-देव; (पव ७)। °पेहि वि [°प्रेक्षिन्] दूर-दर्शी; (पउम २६, २२; ३१, १०६)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भरत-क्षेत्र में होने वाला तीसरा वासुदेव; (सम १५४)। २ भगवान् चन्द्रप्रभ का पूर्व-जन्मीय नाम; (सम १५१)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि; (कप्प)। °मद्ध वि [°ाध्व] लम्बा रास्ता वाला; (णाया १, १८; ठा २, १; ५, २—पत्र २४०)। °मद्ध वि [°ाद्ध] दीर्घ काल से गम्य; (ठा ५, २—पत्र २४०)। °माउ न [°ायुष्] लम्बा आयुष्य; (ठा १०)। °रत्त, °राय पुंन [°रात्र] १ लम्बी रात; २ बहु रात्रि वाला चिर-काल; (संक्षि १७; राज)। °राय पुं [°राज] एक राजा; (महा)। °लोग पुं [°लोक] वनस्पति का जीव; (आचा)। °लोगसत्थ न [°लोकशस्त्र] अग्नि, वह्नि; (आचा)। °वेयड्ढ पुं [°वैताढ्य] स्वनाम-ख्यात पर्वत; (ठा २, ३—पत्र ६९)। °सुत्त न [°सूत्र] १ बड़ा सूता; (निचू ५)। २ आलस्य, "मा कुणसु दीहसुत्तं परकज्जं सीयलं परिगणंतो" (पउम ३०, ६)। °सेण पुं [°सेन] १ अनुत्तर-देवलोक-गामी मुनि-विशेष; (अनु २)। २ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न ऐरवत क्षेत्र के आठवें जिन-देव; (पव ७)। °ाउ, °ाउय वि [°ायुष्, °ायुष्क] लम्बी उम्र वाला, बड़ी आयु वाला, चिरं-जीवी; (हे १, २०; ठा ३, १; पउम १४, ३०)। °ासण न [°ासन] शय्या; (जं १)।

दीह देखो **दिअह**; (कुमा)।

दीहंध वि [**दिवसान्ध**] दिन को देखने में असमर्थ; "रत्तिंधा दीहंधा" (प्रासू १७६)।

दीहजीह पुं [**दे**] शंख; (दे ५, ४१)।

दीहर देखो **दीह**=दीर्घ; (हे २, १७१; सुर २, २१८; प्रासू ११३)। °च्छ वि [°ाक्ष] लम्बी आँख वाला, बड़े नेत्र वाला; (सुपा १४७)।

दीहरिय वि [**दीर्घित**] लम्बा किया हुआ; (गउड)।

दीहिया स्त्री [**दीर्घिका**] वापी, जलाशय-विशेष; (सुर १, ६३; कप्पू)।

दीहीकर सक [**दीर्घी+कृ**] लम्बा करना। दीहीकरेंति; (भग)।

दु देखो **दव**=द्रु। कर्म—दुयए; (विसे २८)।

दु वि.ब. [**द्वि**] दो, संख्या-विशेष वाला; (हे १, ६४; कम्म १; उवा)।

दु पुं [**द्रु**] २ वृक्ष, पेड़, गाछ; (उर ५)। २ सत्ता, सामान्य; (विसे २८)।

दु अ [**द्विस्**] दो वार, दो दफा; (सुर १६, ५५)।

दु अ [**दुर्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अभाव; २ दुष्टता, खराबी; ३ मुश्किली, कठिनाई; ४ निन्दा; (हे २, २१७; प्रासू १५८; सुपा १४३; णाया १, १; उवा)।

दुअ न [**द्विक**] युग्म, युगल; (स ६२१)।

दुअ वि [**द्रुत**] १ पीड़ित, हैरान किया हुआ; (उप ३२० टी)। २ वेग-युक्त; ३ क्रिवि. शीघ्र, जल्दी; (सुर १०, १०१; अणु)। °विलंबिअ न [°विलम्बित] १ छन्द-विशेष। २ अभिनय-विशेष; (राय)।

दुअक्खर पुं [**दे**] षण्ढ, नपुंसक; (दे ५, ४७)।

दुअक्खर वि [**द्व्यक्षर**] १ अज्ञान, मूर्ख, अल्पज्ञ; (उप १२६ टी)। २ पुंस्त्री. दास, नौकर; (पिंड)। स्त्री—°रिया; (आवम)।

दुअणुअ पुं [**द्व्यणुक**] दो परमाणुओं का स्कन्ध; (विसे २१६२)।

दुअल्ल न [**दुकूल**] १ वस्त्र, कपड़ा; २ महिन वस्त्र, सूक्ष्म वस्त्र; (हे १, ११९; प्राप्र)। देखो **दुकूल**।

दुआइ पुं [**द्विजाति**] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण; (हे १, ६४; २, ७९)।

दुआइक्ख वि [**दुराख्येय**] दुःख से कहने योग्य, (ठा ५, १—पत्र २९६)।

दुआर न [**द्वार**] दरवाजा, प्रवेश-मार्ग; (हे १, ७९)।

दुआराह वि [**दुराराध**] जिसका आराधन कठिनाई से हो सके वह; (पण्ह १, ४)।

दुआरिआ स्त्री [**द्वारिका**] १ छोटा द्वार; २ गुप्त द्वार, अपद्वार; (णाया १, २)।

दुआवत्त न [**द्व्यावर्त**] दृष्टिवाद का एक सूत्र ; (सम १४७)।

दुइअ } वि [**द्वितीय**] दूसरा; (हे १,१०१; २०६; कुमा;
दुइज्ज } (कप्पू ; रयण ४)।
दुईअ }

दुउंछ } सक [**जुगुप्स्**] निन्दा करना, घृणा करना।
दुउच्छ } दुउंछइ, दुउच्छइ ; (हे ४, ४)।

दुउण वि [**द्विगुण**] दूना, दुगुना ; (दे ५, ५५ ; हे १, ६४)। °**अर** वि [°**तर**] दूने से भी विशेष, अत्यन्त; (से ११, ४७)।

दुउणिअ वि [**द्विगुणित**] ऊपर देखो; (कुमा)।

दुऊल देखो **दुअल्ल**; (प्राप्र; गा ५६६ ; षड्)।

दुंदुह } पुं [**दुन्दुभ**] १ सर्प की एक जाति ;(दे ७, ५१)।
दुंदुभ } २ ज्योतिष्क-विशेष, एक महाग्रह ;(ठा २, ३—पत्र ७८)।

दुंदुभि देखो **दुंदुहि** ; (भग ६, ३३)।

दुंदुमिअ न [**दे**] गले की आवाज; (दे ५, ४५ ; षड्)।

दुंदुमिणी स्त्री [**दे**] रूप वाली स्त्री ; (दे ५, ४५)।

दुंदुहि पुंस्त्री [**दुन्दुभि**] वाद्य-विशेष; (कप्प; सुर ३,६८; गउड ; कुप्र ११८)।

दुंबवती स्त्री [**दे**] सरित्, नदी; (दे ५, ४८)।

दुकड देखो **दुक्कड** ; (द्र ४७)।

दुकप्प देखो **दुक्कप्प** ; (पंचू)।

दुकम्म न [**दुष्कर्मन्**] पाप, निन्दित काज ; (श्रा २७ ; भवि)।

दुकिय देखो **दुक्कय** ; (भवि)।

दुकूल पुं [**दुकूल**] १ वृक्ष-विशेष ; २ वि. दुकूल वृक्ष की छाल से बना हुआ वस्त्र आदि ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

दुक्कंदिर वि [**दुष्क्रन्दिन्**] अत्यन्त आक्रन्द करने वाला; (भवि)।

दुक्कड न [**दुष्कृत**] पाप-कर्म, निन्द्य आचरण ; (सम १२५ ; हे १, २०६; पडि)।

दुक्कडि } वि [**दुष्कृतिन्**, °**क**] दुष्कृत करने वाला,
दुक्कडिय } पापी; (सूअ १, ५, १ ; पि २१६)।

दुक्कप्प पुं [**दुष्कल्प**] शिथिल साधु का आचरण , पतित साधु का आचार ; (पंचभा)।

दुक्कम्म न [**दुष्कर्मन्**] दुष्ट कर्म, असदाचरण ; (सुपा २८; १२० ; ५००)।

दुक्कय न [**दुष्कृत**] पाप-कर्म ; (पण्ह १, १ ; पि ४६)।

दुक्कर वि [**दुष्कर**] जो दुःख से किया जा सके, मुश्किल, कष्ट-साध्य ; (हे ४, ४१४ ; पंचा १३)। °**आरअ** वि [°**कारक**] मुश्किल कार्य को करने वाला ; (गा १७६; हे २, १०४)। °**करण** न [°**करण**] कठिन कार्य को करना ; (द्र ५७)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] देखो °**आरअ** ; (उप पृ १६०)।

दुक्कर न [**दे**] माघ मास में रात्रि के चारों प्रहर में किया जाता स्नान; (दे ५, ४२)।

दुक्कह वि [**दे**] अरुचि वाला, अरोचकी ; (सुर १, ३६ ; जय २७)।

दुक्काल पुं [**दुष्काल**] अकाल, दुर्भिक्ष ; (सार्ध ३०)।

दुक्किय देखो **दुक्कय** ; (भवि)।

दुक्कुक्कणिआ स्त्री [**दे**] पीकदान, पीकदानी ; (दे ५, ४८)।

दुक्कुल न [**दुष्कुल**] निन्दित कुल ; (धर्म १)।

दुक्कुह वि [**दे**] १ असहन, असहिष्णु ; २ रुचि-रहित ; (दे ५, ४४)।

दुक्ख पुंन [**दुःख**] १ अ-सुख, कष्ट, पीड़ा, क्लेश, मन का क्षोभ ; (हे १, ३३), "दुक्खा सारीरा माणसा व संसारे" (संथा१०१; आचा ; भग; स्वप्न ५१ ; ५८; प्रासु ६६ ; १५२; १८२)। २ क्रिवि. कष्ट से, मुश्किली से, कठिनाई से; (वसु)। ३ वि. दुःख वाला, दुःखित, दुःख-युक्त; (वै ३३)। स्त्री—°**क्खा**; (भग)। °**कर** वि [°**कर**] दुःख-जनक ; (सुपा १६५)। °**त्त** वि [°**र्त**] दुःख से पीड़ित ; (सुपा १६१ ; स ६५२ ; प्रासू १५४)। °**त्तगवेसण** न [°**र्तगवेषण**] दुःख से पीड़ित की सेवा, आर्त-शुश्रूषा ; (पंचा १६)। °**मज्जिय** वि [**अर्जितदुःख**] जिसने दुःख उपार्जन किया हो वह; (उत्त ६)। °**राह** वि [°**राध्य**] दुःख से आराधन-योग्य; (वज्जा ११२)। °**वह** वि [°**वह**] दुःख-प्रद ; (पउम १५, १००)। °**सिया** स्त्री [°**सिका**] वेदना, पीड़ा ; (ठा ३, ४)। देखो **दुह**=दुःख।

दुक्ख न [**दे**] जघन, स्त्री के कमर के पीछे का भाग ; (दे ५, ४२) ।

दुक्ख अक [**दुःक्खाय्**] १ दुखना, दर्द करना । २ सक. दुःखी करना । "सिरं में दुक्खेइ" (स ३०४) । दुक्खामि ; (से ११, १२७) । दुक्खंति ; (सूअ २, २, ५५) ।

दुक्खड देखो **दुक्कर** ; (चारु २३) ।

दुक्खण न [**दुःखन**] दुखना, दर्द होना ; (उप ७५१; सूअ २, २, ५५) ।

दुक्खम वि [**दुःक्षम**] १ असमर्थ ; २ अशक्य ; (उत्त २०, ३१) ।

दुक्खर देखो **दुक्कर** ; (स्वप्न ६६) ।

दुक्खरिय पुं [**दुष्करिक**] दास, नौकर ; (निचू १६) ।

दुक्खरिया स्त्री [**दुष्करिका**] १ दासी, नौकरानी ; (निचू १६) । २ वेश्या, वरांगना ; (निचू १) ।

दुक्खल्लिय (अप) वि [**दुःखित**] दुःख-युक्त; (भवि) ।

दुक्खविअ वि [**दुःखित**] दुःखी किया हुआ ; (उप ६३४ ; भवि) ।

दुक्खाव सक [**दुःखय्**] दुःख उपजाना, दुःखी करना । दुक्खावेइ ; (पि ५५६) । वकृ—**दुक्खावेंत** ; (पउम ५८, १८) । कवकृ—**दुक्खाविज्जंत** ; (आवम) ।

दुक्खावणया स्त्री [**दुःखना**] दुःखी करना, दर्द उपजाना ; (भग ३, ३) ।

दुक्खि वि [**दुःखिन्**] दुःखी, दुःख-युक्त ; (आचा) ।

दुक्खिअ वि [**दुःखित**] दुःख-युक्त, दुखिया ; (हे २, ७२ ; प्राप्र ; प्रासू ६३ ; महा ; सुर ३, १६१) ।

दुक्खुत्तर वि [**दुःखोत्तार**] जो दुःख से पार किया जाय, जिसको पार करने में कठिनाई हो ; (पण्ह १, १) ।

दुक्खुत्तो अ [**द्विस्**] दो वार, दो दफा ; (ठा ५, २—पत्र ३०८) ।

दुक्खुर देखो **दुखुर** ; (पि ४३६) ।

दुक्खुल देखो **दुक्कुल**; (भवि २१) ।

दुक्खोह पुं [**दुःखौघ**] दुःख-राशि ; (पउम १०३,१५५; सुपा १६१) ।

दुक्खोह वि [**दुःक्षोभ**] कष्ट-क्षोभ्य, सुस्थिर ; (सुपा १६१; ६२६) ।

दुखंड वि [**द्विखण्ड**] दो टुकड़े वाला ; (उप ६८६ टी; भवि) ।

दुखुत्तो देखो **दुक्खुत्तो** ; (कस) ।

दुखुर पुं [**द्विखुर**] दो खुरे वाला प्राणी, गौ, भैंस आदि ; (पण्ण १) ।

दुग न [**द्विक**] दो, युग्म, युगल ; (नव १० ; सुर ३, १७ ; जी ३३) ।

दुगंछ देखो **दुगुंछ** । वकृ—**दुगंछमाण** ; (उत्त ४, १३) । कृ—**दुगंछणिज्ज** ; (उत्त १३, १६ ; पि ७४) ।

दुगंछणा स्त्री [**जुगुप्सना**] घृणा, निन्दा ; (पउम ६५, ६५) ।

दुगंछा स्त्री [**जुगुप्सा**] घृणा, निन्दा ; (पात्र ; कुप्र ४०७) । देखो **दुगुंछा** ।

दुगंध देखो **दुग्गंध** ; (पउम ४१, १७) ।

दुगच्छ, **दुगुंछ** } सक [**जुगुप्स्**] घृणा करना, निन्दा करना । दुगच्छइ, दुगुंछइ ; (षड् ; हे ४, ४) । वकृ—**दुगुंछंत**, **दुगुंछमाण** ; (कुमा ; पि ७४ ; २१५) । संकृ—**दुगुंछिउं**; (धर्म २) । कृ—**दुगुंछणीय** ; (पउम ४६, ६२) ।

दुगुंछग वि [**जुगुप्सक**] घृणा करने वाला; (आव ३) ।

दुगुंछण न [**जुगुप्सन**] घृणा, निन्दा ; (पि ७४) ।

दुगुंछणा देखो **दुगंछणा** ; (आचा) ।

दुगुंछा देखो **दुगंछा** ; (भग) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] देखो पीछे का अर्थ ; (ठा १०) । °**मोहणीय** न [°**मोहनीय**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव को अशुभ वस्तु पर घृणा होती है ; (कम्म १) ।

दुगुंछिय वि [**जुगुप्सित**] घृणित, निन्दित; (ओघ३०२) ।

दुगुंदुग पुं [**दौगुन्दुक**] एक समृद्धि-शाली देव ; (सुपा ३२८) ।

दुगुच्छ देखो **दुगुंछ** । दुगुच्छइ ; (हे ४, ४ ; षड्) । वकृ—**दुगुच्छंत** ; (पउम १०५, ७५) । कृ—**दुगुच्छणीय** ; (पउम ८०, २०) ।

दुगुण देखो **दुउण** ; (ठा २, ४ ; णाया १, १ ; दं ६ ; सुर ३, २१६) ।

दुगुण सक [**द्विगुणय्**] दुगुना करना । दुगुणेइ ; (कुप्र २८५) ।

दुगुणिअ देखो **दुउणिअ** ; (कुमा) ।

दुगुल्ल, **दुगूल** } देखो **दुअल्ल** ; (हे १, ११६ ; कुमा ; सुर २, ८० ; जं २) ।

दुगोत्ता स्त्री [**द्विगोत्रा**] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १) ।

दुग्ग न [**दे**] १ दुःख, कष्ट; (दे ५, ५३; षड् ; पण्ह १, ३)। २ कटी, कमर ; (दे ५, ५३)। ३ रण, संग्राम, युद्ध, "आउत्तं च ऐगिम दुग्गं" (स ६३६)।

दुग्ग वि [**दुर्ग**] १ जहां दुःख से प्रवेश किया जा सके वह, दुर्गम स्थान ; (भग ७, ६ ; विपा १, ३)। २ जा दुःख से जाना जा सके ; (सुअ १, ५, १)। ३ पुंन. किला, गढ़, कोट ; (कुमा; सुपा १४८)। °**नायग** पुं [°**नायक**] किले का मालिक; (सुपा ४६०)।

दुग्गइ स्त्री [**दुर्गति**] १ कुगति, नरक आदि कुत्सित योनि ; (ठा ३, ३; ५, १; उत्त ७, १८; आचा)। २ विपत्ति, दुःख; ३ दुर्दशा, बुरी अवस्था; ४ कंगालियत, दरिद्रता; (पण्ह १, १ ; महा ; ठा ३, ४ ; गच्छ २)।

दुग्गंठि स्त्री [**दुर्ग्रन्थि**] दुष्ट ग्रन्थि ; (पि ३३३)।

दुग्गंध पुं [**दुर्गन्ध**] १ खराब गन्ध ; २ वि. खराब गन्ध वाला, दुर्गन्धि ; (ठा ८ —पत्र ४१८ ; सुपा ४१ ; महा)।

दुग्गंधि वि [**दुर्गन्धिन्**] दुर्गन्ध वाला ; (सुपा ४८७)।

दुग्गम } **दुग्गम्म** } वि [**दुर्गम**] १ जहां दुःख से प्रवेश किया जा सके वह ; (पउम ४०, १३ ; ओघ ७५ भा)। "पडिवक्खनरिंददुग्गम्मं" (सुर ६, १३५)। २ न. कठिनाई, मुश्किली ; (ठा ५, १)।

दुग्गय वि [**दुर्गत**] १ दरिद्र, धन-हीन ; (ठा ३, ३ ; गा १८)। २ दुःखी, विपत्ति-ग्रस्त ; (पाअ ; ठा ४,१—पत्र २०२)।

दुग्गह वि [**दुर्ग्रह**] जिसका ग्रहण दुःख से हा सके वह ; (उप पृ ३६०)।

दुग्गा स्त्री [**दुर्गा**] १ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी ; (पाअ; सुपा १४८)। २ देवी-विशेष; (चंड)। ३ पक्षि-विशेष; (श्रा १६)।

दुग्गाई } **दुग्गाएवी** } **दुग्गादेई** } **दुग्गावी** } स्त्री [**दुर्गादेवी**] १ पार्वती, शिव-पत्नी, गौरी ; २ देवी-विशेष ; (षड् ; हे १,२७०; कुमा)। °**रमण** पुं [°**रमण**] महादेव, शिव ; (षड्)।

दुग्गिज्झ वि [**दुर्ग्राह्य,दुर्ग्रह**] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह ; (सुपा २५५)।

दुग्गूढ वि [**दुर्गूढ**] अत्यन्त गुप्त, अति प्रच्छन्न ; (वव ७)।

दुग्गेज्झ देखो **दुग्गिज्झ** ; (से १, ३)।

दुग्घट्ट वि [**दुर्घट्ट**] जिसका आच्छादन दुःख से हो सके वह, "पारद्धसीउण्हतण्हवेअणदुग्घट्टघट्टिया" (पण्ह १,३—पत्र ५४)।

दुग्घड वि [**दुर्घट**] जो दुःख से हो सके वह, कष्ट-साध्य ; (सुपा ६३ ; ३६५)।

दुग्घडिअ वि [**दुर्घटित**] १ दुःख से संयुक्त। २ खराब रीति से बना हुआ; "दुग्घडिअमंचअस्स व खणे खणे पाअपडणेणं" (गा ६१०)।

दुग्घर न [**दुर्गृह**] दुष्ट घर ; (भवि)।

दुग्घास पुं [**दुर्ग्रास**] दुर्भिक्ष, अकाल ; (बृह ३)।

दुग्घुट्ट } **दुग्घोट्ट** } पुं [**दे**] हस्ती, हाथी, करी ; (दे ५, ४४ ; षड् ; भवि)।

दुघण पुं [**दुघण**] एक प्रकार का मुद्गर, मोंगरी, मुँगरा ; (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।

दुचक्क न [**द्विचक्र**] गाड़ी, शकट ; (ओघ ३८३ भा)। °**वइ** पुं [°**पति**] गाड़ी का अधिपति ; (ओघ ३८३भा)।

दुच्चिण्ण देखो **दुच्चिण्ण** ; (पि ३४० ; औप)।

दुच्च न [**दौत्य**] दूत-कर्म, समाचार पहुँचाने का कार्य ; (पाअ)।

दुच्च देखो **दोच्च**=द्वितीय , द्विस् ; (कप्प)।

दुच्चंडिअ वि [**दे**] १ दुर्ललित ; २ दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित ; (दे ५, ५५ ; पाअ)।

दुच्चंबाल वि [**दे**] १ कलह-निरत, झगड़ाखोर ; २ दुश्चरित, दुष्ट आचरण वाला ; ३ परुष-भाषी ; (दे ५,५४)।

दुच्चज्ज } **दुच्चय** } वि [**दुस्त्यज**] दुःख से त्यागने योग्य; (कुमा; उप ७६८ टी)।

दुच्चर } **दुच्चरिअ** } वि [**दुश्चर**] १ जिसमें दुःख से जाया जाय वह; (आचा)। २ दुःख से जो किया जाय वह ; (उप ६४८ टी ; पउम २२, २०)। °**लाढ** पुं [°**लाढ**] ऐसा ग्राम या देश जिसमें दुःख से जाया जा सके ; (आचा)।

दुच्चरिअ न [**दुश्चरित**] १ खराब आचरण, दुष्ट वर्तन ; (पउम ३८, १२ ; उप पृ १११)। २ वि. दुराचारी ; (दे ५, ४५)।

दुच्चार वि [**दुश्चार**] दुराचारी ; (भवि)।

दुच्चारि वि [**दुश्चारिन्**] दुराचारी, दुष्ट आचरण वाला; (स५०३)। स्त्री—°**णी** ; (महा)।

दुच्चिंतिय वि [**दुश्चिन्तित**] १ दुष्ट चिन्तित ; (पउम ११८, ६७)। २ न. खराब चिन्तन ; (पडि)।

दुच्छिगिच्छ वि [**दुश्चिकित्स**] जिसका प्रतीकार मुश्किली से हो वह ; (स ७६१)।

दुच्चिण्ण न [**दुश्चीर्ण**] १ दुष्ट आचरण, दुश्चरित ; २ दुष्ट कर्म—हिंसा आदि; ३ वि. दुष्ट संचित, एकत्रित की हुई दुष्ट वस्तु ; (विपा १, १ ; णाया १, १६) ।

दुच्चेट्ठिय न [**दुश्चेष्टित**] खराब चेष्टा; शारीरिक दुष्ट आचरण ; (पडि; सुर ६, २३२) ।

दुच्छक्क वि [**द्विषट्क**] बारह प्रकार का ;
"मूलं दारं पइट्ठाणं, आहारो भायणं निही।
दुच्छक्कस्सावि धम्मस्स, सम्मत्तं परिकित्तियं" (श्रा ६) ।

दुच्छेज्ज वि [**दुश्छेद**] जिसका छेदन दुःख से हो सके वह; (पउम ३१, ५६) ।

दुछक्क देखो **दुच्छक्क** ; (धर्म २) ।

दुजडि पुं [**द्विजटिन्**] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह ; (ठा २, ३) ।

दुजय देखो **दुज्जय** ; (महा) ।

दुजीह पुं [**द्विजिह्व**] १ सर्प, साँप ; २ दुर्जन, खल पुरुष ; (सद्दि ६३ ; कुमा) ।

दुज्जंत देखो **दुज्जिंत** ; (राज) ।

दुज्जण पुं [**दुर्जन**] खल, दुष्ट मनुष्य; (प्रासू २० ; ४०; कुमा) ।

दुज्जय वि [**दुर्जय**] जो कष्ट से जीता जा सके ; (उप १०३१ टी ; सुर १२, १३८ ; सुपा २६) ।

दुज्जाय न [**दे**] व्यसन, कष्ट, दुःख, उपद्रव ; (दे ५, ४४ ; से १२, ६३ ; पाअ) ।

दुज्जाय वि [**दुर्जात**] दुःख से निकलने योग्य ; (से १२, ६३) ।

दुज्जाय न [**दुर्यात**] दुष्ट गमन, कुत्सित गति; (आचा) ।

दुज्जिंत पुं [**दुर्यन्त**] एक प्राचीन जैन मुनि ; (कप्प) ।

दुज्जीव न [**दुर्जीव**] आजीविका का भय; (विसे ३४५२) ।

दुज्जीह देखो **दुजीह** ; (वज्जा १५०) ।

दुज्जेअ वि [**दुर्जेय**] दुःख से जीतने योग्य; (सुपा २४८; महा) ।

दुज्जोहण पुं [**दुर्योधन**] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र ; (ठा ४, २) ।

दुज्झ वि [**दोह्य**] दोहने योग्य ; (दे १, ७) ।

दुज्झाण न [**दुर्ध्यान**] दुष्ट चिन्तन ; (धर्म २) ।

दुज्झाय वि [**दुर्ध्यात**] जिसके विषय में दुष्ट चिन्तन किया गया हो वह; (धर्म २) ।

दुज्झोसय वि [**दुर्जोष**] जिसकी सेवा कष्ट से हो सके ऐसा ; (आचा) ।

दुज्झोसय वि [**दुःक्षप**] जिसका नाश कष्ट-साध्य हो वह; (आचा) ।

दुज्झोसिअ वि [**दुर्जोषित**] दुःख से सेवित ; (आचा) ।

दुज्झोसिअ वि [**दुःक्षपित**] कष्ट से नाशित; (आचा) ।

दुट्ठ वि [**दुष्ट**] दोष-युक्त, दूषित; (ओघ १६२; पाअ; कुमा) । °**प्प** पुं [°**त्मन्**] दुष्ट जीव, पापी प्राणी ; (पउम ६, १३६ ; ७५, १२) ।

दुट्ठ वि [**दे. द्विष्ट**] द्वेष-युक्त; (ओघ ७५७ ; कस), "अरत्तदुट्ठस्स" (कुप्र ३७१) ।

दुट्ठाण न [**दुःस्थान**] दुष्ट जगह ; (भग १६, २) ।

दुट्टु अ [**दुष्ठु**] खराब, अ-सुन्दर ; (उप ३२० टी ; निर १, १ ; सुपा ३१८; हे ४, ४०१) ।

दुण्णय देखो **दुन्नय** ; (विक्र ३७ ; आवम) ।

दुण्णाम न [**दुर्नामन्**] १ अपकीर्ति, अपयश। २ दुष्ट नाम, खराब आख्या। ३ एक प्रकार का गर्व ; (भग १२, ५) ।

दुण्णिअ वि [**दून**] पीड़ित, दुःखित ; (गा ११) ।

दुण्णिअ देखो **दुन्निय** ; (राज) ।

दुण्णिअत्थ न [**दे**] १ जघन पर स्थित वस्त्र ; २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग ; (दे ५, ५३) ।

दुण्णिक्क वि [**दे**] दुश्चरित, दुराचारी; (दे ५, ४५) ।

दुण्णिक्कम वि [**दुर्निष्क्रम**] जहां से निकलना कष्ट-साध्य हो वह ; (भग ७, ६) ।

दुण्णिक्खित्त वि [**दे**] १ दुराचारी; २ कष्ट से जो देखा जा सके; (दे ५, ४५) ।

दुण्णिक्खेव वि [**दुर्निक्षेप**] दुःख से स्थापन करने योग्य ; (गा १५४) ।

दुण्णिबोह देखो **दुन्निबोह**; (राज) ।

दुण्णिमिअ वि [**दुर्नियोजित**] दुःख से जोड़ा हुआ ; (से १२, १६) ।

दुण्णिमित्त न [**दुर्निमित्त**] खराब शकुन, अपशकुन; (पउम ७०, ५) ।

दुण्णिविट्ठ वि [**दुर्निविष्ट**] दुराग्रही ; (निचू ११) ।

दुण्णिसीहिया स्त्री [**दुर्निषद्या**] कष्ट-जनक स्वाध्याय-स्थान; (पराह २, ५) ।

दुण्णेय वि [**दुर्ज्ञेय**) जिसका ज्ञान कष्ट-साध्य हो वह ; (उवर १२८ ; उप ३२८) ।

दुतितिक्ख वि [**दुस्तितिक्ष**] दुस्सह, जो दुःख से सहन किया जा सके वह ; (ठा ५, १)।

दुत्तर वि [**दुस्तर**] दुस्तरणीय, दुर्लंघ्य ; (सुपा ४७ ; ११५ ; सार्ध ६१)।

दुत्तडी स्त्री [**दुस्तटी**] खराब किनारा ; (धम्म१२टी)।

दुत्तव वि [**दुस्तप**] कष्ट से तपने योग्य, दुःख से करने योग्य (तप) ; (धर्मा १७)।

दुत्तार वि [**दुस्तार**] दुःख से पार करने योग्य, दुस्तर ; (से ३, २५ ; ६, १०)।

दुत्ति अ [**दे**] शीघ्र, जल्दी ; (दे५, ४१ ; पाअ)।

दुत्तिइक्ख } देखो **दुतितिक्ख** ; (आचा ; राज)।
दुत्तितिक्ख }

दुत्तुंड पुं [**दुस्तुण्ड**] दुर्मुख, दुर्जन ; (सुपा २७८)।

दुत्तोस वि [**दुस्तोष**] जिसको संतुष्ट करना कठिन हो वह ; (दस ५)।

दुत्थ न [**दे**] जघन, स्त्री की कमर के नीचे का भाग ; (दे ५, ४२)।

दुत्थ वि [**दुःस्थ**] दुर्गत, दुःस्थित ; (ठा ३, ३ ; भवि)।

दुत्थ न [**दौःस्थ्य**] दुर्गति, दुःस्थता ; (सुपा २४४)। "नहि विधुरसहावा हुंति दुत्थेवि धीरा" (कुप्र ५४)।

दुत्थिअ वि [**दुःस्थित**] १ दुर्गत, विपत्ति-ग्रस्त ; (रयण७५ ; भवि ; सण)। २ निर्धन, गरीब; (कुप्र १४६)।

दुत्थुरुहंड पुंस्त्री [**दे**] झगड़ाखोर, कलह-शील ; (दे ५, ४७)। स्त्री—°**डा** ; (दे ५, ४७)।

दुत्थोअ पुं [**दे**] दुर्भग, अभागा ; (दे ५, ४३)।

दुद्दंत वि [**दुर्दान्त**] उद्धत, दमन करने का अशक्य, दुर्दम ; "विसयपसत्ता दुद्दंतइंदिया देहिणो बहवे" (सुर ८, १३८ ; गाया १, ५ ; सुपा ३८० ; महा)।

दुद्दंस वि [**दुर्दर्श**] दुरालोक, जो कठिनाई से देखा जा सके ; (उत्तर १४१)।

दुद्दंसण वि [**दुर्दर्शन**] जिसका दर्शन दुर्लभ हो वह ; (गा ३०)।

दुद्दम वि [**दुर्दम**] १ दुर्जय, दुर्निवार ; (सुपा २४)। "दुद्दमकद्दमे" (श्रा १२)। २ पुं. राजा अश्वग्रीव का एक दूत ; (आक)।

दुद्दम पुं [**दे**] देवर, पति का छोटा भाई ; (दे ५, ४४)।

दुद्दिट्ठ वि [**दुर्दृष्ट**] १ बुरी तरह से देखा हुआ। २ वि. दुष्ट दर्शन वाला ; (पण्ह १, २—पत्र २६)।

दुद्दिण न [**दुर्दिन**] बादलों से व्याप्त दिवस ; (ओघ३६०)।

दुद्देय वि [**दुर्देय**] दुःख से देने योग्य ; (उप ६२४)

दुद्दोलना स्त्री [**दे**] गौ, गैया; (षड्)।

दुद्दोली स्त्री [**दे**] वृक्ष-पंक्ति ; (दे५, ४३ ; पाअ)।

दुद्ध न [**दुग्ध**] दूध, क्षीर ; (विपा १, ७)। °**जाइ** स्त्री [°**जाति**] मदिरा-विशेष, जिसका स्वाद दूध के जैसा होता है ; (जीव ३)। °**समुद्द** पुं [°**समुद्र**] क्षीर समुद्र, जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ट है ; (गा ३८८)।

दुद्धंस वि [**दुर्ध्वंस**] जिसका नाश मुश्किली से हो ; (सुर १, १२)।

दुद्धगंधिअमुह पुं [**दे**] बाल,शिशु, छोटा लड़का; (दे५,४०)।

दुद्धगंधिअमुही स्त्री [**दे**] छोटी लड़की; (पाअ)।

दुद्धट्टो } स्त्री [**दे**] १ प्रसूति के बाद तीन दिन तक का गो-
दुद्धट्ठी } दुग्ध ; (पभा ३२)। २ खट्टी छाछ से मिश्रित दूध ; (पव ४—गा २२८)।

दुद्धर वि [**दुर्धर**] १ दुर्वह, जिसका निर्वाह मुश्किली से हो सके वह ; (पण्ण १—पत्र ४ ; सुर१२, ५१)। २ गहन, विषम ; (ठा ६ ; भवि)। ३ दुर्जय ; (कुमा)। ४ पुं. रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३०)।

दुद्धरिस वि [**दुर्धर्ष**] १ जिसका सामना कठिनता से हो सके, जीतने को अशक्य ; (पण्ह २, ५ ; कप्प)।

दुद्धवलेही स्त्री [**दे**] चावल का आटा डाल कर पकाया जाता दूध ; (पव ४—गाथा २२८)।

दुद्धसाडी स्त्री [**दे**] द्राक्षा मिला कर पकाया जाता दूध ; (पव ४—गाथा २२८)।

दुद्धिअ न [**दे**] कद्दू, लौकी; गुजराती में 'दूधी'; (पाअ)।

दुद्धिणिआ } स्त्री [**दे**] १ तैल आदि रखने का भाजन ;
दुद्धिणी } २ तुम्बी; (दे ५, ५४)।

दुद्धोअहि } पुं [**दुग्धोदधि**] समुद्र-विशेष, जिसका पानी
दुद्धोदहि } दूध की तरह स्वादिष्ट है, क्षीर-समुद्र ; (गा ४७५; उप २११ टी)।

दुद्धोलणी स्त्री [**दे**] गो-विशेष, जिसको एक वार दोहने पर फिर भी दोहन किया जा सके ऐसी गाय; (दे ५, ४६)।

दुधा देखो **दुहा** ; (अभि १६१)।

दुनिमित्त देखो **दुण्णिमित्त** ; (श्रा २७)।

दुन्नय पुं [**दुर्नय**] १ दुष्ट नीति, कुनीति। २ अनेक धर्म वाली वस्तु में किसी एक ही धर्म को मान कर अन्य धर्म का प्रतिवाद करने वाला पक्ष (सम्म१५)। ३ वि. दुष्ट नीति;

दुप्पडिलेह वि [**दुष्प्रतिलेख**] जो ठीक २ न देखा जा सके वह; (पव ८४)।

दुप्पडिलेहण न [**दुष्प्रतिलेखन**] ठीक २ नहीं देखना ; (आव ४)।

वाला, अन्याय-कारी ; (उप ७६८ टी)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] अन्याय करने वाला ; (सुपा ३४६)।

दुन्निग्गह वि [**दुर्निग्रह**] जिसका निग्रह दुःख से हो सके वह, अनिवार्य ; (उप पृ १५३)।

दुन्निबोह वि [**दुर्निबोध**] १ दुःख से जानने योग्य ; २ दुर्लभ ; (सुअ १, १५, २५)।

दुन्निमित्त देखो **दुण्णिमित्त**; (श्रा २७)।

दुन्निय न [**दुर्नीत**] दुष्ट कर्म, दुष्कृत; "बंधंति वेदंति य दुन्नियाणि" (सूअ १, ७, ४)।

दुन्नियत्थ वि [**दे**] विट का भेष वाला, निन्दनीय वेष को धारण करने वाला, केवल जघन पर ही वस्त्र-पहिना हुआ ; "लोए वि कुसंसग्गोपिरं जणं दुन्नियत्थमइवसणं निंदइ" (उव)।

दुन्निरिक्ख वि [**दुर्निरीक्ष**] जो कठिनाई से देखा जा सके वह; (कप्प ; भवि)।

दुन्निवार वि [**दुर्निवार**] रोकने के लिए अशक्य, जिसका निवारण मुश्किली से हो सके वह ; (सुपा १२३ ; महा)।

दुन्निवारणीअ वि [**दुर्निवारणीय, दुर्निवार**] ऊपर देखो; (स ३४३ ; ७४१)।

दुन्निसण्ण वि [**दुर्निषण्ण**] खराब रीति से बैठा हुआ ; (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुप देखो **दिअ**=द्विप ; (राज)

दुपएस वि [**द्विप्रदेश**] १ दो अवयव वाला ; २ पुं. द्व्यणुक ; (उत्त १)।

दुपएसिय वि [**द्विप्रदेशिक**] दो प्रदेश वाला ; (भग ५, ७)।

दुपक्ख पुं [**दुष्पक्ष**] दुष्ट पक्ष ; (सूअ १, ३, ३)।

दुपक्ख न [**द्विपक्ष**] १ दो पक्ष ; (सूअ १, २, ३)। २ वि. दो पक्ष वाला ; (सूअ १, १२, ५)।

दुपडिग्गह न [**द्विप्रतिग्रह**] दृष्टिवाद का एक सूत्र ; (सम १५७)।

दुपडोआर वि [**द्विपदावतार**] दो स्थानों में जिसका समावेश हो सके वह ; (ठा २, १)।

दुपडोआर वि [**द्विप्रत्यवतार**] ऊपर देखो; (ठा २, १)।

दुपमज्जिय देखो **दुप्पमज्जिय** ; (सुपा ६२०)।

दुपय वि [**द्विपद**] १ दो पैर वाला; २ पुं. मनुष्य; (णाया १, ८; सुपा ४०६)। ३ न. गाड़ी, शकट; (ओघ २०५ भा)।

दुपय पुं [**द्रुपद**] कांपिल्यपुर का एक राजा; (णाया १,१६)।

दुपरिच्चय वि [**दुष्परित्यज**] दुस्त्यज, दुःख से छोड़ने योग्य ; (उप ७६८ टी ; रयण ३४)।

दुपरिच्चयणीय वि [**दुष्परित्यजनीय, दुष्परित्यज**] ऊपर देखो ; (काल)।

दुपस्स देखो **दुप्पस्स** ; (ठा ५, १—पत्र २६६)।

दुपुत्त पुं [**दुष्पुत्र**] कुपुत्र, कपूत ; (पउम २६, २३)।

दुपेच्छ वि [**दुष्प्रेक्ष**] दुर्दर्श, अदर्शनीय ; (भवि)।

दुप्पइ पुं [**दुष्पति**] दुष्ट स्वामी ; (भवि)।

दुप्पउत्त वि [**दुष्प्रयुक्त**] १ दुरुपयोग करने वाला; (ठा २, १—पत्र ३६)। २ जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह ; (भग ३, १)।

दुप्पउलिय, **दुप्पउल्ल** वि [**दुष्प्रज्वलित**] ठीक २ नहीं पका हुआ, अधपका ; (उवा ; पंचा १)।

दुप्पओग पुं [**दुष्प्रयोग**] दुरुपयोग ; (दस ४)।

दुप्पओगि वि [**दुष्प्रयोगिन्**] दुरुपयोग करने वाला ; (पण्ह १, १—पत्र ७)।

दुप्पक्क वि [**दुष्पक्व**] देखो **दुप्पउल्ल**; (सुपा ४७२)।

दुप्पक्खाल वि [**दुष्प्रक्षाल**] जिसका प्रक्षालन कष्ट-साध्य हो वह ; (सुपा ६०८)।

दुप्पच्चुप्पेक्खिय वि [**दुष्प्रत्युत्प्रेक्षित**] ठीक १ नहीं देखा हुआ ; (पव ६)।

दुप्पजीवि वि [**दुष्प्रजीविन्**] दुःख से जीने वाला; (दसचू१)।

दुप्पडिक्कंत वि [**दुष्प्रतिक्रान्त**] जिसका प्रायश्चित्त ठीक २ न किया गया हो वह ; (विपा १, १)।

दुप्पडिगर वि [**दुष्प्रतिकर**] जिसका प्रतीकार दुःख से किया जा सके ; (बृह ३)।

दुप्पडिपूर वि [**दुष्प्रतिपूर**] पूरने के लिए अशक्य ;(तंदु)।

दुप्पडियाणंद वि [**दुष्प्रत्यानन्द**] १ जो किसी तरह संतुष्ट न किया जा सके; २ अति कष्ट से तोषणीय ; (विपा १, १—पत्र ११ ; ठा ४, ३)।

दुप्पडियार वि [**दुष्प्रतिकार**] जिसका प्रतीकार दुःख से हो सके वह; (ठा ३,१—पत्र ११७; ११६; स १८४; उव)।

दुप्पडिलेहिय वि [**दुष्प्रतिलेखित**] ठीक से नहीं देखा हुआ ; (सुपा ६१७) ।

दुप्पडिवूह वि [**दुष्प्रतिवृंह**] १ बढ़ाने को अशक्य ; २ पालने को अशक्य ; (आचा) ।

दुप्पडिवूहण वि [**दुष्प्रतिबृंहण**] ऊपर देखो; (आचा) ।

दुप्पणिहाण न [**दुष्प्रणिधान**] दुष्प्रयोग, अशुभ प्रयोग, दुरुपयोग; (ठा ३, १; सुपा ५४०) ।

दुप्पणिहिय वि [**दुष्प्रणिहित**] दुष्प्रयुक्त, जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह ; (सुपा ५५८) ।

दुप्पणीहाण देखो **दुप्पणिहाण**; "कयसामइओवि दुप्पणी-हाणं" (सुपा ५५३) ।

दुप्पणोल्लिय वि [**दुष्प्रणोद्य**] दुस्त्यज; (सूअ १,३,१)।

दुप्पण्णवणिज्ज वि [**दुष्प्रज्ञापनीय**] कष्ट से प्रबोधनीय; (आचा २, ३, १) ।

दुप्पतर वि [**दुष्प्रतर**] दुस्तर ; (सूअ १, ५, १) ।

दुप्पधंस वि [**दुष्प्रधर्ष**] दुर्धर्ष, दुर्जय; (उत्त ६; पि ३०५)।

दुप्पमज्जण न [**दुष्प्रमार्जन**] ठीक २ सफा नहीं करना ; (धर्म ३) ।

दुप्पमज्जिय वि [**दुष्प्रमार्जित**] अच्छी तरह से सफा नहीं किया हुआ ; (सुपा ६१७) ।

दुप्पय देखो **दुपय**=द्विपद ; (सम ६०) ।

दुप्पयार वि [**दुष्प्रचार**] जिसका प्रचार दुष्ट माना जाता है वह, अन्याय-युक्त ; (कप्प) ।

दुप्परक्कंत वि [**दुष्पराक्रान्त**] बुरी तरह से आक्रान्त ; (आचा) ।

दुप्परिअल्ल वि [**दे**] १ अशक्य ; (दे ५, ५५ ; पाअ ; से ४, २६ ; ६, १८ ; गा १२२) । २ द्विगुण, दुगुना ; ३ अनभ्यस्त, अभ्यास-रहित ; (दे ५, ५५) ।

दुप्परिइअ वि [**दुष्परिचित**] अपरिचित ; (से१३, १३)।

दुप्परिच्चय देखो **दुपरिच्चय** ; (उत्त ८) ।

दुप्परिणाम वि [**दुष्परिणाम**] जिसका परिणाम खराब हो, दुर्विपाक ; (भवि) ।

दुप्परिमास वि [**दुष्परिमर्ष**] कष्ट-साध्य स्पर्श वाला ; (से ६, २४) ।

दुप्परियत्तण देखो **दुप्परिवत्तण** ; (तंदु) ।

दुप्परिल्ल वि [**दे**] दुराकर्ष; "आलिहिअ दुप्परिल्लंपि णेइ रणणं धणुं वाहो" (गा १२२) ।

दुप्परिवत्तण वि [**दुष्परिवर्त्तन**] १ जिसका परिवर्तन दुःख से हो सके वह । २ न. दुःख से पीछे लौटना ; (तंदु) ।

दुप्पवंच पुं [**दुष्प्रपञ्च**] दुष्ट प्रपंच ; (भवि) ।

दुप्पवण पुं [**दुष्पवन**] दुष्ट वायु ; (भवि) ।

दुप्पवेस वि [**दुष्प्रवेश**] जहाँ कष्ट से प्रवेश हो सके वह ; (णाया १, १ ; पउम ४३, १२, स २५६ ; सुपा४५५) । °**तर** वि [°**तर**] प्रवेश करने का अशक्य ; (पण्ह१, ३—पत्र ४५) ।

दुप्पसह पुं [**दुष्प्रसह**] पंचम आरे के अन्त में होने वाला एक जैन आचार्य, एक भावी जैन सूरि ; (उप ८०६) ।

दुप्पस्स वि [**दुर्दर्श**] जो मुश्किली से दिखलाया जा सके वह ; (ठा ५, १ टी—पत्र २६६) ।

दुप्पहंस वि [**दुष्प्रध्वंस्य**] जिसका नाश कठिनाई से हो सके वह ; (णाया १, १८—पत्र २३६) ।

दुप्पहंस वि [**दुष्प्रधृष्य**] अजेय, दुर्जय ; (णाया१, १८) ।

दुप्पिउ पुं [**दुष्पितृ**] दुष्ट पिता ; (सुपा ३८७ ; भवि) ।

दुप्पिच्छ देखो **दुपेच्छ** ; (सुर २, ५ ; सुपा ६२) ।

दुप्पिय वि [**दुष्प्रिय**] अप्रिय । °**भासि** वि [°**भाषिन्**] अप्रिय-वक्ता ; (सुपा ३१४) ।

दुप्पुत्त देखो **दुपुत्त**; (पउम १०५, ७२; भवि; कुप्र ४०५)।

दुप्पूर वि [**दुष्पूर**] जो कठिनाई से पूरा किया जा सके ; (स १२३) ।

दुप्पेक्ख देखो **दुपेच्छ** ; (सण) ।

दुप्पेक्खणिज्ज वि [**दुष्प्रेक्षणीय**] कष्ट से दर्शनीय; (नाट—वेणी २५) ।

दुप्पेच्छ देखो **दुपेच्छ**; (महा) ।

दुप्पोलिय देखो **दुप्पउलिअ** ; (श्रा २०) ।

दुप्फरिस, **दुप्फास**, **दुफास** वि [**दुःस्पर्श**] जिसका स्पर्श खराब हो वह ; (पउम २६, ४६ ; १०१, ७१ ; ठा ८ ; भग) ।

दुफास वि [**द्विस्पर्श**] स्निग्ध और शीत आदि अविरुद्ध दो स्पर्शों से युक्त ; (भग) ।

दुब्बद्ध वि [**दुर्बद्ध**] खराब रीति से बँधा हुआ ; (आचा २, ६, ३) ।

दुब्बल वि [**दुर्बल**] निर्बल, बल-हीन; (विपा १, ७; सुपा ६०३ ; प्रासू २३)। °**पच्चवमित्त** पुंन [°**प्रत्यवमित्र**] दुर्बल को मदद करने वाला ; (ठा ६)।

दुब्बलिय वि [**दुर्बलिक**] दुर्बल, निर्बल ; (भग १२, २)। °**पूसमित्त** पुं [°**पुष्यमित्र**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य; (ठा ७ ; ती ७)।

दुब्बुद्धि वि [**दुर्बुद्धि**] १ दुष्ट बुद्धि वाला, खराब नियत वाला ; (उप ७२८ ; सुपा ४४ ; ३७६)। २ स्त्री. खराब बुद्धि, दुष्ट नियत ; (श्रा १४)।

दुब्बोल्ल पुं [**दे**] उपालम्भ, उलहना ; (दे ५, ४२)।

दुब्भ° देखो **दुह**=दुह्।

दुब्भग वि [**दुर्भग**] १ कमनसीब, अभागा ; २ अप्रिय, अनिष्ट ; (पण्ह १, २ ; प्रासू १४३)। °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से उपकार करने वाला भी लोगों को अप्रिय होता है ; (कम्म १ ; सम ६७) । °**करा** स्त्री [°**करा**] दुर्भग बनाने वाली विद्या-विशेष ; (सूत्र २, २)।

दुब्भरणि स्त्री [**दुर्भरणि**] दुःख से निर्वाह ; "होउ अजणणी तेसिं दुब्भरणी पडउ तदुदरस्सावि" (सुपा ३७०)।

दुब्भाव पुं [**दुर्भाव**] १ हेय पदार्थ ; (पउम ८६, ६६)। २ असद्-भाव, खराब असर; "पिसुणेण व जेण कओ दुब्भाओ" (सुर ३, १६)।

दुब्भाव पुं [**द्विभाव**] विभाग, जूदाई ; (सुर ३, १६)।

दुब्भासिय न [**दुर्भाषित**] खराब वचन ; (पउम ११८, ६७ ; पडि)।

दुब्भि पुंन [**दुरभि**] १ खराब गन्ध ; (सम ४१)। २ अशुभ, खराब, अ-सुन्दर ; (ठा १)। ३ वि. खराब गन्ध वाला, दुर्गन्धि ; (आचा)। °**गंध** [°**गन्ध**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (ठा १ ; आचा ; णाया १, १२)। °**सद्द** [°**शब्द**] खराब शब्द ; (णाया १, १२)।

दुब्भिक्ख पुंन [**दुर्भिक्ष**] १ दुष्काल, अकाल, वृष्टि का अभाव; (सम ६०; सुपा ३५८);
"आसन्ने रणरंगे, मूढे खंते तहेव दुब्भिक्खे।
जस्स मुहं जोइज्जइ, सो पुरिसो महीयले विरलो" (रयण ३२)।
२ भिक्षा का अभाव; (ठा ५, २)। ३ वि. जहां पर भिक्षा न मिल सके वह देश आदि ; (ठा ३, १—पत्र ११८)।

दुब्भिज्ज देखो **दुब्भेज्ज** ; (पउम ८०, ६)।

दुब्भूइ स्त्री [**दुर्भूति**] अ-शिव, अ-मंगल; (बृह ३)।

दुब्भूय पुंन [**दुर्भूत**] १ नुकशान करने वाला जन्तु—टिड्डी वगैरः; (भग ३, २)। २ न. अशिव, अमंगल ; (जीव३)।

दुब्भेज्ज वि [**दुर्भेद्य**] तोड़ने को अशक्य ; (पि ८४; २८७ ; नाट—मृच्छ १३३)।

दुब्भेय वि [**दुर्भेद**] ऊपर देखो ; (राय)।

दुभग देखो **दुब्भग** ; (नव १५)।

दुभव न [**द्विभव**] वर्तमान और आगामी जन्म; "दुभवहइ-सज्जो" (श्रा २७)।

दुभाग पुं [**द्विभाग**] आधा, अर्ध ; (भग ७, १)।

दुम सक [**धवलय्**] १ सफेद करना। २ चूना आदि से पोतना। दुमइ ; (हे ४, २४)। दुमए ; (गा७४७)। वकृ—**दुमंत** ; (कुमा)।

दुम पुं [**द्रुम**] १ वृक्ष, पेड़, गाछ ; (कुमा ; प्रासू ६ ; १४६)। २ चमरेन्द्र के पदाति-सैन्य का एक अधिपति ; (ठा ५, १—पत्र ३०२ ; इक)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले अनुत्तर देवलोक की गति प्राप्त की थी ; (अनु२)। ४ न. एक देव-विमान ; (सम ३५)। °**कंत** न [°**कान्त**] एक विद्याधर-नगर ; (इक)। °**पत्त** न [°**पत्र**] १ वृक्ष की पत्ती ; २ उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन ; (उत्त १०)। °**पुप्फिया** स्त्री [°**पुष्पिका**] दशवैकालिक सूत्र का पहला अध्ययन ; (दस १)। °**राय** पुं [°**राज**] उत्तम वृक्ष ; (ठा४, ४)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में गति प्राप्त की थी ; (अनु२)। २ नववें बलदेव और वासुदेव के पूर्व-जन्म के धर्म-गुरु; (सम १५३ ; पउम२०, १७७)।

दुमंतय पुं [**दे**] केश-बन्ध, धम्मिल्ल ; (दे ५, ४७)।

दुमण न [**धवलन**] चूना आदि से लेपन, सफेद करना ; (पण्ह २, ३)।

दुमणी स्त्री [**दे**] सुधा, मकान आदि पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष ; (दे ५, ४४)।

दुमत्त वि [**द्विमात्र**] दो मात्रा वाला स्वर-वर्ण; (हे१,६४)।

दुमासिय वि [**द्वैमासिक**] दो मास का, दो मास संबन्धी ; (सण)।

दुमिअ वि [**धवलित**] चूना आदि से पोता हुआ, सफेद किया हुआ ; (गा ७४७ ; सुज्ज २०)।

दुमिल देखो **दुम्मिल** ; (पिंग)।

दुमुह पुं [**द्विमुख**] एक राजर्षि ; (उत्त ६)।

दुमुह देखो **दुम्मुह**=दुर्मुख ; (पि ३४०)।
दुमुहुत्त पुंन [**दुर्मुहूर्त**] खराब मुहूर्त, दुष्ट समय ; (सुपा २३७)।
दुमोक्ख वि [**दुर्मोक्ष**] जो दुःख से छोड़ा जा सके ; (सूम १, १२)।
दुम्म देखो **दूम**=दावय्। दुम्मइ ; (भवि)। दुम्मेंति, दुम्मेसि ; (गा १७७ ; ३४०)। कर्म—दुम्मिज्जइ ; (गा ३२०)।
दुम्मइ वि [**दुर्मति**] दुर्बुद्धि, दुष्ट बुद्धि वाला ; (श्रा२७ ; सुपा २५१)।
दुम्मइणी स्त्री [**दे**] झगड़ाखोर स्त्री ; (दे५, ४७ ; षड्)।
दुम्मण वि [**दुर्मनस्**] १ दुर्मना, खिन्न-मनस्क, उद्विग्न-चित्त, उदास ; (विपा१, १; सुर ३, १४७)। २ दीन, दीनता-युक्त ; ३ द्विष्ट, द्वेष-युक्त ; (ठा ३, २—पत्र १३०)।
दुम्मण अक [**दुर्मनाय्**] उद्विग्न होना, उदास होना। वकृ— **दुम्मणाअंत**, **दुम्मणायमाण** ; (नाट—महावी ६६, मालती १२८ ; रयण ७६)।
दुम्मणिअ न [**दौर्मनस्य**] उदासी, उद्वेग; (दस ६, ३)।
दुम्महिला स्त्री [**दुर्महिला**] दुष्ट स्त्री; (ओघ ४६४ टी)।
दुम्माण पुं [**दुर्मान**] झूठा अभिमान, निन्दित गर्व ; (अच्चु ५४)।
दुम्मार पुं [**दुर्मार**] विषम मार, भयङ्कर ताड़न ; "दुम्मारेण मओ सोवि" (श्रा १२)।
दुम्मारुय पुं [**दुर्मारुत**] दुष्ट पवन ; (भवि)।
दुम्मिअ वि [**दून**] उपतापित, पीड़ित ; (गा७४ ; २२४ ; ४२३ ; भवि ; काप्र ३०)।
दुम्मिल स्त्रीन [**दुर्मिल**] छन्द-विशेष। स्त्री—°ला ; (पिंग)।
दुम्मुह देखो **दुमुह**=द्विमुख ; (महा)।
दुम्मुह पुं [**दुर्मुख**] बलदेव का धारणी-देवी से उत्पन्न एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी, (अंत ३ ; पगह१, ४)।
दुम्मुह पुं [**दे**] मर्कट, वानर, बन्दर ; (दे ५, ४४)।
दुम्मेह वि [**दुर्मेधस्**] दुर्बुद्धि, दुर्मति ; (पगह १, ३)।
दुम्मोअ वि [**दुर्मोक**] दुःख से छोड़ाने योग्य ; (अभि २४४)।
दुरइक्कम वि [**दुरतिक्रम**] दुर्लंघ्य, जिसका उल्लंघन दुःख-साध्य हो वह ; (आचा)।
दुरइक्कमणिज्ज वि [**दुरतिक्रमणीय**] ऊपर देखो; (णाया १, ५)।
दुरंत वि [**दुरन्त**] १ जिसका परिणाम—विपाक खराब हो वह, जिसका पर्यन्त दुष्ट हो वह ; (णाया १, ८ ; पगह १, ४—पत्र ६५ ; स ७५० ; उवा)। २ जिसका विनाश कष्ट-साध्य हो वह ; (तंदु)।
दुरंदर वि [**दे**] दुःख से उत्तीर्ण ; (दे ५, ४६)।
दुरक्ख वि [**दूरक्ष**] जिसकी रक्षा करना कठिन हो वह ; (सुपा १४३)।
दुरक्खर वि [**दुरक्षर**] परुष, कठोर (वचन) ; (भवि)।
दुरग्गह पुं [**दुराग्रह**] कदाग्रह ; (कुप्र ३७६)।
दुरज्झवसिय न [**दुरध्यवसित**] दुष्ट चिन्तन ; (सुपा ३७७)।
दुरणुचर वि [**दुरनुचर**] जिसका अनुष्ठान कठिनता से हो सके वह, दुष्कर ; "एसो जईण धम्मो दुरणुचरो मंदसत्ताण" (सुर १४, ७५ ; ठा ५, १—पत्र २६६ ; णाया १, १)।
दुरणुपाल वि [**दुरनुपाल**] जिसका पालन कष्ट-साध्य हो वह ; (उत्त २३)।
दुरप्प पुं [**दुरात्मन्**] दुष्ट आत्मा, दुर्जन ; (उव ; महा)।
दुरब्भास पुं [**दुरभ्यास**] खराब आदत ; (सुपा १६७)।
दुरभि देखो **दुब्भि** ; (अणु ; पउम २६,५०; १०२, ४४ ; पगह २, ५ ; आचा)।
दुरभिगम वि [**दुरभिगम**] १ जहां दुःख से गमन हो सके वह , कष्ट-गम्य ; (ठा ३, ४)। २ दुर्बोध, कष्ट से जो जाना जा सके ; (राज)।
दुरमच्च पुं [**दुरमात्य**] दुष्ट मंत्री ; (कुप्र २६१)।
दुरवगम वि [**दुरवगम**] दुर्बोध ; (कुप्र ४८)।
दुरवगाह वि [**दुरवगाह**] दुष्प्रवेश, जहां प्रवेश करना कठिन हो वह ; (हे १, २६ ; सम १४५)।
दुरस वि [**दूरस**] खराब स्वाद वाला ; (भग ; णाया १, १२ ; ठा ८)।
दुरसण पुं [**द्विरसन**] १ सर्प, साँप ; २ दुर्जन, दुष्ट मनुष्य ; (सुपा ५६७)।
दुरहि देखो **दुरभि** ; (उप ७२८ टी ; तंदु)।
दुरहिगम देखो **दुरभिगम** ; (सम १४५; विसे ६०६)।

दुरहिगम्म वि [**दुरभिगम्य**] दुःख से जानने योग्य, दुर्बोध; "अत्थगई वि अ नयवायगहणलीणा दुरहिगम्मा" (सम्म १६१)।

दुरहियास वि [**दुरध्यास, दुरधिसह**] दुस्सह, जो कष्ट से सहन किया जा सके ; (णाया १, १ ; आचा ; उप १०३१ टी ; स ६५७)।

दुराणण पुं [**दुरानन**] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४५)।

दुराणुवत्त वि [**दुरनुवर्त**] जिसका अनुवर्तन कष्ट-साध्य हो वह ; (वव ३)।

दुराय न [**द्विरात्र**] दो रात ; (ठा ५, २ ; कस)।

दुरायार वि [**दुराचार**]१ दुराचारी, दुष्ट आचरण वाला ; (सुर २, १६३ ; १२, २२६ ; वेणी १७१)। २ पुं. दुष्ट आचरण ; (भवि)।

दुरायारि वि [**दुराचारिन्**] ऊपर देखो ; (भवि)।

दुराराह वि [**दुराराध**] जिसका आराधन दुःख से हो सके वह; (कप्प)।

दुरारोह वि [**दुरारोह**] जिस पर दुःख से चढ़ा जा सके वह, दुरध्यास ; (उत्त २३ ; गा ४६८)।

दुरालोअ पुं [**दे**] तिमिर, अन्धकार ; (दे ५, ४६)।

दुरालोअ वि [**दुरालोक**] जो दुःख से देखा जा सके, देखने को अशक्य ; (से ४, ८ ; कुमा)।

दुरालोयण वि [**दुरालोकन**] ऊपर देखो ; "दुरालोयणो दुम्मुहो रत्तनेत्तो" (भवि)।

दुरावह वि [**दुरावह**] दुर्धर, दुर्वह ; (पउम ६८, ६)।

दुरास वि [**दुराश**] १ दुष्ट आशा वाला ; २ खराब इच्छा वाला; (भवि ; संक्षि १६)।

दुरासय वि [**दुराशय**] दुष्ट आशय वाला ; (सुपा १३१)।

दुरासय वि [**दुराश्रय**] दुःख से जिसका आश्रय किया जा सके वह, आश्रय करने को अशक्य ; (पण्ह १, ३ ; उत्त १)।

दुरासय वि [**दुरासद**] १ दुष्प्राप, दुर्लभ ; २ दुर्जय ; ३ दुःसह ; (दस २, ६ ; राज)।

दुरिअ न [**दुरित**] पाप ; (पाअ ; सुपा २४३)।

दुरिअ न [**दे**] द्रुत, शीघ्र, जल्दी ; (षड्)।

दुरिआरि स्त्री [**दुरितारि**] भगवान् संभवनाथ की शासन-देवी ; (संति ६)।

दुरिक्ख वि [**दुरीक्ष**] देखने को अशक्य ; (कुमा)।

दुरुक्क वि [**दे**] थोड़ा पीसा हुआ, ठीक २ नहीं पीसा हुआ ; (आचा २, १, ८)।

दुरुदुल्ल सक [**भ्रम्**] १ भ्रमण करना, घूमना। २ गँवाई हुई चीज की खोज में घूमना। वकृ—**दुरुदुल्लंत**; (सुर १५, २१२)।

दुरुत्त न [**दुरुक्त**] दुष्टोक्ति, दुष्ट वचन ; (सार्ध १०१)।

दुरुत्त वि [**द्विरुक्त**] १ दो बार कहा हुआ, पुनरुक्त ; २ दो बार कहने योग्य ; (रंभा)।

दुरुत्तर वि [**दुरुत्तर**] १ दुस्तर, दुर्लंघ्य ; (सुअ १, ३, २)। २ दुष्ट उत्तर, अयोग्य जवाब ; (हे १, १४)।

दुरुत्तर वि [**द्वि-उत्तर**] दो से अधिक। °**सय** वि [°**शततम**] एक सौ दो वाँ, १०२ वाँ; (पउम १०२,२०४)।

दुरुत्तार वि [**दुरुत्तार**] दुःख से पार करने योग्य ; (सुपा २६७)।

दुरुद्धर वि [**दुरुद्धर**] जिसका उद्धार कठिनाई से हो वह ; (सुअ १, २, २)।

दुरुवणीय वि [**दुरुपनीत**] जिसका उपनय दूषित हो ऐसा (उदाहरण) ; (दसनि १)।

दुरुवयार वि [**दुरुपचार**] जिसका उपचार कष्ट-साध्य हो वह ; (तंदु)।

दुरुव्वा स्त्री [**दूर्वा**] तृण-विशेष, दूब ; (स १२४ ; उप ३१८)।

दुरुह सक [**आ+रुह्**] आरूढ़ होना, चढ़ना। दुरुहइ ; (पि ११८ ; १३६)। वकृ—**दुरुहमाण**; (आचा २, ३, १)। संकृ—**दुरुहित्ता, दुरुहित्ताणं, दुरुहेत्ता**; (भग ; महा ; पि ५८३ ; ४८२)।

दुरूढ वि [**आरूढ**] अधिरूढ़, ऊपर चढ़ा हुआ ; (णाया १, १ ; २, १; औप)।

दुरूव वि [**दूरूप**] खराब रूप वाला, कुडौल ; (ठा ८ ; श्रा १६)।

दुरूह देखो **दुरुह**। संकृ—**दुरूहित्तु, दुरूहिया** ; (सुअ १, ५,२,१५), "जहा आसाविणिं नावं जाइअंधो दुरूहिया" (सुअ १, ११, ३०)।

दुरूहण न [**आरोहण**] अधिरोहण, ऊपर चढ़ बैठना ; (स ५१)।

दुरेह पुं [**द्विरेफ**] भ्रमर , भमरा ; (पाअ ; हे १, ६४)।

दुरोअर न [**दुरोदर**] जूआ, द्यूत ; (पाअ)।

दुलंघ देखो **दुल्लंघ** ; (भवि)।

दुलंभ देखो **दुल्लंभ** ; (भवि)।

दुलह वि [**दुर्लभ**] १ जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह ; (कुमा ; गउड ; प्रासू १३४)। २ पुं. एक वणिक्-पुत्र ; (सुपा ६१७)। देखो **दुल्लह** ।

दुलि पुंस्त्री [**दे**] कच्छप, कछुआ ; (दे ५, ४२ ; उप पृ १३५)।

दुल्ल न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ५, ४१)।

दुल्लंघ वि [**दुर्लङ्घ**] जिसका उल्लंघन कठिनाई से हो सके वह, अ-लंघनीय ; (पउम १२, ३८ ; ४१ ; हेका ३१ ; सुर २, ७८)।

दुल्लंभ वि [**दुर्लभ**] दुराप, दुष्प्राप्य ; (उप पृ १३६ ; सुपा १६३ ; सण)।

दुल्लक्ख वि [**दुर्लक्ष**] १ दुर्विज्ञेय, जो दुःख से जाना जा सके, अलक्ष्य ; (से ८, ५ ; स ६६ ; वज्जा १३६ ; श्रा २८)। २ जो कठिनाई से देखा जा सके ; (कप्पू)।

दुल्लग वि [**दे**] अ-घटमान, अ-युक्त ; (दे ५, ४३)।

दुल्लग्ग न [**दुर्लग्न**] दुष्ट लग्न, दुष्ट मुहूर्त ; (मुद्रा २१५)।

दुल्लब्भ, **दुल्लभ** देखो **दुल्लह** ; "किं दुल्लब्भं जणो गुणग्गाही" (गा ६७५ ; निचू ११)।

दुल्ललिअ वि [**दुर्ललित**] १ दुष्ट आदत वाला ; २ दुष्ट इच्छा वाला ; " विलसइ वेसाण गिहे विविहविलासेहिं दुल्ल-लिओ", "कीलइ दुल्ललियबालकीलाए" (सुपा ४८५ ; ३२८)। ३ व्यसनी, आदत वाला ;
"धन्ना सा पुन्नुक्करिसनिम्मिया तिहुयणेवि तुह जणणी।
जीइ पसूओ सि तुमं दीणुद्धरणिक्कदुल्ललिओ" (सुपा २१६)।
४ दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित ; (पाअ)। ५ न. दुराशा, दुर्लभ वस्तु की अभिलाषा ; (महानि ६)।

दुल्लसिआ स्त्री [**दे**] दासी, नौकरानी ; (दे ५, ४६)।

दुल्लह वि [**दुर्लभ**] १ दुराप, जिसकी प्राप्ति कठिनाई से हो वह ; (स्वप्न ४६ ; कुमा ; जी ५० ; प्रासू ११ ; ४६ ; ४७)। २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा ; (गु १०)। °**राय** पुं [°**राज**] वही अर्थ ; (सार्ध ६६; कुप्र ४)। °**लंभ** वि [°**लम्भ**] जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह ; (पउम ३५, ४७ ; सुर ४, २२६; वै ६८)।

दुवई स्त्री [**द्रुपदी**] छन्द-विशेष ; (स ७१)।

दुवण न [**द्रावन**] उपताप, पीड़न ; (पण्ह १, २)।

दुवण्ण, **दुवन्न** वि [**दुर्वर्ण**] खराब रूप वाला ; (भग; ठा ८)।

दुवय पुं [**द्रुपद**] एक राजा, द्रौपदी का पिता ; (णाया १, १६; उप ६४८ टी)। °**सुया** स्त्री [°**सुता**] पाण्डव-पत्नी, द्रौपदी ; (उप ६४८ टी)।

दुवयंगया स्त्री [**द्रुपदाङ्गजा**] राजा द्रुपद की लड़की, द्रौपदी, पाण्डवों की पत्नी ; (उप ६४८ टी)।

दुवयंगरुहा स्त्री [**द्रुपदाङ्गरुहा**] ऊपर देखो; (उप ६४८ टी)।

दुवयण न [**दुर्वचन**] खराब वचन, दुष्ट उक्ति; (पउम ३५, ११)।

दुवयण न [**द्विवचन**] दो का बोधक व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय, दो संख्या की वाचक विभक्ति ; (हे १, ९४; ठा ३, ४— पत्र १५८)।

दुवार, **दुवाराय** देखो **दुआर** ; (हे २, ११२ ; प्रति ४१ ; सुपा ४८७)। " एगदुवाराए " (कस)। °**पाल** पुं [°**पाल**] दरवान, प्रतीहार ; (सुर १, १३४ ; २, १४८)। °**वाहा** स्त्री [°**बाहा**] द्वार-भाग; (आचा २, १, ५)।

दुवारि वि [**द्वारिन्**] १ द्वार वाला। २ पुं. दरवान, प्रतीहार; " बहुपरिवारो पत्तो रायदुवारी तहिं वरुणो " (सुपा २६५)।

दुवारिअ वि [**द्वारिक**] दरवाजा वाला; " अवंगुयदुवारिए" (कस)।

दुवारिअ पुं [**दौवारिक**] दरवान, द्वारपाल; (हे १, १६०; संक्षि ६ ; सुपा २६०)।

दुवालस त्रि.ब. [**द्वादशन्**] बारह, १२; (कप्प ; कुमा)। °**मुहुत्तिअ** वि [°**मुहूर्तिक**] बारह मुहूर्तों का परिमाण वाला; (सम २२)। °**विह** वि [°**विध**] बारह प्रकार का ; (सम २१)। °**हा** अ [°**धा**] बारह प्रकार ; (सुर १४, ९१)। °**ावत्त** न [°**ावर्त**] बारह आवर्त वाला वन्दन, प्रणाम-विशेष ; (सम २१)।

दुवालसंग स्त्रीन [**द्वादशाङ्गी**] बारह जैन आगम-ग्रन्थ, आचारांग आदि बारह सूत्र-ग्रन्थ ; (सम १; हे १, २५४)। स्त्री—°**गी** ; (राज)।

दुवालसंगि वि [**द्वादशाङ्गिन्**] बारह अंग-ग्रन्थों का जान-कार; (कप्प)।

दुवालसम वि [**द्वादश**] १ बारहवाँ ; २ लगातार पाँच दिनों का उपवास ; (आचा ; णाया १, १; ठा ६; सण)। स्त्री—°**मी**; (णाया १, ६)।

दुविट्ठ } पुं [**द्विपृष्ठ, द्विविष्टप**] १ भरत-क्षेत्र में इस
दुविट्ठु } अवसर्पिणी काल में उत्पन्न द्वितीय अर्ध-चक्री राजा; (सम १५८ टी; पउम ५, १५५)। २ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न होने वाला आठवाँ अर्ध-चक्री राजा, एक वासुदेव; (सम १५४)।

दुविभज्ज वि [**दुर्विभज**] जिसका विभाग करना कठिन हो वह; (ठा ५, १—पत्र २६६)।

दुविभव्व देखो **दुव्विभव्व**; (ठा ५,१ टी)।

दुवियड्ढ वि [**दुर्विदग्ध**] दुःशिक्षित, जानकारी का झूठा अभिमान करने वाला; (उप ८३३ टी)।

दुवियप्प पुं [**दुर्विकल्प**] दुष्ट वितर्क; (भवि)।

दुविलय पुं [**दुविलक**] एक अनार्य देश; " दु (? दु) विलय-लउसबुक्कस—" (पव २७४)।

दुविह वि [**द्विविध**] दो प्रकार का; (हे १, ९४; नव ३)।

दुवीस स्त्रीन [**द्वाविंशति**] बाईस, २२; (नव २०; षड्)।

दुव्वण्ण } देखो **दुवण्ण**; (पउम ४१, १७; पण्ह १, ४)।
दुव्वन्न }

दुव्वय न [**दुर्व्रत**] १ दुष्ट नियम। २ वि. दुष्ट व्रत करने वाला; ३ व्रत-रहित, नियम-वर्जित; (ठा ४, ३; विपा १,१)।

दुव्वयण न [**दुर्वचन**] दुष्ट उक्ति, खराब वचन; (पउम ३३, १०६; विसे ५२०; उव; गा २९०)।

दुव्वल देखो **दुब्बल**; (महा)।

दुव्वसण न [**दुर्व्यसन**] खराब आदत, बुरी आदत; (सुपा १८४; ४८९; भवि)।

दुव्वसु वि [**दुर्वसु**] अभव्य, खराब द्रव्य; (आचा)। °**मुणि** पुं [°**मुनि**] मुक्ति के लिए अयोग्य साधु; (आचा)।

दुव्वह वि [**दुर्वह**] दुर्धर, जिसका वहन कठिनाई से हो सके वह; (स १६२; सुर १, १४)।

दुव्वा देखो **दुरुव्वा**; (कुमा; सुर १, १३८)।

दुव्वाइ वि [**दुर्वादिन्**] अप्रिय-वक्ता; (दसनि २)।

दुव्वाय पुं [**दुर्वाक्**] दुर्वचन, दुष्ट उक्ति; "वयणेणवि दुव्वाआ न य कायव्वा परस्स पीडयरा" (पउम १०३, १४३)।

दुव्वाय पुं [**दुर्वात**] दुष्ट पवन; (णमि ४)।

दुव्वार वि [**दुर्वार**] दुःख से रोकने योग्य, अवार्य; (से १२, ६३; उप ६८६ टी; सुपा १६७; ४७१; अभि ११६)।

दुव्वारिअ देखो **दुवारिअ**=दौवारिक; (प्राप्र)।

दुव्वाली स्त्री [**दे**] वृक्ष-पंक्ति; (पाअ)।

दुव्वास पुं [**दुर्वासस्**] एक ऋषि; (अभि ११८)।

दुव्विअड वि [**दुर्विवृत**] परिधान-वर्जित, नग्न; (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुव्विअड्ढ } वि [**दुर्विदग्ध**] ज्ञान का झूठा अभिमान करने
दुव्विअद्ध } वाला, दुःशिक्षित; (पाअ; गा ६५)।

दुव्विजाणय वि [**दुर्विज्ञेय**] दुःख से जानने को योग्य; जानने को अशक्य; "अकुसलपरिणाममंदबुद्धिजणदुव्विजाणए" (पण्ह १, १)।

दुव्विढप्प वि [**दुरर्ज**] दुःख से अर्जन करने योग्य, कठिनाई से कमाने योग्य; (कुप्र २३८)।

दुव्विणीअ वि [**दुर्विनीत**] अविनीत, उद्धत; (पउम ६६, ३५; काल)।

दुव्विण्णाय वि [**दुर्विज्ञात**] असत्य रीति से जाना हुआ; (आचा)।

दुव्विभज देखो **दुविभज्ज**; (राज)।

दुव्विभव्व वि [**दुर्विभाव्य**] दुर्लक्ष्य, दुःख से जिसकी आलोचना हो सके वह; (ठा ५, १ टी—पत्र २९६)।

दुव्विभाव वि [**दुर्विभाव**] ऊपर देखो; (विसे)।

दुव्विलसिय न [**दुर्विलसित**] १ स्वच्छन्दी विलास; २ निकृष्ट कार्य्य, जघन्य काम; (उप १३९ टी)।

दुव्विसह वि [**दुर्विषह**] अत्यन्त दुःसह, असह्य; (गा १४८; सुर ३, १४४; १४, २१०)।

दुव्विसोज्झ वि [**दुर्विशोध्य**] शुद्ध करने को अशक्य; (पंचा १९)।

दुव्विहिय वि [**दुर्विहित**] १ खराब रीति से किया हुआ; "दुव्विहियविलासियं विहिणा" (सुर ४, १५; ११, १४३)। २ अ-सुविहित, अ-यशस्वी; (आव ३)।

दुव्वोज्झ वि [**दुर्वाह्य**] दुर्वह, दुःख से ढ़ोने योग्य; (से ३, ५; ४, ४४; १३, ६३; वज्जा ३८)।

दुव्वोज्झ वि [**दे**] दुर्घात्य, दुःख से मारने योग्य; (से ३, ५)।

दुसंकड न [**दुःसंकट**] विषम विपत्ति; (भवि)।

दुसंचर देखो **दुस्संचर**; (भवि)।

दुसन्नप्प वि [**दुःसंज्ञाप्य**] दुर्बोध्य; (ठा ३, ४—पत्र १६५)।

दुसमदुसमा देखो **दुस्समदुस्समा**; (भग ६, ७)।

दुसमसुसमा देखो **दुस्समसुसमा**; (ठा १)।

दुसमा देखो **दुस्समा**; (भग ६, ७; भवि)।

दुसह देखो **दुस्सह**; (हे १, ११५ ; सुर १२, १३७ ; १३६)।

दुसाह वि [**दुःसाध**] दुःसाध्य, कष्ट-साध्य ; (पउम ८६, २२)।

दुसिक्खिअ वि [**दुःशिक्षित**] दुर्विदग्ध ; (पउम २५, २१)।

दुसुमिण देखो **दुस्सुमिण**; (पडि)।

दुसुरुल्लय न [**दे**] गले का आभूषण-विशेष; (स ७६)।

दुस्स सक [**द्विष्**] द्वेष करना। वकृ—**दुस्समाण**; (सूअ १, १२, २२)।

दुस्सउण न [**दुःशकुन**] अपशकुन ; (णमि २०)।

दुस्संचर वि [**दुस्संचर**] जहाँ दुःख से जाया जा सके, दुर्गम; (स २३१ ; संक्षि १७)।

दुस्संचार वि [**दुस्संचार**] ऊपर देखो; (सुर १, ६६)।

दुस्संत पुं [**दुष्यन्त**] चन्द्रवंशीय एक राजा, शकुन्तला का पति ; (पि ३२६)।

दुस्संबोह वि [**दुस्संबोध**] दुर्बोध्य; (आचा)।

दुस्सज्झ वि [**दुस्साध्य**] दुष्कर ; (सुपा ८ ; ५६६)।

दुस्सण्णप्प देखो **दुसन्नप्प** ; (बृह ४)।

दुस्सत्त वि [**दुःसत्त्व**] दुरात्मा, दुष्ट जीव ;(पउम ८७, ६)।

दुस्सन्नप्प देखो **दुसन्नप्प** ; (कस)।

दुस्समदुस्समा स्त्री [**दुष्षमदुष्षमा**] काल-विशेष, सर्वाधम काल , अवसर्पिणी काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी काल का पहला आरा, इसमें सब पदार्थों के गुणों की सर्वोत्कृष्ट हानि हाती है, इसका परिमाण एक्कीस हजार वर्षो का है; (ठा १; ६; इक)।

दुस्समसुसमा स्त्री [**दुष्षमसुषमा**] बेयालीस हजार कम एक कोटाकोटि सागरोपम का परिमाण वाला काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का चतुर्थ और उत्सर्पिणी काल का तीसरा आरा ; (कप्प ; इक)।

दुस्समा स्त्री [**दुष्षमा**] १ दुष्ट काल । २ एक्कीस हजार वर्षों के परिमाण बाला काल-विशेष, अवसर्पिणी-काल का पाँचवाँ और उत्सर्पिणी काल का दूसरा आरा; (उप६४८; इक)।

दुस्समाण देखो **दुस्स**।

दुस्सर पुं [**दुःस्वर**] १ खराब आवाज, कुत्सित कण्ठ ; २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्वर कर्ण-कटु होता है ; (कम्म १, २७; नव १५) । °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] दुःस्वर का कारण-भूत कर्म ; (पंच ; सम ६७)।

दुस्सल वि [**दुःशल**] दुर्विनीत, अविनीत ; (बृह १)।

दुस्सह वि [**दुस्सह**] जा दुःख से सहन हो सके, असह्य ; (स्वप्न ७३ ;हे १, १३; ११५ ; षड्)।

दुस्सहिय वि [**दुस्सोढ**] दुःख से सहन किया हुआ ;(सुअ १,३, १)।

दुस्सासण पुं [**दुःशासन**] दुर्योधन का एक छोटा भाई, कौरव-विशेष ; (चारु १२; वेणी १०७)।

दुस्साहड वि [**दुस्संहृत**] दुःख से एकत्रित किया हुआ ; "दुस्साहडं धणं हिच्चा बहु संचिणिया रयं" (उत्त ७, ८)।

दुस्साहिअ वि [**दौःसाधिक**] दुःसाध्य कार्य को करने वाला ; (पि ८४)।

दुस्सिक्ख वि [**दुःशिक्ष**] दुष्ट शिक्षा वाला, दुःशिक्षित, दुर्विदग्ध; (उप १४६ टी ; कुप्र २८३)।

दुस्सिक्खिअ वि [**दुःशिक्षित**] ऊपर देखो; (गा ६०३)।

दुस्सिज्जा स्त्री [**दुःशय्या**] खराब शय्या ; (दस ८)।

दुस्सिलिट्ठ वि [**दुःश्लिष्ट**] कुत्सित श्लेष वाला; (पि १३६)।

दुस्सील वि [**दुःशील**] १ दुष्ट स्वभाव वाला ; २ व्यभिचारी ; (पण्ह १, १ ; सुपा ११०)। स्त्री—°**ला** ; (पाअ)।

दुस्सुमिण पुंन [**दुःस्वप्न**] दुष्ट स्वप्न, खराब स्वप्न ; (पण्ह १, २)।

दुस्सुय न [**दुःश्रुत**] १ दुष्ट शास्त्र। २ वि. श्रुति-कटु ; (पण्ह १, २)।

दुस्सेज्जा देखो **दुस्सिज्जा** ; (उव)।

दुह सक [**दुह्**] दूहना, दूध निकालना। दुहेज्जह ; (महा)। कर्म—दुहिज्जइ, दुब्भइ; (हे ४, २४५) ; भवि—दुहिहिइ, दुब्भिहिइ; (हे ४, २४५)।

दुह देखो **दोह**=दोह ; (राज)।

दुह देखो **दुक्ख**=दुःख ; (हे २, ७२ ; प्रासू २६ ; २८ ; १६२)। °**अ** वि [°**द**] दुःख देने वाला, दुःख-जनक ; (सुपा ४३४)। °**ट्ट** वि [°**ार्त**] दुःख से पीड़ित ; (विपा १, १ ; सुपा ३३८)। °**ट्टिय** वि [°**ार्तित**] दुःख से पीड़ित ; (औप)। °**ट्ठ** पुं [°**ार्थ**] नरक-स्थान ; (सुअ १, ५, १)। °**त्त** देखो °**ट्ट**; (उप पृ ७६ ; ७२८ टी)। °**फास** पुं [°**स्पर्श**] दुःख-जनक स्पर्श; (णाया १, १२)। °**भागि** वि [°**भागिन्**] दुःख में भागीदार; (सुपा ४३१)।

°मच्चु पुं [°मृत्यु] अपमृत्यु, अकाल मौत; (सुर ८, ५३)। °विवाग पुं [°विपाक] दुःख रूप कर्म-फल ; (विपा १, १)। °सिज्जा, °सेज्जा स्त्री [°शय्या] दुःख-जनक शय्या ; (ठा ४, ३)। °वह वि [°वह] दुःख-जनक ; (पउम ८२, ६१ ; सुर ८, १६२ ; प्रासू १६६)।

दुह° देखो **दुहा**; (भग ८, ८)।

दुहअ वि [दे] चूर्णित, चूर चूर किया हुआ ; (दे ५, ४५)।

दुहअ वि [**दुर्हत**] खराब रीति से मारा हुआ; (आचा)।

दुहअ वि [**द्विहत**] दो से मारा हुआ ; (आचा)।

दुहअ देखो **दुब्भग** ; (षड्)।

दुहओ अ [**द्विधातस्**] दोनों तरफ से, उभय प्रकार से ; (आचा ; ठा ५, ३ ; कस; भग; पुप्फ ४७० ; श्रा २७)।

दुहंड वि [**द्विखण्ड**] दो टूकड़े वाला ; "किच्चेव बिंबं (? णो) दुहंडं" (रंभा)।

दुहग देखो **दुब्भग** ; (कम्म ३, ३)।

दुहट्ट वि [**दुर्घट्ट**] दुर्निरोध, दुर्वार ; (गाथा १, ८)।

दुहण देखो **दुघण**; (पगह १, १—पत्र १८)।

दुहण पुं [**द्रुहण**] प्रहरण विशेष, "चम्मेट्ठदुघणमोट्ठियमोग्गरवर-फलिहजंतपत्थरदुहणतोणकुवेणी—" (पगह १, ३—पत्र ४४

दुहण न [**दोहन**] दोह, दोहना; (पगह १, २)।

दुहव देखो **दूहव** ; (पि ३४० ; हे १, ११५ टी)। स्त्री— °वी ; (पि २३१)।

दुहा अ [**द्विधा**] दो प्रकार, दो तरफ, उभयथा ; (जी ८ ; प्रासू १४४)। °इअ वि [°कृत] जिसके दो खण्ड किये गये हों वह ; (प्राप्र ; कुमा)।

दुहाकर सक [**द्विधा+कृ**] दो खण्ड करना। कर्म— दुहाइज्जइ, दुहाकिज्जइ ; (प्राप्र ; हे १, ६७)। वकृ— °कज्जमाण, °किज्जमाण ; (पि ५४७ ; ४३६)। संकृ— °काउं ; (महा)।

दुहाव सक [**छिद्**] छेदना, छेदा करना, खण्डित करना। दुहावइ ; (हे ४, १२४)।

दुहाव सक [**दुःखय्**] दुःखी करना, दुभाना ; (प्रामा)।

दुहावण वि [**दुःखन**] दुःखी करने वाला ; (सण)।

दुहाविअ वि [**छिन्न**] खण्डित ; (पाअ ; कुमा)।

दुहाविअ वि [**दुःखित**] दुःखी किया हुआ ; (गउड)।

दुहि वि [**दुःखिन्**] दुःखी, व्यथित, पीड़ित ; (उप ६८६ टी)। स्त्री— °णी ; (कुमा)।

दुहिअ वि [**दुःखित**] पीड़ित, दुःख-युक्त ; (हे २, १६४; कुमा ; महा)।

दुहिअ वि [**दुग्ध**] जिसका दोहन किया गया हो वह ; (दे १, ७)। °दुज्झ वि [°दोह्य] एक वार दोहने पर फिर भी दोहने योग्य ; फिर फिर दोहने योग्य ; (दे १, ७ ; ५, ४६)।

दुहिआ स्त्री [**दुहितृ**] लड़की, पुत्री ; (सुपा १७६ ; हे ३, ३५)। °दइअ पुं [°दयित] जामाता ; (सुपा ४५७)

दुहिण पुं [**द्रुहिण**] ब्रह्मा, चतुर्मुख ; "अवि दुहिणप्पमुहेहिं आणाती तुह अलंघणिज्जपहावा" (अच्चु १६)।

दुहित्त पुं [**दौहित्र**] लड़की का लड़का; (उप पृ ७४)।

दुहित्तिया स्त्री [**दौहित्रिका**] लड़की की लड़की ; (उप पृ ७४)।

दुहिल वि [**द्रुहिल**] द्रोही, द्रोह करने वाला ; (विसे ६६६ टी)।

दू सक [**दू**] १ उपताप करना। २ काटना। कर्म— "दुज्जंतु उच्छू" (पगह १,२)।

दूअ पुं [**दूत**] दूत, संदेश-हारक ; (पाअ ; पउम ५३, ४३; ४६)।

दूआ देखो **धूआ** ; (षड्)।

दूइ° देखो **दूई**। °पलासय न [°पलाशक] एक चैत्य ; (उवा)।

दूइज्ज सक [**द्रु**] गमन करना, विहरना, जाना। दूइज्जइ ; (आचा)। वकृ—**दूइज्जंत, दूइज्जमाण** ; (औप ; गाया १, १; भग ; आचा; महा)। हेकृ— **दूइज्जित्तए**; (कस)।

दूइत्त न [**दूतीत्व**] दूती का कार्य, दूतीपन ; (पउम ५३, ४५)।

दूई स्त्री [**दूती**] १ दूत के काम में नियुक्त की हुई स्त्री, समाचार-हारिणी, कुटनी ; (हे४, ३६७)। २ जैन साधुओं के लिये भिक्षा का एक दोष ; (ठा ३, ४—पत्र १६६)। °पिंड पुं [°पिण्ड] समाचार पहुँचाने से मिली हुई भिक्षा ; (आचा २, १, ६)। देखो **दूइ°**।

दूण वि [**दून**] हैरान किया हुआ; "हा पियवयंस दूढो (? णो) मए तुमं" (स ७६३)।

दूण पुं [**दे**] हस्ती, हाथी ; (दे ५, ४४ ; षड्)।
दूण (अप) देखो **दुउण** ; (पिंग)।
दूणावेढ वि [**दे**] १ अशक्य ; २ तड़ाग, तलाव ; (दे ५, ५६)।
दूभ अक [**दुःखय्**] दूभना, दुःखित होना। "तम्हा पुत्तोवि दूभिज्जा पहसिज्ज व दुज्जणो" (श्रा १२)।
दूभग देखो **दुब्भग** ; (णाया १, १६—पत्र १६६)।
दूभग्ग न [**दौर्भाग्य**] दुष्ट भाग्य, खराब नसीब ; (उप पृ ३१)।
दूम सक [**दू , दावय्**] परिताप करना, संताप करना। दूमइ, दूमेइ ; (सुपा ८ ; प्राप्र; हे ४, २३)। कर्म—दूमिज्जइ ; (भवि)। वकृ—**दूमेंत**; (से१०, ६३)। कवकृ—**दूमिज्जंत** ; (सुपा २६६)।
दूम देखो **दुम**=धवलय् ; (हे ४, २४)।
दूमक } **दूमग** } वि [**दावक**] उपताप-जनक, पीड़ा-जनक ; (पण्ह १, ३ ; राज)।
दूमण न [**दवन, दावन**] परिताप, पीड़न; (पण्ह१, १)।
दूमण न [**धवलन**] सफेद करना ; (वव ४)।
दूमण देखो **दुम्मण**=दुर्मनस् ; (सूत्र १, २, २)।
दूमणाइअ वि [**दुर्मनायित**] जो उदास हुआ हो, उद्विग्न-मनस्क ; (नाट—मालती ६६)।
दूमिअ वि [**दून, दावित**] संतापित, पीड़ित; (सुपा १० ; १३३ ; २३०)।
दूमिअ वि [**धवलित**] सफेद किया हुआ ; (हे ४, २४ ; कप्प)।
दूयाकार न [**दे**] कला विशेष ; (स ६०३)।
दूर न [**दूर**] १ अ-निकट, अ-समीप; "रुसेव जस्स कित्ती गया दूरं" (कुमा)। २ अतिशय, अत्यन्त ; "दूरमहरं डसंते" (कुमा)। ३ वि. दूर-स्थित, असमीप-वर्ती; (सूत्र१, २, २)। ४ व्यवहित, अन्तरित; (गउड)। °**ग** वि [°**ग**] दूर-वर्ती, अ-समीपस्थ; (उप ६४८ टी; कुमा)। °**गइ, °गइअ** वि [°**गतिक**] १ दूर जाने वाला ; २ सौधर्म आदि देवलोक में उत्पन्न होने वाला ; (ठा ८)। °**तराग** वि [°**तर**] अत्यन्त दूर ; (पण्ण १७)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] दूर-स्थित, दूरवर्ती ; (कुमा)। °**भविय** पुं [°**भव्य**] दीर्घ काल में मुक्ति को प्राप्त करने की योग्यता वाला जीव ; (उप ७२८ टी)। °**य** देखो °**ग**; (सूत्र १, ५, १)। °**वत्ति** वि [°**वर्तिन्**] दूर में रहने वाला; (पि ६४)। °**लइय** वि [°**लयिक**] मुक्ति-गामी; (आचा)। °**लय** पुं [°**लय**] १ दूर-स्थित आश्रय; २ मोक्ष; ३ मुक्ति का मार्ग; (आचा)।
दूरंगइअ देखो **दूर-गइअ** ; (औप)।
दूरंतरिअ वि [**दूरान्तरित**] अत्यन्त-व्यवहित; (गा६५८)।
दूराय सक [**दूराय्**] दूर-स्थित की तरह मालूम होना, दूरवर्ती मालूम पड़ना। वकृ—**दूरायमाण** ; (गउड)।
दूरीकय वि [**दूरीकृत**] दूर किया हुआ; (श्रा २८]
दूरीहूअ वि [**दूरीभूत**] जो दूर हुआ हो; (सुपा १५८)।
दूरुल्ल वि [**दूरवत्**] दूर-स्थित, दूर-वर्ती; (आव ४)।
दूलह देखो **दुल्लह** ; (संक्षि १७)।
दूस अक [**दुष्**] दूषित होना, विकृत होना। दूसइ; (हे ४, २३५; संक्षि ३६)।
दूस सक [**दूषय्**] दोषित करना, दूषण लगाना। दूसइ; (भवि), दूसेइ ; (बृह ४)।
दूस न [**दूष्य**] १ वस्त्र, कपड़ा; (सम १५१ ; कप्प)। २ तंबू, पट-कुटी; (दे५, २८)। °**गणि** पुं [°**गणिन्**] एक जैन आचार्य ; (णंदि)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] मौर्यवंश के नाश होने पर पाटलिपुत्र में अभिषिक्त एक राजा; (राज)। °**हर** न [°**गृह**] तंबू, पट-कुटी; (स २६७)।
दूसअ वि [**दूषक**] दोष प्रकट करने वाला; (वज्जा ६८)।
दूसग वि [**दूषक**] दूषित करने वाला; (सुपा२७५; सं१२४)।
दूसण न [**दूषण**] १ दोष, अपराध; २ कलङ्क, दाग; (तंदु)। ३ पुं. रावण की मौसी का लड़का ; (पउम१६, २५)। ४ वि. दूषित करने वाला ; (स ५२८)।
दूसम वि [**दुःषम**] १ खराब, दुष्ट; २ पुं. काल-विशेष, पाँचवाँ आरा ; "दूसमे काले" (सट्ठि १५६)। °**दूसमा** देखो **दुस्समदुस्समा** ; (सम ३६ ; ठा १ ; ६)। °**सुसमा** देखो **दुस्समसुसमा** ; (ठा २, ३ ; सम ६४)।
दूसमा देखो **दुस्समा** ; (सम३६ ; उप८३३टी ; सं३४)।
दूसर देखो **दुस्सर** ; (राज)।
दूसल वि [**दे**] दुर्भग, अभागा; (दे ५, ४३; षड्)।
दूसह देखो **दुस्सह** ; (हे १, १३ ; ११५)।
दूसहणीअ वि [**दुस्सहनीय**] दुःसह, असह्य ; (पि५७१)।
दूसासण देखो **दुस्सासण** ; (हे १, ४३)।
दूसि पुं [**दूषिन्**] नपुंसक का एक भेद; "दोसुवि वेएसु सज्जए दूसी" (बृह ४)।

दूसिअ वि [**दूषित**] १ दूषण-युक्त, कलङ्क-युक्त; (महा; भवि)। २ पुं. एक प्रकार का नपुंसक ; (बृह ४)।
दूसिआ स्त्री [**दूषिका**] आँख का मैल ; (कुमा)।
दूसुमिण देखो **दुस्सुमिण** ; (कुमा)।
दूहअ वि [**दुःखक**] दुःख-जनक ; "असईणं दूहओ चंदो" (वज्जा ६८)।
दूहट्ट वि [**दे**] लज्जा से उद्विग्न ; (दे ५, ४८)।
दूहल वि [**दे**] दुर्भग, मन्द-भाग्य ; (दे ५, ४३)।
दूहव देखो **दुब्भग** ; (हे १, ११५ ; १९२; कुमा ; सुपा ५६७ ; भवि)।
दूहविअ वि [**दुःखित**] दुःखी किया हुआ, दूभाया हुआ ; "किं केणवि दूहविया" (कुम्मा १२)।
दूहिअ वि [**दुःखित**] दुःख-युक्त ; (हे १, १३ ; संक्षि १७)।
दे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय ; १ संमुख-करण ; २ सखी को आमन्त्रण ; (हे २, १९२)।
देअ देखो **देव** ; (मुद्रा १९१; चंड)।
देअर देखो **दिअर** ; (कुमा ; काप्र २२४ ; महा)।
देअराणी स्त्री [**देवरपत्नी**] देवरानी, पति के छोटे भाई की वहू ; (दे १, ५१)।
देई देखो **देवी** ; (नाट—उत्त १८)।
देउल न [**देवकुल**] देव-मन्दिर ; (हे १, २७१ ; कुमा)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] मन्दिर का स्वामी ; (षड्)। °**वाडय** पुंन [°**पाटक**) मेवाड़ का एक गाँव ; "देउलवाडयपत्तं तुट्ठणसीलं च अइमहग्घं" (वज्जा ११६)।
देउलिअ वि [**देवकुलिक**] देव स्थान का परिपालक ; (ओघ ४० भा)।
देउलिआ स्त्री [**देवकुलिका**] छोटा देव-स्थान ; (उप पृ ३९९ ; ३२० टी)।
देंत देखो **दा**=दा।
देक्ख सक [**दृश्**] देखना, अवलोकन करना। देक्खइ ; (हे ४, १८१)। वकृ—**देक्खंत** ; (अभि १४१)। संकृ—**देक्खिअ** ; (अभि १९९)।
देक्खालिअ वि [**दर्शित**] दिखाया हुआ, बतलाया हुआ ; (सुर १, १५२)।
देख (अप) देखो **देक्ख**। देखइ ; (भवि)।
देट्ठ देखो **दिट्ठ**=दृष्ट ; (प्रति ४०)।
देण्ण देखो **दइण्ण** ; (गाया १, १—पत्र ३३)।
देपाल पुं [**देवपाल**] एक मंत्री का नाम ; (ती २)।
देप्प देखो **दिप्प**=दीप्। वकृ—**देप्पमाण**; (कुप्र ३४४)।
देय } देखो **दा**=दा।
देयमाण }
देर देखो **दार**=द्वार ; (हे १, ७९ ; २, १७२ ; दे ६, ११०)।
देव उभ [**दिव्**] १ जीतने की इच्छा करना। २ पण करना। ३ व्यवहार करना। ४ चाहना। ५ आज्ञा करना। ६ अव्यक्त शब्द करना। ७ हिंसा करना। देवइ ; (संक्षि ३३)।
देव पुंन [**देव**] १ अमर, सुर, देवता; "देवाणि, देवा" (हे १, ३४ ; जी १९ ; प्रासू ८६)। २ मेघ ; ३ आकाश; ४ राजा, नरपति ; "तहेव मेहं व नहं व माणवं न देव देवत्ति गिरं वएजा" (दस ७, ५२ ; भास ९६)। ५ पुं. परमेश्वर, देवाधिदेव ; (भग १२, ९ ; दंस ५ ; सुपा १३)। ६ साधु, मुनि, ऋषि ; (भग १२, ९)। ७ द्वीप-विशेष ; ८ समुद्र-विशेष ; (पण्ण १५)। ९ स्वामी, नायक ; (आचू ५)। १० पूज्य, पूजनीय ; (पंचा १)। °**उत्त** वि [°**उप्त**] देव से बोया हुआ ; २ देव-कृत ; "देवउत्ते अयं लोए" (सूअ १, १, ३)। °**उत्त** वि [°**गुप्त**] १ देव से रक्षित; (सूअ १, १, ३)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव ; (स १५४)। °**उत्त** पुं [°**पुत्र**] देव-पुत्र ; (सूअ १, १, ३)। °**उल** न [°**कुल**] देव-गृह, देव-मन्दिर ; (हे १, २७१; सुपा २०१)। °**उलिया** स्त्री [°**कुलिका**] देहरी, छोटा देव-मन्दिर ; (कुप्र १४४)। °**कन्ना** स्त्री [°**कन्या**] देव-पुत्री; (णाया १,८)। °**कहक-हय** पुं [°**कहकहक**] देवताओं का कोलाहल; (जीव ३)। °**किब्बिस** पुं [°**किल्बिष**] चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति ; (ठा ४, ४)। °**किब्बिसिय** पुं [°**किल्बिषिक**] एक अधम देव-जाति ; (भग ९, ३३)। °**किब्बिसीया** स्त्री [°**किल्बिषीया**] देखो **देवकिब्बिसिया** ; (बृह १)। °**कुरा** स्त्री [°**कुरा**] क्षेत्र-विशेष, वर्ष-विशेष ; (इक)। °**कुरु** पुं [°**कुरु**] वही अर्थ ; (पण्ह १, ४ ; सम ७० ; इक)। °**कुल** देखो °**उल** ; (पि १६८ ; कप्प)। °**कुलिय** पुं [°**कुलिक**] पूजारी ; (आवम)। °**कुलिया** देखो °**उलिआ** ; (कुप्र १४४)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] देव-योनि ; (ठा ५, ३)। °**गणिया** स्त्री [°**गणिका**] देव-वेश्या, अप्सरा ; (णाया १, १६)। °**गिह** न [°**गृह**]

देव-मन्दिर ; (सुपा १३ ; ३४८) । °गुत्त पुं [°गुप्त] १ एक परिव्राजक का नाम ; (औप) । २ एक भावी जिनदेव ; (तित्थ) । °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम ; (सुपा ६३२) । २ सुप्रसिद्ध श्री हेमचन्द्राचार्य के गुरू का नाम ; (कुप्र १६) । °च्चय वि [°र्चक] १ देव की पूजा करने वाला; २ पुं. मन्दिर का पूजारो ; (कुप्र ४४१ ; तो १५) । °च्छंदग न [°च्छन्दक] जिनदेव का आसन ; (जीव ३ ; राय) । °जस पुं [°यशस्] एक जैन मुनि ; (अंत ३ ; सुपा ३४२) । °जाण न [°यान] देव का वाहन ; (पंचा २) । °जिण पुं [°जिन] एक भावी जिनदेव का नाम ; (पव ७) । °ड्ढि देखो देविड्ढि ; (ठा ३, ३ ; राज) । °णाअअ पुं [°नायक] वही अर्थ ; (अच्चु ३७) । °णाह पुं [°नाथ] १ इन्द्र । २ परमेश्वर, परमात्मा ; (अच्चु ६७) । °तम न [°तमस्] एक प्रकार का अन्धकार ; (ठा ४, २) । °त्थुइ, °थुइ स्त्री [°स्तुति] देव का गुणानुवाद; (प्राप्र) । °दत्त पुं [°दत्त] व्यक्ति-वाचक नाम ; (उत्त ६ ; पिंड ; पि ५६६) । °दत्ता स्त्री [°दत्ता] व्यक्ति-वाचक नाम ; (विपा १,१; ठा १०) । °दव्व न [°द्रव्य] देव-संबन्धो द्रव्य ; (कम्म १, ५६) । °दार न [°द्वार] देव-गृह विशेष का पूर्वीय द्वार, सिद्धायतन का एक द्वार ; (ठा ४, २) । °दारु पुं [°दारु] वृक्ष-विशेष, देवदार का पेड़ ; (पउम ५३, ७६) । °दाली स्त्री [°दाली] वनस्पति-विशेष, रोहिणी ; (पण्ण १७—पत्र ५३०) । °दिण्ण, °दिन्न पुं [°दत्त] व्यक्ति-वाचक नाम, एक सार्थवाह-पुत्र; (राज; णाया १,२ — पत्र ८३) । °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष ; (जीव ३) । °दूस न [°दूष्य] देवता का वस्त्र, दिव्य वस्त्र ; (जीव ३) । °देव पुं [°देव] १ परमेश्वर, परमात्मा ; (सुपा ५००) । २ इन्द्र, देवों का स्वामी ; (आचू ५) । °नट्टिआ स्त्री [°नर्तिका] नाचने वाली देवी, देव-नटी ; (अजि ३१) । °नयरी स्त्री [°नगरी] अमरावती, स्वर्ग-पुरी; (पउम ३२,३५) । °पडिक्खोभ पुं [°प्रतिक्षोभ] तमस्काय , अन्धकार ; (भग ६, ५) । °पलिक्खोभ देखो °पडिक्खोभ; (भग ६,५) । °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष; (ठा २,३—पत्र ८०) । °प्पसाय पुं [°प्रसाद] राजा कुमारपाल के पितामह का नाम; (कुप्र ५) । °फलिह पुं [°परिघ] तमस्काय, अन्धकार ; (भग ६, ५) । °भद्द पुं [°भद्र] १ देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (सार्ध ८३) । °भूमि स्त्री [°भूमि] १ स्वर्ग, देवलोक ; २ मरण; मृत्यु ; " अह अन्नया य सिद्धो थिरदेवा देवभूमिमणुपत्ता " (सुपा ५८२)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव; (जीव ३) । °महावर पुं [°महावर] देव-नामक समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष ; (जोव ३ ; इक) । °रइ पुं [°रति] एक राजा ; (भत्त १२२) । °रक्ख पुं [°रक्ष] राक्षस-वंशीय एक राज-कुमार; (पउम ५, १६६) । °रण्ण न [°अरण्य]तमःकाय, अन्धकार; (ठा ४,२)। °रमण न [°रमण] १ सौभाञ्जनी नगरी का एक उद्यान; (विपा १, ४) । २ रावण का एक उद्यान; (पउम ४६,१५) । °राय पुं [°राज] इन्द्र ; (पउम २, ३८; ४६, ३६) । °रिसि पुं [°ऋषि] नारद मुनि ; (पउम ११, ६८ ; ७८, १०) । °लोअ, °लोग पुं [°लोक] १ स्वर्ग; (भग ; णाया १, ४ ; सुपा ६१५ ; श्रा १६) । २ देव-जाति ; "कइविहा णं भंते देवलोगा पण्णत्ता ? गोयमा चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया" (भग ५, ६) । °लोगगमण न [°लोकगमन] स्वर्ग में उत्पत्ति; " पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाया पुणो बोहिलाभा " (सम १४२) । °वर पुं [°वर] देव-नामक समुद्र का अधिष्ठायक एक देव ; (जीव ३) । °वहू स्त्री [°वधू] देवाङ्गना, देवी ; (अजि ३०) । °संणत्ति स्त्री [°संज्ञप्ति] १ देव-कृत प्रतिबोध; २ देवता के प्रतिबोध से ली हुई दीक्षा; (ठा १०—पत्र ४७३) । °संणिवाय पुं [°सन्निपात] १ देव-समागम ; (ठा ३, १) । २ देव-समूह ; ३ देवों की भीड़ ; (राय) । °सम्म पुं [°शर्मन्] १ इस नाम का एक ब्राह्मण ; (महा) । २ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव; (सम १५३) । °साल न [°शाल] एक नगर का नाम; (उप ७६८ टी) । °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] देवाङ्गना, देवी ; (अजि २८) । °सुय देखो °स्सुय ; (पव ७) । °सेण पुं [°सेन] १ शतद्वार नगर का एक राजा जिसका दूसरा नाम महापद्म था ; (ठा ६—पत्र ४५६) । २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव ; (पव ७) । ३ भरत-क्षेत्र के एक भावी जिनदेव के पूर्वभव का नाम ; (ती १६) । ४ भगवान् नेमिनाथ का एक शिष्य, एक अन्तकृद् मुनि;(अंत)। °स्स न [°स्व]देव-द्रव्य,जिनमन्दिर-संबन्धी धन ; (पंचा ५) । °स्सुय पुं [°श्रुत] भरतक्षेत्र

के छउवें भावी जिन-देव ; (सम १५३)। °हर न [°गृह] देव-मन्दिर ; (उप ४११)। °इदेव पुं [°तिदेव] अर्हन् देव, जिन भगवान् ; (भग १२, ६)। °णंद पुं [°नन्द] ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न होने वाले चौबीसवें जिनदेव ; (सम १५४)। °णंदा स्त्री [°नन्दा] १ भगवान् महावीर की प्रथम माता ; (आचा २, १५, १)। २ पक्ष की पनरहवीं रात्रि का नाम ; (कप्प)। °णुप्पिय पुं [°नुप्रिय] भद्र, महाशय, महानुभाव, सरल-प्रकृति; (औप; विपा १,१; महा)। °यरिअ पुं [°चार्य] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य; (गु ७)। °रण्ण देखो °रण्ण ; (भग ६, ५)। २ देवों का क्रीड़ा-स्थान ; (जो ६)। °लय पुंन [°लय] स्वर्ग; (उप २६४ टी)। °हिदेव पुं [°धिदेव] परमेश्वर, परमात्मा, जिनदेव ; (सम ४३ ; स ५)। °हिवइ पुं [°धिपति] इन्द्र, देव-नायक ;(सूअ १, ६)।

देव देखो **दइव** ; (उप ३५६ टी ; महा; हे १, १५३ टि)। °ण्णु वि [°ज्ञ] जोतिष-शास्त्र का जानकार; (सुपा २०१)। °पर वि [°पर] भाग्य पर ही श्रद्धा रखने वाला ; (षड्)। °वई स्त्री [°वकी] श्रीकृष्ण की माता, आगामी उत्सर्पिणी काल में होने वाले एक तीर्थंकर-देव का पूर्व भव ; (पउम २० १८५ ; सम १५२ ; १५४)। देखो **देवकी**।

देवउप्फ न [दे] पक्व पुष्प, पका हुआ फूल ; (दे ५, ४६)।

देवं देखो **दा**=दा।

देवंग न [दे. दिव्याङ्ग] देवदूष्य वस्त्र ; (उप ७३८)। °धगार पुं [देवान्धकार] तिमिर-निचय ; (ठा ४,२)।

देवकिब्बिस पुं [देवकिल्बिष] एक अधम देव-जाति; (ठा ४, ४ –पत्र २७४)।

देवकिब्बिसिआ स्त्री [देवकिल्बिषिकी] भावना-विशेष, जो अधम देव-योनि में उत्पत्ति का कारण है ; (ठा ४, ४)।

देवकी देखो **देवई**। °णंदण पुं [°नन्दन] श्रीकृष्ण; (वेणी १८३)।

देवत्त न [देवत्व] देव, देवता ; (सुपा १५७)।

देवय देखो **देव**=देव ; (नाट; णाया १, १८)।

देवया स्त्री [देवता] १ देव, अमर; (अभि ११७ ; अणु)। २ परमेश्वर, परमात्मा ; (पंचा १)।

देवर देखो **दिअर**; (हे १, १८६ ; सुपा ४८५)।

देवराणी देखो **देअराणी**; (दे १, ५१)।

देवसिअ वि [दैवसिक] दिवस-संबन्धी; (ओघ ६२६ ; ६३६ ; सुपा ४१६)।

देवसिआ स्त्री [देवसिका] एक पतिव्रता स्त्री, जिसका दूसरा नाम देवसेना था ; (पुप्फ ६७)।

देविंद पुं [देवेन्द्र] १ देवों का स्वामी, इन्द्र ; (हे ३, १६२ ; णाया १, ८ ; प्रासू १०७)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार ; (भाव २१)। °सूरि पुं [°सूरि] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार ; (कम्म ३, २४)।

देविड्ढि स्त्री [देवर्द्धि] १ देव का वैभव; २ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (कप्प)।

देविय वि [दैविक] देव-संबन्धी ; (सुर ४, २३६)।

देवी स्त्री [देवी] १ देव-स्त्री ; (पंचा २)। २ रानी, राज-पत्नी ; (विपा १, १ ; ५)। ३ दुर्गा, पार्वती ; (कप्पू)। ४ सातवें चक्रवर्ती और अठारहवें जिन-देव की माता ; (सम १५१ ; १५२)। ५ दशवें चक्रवर्ती की अग्र-महिषी ; (सम १५२)। ६ एक विद्याधर-कन्या ; (पउम ६, ४)।

देवीकय वि [देवीकृत] देव बनाया हुआ; "अणिमिसणअणो सअलो जोए देवीकओ लोओ" (गा ५६२)।

देवुक्कलिआ स्त्री [देवोत्कलिका] देवों की ठठ, देवों की भीड़ ; (ठा ४, ३)।

देवेसर पुं [देवेश्वर] इन्द्र, देवों का राजा ; (कुमा)।

देवोद पुं [देवोद] समुद्र-विशेष ; (जीव ३ ; इक)।

देवोववाय पुं [देवोपपात] भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल में होने वाले तेईसवें जिन-देव ; (सम १५४)।

देव्व देखो **दिव्व**=दिव्य ; (उप ६८६ टी)।

देव्व देखो **दइव** ; (गा १३२ ; महा ; सुर ११, ४ ; अभि ११७), "एसो य देव्वो णाम अणाराहणीओ विण्णाणं" (स १२८)। °ज्ज, °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] जोतिषी, ज्योतिष-शास्त्र को जानने वाला ; (षड् ; कप्पू)।

देस सक [देशय्] १ कहना, उपदेश देना। २ बतलाना। वकृ—**देसयंत** ; (सुपा ४८५ ; सुर १५, २४८)। संकृ—**देसित्ता** ; (हे १, ८८)।

देस पुं [देश] १ अंश, भाग ; (ठा २, २ ; कप्प)। २ देश, जनपद ; (ठा ५, ३ ; कप्प ; प्रासू ४२)। ३ अवसर ; (विसे २०६३)। ४ स्थान, जगह ;(ठा ३, ३)। °कहा स्त्री [°कथा] जनपद-वार्ता ; (ठा ४, २)। °काल देखो °याल ; (विसे २०६३)। °जइ पुं

[°यति] श्रावक, उपासक, जैन गृहस्थ ; (कम्म २ टी; आउ)। °ण्णु वि [°ज्ञ] देश की स्थिति को जानने वाला ; (उप १७६ टी)। °भासा स्त्री [°भाषा] देश की बोली ; (बृह ६)। °भूसण पुं [°भूषण] एक केवल-ज्ञानी महर्षि; (पउम ३९,१२२)। °याल पुं [°काल] प्रसंग, अवसर, योग्य समय; (पउम ११, ६३)। °राय वि [°राज] देश का राजा; (सुपा ३५२)। °वगासिय देखो °वगासिय ; (सुपा ५६६)। °विरइ स्त्री [°विरति] श्रावक धर्म, जैन गृहस्थ का व्रत, अणुव्रत, हिंसा आदि का आंशिक त्याग ; (पंचा १०)। °विरय वि [°विरत] श्रावक, उपासक; २ न. पाँचवाँ गुण-स्थानक : (पव २२)। °विराहय वि [°विराधक] व्रत आदि में आंशिक दूषण लगाने वाला; (भग ८, ६)। °विराहि वि [°विराधिन्] वही अर्थ ; (णाया १, ११—पत्र १७१)। °वगास न [°वकाश] श्रावक का एक व्रत ; (सुपा ५६२)। °वगासिय न [°वकाशिक] वही अर्थ ; (औप ; सुपा ५६६)। °हिव पुं [°धिप] राजा ; (पउम ६६, ५३)। °हिवइ पुं [°धिपति] राजा ; (बृह ४)।

देसंतरिअ वि [**देशान्तरिक**] भिन्न देश का, विदेशी ; (उप १०३१ टी; कुप्र ४१३)।

देसग देखो **देसय** ; (द्र २६)।

देसण न [**देशन**] कथन, उपदेश, प्ररूपणा ; (दं १)। २ वि. उपदेशक, प्ररूपक । स्त्री—°णी ; (दस ७)।

देसणा स्त्री [**देशना**] उपदेश, प्ररूपणा; (राज)।

देसय वि [**देशक**] १ उपदेशक, प्ररूपक : (सम १)। २ दिखलाने वाला, बतलाने वाला ; (सुपा १८६)।

देसि वि [**द्वेषिन्**] द्वेष करने वाला ; (रयण ३६)।

देसि, **देसिअ** वि [**देशिन्**] १ अंशी, आंशिक, भाग वाला ; (विसे २२४७)। २ दिखलाने वाला; ३ उपदेशक; (विसे १०२५ ; भास २८)।

देसिअ वि [**देश्य, देशिक**] देश में उत्पन्न, देश-संबन्धी; (उप ७६८ टी ; अच्चु ६)। °सद्द पुं [°शब्द] देशी-भाषा का शब्द ; (वज्जा ६)।

देसिअ वि [**देशित**] १ कथित, उपदिष्ट ; २ उपदर्शित ; (दं २२ ; प्रासू ५२ ; १३३ ; भवि)।

देसिअ वि [**देशिक**] १ पथिक, मुसाफिर; (पउम २४, १६; उप पृ ११५)। २ उपदेष्टा, गुरु; (विसे १४२५)। ३ प्रोषित, प्रवास में गया हुआ; (सुर १०, १६२)। °सहा स्त्री [°सभा] धर्मशाला; (उप पृ ११५)।

देसिअ देखो **देवसिअ**। "पडिक्कमे देसिअं सव्वं" (पडि ; श्रा ६)।

देसिल्लग देखो **देसिअ** = देश्य ; (बृह ३)।

देसी स्त्री [**देशी**] भाषा-विशेष, अत्यन्त प्राचीन प्राकृत भाषा का एक भेद ; (दे १, ४)। °भासा स्त्री [°भाषा] वही अर्थ; (णाया १, १; औप)।

देसूण वि [**देशोन**] कुछ कम, अंश को कमी वाला ; (सम -, १०३; दं २८)।

देस्स वि [**दृश्य**] १ देखने योग्य ; २ देखने को शक्य; (स १६६)।

देह देखो **देक्ख** । देहई, देहए ; (उत १६, ६; पि ६६)। वकृ—**देहमाण** ; (भग ६, ३३)।

देह पुंन [**देह**] १ शरीर, काय ; (जी २८; कुप्र १५३; प्रासू ६५)। २ पिशाच-विशेष; (इक; पराण १)। °रय न [°रत] मैथुन ; (वज्जा १०८)।

देहंबलिया स्त्री [**देहबलिका**] भिक्षा-वृत्ति, भीख की आजीविका ; (णाया १, १६—पत्र १६६)।

देहणी स्त्री [**दे**] पंक, कर्दम, कादा ; (दे ५, ४८)।

देहरय (अप) न [**देवगृहक**] देव-मन्दिर; (वज्जा १०८)।

देहली स्त्री [**देहली**] चौखट, द्वार के नीचे की लकड़ी ; (गा ५२५ ; दे १, ६५; कुप्र १८३)।

देहि पुं [**देहिन्**] आत्मा, जीव ; (स १६५)।

देहुर (अप) न [**देवकुल**] देव-स्थान, मन्दिर ; (भवि)।

दो अ [**द्विधा**] दो प्रकार से, दो तरह ; (सुपा २३३ ; ३१२)।

दो त्रि.ब. [**द्वि**] दो, उभय, युग्म ; (हे १, ६४)।

दो पुं [**दोस्**] हाथ, बाहु ; (विक्र ११३ ; रंभा; कप्पू)।

दोअई स्त्री [**द्विपदी**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

दोआल पुं [**दे**] वृषभ, बैल ; (दे ५, ४६)।

दोइ देखो **दो**=द्विधा ; (बृह ३)।

दोंबुर [**दे**] देखो **दोबुर** ; (षड्)।

दोकिरिय वि [**द्विक्रिय**] एक ही समय में दो क्रियाओं के अनुभव को मानने वाला ; (ठा ७)।

दोक्कर देखो **दुक्कर** ; (भवि)।

दोक्खर पुं [**द्वि-अक्षर**] षण्ढ, नपुंसक ; (बृह ४)।

दोखंड देखो **दुखंड** ; (भवि)।

दोखंडिअ वि [**द्विखण्डित**] जिसके दो टुकड़े किये गये हों वह ; (भवि)।

दोगंछि वि [**जुगुप्सिन्**] घृणा करने वाला ; (पि ७४)।

दोगच्च न [**दौर्गत्य**] १ दुर्गति, दुर्दशा ; (पंचव ४)। २ दारिद्रय, निर्धनता ; (सुपा २३०)।

दोगुंछि देखो **दोगंछि** ; (पि २१५)।

दोगुंदुय पुं [**दौगुन्दुक**] उत्तम-जातीय देव-विशेष ; (सुपा ३३)।

दोग्ग न [**दे**] युग्म, युगल ; (दे ५, ४६ ; षड्)।

दोग्गइ देखो **दुग्गइ** ; (सुर ८, १११)। °**कर** वि [°**कर**] दुर्गति-जनक ; (पउम ७३, १०)।

दोग्गच्च देखो **दोगच्च** ; (गा ७६)।

दोग्घट्ट, **दोग्घोट्ट**, **दोघट्ट** पुं [**दे**] हाथी, हस्ती ; (पि ४३६ ; षड् ; पाअ ; महा ; लहुअ ४; स १६१)।

दोचूड पुं [**द्विचूड**] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४५)।

दोच्च वि [**द्वितीय**] दूसरा ; (सम २, ८ ; विपा १,२)।

दोच्च न [**दौत्य**] दूतपन, दूत-कर्म ; (णाया १, ८ ; गा ८४)।

दोच्चं अ [**द्विस्**] दो वार, दो वक्त; "एवं च निसामित्ता दोच्चं तच्चं समुल्लवंतस्स" (सुर २, २६)।

दोच्चंग न [**द्वितीयाङ्ग**] १ दूसरा अङ्ग। २ पकाया हुआ शाक ; (बृह १)। ३ तीमन, कढ़ी ; (ओघ २६७ भा)।

दोजीह पुं [**द्विजिह्व**] १ दुर्जन; २ साँप; (सुर १,२०)।

दोज्झ वि [**दोह्य**] दोहने योग्य ; (आचा २, ४, २)।

दोण पुं [**द्रोण**] १ धनुर्वेद के एक सुप्रसिद्ध आचार्य, जो पाण्डव और कौरवों के गुरू थे ; (णाया १, १६ ; वेणी १०४)। २ एक प्रकार का परिमाण ; (जो २)। °**मुह** न [°**मुख**] नगर, जल और स्थल के मार्ग वाला शहर ; (पणह १, ३ ; कप्प ; औप)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] मेघ-विशेष, जिसकी धारा से बड़ी कलशी भर जाय वह वर्षा ; (विसे १४५८)। °**सुया** स्त्री [°**सुता**] लक्ष्मण की स्त्री का नाम, विशल्या; (पउम ६४, ४४)।

दोणअ पुं [**दे**] १ आयुक्त, गाँव का मुखिया ; २ हालिक, हलवाह, हल जोतने वाला ; (दे ५, ५१)।

दोणक्का स्त्री [**दे**] सरघा, मधुमक्खी (दे ५, ५१)।

दोणी स्त्री [**द्रोणी**] १ नौका, छोटा जहाज ; (पणह १, १ ; दे २, ४७; धम्म १२ टी)। २ पानी का बड़ा कुँडा; (अणु ; कुप्र ४४१)।

दोत्तडी स्त्री (**दुस्तटी**] दुष्ट नदी ; "एगत्तो सद्दूलो अन्नत्तो दोत्तडी वियडा" (उप ५३० टी ; सुपा ४६३)।

दोत्थ न [**दौःस्थ्य**] दुःस्थता, दुर्दशा, दुर्गति ; (वव ४ ; ७)।

दोद्दाण वि [**दुर्दान**] दुःख से देने योग्य; (संक्षि ४)।

दोद्दिअ पुं [**दे**] चर्म-कूप, चमड़े का बना हुआ भाजन-वशेष ; (दे ५, ४६)।

दोधअ, **दोधक** न [**दोधक**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

दोधार पुं [**द्विधाकार**] द्विधाकरण, दो भाग करना ; (ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

दोबुर पुं [**दे**] तुम्बुरु, स्वर्ग-गायक; (षड्)।

दोब्बल्ल न [**दौर्बल्य**] दुर्बलता ; (पि २८७ ; काप्र ८५)।

दोभाय वि [**द्विभा** दो भाग वाला, दो खण्ड वाला ; (उप १४७ टी)।

दोमणंसिय वि [**दौर्मनस्यिक**] खिन्न, शोक-ग्रस्त ; (ठा ५, २—पत्र ३१३)।

दोमासिअ वि [**द्वैमासिक**] दो मास का ; (भग ; सुर १४, २२८)। स्त्री—°**आ**; (सम २१)।

दोमिय (अप) देखो **दूमिअ**=दावित ; (भवि)।

दोमिली स्त्री [**दोमिली**] लिपि-विशेष ; (राज)।

दोमुह वि [**द्विमुख**] १ दो मुँह वाला; २ पुं. नृप-विशेष ; (महा)। ३ दुर्जन ; (गा २५३)।

दोर पुं. [**दे**] १ डोरा, धागा, सुत; (पउम ४,५०; कुप्र २२६; सुर ३, १४१)। २ छोटी रस्सी; (ओघ२३२; ६४ भा)। ३ कटी-सूत्र ; (दे ५, ३८)।

दोरी स्त्री [**दे**] छोटी रस्सी ; (श्रा १६)।

दोल अक [**दोलय्**] १ हिलना ; २ झूलना। दोलइ ; (हे ४, ४८)। दोलंति; (कप्पू)।

दोलणय न [**दोलनक**] झूलन, अन्दोलन; (दे ८, ४३)।

दोलया, **दोला** स्त्री [**दोला**] झूला, हिंडोला ; (सुपा २८६ ; कुमा)।

दोलाइय वि [**दोलायित**] १ हिला हुआ ; २ संशयित; (हेका ११६)।
दोलायमाण वि [**दोलायमान**] १ हिलता हुआ; २ संशय करता हुआ ; (सुपा ११७ ; गउड)।
दोलिया देखो **दोला** ; (सुर ३, ११६)।
दोलिर वि [**दोलयितृ**] भूलने वाला ; (कुमा)।
दोव पुं [**दोव**] एक अनार्य जाति ; (राज)।
दोवई स्त्री [**द्रौपदी**] राजा द्रुपद की कन्या, पाण्डव-पत्नी ; (णाया १, १६ ; उप ६४८ टी ; पडि)।
दोवयण देखो **दुवयण** = द्विवचन ; (हे १, ६४ ; कुमा)।
दोवार (अप) देखो **दुवार**; (सण)।
दोवारिज्ज } पुं [**दौवारिक**] द्वार-पाल, दरवान, प्रतीहार;
दोवारिय } (निचू ६ ; णाया १, १ ; भग ६, ५ ; सुपा ४२६)।
दोविह देखो **दुविह** ; (उत्त २ ; नव ३)।
दोवेली स्त्री [**दे**] सायं-काल का भोजन ; (दे ५,५०)।
दोव्वल देखो **दोब्बल** ; (से ४, ४२ ; ८, ८७)।
दोस देखो **दूस** = दूष्य ; (औप ; उप ७६८ टी)।
दोस पुं [**दोष**] दूषण, दुर्गुण, ऐब ; (औप ; सुर१, ७३ ; स्वप्न ६० ; प्रासु १३)। °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] दोष का जानकार, विद्वान् ; (पि १०५)। °**ह** वि [°**घ**] दोष-नाशक ; "कुव्वंति पोसहं दोसहं सुद्धं" (सुपा ६२१)।
दोस पुं [**दे**] १ अर्ध, आधा; (दे ५, ५६)। २ कोप, क्रोध; (दे ५, ५६ ; षड्)। ३ द्वेष, द्रोह ; (औप ; कप्प ; ठा १ ; उत्त ६ ; सूअ १, १६ ; पण्ण२३ ; सुर१, ३३ ; सण ; भवि ; कुप्र ३७१)।
दोस पुं [**दोस्**] हाथ, हस्त, बाहु ; (से २, १)।
दोसणिज्जंत पुं [**दे**] चन्द्र, चन्द्रमा; (दे ५, ५१)।
दोसा स्त्री [**दोषा**] रात्रि, रात ; (सुर १, २१)।
दोसाकरण न [**दे**] कोप, क्रोध ; (दे ५, ५१)।
दोसाणिअ वि [**दे**] निर्मल किया हुआ ; (दे ५, ५१)।
दोसायर पुं [**दोषाकर**] १ चन्द्र, चाँद; (उप ७२८ टी ; सुपा २७५)। २ दोषों की खान, दुष्ट ; (सुपा २७५)।
दोसारअण पुं [**दे.दोषारत्न**] चन्द्र, चाँद ; (षड्)।
दोसासय पुं [**दोषाश्रय**] दोष-युक्त, दुष्ट; (पउम११७,४१)।
दोसि त्रि [**दोषिन्**] दोष वाला, दोषी; (कुप्र ४३८)।
दोसिअ पुं [**दौष्यिक**] वस्त्र का व्यापारी ; (श्रा १२ ; वज्जा १६२)।
दोसिण [**दे**] देखो **दोसीण** ; (पण्ह २, ५)।
दोसिणा [**दे**] नीचे देखो ; (ठा २,४—पत्र ८६)। °**भा** स्त्री [°**भा**] चन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ४, १ ; इक ; णाया २)।
दोसिणी स्त्री [**दे. दोषिणी**] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश; (दे५, ५०)। "ससिजुण्हा दोसिणी जत्थ" (कुप्र ४३८)।
दोसियण्ण न [**दोषिकान्न**] वासी अन्न ; (राज)।
दोसिल्ल वि [**दोषवत्**] दोष-युक्त ; (धम्म ११ टी)।
दोसिल्ल वि [**दे**] द्वेष-युक्त, द्वेषी ; (विसे१११०)।
दोसीण न [**दे**] रात-वासी अन्न ; (पण्ह २, ५ ; ओघ १४५)।
दोसोलह त्रि. ब. [**द्विषोडशन्**] बतीस; (कप्प)।
दोह पुं [**दोह**] दोहन ; (दे २, ६४)।
दोह वि [**दोह्य**] दोहने योग्य ; (भास ८६)।
दोह पुं [**द्रोह**] ईर्ष्या, द्वेष ; (प्राप्र ; भवि)।
दोहग्ग न [**दौर्भाग्य**] दुष्ट भाग्य, दुरदृष्ट, कमनसीबी ; (पण्ह १, ४ ; सुर ३, १७४ ; गा २१२)।
दोहग्गि वि [**दौर्भागिन्**] दुष्ट भाग्य वाला, कमनसीब, मन्द-भाग्य ; (श्रा १६)।
दोहण न [**दोहन**] दोहना, दूध निकालना ; (पण्ह१, १)। °**वाडण** न [°**पाटन**] दोहन-स्थान; (निचू २)।
दोहणहारी स्त्री [**दे**] १ दोहने वाली स्त्री ; (दे१, १०८ ; ५, ५६)। २ पनिहारी, पानी भरने वाली स्त्री ; (दे ५, ५६)।
दोहणी स्त्री [**दे**] पंक, कादा, कर्दम ; (दे ५, ४८)।
दोहय वि [**दोहक**] दोहने वाला ;(गा ४६३)।
दोहय वि [**द्रोहक**] द्रोह करने वाला, ईर्ष्यालु; (उप ३५७ टी ; भवि)।
दोहल पुं [**दोहद**] गर्भिणी स्त्री का मनोरथ ; (हे१, २१७; २२१ ; कप्प)।
दोहा अ [**द्विधा**] दो प्रकार ; (हे १, ६७)।
दोहाइअ वि [**द्विधाकृत**] जिसका दो खण्ड किया गया हो वह ; (हे १, ६७ ; कुमा)।
दोहासल न [**दे**] कटी-तट, कमर ; (दे ५, ५०)।
दोहि वि [**दोहिन्**] झरने वाला, टपकने वाला; (गा ६३६)।
दोहि वि [**द्रोहिन्**] द्रोह करने वाला ; (भवि)।
दोहित्त पुं [**दौहित्र**] लड़की का लड़का ; (दे६, १०६ ; सुपा ३६४)

दोहित्ती स्त्री [**दौहित्री**] लड़की की लड़की ; (महा)।
दोहुअ पुं [**दे**] शव, मृतक, मुरदा ; (दे ५, ४६)।
°**द्दोस** देखो **दोस** = (दे) ; "वज्जियरागद्दोसो" (कुप्र ३०)।
द्रवक्क (अप) न [**दे. भय**] भय, डर, भीति; (हे ४, ४२२)।
द्रह पुं [**ह्रद**] बड़ा जलाशय ; (हे २, ८० ; कुमा)।
द्रेहि (अप) स्त्री [**दृष्टि**] नजर ; (हे ४, ४२२)।
द्रोह देखो **दोह**=द्रोह ; (पि २६८)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि दआराइसद्दसंकलणो पंचवीसइमो तरंगो समत्तो।

—०—

ध

ध पुं [**ध**] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप ; प्रामा)।
धअ देखो **धव** ; (गा २०)।
धंख पुं [**ध्वाङ्क्ष**] काक, कौआ ; (उप ८२३ ; पंचा १२)।
धंग पुं [**दे**] भ्रमर, भमरा; (दे ५, ५७)।
धंत न [**ध्वान्त**] अन्धकार ; (सुर १, १२ ; करु ११)।
धंत न [**दे**] अति, अतिशय, अत्यन्त ; "धंतंपि सुअसमिद्धा" (पच २६ ; विसे ३०१६ ; बृह १)।
धंत वि [**ध्मात**] १ अग्नि में तपाया हुआ ; (णाया १, १ ; औप ; पण्ण १ ; १७ ; विसे ३०२६ ; अजि १४)। २ शब्द-युक्त, शब्दित ; (पिंड)।
धंधा स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम ; (दे ५, ५७)।
धंधुक्कय न [**धन्धुक्कय**] गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'धंधूका' नाम से प्रसिद्ध है; (सुपा ६५८; कुप्र २०)।
धंधोलिय (अप) वि [**भ्रमित**] घुमाया हुआ ; (सण)।
धंस अक [**ध्वंस्**] नष्ट होना। धंसइ, धंसए ; (षड्)।
धंस सक [**ध्वंसय्**] १ नाश करना। २ दूर करना। धंसइ ; (सुअ १, २, १)। धंसेइ ; (सम ५०)।
धंसाड सक [**मुच्**] त्याग करना, छोड़ना। धंसाडइ ; (हे ४, ९१)।
धंसाडिअ वि [**मुक्त**] परित्यक्त ; (कुमा)।
धंसाडिअ वि [**दे**] व्यपगत, नष्ट ; (दे ५, ५९)।
धगधग अक [**धगधगाय्**] १ धग् धग् आवाज करना। २ जलना, अतिशय जलना। वकृ—**धगधगंत** ; (णाया १, १ ; पउम १२, ५१ ; भवि)।
धगधगाइअ वि [**धगधगायित**] धग् धग् आवाज वाला; (कप्प)।
धगधग देखो **धगधग**। वकृ—**धगधगअमाण** ; (पि ५५८)।
धग्गीकय वि [**दे**] जलाया हुआ अत्यन्त प्रदीपित ; "अग्गो धग्गीकओ व्व पत्तणेणं" (आ १४)।
धज देखो **धय**=ध्वज; (कुमा)।
धट्ठ देखो **धिट्ठ** ; (हे १, १३० ; पउम ४६, २६ ; कुमा १, ८२)
धट्ठज्जुण / **धट्ठज्जुण्ण** पुं [**धृष्टद्युम्न**] राजा द्रुपद का एक पुत्र; (हे २, ९४ ; णाया १, १६ ; कुमा ; षड् ; पि २७८)।
धड न [**दे**] धड़, गले से नीचे का शरीर; (सुपा २४१)।
धडहडिय न [**दे**] गर्जना, गर्जारव ; (सुपा १७६)।
धण न [**धन**] १ वित्त, विभव, स्थावर-जंगम सम्पत्ति; (उत्त ६; सुअ २, १ ; प्रासू ५१ ; ७६ ; कुमा)। २ गणिम, धरिम, मेय, या परिच्छेद्य द्रव्य--गिनती से और नाप आदि से क्रय-विक्रय-योग्य पदार्थ; (कप्प)। ३ पुं. कुबेर, धन-पति; "सुध णो सिट्ठी धणोव्व धणकलिओ" (सुपा ३१०)। ४ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी; (उप ५५२)। ५ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र; (णाया १, १८)। °**इत्त**, °**इल्ल** वि [°**वत्**] धनी, धन वाला; (कुप्र २४५; पि ५९५; संक्षि ३०)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] एक जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के पिता थे ; (कप्प; उप १४२ टी)। °**गुत्त** पुं [°**गुप्त**] एक जैन मुनि ; (आवम)। °**गोव** पुं [°**गोप**] धन्य-सार्थवाह का एक पुत्र ; (णाया १, १८)। °**ड्ढ** पुं [°**ाढ्य**] एक जैन मुनि; (कप्प)। °**णंदि** पुंस्त्री [°**नन्दि**] दुगुना देव-द्रव्य; " देवदव्वं दुगुणं धणणंदी भण्णइ " (दंस १)। °**णिहि** पुं [°**निधि**] खजाना, भण्डार; (ठा ५, ३)। °**त्थि** वि [°**ार्थिन्**] धन का अभिलाषी; (रयण ३८)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक सार्थवाह; २ तृतीय वासुदेव के पूर्व जन्म का नाम ; (सम १५३ ; णंदि ; आवम)। °**देव** पुं [°**देव**] १ एक सार्थवाह, मण्डिक-गणधर का पिता ; (आवम ; आचू

१)। २ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र ; (णाया १, १८)। °पइ देखो °वइ; (विपा २, १) । °पवर पुं [°प्रवर] एक श्रेष्ठी ; (महा) । °पाल पुं [°पाल] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र; (णाया १, १८) । देखो °वाल । °प्पभा स्त्री [°प्रभा] कुण्डलवर द्वीप की राजधानी; (दीव) । °मंत, °मण वि [°वत्] धनी, धनवान्; (पिंग; हे २, १५९; चंड)। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैन मुनि; (पउम २०,१७१)। °य पुं [°द] १ एक सार्थवाह; (सुपा ५०९) । २ एक विद्याधर राजा, जो राजा रावण की मौसी का लड़का था ; (पउम ८, १२४) । ३ कुबेर; (महा) । ४ वि. धन देने वाला; "धणओ धणत्थिआणं " (रयण ३८) । °रक्खिय पुं [°रक्षित] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र; (णाया १, १८) । °वइ पुं [°पति] १ कुबेर; (णाया १, ४—पत्र ९९ ; उप पृ १८०; सुपा ३८) । २ एक राज-कुमार; (विपा २, ६) । °वई स्त्री [°वती] एक सार्थवाह-पुत्री; (दंस १) । °वंत, °वत्त देखो °मंत; (हे २, १५९; चंड) । °वह पुं [°वह] १ एक श्रेष्ठी; (दंस १) । २ एक राजा; (विपा २,२) । °वाल देखो °पाल । २ राजा भोज के समकालिक एक जैन महाकवि ; (धण ५०) । °संचया स्त्री [°संचया] एक वणिग्-महिला; (महा) । °सम्म पुं [°शर्मन्] एक वणिक्; (गच्छ २) । °सिरी स्त्री [°श्री] एक वणिग्-महिला ; (आव ४) । °सेण पुं [°सेन] एक राजा ; (दंस ४) । °ाल वि [°वत्] धनी ; (प्राप्र) । °ावह वि [°ावह] १ धन को धारण करने वाला, धनी । २ पुं. एक श्रेष्ठी; (दंस ४) । ३ एक राजा ; (विपा २, २) ।

धणंजय पुं [धनञ्जय] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव, (वेणी ११०) । २ वह्नि, अग्नि; ३ सर्प-विशेष ; ४ वायु-विशेष, शरीर-व्यापी पवन ; ५ वृक्ष-विशेष; (हे १, १७७; २,१८५; षड्) । ६ उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र ; (इक) । ७ पक्ष का नववाँ दिन ; (जो ४) । ८ श्रेष्ठि-विशेष; (आव ४) । ९ एक राजा ; (आवम) ।

धणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज ; (विसे १५०) ।

धणि स्त्री [ध्राणि] १ तृप्ति, सन्तोष ; (औप) । २ अतृप्ति उत्पन्न करने की शक्ति ; "भमिधणिवितण्हयाई " (विसे १९५३) ।

धणि वि [धनिन्] धनिक, धनवान् ; (हे २, १५९) ।

धणिअ वि [धनिक] १ पैसादार, धनी ; (दे १, १४८)। २ पुं. मालिक, स्वामी ; (श्रा १४) ।

धणिअ न [दे] अत्यन्त, गाढ़, अतिशय ; (दे ५, ५८; औप; भग ; महा; कप्प ; सुर १, १७५ ; भत्त ७३; पच्च ८२ ; जीव ३; उत्त १; वव २ ; स ६९७) ।

धणिअ वि [धन्य] धन्यवाद के योग्य, प्रशंसनीय, स्तुति-पात्र ; " जाण धणियस्स पुरओ निवडंति रणम्मि असिघाया " (पउम ५६, २५ ; अच्चु ४२) ।

धणिआ स्त्री [दे] १ प्रिया, भार्या, पत्नी ; (दे ५, ५८; गा ५८२ ; भवि) । २ धन्या, स्तुति-पात्र स्त्री; (षड्) ।

धणिट्ठा स्त्री [धनिष्ठा] नक्षत्र-विशेष ; (सम १० ; १३; सुर १६ २४९ ; इक) ।

धणी स्त्री [दे] १ भार्या, पत्नी ; २ पर्याप्ति; ३ जो बँधा हुआ होने पर भी भय-रहित हो वह ; (दे ५, ६२), " सयमेव मंकणीए धणीए तं कंकणी बद्धा" (कुप्र १८५) ।

धणु पुंन [धनुष्] १ धनुष, चाप, कार्मक ; (षड् ; हे १, २२) । २ चार हाथ का परिमाण; (अणु ; जी २९) । ३ पुं. परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २९) । °कुडिल न [कुटिलधनुष्] वक्र धनुष ; (राय) । °ग्गह पुं [°ग्रह] वायु-विशेष ; (बृह ३) । °द्धय पुं [°ध्वज] नृप-विशेष ; (ठा ८) । °द्धर वि [°धर] धनुर्विद्या में निपुण, धानुष्क ; (राज ; पउम ६, ८७) । °पिट्ठ न [°पृष्ठ] १ धनुष का पृष्ठ-भाग ; २ धनुष के पीठ के आकार वाला क्षेत्र; (सम ७३) । °पुहत्तिया स्त्री [°पृथक्त्विका] कोस, गव्यूत ; (पण्ण १) । °वेअ, °व्वेअ पुं [°वेद] धनुर्विद्या-बोधक शास्त्र, इषु-शास्त्र ; (उप ९८६ टी ; सुपा २७० ; जं २) । °हर देखो °धर ; (भवि) ।

धणुक्क } **धणुह** } ऊपर देखो ; (षांदि; अणु; हे १, २२ ; कुमा) ।

धणुही स्त्री [धनुष्] कार्मक; "वेसाओ व धणुहीओ गुणबद्धाओवि पयइकुडिलाओ" (कुप्र२७४; स ३८१) ।

धणेसर पुं [धनेश्वर] एक प्रसिद्ध जैन मुनि और ग्रन्थकार; (सुर १, २४९ ; १६, २५०) ।

धण्ण पुं [धन्य] १ एक जैन मुनि; २ 'अनुत्तरोपपातिकदसा' सूत्र का एक अध्ययन ; (अनु २) । ३ यक्ष-विशेष ; (विपा २, २) । ४ वि. कृतार्थ; ५ धन-लाभ के योग्य ; ६ स्तुति-पात्र, प्रशंसनीय, ७ भाग्यशाली, भाग्यवान्; (णाया १, १; कप्प ; औप) ।

धण्ण देखो धन्न=धान्य ; (श्रा १८; ठा ५, ३ ; वव १) ।

धण्णंतरि पुं [**धन्वन्तरि**] १ राजा कनकरथ का एक स्व-नाम-ख्यात वैद्य ; (विपा १, ८) । २ देव वैद्य; (जय २) ।

धण्णाउस वि [**दे**] १ जिसको आशीर्वाद दिया जाता हो वह ; २ पुं. आशीर्वाद ; (दे ५, ५८) ।

धत्त वि [**दे**] १ निहित, स्थापित ; (आवम) । २ पुं. वनस्पति-विशेष ; (जीव १) ।

धत्त वि [**धात्त**] निहित, स्थापित ; (राज) ।

धत्तरट्ठग पुं [**धार्तराष्ट्रक**] हंस की एक जाति, जिसके मुँह और पाँव काले होते हैं ; (पराह १, १) ।

धत्ती स्त्री [**धात्री**] १ धाई, उपमाता ; (स्वप्न १२२) । २ पृथिवी, भूमि ; ३ आमलकी-वृक्ष ; (हे २, ८१) । देखो **धाई** ।

धत्तूर पुं [**धत्तूर**] १ वृक्ष-विशेष, धतूरा ; २ न. धतूरा का पुष्प ; (सुपा १२४) ।

धत्तूरिअ वि [**धात्तूरिक**] जिसने धतूरा का नशा किया हो वह ; (सुपा १२४ ; १७६) ।

धत्थ वि [**ध्वस्त**] ध्वंस-प्राप्त, नष्ट ; (हे २, ७६ ; सण) ।

धन्न देखो **धण्ण**=धन्य ; (कुमा ; प्रासू ५३ ; ८४; १५५ ; उवा) ।

धन्न न [**धान्य**] १ धान, अनाज, अन्न ; (उवा ; सुर १, ४६) । २ धान्य-विशेष; "कुलत्थ तह धन्नय कलाया" (पव १५६) । ३ धनिया ; (दसनि ६) । °**कीड** पुं [°**कीट**] नाज में होने वाला कीट, कीट-विशेष ; (जी १७) । °**णिहि** पुंस्त्री [°**निधि**] धान रखने का घर, कोष्ठागार ; (ठा ५, ३) । °**पत्थय** पुं [°**प्रस्थक**] धान का एक नाप ; (वव १) । °**पिडग** न [°**पिटक**] नाज का एक नाप ; (वव १) । °**पुंजिय** न [**पुञ्जित-धान्य**] इकट्ठा किया हुआ अनाज; (ठा ४, ४) । °**विक्खित्त** न [**विक्षिप्तधान्य**] विकीर्ण अनाज ; (ठा ४, ४) । °**विरल्लिय** न [**विरल्लितधान्य**] वायु से इकट्ठा हुआ अनाज; (ठा ४, ४) । °**संकड्ढिय** न [**संकर्षितधान्य**] खेत से काट कर खले में लाया गया धान्य ; (ठा ४, ४) । °**गार** न [°**गार**] कोष्ठागार, धान रखने का गृह ; (निचू ८) ।

धन्ना स्त्री [**धान्य**] अन्न, अनाज ; "सालिजवाईयाओ धन्नाओ सव्वजाईओ" (उप ६८६ टी) ।

धन्ना स्त्री [**धन्या**] एक स्त्री का नाम ; (उवा) ।

धम सक [**ध्मा**] १ धमना, आग में तपाना । २ शब्द करना । ३ वायु पूरना । धमइ; (महा) । धमेइ ; (कुप्र १४६) । वकृ—**धमंत**; (निचू १) । कवकृ—**धम्ममाण**; (उवा; णाया १, ६) ।

धमग वि [**ध्मायक**] धमने वाला ; (औप) ।

धमण न [**ध्मान**] १ आग में तपाना ; (आचानि १, १, ७) । २ वायु-पूरण ; (पराह १, १) । ३ वि. भस्त्रा, धमनी ; (राज) ।

धमणि, **धमणी** स्त्री [**धमनि, °नी**] १ भस्त्रा, धमनी ; २ नाड़ी, सिरा; (विपा १, १, उवा ; अंत २७) ।

धमधम अक [**धमधमाय्**] धम् धम् आवाज करना । "धमधमइ सिरं धणियं जायइ सूलंपि भज्जए दिट्ठी" (सुपा ६०३) । वकृ—**धमधमंत, धमधमाअंत, धमधमेंत**; (सुपा ११४; नाट—मालती ११६; णाया १,८)।

धमास पुं [**धमास**] वृक्ष-विशेष ; (पराण १७) ।

धमिअ वि [**ध्मात**] जसमें वायु भर दिया गया हो वह ; "धमिओ संखो" (कुप्र १४६) ।

धम्म पुंन [**धर्म**] १ शुभ कर्म, कुशल-जनक अनुष्ठान, सदाचार; (ठा १; सम १;२; आचा; सुअ १,६, प्रासू ५२; ११४; सं ५७) । २ पुण्य, सुकृत; (सुर १,५४; आव ४)। ३ स्वभाव, प्रकृति; (निचू २०) । ४ गुण, पर्याय; (ठा २,१) । ५ एक अरूपी पदार्थ, जो जीव को गति-क्रिया में सहायता पहुँचाता है; (नव ५) । ६ वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पनरहवें जिन-देव ; (सम ४३; पडि) । ७ एक वणिक् ; (उप ७२८ टी) । ८ स्थिति, मर्यादा; (आचू २) । ६ धनुष, कार्मक ; (सुर १, ५४ ; पाअ) । १० एक जैन मुनि ; (कप्प) । ११ 'सूत्रकृताङ्ग" सूत्र का एक अध्ययन; (सम ४२) । १२ आचार, रीति, व्यवहार , (कप्प) । °**उत्त** पुं [°**पुत्र**] शिष्य; (प्रारू) । °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (दंस १) । °**कंखिअ** वि [°**काङ्क्षित**] धर्म की चाह वाला; (भग) । °**कहा** स्त्री [°**कथा**] धर्म-सम्बन्धी बात ; (भग ; सम १२० ; णाया २) । °**कहि** वि [°**कथिन्**] धर्म-कथा कहने वाला, धर्म का उपदेशक ; (ओघ ११५ भा ; श्रा ६) । °**कामय** वि [°**कामक**] धर्म की चाह वाला; (भग) । °**काय** पुं [°**काय**] धर्म का साधन-भूत शरीर ; (पंचा १८) । °**क्खाइ** वि [°**ख्यायिन्**] धर्म-प्रतिपादक; (औप) । °**क्खाइ** वि

[°ख्याति] धर्म से ख्याति वाला, धर्मात्मा; (औप)। °गुरु पुं [°गुरु] धर्म-दर्शक गुरु, धर्माचार्य ; (द्र १)। °गुत्त वि [°गुप्] धर्म-रक्षक ; (षड्)। °घोस पुं [°घोष] कईएक जैन मुनि और आचार्यों का नाम ; (आचू १; ती ७ ; आव ४ ; भग ११, ११)। °चक्क न [°चक्र] जिनदेव का धर्म-प्रकाशक चक्र ; (पव ४० ; सुपा ६२)। °चक्कवट्टि पुं [°चक्रवर्तिन्] जिन-देव ; (आचू १)। °चक्कि पुं [°चक्रिन्] जिन भगवान् ; (कुम्मा ३०)। °जणणी स्त्री [°जननी] धर्म की प्राप्ति कराने वाली स्त्री, धर्म-देशिका ; (पंचा १६)। °जस पुं [°यशस्] जैन मुनि-विशेष का नाम; (आव ४)। °जागरिया स्त्री [°जागर्या] १ धर्म-चिन्तन के लिए किया जाता जागरण; (भग १२, १)। २ जन्म से छठवें दिन में किया जाता एक उत्सव ; (कप्प)। °ज्झय पुं [°ध्वज] १ धर्म-द्योतक ध्वज, इन्द्र-ध्वज; (राय)। २ ऐरवत क्षेत्र के पांचवें भावी जिन-देव ; (सम १५४)। °ज्झाण न [°ध्यान] धर्म-चिन्तन, शुभ ध्यान-विशेष ; (सम ६)। °ज्झाणि वि [°ध्यानिन्] धर्म ध्यान से युक्त ; (आव ४)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] धर्म का अभिलाषी ; (सुअ १, २, २)। °णायग वि [°नायक] १ धर्म का नेता; (सम १ ; पडि)। °ण्णु वि [°ज्ञ] धर्म का ज्ञाता ; (दंस ४)। °तित्थयर पुं [°तीर्थकर] जिन भगवान् ; (उत २३ ; पडि)। °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष, एक प्रकार का हथियार; (पउम ७१, ६३)। °त्थि देखो °ट्ठि ; (पंचव ४)। °त्थिकाय पुं [°स्तिकाय] गति-क्रिया में सहायता पहुँचाने वाला एक अरूपी पदार्थ; (भग)। °दय वि [°दय] धर्म की प्राप्ति कराने वाला, धर्म-देशक ; (भग)। °दार न [°द्वार] धर्म का उपाय ; (ठा ४,४)। °दार पुं.ब. [°दार] धर्म-पत्नी; (कप्पू)। °दास पुं [°दास] भगवान् महावीर का एक शिष्य, और उपदेशमाला का कर्ता ; (उव)। °देव पुं [°देव] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य ; (सार्ध ७८)। °देसग, °देसय वि [°देशक] धर्म का उपदेश करने वाला ; (राज ; भग ; पडि)। °धुरा स्त्री [°धुरा] धर्म रूप धुरा ; (गाया १, ८) °नायग देखो °णायग; (भग)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] १ धर्म की प्रतिज्ञा ; २ धर्म का साधन-भूत शरीर ; (ठा १)। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] धर्म की प्ररूपणा ; (उवा)। °पत्तिणी (शौ) स्त्री [°पत्नी] धर्म-पत्नी, स्त्री, भार्या (अभि २२२)। °पिवासय वि [°पिपासक] धर्म के लिए प्यासा ; (भग)। °पिवासिय वि [°पिपासित] धर्म की प्यास वाला; (तंदु)। °पुरिस पुं [°पुरुष] धर्म-प्रवर्तक पुरुष ; (ठा ३, १)। °पलज्जण वि [°प्ररञ्जन] धर्म में आसक्त ; (गाया १, १८)। °प्पवाइ वि [°प्रवादिन्] धर्मोपदेशक ; (आचानि १, ४, २)। °प्पह पुं [°प्रभ] एक जैन आचार्य ; (रयण ५८)। °प्पावाउय वि [°प्रावादुक] धर्म-प्रवाद। धर्मोपदेशक ; (आचानि १, १४, १)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] धार्मिक, धर्म-मति ; २ पुं. एक राजा का नाम ; (उप ७२८ टी)। °मित्त पुं [°मित्र] भगवान् पद्मप्रभ का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५१)। °य वि [°द] धर्म-दाता, धर्म-देशक ; (सम १)। °रुइ स्त्री [°रुचि] १धर्म-प्रीति; (धर्म २)। २ वि. धर्म में रुचि वाला ; (ठा १०)। ३ पुं. एक जैन मुनि; (विपा १, १; उप ६४८ टी)।४ वाराणसी का एक राजा; (आवम)। °लाभ पुं [°लाभ] १ धर्म की प्राप्ति ; २ जैन साधु द्वारा दिया जाता आशीर्वाद ; (सुर ८, १०६)। °लाभिअ वि [°लाभित] जिसको 'धर्मलाभ' रूप आशीर्वाद दिया गया हो वह; (स ६६)। °लाह देखो °लाभ; (स ३६)। °लाहण न [°लाभन] धर्मलाभ-रूप आशीर्वाद देना; "कयं धम्मलाहणं" (स ४६६)। °लाहिअ देखो लाभिअ ; (स १४८)। °वंत वि [°वत्] धर्म वाला; (आचा)। °वय पुं [°व्यय] धर्मार्थ दान, धर्मादा; (सुपा ६१७)। °वि, °विउ वि [°वित्] धर्म का जानकार ; (आचा)। °विज्ज पुं [°वैद्य] धर्माचार्य ; (पंचव १)। °व्वय देखो °वय ; (सुपा ६१७)। °सद्धा स्त्री [°श्रद्धा] धर्म-विश्वास; (उत्त २६)। °सण्णा देखो °सन्ना; (भग ७, ६)। °सत्थ न [°शास्त्र] धर्म-प्रतिपादक शास्त्र ; (दंस ४)। °सन्ना स्त्री [°संज्ञा] १ धर्म-विश्वास ; २ धर्म-बुद्धि ; (पण्ह १, ३)। °सारहि पुं [°सारथि] धर्मरथ का प्रवर्तक, धर्म-देशक; (धण २७; पडि)। °साला स्त्री [°शाला] धर्म-स्थान; (कुप्र ३३)। °सील वि [°शील] धार्मिक, (सुअ २, २)। °सीह पुं [°सिंह] १ भगवान् अभिनन्दन का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५१)। २ एक जैन मुनि ; (संथा ६६)। °सेण पुं [°सेन] एक बलदेव का पूर्वभवीय नाम; (सम १५३)। °इगर वि [°दिकर] धर्म का प्रथम प्रवर्तक; २ पुं. जिन-देव; (धर्म २)। °णुट्ठाण

न [°ानुष्ठान] धर्म का आचरण; (धर्म १)। °णुण्ण वि [°ानुज्ञ] धर्म का अनुमोदन करने वाला ; (सूअ २, २ ; गाया १, १८)। °णुय वि [°ानुग] धर्म का अनुसरण करने वाला ; (औप) । °ायरिय पुं [°ाचार्य] धर्म-दाता गुरु; (सम १२०) । °ावाय पुं [°वाद] १ धर्म-चर्चा ; २ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद; (ठा १०)। °ाहिगरणिय पुं [°ाधिकरणिक न्यायाधीश, न्याय-कर्त्ता; (सुपा ११७) । °ाहिगारि वि [°ाधिकारिन्] धर्म-ग्रहण के योग्य; (धर्म १)।

धम्म वि [धर्म्य] धर्म-युक्त धर्म-संगत ; " जं पुण तुमं कहेसि तमेव धम्मं " (महानि ४ ; द्र ४१)।

धम्ममण पुं [दे] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी ; पउम ४२, ६)।

धम्ममाण देखो **धम**।

धम्मय पुं [दे] १ चार अंगुल का हस्त-व्रण; २ चण्डी देवी का नर-बलि ; (दे ५, ६३)।

धम्मि वि [धर्मिन्] १ धर्म-युक्त, द्रव्य, पदार्थ । २ धार्मिक, धर्म-परायण ; (सुपा २६; ३३६ ; ५०६ ; वज्जा १०६)।

धम्मिअ, **धम्मिग** वि [धार्मिक] १ धर्म-तत्पर, धर्म-परायण; (गा १६७ ; उप ८६२ ; पराह २, ४)। २ धर्म-सम्बन्धी ; (उप २६४; पंचा ६) । ३ धार्मिक-संबन्धी ;(ठा ३, ४)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मिष्ठ] अतिशय धार्मिक ; (औप ; सुपा १४०)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मेष्ट] धर्म-प्रिय; (औप)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मेष्ट] धार्मिक जन को प्रिय ; (औप) ।

धम्मिल्ल, **धम्मेल्ल** पुंन [धम्मिल्ल] १ संयत केश, बँधा हुआ केश; (प्राप्र; षड्; संक्षि ३) । २ पुं. एक जैन मुनि ; (आव ६)।

धम्मोसर पुं [धर्मेश्वर] अतीत उत्सर्पिणी-काल में भरत-वर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव ; (पव ७)।

धम्मुत्तर वि [धर्मोत्तर] १ गुणी, गुणों से श्रेष्ठ ; (आचू ५) । २ न. धर्म का प्राधान्य; "धम्मुत्तरं वड्ढउ" (पडि)।

धम्मोवएसग, **धम्मोवएसय** वि [धर्मोपदेशक] धर्म का उपदेश देने वाला; (गाया १,१६; सुपा १७२; धर्म२)।

धय सक [धे] पान करना, स्तन-पान करना। वकृ—**धयंत**; (सुर १०, ३७)।

धय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वजा, पताका; (हे २, २७; गाया १, १६ ; पराह १, ४; गा ३४)। स्त्री—°या ; (पिंग)। °वड पुं [°पट] ध्वजा का वस्त्र ; (कुमा)।

धय पुं [दे] नर, पुरुष; (दे ५, ५७) ।

धयण न [दे] गृह, घर ; (दे ५,५७)।

धयरट्ठ पुं [धृतराष्ट्र] हंस पक्षी; (पाअ)।

धर सक [धृ] १ धारण करना। २ पकड़ना। धरइ, धरेइ; (हे ४, २३४; ३३६) । कर्म—धरिज्जइ; (पि ५३७)। वकृ—**धरंत, धरमाण**; (सण; भवि; गा ७६१) । कवकृ—**धरंत, धरेंत, धरिज्जंत, धरिज्जमाण**; (से ११, १२७ ; १४, ८१; राज ; पराह १, ४ ; औप)। संकृ—**धरिउं**; (कुप्र ७)। कृ—**धरियव्व** ; (सुपा २७२)।

धर सक [धरय्] पृथिवी का पालन करना । वकृ—**धरंत**; (सुर २, १३०)।

धर न [दे] तूल, रूई ; (दे ५, ५७)।

धर पुं [धर] १ भगवान् पद्मप्रभ का पिता; (सम १५०)। २ मथुरा नगरी का एक राजा ; (गाया १, १६)। ३ पर्वत, पहाड़ ; (से ८, ६३ ; पाअ)।

°**धर** वि [°धर] धारण करने वाला ; (कप्प)।

धरग पुं [दे] कपास ; (दे ५, ५८)।

धरण पुं [धरण] १ नाग-कुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३ ; औप) । २ यदुवंशीय राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र ; (अंत ३)। ३ श्रेष्ठि-विशेष ; (उप ७२८ टी ; सुपा ५५६)। ४ न. धारण करना ; (से ३, ३ ; सार्ध ६ ; वज्जा ४८)। ५ सोलह तोले का एक परिमाण ; (जो २)। ६ धरना देना, लङ्घन-पूर्वक उपवेशन ; (पव ३८)। ७ तोलने का साधन; (जा २)। ८ वि. धारण करने वाला ; (कुमा)। °प्पभ पुं [°प्रभ] धरणेन्द्र का उत्पात-पर्वत ; (ठा १०)।

धरणा स्त्री [धरणा] देखो **धारणा**; (णंदि)।

धरणि स्त्री [धरणि] १ भूमि, पृथिवी; (औप; कुमा)। २ भगवान् अरनाथ की शासन-देवी ; (संति १०)। ३ भग-वान् वासुपूज्य की प्रथम शिष्या ; (सम १५२ ; पव ६)। °खील पुं [°कील] मेरु पर्वत ; (सुज्ज ५)। °चर पुं [°चर] मनुष्य ; (पउम १०१, ४७) । °धर पुं [°धर] १ पर्वत, पहाड़ ; (अजि १७)। २ अयोध्या नगरी का एक सूर्य-वंशीय राजा ; (पउम ५, ५०)।

°**धरप्पवर** पुं [°धरप्रवर] मेरु पर्वत ; (अजि १५)।

°धरवइ पुं [°धरपति] मेरु पर्वत ; (अजि १७)। °धरा स्त्री [°धरा] भगवान् विमलनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२)। °यल न [°तल] भूमि-तल, भू-तल ; (णाया १, २)। °वइ पुं [°पति] भू-पति, राजा ; (सुपा ३३४)। °वट्ट न [°पृष्ठ] मही-पीठ, भूमि-तल; (महा)। °हर देखो °धर ; (से ६, ३६)।

धरणिंद पुं [धरणेन्द्र] नाग-कुमारों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र ; (पउम ५, ३८)।

धरणी देखो **धरणि**; (प्रासू २३ ; पि ५३ ; से २, २४; कुप्र २२)।

धरा स्त्री [धरा] पृथिवी, भूमि ; (गउड ; सुपा २०१)। °धर, °हर पुं [°धर] पर्वत, पहाड ; (से६, ७६ ; ३८ ; स २६६ ; ७०३ ; उप ७६८ टी)।

धराविअ वि [धारित] पकड़ा हुआ ; (स २०६ ; सुपा ३२५ ; संक्षि ३४)। २ स्थापित; " धराविय मडयं " (कुप्र १४०)।

धरिअ वि [धृत] १ धारण किया हुआ; (गा१०१ ; सुपा १२२)। २ रोका हुआ ; (स २०६)।

धरिज्जंत, **धरिज्जमाण** } देखो **धर**=धृ।

धरिणी स्त्री [धरिणी] पृथिवी, भूमि; (पाअ)।

धरिम न [धरिम] १ जो तराजू में तौल कर बेचा जाय वह ; (श्रा १८ ; णाया १, ८)। २ ऋण, करजा; (णाया १, १)। ३ एक तरह का नाप, तौल; (जो २)।

धरियव्व देखो **धर**=धृ।

धरिस अक [धृष्]१ संहत होना, एकत्रित होना। २ प्रगल्भता करना, धीठाई करना। ३ मिलना, संबद्ध होना। ४ सक. हिंसा करना, मारना। ५ अमर्ष करना, सहन नहीं करना। धरिसइ; (राज)।

धरिसण न [धर्षण] १ परिभव, अभिभव; २ संहति, समूह; ३ अमर्ष, असहिष्णुता; ४ हिंसा ; ५ बन्धन, योजन; (निचू १ ; राज)। ६ प्रगल्भता, धृष्टता, धीठाई ; (औप)।

धरेंत देखो **धर**=धृ।

धव पुं [धव] १ पति, स्वामी ; (णाया १, १ ; वव७)। २ वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १ ; उप १०३१ टी ; औप)।

धवक्क अक [दे] धड़कना, भय से व्याकुल होना, धुकधुकाना। धवक्कइ ; (सण)।

धवक्किय वि [दे] धड़का हुआ, भयसे व्याकुल बना हुआ;(सण)।

धवण न [धावन] धौन, चावल आदि का धावन-जल ; (सूक्त ८६)।

धवल पुं [दे] स्व-जाति में उत्तम ; (दे ५, ५७)।

धवल वि [धवल] १ सफेद, श्वेत ; (पाअ ; सुपा २८५)। २ पुं. उत्तम बैल; (गा ६३८)। ३ पुंन. छन्द-विशेष; (पिंग)। °गिरि पुं [°गिरि] कैलास पर्वत ; (ती ४६)। °गेह न [°गेह] प्रासाद, महल ; (कुमा)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन मुनि ; (दं ४७)। °रव पुं [°रव] मंगल-गीत; (सुपा २६५)। °हर न [°गृह] प्रासाद, महल ; (श्रा १२ ; महा)।

धवल सक [धवलय्] सफेद करना। धवलइ; (पि ५५७)। कवकृ—**धवलिज्जंत**; (गउड)।

धवलक्क न [धवलार्क] ग्राम-विशेष, जो आजकल 'धोलका' नाम से गुजरात में प्रसिद्ध है ; (ती ३)।

धवलण न [धवलन] सफेद करना, श्वेती-करण ; (कुमा)।

धवलसउण पुं [दे] हंस ; (दे ५, ५९ ; पाअ)।

धवला स्त्री [धवला] गौ, गैया ; (गा ६३८)।

धवलाअ अक [धवलाय्] सफेद होना। वकृ—**धवलाअंत**; (गा ९)।

धवलाइअ वि [धवलायित] १ उत्तम बैल की तरह जिसने कार्य किया हो वह ; २ न. उत्तम वृषभ की तरह आचरण ; (सार्ध ६)।

धवलिम पुंस्त्री [धवलिमन्] सफेदपन, शुक्लता ; (सुपा ७४)।

धवलिय वि [धवलित] सफेद किया हुआ ; (भवि)।

धवली स्त्री [धवली] उत्तम गौ, श्रेष्ठ गैया; (गउड)।

धव्व पुं [दे] वेग ; (दे ५, ५७)।

धस अक [धस्] १ धसना। २ नीचे जाना। ३ प्रवेश करना। धसइ, धसउ ; (पिंग)।

धस पुं [धस्] 'धस्' ऐसा आवाज, गिरने का आवाज; " धसत्ति महिमंडले पडिओ " (महा ; णाया १, १—पत्र ४७)।

धसक्क पुं [दे] हृदय की घबराहट का आवाज, गुजराती में 'धासको'; "तो जायहिअधसक्का" (श्रा १४; कुप्र४३५)।

धसक्किअ वि [दे] खूब घबड़ाया हुआ; (श्रा १४)।

धसल वि [दे] विस्तीर्ण ; (दे ५, ५८)।

धा सक [धा] धारण करना। धाइ, धाअइ, धाअए ; (षड्)। कर्म—धीयए ; (पिंड)।

धा सक [ध्यै] ध्यान करना, चिन्तन करना। धाअंति; (संचि ७६)।

धा सक [धाव्] १ दौड़ना। २ शुद्ध करना, धोना। धाइ, धाअइ; (हे ४, २४०)। भवि—धाहिइ; (षड्)।

धाइअ वि [धावित] दौड़ा हुआ; (से ८, ६८; भवि)।

धाइअसंड देखो **धायइ-संड**; (महा)।

धाई देखो **धत्ती**; (हे २, ८१; पव ६७)। ४ धाई का काम करने से प्राप्त की हुई भिक्षा; (ठा ३, ४)। ५ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**पिंड** पुं [°**पिण्ड**] धाई का काम कर प्राप्त की हुई भिक्षा; (पव ६७)।

धाई देखो **धायई**; (उप ६४८ टी)।

धाउ पुं [**धातु**] १ सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, राँगा, सीसा और जस्ता ये सात वस्तु; (जी ३)। २ गेरु, मनसिल आदि पदार्थ; (सं४, ४; पण्ह १,२)। ३ शरीर-धारक वस्तु—कफ, वात, पित्त, रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र; (औप; कुप्र १५८)। ४ पृथिवी, जल, तेज और वायु ये चार महाभूत; (सूअ १,१,१)। ५ व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द-योनि, 'भू' 'पच्' आदि; (अणु)। ६ स्वभाव, प्रकृति; (स २४१)। ७ नाट्य-शास्त्र-प्रसिद्ध आलत्तिका-विशेष; (कुमा २, ६६)। °**य** वि [°**ज**] १ धातु से उत्पन्न; २ वस्त्र-विशेष; (पंचभा)। ३ नाम, शब्द; (अणु)। °**वाइअ** वि [°**वादिक**] औषधि आदि के योग से ताम्र आदि का सोना वगैरः बनाने वाला, किमियागर; (कुप्र ३६७)।

धाउ पुं [**धातृ**] पणपन्नि-नामक व्यन्तर-देवों का एक इन्द्र; (ठा २, ३)।

धाड अक [**निर्+सृ**] बाहर निकलना। धाड़इ; (हे ४, ७६)।

धाड सक [**निर्+सारय्**] बाहर निकालना।संकृ—**धाडि-ऊण**; (कुप्र ८३)। कवकृ—**धाडिज्जंत**; (पउम १७, २८; ३१, ११६)।

धाड सक [**ध्राड्**] प्रेरणा करना। २ नाश करना। धाडेंति; (सूअ १, ४, २)। कवकृ—**धाडीयंत**; (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

धाडण न [**ध्राडन**] १ प्रेरणा, २ नाश; (औप)।

धाडाविअ वि [**निस्सारित**] बाहर निकाला हुआ, निर्वासित; (पउम २२, ८)।

धाडि वि [**दे**] निरस्त, निराकृत; (दे ५, ५६)।

धाडिअ वि [**निःसृत**] बाहर निकला हुआ; (कुमा)।

धाडिअ पुं [**दे**] आराम, बगीचा; (दे ५, ५६)।

धाडिअ वि [**निस्सारित**] निर्वासित, बाहर निकाला हुआ; (पउम १०१, ६०; स २६८; उप ७२८ टी)।

धाडी स्त्री [**धाटी**]। १ डाकुओं का दल; (सुर २, ४; प्रारू)। २ हमला, आक्रमण, धावा; (कप्पू)।

धाण देखो **धण्ण**=धन्य; (वज्जा ६०)।

धाणा स्त्री [**धाना**] धनिया, एक जात का मसाला; (दे ७, ६६; प्रारू)।

धाणुक्क वि [**धानुष्क**] धनुर्धर, धनुर्विद्या में निपुण; (उप पृ ८६; सुर १३, १६२; वेणी ११४; कुप्र ४५२)।

धाणूरिअ न [**दे**] फल-भेद; (दे ५, ६०)।

धाम न [**धामन्**] बल, पराक्रम; (आरा ६३; सण)।

धाय वि [**ध्रात**] १ तृप्त, संतुष्ट; (ओघ ७७ भा; सुर २, ६७)। २ न. सुभिक्ष, सुकाल; (बृह ५)।

धायइ°, **धायई** स्त्री [**धातकी**] वृक्ष-विशेष, धाय का पेड़; (पण्ण १; पउम ५३,७६; ठा २,३; सम १५२)। °**खंड** पुं [°**खण्ड**] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप; (ठा २, ३; अणु)। °**संड** पुं [°**षण्ड**] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप; (जीव ३; ठा ८; इक)।

धार सक [**धारय्**] १ धारण करना।२ करजा रखना। धारेइ; (महा)। वकृ—**धारंत, धारअंत, धारेमाण, धारयमाण, धारिंत**; (सुर ३, १८६; नाट—विक्र १०६; भग; सुपा २५४; २६४)। हेकृ—**धारिउं, धारेत्तए, धारित्तए**; (पि ५७३; कस; ठा ५,३)। कृ—**धारणिज्ज, धारणीय, धारेयव्व**; (णाया १, १; भग ७, ६; सुर १४,७७; सुपा ४८२)।

धार न [**धार**] १ धारा-संबन्धी जल; २ वि. धारण करने वाला; (राज)।

धार वि [**दे**] लघु, छोटा; (दे ५,५६)।

धारग वि [**धारक**] धारण करने वाला; (कप्प; उप पृ ७५; सुपा २५४)।

धारण न [**धारण**] १ धारने की अवस्था; २ ग्रहण; ३ रक्षण, रखना; ४ परिधान करना; ५ अवलम्बन; (औप; ठा ३, ३)।

धारणा स्त्री [**धारणा**] १ मर्यादा, स्थिति ; (आवम)। २ विषय ग्रहण करने वाली बुद्धि ; (ठा ८; दंस ५)। ३ ज्ञात विषय का अ-विस्मरण; (विसे २९१)। ४ अवधारण, निश्चय; (आवम)। ५ मन की स्थिरता । ६ घर का एक अवयव; (भग ८, २)। °**ववहार** पुं [°**व्यवहार**] व्यवहार-विशेष; (ठा ५, २)।

धारणिज्ज देखो **धार**=धारय् ।

धारणी स्त्री [**धारणी**] १ धारण करने वाली ; (औप)। २ ग्यारहवें जिनदेव की प्रथम शिष्या ; (सम १५२)। ३ वसुदेव आदि अनेक राजाओं की रानी का नाम; (अंत; आचू; १ ; विपा २, १ ; णाया १, १)।

धारणीय देखो **धार**=धारय् ।

धारय देखो **धारग** ; (ओघ १ ; भवि)।

धारयमाण देखो **धार**=धारय् ।

धारा स्त्री [**दे**] रण-मुख, रण-भूमि का अग्रभाग; (दे ५,५९)।

धारा स्त्री [**धारा**] १ अस्त्र के आगे का भाग, धार; (गउड; प्रासू ६२)। २ प्रवाह, णाली ; (महा)। ३ अश्व की गति-विशेष ; (कुमा ; महा)। ४ जल-धारा, पानी की धारा; ५ वर्षा, वृष्टि, ६ द्रव पदार्थों का प्रवाह रूप से पतन ; (गउड)। ७ एक राज-पत्नी ; (आवम)। °**कयंब** पुं [°**कदम्ब**] कदम्ब की एक जाति, जो वर्षा से फलती-फूलती है (कुमा)। °**धर** पुं [°**धर**] मेघ; (सुपा २०१)। °**वारि** न [°**वारि**] धारा से गिरता जल ; (भग १३, ६)। °**वारिय** वि [°**वारिक**] जहाँ धारा से पानी गिरता हो वह ; (भग १३, ६)। °**हय** वि [°**हत**] वर्षा से सिक्त ; (कप्प)। °**हर** देखो °**धर** ; (सुर १३, १९५)।

धारावास पुं [**दे**] १ भेक, मेढ़क ; (दे ५, ६३ ; षड्)। २ मेघ ; (दे ५, ६३)।

धारि वि [**धारिन्**] धारण करने वाला ; (औप ; कप्प)।

धारिंत देखो **धार**=धारय् ।

धारिणी देखो **धारणी** ; (औप)।

धारित्तए देखो **धार**=धारय् ।

धारिय वि [**धारित**] धारण किया हुआ ; (भवि ; आचा)।

धारी देखो **धत्ती** ; (हे २, ८१)।

धारी देखो **धारा** ; (कुमा)।

धारेत्तए, **धारेयव्व** } देखो **धार**=धारय् ।

धाव सक [**धाव्**] १ दौड़ना । २ शुद्ध करना, धोना । धावइ ; (हे ४, २२८ ; २३८)। वकृ—**धावंत**, **धावमाण**; (प्रासू ८४; महा; कप्प)। संकृ—**धाविऊण**; (महा)।

धावण न [**धावन**] १ वेग से गमन, दौड़ना ; (सूअ १, ७)। २ प्रक्षालन, धोना; (कुप्र १६४)।

धावणय पुं [**धावनक**] दौड़ते हुए समाचार पहुँचाने का काम करने वाला, हरकारा, संदेसिया ; (सुपा १०५ ; २९५)।

धावणया स्त्री [**धान**] स्तन-पान करना ; (उप ८३३)।

धावमाण देखो **धाव** ।

धाविअ वि [**धावित**] दौड़ा हुआ ; (भवि)।

धाविर वि [**धावितृ**] दौड़ने वाला ; (सण ; सुपा ५४)।

धावी देखो **धाई**=धात्री ; (उप १३९ टी ; स ६६ ; सुर २, ११२ ; १६, ९८)।

धाहा स्त्री [**दे**] धाह, पुकार, चिल्लाहट ; (पउम ५३, ८८; सुपा ३१७ ; ३४०)।

धाहाविय न [**दे**] धाह, पुकार, चिल्लाहट ; (स ३७० ; सुपा ३८० ; ४९६ ; महा)।

धाहिय वि [**दे**] पलायित, भागा हुआ ; (धम्म ११ टी)।

धि अ [**धिक्**] धिक्कार, छीः ; (रंभा)।

धिइ स्त्री [**धृति**] १ धैर्य, धीरज ; (सूअ १, ८ ; षड्)। २ धारण; (आवम)। ३ धारणा, ज्ञात विषय का अ-विस्मरण; (विसे)। ४ धरण, अवस्थान ; (सूअ १, ११)। ५ अहिंसा; (पण्ह २, १)। ६ धैर्य की अधिष्ठायिका देवी; ७ देवी की प्रतिमा-विशेष ; (राज ; णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ८ तिगिच्छि-द्रह की अधिष्ठायिका देवी ; (इक ; ठा २३)। °**कूड** न [°**कूट**] धृति-देवी का अधिष्ठित शिखर-विशेष; (जं ४)। °**धर** पुं [°**धर**] १ एक अन्तकृद् महर्षि; २ 'अंतगड-दसा' सूत्र का एक अध्ययन; (अंत १८)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] धीरज वाला ; (ठा ८; पण्ह२, ४)।

धिक्कय वि [**धिक्कृत**] १ धिक्कारा हुआ ; (वव १)। २ न. धिक्कार, तिरस्कार; (बृह ६)।

धिक्करण न [**धिक्करण**] तिरस्कार, धिक्कार ; (णाया १, १६)।

धिक्करिअ वि [**धिक्कृत**] धिक्कारा हुआ; (कुप्र १५७)।

धिक्कार पुं [**धिक्कार**] १ धिक्कार, तिरस्कार ; (पगह १, ३; द्र २६)। २ युगलिक मनुष्यों के समय की एक दण्ड-नीति ; (ठा ७—पत्र ३९८)।

धिक्कार सक [**धिक्+कारय्**] धिक्कारना, तिरस्कार करना। कवकृ—**धिक्कारिज्जमाण** ; (पि ५६३)।

धिज्ज न [**धैर्य**] धीरज, धृति ; (हे २, ६४)।

धिज्ज वि [**धेय**] धारण करने योग्य ; (णाया १, १)।

धिज्ज वि [**ध्येय**] ध्यान-योग्य, चिन्तनीय ; (णाया १, १)।

धिज्जाइ पुंस्त्री [**द्विजाति, धिग्जाति**] ब्राह्मण, विप्र। स्त्री—"तत्थ भद्दा नाम धिज्जाइणी" (आवम)।

धिज्जाइय, धिज्जाईय पुंस्त्री [**द्विजातिक, धिग्जातीय**] ब्राह्मण, विप्र ; (महा ; उप १२६ ; आव ३)।

धिज्जीविय न [**धिग्जीवित**] निन्दनीय जीवन ; (सूअ २, २)।

धिट्ठ वि [**धृष्ट**] धीठ, प्रगल्भ ; २ निर्लज्ज, बेशरम ; (हे १, १३० ; सुर २, ६ ; गा ६२७ ; श्रा १४)।

धिट्ठज्जुण्ण देखो **धट्ठज्जुण्ण** ; (पि २७८)।

धिट्ठिम पुंस्त्री [**धृष्टत्व**] धृष्टता, धीठाई ; (सुपा १२०)।

धिद्धी, धिधी अ [**धिक् धिक्**] छीः छीः ; (उव; वै ६१; रंभा)।

धिप्प अक [**दीप्**] दीपना, चमकना। धिप्पइ ; (हे १, २२३)।

धिप्पिर वि [**दीप्र**] देदीप्यमान, चमकीला ; (कुमा)।

धिय अ [**धिक्**] धिक्कार, छीः ; "बेइ गिरं धिय मुंडिय" (उप ६३४)।

धिरत्थु अ [**धिगस्तु**] धिक्कार हो ; (णाया १, १६ ; महा; प्रारू)।

धिसण पुं [**धिषण**] बृहस्पति, सुर-गुरु ; (पाअ)।

धिसि अ [**धिक्**] धिक्कार, छीः; (सुपा ३६५ ; सण)।

धी स्त्री [**धी**] बुद्धि, मति; (पाअ; णाया १,१६; कुप्र ११६; २४७; प्रासू २०)। °**धण** वि [°**धन**] १ बुद्धिमान्, विद्वान् ; २ पुं. एक मन्त्री का नाम; (उप ७६८ टी)। °**म, °मंत** वि [°**मत्**] बुद्धिशाली, विद्वान् ; (उप७२८ टी; कप्प; राज)।

धी अ [**धिक्**] धिक्कार, छीः ; (उव; वै ५५)।

धीआ स्त्री [**दुहितृ**] लड़की, पुत्री ; (मृच्छ १०६ ; पि ३९२ ; महा ; भवि ; पच्च ४२)।

धीउल्लिया स्त्री [**दे**] पुतली ; (स ७३७)।

धीर अक [**धीरय्**] १ धीरज धरना। २ सक. धीरज देना, आश्वासन देना। धीरेंति ; (गउड)।

धीर वि [**धीर**] १ धैर्य वाला, सुस्थिर, अ-चञ्चल : (से ४, ३० ; गा ३६७ ; ठा ४, २)। २ बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान् ; (उप ७६८ टी ; धर्म २)। ३ विवेकी, शिष्ट ; (सूअ १, ७)। ४ सहिष्णु; (सूअ १, ३, ४)। ५ पुं. परमेश्वर, परमात्मा, जिन-देव; ६ गणधर-देव; (आचा; आव ४)।

धीर न [**धैर्य**] धीरज, धीरता ; (हे २, ६४; कुमा)।

धीरव सक [**धीरय्**] सान्त्वन करना, दिलासा देना। कर्म—धीरविज्जंति ; (कुप्र २७३)।

धीरवण न [**धीरण**] धीरज देना, सान्त्वन ; (वव १)।

धीरविय वि [**धीरित**] जिसको सान्त्वन दिया गया हो वह, आश्वासित ; (स ६०४)।

धीराअ अक [**धीराय्**] धीर होना, धीरज धरना। वकृ—**धीराअंत** ; (से १२, ७०)।

धीराविअ देखो **धीरविय** ; (पि ५५९)।

धीरिअ देखो **धीर=धैर्य** ; (हे २, १०७)।

धीरिअ देखो **धीरविय** ; (भवि)।

धीरिम पुंस्त्री [**धीरत्व**] धैर्य, धीरज; (उप पृ ६२; सुपा १०६ ; भवि; कुप्र १५०)।

धीवर पुं [**धीवर**] १ मच्छीमार, जालजीवी; (कुमा; कुप्र २४७)। २ वि. उत्तम बुद्धि वाला; (उप ७६८ टी ; कुप्र २४७)।

धुअ देखो **धुव=धाव्**। धुअइ; (गा १३०)।

धुअ सक [**धु**] १ कँपाना। २ फेंकना। ३ त्याग करना। वकृ—**धुअमाण** ; (से १४, ६६)।

धुअ देखो **धुव = ध्रुव**; (भवि)। छन्द-विशेष ; (पिंग)।

धुअ वि [**धुत**] १ कम्पित ; (गा ७८ ; दे १, १७३)। २ त्यक्त ; (औप)। ३ उच्छलित ; (से ४, ४)। ४ न. कर्म ; (सूअ २, २) । ५ मोक्ष, मुक्ति; (सूअ १, ७)। ६ त्याग, संग-त्याग, संयम ; (सूअ १, २, २ ; आचा)। °**वाय** पुं [°**वाद**] कर्म-नाश का उपदेश ; (आचा)।

धुअगाय पुं [**दे**] भ्रमर, भमरा ; (दे ५, ५७ ; पाअ)।

धुअराय पुं [**दे**] ऊपर देखो ; (षड्)।

धुंधुमार पुं [**धुन्धुमार**] नृप-विशेष ; (कुप्र २६३)।

धुंधुमारा स्त्री [**दे**] इन्द्राणी, शची ; (दे ५, ६०)।

धुक्काधुक्क अक [**कम्प्**] काँपना, धुक् धुक् होना। धुक्का-धुक्कइ ; (गा ५८३)।

घुक्कुदुघुअ } वि [**दे**] उल्लसित, उल्लास-युक्त ; (दे
घुक्कुदुघुगिअ } ५, ६०)।
घुक्कुधुअ देखो **धुक्काधुक्क**। वकृ—**घुक्कुधुअंत** ; (भवि)।
धुक्कोडिअ न [**दे**] संशय, संदेह ; (वज्जा ६०)।
धुगुधुग अक [**धुगधुगाय्**] धुग् धुग् आवाज करना। वकृ—**धुगुधुगंत** ; (पण्ह १, ३—पत्र४५)।
धुट्टुअ देखो **धुदुधुअ**। धुट्टुअइ ; (हे ४, ३६५)।
धुण सक [**धू**] १ कँपाना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ नाश करना। धुणइ, धुणाइ ; (हे ४, ५६ ; आचा ; पि १२०)। कर्म—धुव्वइ, धुणिज्जइ ; (हे४, २४२)। वकृ—**धुणंत** ; (सुपा १८५)। संकृ—**धुणिऊण, धुणिया, धुणेऊण** ; (षड् ; दस ६, ३)। हेकृ—**धुणित्तए** ; (सूअ १, २, २)। कृ—**धुणेज्ज** ; (आचू १)।
धुणण न [**धूनन**] १ अपनयन ; २ परित्याग ; (राज)।
धुणणा स्त्री [**धूनन**] कम्पन ; (ओघ १६५ भा)।
धुणाव सक [**धूनय्**] कँपाना, हिलाना। धुणावइ; (वज्जा६)।
धुणाविअ वि [**धूनित**] कँपाया हुआ ; (उप ७६८ टी)।
धुणि देखो **झुणि** ; (षड्)।
धुणिऊण } देखो **धुण**।
धुणित्तए }
धुणिय वि [**धूत**] कम्पित, हिलाया हुआ ; "मत्थयं धुणियं" (सुपा ३२० ; २०१)।
धुणिया } देखो **धुण**।
धुणेज्ज }
धुण्ण वि [**धाव्य**] १ दूर करने योग्य ; २ न. पाप ; ३ कर्म ; (दस ६, १ ; दसा ६)।
धुत्त वि [**धूर्त**] १ ठग, वञ्चक, प्रतारक ; (प्रासू ४० ; श्रा १२)। २ जुआ खेलने वाला; ३ पुं. धतूरे का पेड़ ; ४ लोहे का काट; ५ लवण-विशेष, एक प्रकार का नोन ; (हे २, ३०)।
धुत्त वि [**दे**] १ विस्तीर्ण ; (दे ५, ५८)। २ आक्रान्त; (षड्)।
धुत्त } सक [**धूर्तय्**] ठगना। धुत्तारसि ; (सुपा११४)।
धुत्तार } वकृ—**धुत्तयंत** ; (श्रा १२)।
धुत्तारिअ वि [**धूर्तित**] ठगा हुआ, वञ्चित; (उप७२८टी)।
धुत्ति स्त्री [**धूर्त्ति**] जरा, बुढ़ापा ; (राज)।

धुत्तिअ वि [**धूर्तित**] वञ्चित, प्रतारित ; (सुपा ३२४ ; श्रा १२)।
धुत्तिम पुंस्त्री [**धूर्तत्व**] धूर्तता, धूर्तपन, ठगाई ; (हे१, ३५ ; कुमा ; श्रा १२)।
धुत्ती स्त्री [**धूर्ता**] धूर्त स्त्री; (वज्जा १०६)।
धुत्तोरय न [**धत्तूरक**] धतूरे का पुष्प; (वज्जा १०६)।
धुदुधुअ (अप) अक [**शब्दाय्**] आवाज करना। धुदुधुअइ; (हे ४, ३६५)।
धुम्म पुं [**धूम्र**] १ धूम, धुँआ। २ वर्ण-विशेष, कपोत-वर्ण; ३ वि. कपोत वर्ण वाला। °**क्ख** पुं [°**ाक्ष**] एक राक्षस ; (से १२, ६०)।
धुर न. देखो **धुरा** ; (उप पृ ६३)।
धुर पुं [**धुर**] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। २ कर्जदार, ऋणी; "जस्स कलसम्मि वहियाखंडाइं तस्स धुरधण लब्भं, पुणरवि देउं धुराणं" (सुपा ४२६)।
धुरंधर वि [**धुरन्धर**] १ भार को वहन करने में समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान्, भार-वाहक; (हे ३, ३६)। २ नेता, मुखिया, अगुआ ; (सण ; उत्तर२०) ३ पुं. गाड़ी, हल आदि खींचने वाला बैल ; (दे ८, ४४)
धुरा स्त्री [**धुर्**] १ गाड़ी वगैरः का अग्र भाग, धुरी (उव)। २ भार, बोझा ; ३ चिन्ता ; (हे १, १६)। °**धार** वि [°**धार**] धुरा को वहन करने वाला, धुरन्धर (पउम ७, १७१)।
धुरी स्त्री [**धुरी**] अक्ष, धुरा, गाड़ी का जूआ ; (अणु)
धुव सक [**धाव्**] धोना, शुद्ध करना। धुवइ, धुवंति ; (हे ४, २३८ ; गा ४३३ ; पिंड२८)। वकृ—**धुवंत** ; (मे ८ १०२)। कवकृ—**धुव्वंत, धुव्वमाण** ; (गा ५६३ से ६, ४५ ; वज्जा २४ ; पि ५३८)।
धुव सक [**धू**] कँपाना, हिलाना। धुवइ ; (हे४, ५६ षड्)। कर्म—**धुव्वइ**; (कुमा)। कवकृ—**धुव्वंत** (कुमा)।
धुव वि [**ध्रुव**] १ निश्चल, स्थिर ; (जीव३)। २ नित्य शाश्वत, सर्वदा-स्थायी ; (ठा५, ३; सूअ२, ४)। ३ अवश्य भावी ; (सूअ २, १)। ४ निश्चित, नियत ; (आचा)। ५ पुं. अश्व के शरीर का आवर्त ; (कुमा)। ६ मोक्ष, मुक्ति ७ संयम, इन्द्रियादि-निग्रह; (सूअ १, ४, १)। ८ संसार (अणु)। ९ न. मुक्ति का कारण, मोक्ष-मार्ग ; (आचा) १० कर्म ; (अणु)। ११ अत्यन्त, अतिशय; "धुवमोगिण्हइ"

(ठा६)। °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी; (ववा)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी; (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष; (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग; (सूअ १, ४, १)। °राहु पुं [°राहु] राहु-विशेष; (सम २६)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ संयम; २ मोक्ष, मुक्ति; ३ शाश्वत यश; (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन; (ओघ ७२; ३४७; स २७२)। २ वि. कँपाने वाला, हिलाने वाला। स्त्री—°णी; (कुमा)।

धुव्व देखो **धुव**=धाव्। धुव्वइ; (संक्षि ३६)।

धुव्वंत देखो **धव**=धू।

धुव्वंत } **धुव्वमाण** } देखो **धुव**=धाव्।

धुहअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो **धुअ**=धुत; (आचा; दस ३,१३; पि ३१२; ३६२; सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो **धूव**=धूप; (सुपा ६५७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री; (हे २, १२६; प्रासू ६४)।

धूण पुं [दे] गज, हाथी; (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित; (कुप्र ६८)।

धूम पुं [धूम] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह; (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति; (पण्ह २, १)। °इंगाल पुं. व. [°ङ्गार] द्वेष और राग; (ओघ २८८ भा)। °केउ पुं [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३; पण्ह १, ५; औप)। २ वन्हि, अग्नि, आग; (उत्त२२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज; (गउड)। °चारण पुं [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि-विशेष; (गच्छ २)। °जोणि पुं [°योनि] बादल, मेघ; (पाअ)। °ज्झय देखो °द्धय; (राज)। °दोस पुं [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना; (आचा २, १, ३)। °द्धय पुं [°ध्वज] वह्नि, अग्नि; (पाअ; उप १०३१ टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवीं नरक-पृथिवी; (ठा ७; प्रासू)। °ल वि [°ल] धूँआ वाला; (उप २६४ टी)। °वडल पुंन [°पटल] धूम-समूह; (हे २, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] पाण्डुर वर्ण वाला; (गाया १, १७)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का अग्र भाग; (ठा४, २)।

धूमंग पुं [दे] भ्रमर, भमरा; (दे ५, ५७)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान; (सूअ २, १)।

धूमद्दार न [दे] गवाक्ष, वातायन; (दे ५, ६१)।

धूमद्धय पुं [दे] १ तड़ाग, तलाव; २ महिष, भैंसा; (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री.ब. [दे] कृत्तिका नक्षत्र; (दे ५, ६२)।

धूमपलियाम वि [दे] गर्त में डाल कर आग लगाने पर भी जो कच्चा रह जाय वह; (निचू १५)।

धूममहिसी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा; (दे ५, ६१; पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१)। २ तुहिन, हिम; (षड्)।

धूमसिहा } **धूमा** } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१; ठा १०)।

धूमाअ अक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलाना। ३ धूम की तरह आचरना। धूमाअंति; (से ८, १६; गउड)। वकृ—**धूमायंत**; (गउड; से १, ८)।

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी; (पउम ७५, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त; (पिंड)। २ छौंका हुआ (शाक आदि); (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१; पाअ; ठा १०; भग ३, ७; अणु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा; (दे ५, ६२)।

धूरिअवट्ट पुं [दे] अश्व, घोड़ा; (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो **धूलि**; (हे ४, ४३२)।

धूलि } **धूली** } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु; (गउड; प्रासू २८; ८४)। °कंब, °कलंब पुं [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु में विकसने वाला कदम्ब-वृक्ष; (कुमा)। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह; (वव १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से लिप्त; (गा ७७४; ८२६)। °धोउ वि [°धोतृ] धूल को साफ करने वाला; (सुपा ३३६)। °पंथ पुं [°पथ] धूलि-

धारणा स्त्री [**धारणा**] १ मर्यादा, स्थिति ; (आवम)। २ विषय ग्रहण करने वाली बुद्धि ; (ठा ८; दंस ५)। ३ ज्ञात विषय का अ-विस्मरण; (विसे २९१)। ४ अवधारण, निश्चय; (आवम)। ५ मन की स्थिरता। ६ घर का एक अवयव; (भग ८, २)। °**ववहार** पुं [°**व्यवहार**] व्यवहार-विशेष; (ठा ५, २)।

धारणिज्ज देखो **धार**=धारय्।

धारणी स्त्री [**धारणी**] १ धारण करने वाली ; (औप)। २ ग्यारहवें जिनदेव की प्रथम शिष्या ; (सम १५२)। ३ वसुदेव आदि अनेक राजाओं की रानी का नाम; (अंत; आचू; १ ; विपा २, १ ; णाया १, १)।

धारणीय देखो **धार**=धारय्।

धारय देखो **धारग** ; (ओघ १ ; भवि)।

धारयमाण देखो **धार**=धारय्।

धारा स्त्री [दे] रण-मुख, रण-भूमि का अग्रभाग; (दे ५,५९)।

धारा स्त्री [**धारा**] १ अस्त्र के आगे का भाग, धार; (गउड; प्रासू ६१)। २ प्रवाह, पाली ; (महा)। ३ अश्व की गति-विशेष ; (कुमा ; महा)। ४ जल-धारा, पानी की धारा; ५ वर्षा, वृष्टि; ६ द्रव पदार्थों का प्रवाह रूप से पतन ; (गउड)। ७ एक राज-पत्नी ; (आवम)। °**कयंब** पुं [°**कदम्ब**] कदम्ब की एक जाति, जो वर्षा से फलती-फूलती है (कुमा)। °**धर** पुं [°**धर**] मेघ; (सुपा २०१)। °**वारि** न [°**वारि**] धारा से गिरता जल ; (भग १३, ६)। °**वारिय** वि [°**वारिक**] जहाँ धारा से पानी गिरता हो वह ; (भग १३, ६)। °**हय** वि [°**हत**] वर्षा से सिक्त ; (कप्प)। °**हर** देखो °**धर** ; (सुर १३, १९५)।

धारावास पुं [**दे**] १ भेक, मेढ़क ; (दे ५, ६३ ; षड्)। २ मेघ ; (दे ५, ६३)।

धारि वि [**धारिन्**] धारण करने वाला ; (औप ; कप्प)।

धारिंत देखो **धार**=धारय्।

धारिणी देखो **धारणी** ; (औप)।

धारिसए देखो **धार**=धारय्।

धारिय वि [**धारित**] धारण किया हुआ ; (भवि ; आचा)।

धारी देखो **धत्ती** ; (हे २, ८१)।

धारी देखो **धारा** ; (कुमा)।

धारेसए
धारेयव्व } देखो **धार**=धारय्।

धाव सक [**धाव्**] १ दौड़ना। २ शुद्ध करना, धोना। धावइ ; (हे ४, २२८ ; २३८)। वकृ—**धावंत, धावमाण**; (प्रासू ८४; महा; कप्प)। संकृ—**धाविऊण**; (महा)।

धावण न [**धावन**] १ वेग से गमन, दौड़ना ; (सूअ १, ७)। २ प्रक्षालन, धोना; (कुप्र १६४)।

धावणय पुं [**धावनक**] दौड़ते हुए समाचार पहुँचाने का काम करने वाला, हरकारा, संदेसिया ; (सुपा १०५ ; २६५)।

धावणया स्त्री [**धान**] स्तन-पान करना ; (उप ८३३)।

धावमाण देखो **धाव**।

धाविअ वि [**धावित**] दौड़ा हुआ ; (भवि)।

धाविर वि [**धावितृ**] दौड़ने वाला ; (सण ; सुपा ५४)।

धावी देखो **धाई**=धात्री ; (उप १३९ टी ; स ६६ ; सुर २, ११२ ; १६, ९८)।

धाहा स्त्री [**दे**] धाह, पुकार, चिल्लाहट ; (पउम ५३, ८८; सुपा ३१७ ; ३४०)।

धाहाविय न [**दे**] धाह, पुकार, चिल्लाहट ; (स ३७० ; सुपा ३८० ; ४९६ ; महा)।

धाहिय वि [**दे**] पलायित, भागा हुआ ; (धम्म ११ टी)।

धि अ [**धिक्**] धिक्कार, छीः ; (रंभा)।

धिइ स्त्री [**धृति**] १ धैर्य, धीरज ; (सूअ १, ८ ; षड्)। २ धारण; (आवम)। ३ धारणा, ज्ञात विषय का अ-विस्मरण; (विसे)। ४ धरण, अवस्थान ; (सूअ १, ११)। ५ अहिंसा; (पराह २, १)। ६ धैर्य की अधिष्ठायिका देवी; ७ देवी की प्रतिमा-विशेष ; (राज ; णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ८ तिगिञ्छि-द्रह की अधिष्ठायिका देवी ; (इक ; ठा २३)। °**कूड** न [°**कूट**] धृति-देवी का अधिष्ठित शिखर-विशेष; (जं ४)। °**धर** पुं [°**धर**] १ एक अन्तकृद् महर्षि; २ 'अंतगड-दसा' सूत्र का एक अध्ययन; (अंत १८)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] धीरज वाला ; (ठा ८ ; पराह२, ४)।

धिक्कय वि [**धिक्कृत**] १ धिक्कारा हुआ ; (वव १)। २ न. धिक्कार, तिरस्कार; (बृह ६)।

धिक्करण न [**धिक्करण**] तिरस्कार, धिक्कार ; (णाया १, १६)।

धिक्कारिअ वि [**धिक्कृत**] धिक्कारा हुआ; (कुप्र १५७)।